॥ णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

श्रेष्ठि-देवचन्द्रलालभाई-जैनपुस्तकोद्धारे ग्रन्थाङ्कः ११५ ॥

आगमोद्धारक-आचार्यश्रीआनन्दसागरसूरिसङ्कलितः—

ल परिचि सैद्धान्ति कशब्दकोषः ।

(कतो झपर्यन्तो द्वितीयो विभागः)

सम्पादकौ—आगमोद्धारक—आचार्यश्रीआनन्दसागरसूरीश्वरान्तेवासिनौ
कञ्चन -प्रमोदसागरौ ।

संग्राहकः—आगमोद्धारकान्तेवासी गुणसागर ।

सुरतवास्तव्य-श्रेष्ठि-देवचन्द्रलालभाई-जैनपुस्तकोद्धारकोष

कार्यवाहकः—चोकसी मोतीचन्द मगनभाई ।



वीराब्द २४९० । विक्रमाब्द. २०२० । शाकाब्द १८८६ । खिस्ताब्द. १९६४

प्रथमं संस्करणम्] निष्क्रयः रूप्यपञ्चकम् । [प्रतयः ५००

इदं पुस्तकं ललितपुरे श्रेष्ठि-देवचन्द्रलालभाई जैनपुस्तकोद्धारसंस्थाया कार्यवाहक-
मोतीचंद मगनभाई चोकसी इत्यनेन
जैनेन्द्र मुद्रणालये पंडित परमेष्ठीदास जैन द्वारा मुद्रापितम् ।

पुनर्मुद्रणाया: सर्वेऽधिकारा एतद्भाण्डागारकार्यवाहकैरायत्तीकृता: ।

All Rights Reserved By The Trustees of the Fund.

Printed by :—
Pt. Parmeshthidas Jain. at the Jainendra Press, LALITPUR, U. P.

Published By Sheth :—Devchand Lalbhai Jain Pustakoddhar Fund. Surat. By the Hon: Managing Trustee, Motichand Maganbhai Choksi.

Sheth Devchand Lalbhai Pustkoddhar Fund Series No 115

Shree Alpaparichit Saidhantik Shabda-Kosh

SECOND PART

[A To Z]

— Author —

Agmoddharak Acharya Shree Anandsagarsurishwarji

— Editor —

Agmoddharak Shree Anandsagarsurishwarji 's Sishyo
Muni Kanchanvijay and Muni Kshemankarsagar

Collected.—

SHREE GUNSAGARJI
SHREE ANANDSAGARSURISHWARJI'S ANTEWASI

— Publisher —
Motichand Maganbhai Choksi

Managing Trustee For —
Sheth DEVCHAND LALBHAI JAIN PUSTAKODDHAR FUND
SURAT

First Edition
Copies 500

Price Rs 5-00

Vikram Samvat 2020
Christation Era 1964

The Board of Trustees :

Shri Nemchand Gulabchand Devchand Zaveri
" Talakchand Motichand "
" Babubhai Premchand "
" Amichand Zaverchand "
" Keshrichand Hirachand "
" Motichand Maganbhai Choksi
Hon. Managing Trustee.

संस्थानुं ट्रस्टी मंडळः—

श्री नेमचद गुलाबचद देवचन्द झवेरी
" तलकचंद मोतीचंद "
" बाबुभाई प्रेमचंद "
" अमीचद झवेरचंद "
" केशरीचंद हीराचंद "
" मोतीचद मगनभाई चोकसी
मेनेजिंग ट्रस्टी

THE LATE
SHETH DEVCHAND LALBHAI JAVERI

Born 1853 A. D Surat　　Died 13th January 1906 A D Bombay



श्रेष्ठि देवचन्द–लालभाई जहवेरी

जन्म १९०९ वैक्रमाब्दे
कार्तिकशुक्लैकादश्या (देवदीपावलीदिने)
सूर्यपूरे

स्वर्गवास १९६२ वैक्रमाब्दे
पौषकृष्णतृतीयाम् (मकरसक्रान्तितिथौ)
मोहमयीनगर्याम्

—: प्रकाशकीय :—

आ अवसर्पिणी कालना दुःषम आरामां चरमशासनपति श्रमण भगवान् महावीर स्वामीना शासनमा शासनना पुण्यप्रतापे ते ते समये आचार्य भगवंतोअे 'आगम' वगेरे साहित्यनो उद्धार, पुनरुद्धार करीने आ कलिकालमा वीसमी सदीमा जे विद्यमान राख्यु छे ते आपणु अहोभाग्य छे तेथी तेवा साहित्यने प्रकाशन करवा माटे अमारी आ सस्था स० १९६४ मा प पू आगमोद्धारक गुरुदेवश्रीना उपदेशथी स्थपाई हती आ सस्था मारफत अमे आज सुधी घणा ग्रन्थो प्रकाशित करी चूक्या छीअे तेमज बीजा पण ग्रन्थोनु प्रकाशन चालु छे तेमा अमे ११५मा ग्रन्थाङ्क तरीके श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोष भाग २ ने सहर्ष प्रगट करीअे छीअे

तारक ध्यानस्थस्वर्गत आगमोद्धारक गुरुदेवश्रीए आ कलिकालना विषम वातावरणमा आगमोनो बोध दुर्बोध न थई जाय ते हेतुअे आगमोदयसमितिनी स्थापना करावी अने आगम-वाचना आपवानु कर्युं तेथी ते समितिअे आगमो छपाववानु कार्य शरू कर्युं. तेमज आ संस्थाए पण अनुयोगद्वार वगेरे आगमो छपाव्या अने अत्यारे पण ते कार्य चालु ज राख्यु छे ते वखते अने पछीथी आगमोद्धारक गुरुदेवश्रीए आगमोना जुदा जुदा विषयो तारवता 'आगमकोष'नो पण एक विषय तारव्यो हतो तेने छपाववो हतो आ विचारोत्पत्ति आजथी ४५ वर्ष पहेला थई हती

ते हेतुए प ता गुरुदेवश्रीना सदुपदेशथी नीचेना सद्गृहस्थो तरफथी नीचेनी रकमो कोषना कार्य माटे ते काले अमारी सस्थाने मळी हती ते आ प्रमाणे—

१ अमदावादनिवासी शा डाह्याभाई पीतांबरदास रु० १५०१)
२ सुरतनिवासी झवेरी सोभागचन्द सूरचद रु० १००१)
३ सुरतनिवासी झवेरी सांकलचंद सूरचद रु० ५०१)

आचार्य देवनो विहार मालवा, बगाल तरफ लबायो होवाथी ते कार्य घणी लाबी मुदत सुधी पडी रह्युं हतु ते छपाववाना कार्यनो निर्णय स० २००४ मा थयो अने अमे आगमोद्धारक गुरुदेवश्रीनी समतिथी आ कार्य शरू कर्युं

आथी प ता गुरुदेवश्रीनी आज्ञा अनुसार पू० मुनिमहाराज श्रीगुणसागरजी पासेथी श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषनु प्रेस मेटर अमे मेळव्यु ते श्रीसरस्वती मुद्रणालय, सुरतमा छपाववा माटे आप्यु अने तेनु सपादन करवा माटे मुनिमहाराज श्रीकचनविजयजी तथा श्रीक्षेमकरसागरजी म०ने विनति करी तेओश्रीअे आगमोद्धारक गुरुदेवश्रीना अनन्य पटधर, विद्याव्यासगी, श्रुतस्थविर, आचार्य महाराज श्रीमाणिक्यसागरसूरीश्वरजी महाराजनो सयोग मल्यो, त्यासुधी प्रूफ वंचाववा पूर्वक अने ते पछीथी स्वतन्त्रपणे (ते मुनिवर्योअे) आ कोषना प्रथम भागनुं सपादन कार्य कर्यु तेथी अमो आ अद्वितीय आगमतलस्पर्शीज्ञाता, आगमतत्त्वपारदृश्वा, आगमज्योतिर्धर, शासनसरक्षण-बद्धकक्ष, तत्त्वशिरोमणि, आगमाव्युछित्तिकर, शिलाताम्रपत्रोत्कीर्णागमकारापक, गभीरानेकग्रन्थप्रणेता, अन्त्यसमये पक्षावधिअर्धपद्मासनस्थायी, ध्यानस्थस्वर्गत आगमोद्धारक आचार्यवर्य श्रीआनन्दसागर-सूरीश्वरजी महाराजे 'सकलित' करेलो श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषनो 'सपूर्णस्वर' सुधीनो पहेलो भाग सहर्ष प्रकाशित करी शक्या हता

आ संस्थाना प्रथम पुस्तकना संपादक तरीके पण आचार्यदेव [1]श्रीआनन्दसागरसूरीश्वरजी म० हता अने बीजा सेकडानी शरुआतना प्रथम पुस्तक तरीके पण तेओश्रीनो संकलित अमूल्य कोषनो भाग १ सं० २०१२ मां प्रसिद्ध थयो

कोषनी विशिष्टता अंगे सपादकश्रीओ पहेला भागनां निवेदनमा लख्युं छे अमारी सस्थाए आना प्रकाशनमा वधारे रस लीधो तेनुं मुख्य कारण ए छे, के आज सुधी छपायेला प्राकृत कोषोमा अभिधानराजेन्द्रकोप, पाइयसद्दमहण्णवो आदि केटलाक कोषो छे पण तेमां न्यूनाधिकरूपे विचार करता उपयोगितामा बाध आवे छे—जेमके अभिधानराजेन्द्रकोष प्रमाणमा एटलो वधो मोटो छे के तेमांथी कोई शब्द शोधवा माटे वधारे परिश्रम पडे अने छपाईमा के सम्पादनमां त्रुटी रहेवाने लीधे सूत्रो अने ते ते प्रकरणो घणा परिश्रम पछी पण जडता नथी पाइयसद्दमहण्णवोमा जैन-सैद्धान्तिक शब्दो उपर वधारे भार मूक्यो होय तेम जणातु नथी पण प्रस्तुत ग्रन्थमा कोई पण जैन के जैनेतर विद्वान् प्रचलित जैन पारिभाषिक शब्दोनो यथार्थ परिचय टूंकमा ते शब्दना स्थल सहित सहेलाईथी प्राप्त करी शके एवी तक छे, तथा मुनिराजो पण ग्रन्थ सम्पादनना कार्योमां सहायता लई शके तेम पण छे

अमे इच्छीए छीए के आ प्रकाशननो विद्वज्जनो योग्य आदर करशे ज

आ कोपने अंगे संज्ञाओनी समजणो तथा ते ते ग्रन्थोनां पानाओनी सूची पण सपादक पू. महाराजोए आपी छे

प्रस्तावना सजोगवशात् अत्यारे आपी शक्यो नथी पण त्रीजा के चोथा भागमां आपशुं महाराज श्रीअभयसागरजी महाराजने लखवा माटे आमन्त्रण आप्युं छे

अमारा प्रकाशन कार्यमा जे जे महाशयोए अमने मदद करी छे ते ते महाशयोना अमे ऋणी छीए

वि० सं० २०२०
द्वि० कार्तिक (क्षयमागसर) सुद १
ता १७-११-१९६३

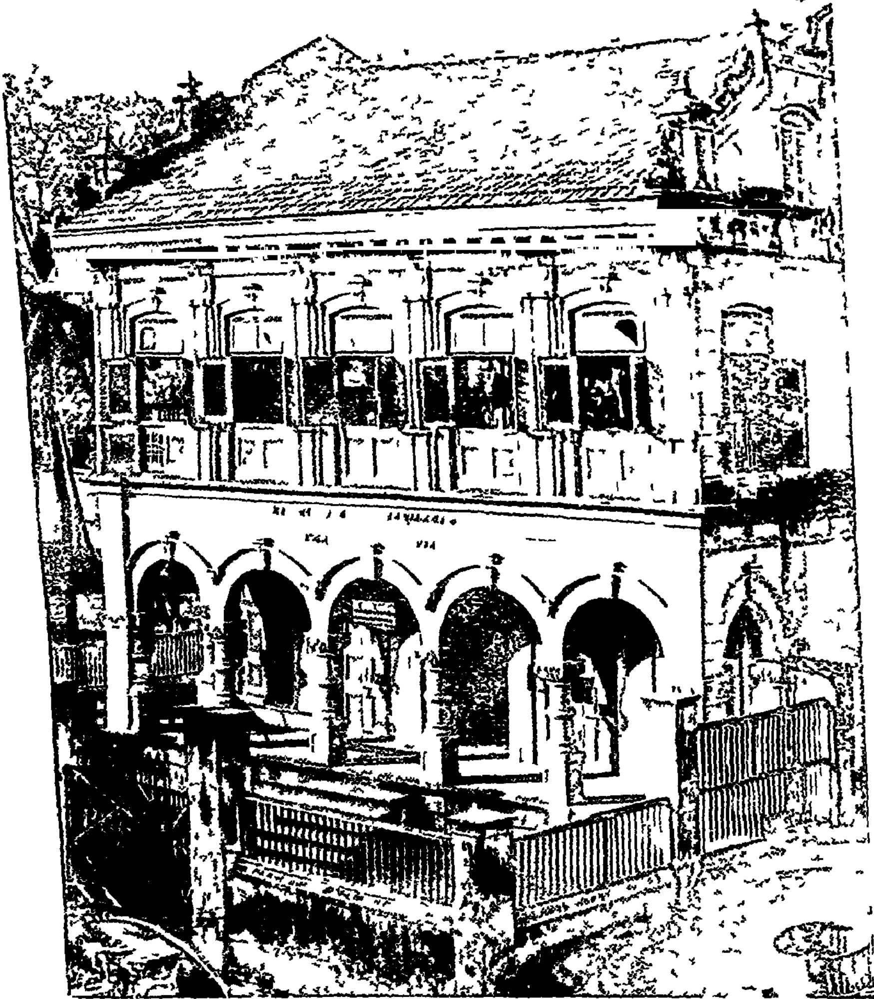
लि० भवदीय
मोतीचंद मगनभाई चोकसी
वगेरे ट्रस्टीओ

---

१ तेओश्रीनो सुरत उपर तो अनहद उपकार छे तेओश्रीने सवत १९७४ना वैशाख सुद १०ना सुरतमा ज 'आचार्य' पदवी अपाई हती श्रीजैनानन्दपुस्तकालय, श्रीवर्धमानजैनताम्रपत्रागममदिर वगेरे सुरतमा ज छे अने स० २००६ ना वैशाख वद ५ मे 'स्वर्गवास' पण सुरतमा ज थयो छे तेओश्रीनो अग्निसस्कार पण सुरत शहेरनी मध्यवर्ती गोपीपुरामा आगममदिरना सामे जूनी अदालतथी ओळखाती जमीनमा थयो हतो वळी ते ज जग्या उपर गुरुदेवश्रीना स्मरण तरीके सपूर्ण इतिहासने जणावनार 'श्रीआगमोद्धारकगुरुमदिर' बधाववामा आव्युं छे तेओश्रीनु मुख्य कार्यक्षेत्र सुरत ज रह्यु हतुं तेनी प्रतिक तरीके अनेक ज्ञान पिपासानी सस्थाओ स्थपाई हती

(१) शेठदेवचद्र–लालभाई–जैनपुस्तकोद्धारफड,
(२) शेठनगीनभाई मछुभाई जैन साहित्योद्धार फड
(३) श्री रत्नसागरजीजैनमिडलस्कूल (विद्याशाला) कायमी फड
(४) श्रीजैनतत्त्वबोधपाठशाला वगेरे अनेक सस्थाओ तेओना उपदेशनु ज परिणाम छे

शेठ-देवचंद-लालभाई-जैनविद्यार्थीभुवन



जेमा
शेठ-देवचद-लालभाई-जैनपुस्तकोद्धारफड तरफथी
पुस्तकालय छे अने
प्रसिद्ध थता पुस्तकोनो सग्रह अने वेचाण थाय छे

गोपीपुरा, बडेखानो चकलो, सुरत

आ संस्थाना प्रथम पुस्तकना संपादक तरीके पण आचार्यदेव [1]श्रीआनन्दसागरसूरीश्वरजी म० हता अने बीजा सैंकडानी शरुआतना प्रथम पुस्तक तरीके पण तेओश्रीनो सकलित अमूल्य कोषनो भाग १ स० २०१२ मां प्रसिद्ध थयो

कोषनी विशिष्टता अंगे सपादकश्रीओ पहेला भागना निवेदनमा लख्युं छे अमारी सस्थाए आना प्रकाशनमा वधारे रस लीधो तेनुं मुख्य कारण ए छे, के आज सुधी छपायेला प्राकृत कोषोमा अभिधानराजेन्द्रकोष, पाइयसद्दमहण्णवो आदि केटलाक कोषो छे पण तेमा न्यूनाधिकरूपे विचार करता उपयोगितामा वाध आवे छे—जेमके अभिधानराजेन्द्रकोष प्रमाणमा एटलो वधो मोटो छे के तेमांथी कोई शब्द शोधवा माटे वधारे परिश्रम पडे अने छपाईमा के सम्पादनमा त्रुटी रहेवाने लीधे सूत्रो अने ते ते प्रकरणो घणा परिश्रम पछी पण जडता नथी पाइयसद्दमहण्णवोमा जैन-सैद्धान्तिक शब्दो उपर वधारे भार मूक्यो होय तेम जणातुं नथी पण प्रस्तुत ग्रन्थमा कोई पण जैन के जैनेतर विद्वान् प्रचलित जैन पारिभाषिक शब्दोनो यथार्थ परिचय टूंकमा ते शब्दना स्थल सहित सहेलाईथी प्राप्त करी शके एवी तक छे, तथा मुनिराजो पण ग्रन्थ सम्पादनना कार्योमां सहायता लई शके तेम पण छे

अमे इच्छीए छीए के आ प्रकाशननो विद्वज्जनो योग्य आदर करशे ज

आ कोषने अंगे संज्ञाओनी समजणो तथा ते ते ग्रन्थोना पानाओनी सूची पण सपादक पू महाराजोए आपी छे

प्रस्तावना सजोगवशात् अत्यारे आपी शक्यो नथी पण त्रीजा के चोथा भागमा आपशुं. महाराज श्रीअभयसागरजी महाराजने लखवा माटे आमन्त्रण आप्युं छे

अमारा प्रकाशन कार्यमा जे जे महाशयोए अमने मदद करी छे ते ते महाशयोना अमे ऋणी छीए

वि० सं० २०२०
द्वि० कार्तिक (क्षयमागसर) सुद १
ता १७–११–१९६३

लि० भवदीय
मोतीचंद मगनभाई चोकसी
वगेरे ट्रस्टीओ

---

१ तेओश्रीनो सुरत उपर तो अनहद उपकार छे तेओश्रीने सवत १९७४ना वैशाख सुद १०ना सुरतमा ज 'आचार्य' पदवी अपाई हती श्रीजैनानन्दपुस्तकालय, श्रीवर्धमानजैनताम्रपत्रागममंदिर वगेरे सुरतमा ज छे अने स० २००६ ना वैशाख वद ५ मे 'स्वर्गवास' पण सुरतमा ज थयो छे तेओश्रीनो अग्निसस्कार पण सुरत शहेरनी मध्यवर्त्ती गोपीपुरामा आगममंदिरना सामे जूनी अदालतथी ओळखाती जमीनमा थयो हतो वळी ते ज जग्या उपर गुरुदेवश्रीना स्मरण तरीके मपूर्ण इतिहासने जणावनारु 'श्रीआगमोद्धारकगुरुमंदिर' बधाववामा आव्यु छे

तेओश्रीनु मुख्य कार्यक्षेत्र सुरत ज रह्यु हतु . तेनी प्रतिक तरीके अनेक ज्ञान पिपासानी सस्थाओ स्थपाई हती

(१) शेठदेवचद्र–लालभाई–जैनपुस्तकोद्धारफड,

(२) शेठनगीनभाई मछुभाई जैन साहित्योद्धार फड

(३) श्री रत्नसागरजीजैनमिडलस्कूल (विद्याशाला) कायमी फड

(४) श्रीजैनतत्त्वबोधपाठशाला वगेरे अनेक सस्थाओ तेओना उपदेशनु ज परिणाम छे

स्वल्पम्

॥ नमो चोवीसाए तित्थयराणं उसभाइमहावीरपज्जवसाणाण ॥

अमोने जणावता हर्ष थाय छे के आगमोद्धारकश्रीए सकलित अल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्द-कोषना प्रथम भागनुं सपादन कार्य अमोने (मने तथा स्व० मुनिश्रीक्षेमंकरसागरजीने) मल्यु हतु अने ते प्रथम भागनु कार्य अमे पूर्ण कर्युं हतु तेना बाकी रहेला बीजा भागोनु सपादन करवानु कार्य मने स० २०१५ मा मल्यु ते कार्य मे यथाशक्य शरू कर्युं, एना परिणामे आजे तेनो बीजो भाग 'क थी झ' सुधीनो पूर्ण कर्यो छे अने तेनी आगलनु सम्पादन कार्य पण चालु ज राख्युं छे

अमोए यत्किंचित् आ कोषना अंगेनु मार्गदर्शन प्रथम भागमां सम्पादकना वक्तव्यमां आप्यु छे, तेथी अत्यारे ते अंगे काई विशेष कहेवु नथी, पण त्रीजा के चोथा भागमां ज्यारे प्रस्तावना आपीशु ते वखते लखवानी इच्छा छे

प्रसगवशात् एटलु जणाववु जोइए के—अमारी सम्पादक बेलडीए 'क थी झ' सुधीनु मैटर लगभग तैयार कर्युं हतु पण नवी प्रेस कोपी बनाववानी हती अने काईक सुधारो करवानो हतो एटला पुरतु ज ते अधूरु हतु एटले आ बीजा भागनी अदर तो रधायेलु खावानु हतु पण ट थी मांडीने मेलवेला, अधूरा मेलवेला, नहि मेलवेला, वधाय अक्षरोनु कार्य मारे करवानु हतु कारणके मारा जोडीदार स्व० मुनिश्री क्षेमकरसागरजी स० २०११ ना चैत्र वदी०)) नी रात्रे पोणा अगीआर वागे झेरी जानवरना करडवाथी कालधर्म पाम्या अेटले वैशाख महीनाथी जवाबदारी मारा एकलाने शिरे आवी परतु गुरुदेवश्रीना पुण्य प्रतापे ते जवाबदारी हुँ उठावी शक्यो अने आ बीजा भागनु सम्पादन करी शक्यो अेटले हवे ट थी पचास टका तैयार करेला मैटरने तैयार करवुं अने सम्पादन करवु ए बधीए जवाबदारी मारे शिर रही

आ भागनी अदर 'क थी झ' सुधीना अक्षरो आपेला छे. पण त्रीजा अने चोथा भागमां 'ट थी ह' सुधीना अक्षरो अने ज्ञाताजी विगेरेना तेमज बीजा मेलवतां भिन्न भिन्न नीकलेला शब्दो तेम ज व्याकरणना 'उणादिशब्दो' अने देशी नाममालाना शब्दो परिशिष्टमा आपवानु विचार्युं छे

सज्ञापत्र, पत्राकसूची अने शुद्धिपत्र आमा आपवामा आव्या छे. वली शेठ देवचन्द लालभाई० (आ फंडना) नो देवानंदाङ्कमानु मैटर पाना १ थी ४४ आपवामां आव्या छे तेमा पाना १ थी १० भेट प्रचार योजना पाना १ थी ३९ प्रसिद्ध थएला ग्रंथोनी यादी अने ४० थी ४४ ग्रथ प्रकाशन नवी योजना एटलु आपवामा आव्यु छे

संकलनकार परमगुरुदेवना चरणे तो आ सरज मस्तक सदाए नमेलु ज छ

मने आ सपादननी अदर मदद करनार मुनिश्रीप्रबोधसागरजी तथा मुनिश्रीप्रमोदसागर-जी ने (गुरुशिष्य बेलडीने) याद करु छु तेम ज बीजाओए मने सहाय करी होय ते बधानो हुँ ऋणी छु एक वात जरूर याद देवी घटे छे के मने उत्साह आपवामा भाई श्रीकेशरीचद झवेरी तो छे ज

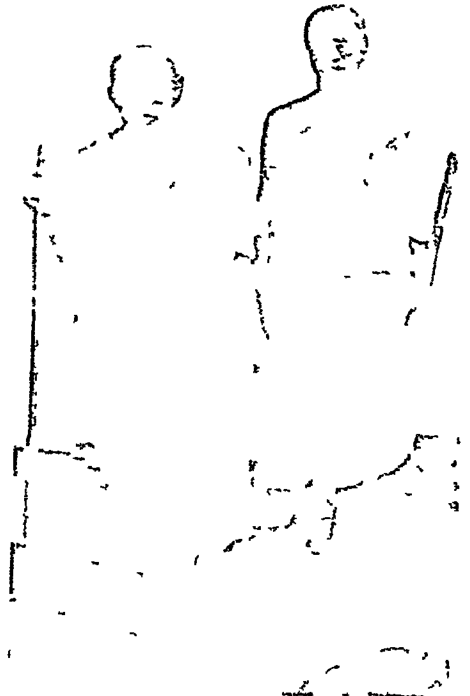
स० २०२०
पोष वद १ मंगलवार
ठि नवरगपुरा, पोस्ट पासे,
जैन उपाश्रय
अमदावाद न० ९

लि०
आगमोद्धारक उपसंपदाप्राप्त
चरणरेणु
कंचन.



आ संस्थाना निर्माता
ध्यानस्थस्वर्गत आगमोद्धारक आचार्य
श्रीआनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराज

गुरु-शिष्य वेलडी



आ. श्रीमाणिक्यसागरसूरीश्वरजी महाराज

स्वल्पम्

॥ णमो चोवीसाए तित्थयराणं उसभाइमहावीरपज्जवसाणाण ॥

अमोने जणावता हर्ष थाय छे के आगमोद्धारकश्रीए सकलित अल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्द-कोषना प्रथम भागनुं सपादन कार्य अमोने (मने तथा स्व० मुनिश्रीक्षेमकरसागरजीने) मल्यु हतुं अने ते प्रथम भागनु कार्य अमे पूर्ण कर्यु हतुं तेना बाकी रहेला बीजा भागोनु सपादन करवानु कार्य मने स० २०१५ मा मल्यु ते कार्य मे यथाशक्य शरू कर्यु, एना परिणामे आजे तेनो बीजो भाग 'क थी झ' सुधीनो पूर्ण कर्यो छे अने तेनी आगलनु सम्पादन कार्य पण चालु ज राख्यु छे

अमोए यत्किंचित् आ कोषना अगेनु मार्गदर्शन प्रथम भागमा सम्पादकना वक्तव्यमा आप्यु छे, तेथी अत्यारे ते अगे काई विशेष कहेवु नथी, पण त्रीजा के चोथा भागमा ज्यारे प्रस्तावना आपीशु ते वखते लखवानी इच्छा छे

प्रसगवशात् एटलु जणाववु जोइए के-अमारी सम्पादक वेलडीए 'क थी झ' सुधीनु मैटर लगभग तैयार कर्यु हतु पण नवी प्रेस कोपी बनाववानी हती अने कांईक सुधारो करवानो हतो एटला पुरतु ज ते अधूरु हतु एटले आ बीजा भागनी अदर तो रधायेलु खावानु हतुं पण ट थी मांडीने मेलवेला, अधूरा मेलवेला, नहि मेलवेला, वधाय अक्षरोनुं कार्य मारे करवानु हतु कारणके मारा जोडीदार स्व० मुनिश्री क्षेमंकरसागरजी स० २०११ ना चैत्र वदी०)) नी रात्रे पोणा अगीआर वागे झेरी जानवरना करडवाथी कालधर्म पाम्या अेटले वैशाख महीनाथी जवाबदारी मारा एकलाने शिरे आवी परतु गुरुदेवश्रीना पुण्य प्रतापे ते जवाबदारी हुँ उठावी शक्यो अने आ बीजा भागनुं सम्पादन करी शक्यो अेटले हवे ट थी पचास टका तैयार करेला मेटरने तैयार करवुं अने सम्पादन करवु ए बधीए जवाबदारी मारे शिर रही

आ भागनी अदर 'क थी झ' सुधीना अक्षरो आपेला छे. पण त्रीजा अने चोथा भागमां 'ट थी ह' सुधीना अक्षरो अने ज्ञाताजी विगेरेना तेमज बीजा मेलवता भिन्न भिन्न नीकलेला शब्दो तेम ज व्याकरणना 'उणादिशब्दो' अने देशी नाममालाना शब्दो परिशिष्टमा आपवानु विचार्यु छे

संज्ञापत्र, पत्राकसूची अने शुद्धिपत्र आमा आपवामा आव्या छे. वली शेठ देवचद लालभाई० (आ फंडना) नो देवानंदाङ्कमानुं मैटर पाना १ थी ४४ आपवामां आव्या छे तेमां पाना १ थी १० भेट प्रचार योजना पाना १ थी ३९ प्रसिद्ध थएला ग्रथोनी यादी अने ४० थी ४४ ग्रंथ प्रकाशन नवी योजना एटलु आपवामा आव्यु छे

सकलनकार परमगुरुदेवना चरणे तो आ सरज मस्तक सदाए नमेलु ज छ

मने आ सपादननी अदर मदद करनार मुनिश्रीप्रबोधसागरजी तथा मुनिश्रीप्रमोदसागर-जी ने (गुरुशिष्य वेलडीने) याद करुं छु तेम ज बीजाओए मने सहाय करी होय ते बधानो हुँ ऋणी छु एक वात जरूर याद देवी घटे छे के मने उत्साह आपवामां भाई श्रीकेशरीचद झवेरी तो छे ज

स० २०२०
पोष वद १ मगलवार
ठि नवरगपुरा, पोस्ट पासे,
जैन उपाश्रय
अमदावाद न० ९

लि०
आगमोद्धारक उपसंपदाप्राप्त
चरणरेणु
कंचन.

पत्राङ्कसूची

श्रीआचाराङ्गम्

प्रथम श्रुतस्कध

अध्ययनानि	आपत्र
१	८१
२	१४८
३	१७४
४	१९५
५	२३१
६	२५८
८	२९६
९	३१७

द्वितीय श्रुतस्कध

चूला–१

१	३५८
२	३७४
३	३८४
४	३९१
५	३९८
६	४०१
७	४०६
चूला–२	४२७
" ३	४२९
" ४	४३२

श्रीसूत्रकृताङ्गम्

प्रथम श्रुतस्कध

अध्ययनानि	आपत्र
१	५२
२	७७
३	१०१
४	१२१
५	१४१
६	१५३
७	१६५
८	१७५
९	१८६
१०	
११	२०७
१२	२२९
१३	२४०
१४	२५२
१५	२६०
१६	२६६

द्वितीय श्रुतस्कध

१	३०३
२	३४२
३	३६०
४	३७०
५	३८५
६	४०५
७	४२७

श्रीस्थानङ्गम्

अध्ययनानि	आपत्र
१	३८
२	१०१
३	१७९
४	२८९
५	३५२
६	३८०
७	४१५
८	४४३
९	४६९
१०	५२८

श्रीसमवायाङ्गम्

आविषय	आपत्र
सागरोवम–कोटाकोटी	१०५
गणिपिटक	१३३
अवसरपिणि	१५२
निगमनम्	१६०

श्रीभगवतीजी

शतकानि	आपत्र
१	१०८
२	१५२
३	२०२
४	२०६
५	२४९
६	२८६
७	३२७
८	४२४
९	४९२
१०	५०८
११	५५२
१२	५९२
१३	६२९
१४	६५८
१५	६९६
१६	७१९
१७	७३१
१८	७६०
१९	७७३
२०	८००
२१	८०२
२२	८०४
२३	८०५
२४	८५१
२५	९२८
२६	९३७
२७	९३८
२८	९३९
२९	९४१
३०	९४८
३१	९५०
३२	९५३
३३	९६४
३४	९७०
३५	९७१
३६	९७१
३७	९७१
३८	९७१
३९	९७१
४०	९७५
४१	९८१

श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गम्

प्रथम श्रुतस्कध

अध्ययनानि	आपत्र
१	७७
२	९०
३	९६
४	९९
५	११३
६	११४
७	१२०
८	१५५
९	१६९
१०	१७०
११	१७३
१२	१७३
१३	१८२
१४	१९२
१५	१९५
१६	२२६
१७	२३४
१८	२४२
१९	२४५

द्वितीय श्रुतस्कध

१–१०	२५४

श्रीउपासकदशाङ्गम्

१–१०	५४

श्रीअन्तकृद्दशाङ्गम्

वर्गा	आपत्र
१–८	३२

श्रीआवश्यकसूत्रम्

आविपय	आपत्र
पिठिका	५०
प्रथमवरवरिका	१३६
द्वितीयवरवरिका	१८८
गणधरवाद	२५६
निह्नववाद	३२५
नमस्कारनिर्युक्ति	४५२
१ मामायिकनिर्युक्ति	४९२
२ अध्ययनम्	५१०
३ ,,	५५०
४ ,,	७६३
५ ,,	८०१
६ ,,	८६६

श्रीदशवैकालिकम्

टीका		चूर्णि	
मुद्रित		हस्तपोथी	मुद्रित
अध्ययनानि	आपत्र	आपत्र	आपृष्ठ
१	८१	३२	७०
२	९९	४१	९२
३	११९	५२	११७
४	१६०	७२	१५८
५	१९०	८९	२०६
६	२०६	१०१	२३४
७	२२३	११५	२६५
८	२३८	१२८	२९४
९	२५८	१४३	३२९
१०	२६८	१५२	३४८
चू १	२७७	१६०	३६६
चू २	२८६	१६६	३८०

श्रीउत्तराध्ययनानि

अध्ययनानि	आपत्र	अध्ययनानि	आपत्र
१	७०	१९	४६५
२	१४०	२०	४८१
३	१८९	२१	४८७
४	२२८	२२	४९६
५	२५४	२३	५१२
६	२७०	२४	५१९
७	२८५	२५	५३१
८	२९७	२६	५४७
९	३१९	२७	५५३
१०	३४१	२८	५६९
११	३५३	२९	५९७
१२	३७३	३०	६०९
१३	३९२	३१	६१८
१४	४११	३२	६३९
१५	४१९	३३	६४८
१६	४३०	३४	६६२
१७	४३६	३५	६६८
१८	४४९	३६	७१४

श्रीविशेषावश्यकम्

आविपय	आपत्र
आभिनिबोधिकज्ञान	२४९
केवलज्ञान	२९९
उद्देशादिद्वारव्याख्या	६६२
गणधरवाद	८३६
निह्नववाद	१०४४
अर्हन्नमस्कार	११८०
सिद्धनमस्कार	१२२७
प्रशस्ति	१३६०

श्रीपिण्डनिर्युक्तिः

आविषय	आपत्र
पिण्डनिरुपणम्	२८
उद्गमादिदोषा	११९
उत्पादनादिदोपा	१४६
ग्रासैषणा	१७८

श्रीनंदीसूत्रम्

आविपय	आपत्र
पर्षद्	६४
अवधिज्ञानम्	९८
मन पर्यवज्ञानम्	१२१
केवलज्ञानम्	१२९
मतिज्ञानम्	१८९
श्रुतज्ञानम्	२४७

श्रीओघनिर्युक्तिः

आविपय	आपत्र
प्रतिलेखनादि	१२७
पिण्डद्वारम्	२०७
विशुद्धिद्वारम्	२३७

श्रीअनुयोगद्वाराणि

आविपय	आपत्र
आवश्यकश्रुतस्कध-निक्षेपा	४३
आनुपूर्वी	१०४
दशनामाधिकार	१५०
प्रमाणद्वाराधिकार	२४१
निक्षेपाधिकार	२५७
अनुगमाधिकार	२६२
नयाधिकार	२६७

—: शुद्धिपत्रकम् :—

पृष्ठ	विभाग	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२४१	१	२७	ककी	ककी
	२	१६	अन्यान्य०	अन्योन्य०
	२	२४	काङ्क्षप्र०	काङ्क्षाप्र०
२४४	१	५	कडूसडिओ	कडूसठिओ
२४५	१	३	घड्णो	घड्णो
२५१	१	१६	०प्रभृवि०	०प्रभृति०
	१	२४	चतुष्पर्यं०	चतुष्पर्य०
२५२	२	१३	अडुअ	कडुअ
२५५	१	६	०वालसमुद्रे	०वलिसमुद्रे
२५६	१	२१	वर्णवाली	कर्णवाली
२६४	१	८	प्रज्ञायनाया	प्रज्ञापनाया
	२	१०	अनुष्ठाम्	अनुष्ठानम्
	२	१८	सप्रमावा	सप्रभावा
२६६	२	१	अहारा०	आहारा०
२७२	२	२२	०भारण०	०भरण०
२७३	२	६	शैल्य०	रौल्य०
२७४	२	६	नीरीगता०	नीरोगता०
२७५	२	३३	०दत्री	०दात्री
२७८	१	२१	ज्ञावे	जवे
	२	१६	घ्याय०	घ्माय०
२८६	२	३४	०रजन्यो	०रजन्या
२८९	२	३	०ष्वष्टम०	०ष्वष्टमम०
२९१	२	२४	०वृत्त्वम्	वृत्त्यम्०
२९४	१	१३	किर्त्ति	कीर्त्ति
		२१	किर्त्ति०	कीर्त्ति०
२९५	१	१,२	०पाद०	०वाद०
	१	२४	सम्यग०	सम्यग्
२९७	२	२७	क्रीडत	क्रीडित
	२	२७	१६६	१६
२९८	२	१७	तीर्यक०	तिर्यक्
२९९	१	२	पूर्वाद्ध०	पूर्वाद्धा०
	२	२४	द्रष्टा	दृष्टा
३०१	१	११	०नमिव	०नामिव
	२	३४	०द्विहस्ति०	०द्विहस्त०

पृष्ठ	विभाग	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३०९	१	१२	०णवधि	०णुवधि
३१०	१	२७	परेष	परेषा
३१२	२	१०	व्यविर्त्तका	व्यावर्त्तक
३१७	१	३३	शिल्पेर०	शिल्पेना०
	२	३०	गत्री०	गन्त्री०
३१९	२	१६	गलका	लगका
३२०	१	३०	निष्नन्न०	निष्पन्न०
३२१	२	३०	सनख्ख०	सनख०
३२३	१	३३	कसलग	कोसलग
३२६	२	२	क्षोम	क्षोभ
	२	६	स्नेहृ०	स्नेहा०
३३३	१	३०	कर्मकारी	कर्मकरी
३३६	१	३५	खिसात	खिसति
	१	३५	नन्दति	निन्दति
	२	१४	०प्रष्ठित	०प्रतिष्ठित
३३९	२	१४	सोपक्रममम्	सोपक्रमम्
३४०	२	५	प्रकारो०	प्राकारो०
३४६	१	१९	युण्य०	युग्य०
३५०	१	३५	०त्तरोस्या	०त्तरस्या
३५१	१	४	ज्योतिषका	ज्योतिषिका
३५३	२	४	पतिप्प०	गतिप्प०
३५४	१	२३	०वाशाद्	०वासाद्
३५६	२	३२	कल्पाश्चल०	कल्पाश्चला०
३५७	२	२७	महिष	माहिष
३५९	२	३४	प्रहरणनाय	प्रहरणाय
३६०	२	४	करणा०	कराणा०
३६१	१	१७	स्वभवा	स्वभावा
३६३	१	२६	ष्यन्ती०	न्ती०
३६५	१	१९	गहस्थ	गृहस्थ
	१	२६	घनाभिप	घनाधिप
३६८	२	१४	०स्यामिन	स्वामिन
	२	२१	कालन्तर-	कालान्तर-
३६९	२	२२	गद	गुद
३७०	१	१४	गुणति	गुणन्ति

सचूर्णिक श्रीनिशीथसूत्रम् — हस्तपोथी			लीथोप्रिन्ट		मुद्रितम्	
भाग	उद्देशक	आपत्र	भाग	आपत्र	भाग	आपत्र
१	१	१२९	१	२०२	१	१६६
					२	६६
	२	१८२	२	३०८		१९७
	३	१९४		३३४		२२६
	४	२२२		४०४		३०५
	५	२४७		४४५		३७०
	६	२५३	३	४६३		३९४
	७	२५७		४७८		४१३
	८	२७०		५०५		४४७
	९	२७७		५३३		४७०
	१०	३६१		६६५	३	१७०
२	११	५८	४	७७३		३१३
	१२	८२		८३२		३७४
	१३	१०३		८७५		४२६
	१४	१२३		९१६		४७७
	१५	२७३	५	१००८		५९४
३	१६	५६		११४१	४	१६३
	१७	६२		११६०		२०३
	१८	६५	६	११६७		२१८
	१९	८४		१२१२		२६९
	२०	१७२		१३३८		४११
				+२		
				+३५		४४३

श्रीबृहत्कल्पसूत्रम् — हस्तपोथी			
भाग	उद्देशक	आपत्र	आगाथा
१	१	७७	५००
		१६६	१०००
		२३५	१५००
		३१७	२१३०
२		१११	३०००
		१५५	३२९२
	२	२०३	४६४
	३	२९३	७२८
३		६४	११९२
	४	१६८	८०५
	५	२१२	३७५
	६	२६७	४३०
— मुद्रित —			
१	१	२५४	८०५
२		६१०	२१२४
३		९२१	३२८९
४	२	१०२२	३६७२
	३	१३०६	४८७६
५	४	१५०२	५६८१
	५	१५९९	६०५९
६	६	१७१२	६४९०

श्रीव्यवहारसूत्रम् — हस्तपोथी			मुद्रित	
भाग	उद्देशक	आपत्र	उद्देशक	आपत्र
१	१ {	१७४	१	१-६१
	}	०		१-९९
	{	०		१-३७०
	२	२१९	२	१-८७
	३	२५८	३	१-७३
२	४	११०	४	१-१०४
	५	१३५	५	१-२९
	६	१९९	६	१-७१
	७	२८३	७	१-९५
	८	३३६	८	१-६०
	९	३५५	९	१-२३
	१०	४५८	१०	१-११४

श्रीआवश्यकसूत्रम्	
आविपय	आपत्र
पिठिका	५०
प्रथमवरवरिका	१३६
द्वितीयवरवरिका	१८८
गणधरवाद	२५६
निह्लववाद	३२५
नमस्कारनिर्युक्ति	४५२
१ सामायिकनिर्युक्ति	४६२
२ अध्ययनम्	५१०
३ "	५५०
४ "	७६३
५ "	८०१
६ "	८६६

श्रीदशवैकालिकम्			
टीका		चूर्णि	
मुद्रित		हस्तपोथी	मुद्रित
अध्ययनानि	आपत्र	आपत्र	आपृष्ठ
१	८१	३२	७०
२	९९	४१	९२
३	११९	५२	११७
४	१६०	७२	१५८
५	१९०	८९	२०६
६	२०६	१०१	२३४
७	२२३	११५	२६५
८	२३८	१२८	२९४
९	२५८	१४३	३२९
१०	२६८	१५२	३४८
चू १	२७७	१६०	३६६
चू २	२८६	१६६	३८०

श्रीउत्तराध्ययनानि			
अध्ययनानि	आपत्र	अध्ययनानि	आपत्र
१	७०	१९	४६५
२	१४०	२०	४८१
३	१८९	२१	४८७
४	२२८	२२	४९६
५	२५४	२३	५१२
६	२७०	२४	५१९
७	२८५	२५	५३१
८	२९७	२६	५४७
९	३१९	२७	५५३
१०	३४१	२८	५६९
११	३५३	२९	५९७
१२	३७३	३०	६०९
१३	३९२	३१	६१८
१४	४११	३२	६३९
१५	४१९	३३	६४८
१६	४३०	३४	६६२
१७	४३६	३५	६६८
१८	४४९	३६	७१४

श्रीविशेपावश्यकम्	
आविपय	आपत्र
आभिनिवोधिकज्ञान	२४९
केवलज्ञान	२९९
उद्देशादिद्वारव्याख्या	६६२
गणधरवाद	८३६
निह्लववाद	१०४४
अर्हन्नमस्कार	११८०
सिद्धनमस्कार	१२२७
प्रशस्ति	१३६०

श्रीपिण्डनिर्युक्तिः	
आविपय	आपत्र
पिण्डनिरुपणम्	२८
उद्गमादिदोपा	११९
उत्पादनादिदोपा	१४६
ग्रासैपणा	१७८

श्रीअनुयोगद्वाराणि	
आविपय	आपत्र
आवश्यकश्रुतस्कंध-निक्षेपा	४३
आनुपूर्वी	१०४
दशनामाधिकार	१५०
प्रमाणद्वाराधिकार	२४१
निक्षेपाधिकार	२५७
अनुगमाधिकार	२६२
नयाधिकार	२६७

श्रीओघनिर्युक्तिः	
आविपय	आपत्र
प्रतिलेखनादि	१२७
पिण्डद्वारम्	२०७
विशुद्धिद्वारम्	२३७

श्रीनंदीसूत्रम्	
आविपय	आपत्र
पर्पद्	६४
अवधिज्ञानम्	९८
मन पर्यवज्ञानम्	१२१
केवलज्ञानम्	१२९
मतिज्ञानम्	१८४
श्रुतज्ञानम्	२४७

—: शुद्धिपत्रकम् :—

पृष्ठ	विभाग	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२४१	१	२७	कको	कको
	२	१९	अन्यान्य०	अन्योन्य०
	२	२४	काङ्क्षप्र०	काङ्क्षाप्र०
२४४	१	५	कडूसडिओ	कडूसठिओ
२४५	१	३	घड्णो	घड्णो
२५१	१	१९	०प्रभृवि०	०प्रभृति०
	१	२४	चतुष्यर्यं०	चतुष्पर्यं०
२५२	२	१३	अडुअ	कडुअ
२५५	१	९	०वालसमुद्रे	०वलिसमुद्रे
२५६	१	२१	वर्णवाली	कर्णवाली
२६४	१	८	प्रज्ञायनाया	प्रज्ञापनाया
	२	१०	अनुष्ठाम्	अनुष्ठानम्
	२	१८	सप्रमावा	सप्रभावा
२६६	२	१	अहारा०	आहारा०
२७२	२	२२	०भारण०	०भरण०
२७३	२	६	शैत्य०	रौत्य०
२७४	२	६	नीरीगता०	नीरोगता०
२७५	२	३३	०दत्री	०दात्री
२७८	१	२१	ज्ञावे	जवे
	२	१६	च्याय०	च्माय०
२८६	२	३४	०रजन्यो	०रजन्या
२८९	२	३	०च्वष्टम०	०च्वष्टमम०
२९१	२	२४	०वृत्त्वम्	वृत्त्यम्०
२९४	१	१३	किर्त्ति	कीर्त्ति
		२१	किर्त्ति०	कीर्त्ति०
२९५	१	१२	०पाद०	०वाद०
	१	२४	सम्यग०	सम्यग्
२९७	२	२७	क्रीडत	क्रीडित
	२	२७	१६९	१६
२९८	२	१७	तीर्यक०	तिर्यक्
२९९	१	२	पूर्वाद्ध०	पूर्वाद्धा०
	२	२४	द्रष्टा	दृष्टा
३०१	१	११	०नमिव	०नामिव
	२	३४	०द्विहस्ति०	०द्विहस्त०
३०९	१	१२	०णवधि	०णुवधि
३१०	१	२७	परेष	परेपा
३१२	२	१०	व्यविर्त्तका	व्यावर्त्तक
३१७	१	३३	शिल्पेर०	शिल्पेना०
	२	३०	गत्री०	गन्त्री०
३१९	२	१९	गलका	लगका
३२०	१	३०	निष्नन्न०	निष्पन्न०
३२१	२	३०	सनस्ख०	सनख०
३२३	१	३३	कसलग	कोसलग
३२६	२	२	क्षोम	क्षोभ
	२	९	स्नेह०	स्नेहा०
३३३	१	३०	कर्मकारी	कर्मकरी
३३६	१	३५	खिसात	खिसति
	१	३५	नन्दति	निन्दति
	२	१४	०प्रष्ठित	०प्रतिष्ठित
३३९	२	१४	सोपक्रममम्	सोपक्रमम्
३४०	२	५	प्रकारो०	प्राकारो०
३४६	१	१९	युष्य०	युग्य०
३५०	१	३५	०त्तरोस्या	०त्तरस्या
३५१	१	४	ज्योतिषका	ज्योतिषिका
३५३	२	४	पतिप्प०	गतिप्प०
३५४	१	२३	०वाशाद्	०वासाद्
३५६	२	३२	कल्पाञ्चल०	कल्पाञ्चला०
३५७	२	२७	महिष	माहिष
३५९	२	३४	प्रहरणनाय	प्रहरणाय
३६०	२	४	करणा०	कराणा०
३६१	१	१७	स्वभवा	स्वभावा
३६३	१	२६	ष्यन्ती०	न्ती०
३६५	१	१९	गहस्थ	गृहस्थ
	१	२६	घनाभिप	घनाधिप
३६८	२	१४	०स्यामिन	स्वामिन
	२	२१	कालन्तर-	कालान्तर-
३६९	२	२२	गर्द	गुद
३७०	१	१४	गुणति	गुणन्ति

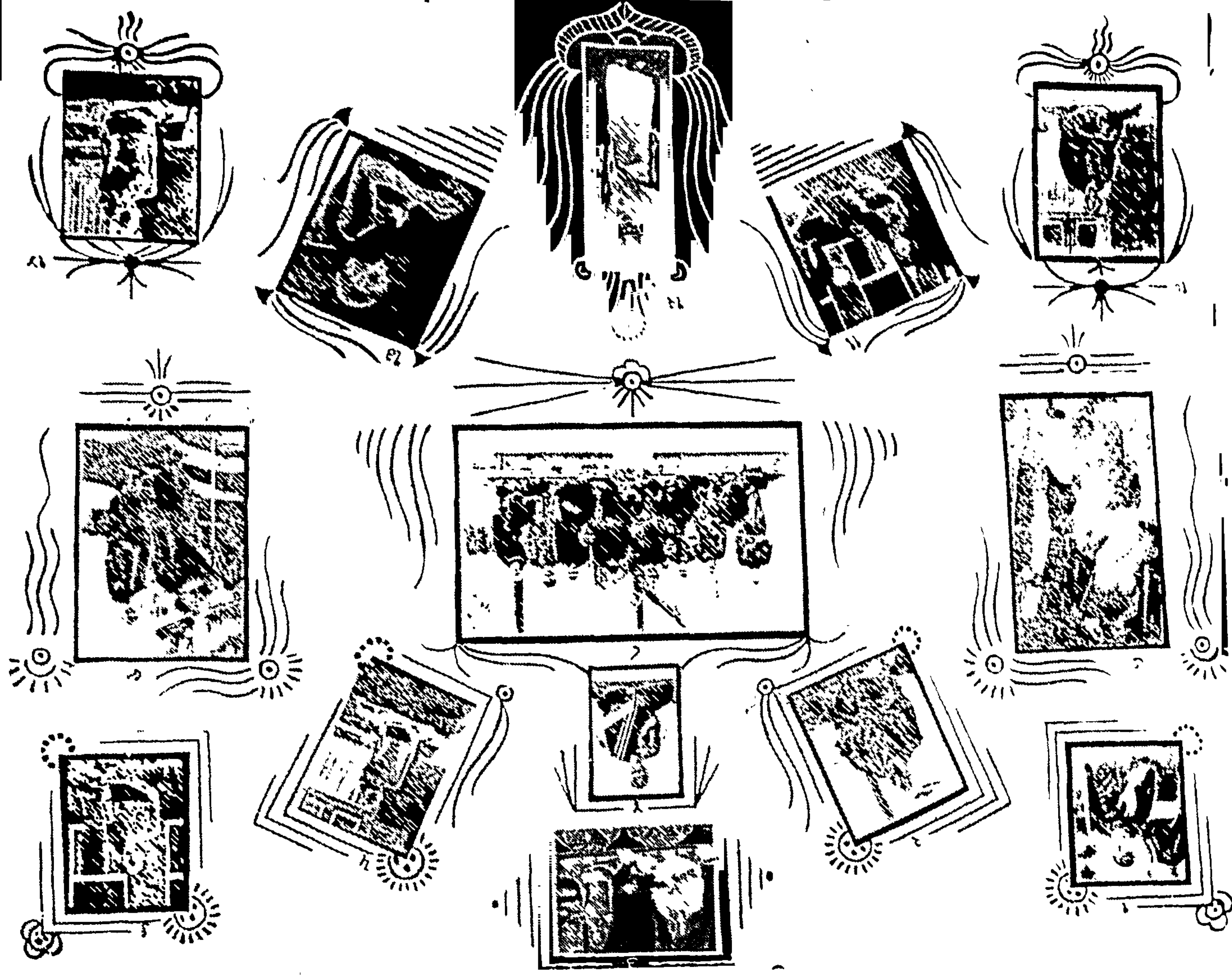
पृष्ठं	विभागः	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्ध
३७०	१	२	०कलो०	फलो०
३७९	१	१४	०स्पा०	०स्या०
३८२	२	५	कच्छाय	कटच्छाय
३८४	२	२८	निर्घण	निर्घृण
३८५	१	९	वस्तु	वस्तु
	२	६	उदासा०	उदात्ता०
३८८	१	८	०जामान	०जायमान
	२	४	ज्योत्सना	ज्योत्स्ना
३८९	१	१४	देवाता०	देवता
३९०	१	२६	आपस्तु	आपत्सु
	२	६	०हाररे०	०हारे०
	२	१०	०चनादि०	०वचनादि०
३९२	१	१८	०हन्या०	०हान्या०
	१	३०	०प्रहण०	प्रहरण०
	२	६	०चारण०	पारण०
	२	७३	ययोस्तौ	येपा ते
४०१	२	१५	चाउज्ञाभा	चाउज्ञामा
४०२	१	३२	चातुर्वर्णा०	चातुर्वर्ण०
४०४	१	३५	०गत्त्वा	०गत्या
४०७	१	९	०पद्र०	०पद०
	२	५	०पद०	०पदा०
	२	२६	०विद्युत०	०विद्युत्०
४०९	२	३	०श्च०	०च०
४११	१	२७	०व्यमनम्	०व्ययनम्
	१	३१	चुलसोश	चुलसोइ
	१	३१	चतुरक्षी०	चतुरशी
	२	१५	व्ययम्	व्ययनम्
४११	१	१०	अम्र	आम्र
	२	२	०रशिति०	०रशीति०
४१३	२	१	व्यूत	च्यूत
४१६	१	१६	खंदिअ	छदिअ
	१	३५	०रात्मकम्	०रायात्मकम्
४१७	१	२०	वाताहि०	वातादि०
४१८	२	१८	सम्मूच्छति	सम्मूर्च्छन्ति
४२०	१	१०	कमला०	कलमा०
४२०	१	१४	छदित्वा	छादित्वा
४२३	१	१८	क्षुधार्न्तयो	क्षुधार्त्तयो
४२६	२	३३	०विशेष०	०विशेषा०
४२८	१	१५	०विशेष	विशेषा
	१	३१	०निरिसरा	०निस्सिरा
४३१	२	३०	०पर्य०	०पर्व०
४३४	१	३३	गत्रा०	०गात्रा
४३५	१	२६	ऊर्द्ध	ऊर्द्ध्व
		२८	ऊर्द्ध	ऊर्द्ध्व
४३७	२	११	देवराजायाणा	देवराणा जाया
४३९	१	९	निर्विजा	निर्बीजा
	२	२१	०मात्रक०	०मातृक०
	१	२३	०विशे	०विशेष
४४१	१	२४	सग्राहा०	सग्राह्य०
४४२	१	३२	जेतव्ययम्	जेतव्यम्
४४४	१	८	०पती	०पति
	१	२७	०षेवा०	०सेवा०
	१	३४	प्रावट्०	प्रावृट्०
	२	२	सवानु०	सर्वानु०
४४७	२	६	शुषमा०	सुषमा०
	२	१०	भूदेश०	०देश०
	२	२२	०रज्ञलानि	०रज्जुलानि
४४८	१	९	०णत्वा	णतत्वा
४४९	२	३०	सेवाना०	सेवना०
४५१	१	७	युजयन्त	युज्यन्त
	२	१	०व्यन०	०व्ययन०
	२	१८	०वंद्धि	०वृंद्धि
४५२	१	१२	सम्यग०	सम्यग्०
	२	१०	०परि०	०पत्ति०
४५३	१	२८	व्यानमित	व्यामित
४५४	२	२१	मासानुपरियान्	ामुपरि यानु
	२	२२	मनोरोपण	मनारोपण

आ मकान

शेठ-देवचंद-लालभाइ-जैनपुस्तकोद्धार फंडनी कायमी रकमथी खरीदवामा आवेलु छे

रु १,१०,००० एक लाख दश हजार

फाळवादेवी न १९९ आ मकान छे तेमा भोयतळीए शयाजीविजय बोर्डिंग कु, पहेले माळे काशीनाथ वेकर, बीजे माळे जादवजी प्रेमजी गांधीना बोर्डी छे



ગ્રુપ ફોટાની માહિતિ

૧ ૨૦૦૪ આગમમંદિર સુરતની પ્રતિષ્ઠા પછી આશીર્વાદ

૨ ૨૦૦૪ નવલચંદ ખીમચંદ ઝવેરીની ધર્મશાળામા કંઈક જોતા

૩ અ સુરત નેમુભાઈની વાડીમા તેરે વખને બેઠેલા આ ૨૦૦૬ સ્વર્ગવાસ પૂર્વેનો ધ્યાનસ્થ મુદ્રાનો

૪ ૧૯૭૭ રતલામમા ગૃહસ્થની દાક્ષિણ્યતાનો

૫ ૨૦૦૬ વૈ વ ૫ ના સ્વર્ગગમન પૂર્વે કાયાની માયા મૂકી અર્ધપદ્માસને ધ્યાનસ્થ મુદ્રા સ્વીકારી તેનો

૬ આ શ્રી વિજયપ્રીતિસૂરિ મ૦ના આગ્રહથી રાંદેર પધાર્યા ત્યારે

૭ સુરતના આગમમંદિરની શીલા સ્થાપના મુહુર્તે વાસક્ષેપ નાખવાની તૈયારી

૮ ૧૯૯૨ મા સિદ્ધક્ષેત્ર ચાર આચાર્ય પદવીની યાદગીરીનો પાંચ આચાર્યનો

૯ ૨૦૦૪ મહા વ ૪ ના પ્રભાતે આગમમંદિર સુરતના પ્રથમ દ્વારોદ્ઘાટન બાદ દર્શન કરી પાછા ફરતી ગુરુશિષ્યની બેલડી

૧૦ ૨૦૦૪ સુરતમા કોઈ પદાર્થ જોતા

૧૧ ૨૦૦૩ ગઢેચમા કાઈક જોતા

૧૨ ૧૯૯૯ ની ચૈત્ર ઓળીમા કપડવંજ પધારતા ગ્રુપમાથી એક

૧૩ ૧૯૯૮ મા પાલીતાણામા છીકણીની ડબીવાળો

प. पू. ध्यानस्थस्वर्गत आगमोद्धारक आचार्य
श्रीआनंदसागर सूरीश्वरजी म. ना अनन्य पट्टधर
शान्तमूर्ति गच्छाधिपति विद्याव्यासंगी स्थवीर
मूलीनरेश प्रतिबोधक
आचार्यश्री माणिक्यसागरसूरीश्वरजी
महाराज





અર્પણ

પ્રથમ ભાગના સંશોધનમાં
ગુરુદેવની હાજરીમાં આપે
આપેલા માર્ગદર્શનને
સ્મરણ
કરીને
તેનો
દ્વિતીય ભાગ
આગમોદ્ધારકના અનન્ય પટ્ટધર
શાંતમૂર્તિના
કરકમલમાં
સાદર સમર્પણ

આપના સેવકો
પ્રકાશકો

श्रीआगमोद्धारकाष्टकम् ॥

पुरे कपडवञ्जाख्ये, श्राद्धमगनलालसूः ।
शासनरक्षणार्थं तु, यमुनाकुक्षिदीपक: ॥ १ ॥
हेमचन्द्रः समुत्पन्न, शशीवाभासयद्भुवम् ।
पित्रो: पवित्रसंस्कारात् बालोऽयं संस्कृतः सदा ॥ २ ॥ युग्मम्

અર્થ—કપડવંજ નામના નગરમા શ્રેષ્ઠી મગનલાલ અને શ્રીયમુનાદેવીના પુત્ર તરીકે શ્રીહેમચંદભાઈ શાસનની રક્ષા માટે ઉત્પન્ન થયા. જેમણે ચદ્રમાની જેમ પૃથ્વીને પ્રકાશિત કરી જેઓ માતાપિતાના પવિત્ર સસ્કારથી સસ્કારી હતા. (૧-૨)

प्रौढबुद्धिर्वशी ज्ञानी, विवेकी निर्भयः सदा ।
झवेरसागरस्यास–न्ने गुरोर्वाग्मिनो मुदा ॥ ३ ॥
प्रपेदे संयमं श्रेष्ठं, हेमचन्द्रो जितेन्द्रिय: ।
आनन्दसागरो नाम्ना विख्यातो वीरशासने ॥ ४ ॥ युग्मम्

અર્થ—પ્રૌઢ બુદ્ધિવાળા, ઇન્દ્રિયોને વશ કરનાર, જ્ઞાનવાળા, વિવેકશીલ, હમેશા નિર્ભય, જિતેન્દ્રિય એવા હેમચંદભાઇએ, વિદ્વાન શ્રીઝવેરસાગરજી મહારાજની પાસે ઉત્તમ સયમને ગ્રહણ કર્યું અને શ્રી વીરશાસનમા 'આનન્દસાગર'ના નામથી પ્રસિદ્ધ થયા (૩-૪)

गीतार्थसार्वभौमश्च, शैलानाधिपबोधकः ।
स्रष्टाऽऽगममन्दिरयो, श्रीतपागच्छभूषण ॥ ५ ॥
विपक्षपक्षकक्षस्य, नाशहेतुहुताशन ।
अजैषीत्पुरुषार्थैं स्वै–नैकशासनदूषकान् ॥ ६ ॥ युग्मम्

અર્થ—ગીતાર્થશિરોમણિ, શૈલાનાનરેશને પ્રતિબોધ કરનાર, ('સુર્યપુર' તથા પાલીતાણામા) આગમમંદિરનુ નિર્માણ કરાવનાર, તપાગચ્છમા ભૂષણસમાન, વિપક્ષરૂપી કાષ્ઠને નાશ કરવામાં અગ્નિસમાન એવા જેમણે પોતાના પુરુષાર્થથી અનેક શાસનના દૂષકોને જીત્યા. (૫-૬)

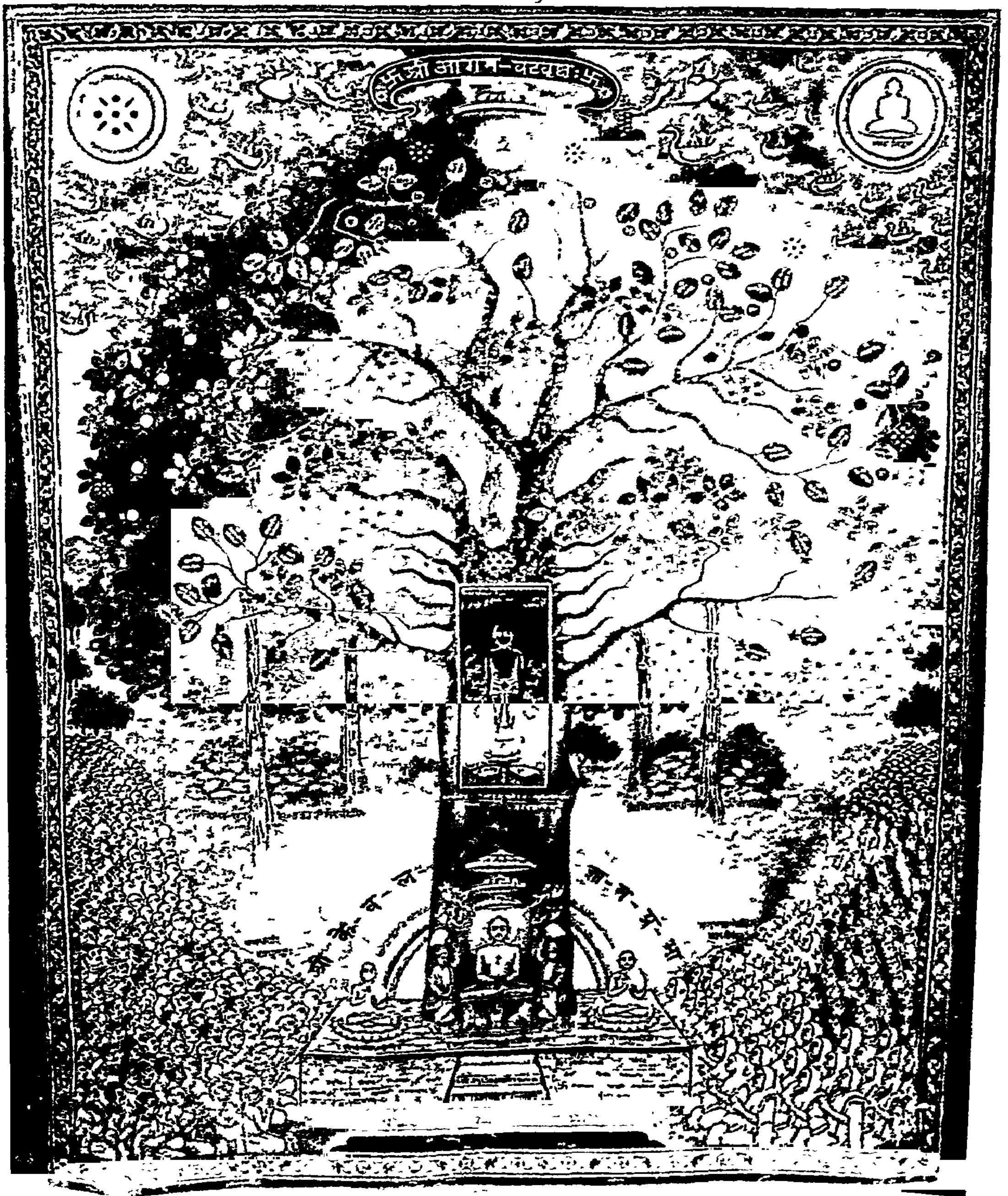
माणिक्यचन्द्रहेमादि–शिष्यमण्डलमण्डित ।
केशरियान्तरीक्षादौ श्रीजिनशासनस्य च ॥ ७ ॥
सम्मेतशिखरे तीर्थे योऽचम्पद्यशोध्वजम् ।
आगमोद्धारको जीयात् सूरिरान्दसागर ॥ ८ ॥ युग्मम्

અર્થ—આ. શ્રી મણિક્યસાગરજી, આ શ્રી ચન્દ્રસાગરજી, આ શ્રી હેમસાગરજી વગેરે શિષ્યમંડળથી શોભતા જેમણે કેશરિયાજી, અન્તરીક્ષજી તથા સમેતશિખરજી વ. તીર્થોમા શ્રી જિનશાસનની કીર્તિપતાકાને ફરકાવી તે આગમોદ્ધારક આચાર્યશ્રી આનન્દસાગરસૂરિજી વિજય પામો. (૭-૮)

अमरकीर्तिना क्लृप्त–मष्टकं पुण्यदायकम् ।
श्रोतॄणा पठता चैव, भूयात् मङ्गलकारकम् ॥ ९ ॥

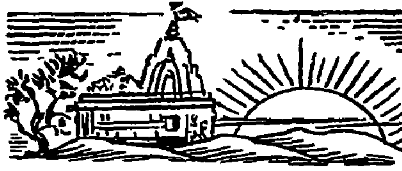
અર્થ—આ પ્રમાણે અમરકીર્તિએ બનાવેલુ, પુણ્યને આપનારું અષ્ટક, સાભળનાર તેમજ ભણનારને મંગલ કરનારુ થાવ. (૯)

☆



જૈન આગમોના સૈદ્ધાન્તિક અને ઐતિહાસિક સ્વરુપને સમજાવનાર

આગમવટવૃક્ષ



આગમ વટવૃક્ષ

(ટૂંક પરિચય)

જૈન શાસનમાં આરાધક આત્માઓને વર્તમાનકાળે પરમ આધારભૂત બે વસ્તુ છે
૧ જિન પ્રતિમા ૨ જિનાગમ

વિષય-કષાયના વિષમ સંસ્કારો અને પરસ્પર વિરૂદ્ધ નાનાવિધ સંપ્રદાયોની વિસંવાદી માન્યતાઓના ગજગ્રાહમાંથી છુટી નિષ્કપટભાવે શુદ્ધ આરાધના માટે ગીતાર્થોની નિશ્રાએ આ બે સાધનોનો યથાયોગ્ય શરણાગતભાવે આશરો લેવો પરમ હિતાવહ છે

આથી પૂર્વાચાર્ય ભગવંતોએ આ બે સાધનોને આબાલગોપાલ દરેક આરાધક સર્વસાધારણ રીતે પરમોત્કૃષ્ટ સાધનરૂપે સમજી શકે તેવી સૂર્ય-ચંદ્ર-સરોવર-સમુદ્ર-પુરૂષ-કલ્પવૃક્ષ આદિની ઉપમાઓ જણાવી છે

આવી એક અનુપમ ઉપમાના રહસ્યને સમજવા આગમ વટવૃક્ષ નામે પ્રસ્તુત ચિત્રનો પરિચય ભવ્યાત્માઓના હિતાર્થે અપાય છે

આ ચિત્રમાં નિષ્કારણ ઉપકારી વિશ્વવત્સલ શ્રીતીર્થંકર ભગવંતોએ ભાવકરૂણાથી પ્રરૂપેલ જગહિતકર માર્ગનું પ્રતિપાદન કરનારા આગમોની મહત્તા વટવૃક્ષની રૂપક ઉપમાદ્વારા સમજાવવા પ્રયાસ કર્યો છે

વટવૃક્ષ—બીજા બધા વૃક્ષો કરતા વડની મહત્તા, તેનો વિસ્તાર, વડવાઈઓથી ઉત્તરોત્તર થતો વિકાસ અને ત્રણે ઋતુમા એક સરખી રીતે દરેક પ્રાણીઓને આશ્રય મેળવવાની અનુકૂળતા આદિ કારણોથી જગજાહેર છે

તે રીતે નિષ્કારણ ભાવકરૂણાના ભંડાર શ્રીતીર્થંકર ભગવંતોએ પ્રરૂપેલ આગમો એકાંત-હિતકરતા અને અત્યંત ઉપયોગિતા વટવૃક્ષની ઉપમા દ્વારા સમજાય તેમ છે

ચબૂતરો—સામાન્ય રીતે વૃક્ષોનો વ્યવસ્થિત વિકાસ અને તેની ઉત્તરોત્તર સુરક્ષા તેમજ લોકો તેનો વધુ લાભ લે તે હેતુથી ઝાડના થડને ફરતો ગોળ કે ચોરસ ઓટલા જેવો ચબૂતરો જરૂરી છે

આ રીતે તત્ત્વજ્ઞાનના અખૂટ વારસા સમા જૈનાગમોના વ્યવસ્થિત અભ્યાસ દ્વારા જન્મતી વિવેકબુદ્ધિના પ્રતાપે મોહના અશુભ સંસ્કારોને ઘટાડવા-રોકવાની પ્રબળ તમન્નાને પોષક સચ્ચારિત્રની ભાવનાનું મૂળ આબાલગોપાલ સુલભ રીતે જેના પઠન-પાઠનથી બાલ-

જીવોના હૈયામા રોપાય છે તે ચાર મૂળ સૂત્રરૂપ ચોરસ–ઓટલો ચબુતરારૂપે આગમ–વટવૃક્ષને ફરતો બતાવવામાં આવ્યો છે

તેમા પણ આગળના ભાગે ઓટલા ઉપર ચઢવા માટે પગથીયા તરીકે નદીસૂત્ર અને અનુયોગ દ્વાર બતાવેલ છે, તે એટલા માટે કે કોઈ પણ આગમના વ્યવસ્થિત જ્ઞાન માટે મગલાચરણ તરીકે શ્રી નદીસૂત્રનુ અધ્યયન અને વ્યાખ્યાની પદ્ધતિઓની વિશિષ્ટ શૈલીને સમજવા શ્રી અનુયોગ–દ્વાર સૂત્રનુ પ્રાથમિક અધ્યયન અત્યત જરૂરી છે

વળી ચબુતરામા ઈંટો તરીકે ચાર મૂલસૂત્રો તેમજ તેના પેટા ભેદરૂપ અવાન્તર સૂત્રો દર્શાવ્યા છે.

તથા ચબુતરાની વચલી પટ્ટીમા મૂલસૂત્રોની લાક્ષણિક વ્યાખ્યા દર્શાવી છે, કે "શ્રીતીર્થંકર પરમાત્માઓએ સ્થાપેલ શાસનની આદિ અને અત જે સૂત્રોની હયાતી સાથે સકળાયેલ છે તે મૂલસૂત્ર"

ચબૂતરા પર મધ્ય ભાગે વર્તમાન આગમોને અર્થથી પ્રરૂપતા શ્રી ચરમતીર્થંકર શાસન-નાયક **શ્રીમહાવીર પરમાત્મા** અષ્ટપ્રાતિહાર્યસમેત ભાવતીર્થંકરની મુદ્રાએ દર્શાવ્યા છે, તેઓશ્રીની જમણી બાજુ અગ્યાર ગણધરોમા મુખ્ય અનતલબ્ધિનિધાન આદ્યગણધર **શ્રીગૌતમસ્વામીજી** અભયમુદ્રાએ તથા ડાબી બાજુ વર્ત્તમાન શ્રમણસમુદાયના નાયક પચમ ગણધર **શ્રીસુધર્માસ્વામીજી** પ્રવચન મુદ્રાએ દર્શાવ્યા છે

આ સિવાય ચબૂતરાની બને બાજુ સાધુ, સાધ્વી, શ્રાવક, શ્રાવિકારૂપ ચતુર્વિધ શ્રીસઘ પ્રભુની જગહિતકારિણી ભાવવાત્સલ્યપૂર્ણ દેશના અને વાણીના લાભની જિજ્ઞાસાવાળી મુદ્રાએ દર્શાવેલ છે

તેમા પણ ડાબી બાજુ સાધુઓની પ્રથમ હરોળમા બાકીના નવ ગણધરો વિશિષ્ટ તેજો-વલયથી જુદા તરી આવતા દર્શાવ્યા છે, તેમની પાછળ સાધુઓ અને શ્રાવકોનો વિપુલ સમૂહ દર્શાવ્યો છે

આ રીતે જમણી બાજુ વિશિષ્ટ તેજોવલયથી જુદા તરી આવતા શ્રીચદનબાલાજી આદિ સાધ્વીઓ અને તેમની પાછળ વિપુલ શ્રાવિકાઓ બતાવી છે

વળી ચબૂતરાની પાછળના ભાગે ઉગતા સૂર્યના પ્રકાશરૂપે શ્રીકેવલજ્ઞાનની પ્રભા બતાવેલ છે, તે એમ સૂચવે છે કે–કેવલજ્ઞાનની નિર્મળતાના પાયા ઉપરજ વીતરાગની વાણીની જગહિતકરતા નિર્ભર છે

આટલી વાત આગમવટવૃક્ષની સર્વહિતકરતાને સાબીત કરનારી પ્રાથમિક રૂપે જાણવી

હવે વટવૃક્ષના થડ તરીકે શ્રીતીર્થંકર દેવો પાસેથી ત્રણ નિષદ્યાપૂર્વક પૂ ગણધર ભગવતોએ મેળવેલ ત્રિપદી દર્શાવી છે.

તેની ઉપરના ભાગે ડાબે મોટી શાખામા શ્રીઆચારાગ, શ્રીસૂત્રકૃતાગ શ્રીસ્થાનાગ, શ્રીસમવાયાગ અને શ્રીજ્ઞાતાધર્મકથા એમ પાચ સુત્રો ઉપર–નીચે વારાફરતી મોટા પાદડા-

રૂપે બતાવ્યાં છે, અને પાદડાંના મૂળમા વડના લાલ ટેટારૂપે તે તે ઉપાંગો બતાવ્યાં છે અને આ શાખાના છેડાના ભાગે વર્ત્તમાન આગમોમા અત્યત મહિમાશાળી શ્રીવ્યાખ્યાપ્રજ્ઞપ્તિ-શ્રીભગવતીસૂત્ર દર્શાવ્યુ છે અને તેમાથી ૯ પાદડા નીકળેલા દર્શાવ્યા છે, જેમાં શ્રીભગવતીસૂત્રમાંથી ઉદ્ધૃત નીચેનાં પ્રકરણો દર્શાવ્યાં છે

૧	પરમાણુ છત્રીશી	૫	કાયસ્થિતિ પ્રકરણ
૨	નિગોદ ,,	૬	લોકનાલિકા ,,
૩	પુદ્ગલ ,,	૭	સમવસરણ ,,
૪	બધ ,,	૮	પચનિર્ગ્રંથી ,,

૯ પ્રજ્ઞાપના તૃતીયપદ સગ્રહણી

આ જ પ્રમાણે જમણે મોટી શાખામા શ્રીઉપાસકદશા, શ્રીઅતગડદશા, શ્રીઅનુત્તરૌપપાતિકદશા, શ્રીપ્રશ્નવ્યાકરણ અને શ્રીવિપાકસૂત્ર મોગ્ર પાદડારૂપે બતાવ્યા છે, તેઓના તે તે ઉપાંગ સૂત્રો તેના મૂળમા વડના લાલ ટેટારૂપે બતાવ્યા છે

આ બને શાખાઓ વચ્ચે શ્રીનદીસૂત્ર ચૂર્ણિમા પુરૂષાકારે દ્વાદશાગીના મહિમાને વ્યક્ત કરનાર આગમપુરૂષનુ ચિત્ર જણાવી વટવૃક્ષદ્વારા જણાવાતી આગમોની હિતકારિતાનો વધુ પરિચય આપવાનો પ્રયત્ન સેવ્યો છે

આ આગમપુરૂષના મથાળે આખી દ્વાદશાગીમા સૌથી મહત્ત્વનુ સખ્યાની દૃષ્ટિએ બારમું પણ જેના ચોથા પેટા વિભાગની રચના ચૌદ પૂર્વો તરીકે શ્રીગણધર ભગવતો સર્વ પ્રથમ કરીને મુમુક્ષુ ભવ્યાત્માઓ માટે અત્યત જરૂરનુ શ્રીદૃષ્ટિવાદ નામનુ અગ થડના ઉપરના ભાગે દર્શાવેલ છે તેની નીચે નાની-નાની શાખાઓરૂપે બે બાજુ પાચ-પાચની સખ્યામા દશ પ્રકીર્ણકસૂત્રો (પયન્નાઓ) દર્શાવ્યા છે

દૃષ્ટિવાદના મુખ્ય થડમાથી મહત્ત્વની પાચ મોટી શાખાઓ નીકળતી બતાવી છે, તે છે દૃષ્ટિવાદના પાચ ભેદો

પરિકર્મ, સૂત્ર, અનુયોગ, પૂર્વગત, ચૂલિકા જેમાના પહેલા બે ભેદ અને છેલ્લા ભેદ સબધી આજે ઉપલબ્ધ આગમોમા કઇ પરિચય મળતો નથી બાકી અનુયોગમાથી તીર્થંકરો, ગણધરો, ચક્રવર્તીઓ આદિ મહાપુરૂષોના જીવન ચરિત્રોને જણાવનાર કથાનુયોગ જેનુ બીજુ નામ પઢમાણુયોગ છે જે શાખામાથી વસુદેવહીંડી-બ્રહ્મદત્તચરિત્ર નામના બે ગ્રથો પાદડારૂપે દર્શાવ્યા છે, અને ગડિકાણુયોગની શાખામાથી ગણધરગડિકા, યુગપ્રધાન ગડિકા બે ગ્રથો પાદડારૂપે દર્શાવ્યા છે

આ રીતે પૂર્વગતની શાખામાથી ડાબે છ છેદસૂત્રોની મોટી શાખા તેમ જ ૧૬ પ્રાભૃતોની લઘુશાખા અને જમણે ચૌદ પૂર્વોની બે મોટી શાખાઓ નીકળી છે

ચૌદ પૂર્વોમા તે તે પૂર્વોરૂપી લઘુશાખામાથી છ કર્મગ્રથો, દશવૈકાલિક સૂત્રના તે તે અધ્યયનો, ઉવસગ્ગહર-સ્તોત્ર, પચસગ્રહ, જીવસમાસ, સસકૃત નિર્યુક્તિ, પૂજા ચતુવશતિકા,

નયચક્ર, કર્મપ્રકૃતિ, ઓઘનિર્યુક્તિ, કલ્પસૂત્ર, પ્રતિષ્ઠાકલ્પ, મહાકલ્પ, સ્થાપનાકલ્પ વગેરે તે તે મહત્ત્વના ગ્રથો જે જે પૂર્વમાંથી ઉદ્ધૃત થયા છે તે પાંદડાંમા નિર્દિષ્ટ કર્યા છે

વૃક્ષના મથાળે અરિહંત પરમાત્માનુ તેજસ્વી બિંબ દર્શાવી વીતરાગપ્રણીત હોવાના કારણે આ આગમો એકાંત કલ્યાણકર છે એવો ભાવ સૂચવ્યો છે

આ સિવાય આ વૃક્ષમાં ગોલાકારે લખેલ નામો ૮૪ આગમોની સંકલના સૂચવે છે

મૂળ પટમા તો ઉઘડતા રંગમાં ૪૫ આગમો અને હયાતી ધરાવતા આગમોનો નિર્દેશ કર્યો છે, અને ઘેરા રંગમા ૮૪ આગમો અને વિચ્છેદ પામેલ નામશેષ આગમો દર્શાવ્યા છે

વળી વડના ઝાડને હોય છે તેવી વડવાઈઓરૂપે આગમરૂપી વૃક્ષના સ્વરૂપને ટકાવનાર–વિકસાવનાર પંચાંગીમાથી નિર્યુક્તિ, ચૂર્ણિ, ભાષ્ય અને વૃત્તિઓને દર્શાવી મુમુક્ષુઓના હિતાર્થે આગમોનો વારસો ગીતાર્થોએ કેટલો સરસ વિવિધ રીતે આપ્યો છે તે સમજાય છે.

તથા આ વડવાઈઓના પાછળના ભાગે નીચે જમીન પર જુનાં ખરી પડેલ પાદડાંઓનો ઢગલો આજ સુધીમા ઘણા ઘણા વિચ્છેદ પામેલા આગમો સૂચવે છે

આ પ્રમાણે આત્માને કલ્યાણના પથે આગળ ધપવા માટે જરૂરી માર્ગદર્શન આપનાર વીતરાગ પરમાત્માની વાણીના વારસારૂપે હાલમાં ઉપલબ્ધ ૪૫ આગમોના માર્મિક સ્વરૂપને ધ્યાનમા રાખી જીવનને આધ્યાત્મિક પથે વધારવા પ્રયત્ન કરવો જરૂરી છે

વીર નિ સં. ૨૪૮૦
વિ સં ૨૦૧૭
માહ શુદ ૯
જૈન ઉપાશ્રય
મુ. ઉંઝા

લિ.
પૂજ્ય ગુરૂદેવ શ્રી ધર્મસાગરજી મ૦ ગણિવર ચરણોપાસક
મુનિ અભયસાગર

સાધના મુદ્રણાલય . દાણાપીઠ–ભાવનગર

॥ ॐ अर्हम् ॥

णमोऽत्थु-ण- स्स भगवओ महावीरस्स ।

श्रेष्ठि देवचन्द्रलालभाई-जैन-पुस्तकोद्धारे-ग्रन्थाङ्कः-

आगमोद्धारक-आचार्यश्रीआनन्दसागरसूरिसङ्कलितः-

अल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्द ो :

ीतीय-विभागः

ककारः

ककदुकदेश्य'-काङ्कटुकतुल्य । आचा० २२२ ।

ककडइयो-कण्टकित । कृतकवच । प्रश्न ४७ ।

ककडुओ-यस्य व्यवहार काङ्कटुकमाष इव न सिद्धिमुपयाति स काङ्कटुकव्यवहारयोगात् काङ्कटुक । व्य० प्र० २५५ आ ।

ककडुगो-काङ्कटुक । आव० ८५५ ।

ो-कङ्कट । कवच । भग० ३२२, ४८१ । जीवा० १६३ । ज० प्र० ३७ । राज० ७७ ।

ककणो-सज्ञाविशेप । नि० चू० द्वि० ५५ आ ।

ककतकी-फणिह । 'कासकी'ति लोके । अनु० २४ । फणिहम् । सूत्र० ११७ ।

ककतिका-'कासकी'इति लोके । नदी० १५२ ।

कक्दीवियो-वनजीव । मर० ।

ककलोहकत्तिया-कङ्कलोहकर्तरिका । शस्त्रविशेष । आव० ६६० ।

कका-लोमपक्षिविशेप । प्रज्ञा० ४९ । कङ्का-दीर्घपादा । ज० प्र० १७२ ।

ककाय-शस्त्रविशेप । ठाणा ४५६ ।

ककावसे-पवंगविशेप । प्रज्ञा० ३३ ।

कको-लोमपक्षिविशेप । जीवा० ४१ । कङ्क-पक्षिविशेप । जीवा० २७७ । प्रश्न० २१ । एतदभिधानाऽसि । आव० ३७४ । पक्षिविशेप । प्रश्न० ८२ । ठाणा० २६४ । ज० प्र० ११७ । प्रश्न० ८२ ।

कखति-काङ्क्षन्ते प्राप्त सद् विमोक्तु नेच्छन्ति । औप० २२ । भग० ।

कखण-काङ्क्षण-अपेक्षा । भग० ९३ ।

कखपओसे-काङ्क्षाप्रदोष । भगवत्या प्रथमशतके तृतीयोद्देशक । काङ्क्षा-मिथ्यात्वमोहनीयोदयसमुत्थोऽन्यान्यदर्शनग्रहरूपो जीवपरिणाम । स एव प्रकृष्टो दोपो-जीवदूषण काङ्क्षाप्रदोष । भग० ६ । इदमित्थ इत्थ च ममाप्येतुमुचितमित्यादिका वाञ्छा । उत्त० ५८४ ।

कखा-काङ्क्षण-अपेक्षा । भग० ९४ । कखण कखा अभिलासो अन्नोन्नदसणगहो । नि० चू० प्र० ११ आ० । काङ्क्षा-परद्रव्येच्छा, तृतीयाऽधर्मद्वारस्य चतुर्विशतितम नाम । प्रश्न० ४३ । अन्यान्यदर्शनग्रह । भाग० ५२ । गृद्धि-आसक्ति । भग० ८९ । दर्शनान्तरग्रहो गृद्धिर्वा । भग० ९७ । अप्राप्तार्थाशसा । भग० ५७३ । सुगतादिप्रणीतदर्शनेष्वभिलाप । आव० ८११ ।

कखापदोस-दर्शनान्तरग्रहरूपो गृद्धिरूपो वा प्रकृष्टो दोप कड्क्षाप्रदोष, काङ्क्षप्रद्वेप वा रागद्वेषौ । भग० ९७ ।

कखामोहणिज्ज-काङ्क्षामोहनीयम् । काङ्क्षाया मोहनीय मिथ्यात्वमोहनीयमित्यर्थ । भग० ५२ । काङ्क्षा-इदमित्थमित्थ च ममाप्येतुमुचितमित्यादिका वाञ्छा, सैव मोहयतीति काङ्क्षामोहनीय कर्म अनभिग्रहिकमिथ्यात्वरूपम् । उत्त० ५८४ ।

નયચક્ર, કર્મપ્રકૃતિ, ઓઘનિર્યુક્તિ, કલ્પસૂત્ર, પ્રતિષ્ઠાકલ્પ, મહાકલ્પ, સ્થાપનાકલ્પ વગેરે તે તે મહત્ત્વના ગ્રંથો જે જે પૂર્વમાંથી ઉદ્ધૃત થયા છે તે પાંદડાંમાં નિર્દિષ્ટ કર્યા છે

વૃક્ષના મથાળે અરિહંત પરમાત્માનુ તેજસ્વી બિંબ દર્શાવી વીતરાગપ્રણીત હોવાના કારણે આ આગમો એકાંત કલ્યાણકર છે એવો ભાવ સૂચવ્યો છે

આ સિવાય આ વૃક્ષમાં ગોલાકારે લખેલ નામો ૮૪ આગમોની સંકલના સૂચવે છે.

મૂળ પટમા તો ઉઘડતા રંગમાં ૪૫ આગમો અને હયાતી ધરાવતા આગમોનો નિર્દેશ કર્યો છે, અને ઘેરા રંગમા ૮૪ આગમો અને વિચ્છેદ પામેલ નામશેષ આગમો દર્શાવ્યા છે

વળી વડના ઝાડને હોય છે તેવી વડવાઈઓરૂપે આગમરૂપી વૃક્ષના સ્વરૂપને ટકાવનાર–વિકસાવનાર પંચાંગીમાથી નિર્યુક્તિ, ચૂર્ણિ, ભાષ્ય અને વૃત્તિઓને દર્શાવી મુમુક્ષુઓના હિતાર્થે આગમોનો વારસો ગીતાર્થોએ કેટલો સરસ વિવિધ રીતે આપ્યો છે તે સમજાય છે.

તથા આ વડવાઈઓના પાછળના ભાગે નીચે જમીન પર જુના ખરી પડેલ પાદડાઓનો ઢગલો આજ સુધીમા ઘણા ઘણા વિચ્છેદ પામેલા આગમો સૂચવે છે

આ પ્રમાણે આત્માને કલ્યાણના પથે આગળ ધપવા માટે જરૂરી માર્ગદર્શન આપનાર વીતરાગ પરમાત્માની વાણીના વારસારૂપે હાલમા ઉપલબ્ધ ૪૫ આગમોના માર્મિક સ્વરૂપને ધ્યાનમા રાખી જીવનને આધ્યાત્મિક પથે વધારવા પ્રયત્ન કરવો જરૂરી છે

વીર નિ. સ. ૨૪૮૦
વિ સં ૨૦૧૭
માહ શુદ ૯
જૈન ઉપાશ્રય
મુ. ઉંઝા

લિ.
પૂજ્ય ગુરૂદેવ શ્રી ધર્મસાગરજી મ૦ ગણિવર ચરણોપાસક
મુનિ અભયસાગર

સાધના મુદ્રણાલય . દાણાપીઠ–ભાવનગર

विशुद्धम् । ठाणा० ३६६ । ज० प्र० ४० । अनु० १३२ ।

कठसद्द–कण्ठैकपार्श्वे कण्ठशब्द इति, कण्ठे परिवृत्त्येति । उत्त० ३५६ ।

कठसमुद्दिठा–कण्ठसिद्धा निगदसिद्धा । आव० ७२७ ।

कठसुत्त–कण्ठसूत्र—गलावलम्बि सङ्कलकविशेष । औप० । ५५ । भग० ४५६ ।

कठसुत्तग–कण्ठसूत्रम् । ज० प्र० १०५ ।

कठा—कण्ठात् । विशे० १६८ ।

कठाकठिय—कण्ठे च कण्ठे च गृहीत्वा कृत युद्ध कण्ठाकण्ठि । ज्ञाता० ८६ ।

कठाणुवादिणीछाया–छायाविशेष । सूर्य० ६५ ।

कठिया–कण्ठिका, कण्ठ । ग० ।

कठुग्गए–कण्ठश्चासावुग्रकश्च—उत्कट कण्ठोग्रक, कण्ठस्य वोग्रत्व कण्ठोग्रत्वम्, कण्ठाद्वा यद् उद्गतम्—उद्गति स्वरोद्गमलक्षणा क्रिया कण्ठोद्गत । ठाणा० ३६५ ।

कठोट्ठविप्पमुक्कं–बालमूकभाषितवद् यद् अव्यक्त भवतीत्यथ । अनु० १६ ।

कड–काण्डम्—धनुष्काण्डम् । आव० ६१३ । मण्डलाद् बृहत्तर देशखण्डम् । आव० ६३६ । काण्डम्–शरम् । आव० ६३ । रत्नकाण्डादि । अनु० १७१ । मण्डलाद् बृहत्तर देशखण्डम् । बृ० तृ० १४६ आ । काण्ड–बाण शर । भग० १६४ । काण्ड–धनु । दश० १०४ । भग० २६० । काण्ड–विशिष्टो भूभाग । जीवा० ८६ । काण्डविभाग द्वितीय काण्ड–विभागोऽष्टात्रिंशद् योजनसहस्राण्युच्चत्वेन भवतीति । सम० ६५ ।

कडए–कण्डक–कालखण्डम् । भग० १७८ । अवयव । भग० ६१६ । कण्डक । आव० ४२७ । राक्षसाना चैत्यवृक्षा । ठाणा० ४४२ ।

कडक–तन्तु । नदी० १६५ । आचा० १७२ । प्रज्ञा० ५६१ । ओघ० १३१ ।

कडग–क्षतम् । नि० चू० द्वि० ११८ आ । कण्डकमसमयपरिभाषयाऽङ्गुलमात्रक्षेत्राऽसङ्ख्येयभागगतप्रदेशराशिप्रमाणा सङ्ख्या । पिण्ड० ३६ । सङ्ख्यातीतसयमस्थानसमुदायरूप । पिण्ड० ३८ ।

कडच्छारिउ–ग्रामो ग्रामाधिपतिर्देशो देशाधिपतिर्वा लूम्पका वा । व्य० द्वि० २२३ आ ।

कडपुख–बाणपृष्ठ । आव० ६६७ ।

कडपोखो–शरपुङ्ख । आव० ४२५ ।

कंडफल–शस्त्रविशेष । व्य० प्र० १७ आ ।

कडय–अङ्गुलाऽसख्येयभागप्रदेशमानानि स्थानानि । बृ० तृ० १५ आ ।

कडरिए–कण्डरीक–अलोभोदाहरणे साकेतनगरे युवराज । आव० ७०१ ।

कडरिओ–कण्डरीक—औत्पात्तिकीबुद्धया दृष्टान्त ।आव० ४२० । अहोरात्रेणाऽधोगामी । मर० ।

कडरिय–वनस्पतिविशेष । भग० ८०४ ।

कडरीए—कण्डरीक–महापद्मराजस्य लघुसुत । ज्ञाता० २४३ । उत्त० ३२६ । पुण्डरिकिण्या युवराज । आव० २८८ ।

कडरीक–असदनुष्ठानपरायणतयाऽशोभनत्वे उपमा । सदसदनुष्ठानपरायणतया शोभनाऽशोभनत्वमवगम्य तदुपमयाऽन्यदपि यच्छोभन तत् । महाराजपुत्र । सूत्र० २६८ । नाम विशेष । आचा० २४१ । सूत्र० १६४ । देशीय । आचा० ११२ ।

कडा—पर्वगविशेष । प्रज्ञा० ३३ । काण्ड नाम विशिष्टपरिणामानुगतो विच्छेद पर्वतक्षेत्रविभाग । ज० प्र० ३७४ ।

कडितिया–अनुकम्पिता कण्डयन्तीति—तन्दुलादीन् उद्खलादौ क्षोदयन्तीति कण्डयन्तिका । ज्ञाता० ११७ ।

कडिया–इह ये तण्डुला प्रथमत साध्वर्थमुप्ता, तत क्रमेण करट्यो जाता, तत कण्डिता, । पिण्ड० ६५ ।

कडिल्ला–गोत्रविशेष । ठाणा० ३६० ।

कडुइया–वल्लीविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

कडुइस्सामि–कण्डूयिष्ये । ज्ञाता० ६५ ।

कडुय–कन्दुक–नारकपचनार्थ भाजनविशेष । सूत्र० १२५ । कण्डू–कण्डूति । ज्ञाता० ११३ । कन्दु–मण्डकादिपचनभाजनम् । विपा० ४६ ।

कडुलोहकुभी–कन्दूलोहकुम्भी–नारकाणा हननस्थानम् । आव० ६५१ ।

कडुसोल्लिय–कन्दूपक्वम् । औप० ६१ ।

कंखिए–काङ्क्षित, उत्तरलाभाकाङ्क्षावान्। भग० ११२।
कंखिते–काङ्क्षित। मतान्तरमपि साध्विति बुद्धि। ठाणा० २४७। तत्फलाकाङ्क्षावान्। ज्ञाता० ६५। मतान्तरस्यापि साधुत्वेन मन्ता। ठाणा० १७६।
कंगु–धान्यविशेष। भग० ८०२। कङ्गवा–पीततण्डुला। ज० प्र० १२४।
कंगुपलाल–रालओ। नि० चू० द्वि० ६१ अ।
कंगू–औषधिविशेष। प्रज्ञा० ३३। धान्यविशेष। सूत्र० ३०६। कङ्गु–उदकङ्गु। दश० १६३। कङ्गू–कोद्रवौदन। पिण्ड० १६८। बृहच्छिरा कंगू। नि० चू० प्र० १४४ आ।
कंगूया–वल्लीविशेष। प्रज्ञा० ३२।
कंचग–काञ्चनकूट–सौमनसवक्षस्कारकूटनाम। ज० प्र० ३५३।
कंचणकूड–सम० १३।
कंचणकोसी–काञ्चनकोशी–सुवर्णखोला। ज० प्र० २६५।
कंचणपव्वए–उत्तरकुरुषु शीतानदीसम्बन्धिना पञ्चाना नीलवदादिह्रदाना क्रमव्यवस्थिताना प्रत्येक पूर्वापरतटयोर्दश दश काञ्चनाभिधाना गिरय। भग० ६५५।
कंचणपुर–काञ्चनपुर कलिङ्गदेशे नगरम्। व्य० द्वि० ४१३ आ। काञ्चनपुर कलिङ्गजनपदे नगरम्। ओघ०२१। कलिङ्गेषु आर्यक्षेत्रम् प्रज्ञा० ५५। द्रव्योत्सर्गे नगरम्। आव० ७१८। करकण्डुराजधानी। उत्त० ३०२।
कंचणपुरी–नगरविशेष। नि० चू० द्वि० ५५ अ।
कंचणमाला–कञ्चनमाला शिक्षायोग्यदृष्टान्ते प्रद्योतराजपुत्र्या वासवदत्ताया दासी अम्बधात्री च। आव० ६७४।
कंचणा–काञ्चना काञ्चनमयपर्वता। प्रश्न० ६६।
कंचणिय–रुद्राक्षकृता काञ्चनिका। भग० ११३।
कंचणिया–काञ्चनिका, रुद्राक्षमयमालिका। औप० ६५।
कंचिक्को–कञ्चित्क, नपुसकम्। बृ० तृ० १०२ आ।
कंचिपुरी–नगरविशेष। नि० चू० प्र० १३६ आ।
कंची–काञ्ची कट्याभरणविशेष। प्रश्न० १५६। भूषणविधिविशेष। जीवा० २६६।

कंचुइओ–कञ्चुकिनामान्त पुरप्रयोजननिवेदक प्रतिहारो वा। ज्ञाता० ४१।
कंचुइज्जो–कञ्चुकी। आव० २२५।
कंचुओ–कञ्चुक। विषधरनिर्मोक। विशे० १००७। कञ्चुक–सघात्यम्। दश० ८७। कञ्चुक–छिन्नसन्धानो वस्त्रविशेष। आचा० ८६।
कंचुग–कञ्चुक–अध परिधान, पुरुषस्याऽधस्तन स्यूत वस्त्रम्। आव० ४३४। ओघ २०६।
कंचुय–कञ्चुकी–वारवाण। अन्त०७। कञ्चुको वारवाण। भग० ४६०।
कंजिक–काञ्जिक–सौवीरम्। पिण्ड० १६८।
कंजिग–अवश्रावणम्। नि० चू० प्र० २०३ आ।
कंजिया–अवश्रावणम्। बृ० द्वि० १२६ आ। नि० चू० प्र० ३२६ अ। (देशी०) आरनाल। नि० चू० प्र० ४७। अ बृ० प्र० २५३ अ।
कंट–कण्टक। नि० चू० प्र० ३२ अ।
कंटइल्ल–कण्टकितो बदरीबब्बूलप्रभृतय। व्य० प्र० ६१ आ। कण्टकवान्। प्रश्न० २०।
कंटए–कण्टक, गोत्रजवैरी। ज० प्र० २७७। द्विप्रभव–आगन्तुको व्रण। आव० ७६५।
कंटगापह–कण्टकपथ कण्टकाश्च द्रव्यतो बब्बूलकण्टकादय, भावतस्तु चरकादिकुश्रुतय तैराकुल पन्था। उत्त० ३४०।
कंटय–कण्टक–बाधक–शत्रु। भग० १०१। कण्टका दायादा। ठाणा० ४६३। देशोपद्रवकारिणश्चरटा कण्टका। राज० ११। कण्टक–प्रतिस्पर्द्धिगोत्रज। औप० १२। कण्टक। जीवा० २८२।
कंटिया–कण्टिका–कण्टकशाखा। बृ० द्वि० २५ अ। कण्टक। आव० १६५, ३५२।
कंठ–कण्ठ–गल। उत्त० ३५६।
कंठतो–सूत्रपदं साक्षात्। बृ० तृ० २२६ अ।
कंठमुरवि–कण्ठमुरवी, कण्ठासन्न मृदङ्गाकारमाभरणम्। ज० प्र० २७५।
कंठल–ग्रैवेयकम्। औप० ५५।
कंठविशुद्ध–कण्ठे यदि स्वरो वर्तितोऽस्फुटितश्च, तत कण्ठ

विशुद्धम् । ठाणा० ३६६ । जं० प्र० ४० । अनु० १३२ ।

कठसद्द–कण्ठैकपार्श्वे कण्ठशब्द इति, कण्ठे परिवृत्त्येति । उत्त० ३५६ ।

कठसमुद्दिठा–कण्ठसिद्धा निगदसिद्धा । आव० ७२७ ।

कठसुत्त–कण्ठसूत्र—गलावलम्बि सङ्कलकविशेष । औप० । ५५ । भग० ४५६ ।

कठसुत्तग–कण्ठसूत्रम् । जं० प्र० १०५ ।

कठा—कण्ठात् । विशे० १६८ ।

कठाकठिय—कण्ठे च कण्ठे च गृहीत्वा कृत युद्ध कण्ठाकण्ठि । ज्ञाता० ८६ ।

कठाणुवादिणीछाया–छायाविशेष । सूर्य० ६५ ।

कठिया–कण्ठिका, कण्ठ । ग० ।

कठुग्गए–कण्ठश्चासावुग्रकश्च—उत्कट कण्ठोग्रक, कण्ठस्य वोग्रत्व कण्ठोग्रत्वम्, कण्ठाद्वा यद् उद्गतम्—उद्गति स्वरोद्गमलक्षणा क्रिया कण्ठोद्गत । ठाणा० ३९५ ।

कठोट्ठविप्पमुक्क–वालमूकभाषितवद् यद् अव्यक्त भवतीत्यर्थ । अनु० १६ ।

कड–काण्डम्—धनुष्काण्डम् । आव० ६१३ । मण्डलाद् वृहत्तर देशखण्डम् । आव० ६३६ । काण्डम्–शरम् । आव० ९३ । रत्नकाण्डादि । अनु० १७१ । मण्डलाद् वृहत्तर देशखण्डम् । वृ० तृ० १४६ आ । काण्ड–बाण शर । भग० १९४ । काण्ड–धनु । दश० १०४ । भग० २६० । काण्ड–विशिष्टो भूभाग । जीवा० ८६ । काण्डविभाग द्वितीय काण्ड–विभागोऽष्टात्रिंशद् योजनसहस्राण्युच्चत्वेन भवतीति । सम० ६५ ।

कडए–कण्डक–कालखण्डम् । भग० १७८ । अवयव । भग० ६१६ । कण्डक । आव० ४२७ । राक्षसाना चैत्यवृक्षा । ठाणा० ४४२ ।

कडक–तन्तु । नदी० १६५ । आचा० १७२ । प्रज्ञा० ५६१ । ओघ० १३१ ।

कडग–क्षतम् । नि० चू० द्वि० ११८ आ । कण्डकसमयपरिभाषयाऽङ्गुलमात्रक्षेत्राऽसङ्ख्येयभागगतप्रदेशराशिप्रमाणा सङ्ख्या । पिण्ड० ३९ । सङ्ख्यातीतसयमस्थानसमुदायरूप । पिण्ड० ३८ ।

कडच्छारिउ–ग्रामो ग्रामाधिपतिर्देशो देशाधिपतिर्वा लुम्पका वा । व्य० द्वि० २२३ आ ।

कडपुख–वाणपृष्ठ । आव० ६६७ ।

कडपोखो–शरपुङ्ख । आव० ४२५ ।

कडफल–शस्त्रविशेष । व्य० प्र० १७ आ ।

कडय–अङ्गुलाऽसङ्ख्येयभागप्रदेशमानानि स्थानानि । वृ० तृ० १५ आ ।

कडरिए–कण्डरीक–अलोभोदाहरणे साकेतनगरे युवराज । आव० ७०१ ।

कडरिओ–कण्डरीक—औत्पात्तिकीवुद्धचा दृष्टान्त । आव० ४२० । अहोरात्रेणाऽधोगामी । मर० ।

कडरिय–वनस्पतिविशेष । भग० ८०४ ।

कडरीए—कण्करीक–महापद्मराजस्य लघुसुत । ज्ञाता० २४३ । उत्त० ३२६ । पुण्डरिकिण्या युवराज । आव० २८८ ।

कडरीक–असदनुष्ठानपरायणतयाऽशोभनत्वे उपमा । सदसदनुष्ठानपरायणतया शोभनाऽशोभनत्वमवगम्य तदुपमयाऽन्यदपि यच्छोभन तत् । महाराजपुत्र । सूत्र० २६८ । नाम विशेष । आचा० २४१ । सूत्र० १९४ । देशीय । आचा० ११२ ।

कडा—पर्वगविशेष । प्रज्ञा० ३३ । काण्ड नाम विशिष्टपरिणामानुगतो विच्छेद पर्वतक्षेत्रविभाग । जं० प्र० ३७४ ।

कडितिया–अनुकम्पिता कण्डयन्तीति—तन्दुलादीन् उद्खलादौ क्षोदयन्तीति कण्डयन्तिका । ज्ञाता० ११७ ।

कडिया–इह ये तण्डुला प्रथमत साध्वर्थमुप्ता, तत क्रमेण करट्यो जाता, तत कण्डिता, । पिण्ड० ६५ ।

कडिल्ला–गोत्रविशेष । ठाणा० ३९० ।

कडुइया–वल्लीविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

कडुइस्सामि–कण्डूयिष्ये । ज्ञाता० ६५ ।

कडुय–कन्दुक–नारकपचनार्थं भाजनविशेष । सूत्र० १२५ । कण्डू–कण्डूति । ज्ञाता० ११३ । कन्दु–मण्डकादिपचनभाजनम् । विपा० ४९ ।

कडुलोहकुभी–कन्दूलोहकुम्भी–नारकाणा हननस्थानम् । आव० ६५१ ।

कडुसोल्लिय–कन्दूपक्वम् । औप० ६१ ।

कडू—कण्डू—कण्डूति । उत्त० ७८ । खर्जु । ज्ञाता० १८१ । कन्दू—नारकाणा पचनस्थानम् । आव० ६५१ । कण्डु—पाकस्थानम् । जीवा० १०५ ।

कडूइअ—कण्डूयित—खर्जुकरणम् । ज० प्र० १७० ।

कडूसडिओ—कण्डूसस्थित—पाकस्थानसस्थित । आवलिकावाह्यस्य तृतीय सस्थानम् । जीवा० १०४ ।

कंडूसगपट्टओ—कडूसगवधो णाम जाहे रयहरण तिभागपएसे खोमिएण उण्णिएण वा चीरेण वेढिय भवति ताहे उण्णिदोरेण तिपासिय करेति, त चीर कडूसगपट्टओ भण्णति । नि० चू० प्र० २४६ अ ।

कडूसगबंधो—जाहे रयहरण तिभागपएसे खोमिएण उण्णिएण वा चीरेण वेढिय भवतिण ताहे उण्णिदोरेण तिपासिय करेति, त चीर कडूसगवधो । नि० चू० प्र० २४६ अ ।

कंडे—कण्डयन्ती । ओघ० १६५ ।

कत—कान्त कमनीयम् । ज्ञाता० १६७ ।

कंता—कान्ता कमनीयशब्दा । ज० प्र० १४३ ।

कतार—अध्वान जत्थ भत्त—पाण ण लब्भति । नि० चू० प्र० १०२ अ ।

कंतारभत्त—कान्तारभक्त कान्तार—अरण्य तत्र भिक्षुकाणा निर्वाहणार्थ यत् सस्क्रियते तत् कान्तारभक्तम् । औप० १०१ । कान्तार—अरण्य, तत्र भिक्षुकाणा निर्वाहार्थं यद् विहित भक्त तत् कान्तारभक्तम् । भग० २३१ । कान्तार—अरण्य, तत्र यद् भिक्षुकार्थ सस्क्रियते तत् कान्तारभक्तम् । भग० ४६७ । कान्तार—अटवी, तत्र भक्त—भोजन यत् साध्वाद्यर्थम् । ठाणा० ४६० ।

कंतारवित्ति—कान्तारवृत्ति शणपल्लधादिवृत्ति । आव० ८४४ ।

कतारो—निर्जल सभयत्राणरहितोऽरण्यप्रदेश कान्तार । सूत्र० ३४१ ।

कंति—कान्ति—प्रभा । ज्ञाता० २२० ।

कंतिमइ—कान्तिमति, मायोदाहरणे कोशलपुरे नन्दनेभ्यस्य द्वितीया पुत्री । आव० ३६४ ।

कते—कान्तियोगात् कान्त । ठाणा० ४२० । कान्तिमान् । सूर्य० २६२ । घृतोदसमुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३५५ । कमनीय—सामान्यतोऽभिलषणीय । प्रज्ञा० ४६३ ।

कंथए—कन्थक प्रधानोऽश्व । उत्त० ३४८ ।

कथका—कन्थका अश्वविशेषा । ठाणा० २४८ ।

कंथग—कन्थक—जात्याश्व । उत्त० ५०७ ।

कथर—सकण्टकम् । आव० ६७० ।

कंद—कन्द—मूलस्कन्धान्तरालवर्ति स्वावयवम् । उत्त० २४ । कन्द—मूलनालमध्यवर्ती ग्रन्थि । ज० प्र० २८४ । माधारणवादरवनस्पतिकायविशेष । प्रज्ञा० ३४ । कन्दविशेष । उत्त० ६६१ । वज्रकन्दादि । दश० १६८ । मूलानामुपरि वृक्षावयवविशेष । औप० ७ । मूलोपरिवर्ती । जीवा० १८७ । स्कन्धाधोभागरूप । प्रश्न० १५२ । गुल्मविशेष । प्रज्ञा० ३२ । कन्द-सूरणादिलक्षण । दश० १७६ । मूलानामुपरिवर्तिन कन्दा । ज० प्र० २६ । सूरणकन्दादि । आचा० ३० ।

कंदणता—क्रन्दनता—महता शब्देन विरवणम् । ठाणा० १८६ ।

कदणया—महता शब्देन विरवणम् । भग० ६२६—१ ।

कदणा—नष्टमृतादिपु कदणा—मोहनोद्भवकारिका । नि० चू० द्वि० ७१ आ ।

कदप्प—कन्दर्प—परिहास । भग० ५० । अतिकेलि । भग० १६८ । ये कन्दर्पभावनाभावितत्वेन कान्दर्पिकदेवेषूत्पन्ना कन्दर्पशीला देवा । भग० १६८ । कन्दर्प-परिहास । वृ० प्र० २१३ अ । कन्दर्प—काम, तद्धेतुर्विशिष्टो वाक्प्रयोगश्च, रागोद्रेकात् प्रहासमिश्रो मोहोद्दीपको नर्मेत्यर्थ । आव० ८३० । कामोद्दीपन वचन चेष्टा च । प्रज्ञा० ६६ । जीवा० १७३ । कान्दर्पिका देवविशेषा, हास्यकारिणो भाण्डप्राया । प्रश्न० १२१ । कन्दर्पकथावान् । ठाणा० २७५ । अट्टहासहसनम् अनिभृतालापाश्च, गुर्वादिनाऽपि मह निष्ठुर-वक्रोक्त्यादिरूपा कामकथोपदेशप्रशसाश्च । उत्त० ७० । काम, तद्धेतुर्विशिष्टो वाक्प्रयोगोऽपि कन्दर्प । उपा० १० । कन्दर्प—काम, तत्प्रधाना पिड्गप्राया देवविशेषा कन्दर्प्पा उच्यन्ते, तेषामिय कान्दर्प्पी । वृ० प्र० २१२ आ ।

कदप्पभावणा–कन्दर्पभावना । उत्त० ७०७ ।
कदप्परई–कन्दर्परति –केलिप्रिय । ज्ञाता० ६७ ।
कदप्पा–अनेकक्रीडासु अदोलकादिप्पललिया घइणो इव अणेगसरीरकिरियाओ करेंता कदप्पा । नि० चू० तृ० ६ अ ।
कदप्पिआ–कान्दर्प्पिका –कामप्रधानकेलिकारिण । ज० प्र० २६४ । कान्दर्पिक । आव० २०५ ।
कदप्पिया–कन्दर्पं परिहास, स येषामस्ति तेन वा ये चरन्ति ते कन्दर्पिका कान्दर्पिका वा, व्यवहारतश्चरणवन्त एव कन्दर्प्प–कौकुच्यादिकारका । भग० ५० ।
कदभोयण–कन्द सूरणादि, तस्य भोजन कन्दभोजनम् । ठाणा० ४६० । भग० ४६७ ।
कदमाण–शोकाद् महाध्वनिं मुञ्चन् । ज्ञाता० १५६ ।
कदमूले–कन्दमूलम् । प्रज्ञा० ३४ ।
कदर–गिरिगुहा । आचा० ३६६ । गिरिगुहा । नि० चू० द्वि० ७० अ । कुहरम् । विपा० ५५ ।
कदरगिह–कन्दरगृहम् । गुहा । भग० २०० । गिरिगुहा गिरिकन्दर वा । ठाणा० २६४ ।
कदरा–कन्दरा । दरी । प्रश्न० १२७ । गुहा । ज्ञाता० ३३ ।
कदराणि–भूमिविवराणि । भग० ४८३ ।
कदर्प –रागसयुक्तोऽसभ्यो वाक्प्रयोगो हास्य च । त०७ ।
कदल–कन्दलानि–प्ररोहा । ज्ञाता० २६ । प्रत्यग्रलता । ज्ञाता० १६१ ।
कदलगा–एकखुरविशेष । प्रज्ञा० ४५ । कन्दलक –एकखुरश्चतुष्पद । जीवा० ३८ ।
कदली–कन्दली–कन्दविशेष । उत्त० ६६१ । तक्कली । आचा० ३४६ ।
कंदलीऊसुयं–कन्दलीमध्यम् । आचा० ३४६ ।
कदलीकदए–कन्दलीकन्दक – वनस्पतिविशेष । प्रज्ञा० ३७ ।
कदलीसीस–कन्दलीशीर्षम्–कन्दलीस्तवक । आचा० ३४६ ।
कदा–कन्दा । प्रज्ञा० ३१ ।
कदाहारा–कन्दभोजिनस्तापसा । निरय० २५ ।

कदिय–क्रन्दितम्–आक्रन्द । प्रश्न० १६० । वाणमन्तरविशेष । प्रज्ञा० ६५ ।
कदियसद्द–क्रन्दितशब्द प्रोषितभर्तृकादिकृताऽऽक्रन्दरूपम् । उत्त० ४२५ ।
कदिया–क्रन्दिता –व्यन्तरनिकायानामुपरिवर्तिनो व्यन्तर जातिविशेषा । प्रश्न० ६६ ।
कदु–कन्दु –लोही–(लोहमयी) प्रश्न० १४ ।
कदुकुम्भी–पाकभाजनविशेषरूपा लोहादिमयी । उत्त० ४५६ ।
कदुक्क–कन्दुक –साधारणवनस्पतिविशेष । प्रज्ञा० ४० । कन्दुक्क –वनस्पतिविशेष । प्रज्ञा० ३७ ।
कदुसोल्लिय–कन्दुपक्वम् । भग० ५१६ ।
कपणवाइओ–कम्पनवातिक –कम्पनवायुरोगवान् । अनुत्त० ६ ।
कपिलपुरे–अम्बडपरिव्राजकस्थानम् । भग० ६५३ ।
कपिल्ल–काम्पिल्यम् – विमलनाथजन्मभूमि । आव० १६० । जितशत्रुराज्ञो राजधानी । ज्ञाता० १४४ । चित्रसम्भूतिश्रमणस्थानम् । उत्त० ३७६ । पाञ्चालेषु आर्यक्षेत्रम् । प्रज्ञा० ५५ । नगरविशेष । उत्त० ३२३ । कपिल्ल –अन्तकृद्दशाना प्रथमवर्गस्य सप्तममध्ययनम् । अन्त० १ । काम्पिल्य –ब्रह्मदत्तराज्ञ्या मलयवत्या पिता । उत्त० ३७६ । काम्पिल्यम्–ब्रह्मदत्तराजधानी । आव० १६१ । हरिषेणराजधानी । आव० १६१ । पञ्चालदेशे नगरम् । ब्रह्मराजधानी । उत्त० ३७७ ।
कपिल्लपुर–काम्पिल्यपुरम् । पञ्चालेषु दुर्मुखराजधानी । उत्त० ३०३ । खण्डरक्षाणा श्रमणोपासकाना स्थानम् । आव० ३१७ । ब्रह्मदत्तराजधानी । नि० चू० प्र० ११३ आ । काम्पिल्यपुर–अम्बडपरिव्राजकस्थानम् । भग० ६५३ । द्रुपदराज्ञो राजधानी । ज्ञाता० २०७ । नगरविशेष । ज्ञाता० २५३ ।
कप्पडिया–नि० चू० प्र० १२ अ ।
कबलं–कम्बल –उपकरणविशेष । आव० ७६३ । वासोविशेष । प्रश्न० १३५ । कम्बलमित्यनेन आविक पात्रनिर्योग कल्पश्च गृह्यते । आचा० १३४ । और्णिक कल्प पात्रनिर्योग वा । आचा० २४० । वर्षाकल्पादि ।

दश० १९९ ।

कबल–कम्वल–मथुराया जिनदासस्य वृषभजीव । वृ० तृ० १६० आ । नौरक्षक । आव० १९७, १९९ ।

कबलकडे–कम्वलमेव । ठाणा० २७३ । कम्वलकट । आव० २८९ ।

कंबलकिड्ड–ऊर्णमय कम्वल जीनादि । भग० ६२८ ।

कबलगाणि–वस्त्रविशेषा । आचा० ३९३ ।

कबलरयण–कम्वलरत्नम् । उत्त० १०५ । कम्वलरत्न वस्त्रविशेष । व्य० प्र० १९४ अ । पञ्चेन्द्रियनिष्पन्न चक्रवर्तिरत्नम् । आचा० ३९२ ।

कंबलसाडए–कम्वलरूप शाटक कम्वलशाटक । प्रज्ञा० ३०६ ।

कबला–वस्त्रविशेष । अनु० २५३ । सास्ना । विपा० ४९ ।

कबिया–कम्बिका । आव० । ४१७ । कविका–पृष्टका । जीवा० २३७ ।

कविसरतारक–शय्यासस्तारके द्वितीयो भेद । व्य० द्वि० २८४ अ ।

कंबुं–विमानविशेष । सम० २२ ।

कबुग्गीय–विमानविशेष । सम० २२ ।

कंबुवरसरिसा–कम्बुवरसदृशी – उन्नततया वलियोगेन च प्रधानशङ्खसन्निभा । जीवा० २७२ ।

कंबुयं–साधारणवादरवनस्पतिकायविशेष । प्रज्ञा० ३४ ।

कंबोय–काम्वोज –कम्वोजदेशोद्भवोऽश्व । उत्त० ३४८ ।

कमं–आहाकम्म । नि० चू० प्र० ९३ अ ।

कमंतसाला–छुहादिया जत्थ कम्म विज्जति सा कम्मतसाला गिह वा । नि० चू० प्र० २६५ अ ।

कंमादि–कर्मादिना । ठाणा० ३३१ ।

कमिया–कर्मणो जाता कर्मजा–वुद्धे तृतीयभेद । आव० ४१४ ।

कमोवधी–पहाणा तीव्रकर्मोदये वर्तमाना इत्यर्थ । नि० चू० प्र० २८९ आ ।

कस–कास्यम्–कास्यभाजनम् । उत्त० ३१६ । अष्टाशीतिमहाग्रहेषु द्वाविंशतितम । ज० प्र० ५३५ । ठाणा० ७९ । कसम्–करोटकादि । दश० २०३ । कस –कृष्णवैरी । प्रश्न० ७५ । मथुराया राजा । दश० ३६ । कास्य –द्रव्यमानविशेष । उपा० ४८ । कास्यभाजनजाति । जीवा० २८० । ज्ञाता० ४९ । त्रपुक-ताम्रसयोगजम् । प्रश्न० १५२ । देवकीसुतघातको मथुराधिपति । सूत्र० ३०८ ।

कसकारे–अष्टादशश्रेणिषु चतुर्दश । ज० प्र० १९४ ।

कसणाभे–कसनाभ । अष्टाशीतौ महाग्रहेषु त्रयोविंशतितम । ज० प्र० ५३५ ।

कसताला–कस्यताला –कसालिया । जीवा० २६६ ।

कसपाए–कसपात्रम्–तिलकादि । दश० २०३ ।

कसवण्णाभे–कसवर्णाभ । अष्टाशीतौ महाग्रहेषु चतुर्विंशतितम । ज० प्र० ५३५ ।

कसवण्णे–अष्टाशीतिमहाग्रहेषु त्रयोविंशतितम ठाणा ७९।

कसवन्नाभे–अष्टाशीतिमहाग्रहेषु चतुर्विंशतितम । ठाणा० ७९ ।

कंसालिया–कास्यताला । जीवा० २६६ ।

कसिका–लत्तिया–वाद्यविशेष । ठाणा० ६३ ।

क–क –आत्मा । भग० २६९ ।

कइ–कति–कतिविधम् । भग० १४२ । कियन्त । अनु० ७५९ । क्वचित्–सयमस्थानावसरे धर्मोपधिप्रत्युपेक्षणादौ । दश० २८३ ।

कइए–क्रयिक –ग्राहक । भग० २२९ ।

कइखुत्तो–कतिकृत्व –कियतो वारान् । उत्त० २३० ।

कइतविय–कृत्रिमम् । आचा० १७८ ।

कइत्थो–कतिथ । आव० ५५९ ।

कइभाग–कतिभाग –कतिथो भाग । प्रज्ञा० ५०३ ।

कइया–क्रयिका । दश० ६१ ।

कइयव–कैतवम् । आव० ६३२ ।

कइरसारए–करीरसार । प्रज्ञा० ३६० ।

कइल्लए–कृते । वृ० तृ० ६२ अ ।

कइल्लिया–कृता । उत्त० ८६ ।

कइवयं–कतिपयम् । आव० २९२ ।

कइसिरं–कतिशिर –कति शिरासि तत्र भवन्ति । आव० ५११ ।

कउ–क्रतुशब्देनेह प्रतिमा–अभिग्रहविशेषा । उपा० २६ ।

कउओ–कायाको वेपपरावर्तकारी नट । वृ० तृ० १२७

आ । ककुदम्-स्कन्धदेशविशेष । ज्ञाता० १६१ ।

कउह-ककुदम्-स्कन्धासन्नोन्नतदेहावयवलक्षणम् । अनु० १४३ प्रधान । ज्ञाता० २३३ ।

कउही-ककुदम्-स्कन्धासन्नोन्नतदेहावयवलक्षणमस्यास्तीति ककुदी-वृषभ । अनु० १४३ ।

कए-कृतानि-भावितानि । बृ०प्र० १३३अ । कृते-अर्थाय । दश० ६५ ।

कएण-कृते हेतो । प्रश्न० १२० ।

कएखुय-वनस्पतिविशेष । भग० ८०४ ।

कएल्लओ-कृत । आव० ३५६, ६६६ ।

कओ-कृत । विहित । ज्ञाता० ७०, १६२ ।

कओगो-छत्तो । नि० चू० प्र० २८४ अ ।

ककाणओ-मर्माणि । सूत्र० १३६ ।

ककार-खकार-गकार-घकार-ङकार-प्रविभक्तिनामा-पञ्चमो नाट्यविधि । जीवा० २४७ ।

ककुय-ककुदम्-असकूटम् । ज० प्र० ५२६ ।

ककुष्ठा-तृतीय क्षुद्रकुष्ठम् । प्रश्न० १६१ । आचा० २३५ ।

ककुह-ककुदम्-स्कन्धशिखरम् । विपा० ४६ ।

ककुहा-ककुदानि-चिह्नानि । ठाणा० ३०४ ।

कक्क-कलकम्-पाप माया वा । प्रश्न० २७ । लोध्रादिद्रव्यसमुदायेन शरीरोद्वर्तनकम् । सूत्र० १८१ । उव्वलणय द्रव्यसयोगेन वा कक्क । नि० चू० प्र० ११६ आ । कल्क-प्रसूत्यादिषु रोगेषु क्षारपातनम्, अथवा आत्मन शरीरस्य देशत सर्वतो वा लोध्रादिभिरुद्वर्तनम् । व्य० प्र० १६३ अ । कल्क-चन्दनकल्कादि । दश० २०६ । कल्कम्-माया-कपटम् । सम० ७१ । हिंसादिरूप पापम् । भग० ५७३ । कर्क-ब्रह्मदत्तस्य तृतीय प्रासाद । उत्त० ३८५ ।

कक्कगुरुग-कल्कगुरुकम्-माया । प्रश्न० ३० ।

कक्कणा-कल्क-पाप माया वा तत्करण कल्कना । प्रश्न० २६ ।

कक्करणता-कर्करणता-शय्योपध्यादिदोषोद्भावनगर्भ प्रलपनम् । ठाणा० १४६ ।

कक्करणया-जो घडीजतग व वाहिज्जमाण करगरेइ सा कक्करणया । दश० चू० १५ ।

कक्कराइय-कर्करायितम्-'विषमा धर्मवती' इत्यादिशय्यादोषोच्चारणम् । आव० ५७४ ।

कक्करि-कर्करी-कलशो महाघट, करक प्रतीत, कर्करीस एव विशेष । ज० प्र० १०१ ।

कक्करी-कर्करी-भाजनविधिविशेष । जीवा० २६६ ।

कक्करे-कर्कर-कर्करायितकारी । उत्त० ४८६ ।

कक्कस-कर्कशाम्-चर्विताक्षराम् । आचा० ३८८ । जो सीउण्हकोसादिफासो सो सरीर किस कुव्वई ति कक्कसो । दश० चू० १२३ । कर्कशाम्-कर्कशद्रव्योपमाम्-अनिष्टामित्यर्थ । भग० २३१ । रौद्रदुखम् । भग० ३०५ । कर्कशा-अतिशयोक्त्या मत्सरपूर्वा भाषा । दश० २१३ । कर्कशद्रव्यमिव कर्कशोऽनिष्ट इत्यर्थ । भग० ४८४ । कर्कश-अतिदुस्सह । जीवा० १०३ ।

कक्कायरिय-ककुदाचार्या । नवपद० अनुत्त० ।

कक्कावस-वशवृक्षविशेष । भग० ८०२ ।

कक्केय-म्लेच्छविशेष । प्रज्ञा० ५५ ।

कक्को-सो दव्वसजोगेण वा असजोगेण वा भवति । नि० चू० द्वि० ११८आ । उव्वलय अट्टगमादी । दश० चू० १०१ ।

कक्कोडई-वल्लीविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

कक्कोडए-चतुर्थोऽनुवेलन्धरनागराज तस्यैवाऽऽवासपवत । ठाणा० २२६ । कर्कोटक-अनुवेलन्धरनागराजाऽऽवासभूत पर्वत लवणसमुद्रे ऐशान्या दिश्यस्ति, तन्निवासी नागराज, वरुणस्य पुत्रस्थानीयदेव । भग० १६६ । प्रथमोऽनुवेलन्धरनागराज, तस्यैवाऽऽवासपर्वतश्च । जीवा० ३१३ ।

कक्कोल-औषधिविशेष । आव० ८११ ।

कक्कोलय-स्वादिमे दृष्टान्त । नि० चू० द्वि० ६० अ ।

कक्ख-कक्षा । जीवा० २७५ । भुजमूलम् । प्रश्न० ८४ ।

कक्खग-कक्षाक । त० ।

कक्खड-कर्कशम्-कर्कशद्रव्यमिवाऽनिष्टम् । प्रश्न० १५६ । रुक्षादिगुणसमन्वितम् । ओघ० ५० । कर्कशद्रव्यमिवाऽनिष्टेत्यर्थ । ज्ञाता० ६८ । निष्ठुरो वलवत्वात् । ज्ञाता० १६२ । अवमोदयम् । वृ० तृ० १२४ अ । पासट्ठितेहिं विओसविज्जतिमाणा वि णोवसमति । नि० चू० प्र० २१६ आ ।

कक्खडिया–करकडिया – करकटिका – निन्द्यचीवरिका । विपा० ४७ ।

कक्खडो–तिव्वकम्मोदए वट्टमाणो । नि० चू० प्र० २७६ अ ।

कङ्कट–कवच । भग० ३१८ ।

कङ्कटुकरूपम्–कङ्कटुकतुल्यम् । उत्त० ३४७ ।

कच्चंगे–चङ्गे । व्य० द्वि० ३०२ आ ।

कच्चातणा–कात्यायन –कौशिकगोत्रविशेषभूते पुरुषे, तदपत्यमतानेपु च । ठाणा० ३९० ।

कच्चायण–कात्यायनम्–मूलगोत्रम् । ज० प्र० ५०० ।

कच्चायणसगोत्ते–कात्यायनसगोत्रम्–मूलनक्षत्रस्य गोत्रम् । सूर्य० १५० ।

कच्छ–कच्छ । नदीजलपरिवेष्टितो वृक्षादिमान् प्रदेश । भग० ९२ । सूत्र० ३०७ । कच्छदेश । ज० प्र० २२० । कक्षा–उरोवन्धनम् । भग० ३१८ । हृदयरज्जु । भग० ३१७ । शरीरावयवविशेषो वनगहन वा । भग० १९८ । समूह । ठाणा० ४०७ । विजयविशेष । प्रज्ञा० ७३ । श्रीऋषभस्वामिनो महासामन्तनाम । ज० प्र० २५२ । हृदयरज्जु । औप० ६२ । ज० प्र० ५२८ । कच्छो नाम चक्रवर्तिविजेतव्यभुविभागरूपो विजय । ज० प्र० ३४० । दक्षिणकच्छार्धकूटम् । उत्तरकच्छार्धकूटम् । ज० प्र० ३४१ । कच्छ –इहलोक-गुणे देशविशेष । आव० ८२४ । ऋषभदेवस्य पौत्र । आव० १४३ । क्षेमाया राजधान्या कच्छो नाम राजा चक्रवर्ती । ज० प्र० ३४४ ।

कच्छउडियो–गृहीतोभयमोट्टाक । बृ० द्वि० १९० आ ।

कच्छकरा–अष्टादशश्रेणिषु अष्टमी श्रेणि । ज० प्र० १९३ ।

कच्छकूडे–कच्छकूटम् । ज० प्र० ३४४ । कच्छविज-यार्धिपकूटम् । ज० प्र० ३३७ ।

कच्छकोह–कक्षाकोथ कक्षकोथो वा–कक्षाणा–शरीरा-वयवविशेषाणा वनगहनाना वा कोथ – कुथितत्व शटित वा कक्षाकोथ कक्षकोथो वा । भग० १९८ ।

कच्छगावती–कच्छा एव कच्छका, मालुकाकच्छकादय, सन्त्यस्यामतिशायिन इति कच्छकावती, विजयनाम । महाविदेहे कच्छगावती नाम विजय । ज० प्र० ३४६ । ठाणा ८० ।

कच्छट–अन्ध्रदेशीयस्त्रीनेपथ्यविशेष । आव० ५८१ ।

कच्छपुड–कच्छपुट । व्य० द्वि० २०७ आ ।

कच्छपुडओ–कक्खपदेसे पुडा जस्स स कच्छपुडओ । नि० चू० प्र० १५८ अ ।

कच्छपुडियवाणिओ–नि० चू० प्र० १०७ अ ।

कच्छभरिंगिय–कच्छपरिङ्गितम् । येन कच्छपवद् रिङ्गन् वन्दते तत् । कृतिकर्मणि सप्तमदोष । आव० ५४३ ।

कच्छभा–कच्छपा – कूर्मा । उत्त० ६९९ । आव० ५४३ । कच्छपा । प्रज्ञा० ४३ । राहो अष्टम नाम । भग० ५७५ । कच्छप । सूर्य० २८७ । मास-कच्छपाऽस्थिकच्छपभेदभिन्नो जलजन्तुविशेष । प्रश्न ७ ।

कच्छभाणी–कच्छभानी – साधारणवनस्पतिविशेष । प्रज्ञा० ४० । जलरुहविशेष । प्रज्ञा० ३३ ।

कच्छभी–कच्छपी । भारती वीणा । ज० प्र० १०१ । कच्छभी । वाद्यविशेष । प्रश्न १५९ । पुस्तकपञ्चके द्वितीयम् । नि० चू० प्र० १८१ अ । वादित्रविशेष । जीवा० २६६ । चतुरंगुलो दीहो वा वृत्ताकृती । नि० चू० द्वि० ६१ अ ।

कच्छभीए–कच्छपिका । उपकरणविशेष । ज्ञाता० २२० ।

कच्छवि–कच्छपी । पुस्तकपञ्चके द्वितीयम्, यद् अन्ते तनुक मध्ये पृथु । ठाणा० २३३ । आव० ६५२ ।

कच्छवी–अन्ते तनुक मध्ये पृथुल पुस्तकम् । बृ० द्वि० २१९ आ ।

कच्छा–वन्धविशेष । सम १२७ । ठाणा० ८० । कक्षा–उरोवन्धनम् । विपा० ४७ । इक्खु ादी । नि० चू० द्वि० ७० आ ।

कच्छाणि–कच्छा । नद्यासन्ननिम्नप्रदेशा मूलकवा-लुङ्कादिवाटिका वा । आचा० ३८२ ।

कच्छावईए–कच्छा एव कच्छका–मालुकाकच्छादय सन्त्य-स्यामतिशायिन इति । ज० प्र० ३४६ ।

कच्छावईकूडे–कच्छावतीकूटम् । महाविदेहस्य पद्मकूटस्य चतुर्थं कूटम् । ज० प्र० ३४६ ।

कच्छु–पामा । व्य० द्वि० १९२ अ । नि० चू० प्र०

१२७ आ।

कच्छुभरि–गुच्छाविशेष । प्रज्ञा २३ ।

कच्छ–कण्डूमान्। विपा० ७४। पामावान्। बृ० द्वि० २२२ आ। कण्डूतिमान्। प्रश्न० १६१ ।

कच्छुल्लणारए–एतन्नाम्ना तापस । ज्ञाता० २२० ।

कच्छू–कच्छू–पामणा(मा) । जीवा० २८८, ३०८ । आ० ३७८ । पामा । बृ० द्वि० २२२ अ । ज० प्र० १७० । नि० चू० द्वि० ६२ अ । व्य० द्वि० १९२ अ ।

कच्छोटक–चरक । भग० ५० ।

कच्छोटग–कच्छोटक । आव० ४१३ ।

कज्ज–अभिवादिय कज्ज भण्णति । नि० चू० प्र० ४२ आ । अपवादकारणम् । अहवा कज्जति णाण–दसण–चरणा । नि० चू० तृ० १२ आ । कार्य–कर्तव्य समुपस्थित । आचा० ११६। अशिवादिनिस्तरणलक्षण प्रयोजन । व्य० प्र० ६ अ। गृहकरण-स्वजनसन्मानादिकृत्य । भग० ७३९ ।

कज्जइ–फल भवतीत्यर्थ । भग० ३७३। क्रियते–व्यथते। यथा शूल क्रियते–व्यथते (पीडयति) । आव० ४३३ ।

कज्जकोडुंब–कुटुम्बे भव कौटुम्ब–स्वराष्ट्रविषये कार्यम् । जीवा० १६६ ।

कज्जति–क्रियते । (कर्मकर्तरि) भवति । ठाणा० २४७ ।

कज्जत्थोकुरटिकास्थानम्–स्थानविशेष । ओघ० १६२ ।

कज्जमाण–क्रियमाणम् – वर्तमानक्रियाक्षणभाविकार्यम् । विशे० ९४१ ।

कज्जमाणा–क्रियमाणा–ईर्यापथिकीक्रियाया प्रथमो भेद । आव० ६१५ ।

कज्जलगी–कज्जलाङ्गी । कज्जलगृहम् । ज्ञाता० ६ ।

कज्जल–कज्जल । मषी। भग० १०। कृष्णवर्णपरिणत । प्रज्ञा० १० ।

कज्जलप्पभा–कज्जलप्रभा । अपरदक्षिणस्या पुष्करिणीनाम । ज० प्र० ३३५ ।

कज्जलमाण–भरिज्जमाण । नि० चू० तृ० ६४ अ ।

कज्जलायमाण–प्लाव्यमानम् । आचा० ३७९ ।

कज्जलेइ–कज्जलमिति । कज्जल–दीपशिखापतितम् ।

ज० प्र० ३२ ।

कज्जसेणे–तृतीयायामवसर्प्पिण्या भारतवर्षे पञ्चम कुलकर । सम० १५० ।

कज्जोयए–अष्टाशीत्या पञ्चदशो महाग्रह । ठाणा० ७८।

कज्जोवए–कार्योपग । अष्टाशीत्या षोडशो महाग्रह । ज० प्र० ५३४ ।

कटक–गिरिपाद । दुर्ग । व्य० द्वि० ४२ आ। सैन्यम् । नदी० १६१ । सैन्य किलिञ्ज वा। प्रश्न० ६ । उपकरणभेद । आचा० ६० ।

कटकमर्द–कटकमर्दन मारणमादिश्य । ठाणा० ४१२ । कटकमर्दन मारणार्थ चाऽनुज्ञाता । विशे० ९५३ ।

कटकित–काष्ठादिभि कुड्यादौ सस्कृत । आचा० ३६१ ।

कटादिकारा–र्छविका । प्रज्ञा० ५८ ।

कटासनम्–कटासनमित्येतस्माच्छय्येति । आचा० ३२० ।

कटाहक–पात्रविशेष । आचा० ३४६ ।

कटु–रसस्य द्वितीयभेद । प्रज्ञा० ४७३ ।

कटुका–सुण्ठ्यादिवत् । उत्त० ६७७ ।

कटुका–औषधिविशेष । उत्त० ६५३ ।

कट्ट–खण्डम् । अनुत्त० ५ ।

कट्टर–तीमनोन्मिश्रघृतवटिकारूपो भोज्यविशेष । पिण्ड० १७२ ।

कट्टरादिकम्–क्वथितम् । बृ० प्र० २३४ आ ।

कट्टारिगा–शस्त्रविशेष । क्षुरिका । नि० चू० प्र० ३०४ आ ।

कट्टु–कृत्वा । उत्त० ७०६, २४९, २५३ ।

कट्ठ–काष्ठम् । फलकादि । प्रश्न १६० । कष्ट–दुखम् । ज्ञाता० १६७ । काष्ठम् । आचा० ३३ । श्रीपर्ण्यादिफलकादि । दश० १९३ । स्थूलमायतमेव । ठाणा० ४६६ । कुट्टिमम् । आव० ७६७ ।

कट्ठकम्मताणि–काष्ठकर्मगृहाणि । आचा० ३६६ ।

कट्ठकम्म–कोट्टिमादि । नि० चू० द्वि० ७१ अ । काष्ठकर्म–काष्ठनिकुट्टित रूपकम् । अनु० १२ । काष्ठकर्म–प्रतिमास्तम्भद्वारशाखादि । आचा० ६१ ।

कट्ठकम्माणि–काष्ठकर्माणि–रथादीनि । आचा० ४१४ ।

दारुमयपुत्रिकादिनिर्मापणानि । ज्ञाता० १८० ।

कट्ठकरण–काष्ठकरणम् । क्षेत्रम् । आव० २२७ । आचा० ४२४ ।

कट्ठकारे–काष्ठकार । शिल्पविशेष । अनु० १४९ ।

कट्ठणिप्फण्णं–काष्ठनिष्पन्नम् । मद्यविशेष । आव० ८५४ ।

कट्ठपाउयारा–काष्ठपादुकाकारा । प्रज्ञा० ५८ ।

कट्ठपेज्जा–मुद्गादियूपो घृततलिततण्डुलपेया वा । उपा० ३ ।

कट्ठमुद्दा–काष्ठ–काष्ठमय पुत्तलको न भापते एव सोऽपि मौनावलम्बी जात । यद्वा मुखरन्ध्राच्छादक काष्ठ-खण्डम्, उभयपार्श्वच्छिद्रद्वयप्रेपितदवरकान्वित मुखबन्धन काष्ठमुद्रा । निरय० २७ ।

कट्ठविरूढगो–काष्ठविरूढ । आव० ४१३ ।

कट्ठसगडिया–काष्ठाना शकटिका । गन्त्री । ज्ञाता० ७६ ।

कट्ठसेज्जा–काष्ठशय्या । फलकादिशयनम् । प्रश्न० १३७–२८ ।

कट्ठसेट्ठी–अर्थजातगृहणेऽयश । वृ० तृ० १६१ अ ।

कट्ठहारा–त्रीन्द्रियजीवविशेप । उत्त० ६९५ । प्रज्ञा० ४२ । जीवा० ३२ ।

कट्ठाओ–काष्ठात्-मध्यसारात् । प्रज्ञा० ३६ ।

कट्ठावसेसो–काष्ठावशेष । शुष्कवृक्ष । उत्त० ३०४ ।

कट्ठिया–काष्ठिका । औप० ६९ ।

कट्ठो–काष्ठ–श्रेष्ठिविशेष । पारिणामिकीबुद्धौ दृष्टान्त । आव० ४२८ ।

कट्ठोले–कृष्ट । हलविदारित । पिण्ड० ८ ।

कट्ठोल्लो–हलकृष्टो य पृथिवीकायस्तत्क्षणादेव आर्द्रश्च शुष्कश्च क्वचिन्मिश्र पृथिवीकाय । ओघ० १२९ ।

कठिणगं–कठिनकम् । प्रश्न० १२८ ।

कडंगर–फलशून्यधान्यम् । ठाणा० ४१९ ।

कड–छावणथूणादियाण एवमादि कड भण्णति । नि० चू० प्र० २३० आ । कृतम्–सिद्धम्–पूर्णम् । भग० ७४५ । भावितम्–सस्कृतम् । भग० ६९१ । कट–विदलवशादिमय । सम० १२६ । कृत–निष्पादित–राद्ध । पिण्ड० ६५ । निष्ठितभक्त । ओघ० १८८ । निकाचितम्–सर्वकरणाऽयोग्यत्वेन व्यवस्थापितम् । भग० ९० । चतुष्कम् । सूत्र० ६७ । निकाचितम्–सकलकरणाऽयोग्यत्वेन व्यवस्थापितम् । प्रज्ञ० ४०३ । कृतम् । आव० ५१३ । कर्तु प्रारब्धम् । पिण्ड० ६३ । कटम् । ओघ० १५३ । अनु० १५४ । यत् पुनरुद्धरित सत् शाल्योदनादिक भिक्षाचरदानाय करम्बादिरूपतया कृत तत् । पिण्ड० ७७ । निष्ठितम्–पक्वम् । नि० चू० प्र० ९२ अ । कट–भोजनविधि । आव० ८५९ । घन्नभायणा । नि० चू० द्वि० १४७ आ ।

कडइत्तओ–कटकस्वामी । आव० ५६० ।

कडओ–कटक । काशीजनपदाऽधिप । उत्त० ३७७ ।

कडकरणं–कटकरणम् । कटनिर्वर्त्तक–चित्राकरमयोमय पाइल्लगादि । उत्त० १९५ । कृतकरणम्–मुद्रा । वृ० प्र० ३२ आ ।

कडक्ख–कटाक्ष–आविर्भावक । ज० प्र० ५२ ।

कडक्खचिट्ठिएहिं–कटाक्षचेष्टितै । शृङ्गाराविर्भावकक्रियाविशेष–कटाक्षचेष्टितम् । ज० प्र० ५२ ।

कडग–कटक । नितम्बभाग । ज० प्र० १९६ । गिरिनितम्ब । ज० प्र० २३७ । आव० ५६० । कटकवशदलमयम् । अनुत्त० ६ । कलाचिकाऽऽभरणम् । प्रज्ञा० ८८ । जीवा० १६२, २५३ । अनीकम् । उत्त० ४३८ । भूपणविधिविशेप । जीवा० २६८ । आव० ७५६ । कलाचिकाऽऽभरणविशेप । भग० ४७७ । कटकानि–कङ्कणविशेषा । उपा० २६ । पर्वतैकदेशा । ज्ञाता० २६ । गण्डशैला । ज्ञाता० १०० । कटक–भित्तिप्रदेश । ज० प्र० २३० । वलयाकार हस्ताऽऽभूपणम् । आव० ७०२ । कृतक–अपेक्षितव्यापार स्वभावनिष्पत्तौ भाव । सूत्र० २८३ । खधावारो । नि० चू० तृ० ५ अ ।

कडगतड–कटतटानि– वैभारगिरेरेकदेशतटानि । ज्ञाता० ३६ ।

कडगमद्द–कटकमर्दम् । आव० ६३२ । कटकमर्द–परराष्ट्रे स्कन्धावारकृतो जनविमर्द । वृ० द्वि० ४६ अ । नि० चू० द्वि० ४५ आ ।

कडगमद्दो–पाककुम्भी । नि० चू० प्र० ३०३ अ । परविसयमाइण्णो, एगस्स रण्णो अभिणिवेसेण अकारिणो वि गामणगरादिसव्वे विणासेइ ता एगेण कयमक्कज्ज

सव्वे बालवुड्ढादी जो जत्थ दीसइ सो तत्थ मारिज्जति एस कडगमद्दो। सह तेणकारिणा मोत्तु वा त कारिंजो तस्सम आयरिओ गच्छो वा कुल वा गणो वा त वा वादेति। नि० चू० तृ० ५ अ।

कडगाई—कैतवानि। बृ० द्वि० ८८ अ।

कडग्गिदाहण—कटानां विदलवशादिमयानामग्नि कटाग्नि, तेन दाहन कटाग्निदाहनम्, कटेन परिवेष्टितस्य वाधनमित्यर्थ। सम० १२६।

कडच्छुत्ता—दर्वी। नि० चू० प्र० २०२ आ।

कडच्छेअ—कटकच्छेद। ओघ० १८७।

कडच्छेज्ज—कटच्छेद्यम्। कटवत् क्रमच्छेद्य वस्तु यत्र विज्ञाने तत्तथा। इद च व्यूतपटोद्वेष्टनादौ भोजनक्रियादौ चोपयोगि। ज० प्र० १३९।

कडच्छेज्ज—द्वासप्ततौ कलासु नवषष्टितमा कला। ज्ञाता० ३९।

कडजुम्म—कृतयुग्म। यो हि राशिश्चतुष्काऽपहारेण अपह्रियमाणश्चतु पर्यवसितो भवति स कृतयुग्म। ठाणा० २३७, २३८। कृत—सिद्ध—पूर्णम्, तत परस्य राशिसज्ञान्तरस्याऽभावेन न त्र्योज प्रभृतिवदपूण यद् युग्मम्—समराशिविशेषस्तत् कृतयुग्मम्। भग० ७४४। त्रैतौजसि एकत्रिंशत् कृतयुग्मे नास्ति प्रक्षेप। सूर्य० १६७।

कडजुम्मकडजुम्मे—यो राशि सामयिकेन चतुष्काऽपहारेणाऽपह्रियमाणश्चतुष्पर्यवसितो भवति, अपहारसमया अपि चतुष्कापहारेण चतुष्पर्यवसिता एव, असौ राशि कृतयुग्मकृतयुग्म इत्यभिधीयते। भग० ९६४।

कडजुम्मकलियोगे—कृतयुग्मकल्योजे सप्तदशादय। भग० ९६४।

कडजुम्मतेओगे—यो राशि प्रतिसमय चतुष्कापहारेणाऽपह्रियमाणस्त्रिपर्यवसान्ते भवति, तत्समयाश्चतुष्पर्यवसिता एवाऽसौ अपह्रियमाणापेक्षया त्र्योज, अपहारसमयापेक्षया तु कृतयुग्म एव, इति कृतयुग्मत्र्योज इत्युच्यते। भग० ९६४।

कडजुम्मदावरजुम्मे—पूर्वोक्तराशिभेदसूत्राणि तद्विवरणसूत्रेभ्योऽवसेयानि। इह च सर्वत्रापि अपहारकसमयापक्षमाद्य पदम्, अपह्रियमाणद्रव्यापेक्ष तु द्वितीयमिति। इह च तृतीयादारभ्योदाहरणानि कृतयुग्मद्वापरे राशौ अष्टादशादय। भग० ९६४।

कडजोगि—कृतो योगो—घटना ज्ञानदर्शनचारित्रै सह येन स कृतयोगी—गीतार्थ। ओघ० ९८।

कडजोगी—कृतयोगी। सूत्रतोऽर्थतश्च छेदग्रन्थधर। व्य० द्वि० १२३ अ। प्रत्युच्चारणे समर्थ कृतयोगी। नि० चू० प्र० ३२२ आ। चउत्थादितवे कतजोगा। नि० चू० प्र० २६ आ। गीतार्थेत्यर्थ। वेयावच्चे वा जेणऽण्णतावि कडो जोगो सो वा कडजोगी। नि० चू० प्र० २०१ आ। गार्हस्थ्ये येन कर्त्तन कृतम्। बृ० द्वि० ११६ आ। कृतयोगी—गीतार्थ। बृ० द्वि० १६५ आ।

कडड—वनस्पतिविशेष। भग० ८०४।

कडण—कटकमर्द। बृ० तृ० १९ अ।

कडणा—त्रट्टिका। भग० ३७६।

कडतड—कटतटम्। गण्डतटम्। ज्ञाता० ६९।

कडपल्ला—उद्धदरा, धन्नभायणा। नि० चू० द्वि० १७ आ।

कडपूतना—व्यन्तरीविशेष। विशे० १०१९।

कडपूयणसिवो—कडपूतनाशिव। दश० १०४।

कडपूयणा—कटपूतना। महावीर स्वामिन उपसर्गकृद् व्यन्तरी। आव० २१०। कटपूतना—तपस्विनामवन्दनकारिका व्यन्तरी। दश० ३८।

कडपोत्ती—यदि कटोऽस्ति ततस्तमन्तराले ददति, अथ स नास्ति तत पोत्ति—चिलिमिनी ददति। ओघ० ६२।

कडभू—रुक्खो। नि० चू० प्र० १२२ अ।

कडय—कटकम्। ओघ० १८०। पर्वततटम्। ज्ञाता० ६३।

कडयपल्लल—कटकपल्वलम्। पर्वततटव्यवस्थितजलाशयविशेष। ज्ञाता० ६७।

कडला—आभरणविशेष। कनकनिगड—निगडाकार पादाभरणविशेष सौवर्ण सम्भाव्यते, लोके च 'कडला' इति प्रसिद्ध। ज० प्र० १०६।

कडवल्लो—सट्टती। नि० चू० तृ० ५९ अ।

कडवा—करटिका। राज० ५०।

कडवाई—कृतवादी। ईश्वरेण कृतोऽय लोक प्रधानादिकृतो वा, यथा च ते प्रवादिन आत्मीयमात्मीय कृतवाद

गृहीत्वोत्थितास्तथाकृतवादिनो भण्यन्ते । सूत्र० १२ ।
कडवाणि–इक्षुयोन्नलकादिदण्डका । आचा० ४११ ।
लए–अजङ्गमत्वेन गृहपालका । वृ० द्वि० १०५ अ० ।
कडसलागा–कटशलाका । आव० २२६ ।
कडसीस–कटशीर्षं । पलाशपत्रमयम् । वृ० द्वि० २५३ अ ।
कडहू–वृक्षविशेष । वृ० द्वि० २८ आ ।
कडा–पर्यायार्थतया प्रतिसमयमन्यथात्वाऽवाप्ते कृता । सम० १०६ ।
कडाइं–पूर्वपरिणामापेक्षया परिणामान्तरेण कृतानि । भग० ५६६ ।
कडाईहिं–इह पदैकदेशात् पदसमुदायो दृश्यस्तत कृत-योग्यादिभि । कृता योगा–प्रत्युपेक्षणादिव्यापारा येषा सन्ति ते कृतयोगिन । भग० १२७ । कृतयोग्यादिभि ज्ञाता० ७७ ।
कडाली–कटालिका । अश्वाना मुखसयमनोपकरणविशेपो लोहमय । अनुत्त० ६ ।
क   **ं**–कट–सस्तार, आसन–आसन्दकादिविष्टरम् । आचा० १३४ ।
कडाह–वहुपासुलिक । त० । कटाह–कच्छपपृष्ठ भाजन-विशेपो वा । अनुत्त० ६ ।
कडाहसंठितो–कटाहसस्थित । आवलिकावाह्यस्य पञ्चम सस्थानम् । जीवा० १०४ ।
कडि–कटी । आचा० ३८ । कटि–मध्यभाग कटीरिव । जीवा० १८७ ।
कडिई–कृतयोगी । नि० चू० प्र० १०२ अ ।
कडिणा–वनस्पतिविशेप । सूत्र० ३०७ ।
कडिपट्टइल्ल–कटिपट्टकवान् । उत्त० ६८ ।
कडिपट्टए–करिपट्टक । आव० ६२६ ।
कडिपट्टओ–कटिपट्टक । उत्त० ६८ । अणच्छादनम् । वृ० तृ० १०२ अ ।
कडिबंधण–कटिबन्धनम् । चोलपट्टक । आचा० २८७ ।
कडिय–शरीरमध्यभागो कटि, ततोऽन्यस्यापि मध्यभाग कटिरिव कटिरिति । ज० प्र० २८ । कट सजातो-ऽस्येति कटित–कटान्तरेणोपरि आवृत । जीवा० १८७ ।
कडियड–कटितटम् । मध्यभाग । जीवा० १८७ ।
कडिल्ल–कटाह । ओघ० ५० । गहनम् । वृ० तृ० १५६ आ । व्य० द्वि० १७५ आ । उपकरणभेद । दश० १६४ । कटिक । विशे० १०३७ । मण्डकादिपचन-भाजनम् । उपा० २१ । महागहनम् । व्य० प्र० १७८ अ ।
कडिल्लकं–मृन्मय चनकादिभर्जनपात्रम् । पिण्ड० १६४ ।
कडिल्लग–गहनम् । व्य० प्र० २५७ ।
कडिल्लदेसं–कडिल्लदेश । गहनप्रदेश । व्य० प्र० २०५ आ ।
कडु–कटु । तीक्ष्ण । उत्त० ६५३ ।
कडुअंफल–कटुकफलम् । अशुभफल–विपाकदारुणमित्यर्थ । दश० १५६ ।
कडुअ–कटुक । आर्द्रकतीमनादि । दश० १८० ।
कडुए–कटुक । रोगविशेप । कटुक नागरादि, तदिव य स कटुकोऽनिष्ट एवेति । भग० ४८४ । वैपद्यच्छेदनकृत् कटुक । ठाणा० २६ । कटुकम्–अनिष्टम् । औप० ४२ । भग० २३१ ।
कडुओ–अपराधापन्नस्य गोष्ठिकस्य यो दण्डपरिच्छेदकारी स कटुको भण्यते । वृ० द्वि० १६१ । कटुक–शीतातपरोगादिदोपवहुलतया परिणामदारुण । सूर्य० १७२ ।
कडुग–कटाह । आव० १६८ । दोसावण्णस्स गोट्ठियस्स दडपरिच्छेयकारी कडुगो भणति । नि० चू० प्र० १५८ आ ।
कडुगतुंविफलं–कटुकतुम्वीफलम् । प्रज्ञा० ३६४ ।
कडुगतुंबी–कटुकतुम्वी । प्रज्ञा० ३६४ ।
कडुगफलविवागो–कटुकफलविपाक । उत्त० ३०३ ।
कडुच्छिका–दर्वी । ओघ० १६६ ।
कडुच्छुअं–कडुच्छुकम्–धूपाधानकम् । ज० प्र० १६३ ।
कडुच्छुवं–दर्वी । ओघ० १६१ ।
कडुच्छुग–कडुच्छुक । तापसभिक्षाभाजनविशेप । आव० ३५६ ।
कडुच्छुय–परिवेपणाद्यर्थो भाजनविशेप । भग० २३८ ।
कडुभड–वेसण हिंगु-मरिचादि, कटुक शुण्ठ्यादिभाण्ड घटादि, इति कटुभाण्डम् । वृ० द्वि० २७१ अ ।

कडुय—कटुकम् । दारुणम् । प्रश्न० १६ । अनिष्टार्थम् । प्रश्न० ११६ । लवणसमुद्रस्य उदके पञ्चमभेद । जीवा० ३७० । कटुकाम्—चित्तोद्वेगकारिणीम् । आचा० ३८८ ।

कडुयदोद्धिय—कटुक दौग्धिकम् । भाषाया 'दूधी—कद्दू नामकशाकविशेष । आव० ७२३ ।

कडुया—कटुका । तीक्ष्णा । जीवा० ३५१ ।

कडुहड— नि० चू० प्र० २०२ आ ।

कडेवरसेणि—कलेवरश्रेणि । कलेवराणि-एकेन्द्रियशरीराणि तन्मयत्वेन तेषा श्रेणि कलेवरश्रेणि—वंशादिविरचिता प्रासादादिष्वारोहणहेतु । उत्त० ३४१ ।

कड्ढन्ति—निन्दयन्ति । आव० ३४३ ।

कड्ढिति—कर्षयन्ति । उत्त० १४८ ।

कड्ढिऊण—कर्षयित्वा । आव० २०५ ।

कड्ढिओ—क्षिप्त । आव० ४२५ ।

कड्ढिज्जमाणो—आकृष्यमाण । प्रश्न० ६२ ।

कड्ढिय—कृष्ट । उत्त० २१५ । उत्तम् । वृ० तृ० १४२ अ । कृष्ट—आकर्षित । प्रश्न० २१ ।

कड्ढेमि—कर्षयिष्यामि । आव० ३६६ ।

कड्ढोकड्ढाहिं—कर्षणापकर्षणै परमाधार्मिककृतै । उत्त० ४५६ ।

कढिअ—क्वथित । निष्पक्व । ज० प्र० १०५ ।

कढिण—कठिनम् । वंशकटादि । आचा० ३७२ । तृणविशेष । वृ० तृ० ५२ आ । वसो । नि० चू० प्र० १३४ आ ।

कढिणिय—अतिशयेन घनम् । वृ० प्र० ५५ अ ।

कढिय—क्वथितम् । जीवा० २७८ ।

कढियाई—क्वथितादय । क्वथित तीमनादि तदादय । पिण्ड० १६८ ।

कण—शाल्यादे । आचा० ३४६ । कण—तन्दुल । उत्त० ४५ ।

कणइरगुम्मा—कणवीरगुल्मा ज० प्र० ९८ ।

कणइरा—कणयरा । अतिस्निग्धतया श्लक्ष्णश्लक्ष्णस्वेदकणाकीर्णा । जीवा० २७६ ।

कणए—पर्वगविशेष । प्रज्ञा ३३ । अष्टाशीत्यामष्टमो महाग्रह । सूर्य० २९४ । ज० प्र० ५३४ । ठाणा० ७८ ।

कणओ—कनक । श्लक्ष्णरेख प्रकाशरहितश्च । आव० ७५२ ।

कणक—वनस्पतिविशेष । भग० ८०२ । बाणविशेष । प्रश्न० २१ । कणका—बाणा । सम० १५७ ।

कणकणए—अष्टाशीत्या नवमो महाग्रह । सूर्य० २९५ । ज० प्र० ५३४ । ठाणा० ७८ ।

कणकनिउज्जुत्त—कनकनियुक्तानि । हेमखचितानि । ज्ञाता० ५८ ।

कणकीटक—निष्ठुर कृमि । उत्त० ४५७ ।

कणकुंडग—कणिककुण्डम् । कणिकाभिर्मिश्रा कुक्कुमा । आचा० ३४६ । आव० ८१४ ।

कणग—कनकतिलकम् । भूषणविधिविशेष । जीवा० २६६ । कनक देवकाञ्चनम् । आव० १८४ । कनके भव कानक । आव० २३१ । कनक बाणविशेष । वृ० द्वि० २३३ आ । कणक बिन्दु शलाका वा । कनक सुवर्णमेव । औप० ५२ । तारकपात । औघ० २०१ । घृतवरद्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३५४ । कनक—पीतरूप सुवर्णविशेष । ज० प्र० २३ । धान्यम् । भग० ४७० । कनक—रेखारहित । व्य० द्वि० २५४ आ ।

कणगकताणि—कनककान्तीनि । कनकस्येव कान्तिर्येषा तानि । आचा० ३९४ ।

कणगकूडे—कनककूटम् । विद्युत्प्रभवक्षस्कारपर्वते पञ्चमकूटस्य नाम । ज० प्र० ३५५ ।

कणगकेउ—कनककेतु । अहिच्छत्रानगर्या नृपति । ज्ञाता० १९३ । हस्तिशीर्षनगरे नरपति । ज्ञाता० २२७ ।

कणगखइयाणि—कनकखचितानि । कनकरसस्तवकाञ्चितानि । आचा० ३९४ ।

कणगखचितं—कणगसुत्तेण फुल्लिया जस्स पाडिया त कणगखचित । नि० चू० प्र० २५५ अ ।

कणगखचिय—कनकखचितम् । विच्छुरितम् । जीवा० २५३ ।

कणगखलं—कनकखलम् । आश्रयपदम् । आव० १९५ ।

कणगजाल—कनकजालम् । भूषणविधिविशेष । जीवा० २६८ ।

कणगज्झय–कनकध्वज । कनकरथराजपुत्र । आव० ३७३ । कनकध्वज–कनकरथराजपुत्र । ज्ञाता० १८९ ।

कणगणिगरमालिय।–कनकनिगरमालिका । भूषणविधिविशेष । जीवा० २६९ ।

कणगणिगल–कनकनिगड । निगडाकार पादाभरणविशेष सौवर्ण सभाव्यते । लोके च 'कडला' इति प्रसिद्ध । ज० प्र० १०६ ।

कणगणिज्जुत्त–कनकनियुक्तम् । कनकविच्छुरित, कनकपट्टिकासवलितमित्यर्थ । ज० प्र० ३७ ।

कणगतिंदूसेणं–कनकतिन्दूषेण । स्वर्णकन्दुकेन । विपा० ८४ ।

कणगतिलक–कनकतिलकम् । ललाटाभरणम् । ज० प्र० १०६ ।

कणगनिगरणं–कनकस्य निगरण कनकनिगरणम्, गालित कनकमिति भाव । जीवा० २६७ ।

कणगनिगल–कनकनिगलानि । निगडाकारा सौवर्णपादाभरणविशेषा । औप० ५५ ।

कणगनिज्जुत्त–कनकनियुक्तम् । कनकविच्छुरितम् । जीवा० १९२ ।

कणगपट्टं–कणगेण जस्स पट्टा कता त कणगपट्ट । मिगा । नि० चू० प्र० २५५ अ ।

कणगपट्टाणि–कनकपट्टानि । कृतकनकरसपट्टानि । आचा० ३९४ ।

कणगपट्ठा–कनकपृष्ठान् । काञ्चिदिति रूपकम् । ज्ञाता० २३१ ।

कणगपिट्ठी–कनकपृष्ठि । एतादृशो मृग । ओघ० १५८ ।

कणगपुर–कनकपुरम् । प्रियचन्द्रराजधानी । विपा० ९५ ।

कणगप्पभा–धर्मकथाया पञ्चमवर्गस्य षोडशममध्ययनम् । ज्ञाता० २५२ ।

कणगप्पभो–कनकप्रभ । घृतवरद्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३५४ ।

कणगफुल्लिय–कणगेण जस्स फुल्लिताओ दिण्णाओ त कणगफुल्लिय । नि० चू० प्र० २५५ अ ।

कणगफुसियाणि–कनकस्पृष्टानि । आचा० ३९८ ।

कणगरहे–कनकरथ । विजयपुरनगराधिपति । विपा० ७५ । तेतलिपुरनगरे राजा । ज्ञाता० १८४ । आव० ३७३ ।

कणगलता–चमरेन्द्रस्य सोमलोकपालस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी । ठाणा० २०४ ।

कणग –चमरेन्द्रस्य सोमलोकपालस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी । भग० ५०३ ।

कणगवत्थु–कनकवस्तु । द्विपृष्ठवासुदेवनिदानभूमि । आव० १६३ ।

कणगसंताणे–कनकसन्तानक । अष्टाशीत्यामेकादशो महाग्रह । सूर्य० २९४ ।

कणगसनामा–कनकेन सह एकदेशेन समान नाम येषा ते कनकसमाननामान । सूर्य० २९५ ।

कणगा–धर्मकथाया पञ्चमवर्गस्य पञ्चदशममध्ययनम् । ज्ञाता० २५२ । चमरेन्द्रस्य सोमलोकपालस्य प्रथमाऽग्रमहिषी । ठाणा० २०४ । भग० ५०३ । भीमस्य राक्षसेन्द्रस्य तृतीयाऽग्रमहिषी । ठाणा० २०४ । भग० ५०४ । चतुरिन्द्रियजीवविशेषा । प्रज्ञा० ४२ । जीवा० ३२ । कणगा–सण्हरेहा पगासविरहिता य । नि० चू० तृ० आ ।

कणगाणि–कनकानि । कनकरसच्छुरितानि । आचा० ३९४ ।

कणगावलि–कनकावली । सौवर्णमणिकमयी । भग० ४७७ ।

कणगावलिभद्दो–कनकावलिभद्र । कनकावलिद्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३६९ ।

कणगावलिमहाभद्दो–कनकावलिमहाभद्र । कनकावलिद्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३६९ ।

कणगावलिवरमहावरो–कनकावलिवरमहावर । कनकावलिवरे समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३६९ ।

कणगावलिवरावभासभद्दो–कनकावलिवरावभासमहाभद्र । कनकावलिवरावभासे द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३६९ ।

कणगावलिवरावभासमहाभद्दो–कनकावलिवरावभासमहाभद्र । कनकावलिवरावभासे द्वीपे अपरार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३६९ ।

कणगावलिवरावभासमहावरो–कनकावलिवरावभासम-

हावर । कनकावलिवरावभासे समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३६६ ।

कणगावलिवरावभासवरो–कनकावलिवरावभासवर । कनकावलिवरावभासे समुद्रे पूर्वार्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३६६ ।

कणगावलिवरावभासो–कनकावलिवरावभास । द्वीपविशेष समुद्रविशेपश्च । जीवा० ३६८ ।

कणगावलिवरो–कनकावलिवर । द्वीपविशेष समुद्रविशेपश्च । जीवा० ३६८ । कनकावालसमुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३६६ ।

कणगावली–कनकावलि । कनकमयमणिकमयो भूपणविशेष । कल्पनया तदाकार यत्तपस्तत् । तपोविशेष । औप० २६ । तपोविशेष । नि० चू० प्र० ३०६ आ । कनकावली–कनकमयमणिकरूप आभरणविशेष तपोविशेषश्च । अन्त० २७ । कनकमणिमयी । जीवा० २५३ । कनकावलि–द्वीपविशेष समुद्रविशेषश्च । जीवा० ३६८ । सुवण्णमणिएहिं कणगावली । नि० चू० प्र० २५४ आ ।

कणतो–कनक । रेखारहितो ज्योतिष्पिण्ड । ओघ० २०५ ।

कणपूपलिय–कणपूपलिका, कणिकाभिर्मिश्रा पूपलिका कणपूपलिका । आचा०, ३४६ ।

कणय–कणका, वाणविशेपा । ज० प्र० २०६ । प्रहरणविशेष । नि० चू० द्वि० ५७ आ ।

कणयमूल–कनकमूलम् । बिल्वमूलम् । उत्त० १४२ ।

कणयर–गुल्मविशेप । प्रज्ञा० ३२ ।

कणवितााणए–कणवितानक । अष्टाशीत्या दशमो महाग्रह । सूर्य० २९५ । ज० प्र० ५३४ । अष्टाशीत्या दशमो महाग्रह । ठाणा० ७८ ।

कणवीर–म्लेच्छविशेप । प्रज्ञा० ५५ ।

कणसताणए–अष्टाशीत्यामेकादशो महाग्रह । ठाणा० ७८ । ज० प्र० ५३४ ।

कणादो–कणादमतप्ररूपक । विशे० ८६६ ।

कणिआरवण–कर्णिकारवनम् । आव० १८६ ।

कणिक्क–धान्यविशेप । आव० १०२ । कणिक्क । आव० ८५५ ।

कणिक्कमंडलिआ–ओघ० १३७ ।

कणिक्कमच्छा–मत्स्यविशेपा । जीवा० ३६ । प्रज्ञा० ४४ ।

कणितारुक्खे–दिक्कुमाराणा चैत्यवृक्ष । ठाणा० ४८७ ।

कणिया–क्वणिता, काचिद् वीणा । ज० प्र० १०१ । कणिक्का । आव० ८५५ । तुसमुही । नि० चू० प्र० १६६ अ ।

कणियारय–कर्णिकारक । कुत्सितवृक्षविशेष । आव० ५५७ ।

कणियारे–दिशाचरविशेप । भग० ६५६ ।

कणीयस–कनीयान्, कनिष्ठ, लघुरिति । अन्त० ८ ।

कणुओ–रज, धूलिरज । दश० ४७ ।

कणुय–कणुकम्, त्वगाद्यवयव । आचा० ३४७ ।

कणे–कण । अष्टाशीत्या सप्तमो महाग्रह । ज० प्र० ५३४ । ठाणा० ७८ ।

कणेरदत्त–कणेरुदत्त, कुरुषु गजपुराधिपति । उत्त० ३७७ ।

कणेरुदत्ता–करेणुदत्ता, ब्रह्मदत्तस्याऽष्टाग्रमहिषीणा मध्ये तृतीया । उत्त० ३७६ ।

कणेरुपइगा–करेणुपदिका, ब्रह्मदत्तस्याऽष्टाग्रमहिषीणा मध्ये तुरीया । उत्त० ३७६ ।

कणेरुसेणा–करेणुसेना, ब्रह्मदत्तस्याऽष्टाग्रमहिषीणा मध्ये पष्ठी । उत्त० ३७६ ।

कणो–कण, अष्टाशीत्या सप्तमो महाग्रह । सूर्य० २९४ ।

कण्णतेपुर–अप्पत्तजोव्वणाण रायदुहियाण सगहो कन्नतेपुर । नि० चू० प्र० २७१ अ ।

कण्ण–कर्ण । आव० १९२ । वित्थारकण्ण । नि० चू० तृ० ४८ आ । कन्या, कन्या इव कन्या, अफला अथवा दूरफला । ज० प्र० २०६ । कोण । नि० चू० प्र० १२ आ । कर्ण—प्रथमकोटिभागरूप । सूर्य० ४९ । आव० ६२१ । श्रवण । प्रश्न० ८ । कोटिभाग । सूर्य० ८ ।

कण्णकल–कर्णकलम्, कर्णकलमिति च क्रियाविशेपण द्रष्टव्यम्, तच्चैव भावनीयम्—कर्णम्–अपरमण्डलगतप्रथमकोटिभागरूप लक्ष्यीकृत्याऽधिकृतमण्डल प्रथमक्षणादूर्ध्वं क्षणे क्षणे कलयाऽतिक्रान्त यथा भवति तथा । सूर्य० ४९ ।

कण्णकला–कर्णकला, कर्ण–कोटिभाग, तमधिकृत्याऽपरेषा मतेन कला–मात्रा । सूर्य० ८ ।
कण्णग–कन्यका, कन्या । आव० ८६३ ।
कण्णगूधा–कण्णमलो । नि० चू० प्र० १६० आ ।
कण्णचवेडय–दण्डविशेष । नि० चू० प्र० २६६ अ ।
कण्णत्तिया–चर्मपक्षिविशेष । प्रज्ञा० ४६ । जीवा० ४१ ।
कण्णधार–कर्णधार । आव० ३८७ । कर्णधार, निर्यामकविशेष । आव० ६०२ ।
कण्णपाउरणा–कर्णप्रावरणनामा अन्तरद्वीप । प्रज्ञा० ५० ।
कण्णपाली–कर्णपाली । भूषणविधिविशेष । जीवा० २६६ ।
कण्णपावरणो–कर्णप्रावरण, अन्तरद्वीपविशेष । जीवा० १४४ ।
कण्णपीढ–कर्णपीठम्, कर्णाभरणविशेषरूपम् । जीवा० १६२ । भग० १३२ । प्रज्ञा० ८८ । औप० ५० ।
कण्णपूर–कर्णपूरम्, कर्णाभरणविशेष । भग० ३१७ ।
कण्णरोडयं–कर्णरोटकम्, राटि । आव० ८६ ।
कण्णलोयण–शतभिषग्नक्षत्रस्य गोत्रम् । सूर्य० १५० ।
कण्णवालि–वर्णवाली, कर्णोपरितनविभागभूषणविशेष । ज० प्र० १०६ ।
कण्णसप्पे–राहो नवम नाम । सूर्य० २८७ ।
कण्णा–तरुणित्थी । नि० चू० द्वि० १६७ आ ।
कण्णाकण्णि–नि० चू० तृ० ५५ अ । ण संघरिस्सति ताहे कण्णाकण्णि भरेति । नि० चू० तृ० ५० आ ।
कण्णाघातो–कर्णाघात, कर्णयोराघात । उत्त० ३०३ ।
कण्णायत–कर्णायतम्, कर्ण यावद् आयतम्–आकृष्टम् । भग० ६३ ।
कण्णायय–कर्ण यावदाकृष्ट कर्णायत । भग० २३० । आकर्णमाकृष्ट । भग० ३२३ ।
कण्णाहिंडिस्सति– । ओघ० ६२ ।
कण्णाहुइ–पूर्णकर्णाम् । महाप्र० ।
कण्णिअ–कर्णिका, कोणा । ज० प्र० २२६ । वीजकोश । ज० प्र० २४२ ।
कण्णिए–कर्णिका, कोणा । अनु० १७२ ।
कण्णिगा–कर्णिका, बीजकोश । ज० प्र० २८४ ।
कण्णिते–कर्णिका, कोणविभाग । ठाणा० ४३५ ।
कण्णियार–कर्णिकार, वृक्षविशेष । जीवा० ३५५ ।
कण्णियारकुसुमं–कर्णिकारकुसुमम्, काञ्चनारककुसुमम् । प्रज्ञा० ३६१ ।
कण्णिल्ल–पदैकदेशे पदसमुदायोपचारात् कण्णिलायनम्, शतभिषग्गोत्रम् । ज० प्र० ५०० ।
कण्ह–कृष्ण, परिव्राजकविशेष । औप० ६१ । नवमो वासुदेव । आव० १५६ । साधारणबादरवनस्पतिकायविशेष । प्रज्ञा० ३४ । बलदेववासुदेवयोर्धर्माचार्यनाम । सम० १५३ । वनस्पतिविशेष । भग० ८०४ । कृष्ण–पुरुषसिंहधर्माचार्य । आव० १६३ । वसुदेवपुत्र । दश० ३६ । हरितविशेष । प्रज्ञा० ३३ । कन्दविशेष । उत्त० ६६१ । द्वारकाया वासुदेव । अन्त० २ । ज्ञाता० १०० । वासुदेवनाम । निरय० ३६ ।
कण्हकंद–कृष्णकन्द । अनन्तकायवनस्पतिविशेष । भग० ३०० । प्रज्ञा० ३६४ ।
कण्हकणवीरए–कृष्णकणवीर । वृक्षविशेष । प्रज्ञा० ३६० ।
कण्हगोमी–कृष्णगोमी, कर्णशृगाली । व्य० द्वि० १८७ अ ।
कण्हदल–वनस्पतिविशेष । भग० ८०२ ।
कण्हपक्खिय–कृष्णपाक्षिक । अधिकतरमसारभाग् जीव । प्रज्ञा० ११७ ।
कण्हपरिव्वायगा–कृष्णपरिव्राजका, परिव्राजकविशेषा । नारायणभक्तिका इति केचित् । औप० ६१ ।
कण्हफुसिताओ–कर्णपृषत । नि० चू० तृ० ६० आ ।
कण्हबंधुजीवए–कृष्णबन्धुजीव । वृक्षविशेष । प्रज्ञा० ३६० ।
कण्हभूमी–कृष्णभूमि । आव० १०१ ।
कण्हराई–ईशानेन्द्रस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी । भग० ५०५ । कृष्णपुद्गलरेखा । भग० २७१ ।
कण्हराती–कृष्णराजी, कृष्णपुद्गलपङ्क्तिरूपत्वात् । ठाणा० ४३२ । धर्मकथाया दशमवर्गस्य द्वितीयमध्ययनम् ।

ज्ञाता० २५३ ।

कण्हरातीते–उत्तरपूर्वरतिकरपवते ईशानेन्द्रस्याग्रमहिष्या राजधानी । ठाणा० २३१ ।

कण्हलेस्सा–कृष्णद्रव्यात्मिका लेश्या, कृष्णद्रव्यजनिता वा लेश्या कृष्णलेश्या । प्रज्ञा० ३४४ ।

कण्हवडेंसय–कृष्णावतंसकम् । ईशानकल्पे विमानविशेष । ज्ञाता० २५३ ।

कण्हवेला–आभीरविसए नदी । नि० चू० द्वि० १०२ आ ।

कण्हसप्प–कृष्णसर्प । दर्वीकर–अहिभेदविशेष । दर्वीव दर्वी–फणा, तत्करणशील । जीवा० ३९ । प्रज्ञा० ४६ । राहो नवम नाम । भग० ५७५ ।

कण्हसिरी–कृष्णश्री । दत्तगाथापतिभार्या । विपा० ८२ ।

कण्हसूरवल्ली–वल्लीविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

कण्हा–कृष्णा । अन्तकृद्दशानामष्टमवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम् । अन्त० २५ । कण्हा (कण्णा)–कृष्णा (कन्या) । आभीरविषये नदीविशेष । आव० ४१२ । वासवदत्त-राज्ञी । विपा० ९५ । धर्मकथाया दशमवर्गस्य प्रथम-मध्ययनम् । ज्ञाता० २५३ । कृष्णा–आर्याविशेष । अन्त० २८ । ईशानेन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी । भग० ५०५ । कृष्णा–योगद्वारविवरणेऽचलपुरासन्ननदीविशेष । पिण्ड० १४४ ।

कण्हाते–उत्तरपूर्वरतिकरपवते ईशानेन्द्रस्याऽग्रमहिष्या राज-धानी । ठाणा० २३१ ।

कण्हासोए–कृष्णाशोक । वृक्षविशेष । प्रज्ञा० ३६० ।

कण्हुइ–कुत्रचिद् देशे काले वा । उत्त० १४० ।

कण्हुई–कस्मिश्चित् सूत्रादौ वस्तुनि वा । उत्त० १२६ ।

कण्हुहरे–कण्हु–कस्यार्थं हरिष्यामि इत्येवमध्यवसायी । उत्त० २७४ ।

कण्हे–निरयावलिकाना प्रथमवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम् । निरय० ३ ।

कण्हो–वभवत्त । कण्हो–क्रोधजयी । मर० ।

कत–कृत ममानेन तत्प्रयोजनमिति प्रत्युपकारार्थं यद्दान तत् कृतम् । ठाणा० ४९६ ।

कतकज्जो–कृतकार्य । निष्ठिताखिलप्रयोजन । सूर्य० २९२ ।

कतणासी–कृतनाशिन, अकृतज्ञ । ओघ० ७२ ।

कतपुण्णो–कृतपुण्य, राजगृहे धनावहपुत्र । आव० ३५३ ।

कतमाला–एकोरुकद्वीपे वृक्षविशेष । जीवा० १४५ ।

कता–कदा । आव० ३४२ ।

कति– । अनुत्त० ७ ।

कतिकट्ठा–कतिकाष्ठा, किंप्रमाणा । सूर्य० ७ ।

कतिविया–कइविका–कलाचिका । ज्ञाता० ४४ ।

कतिसचिता–कति–कतिसङ्ख्याता, सङ्ख्याता एकैक-समये ये उत्पन्ना सन्त सञ्चिता —कत्युत्पत्तिसाधर्म्याद् बुद्धया राशीकृतास्ते कतिसञ्चिता । ठाणा० १०५ ।

कतिसचिया–कतीति सङ्ख्यावाची, ततश्च कतित्वेन सञ्चिता –एकसमये सङ्ख्यातोत्पादेन पिण्डिता कतिस-ञ्चिता । भग० ७९९ ।

कती–'कति' इत्यनेन सङ्ख्यावाचिना द्व्यादय सङ्ख्या-वन्तोऽभिधीयन्ते । ठाणा० १०५ । कृतमस्यास्तीति कृती–पुण्यवान् परमार्थपण्डितो वा । सूत्र० २९८ । सङ्ख्या वाची । भग० ७९९ ।

कत्त–चर्म्मकम् । नि० चू० प्र० ५६ आ ।

कत्तरी–कर्त्तरी । आव० ६२७ ।

कत्तलिकारुवा–पञ्चलतिका । ज० प्र० २२३ ।

कत्तविरिए–कार्त्तवीर्य । सुभूमचक्रवर्त्तिपिता । आव० १९२ । ठाणा० ४३० ।

कत्तवीरिओ–सुभूमचक्रवर्तिन पिता । सम० १५२ । कार्तवीर्य –अनन्तवीर्यपुत्र । आव० ३९२ । कार्त्तवीर्य –सजातकाम –जातेच्छ । भग० १४ ।

कत्ताविय–कर्त्तापितम् । कर्तन कारितम् । आव० ४१८ ।

कत्ति–कत्तिकड–क इति कृतम् । आव० ७८२ । छवडिया (सादडी) । नि० चू० प्र० ४२ अ ।

कत्तिए–कार्तिक । हस्तिनापुरे श्रेष्ठी । भग० ७३७ ।

कत्तिओ–कार्त्तिक । राजाभियोगविषये हस्तिनापुरे श्रेष्ठी । आव० ८११ । श्रेष्ठिविशेष । निर० २२ ।

कत्तिय–कृत्तिका । प्रथम नक्षत्रम् । ठाणा० ७७ । भरत-क्षेत्र आगमिष्यन्त्यामुत्सर्पिण्या चतुर्विंशतिकाया पष्ठतीर्थ-करस्य पूर्वभवनाम । सम० १५४ ।

कत्तियाणक्खत्ते–कृत्तिकानक्षत्रम् । सूर्य० १३० ।

कत्ती–कर्त्तरिका (कृत्तिका) । ठाणा० २३४ । चम्म । नि० चू० द्वि० १८ अ । कर्त्तरी, चर्मपञ्चके पञ्चमो भेद । आव० ६५२ ।

कत्थ–यत्र कथिकादि गीयते तद् कथ्यम् । ज० प्र० ३६ । कत्थ –अनन्तजीववनस्पतिभेद । आचा० ५६ ।

कत्थपुडिय–गान्धिक । नि० चू० प्र० ३५६ अ ।

कत्थुरी–गुच्छाविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

कत्थुल–गुल्मविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

कत्थुलगुम्मा–कस्तुलगुल्मा । ज० प्र० ६८ ।

कत्थे–कथाया साधुकथ्य ज्ञाताध्ययनवत् । ठाणा० २८८।

कथगो–कथक । जीवा० २८१ ।

कथनम्–उपदेश । आव० ६०४ ।

कदवचीरिका–शस्त्रविशेष । ठाणा० २७३ ।

कदवपुप्फसठिय–कदम्वपुष्पसस्थितम् । कदम्वपुष्पवद् अध सङ्कुचितम् उपरि विस्तीर्णमुत्तानीकृताऽर्द्धकपित्थ-मस्थानसस्थितम् । सूर्य० २७४ ।

कदर्थित.–हीलित । आचा० ४३० ।

कदल–वनस्पतिविशेष । भग० ८०३ ।

कदली–वल्लिविशेष । प्रज्ञा० ३१, ३३ । आचा० ३० । लतावलयभेद । उत्त० ६६२ । नदी० २१५ ।

कदलीथंभो–कदलीस्तम्भ । प्रज्ञा० २६६ ।

कदलीहर–कदलीगृहम् । आव० १२३ ।

कदशनम्–निष्ठान–सर्वगुणोपेत सभृतमन्नम्, रसनिर्व्यूढम्–एतद्विपरीत कदशनम् । दश० २३१ ।

कद्दम–कर्दम । यत्र प्रविष्ट पादादिर्नाक्रष्टु शक्यते कष्टेन वा शक्यते । ठाणा० २३५ । द्वितीयोऽनुवेलन्धरनागराज । जीवा० ३१३ । कद्दमो गोवाटादीनाम् । ठाणा० २१६ । कर्दम –नदीविदरकलक्षण । ज्ञाता० ६७ ।

कद्दमए–कर्दमक । ठाणा० २२६ । आग्नेय्या दिशि वर्तमाने विद्युत्प्रभपर्वते नागराज । वरुणस्य पुत्रस्थानीयो देव । भग० १९९ ।

कद्दमजलं–कर्दमजलम् । यद् घनकर्दमस्योपरि वहति । ओघ० ३२ ।

कद्दिवसं–कस्मिन् दिवसे । मर० ।

कनगरा–काय–पानीयाय नङ्करा –वोधिस्थनिश्चलीकरण-पापाणस्ते कनङ्करा कानङ्करा वा, ईपन्नङ्कर इत्यर्थ । विपा० ७१ ।

कनकरसस्तवकाञ्चितानि–कनकखचितानि । आचा० ३६४ ।

कनकालुक–भृङ्गारक । ज० प्र० ५६ । भृङ्गार । ज० प्र० २६२ ।

कनकावलि–तपोविशेष । व्य० प्र० ११३ आ । कनकावलि –आभरणविशेष । प्रज्ञा० ३०७ ।

कन्दलीकन्दक–सचित्त तरुशरीरम् । आव० ८२८ ।

कन्दुकगति.–सर्वेण सर्वत्रोत्पद्यते विमुच्यैव पूर्वस्थानम् । भग० ८४ । गतिविशेष । ठाणा० ८६ ।

कन्न–कर्ण । पिण्ड० १५३ ।

कन्नकुज्ज–कन्यकुब्जम् । यत्र मृगकोष्ठकनगरे जितशत्रुराज्ञ कन्या यामदग्न्येन पूर्वं कुब्जीकृता पश्चाद् अकुब्जीकृता, अत सवृत्त तन्नगरनाम । नगरविशेष । आव० ३६२।

कन्नधार–कर्णधार । निर्यामिक । ज्ञाता० १३६ ।

कन्नपाउरणदीवे–कर्णप्रावरणद्वीप । अन्तर्द्वीपविशेष । ठाणा० २२६ ।

कन्नपालो–कर्णपाल । अलोभोदाहरणे मेण्ढ । आव० ७०१ ।

कन्नपीढ–कर्णविव पीठे आसने–कुण्डलाधारत्वात् कर्णपीठम् । ठाणा० ४२१ ।

कन्नवेयणा–कर्णवेदना । श्रोत्रपीडा । भग० १६७ ।

कन्नस–कनिष्ठम् । लघु, जघन्यम् । उत्त० २३५ ।

कन्नसर–कर्णसर । कर्णगामी । दश० २५३ ।

कन्नाघाओ–कर्णाघात । आव० ७१६ ।

कन्नामोडओ–कर्णामोटक । आव० ४८५ ।

कन्नारोडयं–कर्णस्फोटम् । बृ० प्र० २८ आ ।

कन्नालीय–कन्यालीकम् । कन्याविषयमनृतम्, अभिन्नकन्यकामेव भिन्नकन्यका वक्ति विपर्ययो वा । आव० ८२० ।

कन्नाहाडिया–कर्णाहृता । आव० ४११ ।

कन्नाहेडय–कर्णाहिटकम् । आव० २६२ ।

कन्निया–कर्णिका । बीजकोश । भग० ५१३ । मध्य-गण्डिका । कर्णिका नाम उन्नतसमचित्रबिन्दुकिनी । प्रज्ञा०

८५ । कर्णिका-पत्राधारभूता । प्रज्ञा० ३७ ।
कन्नीय-कर्णिका । भग० ५११ ।
कन्नीरहो-कर्णीरथ । प्रवहणम् । विपा० ४५ । प्रवहणविशेष । ज्ञाता० ९३ ।
कन्नुक्कड-साधारणबादरवनस्पतिकायविशेष । प्रज्ञा० ३४ ।
कन्नू-कानु । कामपि । उत्त० १९४ ।
कन्यकुब्ज-नगरविशेष । विशे० ४३९ ।
कन्याचोलक-यवनालक । आव० ४२ । नदी० ८८ । जवनालक । प्रज्ञा० ५४२ ।
कन्हो-द्वारवत्या वासुदेव । बृ० पृ० ५६ आ ।
कपर्दक-वराटक । ओघ० १२९ । वराट । प्रज्ञा० ४९ ।
कपाल-रोगविशेष । आचा० २३५ ।
कपिंजल-कपिञ्जल । लोमपक्षिविशेष । जीवा० ४१ ।
कपिंजलक-कपिञ्जलक । पक्षिविशेष । प्रश्न० ८ ।
कपिञ्चु-चित्रपिच्छपक्षिविशेष । आचा० ६९ ।
कपित्थ-कपेरिव लम्बते, 'त्थे'ति च करोतीति कपित्थम् । अनु० १५० । फलविशेष । प्रज्ञा० १० । दश० १०० ।
कपिल-स्वयंबुद्धविशेष । बृ० प्र० १८७ आ । प्रत्येकबुद्धविशेष । उत्त० ५ । मतविशेषप्ररूपक । उत्त० २९६ ।
कपिलदरिसण-मतविशेष । आचा० १६३ ।
कपिहसित-विरलवानरमुखहसितम् । ओघ० २०१ ।
कपोत-पक्षिविशेष । आचा० ३१४ ।
कपोय-कपोत । लोमपक्षिविशेष । जीवा० ४१ ।
कपोलपाली-गण्डरेखा । जीवा० २७६ ।
कप्प-वत्थपुप्फचम्मादि वा कप्प, रुक्खादि वा कप्प । नि० चू० द्वि० ७१ अ । कल्पत इति कल्प स्वकार्यकरणसामर्थ्योपेत । भग० १५५ । कल्प-बृहत्कल्प । सप्तमनिर्युक्तिस्थानम् । आव० ६१ । आव० ७९३ । कल्प-कम्बल्यादिरूपम् । ओघ० ३४ । कल्प । अनु० १७१ । तथाविधसमाचारप्रतिपादक । ज्ञाता० ११० । कल्प-तथाविधसमाचारनिरूपक शास्त्रम् । औप० ९३ । वक्तव्य । नि० चू० प्र० २५ आ । कल्प-विकल्प समाचारो वा । औप० ३६ । छेद । ठाणा० ४९६ । दसाकप्पववहारा । नि० चू० तृ० १०० आ । कल्प-आचार । प्रज्ञा० ७० । अपरिहार्य । नि० चू० तृ० १३२ आ । कल्प-दशाश्रुतस्कन्धकल्पव्यवहारा । व्य० प्र० ९३ आ । आचार । आचा० १९८, २४४ । ठाणा० २४४ । आचारो मर्यादित्यर्थ । ठाणा० ५११ । करणमाचार । ठाणा १९७ । साध्वाचार । ठाणा० ३७१ । छेद । ठाणा० ४९७ । जिनकल्पिकादिसमाचार । भग० ९१ । यतिक्रियाकलाप । उत्त० ५०२ । यतिव्यवहार । उत्त० ६१६ । कल्पते-साध्वादिक्रियासु समर्थो भवतीति कल्पो-योग्य । उत्त० ६३६ । विधि । नदी० ६१ । व्यवस्था स्थविरकल्पादिरूपा यत्र वर्ण्यते ग्रन्थे स । नदी० २०६ । देवलोक । नदी० २०७ । कल्पसूत्रम् । आव० ७२४ । दिवस । बृ० प्र० २२४ आ । क्वचित्करणे । बृ० प्र० ३ अ । कल्पोक्तसाध्वाचार । ठाणा० ३७३ । कल्पाद्युक्तसाध्वाचार सामायिकच्छेदोपस्थापनीयादि । ठाणा० ३७४ । कल्प्यन्ते-इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशादिदशप्रकारत्वेन देवा एतेष्विति कल्पा-देवलोका । उत्त० ७०२ । कम्बल्यादिरूपम् । ओघ० ३४ । सम० ३८ । कृत्यम् । आव० ७९१ । कारणपुव्वगो । नि० चू० प्र० ७९ अ । समाचार । प्रश्न० १०९ । अध्वकल्प । बृ० द्वि० १२२ आ । समाचारो विकल्पो वा । प्रश्न० १५७ । कल्पशास्त्रोक्तसाधुसमाचार । बृ० तृ० २४६ आ । औपम्य, सामर्थ्य, वर्णना, छेदन, करण, अधिवासश्च । आव० ५०० । अध्वकल्प । नि० चू० तृ० ४० अ । आव० ३२४ । योग्य । दश० ६ । तथाविधसमाचारनिरूपक शास्त्रम् । भग० ११४ । कल्प-यज्जिनकल्पिका अनवस्तृता रात्रावुत्कुटुकास्तिष्ठन्ति एप कल्प । यत्कारणे समापतिते अज्झुपिराणि (अशुषिराणि) तृणानि गृह्णन्ति एप कल्प । व्य० द्वि० २८७ अ । कल्प-सदृश । उत्त० ४६५ । समाचारी । व्य० प्र० १३६ आ । कल्पाध्ययनम् । व्य० द्वि० ४२० अ । सामर्थ्ये वर्णनाया च, छेदने करणे तथा । औपम्ये चाऽधिवासे च, कल्पशब्द विदुर्बुधा ॥१॥ बृ० प्र० ३ अ । जिणकप्पियाण अत्थुरणवज्जो कप्पो । जिणकप्प-थेरकप्पिएसु कज्जेसु अज्झुसिरगहणे कप्पो

कत्ती–कर्त्तरिका (कृत्तिका) । ठाणा० २३४ । चम्म । नि० चू० द्वि० १८ अ । कर्त्तरी, चर्मपञ्चके पञ्चमो भेद । आव० ६५२ ।

कत्थ–यत्र कथिकादि गीयते तत् कथ्यम् । ज० प्र० ३९ । कत्थ –अनन्तजीववनस्पतिभेद । आचा० ५६ ।

कत्थपुडिय–गान्धिक । नि० चू० प्र० ३५६ अ ।

कत्थुरी–गुच्छाविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

कत्थुल–गुल्मविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

कत्थुलगुम्मा–कस्तुलगुल्मा । ज० प्र० ९८ ।

कत्थे–कथाया साधुकथ्य ज्ञाताध्ययनवत् । ठाणा० २८८।

कथगो–कथक । जीवा० २८१ ।

कथनम्–उपदेश । आव० ६०४ ।

कदंबचीरिका–शस्त्रविशेष । ठाणा० २७३ ।

कदबपुप्फसठिय–कदम्बपुष्पसस्थितम् । कदम्बपुष्पवद् अध सङ्कुचितम् उपरि विस्तीर्णमुत्तानीकृताऽर्द्धकपित्थमस्थानसस्थितम् । सूर्य० २७४ ।

कदर्थित–हीलित । आचा० ४३० ।

कदल–वनस्पतिविशेष । भग० ८०३ ।

कदली–वल्लिविशेष । प्रज्ञा० ३१, ३३ । आचा० ३० । लतावलयभेद । उत्त० ६९२ । नदी० २१५ ।

कदलीथंभो–कदलीस्तम्भ । प्रज्ञा० २६६ ।

कदलीहरं–कदलीगृहम् । आव० १२३ ।

कदशनम्–निष्ठान–सर्वगुणोपेत सभृतमन्नम्, रसनिर्व्यूढम्–एतद्विपरीत कदशनम् । दश० २३१ ।

कद्दम–कर्दम । यत्र प्रविष्ट पादादिर्नाक्रष्टु शक्यते कष्टेन वा शक्यते । ठाणा० २३५ । द्वितीयोऽनुवेलन्धरनागराज । जीवा० ३१३ । कद्दमो गोवाटादीनाम् । ठाणा० २१९ । कर्दम –नदीविदरकलक्षण । ज्ञाता० ६७ ।

कद्दमए–कर्दमक । ठाणा० २२६ । आग्नेय्या दिशि वर्तमाने विद्युत्प्रभपर्वते नागराज । वरुणस्य पुत्रस्थानीयो देव । भग० १९९ ।

कद्दमजलं–कर्दमजलम् । यद् घनकर्दमस्योपरि वहति । ओघ० ३२ ।

कद्दिवसं–कस्मिन् दिवसे । मर० ।

कनंगरा–काय–पानीयाय नङ्गरा –बोधिस्थनिश्चलीकरणपापाणस्ते कनङ्गरा कानङ्गरा वा, ईपन्नङ्गर इत्यर्थ । विपा० ७१ ।

कनकरसस्तवकाञ्चितानि–कनकखचितानि । आचा० ३९४ ।

कनकालुक–भृङ्गारक । ज० प्र० ५६ । भृङ्गार । ज० प्र० २६२ ।

कनकावलि–तपोविशेष । व्य० प्र० ११३ आ । कनकावलि –आभरणविशेष । प्रज्ञा० ३०७ ।

कन्दलीकन्दक–सचित्त तरुशरीरम् । आव० ८२८ ।

कन्दुकगति–सर्वेण सर्वत्रोत्पद्यते विमुच्यैव पूर्वस्थानम् । भग० ८४ । गतिविशेष । ठाणा० ८९ ।

कन्न–कर्ण । पिण्ड० १५३ ।

कन्नकुज्जं–कन्यकुब्जम् । यत्र मृगकोष्ठकनगरे जितशत्रुराज्ञ कन्या यामदग्न्येन पूर्वं कुब्जीकृता पश्चाद् अकुब्जीकृता, अत मवृत्त तन्नगरनाम । नगरविशेष । आव० ३९२ ।

कन्नधार–कर्णधार । निर्यामक । ज्ञाता० १३६ ।

कन्नपाउरणदीवे–कर्णप्रावरणद्वीप । अन्तर्द्वीपविशेष । ठाणा० २२६ ।

कन्नपालो–कर्णपाल । अलोभोदाहरणे मेण्ढ । आव० ७०१ ।

कन्नपीढ–कर्णाविव पीठे आसने–कण्डलाधारत्वात् कर्णपीठम् । ठाणा० ४२१ ।

कन्नवेयणा–कर्णवेदना । श्रोत्रपीडा । भग० १९७ ।

कन्नस–कनिष्ठम् । लघु, जघन्यम् । उत्त० २३५ ।

कन्नसर–कर्णसर । कर्णगामी । दश० २५३ ।

कन्नाघाओ–कर्णाघात । आव० ७१९ ।

कन्नामोडओ–कर्णामोटक । आव० ४८५ ।

कन्नारोडयं–कर्णस्फोटम् । बृ० प्र० २८ आ ।

कन्नालीय–कन्यालीकम् । कन्याविषयमनृतम्, अभिन्नकन्यकामेव भिन्नकन्यका वक्ति विपर्ययो वा । आव० ८२० ।

कन्नाहाडिया–कर्णाहृता । आव० ४११ ।

कन्नाहेडयं–कर्णाहिटकम् । आव० २९२ ।

कन्निया–कर्णिका । बीजकोश । भग० ५१३ । मध्यगण्डिका । कर्णिका नाम उन्नतसमचित्रबिन्दुकिनी । प्रज्ञा०

८५ । कर्णिका–पत्राधारभूता । प्रज्ञा० ३७ ।

कन्नीय–कर्णिका । भग० ५११ ।

कन्नीरहो–कर्णीरथ । प्रवहणम् । विपा० ४५ । प्रवहणविशेष । ज्ञाता० ६३ ।

कन्नुक्कड–साधारणवादरवनस्पतिकायविशेष । प्रज्ञा० ३४ ।

कन्नू–कानु । कामपि । उत्त० १६४ ।

कन्यकुब्ज–नगरविशेष । विशे० ४३६ ।

कन्याचोलक–यवनालक । आव० ८२ । नदी० ८८ । जवनालक । प्रज्ञा० ५४२ ।

कन्हो–द्वारवत्या वासुदेव । वृ० पृ० ५६ आ ।

कपर्दक–वराटक । ओघ० १२६ । वराट । प्रज्ञा० ४६ ।

कपाल–रोगविशेष । आचा० २३५ ।

कपिंजल–कपिञ्जल । लोमपक्षिविशेष । जीवा० ४१ ।

कपिंजलक–कपिञ्जलक । पक्षिविशेष । प्रश्न० ८ ।

कपिञ्चु–चित्रपिच्छपक्षिविशेष । आचा० ६६ ।

कपित्थ–कपेरिव लम्बते, 'त्थे'ति च करोतीति कपित्थम् । अनु० १५० । फलविशेष । प्रज्ञा० १० । दश० १०० ।

कपिल–स्वयंबुद्धविशेष । वृ० प्र० १८७ आ । प्रत्येकबुद्धविशेष । उत्त० ५ । मतविशेषप्ररूपक । उत्त० २६६ ।

कपिलदरिसण–मतविशेष । आचा० १६३ ।

कपिहसित–विरलवानरमुखहसितम् । ओघ० २०१ ।

कपोत–पक्षिविशेष । आचा० ३१४ ।

कपोय–कपोत । लोमपक्षिविशेष । जीवा० ४१ ।

कपोलपाली–गण्डरेखा । जीवा० २७६ ।

कप्प–वत्थपुप्फचम्मादि वा कप्प, एक्कादि वा कप्प । नि० चू० द्वि० ७१ अ । कल्पत इति कल्प स्वकार्यकरणसामर्थ्योपत । भग० १५५ । कल्प–बृहत्कल्प । सप्तमनिर्युक्तिस्थानम् । आव० ६१ । आव० ७६३ । कल्प–कम्बल्यादिरूपम् । ओघ० ३४ । कल्प । अनु० १७१ । तथाविधसमाचारप्रतिपादक । ज्ञाता० ११० । कल्प–तथाविधसमाचारनिरूपक शास्त्रम् । औप० ६३ । कत्तव्व । नि० चू० प्र० २५ आ । कल्प–विकल्प समाचारो वा । औप० ३६ । छेद । ठाणा० ४६६ । दसाकप्पववहारा । नि० चू० तृ० १०० आ । कल्प–आचार । प्रज्ञा० ७० । अपरिहृय । नि० चू० तृ० १३२ आ । कल्प–दशाश्रुतस्कन्धकल्पव्यवहारा । व्य० प्र० ६३ आ । आचार । आचा० १६८, २४४ । ठाणा० २४४ । आचारो मर्यादेत्यर्थ । ठाणा० ५११ । करणमाचार । ठाणा १६७ । साध्वाचार । ठाणा० ३७१ । छेद । ठाणा० ४६७ । जिनकल्पिकादिसमाचार । भग० ६१ । यतिक्रियाकलाप । उत्त० ५०२ । यतिव्यवहार । उत्त० ६१६ । कल्पते–साध्वादिक्रियासु समर्थो भवतीति कल्पो–योग्य । उत्त० ६३६ । विधि । नदी० ६१ । व्यवस्था स्थविरकल्पादिरूपा यत्र वर्ण्यते ग्रन्थे स । नदी० २०६ । देवलोक । नदी० २०७ । कल्पसूत्रम् । आव० ७२४ । दिवस । वृ० प्र० २२४ आ । क्वचित्करणे । वृ० प्र० ३ अ । कल्पोक्तसाध्वाचार । ठाणा० ३७३ । कल्पायुक्तसाध्वाचार सामायिकच्छेदोपस्थापनीयादि । ठाणा० ३७४ । कल्प्यन्ते–इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशादिदशप्रकारत्वेन देवा एतेष्विति कल्पा–देवलोका । उत्त० ७०२ । कम्बल्यादिरूपम् । ओघ० ३४ । सम० ३८ । कृत्यम् । आव० ७६१ । कारणपुव्वगो । नि० चू० प्र० ७६ अ । समाचार । प्रश्न० १०६ । अध्वकल्प । वृ० द्वि० १२२ आ । समाचारो विकल्पो वा । प्रश्न० १५७ । कल्पशास्त्रोक्तसाधुसमाचार । वृ० तृ० २४६ आ । औपम्य, सामर्थ्य, वर्णना, छेदन, करण, अधिवासश्च । आव० ५०० । अध्वकल्प । नि० चू० तृ० ४० अ । आव० ३२४ । योग्य । दश० ६ । तथाविधसमाचारनिरूपक शास्त्रम् । भग० ११४ । कल्प–यज्जिनकल्पिका अनवस्तृता रात्रावुत्कुटुकास्तिष्ठन्ति एष कल्प । यत्कारणे समापतिते अज्झुसिराणि (अशुषिराणि) तृणानि गृह्णन्ति एष कल्प । व्य० द्वि० २८७ अ । कल्प–सदृश । उत्त० ४६५ । समाचारी । व्य० प्र० १३६ आ । कल्पाध्ययनम् । व्य० द्वि० ४२० अ । सामर्थ्ये वर्णनाया च, छेदने करणे तथा । औपम्ये चाऽधिवासे च, कल्पशब्द विदुर्बुधा ॥१॥ वृ० प्र० ३ अ । जिणकप्पियाण अत्थुरणवज्जो कप्पो । जिणकप्प-थेरकप्पिएसु कज्जेसु अज्झुसिरगहणे कप्पो

भवति । नि० चू० प्र० १६१ आ । ८६४००००००० वर्षात्मक काल । आचा० १७ । समाचारविशेष । विशे० ८ । वैमानिकदेवाऽऽवासाभिधायक । भग० ६१ । देवलोक । भग० २२१ । स्वकार्यकरणसमर्थो वस्तुरूप । भग० २६६ । छेद । उत्त० ६३८ । उपधि । दश० २५० । पिण्ड० ७२ ।

कप्पइ–कल्पते । युज्यते । आचा० ४७ । कल्प्यते–वर्त्तते । आचा० १४१ । कल्पते–युज्यते । उपा० १३ । कल्पते–प्रभवति, पौन पुन्येनोत्पद्यते । आचा० १४१ ।

कप्पओ–कल्पक । कपिलब्राह्मणपुत्र । आव० ६६१ ।

कप्पकरण–कल्पकरणम् । भाजनस्य धावनविधिलक्षणम् । बृ० प्र० २५८ आ । नि० चू० द्वि० २८ आ ।

कप्पकार–कल्पकरा । विधिकारिण, परिकर्मकारिण । जं० प्र० २४२ ।

कप्पट्ठ–कल्पस्थ । समयपरिभाषया बालक उच्यते । बृ० प्र० १४५ आ ।

कप्पट्ठओ–बालक । पिण्ड० ६२ ।

कप्पट्ठग–बाल । नि० चू० द्वि० ११६ आ । बालक । व्य० द्वि० ८ अ । कल्पस्थका–बाला । व्य० प्र० ११६ अ ।

कप्पट्ठगरूय–कल्पस्थकरूप । शिशु । आव० ६३६ ।

कप्पट्ठिता–जिणकप्पिया । नि० चू० प्र० २६ आ ।

कप्पट्ठिती–कल्पशास्त्रोक्तसाधुसमाचारे स्थिति–अवस्थान कल्पस्य मर्यादा । बृ० तृ० २५१ अ ।

कप्पट्ठितो–आयरियाण पदाणुपालगो । नि० चू० प्र० ३०७ अ ।

कप्पट्ठिया–श्रेष्ठिवधू । ठाणा० २६६ । पञ्चयामधर्मप्रतिपन्ना । बृ० तृ० १२५ अ ।

कप्पट्ठी–सेज्जायरधूया । नि० चू० प्र० ७७ आ । तरुणी । बृ० तृ० ७६ आ ।

कप्पडप्पहारो–कर्पटप्रहार । लकुटाकारवलितचीवरैस्ताडनम् । प्रश्न० ५६ ।

कप्पडिओ–कार्पटिका । ओघ० ८६ । सम० ३८ । कार्पटिक–ब्रह्मदत्तसेवक । आव० ३४१ । स्वप्ने दृष्टान्त । आव० ३४३ ।

कप्पडिगो–कार्पटिक । आव० ३८४ ।

कप्पडितो–ब्रह्मदत्तसेवक । उत्त० १४५ ।

कप्पडिय–कार्पटिक । आव० १६१ । दश० ५५ । दुर्बल । आव० ८१८ । भिक्षाचराणा सार्थ । बृ० द्वि० १२५ अ ।

कप्पडिया–भिक्खायरा । नि० चू० तृ० ३७ अ । नि० चू० प्र० १८६ अ । कर्पटैश्चरन्तीति कार्पटिका वा–कपटचारिण । ज्ञाता० १५२ ।

कप्पण–कल्पना–रचना । जं० प्र० ११२ ।

कप्पणसत्थय–शस्त्रविशेष । नि० चू० द्वि० १८ आ ।

कप्पणा–कल्पना क्लृप्तिभेद । औप० ६२ ।

कप्पणारहियं–कल्पनारहितम् । विशे० १५५ ।

कप्पणाविगप्पा–कल्पनाविकल्पा कृतिभेदा । भग० ३१७ ।

कप्पणि–कल्पनी–कर्त्तिकाविशेष । प्रश्न० २१ । कल्पन्य कृपाण्य । जं० प्र० २०६ । कल्प्यते छिद्यते यया सा कल्पनी शस्त्रविशेष । आचा० ६१ ।

कप्पणिज्जं–कल्पनीय–उद्गमादिदोषपरिवर्जितम् । आव० ८३७ ।

कप्पणी–कल्पनी, प्रहरणविशेष । आव० ४८७ । शस्त्रविशेष । आव० ६५० ।

कप्पति–कल्पते–युज्यते । प्रश्न० १२४ ।

कप्पतिप्पे–पात्रक्षालनादौ । ग० ।

कप्पपालो–कल्पपाल । जं० प्र० १०० ।

कप्पय–कल्प एव कल्पक–छद खण्ड कर्परमिति । उपा० २० ।

कप्पयति–कल्पयति–छिनत्ति । नि० चू० प्र० १६० अ ।

कप्पर–कर्परम् । आव० ६२०, ६२२, ३५२ । कवाल नि० चू० प्र० १०६ अ । कपालम् । बृ० तृ० ६८ आ । कर्प्पर । आव० १०३, ४१२ ।

कप्परुक्ख–उक्तव्यतिरिक्तसामान्यकल्पितफलदायित्वेन कल्पना कल्पस्तत्प्रधाना वृक्षा कल्पवृक्षा । ठाणा० ३६६ ।

कप्परुक्खग–चैत्यवृक्ष । ठाणा० १४५ ।

कप्पवडिंसियाओ–उपाङ्गाना पञ्चमवर्गे द्वितीयम् । निरय० ३ ।

कप्पविमाणोववत्तिआ–कल्पेषु–देवलोकेषु, न तु ज्योति-

आरे, विमानानि, देवावासविशेषा, अथवा कल्पाश्च सौधर्मादयो विमानानि च तदुपरिवर्तिग्रैवेयकादीनि कल्पविमानानि तेषु उपपत्ति—उपपातो—जन्म यस्या सकाशात् सा कल्पविमानोपपत्तिका । ठाणा० ६८ ।

कप्पा—कल्पा । कल्पनीया । प्रश्न० ५१ ।

कप्पाग—दण्डम् । आव० ७०० । कल्पाक—सूत्रतोऽर्थतश्च प्राप्त भिक्षुम् । व्य० द्वि० ५६ आ ।

कप्पातीत—जिनकल्पस्थविरकल्पाभ्यामन्यत्र । तीर्थंकर । भग० ८६४ ।

कप्पाय—कल्प—उचितो य आय—प्रजातो द्रव्यलाभ स कल्पाय । विपा० ५७ । कल्पाक—शिरोजवनवकल्पन । औप० ७७ ।

कप्पासट्ठिमिंजिया—कर्पासास्थिमिञ्जिका — त्रीन्द्रियजन्तुविशेष । जीवा० ३२ ।

कप्पासिअ—त्रीन्द्रियजीवविशेष । उत्त० ६६५ ।

कप्पासिए—कार्पासिक । अनु० १४६ ।

कप्पासिया—कर्मार्यभेदविशेष । प्रज्ञा० ५६ ।

कप्पासो—पोडा वमणी तस्स फल पम्हा कच्चणिज्जा सणो वणस्सति जाती, तस्स वग्गो कप्पणिज्जो कप्पासो भण्णति । एला लाडाण गड्डरा भण्णति तस्स रोमा कच्चणिज्जा कप्पासो भण्णति । नि० चू० प्र० १६१ आ ।

कप्पिअ—कल्प्यम् । आव० ११५ । कल्पित स्वबुद्धिकल्पनाशिल्पनिर्मितम् । दश० ३४ । कल्पित —यथास्थान विन्यस्त । ज० प्र० १८६ । कल्पिक, एषणीयम् । दश० १६८ । कल्पिक—सूत्रादिद्वादशविध । बृ० प्र० ६२ आ ।

कप्पिआ—कल्पिका या सौधर्म्मादिकल्पगतवक्तव्यतागोचरा ग्रन्थपद्धतयस्ता कल्पिका । नदी० २०७ ।

कप्पिआकप्पिअ—कल्पाकल्पप्रतिपदिकमध्ययन कल्पाकल्पम् । नदी० २०४ ।

कप्पिओ—कल्पित । विपा० ३८ । कल्पितो—भेदवान् । कल्पिक—उचित । विपा० ४७ । कल्पित—वस्त्रवत् खण्डित । उत्त० ४६० । कल्पित —कल्पनीभिर्वस्त्रवत्खण्डित । उत्त० ४६० ।

कप्पिते—कल्पिक—कल्पनीयमुचितमभिग्रहविशेषाद्रूक्षादि । ठाणा० २६८ ।

कप्पिय—कल्पित—इष्ट, रचित वा । औप० ५६ ।

कप्पिया—कल्पिता—व्यवस्थिता । आचा० ३०५ ।

कप्पियार—कल्पिक । बृ० प्र० २०७ आ । कल्पिकार—मार्गदर्शक । बृ० द्वि० १२१ आ ।

कप्पूर—तंबोलपत्तसहिया खायड । नि० चू० द्वि० ६० अ । कर्पूर—घनसार । प्रश्न० १६२ ।

कप्पूरपुड—गन्धद्रव्य । ज्ञाता० २३२ ।

कप्पेऊण—कल्पयित्वा प्रक्षाल्य । ओघ० २२२ ।

कप्पेति—कल्पयति—छिन्दति । आव० १२३ ।

कप्पमाणे—कल्पयन्—कुर्वाण । ज्ञाता० २३८ ।

कप्पोवगा—कल्प्यन्ते—इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशादिदशप्रकारत्वेन देवा एतेष्विति कल्पा — देवलोकास्तानुपगच्छन्ति उत्पत्तिविषयतया प्राप्नुवन्तीति कल्पोपगा । उत्त० ७०२ ।

कप्पोववण्णे—कल्पेषु—सौधर्मादिषु उपपन्न । जीवा० ३४६ ।

कप्पोववन्नगा—सौधर्मादिदेवलोकोत्पन्ना । ठाणा० ५७ ।

कप्पोववन्ने—कल्पेषु—सौधर्मादिषु उपपन्न कल्पोपपन्न । सूर्य० २८१ ।

कबध—कबन्ध—शिरोरहितकडेवरम् । प्रश्न० ५० ।

कब्बड—क्षुल्लप्राकारवेष्टित—कर्वटम् । प्रज्ञा० ४८ । आचा० २८५ । राज० ११४ । जीवा० ४०, २७६ । कुनगरम् । भग० ३६ । प्रश्न० ६६, ३६, ५२ । सूत्र० ३०६ । ठाणा० २६४ । अनु० १४२ । औप० ७४ । नि० चू० प्र० २२६ अ । कुनगर, जत्थ जलथलसमुब्भवविचित्तभडविणियोगो णत्थि । दश० चू० १५७ । कर्वट—पांशुप्राकारनिबद्ध क्षुल्लकप्राकारवेष्टितम् । व्य० प्र० १६८ अ । दश० १६३ । कर्वटानि—क्षुल्लकप्राकारवेष्टितानि अभित पर्वतावृतानि वा । ज० प्र० १२१ । कर्वट —महाक्षुद्रसन्निवेश । दश० २७५ ।

कब्बडए—अष्टाशीत्या षोडशमहाग्रह । ठाणा० ७८ ।

कब्बडमारी—मारीविशेष । भग० १६७ ।

कब्बरूव—नगरविशेष । भग० १६३ ।

कब्बडाति—कुनगराणि । ठाणा० ८६ ।

कब्बडिया—अत्ताणा । नि० चू० द्वि० ११ अ ।

कब्बडु—बालक । ग० ।

कव्वालभयते–कव्वाडमृतक –क्षितिग्वानक ओडादि, यस्य स्व कर्म्मार्प्यते द्विहस्ता त्रिहस्ता वा त्वया भूमि खनितव्यैतावत्ते धन दास्यामीत्येव नियम्येति । ठाणा० २०३ ।

कव्वुरए–कर्वुरक – अष्टाशीत्या महाग्रहे षोडश । ज० प्र० ५३४ ।

कभल्लं–कपाल, घटादिकर्परम् । अनुत्त० ५ । कपालम् । उपा० २१ ।

कम–अवतार । नि० चू० द्वि० १०३ अ ।

कमडलु–भाजनविशेष । नि० चू० प्र० ३४७ आ ।

कम–भगवत्या त्रयोदशशतेऽष्टमोद्देशक कर्म्मप्रकृतिप्ररूपणार्थंक । भग० ५९६ । क्रम लङ्घय । प्रश्न० २० । क्रम – यतिविहित आचार । उत्त० ५०५ । क्रमपर तु द्रव्यादिचतुर्द्धा । आचा० ४१५ । पाकस्य पेयादिपरिपाट्या प्रदान क्रम । आव० ८३७ । क्रम । आचा० ४१५ ।

कमइ–कामति–घटते । पिण्ड० ७९ ।

कमजोग–क्रमयोग परिपाटीव्यापार । दश० १६३ ।

कमढ–खरटो उ जो मलो त कमढ भण्णति । नि० चू० प्र० १९० आ । कमढ–पात्रविशेष । व्य० प्र० २१८ आ ।

कमढग–कमढक–पात्रविशेष । व्य० द्वि० ३२४ आ । साधुजनप्रसिद्ध भाजनम् । नि० चू० प्र० ६१ अ । करोडगागार । नि० चू० प्र० ७१ आ । उड्डाहपच्छायण । नि० चू० द्वि० १११ आ । सवाह्याभ्यन्तर शुक्लेप कास्य करोटकाकार भाजनम् । वृ० द्वि० २९० अ । कमढक–आर्यिकापात्रम् । ओघ० २०९ । पात्रम् । ओघ० ४४,८२ ।

कमढयं–अट्ठगमय कसभायणमठाणसठिय । नि० चू० प्र० १७९ आ ।

कमणिया–क्रमणिका–उपानह । तलिका । वृ० द्वि० १०१ अ ।

कमणी–पादप्रमाण चर्म । वृ० द्वि० २२२ आ ।

कमणीउ–उपानहौ । नि० चू० प्र० १३७ अ ।

कमणीओ–उपानही । नि० चू० द्वि० १८ अ ।

कमती–क्रमते–घटते । सम० १३९ ।

कमभिण्ण–क्रमभिन्न, यत्र यथासङ्ख्यमनुदेशो न क्रियते । सूत्रस्य द्वात्रिंशद्दोपे अयोदश । आव० ३७५ ।

कमभिन्न–क्रमभिन्न–यत्र क्रमो नाराध्यते । सूत्रस्य द्वात्रिंशद्दोषे त्रयोदश । अनु० २६२ । क्रमेण हि तिविहमित्येतन्न करोम्यादिना विवृत्य तत्तस्त्रिविधेनेति विवरणीय भवतीति, अस्य च क्रमभिन्नस्यानुयोगोऽस्य यथाक्रमविवरणे हि यथासङ्ख्यदोष स्यादिति तत्परिहारार्थं क्रमभेद । ठाणा० ४९५ ।

कमल–नागपुरनगरे गृहपतिविशेष । ज्ञाता० २५२ । हरिणविशेष । भग० १२७ । राज० १४४ । औप० २६ । रविवोध्यम् । ज० प्र० ११५ । सूर्यबोध्यम् । ज्ञाता० १६८ । कमलाराजधान्या कमलावतसकभवने सिंहासनविशेष । ज्ञाता० २५२ । प्रश्न० ८४ ।

कमलदलो–शूलिहतश्चौरो नमस्काराद्यक्ष । भक्त० ।

कमलप्पभा–कालस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी । ठाणा० २०४ । भग० ५०४ । धर्मकथाया पञ्चमवर्गस्य द्वितीयमध्ययनम् । ज्ञाता० २५२ ।

कमलसिरी–महावलस्य राज्ञो । ज्ञाता० १२१ । कमलगृहपतेर्भार्या । ज्ञाता० २५२ ।

कम सए–कमलाराजधान्या भवनम् । ज्ञाता० २५२ ।

कमला–कालस्य प्रथमाऽग्रमहिषी । भग० ५०४ । ठाणा० २०४ । धर्मकथाया पञ्चमवर्गस्य प्रथममध्ययनम् । ज्ञाता० २५२ । कमलकमलश्रियो दारिका । ज्ञाता० २५२ ।

कमलामेलं–कमलामेल, कमलापीड वा । ज० प्र० २३४ ।

कमलामेला–द्वारिकायामन्यस्य राज्ञ दुहिता । आव० ९४ । द्वारिकाया दारिका । वृ० प्र० ३० अ । द्वारवत्या नगर्यामन्यस्य राज्ञो दुहिता । विशे० ६१० ।

कमलावई–कमलावती, इषुकारनृपतिमहादेवी । उत्त० ३९५ ।

कमसो–क्रमत । उत्त० ७ ।

कमा–धरणस्य प्रथमाग्रमहिषी । ज्ञाता० २५१ ।

कमिज्जणा–मुडनादि । नि० चू० तृ० १३७ आ ।

कमेति–क्रमते–उत्सहते । वृ० प्र० १६४ आ ।

कम्बा–लता । प्रश्न० १६८ ।

कम्मंता–कार्याणि । कर्मकरा । उत्त० २६३ ।

कम्मसि–सत्कर्माणि । उत्त० ५९७, १८८ ।

कम्मसे–कर्मांशान्मूलप्रकृती । औप० ११३ ।

कम्म–अनुदयावस्थकर्मपुद्‌गलसमुदायरूप कर्म । भग० ८२। मदनोद्दीपको व्यापार । भग० १३४ । गमनादि । भग० ३११ । ज्ञानावरणादि, क्रिया वा । दश० ७० । वानलक्षण । भग० ४७७ । क्रियत इति कर्म–क्रिया । उत्त० २४६ । रक्षार्थं वसत्यादे परिवेष्टनम् । उत्त० ७१० । क्रियते इति कर्म । आव० ३५ । अनाचार्यक सर्वकालिक वा । आव० ३५ । नदी० १४४ । मनोवाक्कायक्रियालक्षण । उत्त० १८ । कम्मणाम्–सुखदु खप्राप्तिपरिहारक्रियाणा कायिकाधिकरणिकाप्रादोषिकापारितापनिकाप्राणातिपातरूपाणा कृषिवाणिज्यादिरूपाणा वा । आचा० १२६ । अनुष्ठानम् – ज्ञानावरणादि । उत्त० ३८४ । ज्ञानावरणादि । ज्ञाता० २०५ । जीवनोपाय । ज० प्र० १३६ । कृषिवाणिज्यादि । ज० प्र० २५८ । यत्पुनर्विवाहप्रकरणादावुद्धरित मोदकचूर्ण्यादि तद् भूयोऽपि भिक्षाचराणा दानाय गुडपाकदानादिना मोदकादि कृत तत्कर्म्म । पिण्ड० ७७ । कृषिवाणिज्यादि । आव० १२६ । उत्क्षेपणापक्षेपणादि । भग० ५७ । भ्रमणादिक्रिया । ठाणा० २३ । अनाचार्यक कादाचित्क वा । भग० ५७३ । ठाणा० २८३ । कृष्याद्यानाचार्यकम् । ठाणा० ३०४ । उद्देशकस्य–विभागस्य द्वितीयप्रकार । बृ० प्र० ८३ । कार्मणकरण । बृ० तृ० १२३ अ । अष्टमपूर्वं । ठाणा० १९९ । अक्षरलेखनादिक्रिया । प्रश्न० ११८ । अन्तर्यत्र सुधादिपरिकर्म्यते । प्रश्न० १२७ । लौकिको व्यवहार । सूर्य० १६९ । उत्क्षेपणावक्षेपणादि । सूर्य० २८६ । वन्दनादिलक्षणम् । सूर्य० २९६ । प्रज्ञापनायास्त्रयोविंशतितम पदम् । प्रज्ञा० ६ । कारकवाचक कर्तुरीप्सिततम, ज्ञानावरणीयादि वा, क्रिया वा । आव० ५११ । ज्ञानावरणीयादि । आव० ७८२ । आरेचनभ्रमणादि । प्रज्ञा० ४६३ । हस्तकर्म, सावद्यानुष्ठान वा । सूत्र० १८० । पृथिव्याद्यारम्भक्रिया । प्रश्न० १२७ । कृष्यादिव्यापार । प्रश्न० ११७ । कृष्यादिकर्म । उत्त० २०९ । अनुष्ठानम् । आव० ४७८ । अनुष्ठान–ज्ञानप्रशसादि । उत्त० १२७ । कुत्सितानुष्ठानम् । उत्त० २०८ । अनाचार्यक कादाचित्क वा । आव० ४९५ । कृषिवाणिज्यादि मोक्षानुष्ठान वा । जीवा० ८६ । अनुष्ठान, सम्यगुपयोगरूप, मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगरूप वा । सूत्र० ७१ । क्रिया, दशविधचक्रवाल सामाचारीप्रभृतिरितिकर्त्तव्यता । उत्त० ६६ । यदनाचार्योपदेशज सातिशयमनन्यसाधारण गृह्यते भारवहनकृषिवाणिज्यादि । आव० ४०८ । कार्मणकरण । बृ० तृ० १२३ अ । कृष्यादि । पिण्ड० १२९ । अनावर्जकम्, अप्रीत्युत्पादकम् । पिण्ड० १२९ । कृषिवाणिज्यादि, मोक्षानुष्ठान वा । प्रज्ञा० ५० । उत्क्षेपणावक्षेपणादि गमनादि वा । ज० प्र० १३० । अनाचार्योपदेशज कम । ज० प्र० १३६ ।

कम्मआसीविसा–कर्म्मणा– क्रियया शापादिनोपघातकरणेनाशीविषा –कर्माशीविषा । भग० ३४१ ।

कम्मए–कर्मणो जात कर्मजम् । प्रज्ञा० २६८ । जीवा० १४ । अष्टविधकर्मसमुदायनिष्पन्नमौदारिकादिशरीरनिबन्धन च भवान्तरानुयायिकर्मणो विकार कर्मैव वा कार्मणम् । अनु० १९६ ।

कम्मओ–कर्मत –क्रिया जीवनवृत्तिम्–बाह्याभ्यन्तरभोजनीयवस्तुप्राप्तिनिमित्तभूतामाश्रित्येत्यर्थं । उपा० ९ ।

कम्मकडा–नामकर्मनिर्वर्त्तिता, अथवा कर्म–मदनोद्दीपको व्यापारस्तत्कृत यस्या सा कर्मकृता । भग० १३४ ।

कम्मकर–किंकरादन्यथाविधा कर्मकरा । ज० प्र० २६३ । कम्मंकर । उत्त० २२५ । कर्मकर । आव० १९४ । नियतकालमादेशकारी । प्रश्न० ३८ । नायकाश्रित कश्चिद्भोगपर । सूत्र० ३३१ ।

कम्मकारो–कर्मकार लोहारादि । जीवा० २८ । लोहकारो । नि० चू० प्र० २१४ आ ।

कम्मगथि–कर्मग्रन्थि –अतिदुर्भेदघातिकर्मरूप । उत्त० ५९४ ।

कम्मगठिय–कार्मग्रन्थिक । प्रज्ञा० ३१९, ४२४ ।

कम्मगुरु–कर्मगुरु –कर्मणा गुरुरिव गुरु अधोनरकगामितया । उत्त० २७५ ।

कम्मगहण–कर्मग्रहण, आधाकर्मिकग्रहणम् । पिण्ड० ८६ ।

कम्मचिट्ठे–कर्मचेष्टा–क्रियन्त इति कर्माणि–अग्नौ समित्प्रक्षेपणादीनि तद्विषया चेष्टा । उत्त० ३६७ ।

कम्मणकारिया–कार्मणकारिणी । आव० ५६१ ।
कम्मणजोए–कुष्ठादिरोगहेतु । ज्ञाता० १८८ ।
कम्मणा–कार्मण । तथाविधद्रव्यमयोग । ठाणा ३१४ ।
कम्मदव्व–कर्मद्रव्य–कर्मद्रव्यपरिच्छेदकोऽवधि । आव० ३९ । कर्मशरीरद्रव्य । प्रज्ञा० ३०४ ।
कम्मधम्मसजोगो–कर्मधर्मसयोग । आव० ३८८ ।
कम्मनरवइ–कर्मनरपति । ज्ञाता० २३४ ।
कम्मपगडी–कर्मप्रकृति -प्रज्ञापनाया त्रयोविंशतितम पदम् । भग० ६३ ।
कम्मपट्ठवणसय–कमप्रस्थापनाद्यर्थप्रतिपादनपर शत कर्मप्रस्थापनशतम् । भग० ९४२ ।
कम्मपयडी–उत्तराध्ययने त्रयस्त्रिंशत्तममध्ययनम् । सम० ६४ ।
कम्मपुरिसा–कर्माणि–महारम्भादिमम्पाद्यानि नरकायुष्कादीनीति पुरुषा कर्मपुरुषा । ठाणा० ११३ ।
कम्मप्पवादो–कर्मप्रवाद –पूर्वविशेष । उत्त० १७४ ।
कम्मप्पवाय–कर्मप्रवाद –ज्ञानावरणीयादिकर्मणो निदानादिप्रवदनमिति । दश० १३ । ज्ञानावरणादि कर्म प्रोच्यते तत्कर्मप्रवादमिति । मम० २६ । कर्म्म–ज्ञानावरणीयादिकमष्टप्रकार तत्प्रकर्षेण–प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशादिभिर्भेदै मप्रपञ्च वदतीति कर्म्मप्रवादम् । नदी० २४१ ।
कम्मप्पवायपुव्वं–कर्मप्रवादपूर्व–अष्टमपूर्वनाम । आव० ३२१ ।
कम्मभूमगपलिभागी– कर्मभूमगा – कर्मभूमिजातास्तेषा प्रतिभाग –माहश्य तदस्यास्तीति–कर्मभूमगप्रतिभागी, कर्मभूमगसदृश इत्यर्थ । प्रज्ञा० ४९१ ।
कम्मभूमगा–कर्म–कृपिवाणिज्यादि मोक्षानुष्ठान वा कर्मप्रधाना भूमिर्येषा ते कर्मभूमा, कर्मभूमा एव कर्मभूमका । प्रज्ञा० ५० । जीवा० ४६ ।
कम्मभूमा–कर्मभूमा । उत्त० ७०० । कर्म–कृपिवाणिज्यादि मोक्षानुष्ठान वा कर्मप्रधाना भूमिर्येषा ते कर्मभूमा । प्रज्ञा० ५० ।
कम्मभूमि–कर्म्मभूमि –कृष्यादिकर्म्मप्रधाना भूमि कर्म्मभूमि –भरतादिका पञ्चदशधा । ठाणा० ११५ । कृषिवाणिज्यतप सयमानुष्ठानादिकर्मप्रधाना भूमय कर्मभूमयो–भरतपञ्चकैरावतपञ्चकमहाविदेहपञ्चकलक्षणा । नदी० १०२ ।
कम्मभूमी–कर्मभूमि –कृष्यादिकर्म्मस्थानभूता भरतादिका । प्रश्न० ९६ ।
कम्मभूमो–कर्मभूम –कर्मप्रधाना भूमिर्यस्य स । जीवा० ४६ ।
कम्ममासओ–त्रयो निष्पावा निष्पन्न –कर्ममाषक । अनु० १५५ ।
कम्ममाहूय–कर्म्माहूय–कर्मोपादाय । आचा० १५८ ।
कम्मय–कर्मकम्–अनुष्ठाम् । उत्त० २९० । कार्मण–यदुदयात्कार्मणशरीरप्रायोग्यान् पुद्गलानादाय कार्मणशरीररूपतया परिणमयति परिणमय्य च जीवप्रदेशै सह परम्परानुगमरूपतया सम्बन्धयति तत्कार्मणशरीरनाम । प्रज्ञा० ४६९ ।
कम्मयणो–कम्मबहुलो । नि० चू० प्र० २७६–अ ।
कम्मयर–कर्मकर छगणपुञ्जाद्यपनेता । ज० प्र० १२२ ।
कम्मया–कृपिवाणिज्यादिकर्मभ्य सप्रभावा । राज० ११६ ।
कम्मरय–अष्टप्रकार कर्मरज –तत्र जीवगुण्डनपरत्वात्कर्मैव रज कर्मरज । दश० १७ ।
कम्मलेसा–कर्मलेश्या–कर्मस्थितिविधातृ तत्तद्विशिष्टपुद्गलरूपा । उत्त० ६५२ ।
कम्मलेस्स–कर्म्मणो योग्या लेश्या–कृष्णादिका कर्म्मणो वा लेश्या–'लिश श्लेषणे' इतिवचनात् सम्बन्ध कर्म्मलेश्या । भग० ६५५ ।
कम्मलेस्सा–कर्म्मण सकाशाद्या लेश्या–जीवपरिणति सा कर्म्मलेश्या–भावलेश्येत्यर्थ । भग० ६३१ ।
कम्मविउसग्गो–ज्ञानावरणादिकर्म्मबन्धहेतूना ज्ञानप्रत्यनीकत्वादीना त्याग । भग० ९२७ ।
कम्मविगईए–कर्मणामशुभाना विगत्या–विगमेन स्थितिमाश्रित्य । भग० ४५६ ।
कम्मविवेगो–कर्मविवेक –कर्मनिर्जरा । आव० ८५२ ।
कम्मविसुद्धीए–प्रदेशापेक्षया । भग० ४५६ ।
कम्मविसोहीए–रसमाश्रित्य । भग० ४५६ ।
कम्मवेदए–कर्मवेदक –प्रज्ञापनाया पञ्चविंशतितम पदम् ।

प्रज्ञा० ६।

कम्मसपया–कर्मसम्पत्, कर्म-क्रिया तस्या सम्पत्-सम्पन्नता, कर्मणा वा ज्ञानावरणादीना सम्पत्–उदयोदीरणादिरूपा विभूति। उत्त० ६६।

कम्मसवच्छरे–कर्मसवत्सर, कर्म-लौकिको व्यवहारस्तत्प्रधान सवत्सर। सूर्य० १६६। ज० प्र० ४८७।

कम्मसच्चा–कर्मणा–मनोवाक्कायक्रियालक्षणेन सत्या-अविसवादिन कर्मसत्या। उत्त० २८१।

कम्मसमज्ज –कर्मसमर्जनलक्षणार्थप्रतिपादक शत कर्म्मसमर्जनशतम्। भग० ६४०।

कम्मसमारभा–कर्मसमारभा क्रियाविशेपा। आचा० २३। क्रियाविशेपा, कर्मणो वा ज्ञानावरणीयाद्यष्टप्रकारस्य समारम्भा–उपादानहेतव क्रियाविशेपा। आचा० २७। कर्मसमारम्भा पाकादय क्रियन्ते। आचा० १३०। जीवानुद्दिश्य य उपमर्दरूप क्रियासमारम्भ। आचा० २६६।

कम्मसरीरग–कर्म्मशरीरकम्–औदारिकादिशरीरम्। आचा० १४३।

कम्मसाला–घटादिनिष्पादनस्थानम्–कुम्भकारकुटी। वृ० द्वि० १७५ अ। जत्थ कम्म कारेति। नि० चू० तृ० २१ आ।

कम्मस्सबधए–कर्मणो बन्धक–यथाजीव कर्मणो बन्धको भवति तथा प्रतिपादक–प्रज्ञापनायाश्चतुर्विंशतितम पदम्। प्रज्ञा० ६।

कम्महेउय–सिक्खापुव्वग। दश० चू० ११३।

कम्मा–क्रिया। आचा० २५।

कम्माजोए–काम्ययोग–कमनीयताहेतु। ज्ञाता० १८८।

कम्माणुप्पेही–कर्म–क्रिया तदनुप्रेक्षत इत्येवशील कर्मानुप्रेक्षी। उत्त० २४६।

कम्माणुभाव–बाह्यतीर्थंकरजन्मदीक्षाज्ञानापवर्गकल्याणसम्भूतिलक्षणवाह्यनिमित्तमधिकृत्य तथाविधस्य च सातवेदनीयस्य कर्म्मणोऽनुभाव–विपाकोदय कर्म्मानुभाव। जीवा० १३०।

कम्मादाण–कर्म्म–ज्ञानावरणादि आदीयते–स्वीक्रियतेऽनेन जन्तुभिरिति कर्मादान–कर्मोपादानहेतु। उत्त० ३४३।

कम्मादाणाइ–कर्म्माणि–ज्ञानावरणादीन्यादीयन्ते यैस्तानि कर्मादानानि, अथवा कर्माणि च तान्यादानानि च कर्मादानानि कमहेतव। भग० ३७२।

कम्मारगाम–कर्मारग्राम। आव० १८८।

कम्मारदारए–कर्मारदारक–लोहकारदारक। जीवा० १२१।

कम्मारभिक्खू–कर्म्मकारभिक्षुक–देवद्रोणीवाहकभिक्षुविशेप। वृ० द्वि० २० अ, २८१ आ।

कम्मारिया–कर्मार्या। प्रज्ञा० ५६।

कम्मारो–कर्म्मार–लोहकार। वृ० द्वि० १०७ अ।

कम्मावादी–कर्मवादी–कर्म ज्ञानावरणीयादि तद् वदितु शीलमस्येति कर्मवादी। आचा० २२।

कम्मिणो–कर्म्मिण–संक्लिष्टलेश्यास्थानवर्तिन आर्त्तध्यायिनो रौद्रध्यायिनश्चेत्यथ। व्य० द्वि० १८७ अ।

कम्मिया–कार्मिका–कर्म्मणा विकार कार्मिका तया-अक्षीणेन कर्मशेपेण देवत्वावासिरित्यर्थ। भग० १३८। कर्मिता–कर्म विद्यते यस्यासौ कर्मी तद्भाव कर्मिता। भग० १३८।

कम्मुणा–कर्मणा–मनोवाक्कायक्रिया। दश० १६०। सम्पूर्णमेव कर्मणा। दश० १६२। कायेन। दश० २२६। क्रियया। दश० २३३।

कय–कृतम्–निर्वर्त्तितम्, अभ्यस्तम्। आव० ५६३। कार्य, प्रयोजनम्। प्रश्न० ३५।

कयगल–कृताङ्गला, नगरीविशेप। आव० २०४।

कयगला–स्कन्दकचरित्रे नगरी। भग० ११२, १२३।

कयत–कृतान्त–दैवम्। प्रश्न० ६४। कृतघ्न यमो वा। वृ० प्र० ३०१ आ।

कयबे–कदम्ब–वृक्षविशेप। प्रज्ञा० ३२।

कय–कृत–दत्त। ओघ० २१२। अनुज्ञात। वृ० प्र० ५। कृतशब्दोऽनानुभूतवचन। दश० १३६।

कयउस्सग्गो–कृतोत्सर्ग–कृतावश्यक। ओघ० २१। कृतोपयोग। ओघ० १४०।

कयकण्णचूलतो–कृतकर्णचूलक। उत्त० २७२।

कयकरण–धणुवेदादिएसु सत्थेसु जेण सिक्खाकरणकय गिहिभावट्ठितेण सो साहू कयकरणो भण्णति। नि० चू० द्वि० १३ आ। ये षष्ठाष्टमादितपोभावितास्ते कृतकरणा।

व्य० प्र० १२५ अ। जेण चउत्थछट्ठमादीया कया। नि० चू० तृ० १४३ अ। धनुर्वेदे कृताभ्याम। वृ० द्वि० ३८ आ। कृतकरण-कृतकपुत्रककरणम्। आचा० ३२। इषु शास्त्रे कृताभ्यास। वृ० प्र० ३११ आ। कृतकरण-बहुशो विहितचौरानुष्ठान। प्रश्न० ४६। धनुर्वेदादौ कृतपरिश्रम। वृ० द्वि० ८५ अ।

कयकिच्चोवक्खर-नगरे समानीय अस्थाने भाण्डक्षेपी भाटिक। वृ० तृ० ११ आ।

कयकुरुकुय-कृतकुरुकुच-कृतकुल। व्य० द्वि० १६१ आ।

कयग-कृतकम्। आव० १७३।

कयग्गह-कचग्रह-मैथुनसरम्भे मुखचुम्बनाद्यर्थ युवत्या पश्चाङ्गुलिभि केशेषु ग्रहणम्। ज० प्र० १६३।

कयग्गाह-मैथुनसरम्भे यत् युवते केशेषु ग्रहण स कचग्रह। राज० २३।

कयग्गाहगहियं-कचग्राहगृहीत-मैथुनप्रथमसरम्भे मुखचुम्बनाद्यर्थ युवत्या पश्चाङ्गुलिभि केशेषु ग्रहण तेन कचग्राहेण गृहीतम्। जीवा० २५५।

कयजोग्गो-कृतयोग-कर्कशतपोभिरनेकधाभावितात्मा। व्य० प्र० ११३ अ।

कयण-कतमा। पउ० ७१।

कयत्तिया-कर्तनी। वृ० प्र० २८ अ।

कयत्था-कृतार्था-कृतप्रयोजना। ज्ञाता० २४।

कयत्थिउ-कर्दथितुम्। दश० ४१।

कयत्थे-कृतार्थ। उत्त० ३१६। कृतस्वप्रयोजन। भग० ६६२।

कयपजली-कृतप्राञ्जलि-पृच्छादिषु कृता प्राञ्जलयो यैस्ते। आव० १००।

कयपसु-कजप्रसव-पद्मकुसुम। ज्ञाता० ६६।

कयपज्जत्तिय-कृतपर्याप्तिक-कृतकार्य। उत्त० २१०।

कयपडिकिई-उपकृतस्य प्रतीकार। वृ० प्र० २६६ आ। कृतप्रतिकृतिर्नाम-प्रसन्ना आचार्या सूत्रादि दास्यन्ति न नाम निर्ज्जरेति मन्यमानस्याहारादिदानम्। सम० ६५।

कयपडिकिरिया-कृतप्रतिक्रिया-अध्यापितोऽहमनेनेतिबुद्धया भक्तादिदानमिति। ओप० ४३।

कयपडिक्किई-कृतप्रतिकृति-प्रसन्ना आचार्या सूत्रमर्थ तदुभय वा दास्यन्ति न नाम निर्ज्जरेति अहारादिना यतितव्यम्। दश० ३१।

कयपुन्न-जन्मान्तरोपात्तसुकृत। ज्ञाता० २५। कृतपुण्य। भग० ६६२।

कयबलिकम्मा-स्वगृहे देवताना कृतबलिकर्मा। निरय० ७। कृतबलिकर्मा। दश० ९८।

कयमालए-कृतमालकस्तमिश्राधिपति। ज० प्र० ७४।

कयमालक-तमिश्रागुहाधिपसुर। ज० प्र० २५५।

कयमालगो-कृतमालक-कोणिकघातको देव। आव० ६८७।

कयमालयं-कृतमाल्य तमिश्रागुहाया देव। आव० १५०।

कयमाला-कृतमाला-द्रुमजातिविशेष। जं० प्र० ९८।

कयरूवो-रूवगाभरणादि, कयरूपो। नि० चू० द्वि० ८७ अ।

कयरे-कतराणि। अनु० ६७।

कयरेहिंतो-कान्याश्रित्य। अनु० ६७।

कयलक्खण-कृतफलवल्लक्षण। भग० ६६२। कृतलक्षणा-कृतफलवच्छरीरलक्षणा। ज्ञाता० २५। कृतलक्षण। उत्त० ३२६।

कयलग-चिब्भिड, जरठ, तपुसादि वा। नि० चू० द्वि० १५७ अ।

कयलिसमागमो-कदलीसमागम। आव० २०७।

कयली-कदली-वनस्पतिविशेष। ज्ञाता० ९५।

कयल्लय-कृतम्। ओघ० ४६।

कयवणमालपिया-कृतवनमालपिता-हस्तिशीर्षनगरस्य पुण्पकरण्डकोद्याने यक्ष। विपा० ८६।

कयवम्मा-कृतवर्मा-विमलजिनपिता। आव० १६१। सम० १५१।

कयवर-कचवर। उत्त० ५६२। पत्रतृणधूलिसमुदाय। आचा० ५५।

कयवरुज्झिय-कचवरोज्झिका-अवकरशोधिका। ज्ञाता० ११६।

कयवरो-बहु झुसिरदव्वसकरो कयवरो। नि० चू० प्र० २५६ अ।

कयविक्कय-क्रयविक्रयौ। भग० १९९।

कयविहव–कृतविभवा–कृतसफलमपद । ज्ञाता० २५ ।
कयवेयद्दिए–कृतवितर्दिक–रचितवेदिकम् । औप० ५ ।
कृतवितर्दिकम्–रचितवेदिकम् । निरय०१-१६ ।
कयव्वय–कृतव्रता–उपस्थापिता इत्यर्थ । व्य० द्वि० १०० अ ।
कयव्वयकमे–कृत–अनुष्ठित व्रताना–अनुव्रतादीना कर्म–तच्छ्रवणज्ञानवाञ्छाप्रतिपत्तिलक्षण येन प्रतिपन्नदर्शनेन स कृतव्रतकर्मा प्रतिपन्नाणुव्रतादिरितिभाव । सम० १६ ।
कयव्ववसाओ–कृतव्यवसाय । आव० २६० ।
कया–कृता–परिनिष्ठिता । ओघ० १६६ ।
कयाइ–कदाचिदित्ति–वितर्कार्थं । भग० ६८३ ।
कयाणुराग–कृतानुराग –विहिताभिष्वङ्ग । उत्त० ३८६ ।
कयार–कचवरम् । विशे० ५२४ ।
कर–कर–गवादीन् प्रति प्रतिवर्षं राजदेय द्रव्यम् । ज० प्र० १६४ । भग० ५४४ ।
करकय–नालिकेरवर्तुलम् । पउ० १ ।
करज–करञ्ज, वृक्षविशेष । भग० ८०३ । नक्तमाल । प्रज्ञा० ३१ ।
करड–भाजनविशेष । प्रश्न० ६३ ।
करडक–वशग्रथित । ओघ० २११ । वेणुकार्यविशेष । सूत्र ११७ । बहुपृथुलमल्पोच्छ्रय मुखम् । बृ०द्वि० २४६ अ ।
करडगा–करडक –वस्त्राभरणादिस्थानम् । ठाणा० २७२ ।
करडय–करण्डक–पृष्ठवशास्थिकम् । जीवा० २७१ ।
करडादी–उलवग–समचउरस । नि० चू० तृ० ५४ आ ।
करडुअ–करण्डक पृष्ठवशास्थिकम् । ज० प्र० १११ ।
कर–करण नाम नागरकादिप्रारम्भयन्त्रम् । सप्राप्तकामस्य–एकादशो भेद । दश० १६४ । अष्टाशीत्या त्र्यशीतितमो महाग्रह । ज० प्र० ५३५ । कर–क्षेत्राद्याश्रितराजदेयद्रव्यम् । विपा० ३६ ।
करइल्ल–करकवान् । उत्त० ६७ ।
करए–करको–बादराप्कायविशेष । प्रज्ञा० २८ । करका–वाघटिका । उपा० ४० ।
करओ–जलगालन–धर्म्मकरक । बृ० द्वि० १०० आ ।
करकडु–प्रत्येकबुद्धनाम । प्रज्ञा० १६ । द्रव्यव्युत्सर्गोदाहरणे कलिङ्गेषु करकण्डु -दधिवाहनराजपुत्र । आव० ७१६, ७१७ । मम० १२४ । काञ्च-ृरनृपति । उत्त० ३०१ । पउमावईए रायपुत्तो । नि० चू० प्र० १६८ आ । करकण्डु–कलिङ्गेषु दधिवाहनराजसुतो यो जीर्णं वृषभ दृष्ट्वा प्रतिबुद्ध । उत्त० २६६ । आगन्तुके दृष्टान्त । नि० चू० प्र० २६६ आ ।
करकडे–करकण्ड माहणपरिव्राजके द्वितीयनाम । औप ६१।
करकडुमा– नि० द्वि० ४६ अ ।
करक–हिमम् । आचा० ४० । भाजनविधिविशेष । जीवा० २६६ । प्रलियशकल । पिण्ड० १०७ । करक, पक्षिविशेष । प्रश्न० ८ । अनु० १५२ ।
करकचिय–क्रकचितम्, करपत्रविदारित काष्ठादि । अनु० १५४ ।
करकपाल–चतुर्थ महाकुष्ठम् । प्रश्न० १६१ ।
करकय–क्रकचम् । आव० ४२० । करपत्रम् । उत्त० ४५६ । प्रश्न० २१ । जीवा० १२० । क्रकच । प्रज्ञा० ३६७ । क्रकच–येन दारु छिद्यते तत् । ठाणा० २७३ ।
करकरसद्द–व्यक्ताव्यक्तशब्दम् । आव० २६२ ।
करकरिए–अष्टाशीत्या पञ्चाशीतितमो महाग्रह । ठाणा० ७६ ।
करग–करक । ज० प्र० १०१ । घटी । नि० चू० द्वि० ६४ आ । करक कठिनोदकरूप । दश० १५३ ।
करगओ–करपत्रम् । आव० ८०१ ।
करगगीवा–वार्घटिका ग्रीवा । अनुत्त० ५ ।
करगत–क्रकचम् । आव० ६५१ ।
करगय–क्रकचम्, करपत्रम् । उत्त० ६५४ ।
करगा–उदगपासाणा वासे पडति ते करगा । नि० चू० प्र० ४५ अ ।
करगे–करक घनोपल । जीवा० २५ ।
करगो–पाणियभडय । नि० चू० प्र० ११७ आ । करक–जलाधारो मदिराभाजन वा । सूत्र० ११८ ।
करघातो–करस्य पीडा । बृ० प्र० ७४ आ ।
करचोल्लए–करभोजनम । आव० ३४१ ।
करजर–तृणविशेष । प्रज्ञा० ३३ ।
करट–शरीरेण विमध्यम । नि० चू० द्वि० ७१ अ ।
करटी–वाद्यविशेष । जीवा० २६६ ।

करडि-करटी । ज० प्र० १०१ ।
करडुय-करडुक-मृतकभक्तम् । व्य० द्वि० ३४२ अ ।
करडुयभत्त-घृतपूर्ण । नि० चू० द्वि० १०० आ । करडुकभक्तम्-मृतकभोजन मामिकादि । पिण्ट० १३४ ।
करडो-कुरट-कुणालानगर्या दोपार्त्ते उपाध्यायविशेष । आव० ४६५ ।
करण-करण अनादिकालात् महत्यावस्थानम् । विशे० १२६१ । अपूर्वप्रादुर्भाव । अन्योन्यसमाधानम् । आव० ४५७ । पिण्डविशुद्धयादि । ज्ञाता० ७ । उत्त० ५८० । गुरुविषय शिष्यविषय च । आव० ४७१ । गुरुशिष्ययो सामायिकक्रियाव्यापारणम् । आव० ४७१ । यत् प्रयोजन आपन्ने क्रियत इति करणम् । ओघ० ७ । कालविशेषरूप चतुर्यामप्रमाणम् । उत्त० २०२ । जीवपरिणाम । विशे० ५३४ । करण न्यायालयम् । नि० चू० प्र० ११२ अ । प्रतिलेखनादि । भग० ७२७ । करणम् । दश० ६१ । प्रयोग । ज्ञाता० ४१ । इन्द्रियम् । कृतकारितानुमतिरूपम् । भग० ८६ । चारित्रम् । वृ० प्र० ११८ अ । अपूर्वकरणम् । उत्त० ५७६ । अवनामादिरावश्यक । वृ० तृ० १३ अ । गात्रम् । आचा० ८६ । मन । विशे० ११६५ । कृति स्वभावत एव निर्वृतिर्गृह्यते, न पुन क्रियत इति । विशे० १२६१ । करण-न्यायालय । आव० ५२०, ७१७, ८२१, ८२२ । उत्त० ३०१ । नदी० १६३ । परिणामविशेष । वृ० प्र० १७ अ । आरभ । वृ० प्र० १५८ अ । क्रिया । नदी० १६० । आव० ८२१ । उत्त० १४६ । खण्डनम् । वृ० प्र० १७१ आ । उत्त० २०४ । वैयावृत्त्यम् । ओघ० ४५ । स्थापनम् । वृ० प्र० २३८ अ । ववादिगणित । ओघ० ११५ । क्रियासिद्धौ प्रकृष्टोपकारक सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि । आचा० ४१६ । पादकर्म । वृ० द्वि० २१८ आ । क्रियतेऽनेनेति करण क्रियाया साधकतम कृतिर्वा करण-क्रियामात्रम् । भग० ७७३ । कर्म्म उत्प्लवनलक्षण यत्करण-क्रियाविशेष । भग० ६२८ । अवश्य विपाकदायित्वेन निष्पादन निधत्तादिरवरूपमिति । भग० ६३८ । इन्द्रिय कृत्य वा । प्रश्न० ४१ । न्यायालय । वृ० तृ० ३३ अ । साधनम् । औप० ४६ । अपवाद, विशेषवचन च । ज० प्र० ५४१ । अभिधानम् । ज० प्र० १३४ । विवक्षितक्रियासाधकतम करणम् । अनु० १३४ । पिण्डविशुद्धयादि । अनु० । मृत्पिण्डादि । आव० २७८ । परिभोगो जो विवरीयभोग करेति । नि० चू० द्वि० १२६ आ । पिण्डविशुद्धिसमित्याद्यनेकविधम् । सम० १०६ । क्रियते येन तत्करण मननादिक्रियासु प्रवर्तमानस्यात्मन उपकरणभूतस्तथा तथापरिणामवत्पुद्गलसङ्घात इति भाव । ठाणा० १०७ । उल्लगकरण । नि० चू० प्र० ४२ आ । करणम् । आव० ४२६ । अङ्गभङ्गविशेषो मल्लशास्त्रप्रसिद्ध । औप० ६५ । करण-विविष्टिदिवसो दुर्दिनग्रहणोत्पातदिनादिभ्यो भिन्नदिवस । ज० प्र० २७३ । उपधि । ओघ० २०७ । प्रयोगकरण विश्रसाकरण वा । भग० ६३६ । इषु शास्त्रे सयमे वा कृतकरण । वृ० द्वि० ३५ आ । आधाकर्म । वृ० तृ० १२५ आ । शक्ति । आचा० ३० । पिण्डविशुद्धयादि । उत्त० ५८० । भग० १२२, १३६ । कुर्वत इत्यर्थ । भग० १०४ । जीववीर्यम् । भग० २५२ । कृति । आव० ४५७ ।
करणगुण-कलाकौशल्यम् । आचा० १२ ।
करणगुणसेढि-करणगुणेन-अपूर्वकरणादिमाहात्म्येन श्रेणि करणगुणश्रेणि प्रक्रमात्क्षपकश्रेणिरेव गृह्यते । उत्त० ५८० । करणेन-अपूर्वकरणेन गुणहेतुका श्रेणि करणगुणश्रेणि-मर्वोपरितनस्थितेर्मोहनीयादिकर्मदलिकान्युपादायोदयसमयात्प्रभृतिद्वितीयादिसमयेष्वसङ्ख्यातगुणपुद्गलप्रक्षेपरूपाऽन्तर्मौहूर्तिकी । उत्त० ५७६ ।
करणजड्डो- । नि० चू० द्वि० ३६ आ ।
करणततोवदरिसणत्थ-करणतत्रोपदर्शनार्थं, मनोवाक्कायलक्षणकरणायत्ततोपदर्शनार्थम् । विशे० १३२८ ।
करणपती-न्यायाधीश । नि० चू० तृ० १०१ अ ।
करणपर्याप्ति- । प्रज्ञा० २६ ।
करणया-करणाना-सयमव्यापाराणा भाव-करणता । ज्ञाता० ५२ ।
करणविहीणो-क्रियाहीन । मर० ।
करणवीरिए-लब्धिवीर्यकार्यभूतो क्रियाकरण तद्रूप कर-

णवीयम् । भग० ६५ ।

करणवीरिय–क्रियावीर्यम् । नि० चू० प्र० १६ अ ।

करणसत्ती–करण–क्रिया–तस्या शक्ति प्रवृत्ति क्रिया-शक्ति । नदी० १६० । करणशक्ति –तन्माहात्म्यात् पुराऽनध्यवसितक्रियासामर्थ्यरूपा । उत्त० ५६१ ।

करणसच्च–करणसत्य,वाह्य प्रत्युपेक्षणादि,त्रयोदशोऽनगार-गुण । आव० ६६० । यत्प्रतिलेखनादिक्रिया यथोक्त सम्य-गुपयुक्त कुरुते । मम० ४६ । करणे सत्य करणसत्य यत्प्रतिलेखनादिक्रिया यथोक्ता सम्यगुपयुक्त कुरुते । उत्त० ५६१ । यथोक्तप्रतिलेखनाक्रियाकरणम् । प्रश्न० १४५ ।

करणसभा–महावीरस्वामिनो निर्वाणस्थानम् । सम० ७३ ।

करणसाला–करणशाला । दश० १०८ ।

करणसालाए–न्यायालय । नि० चू० द्वि० १२ अ ।

करणा–करणानि चक्षुरादीनीन्द्रियाणि । जीवा० २७१ ।

करणाए–उपकरणाय, उपकाराय । आचा० २८२ । उप-करणार्थम् । आचा० २८८ ।

करणाणुओगे–क्रियते एभिरिति करणानि तेषामनुयोग करणानुयोग । ठाणा० ४८१ ।

करणाणुपालया–पूर्व्वरिसीहिं पालिय जे पच्छा पालयति ते करणाणुपालया । नि० चू० प्र० ३६० आ ।

करणापर्याप्ता –ये करणानि–शरीरेन्द्रियादीनि न तावन्निर्वर्त्तयन्ति अथचावश्य निर्वर्त्तयिष्यन्ति ते । जीवा० १० । करणानि–शरीरेन्द्रियादीनि न तावन्निर्वर्त्तयन्ति अथचा-वश्य निर्वर्तयिष्यन्ति ते करणापर्याप्ता । प्रज्ञा० २६ ।

करणालसा–करणालसा –चरणालसा, चरणधर्मं प्रत्यनु-द्यता स्वस्य परेषा च चिन्ताश्वासननिमित्तमितिभाव । प्रश्न० ३५ ।

करणि–साहश्यम् । अनु० १२ । प्रशसा, क्रिया । आव० ६६३ । क्रिया । आव० ८१८ ।

करणिज्जकिरिया–करणीयक्रिया-यद् येन प्रकारेण करणीय तत्तेनैव क्रियते नान्यथा सा । सूत्र० ३०४ ।

करणिज्जो–करणीय –सामान्येन कर्त्तव्य । आव० ५७१ ।

करणी–क्रिया । अनु० १३८ । वर्गमूलमानीयते । ज० प्र० १६ ।

करणीयाइ–करणीयानि–कादाचित्कानि । ज्ञाता० ६१ ।

करतल–हस्तमस्त । नि० चू० प्र० ६० आ ।

करतलपल्हत्थमुहे–करतले पर्यस्त–अधोमुखतया न्यस्त मुख येन स । भग० १८० ।

करधाण–करध्मानम्–परस्पर हस्तताडनम् । ज० प्र० २०६ ।

करपत्ते–क्रकचम् । ज्ञाता० २०४ । ठाणा० ७७३ ।

करपत्रम्–शस्त्रविशेष । आव० ८१६ ।

करपल्लीवण–करप्रदीपन–वमनावेष्टितस्य तिलाभिषिक्तस्य करयोरग्निप्रबोधनम् । सम० १२६ ।

करबोडिय–व्याप्त । मर० ।

करम– । नि० चू० द्वि० १२१ अ ।

करमो–घटसस्थानकोष्ठिका । बृ० द्वि० १५६ अ ।

करमदि–करमर्दी गुल्मभेद । उत्त० ५४६ ।

करमद्द–करमर्दम् । आव० ६२२ । गुच्छविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

करमद्दिया– । नि० चू० द्वि० ६० अ ।

करमोअण–करमोचन–यत् कर मन्यमानो वन्दते न निर्ज-राम्, कृतिकर्मणि पञ्चविंशतितमो दोष । आव० ५४४ ।

करयल–करतल–हस्त । प्रश्न० ८ ।

करयलत्थो–करतलस्थ –वशवर्ती । आव० ७२१ ।

करयलपरिग्गहिय–करतलपरिगृहीत करतलाभ्या परि-गृहीत –निष्पादित । जीवा० २४३ ।

करवत्त–करपत्रम् । जीवा० ११७ । करपत्र–क्रकचम् उत्त० ४५६ । करवतम् । नदी० १५५ ।

करवर–वनस्पतिविशेष । पिण्ड० १२६ ।

कराल–उन्नतम् । अनुत्त० ६ ।

करालो–युक्त । भक्ति० ।

करिंसुयसय–करिंसु इत्यनेन शब्देनोपलक्षित शतम् । भग० ६३८ ।

करि–करोति । ओघ० १११ ।

करिए–करिक –अष्टाशीत्या चतुरशीतितमो ग्रह । ज० प्र० ५३५ ।

करित्ता–करेता । अभ्यवहृत्य । ओघ० ४४ ।

करिमकरा–मत्स्यविशेषा । सम० १३५ ।

करियातिओ–कृतवान् । नि० चू० प्र० १०६ अ ।

करिसग–कर्षक । नदी० १६४ ।
करिसण–कर्षण–कृषि । प्रश्न० ८ ।
करिसो–कर्ष–पलस्य चतुर्भाग । अनु० १५४ ।
करीर–गुच्छाविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।
करीरपाणग–पाणकस्य अष्टादशो भेद । आचा० ३४७ ।
करिल–रागद्वेषाभावे दृष्टान्तविशेष । बृ० प्र० ३७ अ ।
करीलो–वंशजातिविशेष । व्य० प्र० २२५ आ ।
करील्ल–करीर–प्रत्यग्र कन्दलम् । अनुत्त० ४ ।
करीस–करीषम् । भग० ३०६ । करीषम्–शुष्कछगणम् । दश० ६२ ।
करीसओण्हा–करीषोष्मा । आव० ४१६ ।
करिणी–करेणु । उत्त० ६३४ ।
करुडगादिय–हिंगोल । नि० चू० द्वि० २२ अ ।
करुणालवणभूओ–करुणालम्बनभूत । आव० ४१३ ।
करुल्ल–कपालम् । आव० २०१ ।
करेंतगो–कर्त्ता । आव० २६२ ।
करेइ–निर्मथ्यते । ज्ञाता० २४२ ।
करेणु–करेणुका–हस्तिनी । उत्त० ३४९ ।
करेणू–करेणुका । ज्ञाता० ६४ ।
करेमाणा–कुर्वाणा । ज्ञाता० ५७ ।
करोटक–कुप्यविशेष । आव० ८२६ ।
करोटिका–भाजनविशेष । पिण्ड० ६८, १५५ । भाजनविधिविशेष । जीवा० २६६ । पात्रविशेष । आव० ४४३ । पात्रविशेष । पिण्ड १०५ ।
करोडग–भाजनविशेष । नि० चू० प्र० ७१ आ । नि० चू० प्र० २५६ अ । नि० चू० द्वि० ९३ आ ।
करोडि–करोडि । ज० प्र० १०१ । करोटि । आव० ६८९ ।
करोडिआ–अतीवविशालमुखा कुण्डिकैव करोडिका । अनु० १५२ । करोटिका–स्थगिका । ज्ञाता० ४४ ।
करोडिय–करोटिका–मृद्भाजनविशेष । भग० ११३ । करोटिक–कपालिक । विपा० ७६ ।
करोडिया–स्थगिका । भग० ५४८ । कापालिका । ज्ञाता० ५८ । करोट्या–कपालेन चरन्तीति करोटिका । ज्ञाता० १५२ ।
करोडी–करोटिका–कपालिका । आव० ६८९ ।
करोति–स्मरणे वर्तते न निष्पादने । नदी० १७ ।
कर्कट–पृथिव्याश्रितो जीवविशेष' । आचा० ५५ ।
कर्करायितं– । उत्त० १२० ।
कर्कश–स्पर्शस्य प्रथमभेद । प्रज्ञा० ४७३ ।
कर्कशस्पर्श–यदुदयाज्जन्तुशरीरेषु कर्कश स्पर्शो भवति, यथा पाषाणविशेषादीना तत् । प्रज्ञा० ४७३ ।
कर्केतन–रत्नविशेष । सम० १३९ ।
कर्कोलक–फलविशेष । जीवा० १३६ ।
कर्ण–कण्ण–श्रवण । आचा० ३८ ।
कर्णक–भाजनस्योर्द्ध्वभाग । ओघ० १६८ ।
कर्णगति–कन्दादारभ्य शिखर यावदेकान्तऋजुरुपाया दवरिकाया दत्ताया यदपान्तराले क्वापि कियदाकाश तत्सर्वम् । ज० प्र० ३६३ ।
कर्णाघाटकेन– । विशे० ४०७ ।
कर्णपर्पटका–शष्कुली । नदी० ७५ ।
कर्ण्योपकरणी– । उत्त० ३८२ ।
कर्त्तव्यता– । आव० ८३४ ।
कर्द्दमजलम्–यद् घनकर्दमस्योपरि वहति । ओघ० ३२ ।
कर्परक– । विशे० ६३८ ।
कर्पूर–निर्यासवस्तुविशेष । जीवा० १३६ ।
कर्प्पर–घटखण्डम् । नदी० ६३ ।
कर्प्पासी–गुच्छविशेष । आचा० ३० ।
कर्बुर–वर्णविशेष । आचा० २९ । बकुश–शबलो वा । भग० ८९१ । ठाणा० ३३६ ।
कर्म–योग, व्यापार, क्रिया । विशे० २०९ । सिद्धशब्दपर्याय । ठाणा २५ । आर्यभेद । सम० १३५ ।
कर्मकल्क–कर्मसार । प्रज्ञा० ३३१ ।
कर्मचक्री– । ज० प्र० २१५ ।
कर्मंत–आशीविसद्वितीयभेद । विशे० ३८० ।
कर्मनिषेक–तद्भवजीवितम् । आव० ४८० ।
कर्मप्रवाद–अष्टम पूर्व । विशे० १००६ ।
कर्मभूमिजा–भूमिविशेषजन्मा । सम० १३५ ।
कर्म्मक्षय–सिद्धशब्दपर्याय । ठाणा० २५ ।
कर्म्मद्रव्यकषाया–तत्रादित्सितात्तानुदीर्णा पुद्गला द्रव्य-

प्रधानात् कम्मद्रव्यकपाया । आचा० ९१ ।

कर्म्ममास–त्रिंशदहोरात्रप्रमाण । सूय० ११ । ठाणा० ३४५ ।

कर्म्मसार–कम्मण सार । प्रज्ञा० ३३१ ।

कर्म्मार्या–यजनयाजनाध्ययनाध्यापनप्रयोगलिपिवाणिज्ययोनिपोपणवृत्तय । त० ३–१५ ।

कर्षादीनि–मापविशेष । ठाणा० ८८ ।

कल–कलाम् भागम् । उत्त० ३१६ । शोभाया अश । ज्ञाता० १३१ ।

कलक–कलङ्क–दुष्टतिलकादिक चित्रादिक वा । जीवा० २७७ । दुष्टतिलकादिकम् । औप० १६ ।

कलकलियवाय–कलङ्कलिकावातम् । आव० २१७ ।

कलकलीभागिणो–कलङ्कलीभावभाज । सूत्र० ३४१ ।

कलकलीभाव–कदर्थ्यमानता । प्रज्ञा० १०८ । उत्त० १८३ । आचा० ११७ ।

कलत–उत्काल्यमान । मर० ।

कलदे–दिशाचरविशेष । भग० ६५६ ।

कलपि–कलामपि–मनागपि । व्य० द्वि० २२६ आ ।

कलबचीरपत्त–कलम्बचीर । शस्त्रविशेष । विपा० ७१ ।

कलबचीरिया–कदम्वचीरिका–तृणविशेप, दर्भादप्यतीवछेदक । जीवा० १०८ ।

कलबचीरियापत्त–कदम्बचीरिकापात्रम् । जीवा० १०६ ।

कलबवालुया–कदम्वपुष्पाकारा वालुका कदम्ववालुका । प्रश्न० २० ।

कलबाण–वनस्पतिविशेप । भग० ८०३ ।

कलबुगा–कलम्बुका सन्निवेशविशेष । आव० २०६ ।

कलबुया–जलरुहविशेप । प्रज्ञा० ३३ ।

कलबुयापुप्फ–कलम्बुयापुप्प–नालिकापुष्पम् । सूर्य० ७१ । जीवा० ३३९ । ज० प्र० ४५३ । कलम्बुकापुष्पसस्थानसस्थित–श्रोत्रेन्द्रियम् । प्रज्ञा० २९३ ।

कलबुवालुयापट्ठ–कदम्ववालुकापृष्ठम् । आव० ६५१ ।

कलबो–पिशाचाना चैत्यवृक्ष । ठाणा० ४४२ ।

कल–मधुर । ज० प्र० २०६ । कलायास्त्रिपुराख्या वृत्तचणका वा । ज० प्र० १२४ । धान्यविशेष । भग० ६८४ । पङ्कजलम् । उत्त० ३९१ । धन । नि० चू० प्र० २०५ आ । पङ्क । पिण्ड० १०७ । कर्दम । भक्त० । कल–माधुर्यविशिष्टध्वनिविशेपम्पम् । प्रश्न० १५९ । कला —अत्यन्तश्रवणहृदयहरा अव्यक्तध्वनिरूपा, अथवा कलावन्त –परिणामवन्त इत्यथ । ज्ञाता० २३३ । औपधिविशेप । प्रज्ञा० ३३ । कला–वृत्तचनका । पिण्ड० १६८ ।

कलकल–उपलभ्यमानवर्णविभाग । औप० ५७ । उपलभ्यमानवचनविभाग । भग० ४६३ । कलकलशब्दयोगात् कलकलम् । प्रश्न० १९ । यत् कलकलशब्द करोति तत् कलकल अतितप्तमिति । प्रश्न० १९४ । चूर्णादिमिश्रजलम् । विपा० ७० । आचा० ३३१ । कलकल व्याकुलशब्दसमूह । ज० प्र० ४६३ । व्याकुलशब्दसमूह । सूर्य० २८१ ।

कलकलत–अतिक्वाथत कलकलशब्द कुर्वन्ति । उत्त० ४६१ ।

कलकलिता–कलकलायमाना–कोलाहलबोल कुर्वाणा । प्रश्न० ५० ।

कलकलेइ–कलकलायति–भवजलधौ क्वथयति । आव० ५६७ ।

कलगिर–व्यक्तवाच । ज० प्र० १२७ ।

कलणाय–कलनाद । उत्त० १५० ।

कलत्त–यस्मात् सर्वं आत्ते गृहणाति तस्मात् कलत्रम् । नि० चू० २०५ आ ।

कलन्द–कुण्ड–कलन्दम् । उपा० २२-४ ।

कलभा–बालकावस्था । ज्ञाता० ६७ ।

कलभाणिणी–कलभानना–स्वरमनोज्ञानना । व्य० द्वि० २२६ आ ।

कलभिया– । ज्ञाता० ६३ ।

कलमल–जठरद्रव्यसमूह । ठाणा० १४५ ।

कलमलजबाल–मूत्रादिकर्दम । मर० ।

कलमसालि–कलमशालि, शालिविशेप । ज० प्र० १०४ ।

कलमा–तन्दुला । आ० २३८ ।

कलमाल–विंदु । नि० चू० प्र० ४५ अ ।

कलमोडण– । नि० चू० द्वि० १६६ अ ।

कपरिहारविशुद्धिकयथालन्दिकप्रतिमाप्रतिपन्नानामन्यतम । आचा० २८० ।

कल्पनिका–शस्त्रविशेष । भग० १९८ । सम० ७९ ।

कल्पनी–कर्त्री–शस्त्रविशेष । उत्त० ४६० ।

कल्पपाला–सुरादिविक्रयकारिण । मद्यपा । व्य० द्वि० ४२० अ ।

कल्पस्त्रिय–कल्पयो–देवलोकयो स्त्रिय कल्पस्त्रिय–देव्य । ठाणा० १०० ।

कल्पस्थित–वाचनाचार्यो गुरुभूत इत्यर्थ । ठाणा० ३२४ ।

कल्पा–मविघ्नविहार । वृ० प्र० ११३ अ ।

कल्पातीत–साधुभेदविशेष । भग० ४ ।

कल्पावतंसिका–कल्पावतंसकदेवप्रतिबद्धग्रन्थपद्धति । निरय० ७१ । नदी० २०७ ।

कल्पिका–या कारणे प्रतिसेवना क्रियते सा । व्य० प्र० ४७ आ ।

कल्या–नीरोगी । नदी० १६१ ।

कल्याणक–यदासनप्रकम्पप्रयुक्तावधय सकलसुरासुरेन्द्रा जीतमितिविविदितमवो युगपत् ससम्भ्रमा उपतिष्ठन्ते । ज० प्र० १५६ ।

कल्ल–कल्य–अत्यन्तनीरुक्तया मोक्ष । उत्त० १२८ । प्रत्यूप । आव० १४८ । नीरोगया मोक्खो । दश० चू० ७१ । कल्य–श्व, प्रादु प्राकाश्ये च । ओघ० २६ । सुखमारोग्य शोभनत्व वा । सूत्र० ३८३ । कल्य पूपकम् । ओघ० १७२, १७३ । कल्य–शब्द, शब्दशास्त्रम् । विशे० १३०४ । कल्ये । आव० ९५ । कल्य–आरोग्यम् । आव० ७८८ । श्व । भग० १२७ । कल्य, मोक्ष । उत्त० १२८ । दश० १५८ । कल्यो–नीरोग । चिन्तादिनापेक्षया द्वितीयदिने । उत्त० ४७६ ।

कल्लसरीरा–कल्यशरीरा, पटुशरीरा । ठाणा० २४७ ।

कल्लाकल्लि–प्रतिप्रभातम् । उपा० ४० । प्रतिदिनम् । ज्ञाता० १४९ । कल्ये च कल्ये च अनुदिनमिति कल्याकल्यि । विपा० ५१, ५८ ।

कल्लाण–कल्यम्–आरोग्य अणति–शब्दयतीति कल्याण । आव० ७८८ । कल्याण–एकान्तसुखावहम् । जीवा० २७८ । इष्टार्थफलमप्राप्ति । सूत्र० ३८३ । कल्याणहेतु । सूर्य० २६७ । अर्थहेतु । औप० ५ । कल्याणप्रापकत्वात्–अहिंसाया एकोनत्रिंशत्तम नाम । प्रश्न० ९९ । शुभम् । मुक्तिहेतु । उत्त० १२८ । तत्त्ववृत्तया तथाविधविशिष्टफलदायी, अनर्थोपशमकारि वा कल्याणरूप कलविपाक वा । जीवा० २०१ । कल्याणं–श्रेय । भग० ११६ । नीरोगताकारणम् । भग० १२५ । अनर्थोपशमहेतुत्वम् । भग० १६३ । कल्यो–मोक्षस्तमणति प्रापयतीतिकल्याण–दयाख्य सयमस्वरूपम् । दश० १५८ । गुणसम्पद्रूप सयम । दश० १८९ । तत्त्ववृत्या तथाविधविशिष्टफलदायी, अनर्थोपशमकारी । ज० प्र० ४७ । कल्याण–समृद्धि । ठाणा० १११ । मगलस्वरूपत्वात्–कल्याणम् । ठाणा० २४७ । अर्थप्राप्ति । भग० ५४१ । एकान्तसुखावहम् । ज० प्र० ११९ । पर्वगविशेष । प्रज्ञा० ३३ । कल्य–अत्यन्तनीरुक्तया मोक्षस्तमानयति अणति प्रज्ञापयतीति कल्याण मुक्तिहेतु । उत्त० १२८ । कल्य–आरोग्य अणन्ति–शब्दयन्तीति कल्याणा । ठाणा० ४६४ । नीरोगताकरणम् । ज्ञाता० ७६ ।

कल्लाणकार–कल्याणकरण, मङ्गलकरणम् । ज्ञाता० २२० ।

कल्लाणग–णाम ओहारो । नि० चू० प्र० ११३ आ । नि० चू० प्र० ७६ अ । कल्याणक–अनुपहत प्रवरम् । उपा० २६ ।

कल्लाणवय– । नि० चू० प्र० १९५ अ ।

कल्लाणपुक्खल–कल्या–आरोग्य कल्यमणतीति कल्याण, पुष्कल–सम्पूर्ण च कल्याणपुष्कलम् । आव० ७८८ ।

कल्लाणय–कल्याणक–कल्याणकारि । जीवा० १९२ । परमवस्त्रलक्षणोपेतम् । जीवा० २६९ ।

कल्लाणी–वनस्पतिविशेष । भग० ८०२ ।

कल्लालघर–कल्पपालगृहम् । अनु० १४२ ।

कल्लालत्तण–कौलालत्व–सुराविक्रेतृत्वम् । आव० ८२९ ।

कल्लुगा–कल्लका । नि० चू० द्वि० ८० आ । नदीपाषाणेषु उत्पद्यमाना द्वीन्द्रियविशेषा । वृ० तृ० १६२ आ ।

कल्लुयावासा–द्वीन्द्रियविशेष । जीवा० ३१ ।

कल्लेदाणि–नित्य । नि० चू० द्वि० १४४ आ ।

कल्लोल–फलविशेष । प्रश्न० १६२ ।

कल्हाडए–कल्हाडक । गोरथका । वृ० द्वि० १३८ आ ।

कल्हारे-जलरुहविशेष । प्रज्ञा० ३३ ।

कल्होड-गोरथक । दश० २१७ ।

कवइय-कवचिका-सन्नाहविशेष । औप० ६२। भग० ३१७ ।

कवए-कवच-कङ्कट । भग० ३१८। तनुत्राणम् । ज० प्र० २१६ ।

कवचं-कङ्कट-आवरण । जीवा० १६३ । सन्नाहविशेष । ज्ञाता० २२१ ।

कवड-कपट-वेषपरावर्त्तादिर्बाह्यो विकार । आव०५६६ । देशभाषानेपथ्यादिविपर्ययकरणम् । सूत्र० ३२६ । वेषभाषावैपरीत्यकरणम् । प्रश्न० ५८ । भाषाविपर्ययकरणम् । प्रश्न० २७। वेषाद्यन्यथात्वम् । ज्ञाता० १५८ । वेषादिविपर्ययकरणम् । ज्ञाता० २३८ । परवञ्चनाय वेषान्तरकरणम् । ज० प्र० १६६ । नेपथ्यभाषाविपर्ययकरणम् । ज्ञाता० ८० । वञ्चनाय वेषान्तरादिकरणम् । भग० ३०८ ।

कवडसड्ढओ-कपटश्राद्ध । आव० ७९९ ।

कवडिया- । ओघ० १८८ ।

कवड्डगा-ताम्रमय नाणकम् । नि० चू० प्र० ३३० अ ।

कवणो-कतम । पउ० ७१ ।

कवय-कवच-कङ्कट । भग० १९३ । सन्नाहविशेष । ज० प्र० २०५ । तनुत्राणम् । जीवा० २५६ । परिकर । प्रश्न० ७५ ।

कवर्गप्रविभक्तिक-पञ्चदशो नाट्यविधि । ज०प्र० ४१७ ।

कवल-आहारविशेष । ठाणा० ६३ । कुर्कुटयण्डकमात्रा । ओघ० १८२ । कवल । आव० ८४४ ।

कवलक-उपकरणभेद । आचा० ६० ।

कवलग्गाहो-कवलग्राह-गलकण्टकापनोदाय स्थूलकवलग्रहण, मुखविमर्दनार्थं वा दष्ट्राग्र काष्ठखण्डदानम् । विपा०८१ ।

कवलिका- । भग० ६५१ ।

कवल्ली-कवली-गुडादिपाकभाजनम् । विपा० ५८ ।

कवल्लीओ-लोही । नि० चू० प्र० ३१७ अ ।

कवाड-कपाट-द्वारयन्त्रम् । दश० १८४ । कपाट-प्रतोलीद्वारसत्कम् । जीवा० १५९ । कपाटानि-प्रतोलीद्वारसत्कानि । प्रज्ञा० ८६ ।

कवाडोब्भिन्न-यद् पिहित कपाट उद्भिद्य-उद्घाट्य साधुभ्यो दीयते तत् कपाटोद्भिन्नम् । पिण्ड० १०५ ।

कवाल-कपाल-कर्परम् । सूत्र० २९८ । घटखर्परादि । आचा० ३११ ।

कविंजला-लोमपक्षिविशेष । प्रज्ञा० ४९ ।

कविक-खलिनम् । आव० २६१ । दश० २८३ ।

कविकच्छु-कपिकच्छू-तीव्रकण्डूतिकारक फलविशेष । प्रश्न० १६४ ।

कविकच्छू-कपिकच्छु-खर्ज्जूकारी । ज्ञाता० २०४ ।

कविंचियाओ-कलाचिका । भग० ५४८ ।

कविट्ठ-कपित्थ फलविशेष । प्रज्ञा० ३६४ । फलविशेष । आव० ७९८ । प्रज्ञा० ३२८ । भग० ८०३ । कपित्थफलम् । दश० १८५ । बहुबीजफलविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

कविट्ठपाणग-पानकभेद । आचा० ३४७ ।

कविट्ठलता-कपित्थलता । आव० १७३ ।

कवित्थ-कपित्थ फलविशेष । उत्त० ६५३ ।

कवियच्छू-कपिकच्छू-कण्डूविजनको वल्लीविशेष । जीवा० १०७ ।

कविल-कपिल-पक्षिविशेष । ज्ञाता० २३१ । प्रश्न० ८ । सुस्थिताचार्याणा शिष्य । नि० चू० द्वि० ३१ आ । ग्रन्थार्थपरिज्ञानशून्य । परिव्राजकविशेष । औप० ९१ । राजपुत्रविशेष । मरीचिशिष्य । आव० १७० । सुस्थिताचार्यशिष्य वेदत्रयानुभववान् । बृ० तृ० ९८ अ । क्षुलकश्रमण । नि० चू० प्र० ७८ अ । राजगृहनगरे ब्राह्मण । व्य० द्वि० १९६ आ । नगरबाहिरिकाया ब्राह्मण । आव० ६६१ । कौशाम्ब्या काश्यपपुत्र । उत्त० २८६ । लोभे दृष्टान्त । क्षुल्लकविशेष । नि० चू० प्र० ७८ अ । कपिल । उत्त० २८६ । चम्पानगर्या कपिलनामा वासुदेव । ज्ञाता० २२२ ।

कविला-नामविशेष । विनयबहुमानचतुर्थभङ्गे दृष्टान्त । नि० चू० प्र० ८ अ । कपिला-दानस्यादात्री श्रेणिकस्य दासी । आव० ६८१ ।

कविलिए-कृष्णपुद्गलस्य भेदविशेष । सूय० २८७ ।

कविल्ली-कटाह-लोहभाजनविशेष । आव० ३६६ । मण्डनकादिपचनिका लोही । अनु० १५९ ।

कविसाणए–कपिशायन–मद्यविशेष । प्रज्ञा० ३६४ ।
कविसीस–कपिशीर्षक–प्राकाराग्रम् । आव० २३१ ।
कविसीसए–कपिशीर्षक –प्राकाराग्रम् । ज० प्र० ३२० ।
कविसीसग–कपिशीर्षक । ज्ञाता० ६६ । जीवा० २१६ ।
कविहसित–आगासे विकृतरूप मुख वाणरसरिस हास करेज्ज । नि० चू० तृ० ७५ अ ।
कविहसिय–कपिहसित, यदाकाशे वानरसदृश विकृत मुख हास कुर्यात् । आव० ७५० । अकस्मान्नभसि ज्वलद्भीमशब्दरूपम् । जीवा० २८३ । कपिहसित–अनभ्रे या विद्युत् सहसा तत् कपिहसितम् । भग० १९६ ।
कविहसिया–कपिहसितानि, अकस्मान्नभसि ज्वलद्भीमशब्दरूपाणि । अनु० १२१ ।
कवेलुका– । दश० १०१ ।
कवेलुय–कवेलुकम् । ज० प्र० २३ ।
कवेल्ली–लोहकटाहम् । भग० २३८ ।
कवेल्लुक–भाव्यम् । आव० ५२१ ।
कवेल्लुकापाक – । जीवा० १२४ ।
कवेल्लुय–कवेल्लुक–मण्डनपचनिका लोही । जीवा० १८० ।
कवोड–कपोत–पक्षिविशेष । पिण्ड० ७६ ।
कवोतक–कपोतक । प्रश्न० ८ ।
कवोय–कपोतक पक्षिविशेष । भग० ६६१ । कपोत–पक्षिविशेष । उत्त० ४५६ ।
कवोया–लोमपक्षिविशेष । प्रज्ञा० ४६ ।
कवोलदेसो–कपोलदेश–गण्डभाग । जीवा० २७३ ।
कव्व–काव्य –धर्मार्थकाममोक्षलक्षणपुरुषार्थप्रतिबद्धग्रन्थ – संस्कृतप्राकृतापभ्रंशसङ्कीर्णभाषानिबद्ध, समविषमार्द्धसमवृत्तबद्धतया गद्यतया चेति,गद्यपद्यगेयवर्णपदभेदवद्ध । ठाणा० ४५० । गन्थ । ठाणा० २८८ । कवेरभिप्राय । अनु० १३५ ।
कव्वग–भाजनग्यावक्लपमपवृत्य । व्य० द्वि० ३०२ आ ।
कव्वड–कुणगरो । नि० चू० द्वि० ७० आ । वाडवोपमकूडसक्खिसमुब्भावियदुक्खच्छलव्ववहारत कव्वड । दश० चू० १५७ ।
कव्वालभयगो–तइओ भयगभेओ । नि० चू० द्वि० ४४ अ ।
कव्वालो–खितिखाणतो उड्डमादी । नि० चू० द्वि० ४४ आ ।
कशा–बन्धनविशेष । भग० १६३ । दश० २६७ ।
कष–ससार । जीवा० १५ ।
कषपट्टक–सुवर्णपरीक्षकपाषाणविशेष । जीवा० १६१ ।
कषाय–रसस्य तृतीयभेद । प्रज्ञा० ४७३ । पीतरक्तवर्णाश्रयरञ्जनीयवस्तु । ज० प्र० १८६ ।
कषायसमुद्घात–कषायोदयेन समुद्घात । जीवा० १७ ।
कस–कश –वर्ध्रविकार । उत्त० ३६४ । कषन्ति–हिंसन्ति परस्पर प्राणिनोऽस्मिन्निति कष–ससार । प्रज्ञा० २८५ । कष–चर्मदण्ड । ज० प्र० १४७ । कष–वर्ध्र । प्रश्न० १६४ । कष्यतेऽस्मिन् प्राणी पुन पुनरावृत्तिभावमनुभवति कषोपलकष्यमाण कनकवदिति कष ससार । उत्त० १६० । कर्म भवो वा । आव० ७७ । कषति–हिनस्ति देहिन इति कष कर्म्म । ठाणा० १९३ । कस–चर्मयष्टिका । प्रश्न० २२ । कशा–आयुष उपक्रमे द्वितीयभेद । आव० २७३ । ससार । आचा० ६८ । कश–चर्मयष्टि । उत्त० ४८ । चर्मदण्ड । ज० प्र० २३५ ।
कसट्ट–कचवर । ओघ० १८४ ।
कसट्टिया–कषपट्ट । भग० २१३ ।
कसप्पहारे–वर्ध्रताडनानि । ज्ञाता० ८७ ।
कसमाओ–कषमाय–कषमायन्ति, कष गमयन्ति । विशे० ५४३ ।
कसर–कशर–खशर । भग० ३०८ ।
कसाइज्जति–कषायन्ते । आव० १११ ।
कसाइयय–कषायितक । आव० २१६ ।
कसाईओ–कषायित । आव० ३२३ ।
कसाए–कषाय कषायोदय । प्रज्ञा० १३५ । कृषन्ति विलिखन्ति कर्मरूप क्षेत्र सुखदु खशस्योत्पादनायेति कषाया, कलुषयन्ति शुद्धस्वभाव सन्त कर्ममलिन कुर्वन्ति जीवमिनि वा । प्रज्ञा० २९० । कषन्ति–हिंसन्ति परस्पर प्राणिनोऽस्मिन्निति कष –ससारस्तमयन्ते–अन्तर्भूतण्यर्थत्वाद्गमयन्ति प्रापयन्ति ये ते कषाया । प्रज्ञा० २८५ । अन्नरुचिस्तम्भनकृत्कषाय । ठाणा० २६ ।
कसाय–कषाय–प्रज्ञापनायाश्चतुर्दश पदम् । प्रज्ञा० ६ । वल्कादि । दश० १८० ।
कसायकलहो–कलहस्य द्वितीयो भेद । नि० चू० प्र०

२५१ आ ।

कसायकुसील–कषायैः कुशील–कषायकुशील । भग० ८९० । कषायकुशील–यस्य पञ्चसु ज्ञानादिषु कषायैर्विराधना क्रियते स, कुशीलस्य द्वितीयो भेद । उत्त० २५६ ।

कसायदुट्ठो–हकारतो । नि० चू० द्वि० ४० अ । कषायदुष्टो यथा सर्षपनालिकाभिधानशाकमर्जिकाग्रहणकुपितो मृताचार्यदन्तभञ्जक साधु । ठाणा० १६३ ।

कसायपद–प्रज्ञापनाया चतुर्दश पदम् । भग० ७४८ ।

कसायपच्चक्खाण–क्रोधादिप्रत्याख्यान–तान् न करोमीति प्रतिज्ञानम् । भग० ७७३ ।

कसायपायाल–कषाया एवागाधभवजननसाम्येन पातालमिव पाताल यस्मिन् स–कषायपाताल । आव० ६०१ ।

कसायलोगो–कषायलोक–औदयिकभावकषायलोक । आचा० ८४ ।

कषायसंकिलेस–कषाया एव कषायैर्वा सङ्क्लेश–असमाधि कषायसङ्क्लेश । ठाणा० ४८६ ।

कसायसलीणया–कषायसलीनता, सलीनताया द्वितीयो भेद । सा च तदुदयनिरोधोदीर्णविफलीकरणलक्षणा । उदयस्सेव निरोहो उदय पत्ताण वाऽफलीकरण, ज इत्थ कसायाण कसायसलीनता एसा । दश० २९ ।

कसाया–कष, ससारस्तस्मिन् आ समन्तादयन्ते–गच्छन्त्येभिरसुमन्त इति कषाया, यद्वा कषाया इव कषाया । उत्त० १९० । कषन्ति परस्पर हिंसन्ति प्राणिनोऽस्मिन्निति कष कर्म भवो वा, अथवा कृष्यन्ते शारीरमानसदुःखलक्षैर्कृष्यन्ते प्राणिनोऽस्मिन्निति कष कर्मैव, भव एव वा, यतो यस्मात् कष कर्म, कषो वा भव आयो लाभो येषा ततस्ते कषाया । कषमायन्ति यत, अत कषाया–कष–गमयन्तीत्यर्थ । विशे० ५४३ । कृषन्ति–विलिखन्ति–कर्मक्षेत्र सुखदुःखफलयोग्य–कुर्वन्ति–कलुषयन्ति वा जीवमिति निरुक्तविधिना कषाया । ठाणा० १९३ । कलुषा । ५८९ । कष–ससारस्तमयन्ते गच्छन्त्येभिर्जन्तव इति कषाया–क्रोधादय परिणामविशेष । जीवा० १५ ।

कसासिव्वणी– । नि० चू० प्र० १२७ अ ।

कसाहीया–मुकुलिअहिभेदविशेष । प्रज्ञा० ४६ ।

कसिण–कृत्स्न–सम्पूर्ण । आव० ४९२, ५०० । दश० २३४ । सम० २७८ । व्य० द्वि० ३०१ आ । कृत्स्न । विशे० ८२८ । भग० १८६ । व्य० प्र० ११८ आ । कृत्स्न सर्वार्थग्राहकत्वात् । ज्ञाता० १५३ । कृत्स्न उज्ज्वला । उत्त० ४८५ । प्रधानभाजनम् । नि० चू० प्र० १३६ आ । कृष्ण । क्लिष्टम् । दश० २३८ । गणना जुत्तपमाणा । नि० चू० तृ० ६६ अ । गदम प्रमाणातिरिक्त । नि० चू० प्र० १३८ आ ।

कसिणखध–कृत्स्नस्कन्ध–परिपूर्णस्कन्ध । अनु० ४० ।

कसिणधवलण्डिवउजणो–कृष्णधवलप्रतिपक्षा । आव० ३६४ ।

कसिणा–यावतोऽपराधानापन्नस्तावतीना नच झोषणा आरोपणा कृत्स्नारोपणा । सम० ४७ । कृत्स्ना यत्र झोषो न क्रियते । व्य० प्र० १२४ आ ।

कसिणाओ–कृत्स्ना, सम्पूर्णा अनुपहता । आचा० ३२३ ।

कसिणे–घनमसृणानि यै सूर्यो न दृश्यते । बृ० द्वि० २४० अ ।

कसेरुग–वनस्पतिविशेष । आचा० ३४८ ।

कसेरुमती–नदीविशेष । व्य० प्र० २२७ आ ।

कसेरुया–जलरुहविशेष । प्रज्ञा० ३३ ।

कसेहि–परव्यतिरिक्त आत्मा शरीर तत् कष्टतपश्चरणादिना कृश कुरु, यदि वा "कष" कस्मै कर्म्मणेऽलमित्येव पर्यालोच्य यच्छक्नोषि तत्र नियोजयेरित्यर्थ । आचा० १९१ ।

कह–कथा वाक्यप्रबन्धरूपा । उत्त० ४२४ । कथ–केन प्रकारेण केनान्वर्थेनेति । सूर्य० २९२ ।

कहतर–कथा तरम् । आव० ५९२ उत्त० ४२५ । उच्चस्वर । बृ० प्र० २१३ अ ।

कहकह–हसितशब्द ।

कहकहक–प्रमोदभरजनितकोलाहलम् । ज० प्र० ४१९ ।

कहकहेंति–कहकहायमान–प्रहसितविशेष । प्रश्न० ५७ ।

कहग–कथक सरसकथाकथनेन श्रोतृरसोत्पत्तिकारक । ज० प्र० १२३ । कथक । अनु० ४६ ।

कहणविहि–कथनविधि, कथनप्रकार । आव० ८६२ ।

कहणविही–कथनविधि, कथनप्रकार । आव० ८०३ ।

कहणा–धर्मकथालब्धिसपन्न । ओघ० ९३ । कथना–कथनम् । आव० २३४ ।

कविसाणए–कपिशायन–मद्यविशेष । प्रज्ञा० ३६४ ।
कविसीस–कपिशीर्षक–प्राकाराग्रम् । आव० २३१ ।
कविसीसए–कपिशीर्षक–प्राकाराग्रम् । जं० प्र० ३२० ।
कविसीसग–कपिशीर्षक । ज्ञाता० ६६ । जीवा० २१६ ।
कविहसित–आगासे विकृतरूप मुख वाणरसरिसं हास करेज्ज । नि० चू० तृ० ७५ अ ।
कविहसिय–कपिहसित, यदाकाशे वानरसदृश विकृत मुख हास कुर्यात् । आव० ७५० । अकस्मान्नभसि ज्वलद्भी-मशब्दरूपम् । जीवा० २८३ । कपिहसित–अनभ्रे या विद्युत् सहसा तत् कपिहसितम् । भग० १९६ ।
कविहसिया–कपिहसितानि, अकस्मान्नभसि ज्वलद्भीमश-ब्दरूपाणि । अनु० १२१ ।
कवेलुका– । दश० १०१ ।
कवेलुय–कवेलुकम् । जं० प्र० २३ ।
कवेल्ली–लोहकटाहम् । भग० २३८ ।
कवेल्लुक–भाण्डम् । आव० ५२१ ।
कवेल्लुकापाक – । जीवा० १२४ ।
कवेल्लुय–कवेल्लुक–मण्डनपचनिका लोही । जीवा० १८० ।
कवोड–कपोत–पक्षिविशेष । पिण्ड० ७६ ।
कवोतक–कपोतक । प्रश्न० ८ ।
कवोय–कपोतक पक्षिविशेष । भग० ६६१ । कपोत–पक्षिविशेष । उत्त० ४५६ ।
कवोया–लोमपक्षिविशेष । प्रज्ञा० ४९ ।
कवोलदेसो–कपोलदेश–गण्डभाग । जीवा० २७३ ।
कव्व–काव्य–धर्मार्थकाममोक्षलक्षणपुरुषार्थप्रतिबद्धग्रन्थ–सस्कृतप्राकृतापभ्रशसङ्कीर्णभाषानिबद्ध, समविषमार्द्धसमवृ-त्तबद्धतया गद्यतया चेति, गद्यपद्यगेयवर्णपदभेदबद्ध । ठाणा० ४५० । ग्रन्थ । ठाणा० २८८ । कवेरभिप्राय । अनु० १३५ ।
कव्वग–भाजनस्यावकल्पमपवृत्य । व्य० द्वि० ३०२ आ ।
कव्वड–कुणगरो । नि० चू० द्वि० ७० आ । वाडवोपम-कूडसविखसमुब्भावियदुक्खदलव्ववहारत कव्वड । दश० चू० १५७ ।
कव्वालभयगो–तइओ भयगभेओ । नि० चू० द्वि० ४४ अ ।
कव्वालो–खितिखाणतो उड्डमादी । नि० चू० द्वि० ४४ आ ।
कशा–बन्धनविशेष । भग० १६३ । दश० २६७ ।

कष–ससार । जीवा० १५ ।
कषपट्टक–सुवर्णपरीक्षकपाषाणविशेष । जीवा० १६१ ।
कषाय–रसस्य तृतीयभेद । प्रज्ञा० ४७३ । पीतरक्तवर्णा-श्रयरञ्जनीयवस्तु । जं० प्र० १८६ ।
कषायसमुद्घात–कषायोदयेन समुद्घात । जीवा० १७ ।
कस–कश–चर्मविकार । उत्त० ३६४ । कर्षन्ति–हिंसन्ति परस्पर प्राणिनोऽस्मिन्निति कष–ससार । प्रज्ञा० २८५ । कष–चर्मदण्ड । जं० प्र० १८७ । कष–वर्ध्र । प्रश्न० १६८ । कष्यतेऽस्मिन् प्राणी पुन पुनरावृत्तिभाव-मनुभवति कषोपलकष्यमाण कनकवदिति कष ससार । उत्त० १९० । कर्म भवो वा । आव० ७७ । कषति–हिनस्ति देहिन इति कष कर्म्म । ठाणा० १९३ । कस–चर्मयष्टिका । प्रश्न० २२ । कशा–आयुष उपक्रमे द्वितीयभेद । आव० २७३ । ससार । आचा० ६८ । कश–चर्मयष्टि । उत्त० ४८ । चर्मदण्ड । जं० प्र० २३५ ।
कसट्ट–कचवर । ओघ० १८४ ।
कसट्टिया–कषपट्ट । भग० २१३ ।
कसप्पहारे–वर्ध्रताडनानि । ज्ञाता० ८७ ।
कसमाओ–कषमाय–कषमायन्ति, कष गमयन्ति । विशे० ५४३ ।
कसर–कशर–खशर । भग० ३०८ ।
कसाइज्जति–कषायन्ते । आव० १११ ।
कसाइयय–कषायितक । आव० २१६ ।
कसाईओ–कषायित । आव० ३२३ ।
कसाए–कषाय कषायोदय । प्रज्ञा० १३५ । कृषन्ति विलिखन्ति कर्मरूप क्षेत्र सुखदु खशस्योत्पादनायेति कषाया, कलुषयन्ति शुद्धस्वभाव सन्त कर्ममलिन कुर्वन्ति जीवमिति वा । प्रज्ञा० २९० । कर्षन्ति–हिंसन्ति परस्पर प्राणि-नोऽस्मिन्निति कष–ससारस्तमयन्ते–अन्तर्भूतण्यर्थत्वाद् गमयन्ति प्रापयन्ति ये ते कषाया । प्रज्ञा० २८५ । अन्न-रुचिस्तम्भनकृत्कषाय । ठाणा० २६ ।
कसाय–कषाय–प्रज्ञापनायाश्चतुर्दश पदम् । प्रज्ञा० ६ । वस्त्रादि । दश० १८० ।
कसायकलहो–कलहस्य द्वितीयो भेद । नि० चू० प्र०

मानस्नायुका–स्थूलसन्धिस्थाना च भवति इति तया जङ्घ-योरुपमानम् । अनुत्त० ४ ।

काकणि–क्षत्रियभाषया राज्यम् । विशे० ४१० ।

काकणिरयणे–चक्रवर्तिन सप्तमेकेन्द्रियरत्नम् । ठाणा० ३९८ ।

काकणी–सूक्ष्मकण्ठगीतध्वनि । ठाणा० ४७१ ।

काकतालीयम्–अवितर्कितसम्भव, न्यायविशेष । आचा० १८ ।

काकघट्ठो–काकधृष्ट । आव० ५५४ ।

काकन–पञ्चम महाकुष्ठम् । प्रश्न० १६१ ।

काकनाद–कुष्ठविशेष । आचा० २३५ ।

काकमुख–रथाग्रभाग । ज० प्र० २४१ ।

काकपद–मणिलक्षणविशेष । ज० प्र० १३८ ।

काकलि–वनस्पतिविशेष । भग० ८०३ ।

काकली–मनोज्ञगीतादि । उत्त० ६३३ । सूक्ष्मकण्ठ-गीतध्वनि । ठाणा० ४७२ ।

काकस्सर–श्लक्ष्णाश्रव्यस्वरम् । ठाणा० ३९६ । ज० प्र० ४० ।

काकिणी–राज्यम् । बृ० द्वि० १५४ अ ।

काकु– । जीवा० २६१ । प्रज्ञा० २४७ ।

काकुद–तालुक । ज० प्र० ११३ । जीवा० २७३ ।

काकुपाठ– । भग० ३३ ।

काकुय–काकुद–तालु । प्रश्न० ८२ ।

काकोदरो–काकोदर, दर्वीकरसर्पविशेष । जीवा० ३९ ।

काकोली–साधारणवनस्पतिविशेष । आचा० ५७ ।

कागंदी–काकन्दी–नगरीविशेष । खेमतेऽवि गाहावती-नगरी । अन्त० २३ । जितशत्रुराजधानी । अनुत्त० २ । भद्रसार्थवाहीस्थानम् । अनुत्त० ८ ।

कागंदीए–काकन्दीनगरी तद्भव । ज्ञाता० १६३ ।

कागजघ–जहिं मणीपढिनो तलागे तत्थ रत्ताणि जाणि-ताणि कायाणि भण्णति । नि० चू० प्र० २५४ आ ।

कागणि–काकणि–क्षत्रियभाषया राज्यम् । विशे० ४०९ ।

कागणिमस–काकणीमास श्लक्ष्णमासखण्डम् । औप० ८७ । काकणीमास–तद्देहोत्कृत्त ह्रस्वमामखण्डम् । विपा० ४७ । श्लक्ष्णखण्डपिशितम् । प्रश्न० ५६ ।

कागणिरयण–काकणीरत्नम् । चक्रिणो रत्नविशेष । ज० प्र० २३६ ।

कागणिलक्खण–द्वासप्तती कलाया द्वाचत्वारिंशत्तमा । ज्ञाता० ३८ ।

कागणी–रज्ज । नि० चू० प्र० २४३ आ । काकणी, चक्रिणो रत्नविशेष । ज० प्र० १३८ । सपादा गुञ्जा । अनु० १५५ । रुप्पमय । नि० चू० प्र० ३३० अ ।

कागणीरयणे–काकणीरत्नम्–सुवर्णाष्टकनिष्पन्नम् । अनु० १७१ ।

कागभुत्त–काकभुक्त यथा काक उच्चित्योच्चित्य विष्ठादे-र्मध्याद्वल्लादि भक्षयति, विकिरति वा काकवत्सर्वं, श्वाक्य-देव कवल प्रक्षिप्य मुखे दिशो विप्रेक्षते । ओघ० १९२ ।

कागलि–वल्लीविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

कागवन्नो–काकवर्ण–शिल्पसिद्धदृष्टान्त जितशत्रोरपर-नाम । आव० ४१० ।

कागस्सर–काकस्वर श्लक्ष्णाश्रव्यस्वरम् । अनु० १३२ । श्लक्ष्णस्वरेण काकस्वरम् । जीवा० १९४ ।

कागा–लोमपक्षिविशेष । प्रज्ञा० ४९ ।

कागिणी–काकिणि–विंशतिकपर्दका । उत्त० २७२ । चक्रवर्तिरत्नम् । उत्त० ६५०, २७६ ।

कागिणीमसग–काकिणीमासक–श्लक्ष्णमासखण्डम् । सूत्र० १२५ । श्लक्ष्णमासम् । आव० ६५१ ।

कागो–काक–वायस । आव० ८५६ ।

काङ्क्षावान्–गृद्ध–मूर्छित । आव० ५८७ ।

काच–काच–पाषाणविकार । औप० ६३ ।

काचन–बन्धनम् । ठाणा० २२२ ।

काञ्चनकाभिधान– । ठाणा ३२७ ।

काञ्चनासविधानक– । प्रश्न० ८९ ।

काञ्जिक–आरनाल । बृ० प्र० २६७ आ । सौवीरकम् । ठाणा० १४८ । अम्लम् । ठाणा० ४९२ । आरनालम् । ओघ० १५४ ।

काञ्जिकपत्र–काञ्जिकेन वाष्पितम् । बृ० प्र० २६७ आ ।

काञ्जिका–आरनालम् । ओघ० २१५ ।

काडिअ–कौट्यौ, उभयप्रान्तौ । ज० प्र० २०१ ।

काण–काण, भग्नाक्ष, स्फुटितनेत्र । दश० २१५ ।

कहरत्तो–कथासु रक्त –सक्त कथारक्त । ओघ० १२७ ।

कहल्लो–कभेल्ल –कर्पर । अन्त० १२ ।

कहा–सयमाराधनी या वाग्योगप्रवृत्ति । वृ० द्वि० ४० अ । वाइगजोगेण सयमाराहणी कहा । नि० चू० तृ० १ आ । साधूवाद जल्प वितड वा एता तिण्णिवि कहा । नि० चू० प्र० २४० अ । आख्यानकानि । सम० ११८ । वचनपद्धति, चरित्रवर्णनरूपा वा । ठाणा० १५६ । ब्रह्मचर्यगुप्तेर्भेद । आव० ५७२ । कथा–वाक्यप्रवन्ध शास्त्रम् । सम० ५५ । कथा–वार्त्ता । दश० ११४ ।

कहाहिगरणाइं–कथा–राजकथादिका–अधिकरणानि च यन्त्रादीनि कलहा वा कथाधिकरणानि । सम० ५५ ।

काहिथ–कुत्रात्र । उत्त० १६२ ।

कहिय–कथित–प्रवन्धेन प्रतिपादितम् । उत्त० ३४१ ।

कहियाइओ–कथितवान् । आव० २३७ ।

कांक्षा–ऐहलौकिकपारलौकिकेपु विषयेष्वाशसा । त०७।१८।

काचणय–यस्मादुत्पलादीनि काञ्चनप्रभाणि काञ्चननामानश्च देवास्तत्र परिवसन्ति तत काञ्चनप्रभोत्पलादियोगात् काञ्चनकाभिधदेवस्वामिकत्वाच्च स काञ्चनक । जीवा० २९१ ।

काचणिया–काञ्चनिका–राजधानीविशेष । जीवा० २९२ ।

काजिक–जहण्णेण जावे कोदवोदणो जूह, च तदुलोदक मुद्गरसो । नि० चू० प्र० ३२६ आ ।

काइआण–निकाय । ज० प्र० ७५ ।

काइओ–कायिक । आव० ७७८ ।

काइमाईया–गुच्छविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

काइय–कायिकी–प्रश्रवणम् । आव० ६३४ ।

काइयसमाहि–कायिकीसमाधि । आव० ६१८ ।

काइया–चीयत इति काय –शरीर तत्र भवा तेन वा निर्वृत्ता कायिकी, क्रियाया प्रथमो भेद । भग० १८१ । आव० ६११ । चीयते इति काय शरीर काये भवा कायेन निर्वृत्ता कायिकी । प्रज्ञा०४३५ । क्रिया –व्यापारविशेषा, तत्र कायेन निर्वृत्ता कायिकी कायचेष्टेत्यर्थ । सम०१० ।

काइयामत्तो–कायिकीमात्रकम् । आव० ६३३ ।

काईया–कायिकी । आव० ५६ ।

काउवरि–कादुम्वरि वहुवीजकवृक्षविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

काउवरिय–वृक्षविशेष । भग० ८०३ ।

काउवरो–काकोदुम्वर –खादिमवृक्षविशेष । आव० ८२८ ।

काउज्जुय–कायर्जुक –कायेन ऋजुरेव ऋजुक । उत्त० ५९० ।

काउज्जुयया–ऋजुकस्य–अमायिनो भाव कर्म्म वा ऋजुकता कायस्य ऋजुकता कायर्जुकता । ठाणा० १९६ ।

काउड्डावणे–कार्याकर्पणहेतु । ज्ञाता० १८८ ।

काउदर–काकोदर –दर्वीकरसर्पविशेष । प्रश्न० ८ ।

काउय–कपोत –वहुकृष्णरूप । प्रज्ञा० ८० ।

काउलेसा–कपोतलेश्या– कपोतवर्णा लेश्या–धूम्रवर्णा । ठाणा० १७५ ।

काउस्सग्गे–कायस्योत्सर्ग कायोत्सर्ग । आव० ७७८ ।

काऊ–लोहे धम्यमाने यादृक् कपोत –वहुकृष्णरूपोऽग्नेवर्ण । जीवा० १०३ । लेश्या कायवान् । आचा० २३१ ।

काऊअगणि–कृष्णाग्नि । सम० १३६ ।

काऊअगणिवण्णाभा–कृष्णाग्निर्लोहादीना ध्मायमानाना तद्वर्णवदाभा येषा ते कृष्णाग्निवर्णाभा । सम० १३६ ।

काए–काय –शरीर, देह, वोन्दी, चय, उपचय, सङ्घात, उच्छ्रय, समुच्छ्रय, कडेवर, भस्त्रा, तनु, पाणुरिति । आव० ७६७ । पर्याय, सामान्यरूपो निर्विशेषणो जीवत्वलक्षण विशेषरूपो नैरयिकत्वादिलक्षण । प्रज्ञा० ३७५ । अष्टाशीतौ पञ्चत्रिंशत्तमो ग्रह । ज० प्र० ५३८ । कापोतिका । वृ० द्वि० १०१ अ । काक –वायस । ज्ञाता० २०५ । कावोडी । नि० चू० प्र० १८७ अ । कवोडी । नि० चू० द्वि० १८ अ । अष्टाशीत्या पञ्चत्रिंशत्तमो महाग्रह । ठाणा० ७९ । कुहणविशेष । प्रज्ञा० ३३ ।

काओ–काय, जीवस्य विवक्षित सामान्यरूपो विशेषरूपो वा पर्यायविशेष । जीवा० १४० ।

काओअरा–दर्वीकरसर्पविशेष । प्रज्ञा० ४६ ।

काओली–साधारणवादरवनस्पतिकायविशेष । प्रज्ञा० ३४ ।

काकदी–काकन्दी–सुविधिनाथजन्मभूमि । आव० १६० ।

काकधे–अष्टाशीत्या महाग्रहे पट्त्रिंशत्तम । ठाणा० ७९ ।

काक–भिक्षाया दृष्टान्त । व्य० प्र० १६३ आ ।

काकजघा–काकजघा–वनस्पतिविशेष । सा हि परिदृश्य-

मानस्नायुका–स्थूलसन्धिस्थाना च भवति इति तया जङ्घ-योरुपमानम् । अनुत्त० ४ ।

काकणि–क्षत्रियभाषया राज्यम् । विशे० ४१० ।

काकणिरयणे–चक्रवर्त्तिन सप्तमेकेन्द्रियरत्नम् । ठाणा० ३९८ ।

काकणी–सूक्ष्मकण्ठगीतध्वनि । ठाणा० ४७१ ।

काकतालीयम्–अवितर्कितसम्भव, न्यायविशेष । आचा० १८ ।

काकघट्ठो–काकघृष्ट । आव० ५५४ ।

काकन–पञ्चम महाकुग्रहम् । प्रश्न० १६१ ।

काकनाद–कुष्ठविशेष । आचा० २३५ ।

काकमुख–रथाग्रभाग । ज० प्र० २४६ ।

काकपद–मणिलक्षणविशेष । ज० प्र० १३८ ।

काकलि–वनस्पतिविशेष । भग० ८०३ ।

काकली–मनोज्ञगीतादि । उत्त० ६३३ । सूक्ष्मकण्ठ-गीतध्वनि । ठाणा० ४७२ ।

सर–श्लक्ष्णाश्रव्यस्वरम् । ठाणा० ३९६ । ज० प्र० ४० ।

काकिणी–राज्यम् । बृ० द्वि० १५४ अ ।

काकु– । जीवा० २६१ । प्रज्ञा० २४७ ।

काकुद–तालुक । ज० प्र० ११३ । जीवा० २७३ ।

काकुपाठ– । भग० ३३ ।

काकुय–काकुद–तालु । प्रश्न० ८२ ।

काकोदरो–काकोदर, दर्वीकरसर्पविशेष । जीवा० ३९ ।

काकोली–साधारणवनस्पतिविशेष । आचा० ५७ ।

कागदी–काकन्दी–नगरीविशेष । खेमतेऽवि गाहावती-नगरी । अन्त० २३ । जितशत्रुराजधानी । अनुत्त० २ । भद्रसार्थवाहीस्थानम् । अनुत्त० ८ ।

कागदीए–काकन्दीनगरी तद्भव । ज्ञाता० १६३ ।

कागजंघ–जहिं मणीपडितो तलागे तत्थ रत्ताणि जाणि-ताणि कायाणि भण्णति । नि० चू० प्र० २५४ आ ।

कागणि–काकणि–क्षत्रियभाषया राज्यम् । विशे० ८०६ ।

कागणिमस–काकणीमास श्लक्ष्णमासखण्डम् । औप० ८७ । काकणीमास–तद्देहोत्कृत्त ह्रस्वमासखण्डम् । विपा० ४७ । श्लक्ष्णखण्डपिशितम् । प्रश्न० ५६ ।

कागणिरयण–काकणीरत्नम् । चक्रिणो रत्नविशेष । ज० प्र० २३६ ।

कागणिलक्खण–द्वासप्तती कलाया द्वाचत्वारिंशत्तमा । ज्ञाता० ३८ ।

कागणी–रज्ज । नि० चू० प्र० २४३ आ । काकणी, चक्रिणो रत्नविशेष । ज० प्र० १३८ । सपादा गुञ्जा । अनु० १५५ । रुप्पमय । नि० चू० प्र० ३३० अ ।

कागणीरयणे–काकणीरत्नम्–सुवर्णाष्टकनिष्पन्नम् । अनु० १७१ ।

कागभुत्त–काकभुक्त यथा काक उच्चित्योच्चित्य विष्ठादे-र्मध्याद्वल्लादि भक्षयति, विकिरति वा काकवत्सर्व, काकव-देव कवल प्रक्षिप्य मुखे दिशो विप्रेक्षते । ओघ० १६२ ।

कागलि–वल्लीविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

कागवन्नो–काकवर्ण–शिल्पसिद्धदृष्टान्त जितशत्रोरपर-नाम । आव० ४१० ।

कागस्सर–काकस्वर श्लक्ष्णाश्रव्यस्वरम् । अनु० १३२ । श्लक्ष्णस्वरेण काकस्वरम् । जीवा० १६४ ।

कागा–लोमपक्षिविशेष । प्रज्ञा० ४६ ।

कागिणी–काकिणि–विंशतिकपर्दका । उत्त० २७२ । चक्रवर्तिरत्नम् । उत्त० ६५०, २७६ ।

कागिणीमसग–काकिणीमासक–श्लक्ष्णमासखण्डम् । सूत्र० १२५ । श्लक्ष्णमासम् । आव० ६५१ ।

कागो–काक–वायस । आव० ८५६ ।

काङ्क्षावान्–गृद्ध–मूर्छित । आव० ५८७ ।

काच–काच–पाषाणविकार । औप० ६३ ।

काचन–बन्धनम् । ठाणा० २२२ ।

काञ्चनकाभिधान– । ठाणा ३२७ ।

काञ्चनासविधानक– । प्रश्न० ८६ ।

काञ्जिक–आरनाल । बृ० प्र० २६७ आ । सौवीरकम् । ठाणा० १४८ । अम्लम् । ठाणा० ४६२ । आरनालम् । ओघ० १५४ ।

काञ्जिकपत्र–काञ्जिकेन बाष्पितम् । बृ० प्र० २६७ आ ।

काञ्जिका–आरनालम् । ओघ० २१५ ।

काडिअ–कौट्यौ, उभयप्रान्तौ । ज० प्र० २०१ ।

काण–काण, भग्नाक्ष, स्फुटितनेत्र । दश० २१५ ।

आच० ३८६ ।

काणओ–चक्षुर्विकल । वृ० द्वि० ११६ अ ।

काणक्कयी–बहुमूल्यमपि अल्पमूल्येन चौराहृत काणक हीन कृत्वा क्रीणातीत्येवशील । प्रश्न० ५८ ।

काणक्रयेण– । उपा० ७ ।

काणग–व्याधिविशेषात्सच्छिद्रम् । आचा० ३४६ ।

काणग–काणक–चोरितमहिष । व्य० प्र० २३१ आ ।

काणगमहिसो–जो चारिओ म काणगमहिसो । नि० चू० द्वि० ४३ आ ।

काणच्छि–काणाक्ष । नि० चू० प्र० २५७ अ । काणाक्ष । आव० ३१८ । काणाक्षि । आव० ३१८ ।

काणण–सामान्यवृक्षजातियुक्तानि नगराभ्यर्णवर्त्तीनि । स्त्रीणा पुरुपाणा वा केवलाना परिभोग्यानि वा । येभ्य परतो भूधरोऽटवी वा तानि सर्वेभ्योऽपि वनेभ्य पर्यन्त-वर्त्तीनि वा । शीर्णवृक्षकलितानि वा । अनु० १५६ । स्त्रीपक्षस्य पुरुपपक्षस्य चैकतरस्य भोग्येपु वनविशेपेपु अथवा–यत्परत पर्वतोऽटवी वा भवति तानि काननानि । ज्ञाता० ६७ । नगराद् दूरवर्त्तिवनखण्ड । भग० ४८३ । कानन–बृहद्वृक्षाश्रयैर्वनम् । उत्त० ४५१ । सामान्य-वृक्षवृन्द नगरासन्न काननम् । राज० ११२ । कानन सामान्यवृक्षवृन्द नगरासन्नम् । जीवा० २५८ । सामान्य-वृक्षोपेत नगरासन्न च । प्रश्न० १२७ । सामान्यवृक्षोपे-तनगरासन्नवनविशेप । प्रश्न ७३ । दूरवर्त्तिवनम् । आव० ५६८ । सामान्यवृक्षसयुक्त नगरासन्न वनम् । भग० २३८ । सामान्यवृक्षवृन्दयुक्तानि नगरासन्नानि कान-नानि । ज्ञाता० ३६ ।

काणय–काणक–हीनम् । प्रश्न० ५८ ।

काणव–वनस्पतिविशेप । भग० ८०३ ।

काणिट्ट–लोहमय्य इप्टका । व्य० द्वि० १०६ आ । पापाणमय्य पक्वेप्टिका वा वलिका महत्यश्च कणिका, तन्मयगृहकारापक । वृ० तृ० ५० आ ।

काणियं–काणितम् । आव० ३६६ । अक्षिरोग । आचा० २३३ ।

काणो–काण–दीपकाण, फरल । प्रश्न० २५ ।

काण्ड–धनु । भग० ६३ ।

काण्डकरण–उपकरणविशेषरूपम् । विशे० १२५६ ।

कातिता–कायिकी, कायचेष्टा । ठाणा० ३१७ ।

कातिते–कायिक–शारीरिकम् । इडापिङ्गलादि प्राणत-त्वम् । ठाणा० ४५२ ।

कादवक–कादम्बा, हमविशेषा । प्रश्न० ८ ।

कादम्बा–गन्धर्वभेदविशेप । प्रज्ञा० ७० ।

कादूसणिया–कम्–आत्मान दूपयति तमस्कायपरिणा-मेन परिणमनात् कदूपणा सैव दूपणिका । भग० २६६ ।

कानन–अरण्यम् । दश० १४७ ।

काननद्वीप–जलपत्तनम् । उत्त० ६०५ ।

कापालिक–दृप्टान्तविशेष । नि० चू० प्र० १८० अ । चरगविसेसो । नि० चू० तृ० ३१ अ ।

कापालिका–अस्थिका । व्य० प्र० २०६ अ ।

कापिशायित–मद्यविशेप । जीवा० २६५ ।

कापिशायण–कापिशयन–मद्यविशेष । जीवा० ३५१ ।

कापुरिसा–कापुरुपा, कुत्सितनरा । ज्ञाता० ५० ।

कापोती–भारकाय, क्षीरभृतकुम्भद्वयोपेता कापोती भण्यते। आव० ७७० ।

काम–शब्दरूपगन्धा । आव० ८२५ । काम्यमानत्वात् कामा–मनोज्ञशब्दादय । उत्त० ३१८ । विपया । उत्त० २७७ । स्त्रीसग । उत्त० २४३ । मैथुनसेवा । जीवा० १७३ । मनोज्ञशब्दादिक । उत्त० १८८ । लोमपक्षिवि-शेप । जीवा० ४१ । इच्छानङ्गरूप काम । आचा० ८६ । इच्छाकाम–अप्राप्तवस्तुकाङ्क्षारूप । उत्त० ६६४ । स्वेच्छा । प्रज्ञा० ६६ । इच्छा । आव० ३६५ । रोग । दश० ८६ । वाञ्छामात्रम् । भग० ८६ । मदनाभिलाप । ठाणा० २६१ । इच्छा–अनुमती वा । नि० चू० प्र० ७६ अ । अभिधारियो–अनुमयो वा । नि० चू० प्र० १४ आ । अवधृतार्थे द्रप्टव्य । नि० चू० प्र० २३३ अ० । काम–अनुमतम् । आव० ५२७ । सम्मतम् । पिण्ड० ४५ । अभ्युपगम । सूत्र० ५३ । विमानविशेप । जीवा० १३८ । तवेच्छया । आवा० ४०३ । कामशब्द–मकरध्वजे अवधृतौ च । व्य० प्र० १४५ अ । कामौ–शब्दरूपे । उपा० ८ । काम–इच्छा-मदनभेदभिन्नो विपय । आव० ६६२ ।

कामकत–कामकान्त–विमानविशेष । जीवा० १३८ ।

कामकमा–काम–अभिलाषस्तेन क्रामन्तीति कामक्रमा । उत्त० ४१० ।

कामकहा–कामकथा–रूप सुन्दर, वयश्चोदग्र, वेष उज्वल, दाक्षिण्य, मादव, शिक्षित च विषयेषु, शिक्षा च कलासु दृष्टमद्भूतदर्शनमाश्रित्य श्रुत चानुभूत च सस्तव परिचयश्चेति कामकथा । दश० १०६, १०७ ।

कामकामे–कामकाम–कामेन–स्वेच्छया कामो–मैथुनसेवा यस्य स–अनियतकाम इति । प्रज्ञा० ९६ ।

कामकूड–कामकूट–विमानविशेष । जीवा० १३८ ।

कामगद्दहो–कामगर्दभ–मैथुने गर्दभ इवात्यन्तासक्तो जन । पिण्ड० १३१ ।

कामगम–कामगम–विमानविशेष । औप० ५२ । कामगम–स्वेच्छाचारी । प्रज्ञा० ९६ । कामगम–यानविमानविकुर्वको देवविशेष । ज० प्र० ४०५ ।

कामगुण–काम्यन्त इति कामा–शब्दरूपरसगन्धस्पर्शास्त एव स्वस्वरूपगुणबन्धेहेतुत्वाद् गुणा कामगुणा । आव० ६१५ । कामस्य–मदनाभिलाषस्य अभिलाषमात्रस्य वा सम्पादका गुणा–धर्म्मा पुद्गलाना, काम्यन्त इति कामा ते च ते गुणाश्चेति वा कामगुणा । ठाणा० २९१ । शब्दादय । प्रश्न० ९७ । काम्यन्ते–अभिलाषन्ते इति कामास्ते च ते गुणाश्च पुद्गलधर्मा–शब्दादय इति कामगुणा, कामस्य वा मदनस्योद्दीपका गुणा कामगुणा शब्दादय इति । सम० ११ । कामगुणम् । आव० २०० । कामगुण । मकरकेतुकार्यम् । अब्रह्मणस्त्रिशत्तम नाम । प्रश्न० ६६ । आचा० ९९ । भग० ६६४ ।

कामजल–स्नानपीठम् । आचा० ३६७ । ण्हाणपीढ । नि० चू० द्वि० ८३ आ ।

कामजाए–मनोज्ञशब्दादीना प्रकार समूहो वा । उत्त० २९१ ।

कामज्झय–कामध्वज, विमानविशेष । जीवा० १३८ ।

कामज्झया–कामध्वजा–वणिग्ग्रामे गणिका । विपा० ४५ ।

कामड्ढितगणे–महावीरस्य नवगणेषु सप्तम । ठाणा० ४५१ ।

कामत्थिआ–कामार्थिन मनोज्ञशब्दरूपार्थिन । ज० प्र० २६७ । शब्दरूपार्थिन । ज्ञाता० ५८ ।

कामदेव–उपासकदसाया द्वितीयमध्ययनम् । उपा० १ । येन श्रुते सामायिकमवाप्तम् । आव० ३४७ ।

कामध्वजगणिका–गणिकाविशेष । ठाणा० ५०७ ।

कामप्पभ–कामप्रभ विमानविशेष । जीवा० १३८ ।

कामफासे–कामस्पर्श–अष्टाशीतौ ग्रहे सप्तचत्वारिंशत्तम । ज० प्र० ५३५ ।

कामभोग–काम्यन्त इति कामा, भुज्यन्त इति भोगा, ततश्च कामाश्च ते भोगाश्च कामभोगा–अभिलषणीयशब्दादय, यद्वा कामौ च शब्दरूपाख्यौ भोगाश्च स्पर्शरसगन्धाख्या कामभोगा । उत्त० २४३ । काम–इच्छा भोगा शब्दाद्यनुभवा कामप्रतिबद्धा वा भोगा कामभोगा । आव० ३६५ । कामेषु–स्त्रीसङ्गेषु, भोगेषु धूपनविलेपनादिषु स । उत्त० २४३ । कामौ च शब्दरूपलक्षणौ भोगाश्च गन्धरसस्पर्शा कामभोगा, अथवा काम्यन्त इति कामा–मनोज्ञास्ते च ते भुज्यन्त इति भोगा–शब्दादय ते कामभोगा । ठाणा० १४३ । कामभोग–शब्दादिभोगो मदनसेवा वा । औप० ४३ । भग० ६२५ । कामौ च शब्द रूपे भोगाश्च गन्धरसस्पर्शा कामभोगा, अथवा काम्यन्त इति कामा मनोज्ञा ते च ते भुज्यन्त इति भोगाश्च शब्दादय इति कामभोगा । ठाणा० ९९ । कामभोग, मदनकामप्रधान शब्दादिविषय विपाककटुश्च । दश० २७२ ।

कामभोगतिव्वाभिलासे–काम्यन्त इति कामा शब्दरूपगन्धा भुज्यन्त इति भोगा–रसस्पर्शा कामभोगेषु तीव्राभिलाष तदध्यवसायित्व कामभोग तीव्राभिलाष । आव० ८२५ ।

कामभोगमारो–कामभोगै सह मारो–मदन मरण वा कामभोगमार–अब्रह्मण एकविंशतितम नाम । प्रश्न० ६६ ।

कामभोगरसगिद्धो–कामभोगरसगृद्ध–कामभोगेषु अभिहित स्वरूपेषु रस–अत्यन्तासक्तिरूपस्तेन गृद्धास्तेष्वभिकाङ्क्षावान् । उत्त० २९५ ।

कामभोगाससप्पओगे–कामभोगाशसाप्रयोग–कामभोगाभिलाषप्रयोग । आव० ८३९ ।

काममहावण–वनविशेष । भग० ६७५ ।

काममहावणे–काममहावन–वाणारस्या चैत्यविशेष । अन्त० २५ । ज्ञाता० २५१ ।

कामरए-कामलक्षण रज कामरज । कामरत । कामानुराग । भग० ४८३ ।

कामरुवविउव्विणो-कामरूपविकरणा, यथेष्टरूपाभिनिर्वृत्तनशक्तिसमन्विता । उत्त० १८७ ।

कामरुविणो-कामरूपिण -काम -अभिलापस्तेन रूपाणि कामरूपाणि तद्वन्त -विविधवैक्रियशक्त्यन्विता । उत्त० २५२ ।

कामल-और्णिक, वस्त्रम् । व्य० द्वि० १९२ अ ।

कामलालसा-विपयलम्पटा । उत्त० ५३० ।

कामलेस-कामलेश्य-विमानविशेष । जीवा० १३८ ।

कामवन्न-कामवर्ण-विमानविशेप । जीवा० १३८ ।

कामविणए-शब्दादिविपयसम्पत्तिनिमित्त तथा तथा प्रवर्तन कामविनय । उत्त० १७ ।

कामवृक्ष.-वृक्षोपरिजातो वृक्ष । सूत्र० ३५२ ।

कामसमणुन्ने-कामसमनोज्ञ कामा -इच्छामदनरूपा सम्यग् मनोज्ञा यस्य स, अथवा सह मनोज्ञैर्वर्त्तत इति समनोज्ञ, कामैं सह मनोज्ञ कामसमनोज्ञ, यदिवा कामान् सम्यगनु-पश्चात् स्नेहानुवन्धाज्जानाति सेवत इति कामसमनुज्ञ । आचा० १२५ ।

कामसिंगारं-कामशृङ्गार-विमानविशेष । जी० १३८ ।

कामसिट्ठ-कामशिष्ट-विमानविशेष । जीवा० १३८ ।

कामा-काम्यन्त इति कामा स्त्रीगात्रपरिष्वङ्गादय । सूत्र० २९५ । इच्छामदनरूपा ,गन्धालङ्कारवस्त्रादिरूपा वा । सूत्र० १८४ ।

कामावत्त-कामावर्त-विमानविशेप । जीवा० १३८ ।

कामावसयिता- । सूत्र० १८४ ।

कामासंसपओग-कामाशसाप्रयोग -शब्दादावभिलापकरण । ठाणा० २७५ ।

कामिंजुया-लोमपक्षिविशेप । प्रज्ञा० ४९ ।

कामिकतीर्थं-लौकिकतीर्थम् । विशे० ४१० ।

कामियसर-सर विशेप । वृ० प्र० ४७ आ ।

ी-पचविसया कामेतित्ति कामी । नि० चू० द्वि० १६० अ ।

कामे-कामयते-सेवते । दश० १९८ ।

कामेयगो-लोमपक्षिविशेष । जीवा० ४१ ।

कामोत्कोचकारि- । प्रश्न० १४१ ।

कामोत्तरावडिसए-कामोत्तरावतसक, विमानविशेष । जीवा० १३८ ।

काम्पिल्य-अङ्गदेशे नगरी । ज्ञाता० १२५ । पञ्चाला यत्र काम्पिल्य-नगरम् । ज्ञाता० १२५ ।

काम्पिल्यपुर-द्रुपदराजधानी । प्रश्न० ८७ ।

कायंदी-काकन्दी, पुरुषपुण्डरीकवासुदेवनिदानभूमि । आव० १६३ । नगरीविशेष । भग० ५०१ ।

काय-जीवस्य निवासात् पुद्गलाना चिते पुद्गलानामेव केषाञ्चित् शरणात्, तेपामेवावयवसमाधानात् काय -शरीरम् । आव० ४५६ । भूमिस्फोटकविशेप । आचा० ५७ । औदारिकादित्रय घातिचतुष्टय वा, अथवा-चीयत इति काय । आचा० २५८ । प्रचय । ठाणा० २१७ । निकाय । उत्त० ६९० । महाकाय । सूत्र० २७७ । काय -राशि । प्रदेशराशि । भग० १४८ । निजदेह । आव० ५४७ । कापोती, यया स्कन्धारुढया पुरुपा पानीय वहन्ति । पिण्ड० ३६ । चीयत इति काय निकाय इति । उत्त० १८२ । गण निकाय स्कन्ध वर्ग राशि । विशे० ४१६ । काग, काकविद्या । आव० ३१८ । गण, निकाय स्कन्ध वर्ग राशि पुञ्ज पिण्ड निकर -सङ्घात आकुल समूह । विशे० ४२६ । कायिकाभूमि गृहस्थसवद्धा पश्यति । ओघ० ५६ । निकाय, पृथिव्यादिसामान्यरूप । ठाणा० ६७ । औदारिकादि शरीर पृथिव्यादिपट्कायान्यतरो वा । भग० ३४७ । वसो । दश० चू० १३१ । द्विपदादीना प्रतिरूपम् । वृ० तृ० ६८ आ ।

कायकाल -कायस्थिति । ठाणा० ३ ।

कायकिलेसो-कायक्लेश -वाह्यतपो विशेप । वीरासनादिभेदरूप । दश० २९ । वाह्यतप पञ्चमभेद । भग० ९२१ ।

कायकोक्कुईया-कायकौकुच्यम्, यत्स्वयमहसन्नेव भ्रूनयनवदनादि तथा करोति यथाऽन्यो हसति । उत्त० ७०९ ।

कायकोडिया-काचो-भारोद्वहन तस्य कोटी-भाग काचकोटी तथा ये चरन्ति काचकोटिका । ज्ञाता० १५० ।

'-काचक-कचकवृक्षफलम् । आव० ५३० ।

कायगुत्ती–गमणागमणपचलणादाणण्णसणप्फदणादिकिरिया णगोवण कायगुत्ती । नि० चू० प्र० १७ अ ।

कायगुप्ति–शयनासनादाननिक्षेपस्थानचङ्क्रमणेषु कायचेष्टा-नियम । तत्त्वा० ९–४ ।

कायगो–कायक । आव० ९७ ।

कायजोग–काययोग –औदारिकादिशरीरयुक्तस्यात्मनो वीर्य-परिणतिविशेष । आव० ६०६ ।

कायछक्क–कायषट्क कायाना पृथिव्यादीना षट्क । सम्य-गनुपालनविषयतया ऽनगारगुणा । आव० ६६० ।

कायट्ठिई–कायो नाम जीवस्य विवक्षित सामान्यरूपो विशेषरूपो वा पर्यायविशेषस्तस्मिन् स्थिति कायस्थिति, यस्य वस्तुनो येन पर्यायेण जीवत्वलक्षणेन पृथिवीकायादि-त्वलक्षणेन वाऽऽदिश्यते व्यवच्छेदेन यद्भवन सा । जीवा० १४० ।

कायट्ठिति–काये–निकाये पृथिव्यादिसामान्यरूपेण स्थिति – कायस्थिति असङ्ख्योत्सर्पिण्यादिका । सप्ताष्टभवग्रहणरूपा । ठाणा० ६६ । काय इव काय । तत्र सामान्यरूपो निर्वि-शेषणो जीवत्वलक्षण, विशेषरूपो नैरयिकत्वादिलक्षण-स्तस्य स्थिति -अवस्थान कायस्थिति । सामान्यरूपेण विशे-षरूपेण वा पर्यायेणादिष्टस्य जीवस्य यदव्यवच्छेदेन भवन सा । प्रज्ञा० ३७५ ।

कायठिई–कायस्थिति –काय इति पृथिवीकायस्तस्मिन् स्थिति ततोऽनुद्वर्तनेनावस्थानम् । उत्त० ६६० । आचा० ८८ । कायकाल । ठाणा० ३ । कायस्थिति –प्रज्ञापनायामष्टा-दश पदम् । भग० ३५७ । प्रज्ञा० ६ । जीवा० १४१ ।

कायणुवाए–जहा दगतीरे अमनमनातिमेनु कायगुराए । नि० चू० तृ० १४८ आ ।

कायतिगिच्छा–कायस्य–ज्वरादिरोगग्रस्तस्य चिकित्साप्रति-पादक तन्त्र कायचिकित्सा । ठाणा० ४२७ ।

कायदुक्कड–कायदुष्कृत –आसन्नगमनादिनिमित्ता । आव० ५४८ ।

कायदुप्पणिहाणे–कायदुष्प्रणिधानम्–कृतसामायिकस्याप्रत्यु-पेक्षितादिभूतलादौ करचरणादीना देहावयवानामनिभृतस्था-पनम् । आव० ८३४ ।

कायपरित्तो–कायपरीत्त प्रत्येकशरीरी । जीवा० ४४६ ।

कायपरीते–कायपरीत य प्रत्येकशरीरी स । प्रज्ञा० ३९४ । प्रत्येकशरीरी । प्रज्ञा० १३९ ।

कायबलिआ–कायबलिका -क्षुधादिपरीषहेष्वग्लानीभवत्का-या । औप० २८ ।

कायबलिय–कायबलिका परीषहापीडितशरीर । प्रश्न० १०५ ।

कायभव–काये–जनन्युदरमध्यव्यवस्थितनिजदेह एव यो भव जन्म स कायभव । भग० १३३ ।

कायभावो–काचभाव –काचधर्म । आव० ५२१ ।

कायमओ–काचमय । आव० ५५९ ।

कायमणिआ–काचमणि–काय । आव० ७६६ ।

कायमणियओमीसे– । ओघ० २२३ ।

कायमणीय–काचमणिक –कुत्सित काचमणि । आव० ५२१ ।

कायमाण–कायमानम् । ओघ० ४६ ।

कायमाणमडवो– नि० चू० प्र० २३० अ ।

काययोग–औदारिकादिशरीरयुक्तस्यात्मनो वीर्यपरिणति-विशेष । आव० ५८३ ।

कायरए–आजीविकोपासक । भग० ३७० ।

कायरा–कातरा –परीषहोपसर्गोपनिपाते सति विषयलो-लुपा वा । आचा० १५३ । चित्तावष्टम्भवर्जिता । ज्ञाता० ५२ ।

कायरिए–वरुणस्य पुत्रस्थानीयो देव । भग० १९९ ।

कायरिया–कातरिका–माया । सूत्र० ५७ ।

कायवरो–काचवर –प्रधानकाच । प्रश्न० १५३ ।

कायविसए–कायाणि–कायविसए । नि०चू०प्र०२५४आ

कायसंकिलेसे–कायमाश्रित्य सङ्क्लेश –असमाधि काय-सङ्क्लेश । ठाणा० ४८९ ।

कायसंवेहो–विवक्षितकायात्–कायान्तरे तुल्यकाये वा गत्वा पुनरपि यथासम्भव तत्रैवागमनम् । भग० ८०९ ।

कायसंसिओ–कायससृत –देहसङ्गत । दश० १२७ ।

कायसुखता–काये सुख–यस्यासौ कायसुख–तद्भाव काय सुखता । प्रज्ञा० ४६२ ।

कायस्वभाव–अनित्यता दुःखहेतुत्व निःसारता अशुचि-त्वम् । त० ७–७ ।

कायाणि–जहिं मणी पडितो तलागे तत्थ रत्ताणि जाणि

ताणि कायाणि भण्णति । दुते वा काये रत्ताणि कायाणि । नि० चू० प्र० २५४ आ । क्वचिद्देशे इन्द्रनीलवर्ण – कर्पासो भवति तेन निष्पन्नानि कायकानि । आचा० ३९४।

कायापरीत्त.–साधारणशरीरी । जीवा० ४४६ ।

कायिका–उच्चारभूमि । आव० ७८१ । प्रश्रवणम् । आव० ७९८ ।

कार–राजदेय द्रव्यम् । भग० ४८१ ।

कारंडग–कारण्डक –पक्षिविशेष । प्रश्न० ८ ।

कार–वैयावृत्यादिकरण । वृ० प्र० ४३ अ, ५२ आ ।

कारओ–कारक । विधायक । उत्त० ३१३ ।

कारक–हेतु । न० १६५ । सम्यक् । विशे० १०६४ कर्तारम् । वृ० प्र० १५८ आ । हेतुर्व्यञ्जको वा। आव० ५६७ । सिप्पी ।

कारग–करोतीति कारक उदाहरणम् । ओघ० ११ । साधु । सम्यग्दर्शनाद्यनुष्ठाना । आचा० ४१६ । क्रिया। वृ० प्र० ५२ आ ।

कारगसुत्तं–कारकसूत्र । सूत्रस्य द्वितीयो भेद । वृ० प्र० ५० आ ।

कारगारी–अपराधी । दश० ९८ ।

कारण–हेतु, निमित्तम् । विशे० २७९ । उपपत्तिमात्रम् । भग० ११६ । आव० ६२ । अन्यथाऽनुपपत्तिमात्रम् । उत्त० ३०८। उपपत्तिमात्र दृष्टान्तादिरहितम् । उत्त० ३०८ । परोक्षार्थनिर्णयनिमित्तमुपपत्तिमात्र । ठाणा० ४९३ । कारण नामालम्बन । प्रज्ञा० ६७ । हेतु – उपपत्तिमात्रम् । विशे० ४९३ । प्रयोजनम् । विशे० ८७६ । आव० ५२४ । करोतीति कारण, कार्यं निर्वर्त्तयतीति । आव० २७७ । स्वेन व्यापारेण कार्यं यदुपयुज्यते तत्करण । आव० २७८ । बाह्यकारणम् । प्रज्ञा० २२३ । करोतीति कारण–परोक्षार्थनिर्णयनिमित्तमुत्पत्तिमात्रम् । ठाणा० ४९२ । कारण–ज्ञानादिव्यतिरिक्त कारणमाश्रित्य वन्दते तत् कृतिकर्मणि पञ्चदशो दोष । आव० ५४४ । इष्टार्थाना हेतु–कृषि पशुपोषणवाणिज्यादि । भग० ७३९। कारण–हेतु । प्रज्ञा० १८० ।

कारणजाए–कारणजात–कारणप्रकार । उत्त० २३५ ।

कारणपडिसेवि–अकृत्य यतनया प्रतिसेवते इत्येवशील कारणप्रतिसेवी । व्य० प्र० ८ अ ।

कारणभूता–प्रमाणभूता । नि० चू० प्र० ३२० अ ।

कारणविणासाभाव–कारणविनाशाभाव । दश० १२८ ।

कारणविभागाभाव–कारणविभागभाव कारणविभागाभावात् न खलु जीवस्य पटादेरिव तन्त्वादिकारणविभागोऽस्ति कारणाभावादेव । दश० १२८ । कारणविरुद्ध-कार्योपलम्भानुमानम् । ठाणा० २६३ । कारणविरुद्धोपलम्भानुमानम् । ठाणा० २६२ ।

कारणसूई– या –परव्यपरोपणादिकारणमुद्दिश्य कारयित्वा परस्य नखमूलादौ कुट्यन्ते ता कारणसूच्य । वृ० द्वि० २२३ आ ।

कारणा–यातना । व्य० प्र० २१० अ ।

कारणाइ–कारणानि–विवक्षितार्थनिश्चयस्य जनकानि । ज्ञाता० ११० ।

कारणानि–ज्ञातानि । सम० ११८ ।

कारणानुपलम्भानुमानम्–न्यायविशेष । ठाणा० २६३ ।

कारणिक–विवादनिर्णायक । अनु० ३१ । विशे० ६२३ । राजपुरुषा । नदी० १५२, १५६ । विशे० ४१६ ।

कारणिय–कारणिक, न्यायकर्त्ता । आव० ७१८ । गुरु-वैयावृत्यादिना व्यापृत । आव० ७७८ । न्यायालय-सत्क पुरुष । उत्त० ३०१ ।

कारणिया–कारणिका । आव० ९९ । कारणिका । नि० चू० प्र० ११२ अ । नि० चू० प्र० १३५ अ ।

कारणे–वेदनादिकारणमन्तरेण भुञ्जानस्य कारणदोष । ग्रासैषणादोषे पचमो दोष । आचा० ३५१ ।

कारणेसु–कारणेषु–सिसाधयिषितप्रयोजनोपायेषु विषयभूतेषु ये मन्त्रादयो व्यवहारान्तास्तेषु । विपा० ४० ।

कारय–यस्मिन् सम्यक्त्वे सति सदनुष्ठान श्रद्धत्ते, सम्यक् करोति च तत् कारयति सदनुष्ठानमिति कारक सम्यक्त्वमुच्यते । विशे० १०६४ ।

कारवाहिआ–कर–राजदेय द्रव्य वहन्तीत्येवशीला कारवाहिनस्त एव कारवाहिका कारवाधिता वा । ज० प्र० २६७ ।

कारवाहिया–करपीडिता, नृपाभाव्यवाहिनो वा। औप० ७३ । कार–राजदेय द्रव्य वहन्तीत्वशीयेला कारवा-

हिनस्त एव कारवाहिका, करवाघिता वा। भग० ४८१।

काराग्रहम्–कारागारम्। उत्त० ५५५।

कारापक–करण कारस्त कारयति कारापयतीति णके च कारापक। आव० २६०।

कारापणे– । नि० चू० प्र० १०३ आ।

कारियणिमित्तकरण–कारितनिमित्तकरणम्–सम्यगर्थपद-मध्यापितमस्माक विनयेन विशेपेण वर्त्तितव्य, तदनुष्ठान च कर्त्तव्यम्। दश० ३१।

कारियनिमित्तकरण–सम्यक् शास्त्रपदमध्यापितस्य विशेपेण विनये वर्त्तन तदार्थानुष्ठानम्। सम० ६५।

कारियल्लई–वल्लीविशेप। प्रज्ञा० ३२।

कारी–अपराधी। आव० ३४६। कर्त्तार। अपराधिन। आव० ६७२। अपराधिनी। दश० ६६।

करीषाग्निसमान–फुम्फुकाग्निसमान परिमलमदन-दाहरूप। जीवा० ६५।

कारुअवण्णे– । ज० प्र० १६४।

कारुइज्ज–कारुक, कारुकजातिविशेष। करुटच्छिम्पकादिषु भवा कारुकीया। प्रश्न० ३०।

कारुण्य–अनुकपा, दीनानुग्रह। त० ७–६।

कारुय–कारुक–वरुटच्छिम्पकादिक। प्रश्न ३०।

कारेल्लक–वल्लीविशेषफलम्। अनुत्त० ६।

कारोडिआ–कारोटिका, कापालिका, ताम्बूलस्थगी-वाहका वा। ज० प्र० २६७। कापालिका। भग० ४८१।

कारोडिय–कारोटिक। आव० १६१। कारोडिक। कापालिक। ताम्बूलस्थगिकावाहको वा। औप० ७३।

कार्तिक–रोहितकेशचियभिन्नो मुनि। स०।

कार्तिकश्रेष्ठी–शक्रस्य पूर्वभव। भग० ३२२।

कार्पटिक–दीनकृपण। दश० २६०। पिण्ड० १४०।

कार्मग्रन्थिकपरिभाषा– । उत्त० ५८६।

कार्मग्रन्थिका– । प्रज्ञा० ३६१।

कार्मण–लक्षणत सवत्सर कार्मण, यस्य ऋतुसवत्सर सावनसवत्सरश्चेति पर्यायौ। ठाणा० ३४५।

कार्मणबन्धननाम–यदुदयात् कार्मणपुद्गलाना गृहीताना गृह्यमाणाना च परस्पर सम्बन्धस्तत्कार्मणबन्धननाम। प्रज्ञा० ४७०।

कार्मणसङ्घातनाम–यदुदयवशात् कार्मणशरीररचनानु-कारिसङ्घातरूपा (परिणति) जायते तत्। प्रज्ञा० ४७०।

कार्य–नेम (देशी)। पिण्ड० २८।

कार्यकारणभाव–न्यायविशेप। आचा० ६६।

कार्यनिमित्तको विनय–सग्रहमुपसग्रह वा मे करिष्यतीत्येव बुद्धचा यो विनय क्रियते स। विनयस्य तृतीयो भेद। व्य० प्र० ७० आ।

कार्यव्यासङ्गात्–न्यायविशेप। आचा० १०६।

कार्यानुपलब्ध्यनुमानम्–न्यायविशेप। ठाणा २६३।

कार्यानुमानम्–न्यायविशेप। ठाणा० २६२।

कार्षापण–माप। प्रज्ञा० २५७। उत्त० २७६।

कालजरवत्तिणी–कालञ्जरवर्त्तिनी–गङ्गामहानद्याविन्ध्यस्य चान्तरा अटवी। आव० ३४८।

कालबवालुआ–कदबवालुका–कदम्बवालुकानदीपुलिनम्। उत्त० ४५६।

काले–काल–दक्षिणनिकाये प्रथमो व्यन्तरेन्द्र। भग० १५७। तृतीयप्रथमप्रहरादि। विपा० ६६। पिशाचेन्द्र। जीवा० १७४। तमतमापृथिव्या प्रथमो महानिरय। प्रज्ञा०८३। सप्तम परमाधार्मिक। सूत्र० १२४। आव० ६५०। पञ्चदशसु परमाधार्मिकेषु सप्तम। उत्त०६१४। कालानुयोग। गणितानुयोगश्चेत्यर्थ। दश०४। तृतीया पौरुषी। बृ० प्र० ६८ अ। अधिकृतावसर्पिणीचतुर्थ-भागरूप। सूर्य० १। अष्टाशीत्या महाग्रहे षट्पञ्चा-शत्तम। ज० प्र० ५३५। कलन–काल कलासमूहो वा। आव० ४६५, ५६३। श्वा। स्वाध्यायकाल। मर-णम्। आव० २७५। कोणिकबन्धु। आव० ६८३, ६८४। कोणिकस्य दण्डनायक। आव० ६८४। काल–कलासमूहो वा काल। नि० चू० प्र० ५ आ। स्थिति, प्रमाण वा। ठाणा० ७६। मरण, मारणान्तिकसमु-द्घात। भग० ६५०। य कण्ड्वादिषु पचति वणत कालश्च स काल। परमाधार्मिकसप्तमनाम। सम० २८। अष्टाशीत्या महाग्रहे अष्टपञ्चाशत्तम। ठाणा० ७६। पिशाचेन्द्र। ठाणा० ८५। ज्ञाता० २५२। वेलम्बे-

न्द्रस्य लोकपाल । प्रभञ्जनस्य लोकपाल । प्रथमो वायुकुमार । ठाणा० १९८ । प्रथमस्य वडवामुखपातालकलशस्याधिष्ठाता देव । जीवा० ३०६ । ठाणा० २२६ । नवमहानिधौ षष्ठनिधि । ठाणा० ४४८ । गणितानुयोग । ज० प्र० २ । वर्तमानावसर्पिणीचतुर्थारकविभागरूप । ज० प्र० १३ । प्रस्ताव । उत्त० ४८६ । मृत्यु । आचा० १२२ । अवसरादि । भग० ७७३ । कलन—काल, कलासमूहो वा काल ,तेण वा कारणभूतेन, दव्वादिचउक्कय कलिज्झतीति काल —ज्ञायत इत्यर्थ । नि० चू० प्र० ५ आ । कालविषयम् । बृ० प्र० २०१ आ । निरयावलिकाना प्रथमवर्गस्य प्रथममध्ययनम् । निरय० ३ । कल्यते—सख्यायतेऽसावनेन वा कलन वा कला—समूहो वेति काल वर्त्तनापरापरत्वादिलक्षण । ठाणा० ५५ । समय । ठाणा० १९८ । ठाणा० २०१ । अत्र—स्थिति । भग० ५३३ । नारकादित्वेन स्थितिर्जीवाना स । नारकादिभवेऽवस्थान स । ठाणा० २०१ । सञ्ज्ञाकाल । ओघ० १२२ । कृष्णवर्ण, कृष्णश्च स्वाध्यायकाल । विशे० ८५४ । स्वाध्यायकाल । शुना । मरणम् । आव० २७५ । सुभिक्षदुर्भिक्षादि काल । आव० ८३७ । प्रक्रमात् पतनप्रस्ताव । उत्त० ३३४ । काल । दिवसस्य प्रहरत्रयलक्षण । भग० २९२ । विमानविशेष । सम० ३५ । आमलकल्पानगर्यां गृहपतिविशेष । कालवत्तसकविमाने सिंहासनम् । ज्ञाता० २४७ । मरणधर्म । ज० प्र० १५८ । दीर्घकालिकसञ्ज्ञा । विशे० २८१ । मरणम् । दश० ६। विशे०८३७ ।विपा०८० । क्षीयमाणादिलक्षण । दश० ११५ । कूणिकराज्ञो भिन्नमातृको भ्राता । भग० ३१६ । षष्ठो निधिविशेष । ज० प्र० २५८ । गणित । आव० २६६ ।

कालए— । जीवा० ३७० ।

कालकखी—कालम्—अनुष्ठानप्रस्ताव काङ्क्षत इत्येवशील कालकाक्षी । उत्त० २६६ ।

कालक—विद्याप्रदानाय प्रशिष्यसकाशमागत आचार्यविशेष । आव० ५२३ ।

करण—चन्द्रार्ऽऽदत्यादिज्योतिपिकदेवगतिविशेषेण यद् भवति तत् । विशे० १२७५ ।

कालकाचार्य—गुणननिमित्तमनुयोगे द्रष्टान्त । बृ० प्र० ३९ अ । प्रवचनप्रत्यनीकशासक । बृ० तृ० १५६अ, बृ० तृ० १५५ अ ।

कालकाल—तत्रैक कालशब्दो वर्त्तनादिरूप । द्वितीयस्तु समय परिभाषया कालो मरणमुच्यते, ततश्च कालस्य मरणं क्रियारूपस्य कलन काल काल इत्यर्थ । विशे० ८३७ अ । अभीष्टवस्त्ववाप्त्यवसर, कालो, मरण । मरणक्रियाया कलन काल इत्यर्थ । दश० ६ । मरणक्रियाकलन कालकाल । आव० २५७ ।

कालकूट—कालकूटनामक विषम् । उत्त० ४७८ ।

कालखमणो—कालक्षपण —कालकाचार्य । उत्त० १२७ ।

कालगज्ज—कालकाचार्य । नि० चू० प्र० ३०३ अ ।

कालगतिल्लतो—कालगत । उत्त० १६० ।

कालगय—कालगत —मृत । आव० ६२६ ।

कालगहिया—कालेन मृत्युना गृहीता, पौन पुन्यमरणभाज इत्यर्थ । धर्मचरणाय वा गृहीता —अभिसन्धित कालो यैस्ते कालगृहीता । आचा० १८४ ।

कालग्ग—कालाग्र—अधिकमासक । यदिवाऽग्रशब्द परिमाणवाचकस्तत्रातीतकालोऽनादिरनागतोऽनन्त सर्वाद्धा वा । आचा० ३१८ ।

कालग्गहो—कालग्राही । व्य० द्वि० २५२ अ ।

कालचक्क—कालचक्र । आव० २१७ ।

कालचारी—कालचारिणी—एतादृशी सयती । कालचारिश्रमणीयुक्त । ओघ० ५७ ।

कालच्छेदे—कालपर्यन्ते । ओघ० २१३ ।

कालण्णाण—कालज्ञान—सकलज्योति शास्त्रानुबन्धिज्ञानम् । ज० प्र० २५८ ।

कालदोस—कालदोष —अतीतादिकालव्यत्यय । सूत्रस्य द्वात्रिंशद्दोषे एकविंशतितम । आव० ३७४ । अनु० २६२ ।

कालधम्म—कालो—मरण तल्लक्षणो धर्म —पर्याय कालधर्म । विशे० १००३ ।

कालधम्मु—कालधर्म्म —मरण । ठाणा० १४३ ।

कालनिषीथं—कृष्णरजन्यो यत्र वा काले निषीथ व्याख्यायत इति । आचा० ४०८ ।

कालपएसे–कालप्रदेश –एकादिसमय । प्रज्ञा० २०२ ।

कालपक्ख–कृष्णपक्ष । आव० ३४६ ।

कालपरियाए–मृत्युरवसरोऽपि ग्लानावसरेऽप्यावेव कालपर्याय इति । आचा० २८२ ।

कालपाले–धरणेन्द्रस्य प्रथमलोकपाल । ठाणा १९७ ।

कालपोराण–कृष्णपर्वणा उपरितनपत्रसमूहापेक्षया हरितालवत्पिञ्जराणा । जीवा० ३५५ ।

कालप्रत्युपेक्षणा–उचितानुष्ठानकरणार्थं कालविशेपस्य पर्यालोचना । ठाणा० ३६१ ।

कालप्रायश्चित्त–त्रिविधप्रायश्चित्ते तृतीयम् । बृ० प्र० ४८ आ० ।

कालभूमी–कालभूमि –कालमण्डलाख्या भूमि । आ०७८४ ।

कालभेद –अतीतादिनिर्देशे प्राप्ते वर्त्तमानादिनिर्देश । ठाणा० ४९६ ।

कालभोइ–जो मज्झण्हे भुजइ अणत्थमिए वा । नि० चू० तृ० ३८ आ० ।

कालमण्डला–कालभूमि । आव० ७८४ ।

कालमरण–यस्मिन् काले मरणमुपवर्ण्यते क्रियते वा । उत्त० २२९ ।

कालमह्–कालमहत्–अनागताद्धा । उत्त० २५५ ।

कालमासा–मासाभेद । ज्ञाता० १०७ ।

कालमासिणी–कालमासवती–*गर्भाधानान्नवममासवती* । दश० १७१ । नवमे मासे गब्भस्स वट्टमाणस्स । दश० चू० ७९ ।

कालमासे–कालस्य–मरणस्य मास । उपलक्षण चैतत्पक्षाहोरात्रादेस्ततश्च कालमासे-मरणावसर इतिभाव । ठाणा०६६।

कालमिगपट्ट–कालमृगपट्ट –कालमृगचर्म । ज० प्र० १०७। जीवा० २६९ ।

कालमियचम्म–कालमृगचर्म । ज्ञाता० २२० ।

कालमुही–कृष्णमुखी–उपद्रवकारिण्या विशेषणम् । ओघ० १७ ।

कालमुहे–कालमुख । म्लेच्छविशेष । ज० प्र० २२० ।

कालमूढो– । नि० चू० द्वि० ४१ आ ।

कालवडिसगभवणे–चमरचञ्चाराजधान्या भवनम्। ज्ञाता० २४७ ।

कालवत्तिणि–कालवर्त्तिनी–काले–भोगकाले यौवने वर्त्तत इति । अन्त० १२ ।

कालवादी–अस्ति जीव स्वतो नित्यश्च कालत इति वादी। आव० ८१६ ।

कालवादिन –विद्यते खल्वात्मा स्वेन रूपेण नित्यश्च कालवादिन । सम० ११० । विद्यते खल्वयमात्मा स्वेन रूपेण न परापेक्षया ह्रस्वदीर्घत्वे इव नित्यश्च कालवादिन । ठाणा० २६८ ।

कालवाल–नागकुमारेन्द्रस्य लोकपाल । भग० ५०८ ।

कालवासी–काले–प्रावृषि वर्पतीति ग्वशील –कालवर्पी । काले जिनजन्मादिमहादौ वपतीतिकृत्वा । भग० ६३४ । कालवर्पी–अवमरवर्पीति । ठाणा० २७० ।

कालवेसि–जितशत्रुपुत्र शृगालभक्षित । म० २० ।

कालवेसिय–कालवेसिक । मथुराया कालाभिधवेश्याया पुत्र । उत्त० ६२० ।

कालशौकरिक –निरुपक्रमायुपि द्रष्टात । भग० ७९६ । नरकादिकुगतिप्राप्तौ द्रष्टान्त । उत्त० २७२ ।

कालसंजोग–कालसयोग –समयक्षेत्रमध्ये आदित्यादिप्रकाशसम्बन्धलक्षण । ठाणा० ३५९ ।

कालसदीवो–कालसन्दीपक । आव० ६८६ ।

कालसधिय–कालसन्धिता–काले स्वस्वोचिते सन्धान सन्धा कालसन्धा सा सञ्जातैपामिति । जीवा० २६५ ।

कालसयोगो–वर्त्तनादिकाललक्षणानुभूमि मरणयोगो वा। ठाणा० १३३ ।

कालसमए–कालसमय । सूय० ९० । कालेन–तथाविधेनोपलक्षित समय –अवसर कालसमय । सूर्य० २६४ ।

कालसिरी–कालगृहपतेर्भार्या । ज्ञाता० २४८ ।

कालसीमा–तस्यामेव सार्द्धत्रयस्त्रिंशति त्रिशतागुणिताया १००५ सप्तपष्ट्या हृतभागाया यल्लब्ध तदेपा कालसीमा। सम० ८० ।

कालसुणगो–कालसुनका –कालश्वान । जीवा० २८२ ।

कालसूरिय–कालशौकरिक, श्रेणिकस्य नरकनिवारणे द्रष्टान्त । आव० ६८१ ।

कालसोयरि–विनयबहुमानचतुर्भङ्ग्या चतुर्थे द्रष्टान्त । नि० चू० प्र० ८ अ ।

कालसौकरिक—नामविशेष । सूत्र० १७८ । महदापद्गतोऽपि स्वत महदापद्गतेऽपि च परे आमरणादसञ्जातानुताप । आव० ५६० । अभव्यकुमुदम् । बृ० प्र० १८८ ।
कालसौकरिकादि – । सूत्र० १२२ ।
कालहत्थी—कालहस्ती कलम्बुकाया प्रत्यन्तिक । आव० २०६ ।
कालहय—कालहत –ग्रामेयकविशेष । आव० ५५४ ।
कालहेसि—काले–अराजकाना राजनिर्णयार्थके अधिवासनादिके समये हेषते शब्दादयतीत्येवशील कालहेषि । ज० प्र० २३७ ।
काला—कालार्थ एकादश । भग० ५११ । पिशाचभेदविशेप । प्रज्ञा० ७० । मथुराया जितशत्रुराजवेश्या । उत्त० १२० । काला सन्निवेश । सिंहविद्युन्मतीगोष्ठीस्थानम् । आव० २०१ ।
कालाइक्कमो—कालस्यातिक्रम, कालातिक्रम । आव० ८३८ ।
कालाएस—कालप्रकार । कालत । भग० ८०६ ।
कालागुरु—गन्धद्रव्यविशेष । सम० ६१ । कृष्णागुरु । प्रश्न० ७७ । गन्धद्रव्यविशेष । कृष्णागुरु । सम० १३८ । कृष्णागुरु । ज० प्र० ५१ । सुगन्धिद्रव्यविशेष । जीवा० १६०, २०६ । प्रज्ञा० ८७ ।
कालाणुट्ठाई—यद्यस्मिन् काले कर्त्तव्य तत्तस्मिन्नेवानुष्ठातुं शीलमस्येति कालानुष्ठायी, कालानतिपातकर्त्तव्योद्यत । आचा० १३२ ।
कालातिक्कंत—काल–दिवसस्य प्रहरत्रयलक्षण अतिक्रान्त कालातिक्रान्त । भग० २९२ ।
कालातिक्कता—ऋतुबद्धे काले वर्षाकाले च यत्र स्थितास्तस्यामृतुबद्धे काले मासे पूर्णे वर्षाकाले चतुर्मासे पूर्णे यत् निष्ठति सा कालातिक्रान्ता । बृ० प्र० ९३ अ । तृष्णाबुभुक्षाकालाप्राप्ता । ज्ञाता० ११३ ।
कालापाय—काल इत्यत्रापि कालादपाय कालापाय, काल एव वा । दश० ३६ ।
कालायवसितो—कालादवैश्य । व्य० द्वि० ४३२ आ ।
कालायस—लोह । ज० प्र० ३७, २३८ । जीवा० १९२ । लोह । नि० चू० द्वि० ८७ अ । कालायसम्–लोहविशेष । औप० ७१ । भग० ३२२, ४८१ ।
कालालोणे—कृष्णलवण–सैन्धवलवणपर्वतैकदेशजम् । दश० ११८ ।
कालावभासे—कालावभास, कालदीप्तिर्वा । भग० २६६ ।
कालावीचिमरण—यथाऽऽयुष्ककाले मरणम् । उत्त०२३१ ।
कालासवेसियपुत्ते—पार्श्वापत्यीय । भग० ९९ । प्रथमशतकगतदृष्टान्त । भग० ३२७ ।
कालिंग—कालिङ्गम् । प्रज्ञा० ३७ ।
कालिंगी—वल्लीविशेष । भग०८०३ । आचा०५७। प्रज्ञा०३२।
कालिकाचार्य—गर्दभिल्लस्य शिक्षादाता । नि० चू० प्र० ३०४आ, २५६ । अशठाचीर्णे दृष्टान्त । बृ० तृ० १४ अ ।
कालिगि—सज्ञाविशेष । विशे० २७७ ।
कालिञ्जर—नगविशेष । उत्त० ३८३ ।
कालिनी—आर्द्रदेवता, रौद्रीत्यपरनाम । ज० प्र० ४९९ ।
कालिपोरेति—काकजङ्घावनस्पतिविशेपपर्व । अनुत्त० ४ ।
कालिय—काले-प्रथमचरमपौरुषीलक्षणे कालग्रहणपूर्वक पठ्यत इति कालिकम् । विशे० ९२७ । दिवसनिशाप्रथमपश्चिमपौरुषीद्वय एव पठ्यते तत्, तत्कालेन निवृत्त कालिकम्, उत्तराध्ययनादि । ठाणा० ५२ । नदी० २०४ । कालेन निर्वृत्त कालिकम्, प्रमाणकालेनेति भाव । दश०२ ।
कालियदीवे—द्वीपविशेष । ज्ञाता० २२८ ।
कालियपुत्ते—कालिकपुत्र । स्थविरविशेष । भग० १३८ ।
कालियसुय—इहैकादशाङ्गरूप सर्वमपि श्रुत कालग्रहणादिविधिनाऽधीयत इति कालिकम् । विशे० ९३१ । कालिकश्रुत एकादशाङ्गरूप । भग० ७९२ ।
कालियसुयमाणुओगिए—कालिकश्रुतानुयोगे–व्याख्याने नियुक्ता –कालिकश्रुतानुयोगिका, कालिकश्रुतानुयोग एषा विद्यते इति कालिकश्रुतानुयोगिन । नदी० ५१ ।
कालिया—काले सम्भवन्तीति कालिका –अनिश्चितकालान्तरप्रासय । उत्त० २४३ । कालिका–श्रेणिकभार्या । आव० ६८७ ।
कालियावाए—कालिकावात –प्रतिकूलवायु । ज्ञाता०१५८ ।
कालियावायरहिए—कालिकावातरहित । आव० ३८७ ।
काली—चमरेन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी । भग० ५०३ । काली–अन्तकृद्दशाना अष्टमवर्गस्य प्रथममध्ययनम् ।

अन्त० २५। देवीविशेष। निरय० १६। धर्मकथाया प्रथमवर्गस्य प्रथममध्ययनम्। ज्ञाता० २४७। कालगृहपतिकालश्रियो दारिका। ज्ञाता० २४८।

कालीगमए– । ज्ञाता० २५१।

कालीपव्वगसकासे–कालीपर्वाङ्गसङ्काश काली-काकजङ्घा तस्या पर्वाणि स्थूराणि मध्यानि च तनूनि भवन्ति तत, कालीपर्वाणीव पूर्वाणि–जानुकूर्परादीनि येषु तानि कालीपर्वाणि, तथाविधैरङ्गैः–शरीरावयवै सम्यक्काशते-तप श्रिया दीप्यत इति कालीपर्वभिर्वा सङ्काशानि–सदृशानि अङ्गानि यस्य स। उत्त० ८४।

कालुट्ठिती–उग्गए आदिच्चे दिवसतो जो गच्छति। नि० चू० तृ० ३८ आ।

कालुणितेति–कारुण्य–शोक। ठाणा० ४६६।

कालुद्देसे–कालोद्देश। आव० ८२२।

कलुसभावो–कलुषभाव कालुष्यम्–दुष्टाभिमन्धिरूपम्। दश० २१२।

कालुस्से–कसाउप्पत्ती। नि० चू० प्र० ३१ अ।

कालेज्ज–कालेयकम्। स०। कालेयक। आव० ६५१।

कालेण–कालेन–प्रथमपश्चिमपौरुषीलक्षणेन हेतुभूतेनाधीयन्ते। ठाणा० १२६। दुष्षमसुषमादिना विशिष्टेन कालेन सतोत्पत्त्यादिकमभूत्। आचा० ४२५।

कालेयक– । सम० २६।

कालोदाइ–कालोदधि–अन्ययूथिक। भग० ३२७, ३२३। रजन्या भिक्षाग्राही बौद्धसाधु। वृ० द्वि० ९३ अ।

कालोदायी–गुणशिलचैत्यनिकटवर्त्ती अन्ययूथिक। भग० ७५०।

कालोय–धातकीखण्डपरित शुद्धोदकरसास्वाद कालोद समुद्र। अनु० ९०। धातकीखण्डानन्तर समुद्र। प्रज्ञा० ३०७।

कालोवक्कम–कालस्योपक्रम कालोपक्रम। यदिह नालिकादिभिरादिशब्दात् शङ्कुच्छायानक्षत्रचारादिपरिग्रहस्तै कालउपक्रम्यते स कालोपक्रम। यत्तु नक्षत्रादिचारै कालस्य विनामन स वस्तुनाशे कालोपक्रम। अनु० ४८।

कालोवाय–कालोपाय–अपायभेद। दश० ४०।

कावालिए–अस्थिसरजस्क। वृ० द्वि० ९० आ। कापालिक–वृथाभागी। आव० ६२८।

काविट्ठ–महाशुक्रकल्पे विमानविशेष। मम० २७।

काविलिज्ज–कापिलीय, उत्तराध्ययनेष्वष्टममध्ययनम्। उत्त० २८९।

काविलिय–उत्तराध्ययनेषु अष्टममध्ययनम्। मम० ६४।

काविसायण–कपिशायन–मद्यविशेष। ज० प्र० १००।

कावो–काव–कापडिवाहक। जीवा० २८१।

कावोडी–कापोती–तुलाकार पानीयानयनमाधनम्। दश० १३५। दश० चू० ५७।

कावोय–कावडिवाहक। अनु० ४६।

कावोयलेस्सा–कापोतस्य पक्षिविशेषस्य वर्णेन तुल्यानि यानि द्रव्यानि धूम्राणि इत्यर्थ, तत्माहात्म्याज्जाता कापोतलेश्या मनाक् शुभतरा सा लेश्या येषा ते। ठाणा० ३२।

काशा–शर्करा। प्रज्ञा० ३६६।

काशिमण्डल–काशिदेश। उत्त० ४४८।

काश्यपादीनि–गोत्रविशेष। सम० ११२।

काष्ठपादुके–मोञ्जे। सूत्र० ११८।

काष्ठमूल–चणकचवलकादिक द्विदलम्। वृ०प्र० २६७ आ।

काष्ठमूलरस–चणकचवलकादिद्विदल तदीयेन रसेन यत्परिमाणितम्। पानकम्। वृ० प्र० २६७ आ।

काष्ठमुद्रा– । ठाणा० ५१२।

काष्ठश्रेष्ठी–पारिणामिकीबुद्धौ दृष्टान्त। नदी० १६६। श्रमणविशेष। वृ० द्वि० ९४ अ।

काष्ठाशब्द–प्रकर्षवाची। सूर्य० १३।

कासकासे–कासकष। आचा० १३९।

कास–कास–रोगविशेष। भग० १९७। गुच्छाविशेष। प्रज्ञा० ३२। अष्टाशीतौ महाग्रहे सप्तचत्वारिंशत्तम। ठाणा० ७९।

कासगो–कर्षक। नि० चू० द्वि० १४३ आ।

कासण–काशन–खाट्करणम्। ओघ० ९२।

कासय–कर्षक–कृषीवल। उत्त० ३६१।

कासरनालिय–सीवण्णिफल। दश० चू० ८६।

कासव–काश्यपस्यापत्य काश्यप त काश्यपगोत्रम्। नदी० ४८।

कासवे–स्थविरविशेष। भग० १३८। कश्यप–अन्त-

कृद्दशाना षष्ठमवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम्। अन्त० १८। राजगृहे गाथापति। अन्त० २३। उत्तराफालगुन्या गोत्रनाम। ज० प्र० ५००। काश्यपगोत्रो महावीर। उत्त० ८३। ऋषभस्वामी वर्धमानस्वामी वा। सूत्र० ६८। कौशम्ब्या राजबहुमतो ब्राह्मण। उत्त० २८६। नापितस्य सम्बन्धिक्षुरगृहम्। बृ० प्र० १८४ अ।

कासवए—काश्यप—नापितशिल्प। आव० १३२।

कासवग—काश्यप—नापित। भग० ४७२। सूत्र० ११६।

कासवगा—षष्ठीश्रेणिविशेष। ज० प्र० १९३।

कासवगोत्ते—काश्यपगोत्रम्। सूर्य० १५०। आर्यजम्बुनामानगारस्य गोत्रम्। ज्ञाता० १३।

कासवनालिय—श्रीपर्णीफलम्। आचा० ३४९। दश० १८५।

कासवसट्ठियट्ठाण—यस्तु ग्राम एव त्रिकोणतया निविष्ट वृक्षा वा त्रयो यस्य बहिस्त्र्यस्रा स्थिता एकतो द्वौ अन्यतस्त्वेक काश्यपसस्थित। बृ० प्र० १८४ अ।

कासवा—कशे भव काश्य—रसस्त पीतवानिति काश्यपस्तदपत्यानि काश्यपा। ठाणा० ३९०।

कासवी—पञ्चमतीर्थकरस्य प्रथमा शिष्या। सम० १५२।

कासाइअ—कषायेण—पीतरक्तवर्णाश्रयरञ्जनीयवस्तुना रक्ता कापायिकी शाटिकेत्यर्थ। ज० प्र० १८९।

कासायं—काषायिक—वस्त्रविशेष। आव० ३५२।

कासि—काशीजनपदो यत्र वाणारसी नगरी। ज्ञाता० १२५।

कासिभूमि—काशीभूमि—काश्यभिधानो जनपद। उत्त० ३८३।

कासी—काशी—जनपदविशेष। ज्ञाता० १४१। प्रज्ञा०। वाणारसी, तज्जनपदोऽपि काशी। भग० ३१७। अष्टाशीती महाग्रहे सप्तचत्वारिंशत्तम। भग० ९८०।

कासीअ—अकार्षीत्। उत्त० ३२२।

कासीस—रागद्रव्य। ज्ञाता० २३१।

कासो—इक्खु। दश० चू० ५८।

काह—कदा। भग० ११६।

काहए—अकथयत्। उत्त० ४८०।

काहरो—कापोतिक—जलवाहक। दश० १३५।

काहलं—फल्गुप्रायम्। बृ० प्र० ४५ आ।

काहला—खरमुही। ज० प्र० १९२। तस्स मुहत्थाणे खरमुहाकार कट्ठमय मुह कज्जति खरमुखी। नि० चू० तृ० ६२ अ। वाद्यविशेष। ठाणा० ६३।

काहामि—करिष्यामि। उत्त० ४३३।

काहारसठिते— । सूर्य० १२९।

काहारो—जलवाहक। दश० चू० ५७।

काहावण—कार्षापणम्। उत्त० २७६। कर्पापण—द्रम्म। प्रश्न० ३०।

काहितो—सज्झायादिकरणिज्जे जोगे मोत्तु जो देसकहादिकहीतो कहेति सो काहितो। नि० चू० द्वि ९१ आ।

काहिया—धम्मत्थकामेसु अण्णाओ विकहाओ कहेता कहिया भवति। नि० चू० तृ० ९ अ।

काहीआ—कथिका। ग०।

काहीउ—कथक। ओघ० १५०।

काहिए—। ओघ १५०। पासणिए। नि०चू०प्र०२९२ अ।

काहीति—करिष्यति। ठाणा० ४९६।

किं—प्रश्ने क्षेपे वा। आचा० १६५। प्रश्ने। ज्ञाता० १४९। क्षेपप्रश्ननपुसकव्याकरणेषु। आव० ३७९।

किंकमे—किंकमे, अन्तकृद्दशाना षष्टमवर्गस्य द्वितीयमध्ययनम्। अन्त० १८।

किंकम्मय—किंकर्मक। आव० ४०९।

किंकर—भार्यादेशकर—अन्वर्थ पुरुषविशेष। पिण्ड० १३५। किङ्करा—प्रतिकर्मपृच्छाकारिण। ज० प्र० २६३। किङ्करा—किङ्करभूता। प्रज्ञा० ८९। जीवा० १६०। प्रतिकर्मपृच्छाकारिण। भग० ५४७। आदेशसमाप्तौ पुन प्रश्नकारी। प्रश्न० ३९।

किंकिणी—किङ्किणी, क्षुद्रघण्टिका। भग० ३२०। प्रश्न० ७५। क्षुद्रघण्टा घण्टिका वा। ज० प्र० ५२९।

किंकिन्धपुर—आदित्यरथराजधानी। प्रश्न० ८९।

किंखाइनि—अथ किं पुनरित्यर्थ। भग० १४९।

किंगिरिडा—त्रीन्द्रियविशेष। प्रज्ञा० ४२।

किंचन—किञ्चन—काञ्चन—हिरण्यादि, अल्पमपि वा। आव० १५५।

किंचि—काञ्चि मूशलमूलस्थनोहक्टी। पिण्ड० १६४।

किंचिच्च सूरिवचनं— । ठाणा० २०३।

किंचूणा–किञ्चिदूना–एकत्रिंशत्कवला । ठाणा० १४६ । ऊनोदरताया पञ्चमो भेद । इत्थ पञ्चविंशतेरारभ्य यावदेकत्रिंशत्तावत्किञ्चिदूनोदरता । दश० २७ ।

किंचूणोमोअरिआ–किञ्चिन्न्यूनावमोदरिका – एकत्रिंशतो द्वात्रिंशत एकेनोनत्वात् । औप० ३८ ।

किणा– । प्रज्ञा० ३०८ ।

किणापउल–वनस्पतिविशेष । भग० ८०४ ।

किंते–तद्यथार्थ । औप०५४ । तद्यथा । जं० प्र० १६२ । प्रश्न० १५६ । किंभूतान् । ज्ञाता० २३० ।

किंत्थुग्घ–किंस्तुघ्न–एकादशम करणम् । ज० प्र० ४६३ ।

किनए–किण्व–अनन्तजीववनस्पतिभेद । आचा० ५६ ।

किंनर–किन्नरेन्द्र । जीवा० १७४ । किन्नर–दक्षिणनिकाये पञ्चमो वाणव्यन्तरेन्द्र । भग०१५८ । किन्नरभेदविशेष । प्रज्ञा० ७० । वाणव्यन्तरभेदविशेष । प्रज्ञा० ६६ । चमरेन्द्रस्य रथानीकाधिपतिर्देव । ठाणा० ३०२,४०६ । इन्द्रनाम । ठाणा० ८५ । किन्नर–वाद्यविशेष । देवविशेषो वा । प्रश्न० ७० । देवविशेष । भग० ४७८ ।

किंनरकण्ठ–किन्नरकण्ठप्रमाणो रत्नविशेष । जीवा० २३४ ।

किंनरी–देवीविशेष । मैथुने द्रष्टान्त । प्रश्न० ९० ।

किंन्नरोत्तमा–किन्नरभेदविशेष । प्रज्ञा० ७० ।

किंपगारे–किंप्रकार–किंस्वरूप । जीवा० ६५ ।

किंपत्तिय–क प्रत्यय कारण यत्र तत् किम्प्रत्ययम् । भग० १८१, १३८ ।

किंपभासई–किं–कुत्सित प्रकर्षेण भाषते इति किंप्रभाषते । उत्त० ४४३ ।

किंपाकफल–फलविशेष । आचा० १६४ ।

किंपाग–किम्पाक वृक्षविशेष । उत्त० ६२८, ४५४ । फलविशेष । आव० ३८५ ।

किंपुरिसा–वाणव्यन्तरभेदविशेष । प्रज्ञा०६६ । किंपुरुष–उत्तरनिकाये पञ्चमो वाणव्यन्तरेन्द्र । ठाणा० ८५,३०२ । भग० १५८ । किंपुरुष–किन्नरेन्द्र । जीवा० १७४ ।

किंपुरुषकण्ठ–किंपुरुषकण्ठप्रमाणो रत्नविशेष । जीवा० २३४ ।

किंपुरुषा–किन्नरभेदविशेष । प्रज्ञा० ७० ।

किंपुरुषोत्तमा–किन्नरभेदविशेष । प्रज्ञा० ७० ।

किंभया–कस्माद् भय येषा ते, कुतो बिभ्यतीत्यर्थ । ठाणा० १३५ ।

किंमए–किंमय–किंविकार । जीवा० ११० ।

किंमज्झ–किंमध्य–किंशब्दस्य क्षेपार्थत्वात् असारम् । प्रश्न० १३७ ।

किंलेसे–का–कृष्णादिनामन्यतमा लेश्या येषा ते किंलेश्या । भग० १८८ ।

किंशुककुसुमं–पलासकुसुमम् । जीवा० १९१ ।

किंसठिय–किंसस्थित–किमिव सस्थितम् । जीवा० ३७८ । किमिव सस्थिता किंमस्थिता । जीवा० १०४ । किं सस्थित–सस्थान यस्या यदिवा कस्येव मस्थित–सस्थान यस्या सा किंसस्थिता । सूर्य० ७३ ।

किंसुकफुल्ल–किंशुकफुल्ल–पलासकुसुमम् । ठाणा० ४२० ।

किंसुयपुप्फरासी–किंशुकपुष्पराशि । प्रज्ञा० ३६१ ।

किइ–कृति–अवनामादिकरण, मोक्षायावनामादिचेष्टैव वा । आव० ५११ ।

किइकम्म–कृतिकर्म–विश्रामणा । आव० ११८ । कृतिकर्म, वन्दन, कार्यकरणम् । भग० ६३७ । वन्दनम् । आव० ८० । सम० २३ । ओघ० २२ । पादप्रक्षालनादि । ओघ० ६३ । द्वादशावर्त्तवन्दनम् । ओघ० १५६ ।

किई–कृति–द्वादशावर्त्तादिवन्दनम् । उत्त० १७ । कृतिकर्म वन्दनम् । दश० २४१ ।

किच्च–कृत्य–आचार्याणा वैयावृत्त्वम् । आव० २६० । कृति–वन्दनक–तदर्हतीति कृत्य । उत्त० ५४ । कृ य, आसेवनीय कालस्वाध्यायादि । आव० ५७३ । कृत्य उचितानुष्ठानम् । उत्त० ६५ । आचार्याद्यभिरुचितकार्यम् । दश० २५० । कृत्य–आचार्यादि । दश० २५० । आचार्य । दश० २३५ । माया । नि० चू० प्र० ७७ आ ।

किच्चकर–ग्रामकृत्ये नियुक्त । ग्रामव्यापृतक । नि० चू० प्र० १७६ आ । कृत्यानि कुर्वन्ति–अनुतिष्ठन्ति कृत्यकरा–नियोगिन । उत्त० ३०५ । ग्रामचिन्तानियुक्त । बृ० प्र० ३१३ आ । ग्रामकृत्ये नियुक्त । बृ० तृ० ३३ अ ।

किच्चण–तत्र दिवसे क्षणिका विमुक्तकृषिलवनव्यापारा ।

ओघ० ७२ । कर्त्तनम् । वृ० प्र० २४१ आ ।

किच्चाइ–कर्त्तव्यानि यानि प्रयोजनानीत्यर्थ, अथवा कृत्यानि नैत्यिकानि । ज्ञाता० ६१ ।

किच्चिरस–कियच्चिरेण । आव० ५५६ ।

किच्चोवएसगो–कृत्योपदेशिक कृत्य–कर्तव्य सावद्यानुष्ठान तत्प्रधाना कृत्या–गृहस्थास्तेषामुपदेश –सरम्भसमारम्भारम्भरूप स विद्यते यस्य स । कृत्य–करणीय पचनपाचनकण्डनपेपणादिको भूतोपमर्दकारी व्यापारस्तस्योपदेशस्त गच्छतीति कृत्योपदेशग कृत्योपदेशजो वा । सूत्र० ४७ ।

किच्छ–कृच्छ्रम् । आव० ३८४ ।

किच्छदुक्ख–कृच्छ्रदु ख–गाढशरीरायाम । भग० ४७० ।

किच्छपाणो–कृच्छ्रप्राण । उत्त० ११८ ।

किच्छोवगयप्पाण–कष्टगतजीवितव्य । ज्ञाता० २११ ।

किटिभ–क्षुद्रकुष्ठविशेष । ज० प्र० १७० । नवम क्षुद्रकुष्ठम् । प्रश्न० १६१ । आचा० २३५ ।

किट्ट–लोहादिमल । आचा० ३२२ । अच्युतकल्पे विमान विशेष । सम० ३६ । ऊर्णाद्यवयवा तन्निप्पन्न वस्त्रम् । वृ० द्वि० २०१ आ ।

किट्टइत्ता–कीर्त्तयित्वा–स्वाध्यायविधानत सशुद्धच । उत्त० ५७२ । गुरोर्विनयपूर्वकमिदमित्थ मयाऽधीतमिति निवेद्य । उत्त० ५७२ ।

किट्टति–अपगच्छति । वृ० तृ० २३३ अ ।

किट्टा–रोमविसेसा । नि० चू० प्र० १२६ अ ।

किट्टिअ–कीर्त्तितम्–भोजनवेलायाममुक मया प्रत्याख्यात तत् पूर्णमधुना भोक्ष्य इत्युच्चारणेन । आव० ८५१ ।

किट्टिका–साधारणवादरवनस्पतिकायिकभेद । जीवा०२७ ।

किट्टिय–कीर्त्तित–अन्येषामुपदिष्टम् । प्रश्न० ११३ । कीर्त्तिता-पारणकदिने अयमय चाभिग्रहविशेष कृत आसीद् अस्या प्रतिमाया स चाराधित्त एवाधुना मुत्कलोऽहमिति गुरुसमक्ष कीर्त्तनादिति । ठाणा० ३८८ ।

किट्टिस–ऊर्णादीना यदुद्धरित किट्टिस तन्निप्पन्न सूत्रमपि ऊर्णादीनामेव द्विकादिसयोगतो निप्पन्न सूत्रम्, उक्तशेषाश्वादिलोमनिप्पन्न वा किट्टिसम् । अनु० ३५ । कुतवो वरक्को किट्टिस । नि० चू० प्र० १२६ अ । ऊर्णाद्यवयवनिप्पन्न वस्त्रम् । वृ० द्वि० २०१ आ ।

किट्टिसिय–किल्विपिका भाण्डादय इत्यर्थ । भग० ४८१ ।

किट्टी–किट्टिजमवयवनिप्पन्न । ठाणा० ३३८ ।

किट्टीया–साधारणवादरवनस्पतिकायविशेप । प्रज्ञा० ३४ ।

किट्टेइ–कीर्त्तयति–पारणकदिने इद चेद चैतस्या कृत्य तच्च मया कृतमित्येव कीर्त्तनात् । भग० १२५ । ज्ञाता० ७२ ।

किट्ठ–वाहित । नि० चू० प्र० २२ अ । कृष्टम् । आव० ६३० । कृष्ट कर्पण लभ्यग्रहणायाकर्पणम् । ज० प्र० १६४ ।

किट्ठि–देवविमानविशेप । सम० ६ । वा[illegible]तिविशेप । भग० ८०४ ।

किट्ठिकूड–देवविमानविशेप । सम० ६ ।

किट्ठिघोस–देवविमानविशेप । सम० १२ ।

किट्ठिजुत्तं–देवविमानविशेप । सम० ६ ।

किट्ठिज्झयं–देवविमानविशेप । सम० ६ ।

किट्ठिप्पभं–देवविमानविशेप । सम० ६ ।

किट्ठिया–अनन्तकायविशेप । भग० ३०० ।

किट्ठियावत्त–देवविमानविशेप । सम० ६ ।

किट्ठिलेस–देवविमानविशेष । सम० ६ ।

किट्ठिवण्णं–देवविमानविशेष । सम० ६ ।

किट्ठिसाविया– । नि०चू०प्र० ३२६ अ ।

किट्ठिसिंग–देवविमानविशेप । सम० ६ ।

किट्ठिसिट्ठं–देवविमानविशेप । सम० ६ ।

किट्ठुत्तरवडिंसग–देवविमानविशेप । सम० ६ ।

किठी–साधारणवादरवनस्पतिकायविशेप । प्रज्ञा० ३४ ।

किडए–पाककुम्भी । नि० चू० प्र० ३०३ अ ।

किडय– । नि० चू० प्र० १०६ आ ।

किडिकिडिया–किटिकिटिका–निर्मांमास्थिसम्बन्ध्युपवेशनादिक्रियासमुत्थ शब्दविशेप । भग० १२५ । निर्मांमास्थिसम्बन्धी उपवेशनादिक्रियाभावीशब्दविशेप । ज्ञाता० ७६ ।

किडिकिडीभूय– । विपा० ७६ ।

किडिभ–कुट्ठभेदो । नि० चू० द्वि० ६२ अ । जघासु वालाभ रसिय वहति । नि० चू० प्र० १२७ आ । धारीरंक-

देशभाविकुष्ठभेद । बृ० द्वि० २२२ अ । रोगविशेष । नि० चू० प्र० १८८ आ ।

किडिम(भ)–किडिम–क्षुद्रकुष्ठविशेष । भग० ३०८ ।

किडिया– । नि० चू० प्र० १२२ अ ।

किड्डति–अन्तर्भूतकारितार्थत्वादन्यान् क्रीडयन्ति । भग० ६१८ ।

किड्डा–पाशककपदकै क्रीडन्ति । ओघ० ५६ । क्रीडा-प्रधाना दशा क्रीडा, दशदशाया द्वितीयादशा । ठाणा० ५१९ । क्रीडा–जन्तोर्द्वितीया दशा । दश० ८ । द्वितीया-दशा । नि० चू० द्वि० २८ आ ।

किड्डावियाए–क्रीडापिका, क्रीडनधात्री । ज्ञाता० २१९ ।

किढ–वृद्ध । बृ० द्वि० २५६ आ ।

किढग–किटक–वृद्ध । व्य० द्वि० २३४ अ ।

किढिण–वशमयस्तापसभाजनविशेष । निरय० २६ । किढिन–वशमयस्तापससम्बन्धीभाजनविशेष । भग० ३२२, ५२० ।

किढिणसकाइय–किढिण – वशमयस्तापसभाजनविशेष, साकायिक–भारोद्वहनयन्त्र किढिणसाकायिकम् । निरय० २६ ।

किढिणसकाइयग–किढिण–वशमयस्तापसभाजनविशेषस्त-तश्च तयो साङ्कायिक भारोद्वहनयन्त्र किढिणसाङ्का-यिकम् । भग० ५१६ ।

किढिणपडिरुवग–कठिनप्रतिरूपक–कढिन वशमयस्ता-पससम्बन्धीभाजनविशेषस्तत्प्रतिरूपक तदाकार वस्तु । भग० ३२२ ।

किढिदासी–काष्ठिकीदासी । आव० २३७ ।

किढिया– । नि० चू० प्र० १३६ आ । स्थविरा माता । बृ० तृ० ११४ अ ।

किढी–थेरी । बृ०प्र० १९८ आ । स्थविरा स्त्री । बृ० तृ० १११ अ । काढिकी । आव० २३७ ।

किणा–किञ्चिन्मात्रा । पिण्ड० १७३ ।

किणिऊण–क्रीत्वा । आव० १९८ ।

किणित्ता–जातिजुगितविसेसो । नि० चू० द्वि० ४३ आ ।

किणिया–किणिका–ये वादित्राणि परिणह्यन्ति वध्याना च नगरमध्ये नीयमानाना पुरतो वादयन्ति । व्य० प्र० २३१ अ ।

किण्ण–कानि–कि विधानि । भग० १०९ ।

किण्णरछाया–किन्नरछाया–छायागतिभेद । प्रज्ञा० ३२७ ।

किण्णा लद्धा–केन हेतुना लब्धा–भवान्त उपार्जिता । ज्ञाता० २५० ।

किण्णे–केन हेतुना । भग० १६३ ।

किण्ह–वल्लीविशेष । प्रज्ञा० ३२ । कृष्णवर्ण–अञ्जनवत् स्वरूपेण । ज्ञाता० ७८ । साधारणबादरवनस्पतिकाय-विशेष । प्रज्ञा० ३४ ।

किण्हकेसरे–कृष्णकेशर–कृष्णबकुल । प्रज्ञा० ३६० । ज० प्र० ३२ ।

किण्हगुलिया–उदायनदासी । नि० चू० प्र० ३४६ आ ।

किण्हचामरज्झय–कृष्णचामरध्वजा कृष्णचामरयुक्ता ध्वजा । जीवा० १९९ ।

किण्हपक्खिए–कृष्णपाक्षिका–शुक्लाना आस्तिकत्वेन विशु-द्धाना पक्षो–वर्ग शुक्लपक्षस्तत्रभवा शुक्लपाक्षिका तद्वि-परीतास्तु कृष्णपाक्षिका । ठाणा० ६१ ।

किण्हपत्ता–चतुरिन्द्रियजन्तुविशेष । जीवा० ३२ । चतु-रिन्द्रियविशेष । प्रज्ञा० ४२ ।

किण्हसिरी–षष्ठ चक्रवर्त्तिन स्त्रीरत्नम् । सम० १५२ ।

किण्हा–नदीविशेष । ठाणा० ४७७ । कृष्णा–ईशानदेवे-न्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी । जीवा० ३६५ ।

किण्होभासे–कृष्णप्रभ कृष्ण एव वाडवभासत इति कृष्णाव-भास । ज्ञाता० ४ । कृष्णवर्ण एवावभासते–द्रष्टृणा प्रति-भातीति कृष्णावभास । ज्ञाता० ७२ ।

कितिकम–वदण । नि० चू० प्र० २३८ अ । वेयावच्च । नि० चू० प्र० ८० आ । कृतिकर्म । आव० ७९३ । विस्सामण–नि० चू० प्र० २१३ अ । कृतिकर्म–द्वादशा-वर्त्तवन्दनम् । ओघ० १३९ । कृतिकर्म्म–वदनक, विश्राम-णादिक वा । व्य० द्वि० ७२ अ । कृतकर्म्म–विश्रामणा । व्य० द्वि० १८३ अ ।

किति ति–कृतिकर्म्माणि–विश्रामणा । व्य० द्वि० १७४ अ ।

कित्तइस्सामि–कीर्तयिष्यामि–प्रतिपादयिष्यामि । दश० १५ ।

कित्तणं–कीर्त्यते–सशब्दयते येन कारयिता तत् कीर्त्तनं देवकुलादि । प्रश्न० ९५ ।

कित्तणयं–कीर्त्तनं शब्दनम् । आव० १८१ ।

कित्तणा–कीर्त्तना सशब्दना । आव० ४९२ ।

कित्ति–कीर्तिकूट–केसरिह्रदसुरीकूटम् । ज० प्र० ३७७ । कीर्त्ति एकदिगव्यापी । भग० ६७३ । दश० २५७ । एकदिग्गामिनी प्रख्यातिर्दानफलभूता वा । भग० ६४३ । जातितपोबाहुश्रुत्यादिजनिता श्लाघा । दानसाध्या । सूत्र० १८२ । दानपुण्यफला । आव० ४९९ । प्रसिद्धि । प्रश्न० ३६ । केसरिह्रदे देवताविशेष । ठाणा० ७३ । सर्वदिग्व्यापी साधुवाद । ठाणा० ५०३ । एकदिग्गामिनी प्रसिद्धि । भग० ५४१ । एकदिग्गामिनी प्रसिद्धि सर्वदिग्गामिनी सैव । ठाणा० १३७ । दानपुण्यफला किर्त्ति । ठाणा० १३७ । गुणोत्कीर्त्तनरूपा प्रशसा, एकदेशगामिनी पुण्यकृता वा कीर्त्ति । प्रज्ञा० ४७५ ।

कित्ति(त्ती)–चतुर्थवर्गे चतुर्थमध्ययनम् । निरय० ३७ । प्रख्याति । ज्ञाता० २२० ।

कित्तिकर–दानपुण्यफला कीर्त्तिस्तत्करणशील कीर्त्तिकर । आव० ४९९ ।

कित्तिताइ–कीर्त्तितानि–सशब्दितानि नामत । ठाणा० २९७ ।

कित्तिम–कृत्रिम –योगेन निष्पन्न । ओघ० १९८ । कृत्रिम – क्रमेण शिल्पिकर्षकादिप्रयोगनिष्पन्न । ज० प्र० ९९ ।

कित्तिमई–किर्त्तिमती, कीर्त्तिसेनसुता ब्रह्मदत्तराज्ञी च । उत्त० ३७९ । अलोभोदाहरणे श्रावस्त्यामजितसेनाचार्यस्य महत्तरिका । आव० ७०१ ।

कित्तिय–कीर्त्तित–जनेन समुत्कीर्तित कीर्त्तिद वा । औप० ५ । कीर्त्तित स्वनामभि प्रोक्त । आव० ५०७ ।

कित्तिया–कीर्त्तिता प्रदर्शिता । आचा० ४२ । कृत्तिका– अग्निभूतेर्जन्मनक्षत्रम् । आव० २५५ ।

कित्तिसेणो–कीर्त्तिसेन –ब्रह्मदत्तपत्न्या कीर्त्तिमत्या पिता । उत्त० ३७९ ।

कित्ती–कीर्त्ति एकदिग्गामिनी । प्रश्न० ८६ । कीर्त्ति ख्यातिहेतुत्वात् । अहिंसाया पञ्चम नाम । प्रश्न० ९९ । दानपुण्यफलभूता, एकदिग्गामिनी वा प्रसिद्धि । प्रश्न० १३६ । दानकृता एकदिग्गामिनी वा प्रसिद्धि । औप० १०८ । एकदिग्गामिनी प्रसिद्धि । बृ० तृ० ३६ आ ।

कित्तीजीविय–कीर्त्तिजीवितम् । आव० ४८० ।

कित्तीपुरिसा–कीर्त्तिप्रधाना पुरुषा कीर्त्तिपुरुषा । ठाणा० ४४८ ।

कित्तीपुरिसो–कीर्तिपुरुष वासुदेव । आव० १५९ ।

कित्तेइ–कीर्त्तयति–तत्समाप्तौ इदमिद चेहादिमध्यावसानेषु कर्त्तव्य तच्च मया कृतमिति कीर्त्तनात् । उपा० १५ ।

किन्न–कीर्ण क्षिप्त । ठाणा० ४६४ ।

किन्नगन्थे–कीर्ण –क्षिप्त ग्रन्थो–धनधान्यादिस्नत्प्रतिबन्धो वा येन स किर्णग्रन्थ । ठाणा० ४६४ ।

किन्नपुडगसठिओ–आवलिकावाह्यस्य नवम सस्थानम् । जीवा० १०४ ।

किब्बिस–किल्विषस्य पापस्य हेतुत्वात्, द्वितीयाधर्मद्वारस्याष्टादश नाम । प्रश्न० २६ । पापा । बृ० प्र० २१२ आ ।

किब्बिसभावणा–किल्विषभावना । उत्त० ७०७ ।

किब्बिसिआ–किल्विषिका –परविदूषकत्वेन पापव्यवहारिणो भाण्डादय । ज० प्र० २६७ । पातकफलवन्तो नि स्वान्धपङ्ग्वादय । ज्ञाता० ५९ । किल्बिष–पाप उदये विद्यते येषा ते किल्बिषिका पापा । ठाणा० १९२ ।

किमग पुण–किं पुनरिति पूर्वोक्तार्थस्य विशेषद्योतनार्थम् अङ्गेत्यामन्त्रणे यद्वा परिपूर्ण एवाय शब्दो विशेषणार्थं । निरय० ७ ।

किमाइया–किमादिका–उपादानकारणव्यतिरेकेण किमादि मौल कारण यस्या सा । प्रज्ञा० २५६ ।

किमाई–किमादि –मौल कारणम् । प्रज्ञा० २५६ ।

किमाहार–चतुर्दशशते पष्ठोद्देश । भग० ६३० ।

किमिकुट्ठ–कृमिसकुल कोष्टमुदर कृमिकोष्ठ । व्य० द्वि० ३५० अ । कृमिकुष्ठ –रोगविशेष । आव० ११६ ।

किमिच्छए–क किमिच्छतीत्येव यो दीयते स किमिच्छक । दश० ११७ ।

किमिच्छय–यो यदिच्छति तस्य तद्दान समयत एव किमिच्छकम् । आव० १३६ ।

किमिण–कृपण । ठाणा० ३४२ । कृमय –अशुच्यादिसम्भवा । उत्त० ६९५ । कतिपयकृमिवत् । ज्ञाता० १७७ ।

किमिणा–कृमिवन्त । प्रश्न० ६० ।
किमिय–कृमिक जन्तुविशेष । आव० ११७ ।
किमियडसठितो–आवलिका बाह्यस्याष्टम मस्थानम् । जीवा० १०४ ।
किमिरागकबले–कृमिरागेण रक्त कम्बल कृमिरागकम्बल । प्रज्ञा० ३६१ ।
किमिरागो–कृमिराग । ज० प्र० ३४ ।
किमिरासि–वनस्पतिविशेष । भग० ८०४ । साधारणबादरवनस्पतिकायविशेष । प्रज्ञा० ३४ ।
किमुलग–वनस्पतिविशेष । भग० ८०२ ।
कियाडियाए–कर्णेन । व्य० प्र० ६ आ ।
किर–किल–परोक्षासपादसूचक । उत्त० ३४३, । अपारमार्थिकत्वख्यापक । उत्त० ३४३ । परोक्षाप्तवादसूचक सम्भावने । उत्त० ७१२ । परोक्षाप्तवादसूचक । उत्त० ६२० । सशये । आव० २४० । परोक्षासागमवादससूचक । आव० १३० । किल–लक्षणमेवास्येदमभिधीयते न पुनस्त कोऽपि छेत्तु भेत्तु वाऽऽरभत इत्यर्थससूचनार्थ । भग० २७६ ।
किराइ–किल । आव० ६१ ।
किराडय–किराटक द्रव्यम् । आव० ८२२ ।
किरिकिरिया–तेषामेव वशादिकम्बिकातोद्यम् । आचा० ४१२ ।
किरिमालए–किरिमालक । दश० ५१ ।
किरिय–क्रिया–सम्यगवाद । आव० ७६२ । चिकित्सा । आव० ५६६ । कायिक्यादिक्रियाभिधानार्थ । अष्टमशते चतुर्थोद्देशक । भग० ३२८ ।
किरियट्ठाण–क्रियास्थानम् । आव० ६५८ ।
किरियठाण–क्रियास्थान–सूत्रकृताङ्गस्याष्टादशमध्ययनम् । उत्त० ६१६ ।
किरियवादी–क्रियावादी जीवादिपदार्थसद्भावोऽस्त्येवेत्येव सावधारणक्रियाभ्युपगमो यस्य सोऽस्तीति । सूत्र० २०२ । क्रिया–जीवादिपदार्थोऽस्तीत्यादिका वदितु शील यस्य स । सूत्र० २०८ ।
किरियविसाल–क्रिया –कायिक्यादिका विशाला –विस्तीर्णा सभेदत्वादभिधीयन्ते तत् क्रियाविशालम् । सम० २६ ।
किरिया–अनुष्ठानम् । ठाणा० ५०३ । क्रिया–सम्यक्सयमानुष्ठानम् । प्रज्ञा० ५६ । कर्मबन्ध । बृ० द्वि० ७१ आ । क्रियन्ते मिथ्यात्वादिक्रोडीकृतैर्जन्तुभिरिति क्रिया । कर्मबन्धनिबन्धनभूताश्चेष्टा । उत्त० ६१३ । अस्ति परलोकोऽस्त्यात्माऽस्ति च सकलक्लेशाकलङ्कित मुक्तिपदमित्यादिप्ररूपणात्मिका क्रिया । भग० ६२५ । आस्तिकता । ठाणा० ४०८ । योग, व्यापार, कर्म । विशे० २०६ । कायिक्यादिका आस्तिक्यमात्र वा । सम० ५ । कायिक्यादि सयमक्रिया च । नदी० २४१ । देशान्तरप्राप्तिलक्षणा । विशे० ८३६ । अनुष्ठानम् । ठाणा० ५०६ । क्रिया–चारित्रम् । व्य० द्वि० ४५७ आ । वैद्योपदेशाद् औषधपानम् । नि० चू० प्र० १०१ अ । क्रिया–अस्तिवादरूपा । दश० २४२ । चेष्टा परिस्पन्दनलक्षणा । आव० ५२५ । सदनुष्ठानम् । सूत्र० ३६१ । अस्ति परलोक इत्यादिप्ररूपणात्मिका । उत्त० १७ । करण क्रिया, कर्मबन्धनिबन्धना चेष्टा । आव० ६४२ । भग० १२१ । प्राणातिपातादिका । जीव० १२८ । एतन्नामा भगवतीसूत्रस्य तृतीयशतकस्य तृतीयोद्देशक । भग० १८६ । क्रिया-करण तज्जन्यत्वात् कर्मापि क्रिया । क्रियत इति क्रिया कर्म एव । भग० १८२ । करण क्रिया–कर्मबन्धनिबन्धन चेष्टा । प्रज्ञा० ४३५ । प्रज्ञापनाया द्वाविंशतितम पदम् । प्रज्ञा० ६ । क्रिया । आव० ११६ । अत्थिवादो । दश चू० १३ ।
किरियाठाणा–क्रियास्थानानि–करण क्रिया–कर्मबन्धनिबन्धनचेष्टा तस्या स्थानानि–भेदा–पर्याया क्रियास्थानानि । सम० २५ । सूत्रकृताङ्गस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धे द्वितीयमध्ययनम् । सम० ४२ । सूत्रकृताङ्गस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धे द्वितीयमध्ययनम् । ठाणा० ३८७ ।
किरियातीता–किरियाए कीरमाणीएवि जा ण पण्णपति सा । नि० चू० प्र० २११ अ ।
किरियारुइ–क्रिया–सम्यक्सयमानुष्ठान तत्र रुचिर्यस्य स क्रियारुचि । प्रज्ञा० ५६ ।
किरियारुई–क्रियारुचि –दर्शनाद्याचारानुष्ठाने यस्य भावतो रुचिरस्तीति स । ठाणा० ५०४ । क्रिया–अनुष्ठान तस्मिन् रुचिर्यस्य स । उत्त० ५६३ ।

कित्तणं–कीर्त्यते–सशब्दयते येन कारयिता तत् कीर्त्तन देवकुलादि । प्रश्न० ६५ ।

कित्तणय–कीर्त्तन शब्दनम् । आव० १८१ ।

कित्तणा–कीर्त्तना सशब्दना । आव० ४६२ ।

कित्ति–कीर्तिकूट–केसरिह्लदसुरीकूटम् । ज० प्र० ३७७ । कीर्त्ति एकदिगव्यापी । भग० ६७३ । दश० २५७ । एकदिग्गामिनी प्रख्यातिर्दानफलभूता वा । भग० ६४३ । जातितपोवाहुश्रुत्यादिजनिता श्लाघा । दानसाध्या । सूत्र० १८२ । दानपुण्यफला । आव० ४६६ । प्रसिद्धि । प्रश्न० ३६ । केसरिह्लदे देवताविशेष । ठाणा० ७३ । सर्वदिग्व्यापी साधुवाद । ठाणा० ५०३ । एकदिग्गामिनी प्रमिद्धि । भग० ५४१ । एकदिग्गामिनी प्रसिद्धि सर्वदिग्गामिनी सैव । ठाणा० १३७ । दानपुण्यफला किर्त्ति । ठाणा० १३७ । गुणोत्कीर्त्तनरूपा प्रशसा, एकदेशगामिनी पुण्यकृता वा कीर्त्ति । प्रज्ञा० ४७५ ।

कित्ति(त्ती)–चतुर्थवर्गे चतुर्थमध्ययनम् । निरय० ३७ । प्रख्याति । ज्ञाता० २२० ।

कित्तिकर–दानपुण्यफला कीर्त्तिस्तत्करणशील कीर्त्तिकर । आव० ४६६ ।

कित्तिताइ–कीर्त्तितानि–सशब्दितानि नामत । ठाणा० २६७ ।

कित्तिम–कृत्रिम –योगेन निष्पन्न । ओघ० १६८ । कृत्रिम – क्रमेण शिल्पिकर्पकादिप्रयोगनिष्पन्न । ज० प्र० ६६ ।

कित्तिमई–किर्त्तिमती, कीर्त्तिसेनसुता ब्रह्मदत्तराज्ञी च । उत्त० ३७९ । अलोभोदाहरणे श्रावस्त्यामजितसेनाचार्यस्य महत्तरिका । आव० ७०१ ।

कित्तिय–कीर्त्तित–जनेन समुत्कीर्तित कीर्त्तिद वा । औप० ५ । कीर्त्तित स्वनामभि प्रोक्त । आव० ५०७ ।

कित्तिया–कीर्त्तिता प्रदर्शिता । आचा० ४२ । कृत्तिका–अग्निभूतेर्जन्मनक्षत्रम् । आव० २५५ ।

कित्तिसेणो–कीर्त्तिसेन –ब्रह्मदत्तपत्न्या कीर्त्तिमत्या पिता । उत्त० ३७९ ।

कित्ती–कीर्त्ति एकदिग्गामिनी । प्रश्न० ८६ । कीर्त्ति ख्यातिहेतुत्वात् । अहिंसाया पञ्चम नाम । प्रश्न० ९९ । दानपुण्यफलभूता, एकदिग्गामिनी वा प्रसिद्धि । प्रश्न० १३६ । दानकृता एकदिग्गामिनी वा प्रमिद्धि । औप० १०८ । एकदिग्गामिनी प्रसिद्धि । बृ० तृ० ३६ आ ।

कित्तोजीविय–कीर्त्तिजीवितम् । आव० ४८० ।

कित्तीपुरिसा–कीर्त्तिप्रधाना पुरुषा कीर्त्तिपुरुषा । ठाणा० ४४८ ।

कित्तीपुरिसो–कीर्तिपुरुप वासुदेव । आव० १५६ ।

कित्तेइ–कीर्त्तयति–तत्समाप्तौ इदमिद चेहादिमध्यावसानेषु कर्त्तव्य तच्च मया कृतमिति कीर्त्तनात् । उपा० १५ ।

किन्न–कीर्ण क्षिप्त । ठाणा० ४६४ ।

किन्नगन्थे–कीर्ण –क्षिप्त ग्रन्थो–धनधान्यादिस्तत्प्रतिबन्धो वा येन स किर्णग्रन्थ । ठाणा० ४६४ ।

किन्नपुडगसठिओ–आवलिकाबाह्यस्य नवम सस्थानम् । जीवा० १०४ ।

किब्बिस–किल्विषस्य पापस्य हेतुत्वात्, द्वितीयाधर्मद्वारस्य द्वादश नाम । प्रश्न० २६ । पापा । बृ० प्र० २१२ आ ।

किब्बिसभावणा–किल्विपभावना । उत्त० ७०७ ।

किब्बिसिआ–किल्विषिका –परविदूषकत्वेन पापव्यवहारिणो भाण्डादय । ज० प्र० २६७ । पातकफलवन्तो नि स्वान्धपङ्ग्वादय । ज्ञाता० ५६ । किल्विप–पाप उदये विद्यते येपा ते किल्विषिका पापा । ठाणा० १६२ ।

किमंग पुण–किं पुनरिति पूर्वोक्तार्थस्य विशेषद्योतनार्थम् अङ्गेत्यामन्त्रणे यद्वा परिपूर्ण एवाय शब्दो विशेषणार्थे । निरय० ७ ।

किमाइया–किमादिका–उपादानकारणव्यतिरेकेण किमादि मौल कारण यस्या सा । प्रज्ञा० २५६ ।

किमाई–किमादि –मौल कारणम् । प्रज्ञा० २५६ ।

किमाहार–चतुर्दशशते पष्ठोद्देश । भग० ६३० ।

किमिकुट्ठ–कृमिसकुल कोष्टमुदर कृमिकोष्ठ । व्य० द्वि० ३५० अ । कृमिकुष्ठ –रोगविशेप । आव० ११६ ।

किमिच्छए–क किमिच्छतीत्येव यो दीयते म किमिच्छक । दश० ११७ ।

किमिच्छय–यो यदिच्छति तस्य तद्दान ममयत एव किमिच्छकम् । आव० १३६ ।

किमिण–कृपण । ठाणा० ३४२ । कृमय –अशुच्यादिसम्भवा । उत्त० ६९५ । कतिपयकृमिवत् । ज्ञाता० १७७ ।

किमिणा–कृमिवन्त । प्रश्न० ६० ।
किमिय–कृमिक जन्तुविशेष । आव० ११७ ।
किमियडसठितो–आवलिका वाह्यस्याष्टम मस्थानम् । जीवा० १०४ ।
किमिरागकबले–कृमिरागेण रक्त कम्बल कृमिरागकम्बल । प्रज्ञा० ३६१ ।
किमिरागो–कृमिराग । ज० प्र० ३४ ।
किमिरासि–वनस्पतिविशेष । भग० ८०४ । साधारणबादरवनस्पतिकायविशेप । प्रज्ञा० ३४ ।
किमुलग–वनस्पतिविशेष । भग० ८०२ ।
कियाडियाए–कर्णेन । व्य० प्र० ६ आ ।
किर–किल–परोक्षाप्तपादसूचक । उत्त० ३४३, । अपारमार्थिकत्वख्यापक । उत्त० ३४३ । परोक्षाप्तवादसूचक सम्भावने । उत्त० ७१२ । परोक्षाप्तवादसूचक । उत्त० ६२० । सशये । आव० २४० । परोक्षाप्तागमवादससूचक । आव० १३० । किल–लक्षणमेवास्येदमभिधीयते न पुनस्त कोऽपि छेत्तु भेत्तु वाऽऽरभत इत्यर्थससूचनार्थं । भग० २७६ ।
किराइ–किल । आव० ६१ ।
किराडय–किराटक द्रव्यम् । आव० ८२२ ।
किरिकिरिया–तेपामेव वशादिकम्बिकातोद्यम् । आचा० ४१२ ।
किरिमालए–किरिमालक । दश० ५१ ।
किरिय–क्रिया–सम्यगवाद । आव० ७६२ । चिकित्सा । आव० ५६६ । कायिक्यादिक्रियाभिधानार्थ । अष्टमशते चतुर्थोद्देशक । भग० ३२८ ।
किरियट्ठाण–क्रियास्थानम् । आव० ६५८ ।
किरियठाण–क्रियास्थान–सूत्रकृताङ्गस्याष्टादशमध्ययनम् । उत्त० ६१६ ।
किरियवादी–क्रियावादी जीवादिपदार्थसद्भावोऽस्त्येवेत्येव सावधारणक्रियाभ्युपगमो यस्य सोऽस्तीति । सूत्र० २०२ । क्रिया–जीवादिपदार्थोऽस्तीत्यादिका वदितु शील यस्य स । सूत्र० २०८ ।
किरियविसाल–क्रिया–कायिक्यादिका विशाला–विस्तीर्णा सभेदत्वादभिधीयन्ते तत् क्रियाविशालम् । सम० २६ ।
किरिया–अनुष्ठानम् । ठाणा० ५०३ । क्रिया–सम्यक्सयमानुष्ठानम् । प्रज्ञा० ५६ । कर्मवन्ध । बृ० द्वि० ७१ आ । क्रियन्ते मिथ्यात्वादिक्रोडीकृतैर्जन्तुभिरिति क्रिया । कर्मवन्धनिवन्धनभूताश्चेष्टा । उत्त० ६१३ । अस्ति परलोकोऽस्त्यात्माऽस्ति च सकलक्लेशाकलङ्कित मुक्तिपदमित्यादिप्ररूपणात्मिका क्रिया । भग० ६२५ । आस्तिकता । ठाणा० ४०८ । योग, व्यापार, कर्म । विशे० २०६ । कादिक्यादिका आस्तिक्यमात्र वा । सम० ५ । कायिक्यादि सयमक्रिया च । नदी० २४१ । देशान्तरप्राप्तिलक्षणा । विशे० ८३६ । अनुष्ठानम् । ठाणा० ५०४ । क्रिया–चारित्रम् । व्य० द्वि० ४५७ आ । वैद्यापदेशाद् औपधपानम् । नि० चू० प्र० १०१ अ । क्रिया–अस्तिवादरूपा । दश० २४२ । चेष्टा परिस्पन्दनलक्षणा । आव० ५२५ । सदनुष्ठानम् । सूत्र० ३६१ । अस्ति परलोक इत्यादिप्ररूपणात्मिका । उत्त० १७ । करण क्रिया, कर्मवन्धनिवन्धना चेष्टा । आव० ६४२ । भग० १२१ । प्राणातिपातादिका । जीव० १२८ । एतन्नामा भगवतीसूत्रस्य तृतीयशतकस्य तृतीयोद्देशक । भग० १८६ । क्रिया-करण तज्जन्यत्वात् कर्मापि क्रिया । क्रियत इति क्रिया कर्म एव । भग० १८२ । करण क्रिया–कर्मवन्धनिवन्धनचेष्टा । प्रज्ञा० ४३५ । प्रज्ञापनाया द्वाविंशतितम पदम् । प्रज्ञा० ६ । क्रिया । आव० ११६ । अत्थिवादो । दश चू० १३ ।
किरियाठाणा–क्रियास्थानानि–करण क्रिया–कर्मबन्धनिबन्धनचेष्टा तस्या स्थानानि–भेदा–पर्याया क्रियास्थानानि । सम० २५ । सूत्रकृताङ्गस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धे द्वितीयमध्ययनम् । सम० ४२ । सूत्रकृताङ्गस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धे द्वितीयमध्ययनम् । ठाणा० ३८७ ।
किरियातीता–किरियाए कीरमाणीएवि जा ण पण्णपति सा । नि० चू० प्र० २११ अ ।
किरियारुइ–क्रिया–सम्यक्सयमानुष्ठान तत्र रुचिर्यस्य स क्रियारुचि । प्रज्ञा० ५६ ।
किरियारुई–क्रियारुचि–दर्शनाद्याचारानुष्ठाने यस्य भावतो रुचिरस्तीति स । ठाणा० ५०४ । क्रिया–अनुष्ठान तस्मिन् रुचिर्यस्य स । उत्त० ५६३ ।

किरियावरण–क्रियामात्रस्यैव–प्राणातिपातादेर्जीवे क्रियमाणस्य दर्शनात्तद्धेतुकर्म्मणश्चादर्शनात् क्रियैवावरण–कर्म्म यस्य स क्रियावरण । ठाणा० ३८३ ।

किरियावाई–क्रिया कर्तारं विना न सम्भवति सा चात्मसमवायिनीति वदन्ति तच्छीलाश्च ते क्रियावादिन । क्रिया जीवादिपदार्थोऽस्तीत्यादिका वदितु शील येषा ते क्रियावादिन । क्रियाप्रधानम् । भग० ९४४ । क्रियावादी–क्रियैव–चैत्यकर्मादिका प्रधान मोक्षाङ्गमित्येव वदितु शील यस्य स । सूत्र० ३७ । तत्र न कर्त्तार विना क्रिया सम्भवति तामात्मसमवायिनी वदन्ति ये तच्छीलाश्च ते क्रियावादिन । आव० ८१६ । तत्र न कर्त्तार विना क्रिया सम्भवतीति तामात्मसमवायिनी वदन्ति ये तच्छीलाश्च ते क्रियावादिन । सम० ११० । नियतशुक्लपाक्षिका । दशाश्रु० । सकलमतसमवसरणे कथञ्चिदात्माद्यस्तित्वादि क्रियावादिन सम्यग्दृग । भग० ९४४ ।

किरियावादी–आत्मसमवायिनी वदन्ति तच्छीलाश्च ये ते क्रियावादी । नदी० २१३ । क्रिया वदतीति क्रियावादी वेज्जेत्यर्थ । नि० चू० तृ० ६६ आ । क्रिया–जीवाजीवादिरर्थोऽस्तीत्येवरूपा वदन्तीति क्रियावादिन आस्तिका । ठाणा० २६८ । यत कर्मयोगनिमित्त वध्यते, योगश्च व्यापार स च क्रियारूप, अत कर्मण कार्यभूतस्य वदनात्तत्कारणभूताया क्रियाया अप्यसावेव परमार्थतो वादीति । आचा० २२ ।

किरियाविसालपुव्व–त्रयोदशपूर्वम् । ठाणा० १९९ ।

किरियाविहाण–क्रियाविधान–सिद्धक्रियाविधि । प्रश्न० ११७ ।

किरियाहि–क्रिया- सावद्याऽनवद्ययोगनिवृत्तिप्रवृत्तिरूपा । विशे० ६ ।

किलन–क्लान्त –ग्लानिमुपगत । जीवा० १२२ । ग्लानिभूत । ज्ञाता० २८ ।

किलकिलाइयरवे–किलकिलायितरव सानन्दशब्द । ज० प्र० ५३० ।

किलकिलायमान –किलकिलशब्द कुर्वाण । नदी० १५८ ।

किलाम–क्लम शरीरायास । भग० २९५ । देहग्लानिरूप । आव० ५४७ । ग्लानि । ठाणा० १३ ।

किलामणया–ग्लानिनयनम् । भग० १८४ ।

किलामिओ–क्लामित समुद्घात नीत, ग्लानिमापादित । आव० ५७४ ।

किलामेति–क्लमयन्ति--मूर्च्छापन्नान् कुर्वन्ति । प्रज्ञा०५९२ ।

किलामेइ–मारणान्तिकादिसमुद्घात नयति । भग०२३० ।

किलामेह–क्लमयथ--मारणान्तिकसमुद्घात गमयथ । भग० ३८१ ।

किलिच–शलाका । भक्त० । किलिञ्च–क्षुद्रकाष्ठरूप । दश० १५२ ।

किलिजेण– । राज० १४१ ।

किलिकिञ्चित–रोषभयाभिलापादिभावाना युगपद्वा । सम० ६४ ।

किलिकिलाइत–किलकिलायितम् । आव० ३४८ ।

किलिकिलितो–किलकिलायमान । आव० ४२२ ।

किलिट्ठं–क्लिष्ट–बाधितम् । उत्त० १२२ ।

किलिन्न –क्लिन्न–निचितम् । उत्त० १२२ ।

किलीबे–क्लीबे–नपुसक । आचा० ३३१ ।

किलेसो–क्लेश –रोग । पिण्ड० ७० । क्लेश शारीरी । सूर्य० २९७ ।

किल्बिषिका–अन्त स्यस्थानाया । तत्त्व० ४, ४ ।

किवण–कृपणा –रङ्कादयो दु स्था । ठाणा० ३४२ । दरिद्रा आचा० ३२५ । अपरित्यागशील, अहवा दारिद्दोवहतो जायगो कृपण । नि० चू० द्वि० ९८ आ । कृपण –रङ्क । भग० १०१ । दीनो वराकक, इन्द्रियै पराजित । सूत्र० ७२ । रङ्का –रङ्कादयो दुस्था । ठाणा० ३४१ । प्रश्न० २५ ।

किवणकलुणो–कृपणाना मध्ये करुण कृपणकरुण । अत्यन्तकरुण । प्रश्न० ५९ ।

किवणकुलाणि–कृपणकुलानि–तर्क्कणवृत्तीनि । ठाणा० ४२० ।

किविण–कृमिवत् । प्रश्न० १९२ । कृपण –पिण्डोलक । दश० १८४ ।

किविणवणीमते–कृपणा –रङ्कादयो दुस्था, परेषामात्मदुस्थत्वदर्शनेनानुकूलभाषणतो यल्लभ्यते द्रव्य सा वनी प्रतीतो ता पिबति–आस्वादयति पातीति वेति वनीप स एव

वनीपक–याचक । ठाणा० ३४१ ।

किव्विस–किल्बिष क्लिष्टतया निकृष्टमशुभानुबन्धि अधम । उत्त० १८३ । किल्बिषिक कर्म । दश० १८६ । किल्बिप पापम् । प्रज्ञा० ४०५ ।

किव्विसत्त–किल्बिपत्व–चाण्डालप्रायदेवविशेषत्वम् । प्रश्न० ११२ ।

किस–कृश स्तोकमपि तृणतुषादिकमपीत्यर्थ । कसन–कस परिग्रहग्रहणवुद्धया जीवस्य गमनपरिणाम । सूत्र० १३ ।

किसलय–किशलय–अवस्थाविशेषोपेत पल्लवविशेष । जीवा० १८८ । किशलय–अवस्थाविशेषोपेत पल्लव-विशेप । ज० प्र० २६ । अतिकोमल । ज० प्र० ५३ । अभिनवपत्रम् । उत्त० ३३४ ।

किसि–कृषि–क्षेत्रकर्षणकर्म । प्रश्न० ६७ ।

किसिपरासरो–कृषिप्रधान पारासर कृषिपारासर । उत्त० ११८ । शरीरेण कृशस्तेन पारासर कृशपारासर । उत्त० ११६ ।

किसी–कृषि–कृषिकर्मोपजीवी । जीवा० २७६ ।

किसीए–कृषीकरणम् । आचा० ३२ ।

किहं–केन प्रकारेण । भग० ११६ ।

कीअ–कीचक वश । दश० २४३ ।

कीअगड–क्रीतकृत–द्रव्यभावक्रयक्रीतभेदम् । दश० १७४ ।

कीएइ–भोजनदोष । भग० ४६६ ।

कीकश–अस्थि । प्रश्न० ११ ।

कीकस– । आव० ६५१ ।

कीट–कचवरनिश्रितो जीवविशेष । आचा० ५५ ।

कीटज–यत्तयाविधकीटेभ्यो लालात्मक प्रभवति यथा पटसूत्रम् । उत्त० ५७१ ।

कीड–कीट कृमि । दश० १४२ । घुणादि । बृ० प्र० १५२ आ । चतुरिन्द्रियजीवभेद । प्रज्ञा० ४२ । जीवा० ३२ । उत्त० ६६६ ।

कीडति–क्रीडति–यथासुखमितस्ततो गमनविनोदेन गीत-नृत्यादिविनोदेन वा तिष्ठति । जीवा० २०१ ।

कीडय–वडयपट्टोति । नि० चू० प्र० १२६ अ ।

कीडाए–क्रीडार्थे–लघनवलग्नास्फोटनक्रीडाना योग्य । आचा० १०६ ।

कीते–द्रव्येण भावेन वा क्रीत–स्वीकृत यत्तत्क्रीतमिति । ठाणा० ४६० ।

कीय–शवले पट्ठो दोप । सम० ३६ । क्रीत–मूल्येन परिगृहीतम्, अष्टमदोप ।

कीयकड–क्रीतेन–क्रयेण कृत–साधुदानाय कृत क्रीतकृतम् । प्रश्न० १५४ ।

कीयगड–क्रयण क्रीत तेन कृत–निष्पादित क्रीतकृत, क्रीत-मित्यर्थ । पिण्ड० ६५ । भग० २३१ । क्रीतकृतम् । आचा० ३२६ । कयेण–कड कीयकड, कत्तिएण वा कड–कीयगड । नि० चू० द्वि० १०३ आ ।

कीयतिय–क्रीतत्रितय–क्रयणक्रापणानुमतिरूपम् । दश० १६८ ।

कीरत–क्रियमाण । ज्ञाता० १७३ ।

कीर–शुक । जीवा० १८८ ।

कीत्ति–नीलवधरपवते पञ्चमकूट । ठाणा० ७२ ।

कील–कीलकम् । दश० १७६ । कण्ठ । सूत्र० १३० ।

कीलति–यथासुखमितस्ततो गमनविनोदेन गीतनृत्यादिविनोदेन वाऽवतिष्ठन्ते । ज० प्र० ४६ । कामक्रीडा कुर्वन्ति । भग० ६१८ ।

कीलइ–क्रीडति । आव० १६२ ।

कीलओ–कीलक । प्रश्न० ५६ ।

कीलक–कपूराकारम् । बृ० द्वि० २४५ अ ।

कीलगसहस्स–कीलकसहस्र महत्कीलम् । जीवा० १८६ ।

कीलसस्थाने–कीलवद्दीर्घमुच्च गत तस्मिन् । ओघ० २११ ।

कीलावणधाती–चउत्थी धाई । नि० चू० द्वि० ६३ आ । क्रीडनकारिणी । ज्ञाता० ४१ ।

कीलिआइ–क्रीडत–स्त्रीभि सह तदन्या क्रीडेति । सम० १६६ ।

कीलिका–यत्रास्थीनि कीलिकामात्रबद्धानि तत् । जीवा० १५, ४२ । अस्थित्रयस्यापि भेदकमस्थि । राज० ५७ । यत्रास्थीनि कीलिकामात्रबद्धान्येव भवन्ति तत् । प्रज्ञा० ४७२ ।

कीलिगा–अस्थित्रयस्यापि भेदकमस्थि । ज० प्र० १५ ।

कीलिय–क्रीडित द्यूतादिक्रीडा । प्रश्न० १४० । कीलिका लोहरेखा । दश० ६१ ।

कीव–कीव पक्षिविशेष । प्रश्न० २३ । मन्दसंहननम् ।

भग० ४७१ । नामविशेष । ज्ञाता० २०८ । मैथुनाभिप्राये यस्याङ्गादान विकार भजति वीजविन्दूश्च परिगलति स क्लीव । वृ० तृ० ६६ आ । क्लीव –असमर्थ । ठाणा० १६४ । क्लीव –नि सत्त्व । उत्त० ४५७ ।

कीस–कस्मात् । उत्त० १३५ । कीसत्ता–किंस्वता, किंस्वभावता, कीदृशता वा क प्रकार –किंस्वरूपतेत्यर्थ । भग० २२ । किम् । व्य० द्वि० ६७ अ ।

कुंकण–चतुरिन्द्रियजीवविशेष । उत्त० ६६६ । कोकनद । प्रज्ञा० ३७ ।

कुंकुम–केशर । अनु० १५४ । आव० ८२३ । जीवा० १६१ । कुङ्कुम, जात्यघुसृणम् । ज० प्र० २१३ । कुङ्कुम–कश्मीरजम् । प्रश्न० १६२ । नि० चू० प्र० २७६ आ, १३६ अ ।

कुंकुमकेसर–पद्मकम् । दश० २०६ ।

कुंकुमपुड–गन्धद्रव्य । ज्ञाता० २३२ ।

कुंकुमचच्चिक्कछुरियतो–कुंकुमहस्तकव्यासाग । पउ० २८–२८ ।

कुच–क्रौञ्च–पक्षिविशेष । उत्त० ४०७ । सम० १५८ । प्रश्न० २ ।

कुचवीरगो–सगडपक्खिसारित्थ जलजाण कज्जति । नि० चू० तृ० १७ अ ।

कुचिक–तापसविशेष । व्य० प्र० ६४ आ ।

कुचिका– । नदी १६५ । तालोद्घाटिनी । पिण्ड० १०६ ।

कुंचितो–तावसविशेसो । नि० चू० तृ० १०१ आ ।

कुंचिय–कुञ्चित – कुण्डलीभूत । भग० १० । वक्र । प्रश्न० ८२ ।

कुचियवेधि– । नि० चू० तृ० ५६ आ ।

कुची–कुडिलो, मायावी । व्य० प्र० ६३ आ ।

कुजरसेणा–कुञ्जरसेना–ब्रह्मदत्तस्याष्टाग्रमहिषीणा मध्ये पञ्चमी । उत्त० ३७६ ।

कुंजरावत्त–वज्रस्वामिपूजास्थानम् । मर० ।

कुंजरो–कौजीर्यंतीति कुञ्जर कुञ्जे–वनगहने रमति-रतिमाबध्नातीति कुञ्जर । जीवा० १२२ ।

कुंट–हीनहस्त । नि० चू० द्वि० ४३ आ । विकृतहस्त । प्रश्न० २५ । अवयवविशेष । आचा० ३८६ ।

कुटत्त–कुण्टत्व पाणिवक्रत्वादिकम् । आचा० १२० ।

कुटितो–कुण्टित । आव० ३६६ ।

कुंडं–पुढविमय । दश० चू० ६६ । गङ्गाकुण्डादि । नदी० २२८ । कुलिय । नि० चू०द्वि० २४ आ । स्थलविशेष । भग० १४२ ।

कुंडग–सण्हतडुलकणियाओ कुकुसा य कुडगा । नि० चू० प्र० ३२ अ । कुडङ्गम्–जालि । आव० ६७० । पानीयभाजनम् । नि० चू० द्वि० ६६ आ । कुण्डक –कणक्षोदनोत्पन्नकुक्कुस । उत्त० ४५ ।

कुंडग्गाम–कुण्डग्राम, वर्धमानस्वामिविहारभूमि । आव० २१६ । ब्राह्मणकुण्डग्रामविषयोऽष्टमशते त्रयस्त्रिंशत्तमोद्देशक । भग० ४२५ । वैश्यायनतापसस्थानम् । भग० ६६५ ।

कुंडदोहणी–कुण्डदोहनी । ओघ० ६७ ।

कुंडधारपडिमाओ–कुण्डधारप्रतिमे–आज्ञाधारप्रतिमे । ज० प्र० ८२ ।

कुंडधारी–तीर्यक्जृम्भकदेवविशेष । आचा० ४२२ ।

कुंडपुर–कुण्डपुर–वर्द्धमानजन्मभूमि । आव० १६० । प्रव्रज्यास्थानम् । आव० ३१२ । सुदर्शनाया वास्तव्यस्थानम् । उत्त० १५३ ।

कुडमोए–कुण्डमोद, हस्तिपादाकार मृन्मय पात्रम् । दश० २०३ ।

कुडरिया–साधारणवादरवनस्पतिकायविशेष । प्रज्ञा० ३४ ।

कुडरोट्ट– । नि० चू० प्र० १६६ अ ।

कुडल–कुण्डल–कर्णाभरणविशेषरूप । प्रज्ञा० ८८ । कर्णाभरणविशेष । औप० ५० । भूषणविधिविशेष । जीवा० २६८ । अरुणवरावभाससमुद्रानन्तर द्वीप, तदनन्तर समुद्रोऽपि । प्रज्ञा० ३०७ । कुण्डल–कर्णाभरणविशेष । भग० १३२ ।

कुंडलजुअलं–कुण्डलयुगल–कर्णाभरणम् । आव० १८० ।

कुडलभद्दो–कुण्डलभद्र –कुण्डले द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३६८ ।

कुंडलमहाभद्दो–कुण्डलमहाभद्र – कुण्डले द्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३६८ ।

कुंडलवर–द्वीपविशेष । अनु० ९० । कुण्डलवरे समुद्रे पूर्वार्द्धधिपतिर्देव । जीवा० ३६८ । कुण्डलसमुद्रानन्तर द्वीप, तदनन्तर समुद्रोऽपि । प्रज्ञा० ३०७ । कुण्डलवराख्ये द्वीपे प्राकारकुण्डलाकृति–कुण्डलवर –। ठाणा० १६६, १६७ । कुण्डलवर कुण्डलसमुद्रपरिक्षेपी द्वीपविशेष । कुण्डलवरद्वीपपरिक्षेपी समुद्रश्च । जीवा० ३६८ ।

कुडलवरभद्दो–कुण्डलवरभद्र कुण्डलवरद्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३६८ ।

कुडलवरमहाभद्दो–कुण्डलवरमहाभद्र कुण्डलवरे द्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३६८ ।

कुडलवरमहावर–कुण्डलवरे समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३६८ ।

कुडलवरावभास–कुण्डलवरसमुद्रानन्तर द्वीप, तदनन्तर समुद्रोऽपि । प्रज्ञा० ३०७ ।

कुडलवरावभासभद्द–कुण्डलवरावभासे द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३६८ । कुण्डलवरसमुद्रपरिक्षेपी द्वीप, कुण्डलवरावभासद्वीपतत्परिक्षेपी समुद्रश्च । जीवा० ३६८ ।

कुडलवरावभासमहाभद्द–कुण्डलवरावभासे द्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३६८ ।

कुडलवरावभासमहावर–कुण्डलवरावभासे समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३६८ ।

कुडलवरावभासवर–कुण्डलवरावभासे समुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३६८ ।

कुडला–कुण्डला सुकच्छविजये राजधानी । जं० प्र० ३५२ ।

कुडलाओ–विदेहेषु राजधानी, विशेषनाम । ठाणा० ८० ।

कुडलिक–मात्रक हस्तो वा । ओघ० १६७ ।

कुडलो–कुण्डल अरुणवरावभाससमुद्रपरिक्षेपी द्वीपविशेष । ओघ० १६८ । कुण्डलद्वीपपरिक्षेपी समुद्रश्च । जीवा० ३६८ । कुण्डल जम्बूद्वीपादेकादशकुण्डलाभिधानद्वीपान्तर्वर्ती कुण्डलाकारपर्वत । प्रश्न० ९६ ।

कुडाग–कुण्डाक सन्निवेश । आव० २०९ ।

कुडिआ–कुण्डिका । अनु० १५२ ।

कुडिका–कुण्डिका । उत्त० ११३ ।

कुडिगा–कमण्डलू । बृ० द्वि० २१ आ ।

कुंडिनी–भीष्मराजधानी । प्रश्न० ८८ ।

कुडिय–कुण्डिका कमण्डलू । भग० ११३ ।

कुडिया–कुण्डिका–कमण्डलू । प्रश्न० १५२ । औप० ९५ । आव० ३०५ । आलुका । अनुत्त० ५ । भग० ६६३ ।

कुडियायणस्स– । भग० ६७५ ।

कुडी–पानीयभाजनविशेष । नि० चू० तृ० ६१ अ ।

कुडुक्क–भूमिस्फोटकविशेष । आचा० ५७ ।

कुडुल्क–आलिन्दकम् । अनु० १५३ ।

कुढो–कुण्ढ–मायावी । उत्त० १०८ ।

कुत–भल्ल । आव० ५८८ । प्रज्ञा० ९७ । कुन्तम् । जीवा० ११७ । कुन्तक–एतावद्द्रव्यं त्वया देयमित्येव नियन्त्रणया नियोगिकस्य देशादेर्यत्समर्पणम् । विपा० ३९ । शस्त्रविशेष । जीवा० १९३ । कुन्त–भल्लाभिध शस्त्रविशेष । आव० ६५१ ।

कुतग्ग–कुताग्र–भल्लाग्रम् ।

कुतफल–कुन्तफलम् । आचा० ३११ ।

कुतल–शेखरक । ज्ञाता १३८ ।

कुंती–पाण्डुराजपत्नी । प्रश्न० ८७ ।

कुथु–कुथव–सत्त्वा । ओघ० १२६ । अनुद्धरिप्रभृति । उत्त० ६९५ । पृथिव्याश्रितो जीवविशेष । आचा० ५५ । गोमयनिश्रितो जीवविशेष । आचा० ५५ । षष्ठ चक्रवर्तिनाम् । नि० चू० प्र० २७६ आ । कुन्थु–सप्तदशो जिन, मनोहरेऽभ्युन्नते महाप्रदेशे स्तूप रत्नविचित्र स्वप्ने द्रष्ट्वा प्रतिबुद्धा तेन तस्य कुन्थुरिति नामकृतम् । आव० ५०५ ।

कुथू–कु पृथ्वी तस्या स्थितवानिति कुस्थ । आव० ५०५ । षष्ठ चक्रवर्त्तिनाम । सम० १५२ । ठाणा० ३०२ । कुन्थु पष्ठ चक्री । आव० १५९ । त्रीन्द्रियजीवविशेष । प्रज्ञा० ४२ ।

कुथूपिवीलिया–कुन्थुपिपीलिका–त्रीन्द्रियजन्तुविशेष । जीवा० ३२ ।

कुदं–कुन्द कुसुमम् । प्रज्ञा० ३६१ । जीवा० २७२ । लताविशेष । भग० ८०२ । पुष्पजातिविशेष । ज्ञाता० ६९ । पुष्पविशेष । जं० प्र० ३५ ।

कुदकलिका–धवलपुष्पम् । प्रज्ञा० ९१ ।

कुंदगुम्मा–कुन्दगुल्मा । ज० प्र० ९८ ।
कुंदरुक्क–चीडाभिधानगन्धद्रव्य । प्रश्न० ७७ ।
कुंदु–वनस्पतिविशेष । भग० ८०४ ।
कुंदुरुक्क–चीडा । सम० १३८ । सिल्हकम् । सूर्य० २९३ । कुक्कटरुत । आव० ४०८ । चीडा । ज्ञाता० ४० । औप० ५ । वनस्पतिविशेष । भग० ८०४ । कुन्दुरुक्क–चीडाभिध द्रव्यम् । ज० प्र० १४४ । चीडा । प्रज्ञा० ८७ । कुन्दुरुक्क–चीडा । जीवा० १६०, २०६ ।
कुंदुलता–लताविशेष । जीवा० १८२ ।
कुंदो–गुल्मविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।
कुंभ–ललाटम् । वृ० तृ० १३ अ । आढकपष्ट्याादिप्रमाणत । ठाणा० ४६२ । कुभ एव, अहवा चउकट्ठि काउ कोणे कोणे घडओ वज्झति, तत्थ अवलंबिउ आरभिउ वा सतरण कज्जति । नि० चू० प्र०४४ आ । एगो घडणा वा । नि० चू० द्वि० ७७ आ । मुनिसुव्रतनाथस्य प्रथमशिष्य । सम० १५२ । एकोनविंशतितम तीर्थंकरस्य पिता । सम० १५१ । नवमस्वप्न । ज्ञाता० २० । नरके एकादश परमाधार्मिक । उत्त० ६१४ । आव० ६५० । सम० २९ । मल्लिजिनपिता । ज्ञाता० १२४ । आव० १६१ । सूत्र० १२४ । आढकाना षष्ट्या जघन्य कुम्भ अशीत्या मध्यम शतेनोत्कृष्ट इति । ज्ञाता० ११९ । घट । आव० २९७ ।
कुंभकारकड–उत्तरापथे प्रत्यन्तनगरम् । वृ० द्वि० १५३ अ । उत्तरापथे णगर । नि० चू० तृ० ४४ अ । कुम्भकारकटम् । उत्त० ११४ ।
कुंभकारापाक– । जीवा० १२४ ।
कुंभकारुक्खेवो–कुम्भकारोत्क्षेप –सेनापल्लया पत्तनविशेप । आव० ५३८ ।
कुंभग–मिथिलाया राजा । मल्लिपिता । ज्ञाता० १२४ ।
कुंभगारगड–कुम्भकारकृत –नगरविशेप । व्य० द्वि० ४३२ अ ।
कुंभगारो–कुम्भकार –ढङ्काभिधो श्रमणोपासक । आव० ३१३ ।
कुंभग्ग–कुम्भाग्र–मगधदेशप्रसिद्ध कुम्भप्रमाणमुक्तामय मुक्तादाम । जीवा० २१० । कुम्भपरिमाणत । ज्ञाता० १२६ ।
कुंभग्गसो–कुम्भाग्रश –अनेककुम्भपरिमाणानि । ज० प्र० १६२ ।
कुंभवलि–कुम्भवलिका । आव० ६७५ ।
कुंभार–प्रथमा श्रेणिविशेष । ज० प्र० १९३ ।
कुंभि–कुम्भी–पाकभाजनविशेप । प्रश्न० १६४ ।
कुंभिक– । प्रज्ञा० ११ ।
कुंभिका–कुम्भो मुक्ताफलाना परिमाणतया विद्यते येषु तानि कुम्भिकानि । ठाणा० २३२ ।
कुंभिक्का–कुम्भाग्र–मगधदेशप्रसिद्ध कुम्भपरिमाणम् । ज० प्र० ५६ ।
कुंभिपाग–कुम्भ्या–भाजनविशेपे–पाक कुम्भीपाक । सम० १२६ ।
कुंभी–नरके–रत्नप्रभादिनरकपृथिव्यात्मके स्थानानि–सीमन्तकाप्रतिष्ठानादीनि । उत्त० २४७ । मुखाकारा कोष्ठिका । वृ०द्वि० १७९अ । जस्स वसणा सुज्जति । नि० चू० द्वि० ३३ अ । कुम्भी–उष्ट्रिकाकृति । सूत्र० १२५ । पिठरक एव सङ्कटमुख कुम्भी । आचा० ३२७ । कुम्भी-नारकपचनस्थानम् । आव० ६५१ । वनस्पतिविशेष । भग० ५११ । कुम्भिक नरकपालविशेप । आव० ६५१ ।
कुइयण्ण–कुविकण गोमण्डलाधिपति । विशे० ३२८ ।
कुउव–कुतुप– चर्ममय घृतभरणभाजनम् । पिण्ड० १५४ ।
कुऊहल–कुतूहल–इन्द्रजालाद्यवलोकनगोचर । उत्त० १७१ ।
कुऊहल्ले–कुतूहल –औत्सुक्य । सूर्य० ५ ।
कुकुम्मा–मत्स्यवन्धवागुरिकादय । वृ० द्वि० ५१ अ । कुकर्माण –मात्स्यिकादय । ओघ० ७५ ।
कुच्छियकम्मा–मच्छवधगादयो । नि० चू०प्र०१०७ अ० ।
कुकम्मो–कुकर्मी–अङ्गारदाहककुम्भकारायस्कारादिक । सूत्र० १६१ ।
कुकुइया–भाण्डा । भाण्डप्राया । भग० ४७९ ।
कुकुच–भण्डचेष्ट । वृ० प्र० २१३ अ ।
कुकुचित–कुत्सित–अप्रत्युपेक्षितत्वादिना कुचित–अघस्पन्दित यस्य स कुकुचित । ठाणा० ३७३ ।
कुकुर–श्वा । वृ० प्र० ८१ आ । श्वा । आचा० ३१४ ।
कुकुला–फुफुका । दश० ११५ ।

कुकुस-कुक्कुसा-तुषप्राय, धान्यक्षोद । आचा० ३४२ ।
कुकूलानलो-कुकूलानल । कारीषाग्नि । प्रश्न० १४ ।
कुक्कडे-चतुरिन्द्रियजीवविशेष । उत्त० ६९६ ।
कुक्कुइआ-कौत्कुच्यकारिणो भाण्डा । ज० प्र० ३६४ ।
कुक्कुइए-कुत्सितसङ्कोचनादिक्रियायुक्त कुच कुकुचस्तद्-भाव कौकुच्यम् । अनेकप्रकारा मुखनयनोष्ठकरचरण-भ्रुविकारपूर्विकापरिहासादिजनिका भाण्डादीनामिव विड-म्बनक्रिया । आव० ८३० । कौकुचिक-कुकुचा वा-अवस्यन्दन प्रयोजनमस्येति । ठाणा० ३७३ । कौत्कुच्य-अनेकप्रकारा मुखनयनादिविकारपूर्विका परिहासादिज-निका भाण्डानमिव विडम्बनक्रिया । उपा० १०९ ।
कुक्कुइय-कुकुचेन-कुत्सितावस्पन्देन चरन्तीति कौकुचिका । ओप० ९२ । खुखुणकम् । सूत्र० ११७ ।
कुक्कुओ-स्थानशरीरभाषाभिश्चपल । बृ० तृ० २४७ अ ।
कुक्कुटमासक-बीजपूरककटाहम् । ठाणा० ४५७ ।
कुक्कुट्टी-कवलाना प्रमाण कुक्कुट्यण्डम् । शरीरम् । पक्षिणी । पिण्ड० १७३ ।
कुक्कुड-कुर्कुट-विद्यादिना दम्भप्रयोगलक्षणम् । व्य० प्र० १६६ अ । कुर्कुट-ताम्रचूड । ज्ञाता० १ । प्रश्न० ८ । कुक्कुडप्राय । ओघ० ५६ । चतुरिन्द्रियजीविशेष । प्रज्ञा० ४२ । कक्कुट-लोमपक्षिविशेष । जीवा० ४१ । कुक्कुटा चतुरिन्द्रियजन्तुविशेष । जीवा० ३२ ।
कुक्कुडगो-कुर्कुट । आव० ४२८ ।
कुक्कुडजाइय-कुक्कुटजातिक, अनेन पक्षिजातिरुद्दिष्टा । आचा० ३४० ।
कुक्कुडपोअ-कुक्कुटपोत-कुक्कुटचेल्लक । दश० २३७ ।
कुक्कुडमसए-कुक्कुटमासक-बीजपूरक कटाहम् । भग० ६९१ ।
कुक्कुडलक्खण-द्वासप्तती कलाया सप्तत्रिंशत्तमा । ज्ञाता० ३२ ।
कुक्कुडसडेयगामपउरा-कुक्कुडसम्पात्या ग्रामा सर्वासु दिक्षु विदिक्षु च प्रचुरा यस्या सा कुक्कुडसण्डेयग्रामप्रचूरा । राज० २ ।
कुक्कुडि-कुक्कुटि माया । पिण्ड० ९३ । कुक्कुटी-शरीरम् । व्य० द्वि० ३३३ आ ।
कुक्कुडिअडो-कुक्कुट्यण्डकम् । व्य० द्वि० ३३३ आ ।
कुक्कुडिअडगपमाण-कुक्कुट्यण्डकस्य यत् प्रमाण मान तत् । भग० २९२ ।
कुक्कुडिअडगपमाणमेत्ता-कुक्कुट्यण्डकप्रमाणमात्रा, कुक्कुट्य-ण्डकस्य यत्प्रमाण-मान तत्परिमाण-मान येषा ते तथा, अथवा कुकुटीव-कुटीरमिव जीवस्याश्रयत्वात् कुटी-शरीर कुत्सिता अशुचिप्रायत्वात् कुटी कुकुटी तस्या अण्डकमिवाण्डक उदरपूरकत्वादाहार कुकुट्यण्डक तस्य प्रमाणतो-मात्रा द्वात्रिंशत्तमागरूपा येषा ते । भग० २९२ ।
कुक्कुडिय-कोकुटिका-मातृस्थानकारिण । बृ० प्र० ३०५ अ ।
कुक्कुडी-कुकुटी-कुटीरम् । भग० २९२ ।
कुक्कुयय-खुखुणकम् । सूत्र० ११७ ।
कुक्कुरा-कुकुरी-श्वानस्ते च जिह्निसु । आचा० ३१० ।
कुक्कुस-तुषप्रायो धान्यक्षोद । दश० १७० ।
कुक्कुसा-अतिगुलीका । बृ० तृ० १९५ अ । कुक्कुसा-कणिक्का । आव० ६२२ ।
कुक्कुह-चतुरिन्द्रियजीवविशेष । प्रज्ञा० ४२ । जीवा० ३२ ।
कुचरा-चौरपारदारिकादय । आचा० ३०८ । कुत्सिय-चरा कुचरा पारदारकादि । नि० चू० तृ० ५८ अ ।
कुचा-मृत्तिकाया उदकस्य च वध । बृ० प्र० २९४ आ ।
कुचिकर्ण-मागधजनपदे धनपति । आव० ३४ ।
कुचेले-जीर्णकर्पट । ओघ० ७४ ।
कुच्च-कूचम् । आव० ३९१ ।
कुच्चधरो-कूर्चधर अन्त पुराधिष्ठायक । ओघ० ७४ ।
कुच्चग-कूर्चका क्रियन्ते येन । आचा० ३७२ ।
कुच्चो-कूर्चा-येन तृणविशेषेण कुविन्दा कूर्चान् कुर्वन्ति, कुशदर्भयोराकारकृतो विशेष । प्रश्न० १२८ ।
कुच्चिए-कूर्चधर । बृ० द्वि० ९० आ ।
कुच्ची-कुच्चहरा । नि० चू० द्वि० १७२ अ ।
कुच्छणा-कुत्सना-अङ्गुल्यन्तराणा कोथ । व्य० द्वि० ९ आ ।
कुच्छलवाहगा-त्रीन्द्रियजीवविशेष । प्रज्ञा० ४२ ।
कुच्छा-कुत्सा-प्रतिषेध । दश० २७० ।
कुच्छि-कुक्षि-द्विहस्तमान । प्रज्ञा० ४८ । द्विहस्तप्र-माणा । नदी० ९६ ।

कुच्छिकिमिया–कुक्षिकृमय –कुक्षिप्रदेशोत्पन्ना कृमय । जीवा० ३१ । कुक्षिप्रदेशोत्पन्ना कृमय कुक्षिकृमय । प्रज्ञा० ४१ ।

कुच्छिधार–कुक्षिधारा– नौपार्श्वनियुक्तका आवेल्लकवाहकादय । ज्ञाता० १३६ ।

कुच्छिय–कुत्सित असार । विशे० १०३७ ।

कुच्छिसूल–कुक्षिशूल –रोगविशेष । ज्ञाता० १२१ ।

कुच्छी–अष्टचत्वारिंशदङ्गुलप्रमाणा । भग० २७५ । अष्टचत्वारिंशदङ्गुलानि कुक्षि । ज० प्र० ९४ । कुक्षि –द्विहस्तमाना । जीवा० ४० ।

कुच्छेज्जा–कुथ्येत्–पूतिभाव यायात् । अनु० १६२ ।

कुज्जा–कुर्यात्–करोते सर्वधात्वर्थत्वाद् गृह्णीयात् । उत्त० ५३९ ।

कुटुंबिया–साधुसङ्घेण विच्छुद्धा खेताणी गच्छन्ति । नि० चू० प्र० १०७ अ ।

कुटुंबी–प्रभूतपरिचारकलोकपरिवृत । वृ० द्वि० २७६ आ ।

कुट्टणी–कण्डनकारिणी । वृ० द्वि० ६५ अ ।

कुट्टविंदो–वडपिप्पलआसत्थयमादिदाणवक्को मट्टियाए सह कुटिज्जति सो । नि० चू० तृ० ६४ अ ।

–चिश्वतिका । वृ० प्र० २६७ आ ।

कुट्टिज्जताणं– । राज० ५२ ।

कुट्टितं–छिद्रित । नि० चू० द्वि० ६५ अ ।

कुट्टिय–पत्थरादिणा । नि० चू० द्वि० १७२ आ ।

कुट्टियाओ– । नि० चू० प्र० १७१ आ ।

कुट्टेंब–कोट्टविनी–गामित्यर्थ । वृ० तृ० ९८ आ ।

कुट्ठं–कष्टम् । नि० चू० प्र० २८९ अ । रोगविशेष । नि० चू० प्र० १८८ अ । कुष्ठ–गन्धकहट्टविक्रेयो वस्तुविशेष । विशे० १७३ । नि० चू० प्र० १० आ ।

कुड–माया । नि० चू० द्वि० ६३ अ ।

कुडंग–वशजालिका । वृ० द्वि० ९ अ । वनखण्डम् । वृ० द्वि० २४६ अ । वशादिगहनम् । ज्ञाता० २३९ । देवकुल वृक्षविषमो वा । व्य० प्र० २०५ अ ।

कुडंगीसरट्ठाण–गन्धवदुज्जयिन्या स्थानम । मर० ।

कुडओ–चतु सेतिक कुडव । ज्ञाता० ११९ ।

कुडगं–तुसमुहीकणिया कुक्कससीमा कुडग भण्णति । नि० चू० प्र० १९६ अ ।

कुडगफाणिए–कुटजफाणित–कुटजक्वाथम् । प्रज्ञा० ३६४ ।

कुडगो–कुट –कुम्भ । आव० ३१० ।

कुडभी–लघुपताका । जीवा० २३९ । ज० प्र० ४०३, आव० ७१९ । ज० प्र० ३२५ । पताका । उत्त० ३०३ ।

कुडमुहे– । नि० चू० प्र० ३५७ आ ।

कुडय–कुटजपुष्पाणि । ज० प्र० २१२ ।

कुडयज्जुणणीव–कुटजार्जुननीपा–वृक्षविशेपास्तत् पुष्पाणि कुटजार्जुननीपानि । ज्ञाता० १६१ ।

कुडवं–मानविशेप । आव० ८२३ ।

कुडह– । ओघ० २०९ ।

कुडा–कुण्डानि–गङ्गाकुण्डानि ।

कुडागाराणि–कूटागारान्– पर्वतोपरिगृहाणि । आचा० ३८२, नदी० २२८ ।

कुडाविमा–वनस्पतिविशेष । भग० ८०२ ।

कुडाहच्चं–कूटाघातम् । राज० १३४ ।

कुडि–वृहती । आव० २६२ । कुटी । आव० ५२० ।

कुडिउ–वद्धाङ्ग । नि० चू० प्र० १६१ आ ।

कुडियठो–कुण्डिकाण्ठ । आव० २७३ ।

कुडिय–हृतगवेषक । उत्त० १०९ ।

कुडिलगइ–कुटिलगति –वक्रगति । आचा० ४२ ।

कुडिलो–कुटिल वक्र । प्रश्न० ३० ।

कुडिव्वय–कुटिव्रत –परिव्राजकविशेप । औप० ९१ ।

कुडी–कुटी–शरीरम् । भग० २९२ । गृह । आव० ४८४ ।

कुडीरग–कुटीरक, तृणादिनिर्मित लघुगृहम् । दश० १६६ ।

कुडीरी–ओरजम् । त० ।

कुडुंबजागरिय–कुटुम्बचिन्ताय जागरण–निद्राक्षय कुटुम्बजागरिका । ज्ञाता० ८३ ।

कुडुविणीओ–पदातिरूपा । भग० ५४८ ।

कुडुबिया–कतिपयकुटुम्बस्वामिन । राज० १२१ ।

कुडुभगो–जलमडुओ । नि० चू० प्र० ४५ अ ।

कुड्डग–वहुवीजविशेप । भग० ८०३ ।

कुड्डभं– । नि० चू० प्र० १८० आ ।

कुड्डंतर–कुड्यान्तर–कुडय खटिकादिरचित तेनान्तर–व्य-

वधान कुड्यान्तरम् । उत्त० ४२५ ।

–कुड्ड–भित्ति । आव० ६१९ । कुड्यम् । ओघ० ६१, १५३ । कायोत्सर्गे चतुर्थो दोष । आव० ७९८ । कुड्य –भित्ति । उत्त० ५३० । खटिकादिरचितम् । उत्त० ४२५ ।

कुड्मल–मुकुल, कलिका । जीवा० १८२ ।

कुड्य– । ठाणा० ३०१ । आचा० १६५ ।

कुड्यैकदेश –भित्तिमूलम् । दश० १७८ ।

कुढावय–अनुगमनम् । विशे० ६२० ।

कुढिय–हृतगवेषक । उत्त० ११० । ग्रामाधिप, आरक्षक । आव० २७२ ।

कुढिया–कुविया । नि० चू० प्र० ७७ अ ।

कुढो–चौरहृतागवेषक । बृ० द्वि० २२ अ । दश० चू० ४४ । नि० चू० प्र० ६ आ ।

कुणक्के–कुहणविशेष । प्रज्ञा० ३३ ।

कुणपनहो–कुणपे–मासे सूक्ष्मो नखो नखावयव स कुणपनखावयव । व्य० प्र० २५५ आ । जनपदविशेष । नि० चू० द्वि० ८० आ ।

कुणाल–अशोकश्रीपुत्र । बृ० द्वि० १५३ आ । विशे० ८०९ । कुणाल, भावप्रणिधावुदाहरणे दृष्टान्त । आव० ७१३ । असोगस्स पुत्तो । बृ० तृ० ४७ अ ।

कुणालकुमार–पाडलिपुत्ते असोगसिरिराया तस्स पुत्तो कुणालो । नि० चू० तृ० ४४ आ ।

कुणाला–जङ्घार्धमानैरावतीकण्ठे नदी । बृ० तृ० १६१ आ । एरवती णदी कुणाला जणपदे, जनपदविशेष । नि० चू० द्वि० ८० आ । जनपद । राज० ११६ । जनपदविशेष । प्रज्ञा० ५५ । ज्ञाता० १४० । कुणाला यत्र श्रावस्तीनगरी । ज्ञाता० १२५ ।

कुणि–गर्भाधानदोषात् ह्रस्वैकपादो न्यूनैकपाणिर्वा कुणि कुण्ट इति । प्रश्न० १६१ । पाणिविकल । बृ० द्वि० ११९ अ ।

कुणिए– । राज० १४३ ।

कुणिओ–कुणिक –सेवकविशेष । प्रश्न० १५ ।

कुणिम–मासम् । त० । उपा० २९ । रुधिरम् । आव० ५६१ । कुणप –शव । अनु० १३८ । प्रश्न० ५२ । मासम् । पिण्ड० ७१ । जीवा० १०७ । शवस्तद्रसोऽपि वसादि कुणप । ज० प्र० १७१ ।

कुणिमवावण्ण–व्यापन्न–विदाराऽभूत कुणिम–मास यस्य स । जीवा० १०७ ।

कुणिमाहारे–कुणप –शवस्तद्रसोऽपि वसादि –कुणपस्त दाहार कुणपाहार । भग० ३०९ ।

कुणिय–मरहट्ठविसए चोद्दिति कुणिय वा भणतो । नि० चू० प्र० २९४ आ । गर्भाधानदोषाद् ह्रस्वैकपादो न्यूनैकपाणिर्वा कुणि । आचा० २३३ ।

कुण्डकोलिग–रूपकान्त । उपासकदशाया पञ्चमाध्ययनम् । उपा० १ ।

कुतप–वस्ति । नदी० १६२ । तैलादिभाजनविशेष । भग० ४७९ । चर्ममय भाजनविशेष । बृ० द्वि० २३६ अ ।

कुतव–कुतप –छागलम् । ठाणा० ३३८ । भाजनविशेष । नि० चू० प्र० ३५४ अ ।

कुतित्थ–कुतीर्थम् । आव० ५६१ । कुत्सितानि च तानि तीर्थानि–कुतीर्थानि च शाक्यौलूक्यादिप्ररूपितानि तानि विद्यन्ते येषामनुष्ठेयतया स्वीकृतत्वात्ते कुतीर्थिन । उत्त० ३३७ ।

कुतित्थियधम्मो–कुतीर्थिकधर्म –चरकपरिव्राजकादिधर्म । दश० २३ ।

कुतुबक–कुस्तुम्बक । जीवा० १०५ ।

कुतुबकसठिय–कुतुम्बकसस्थित –आवलिका बाह्यस्यैकत्रिशततम सस्थानम् । जीवा० १०४ ।

कुतुप–पक्वतैलादिभाजनम् । औप० ९९ । चर्मनिष्पन्न घृतभरणपात्रम् । पिण्ड० ३५ । चर्मकुम्भ । पिण्ड० १०५ ।

कुतूहल–नटादिविषयम् । आव० ३४६ ।

कुत्तिय–स्वर्गमर्त्यपाताललक्षण भूमित्रय तत्सभव वस्त्वपि कुत्रिकम् । भग० १३६ ।

कुत्तियावण–कुत्रिक–स्वर्गमर्त्यपाताललक्षण भूत्रय तत्सम्भवि वस्त्वपि कुत्रिक तत्सम्पादको य आपणो–हट्टो देवाधिष्ठितत्वेनासौ कुत्रिकापण । भग० ४७२ । कुना–स्वर्गपातालमर्त्यभूमीना त्रिक कुत्रिक तात्स्थ्यात् तद्व्यपदेश इति कृत्वा तत्स्थलोका अपि कुत्रिकमुच्यते, कुत्रिकमा-

पणयति–व्यवहरति यत्र हट्टेऽसौ कुत्रिकापण । अथवा धातुजीवमूललक्षणेभ्यस्त्रिभ्यो जात त्रिज सर्वमपि वस्त्वित्यर्थ, कौ–पृथिव्या त्रिजमापणयति–व्यवहरति यत्र हट्टे स कुत्रिजापण । विशे० ९९४ । कृत्रिमापण । आव० ३२० । देवाधिष्ठितत्वेन स्वर्गमर्त्यपाताललक्षणभूत्रितयसंभविवस्तुसंपादक आवणो–हट्ट कुत्रिकापण । ज्ञाता०५६ । कुत्रिक–स्वर्गमर्त्यपाताललक्षण भूमित्रय तत्सम्भव वस्त्वपि कुत्रिक तत्सम्पादक आपणो–हट्ट कुत्रिकापण । भग० १३६ । उत्त० १७१ ।

कुत्तियावणचच्चरी–कुत्रिकापणचर्चरी, (चर्चरी–चर्चा) । दश० ५८ ।

कुत्थुंभरि–कुस्तुम्भरि–वृक्षविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

कुत्सति–निन्दति । आव० ५८७ ।

कुथुंभरि–धाणगा । नि० चू० प्र० १४४ आ ।

कुदंडय–कुदण्डक–काष्ठमय प्रान्तरज्जुपाशम् । प्रश्न० ५६ ।

कुदंडो–कुदण्ड –असम्यग्निग्रह । विपा० ६३ । बन्धनविशेष । प्रश्न० २२ ।

कुदंसणं–मिथ्यादर्शनम् । आउ० । कुदर्शना शाक्यादय । प्रज्ञा० ६० ।

कुद्दव–कोद्रव, सामायिकलाभे दृष्टान्त । आव० ७५ ।

कुद्दाल–वृक्षविशेष । भग० २७८ । उपरितनो भाग । उपा० २१ । कोद्दाल । ज० प्र० ९८ । खननशस्त्रम् । शस्त्रविशेष । आचा० ३३ । कुद्दाल –भूखनित्रम् । प्रश्न० २४ ।

कुद्ध–क्रुद्ध । ज्ञाता० २१७ ।

कुपक्ख–कुपक्ष –कुत्सितान्वय । आचा० ३८८ ।

कुप्परा–कूर्पराविव कूर्परौ कूर्पराकारत्वात् । ज० प्र० २०० ।

कुप्पावयणिय–कुत्सित प्रवचन येषा ते तथा तेषु भव कुप्रावचनिकम् । अनु० २९ ।

कुप्पासओ–कुर्पासक –कञ्चुका । बृ० द्वि० २३५ अ । बृ० द्वि० २५६ आ ।

कुबेरदत्तो–निजसुतागामी । भक्त०

कुब्जसंस्थानं–पञ्चम संस्थानम् । प्रज्ञा० ४७२ ।

कुब्जिका–वक्रजङ्घा । ज्ञाता० ४१ ।

कुब्बं–निम्न क्षाममित्यर्थ । उपा० २१ ।

कु०बरो–कूबर वैश्रमणलघुपुत्र । अन्त० ५ ।

कुमार–दु खमृत्यु । उपा० ५१ । विरुपमारणप्रकार । ज्ञाता० १६२ । प्रत्यन्तान् सीमामन्धिवर्तिन क्षुभ्यतोऽन्तर्भूतण्यर्थत्वान् समस्ता अपि सीमापर्यन्तवर्त्तिनी प्रज्ञा क्षोभयतो दुर्दान्तान् दु शिक्षितान् सग्रामनीति कुशल सर्वत सर्वासु दिक्षु यो दमयन् वर्तते स एतादृश कुमार । व्य० प्र० १७० अ । कुमार –द्वितीयवयोवर्तिछात्रादि । उत्त० ३६४ । कुत्सिता मारा कुमारा– सौकरिका ओघ० ७५ । कुमारा–राज्यार्हा । प्रथमवयस्था । ठाणा० ५०८ । मोदकप्रियकुमार । पारिणामिकीबुद्धौ दृष्टान्त । नदी० १६६ । अयस्कार । उत्त० ४६१ । कुमार राज्यार्हं । प्रश्न० ९६ । असुकमोगी । बृ० द्वि० १३ आ ।

कुमारगाह–कुमारग्रह उन्मत्ततहेतु । भग० १९७ ।

कुमारग्गहो–कुमारग्रह । जीवा० २८४ ।

कुमारनंदी–कुमारनदी चम्पाया सुवर्णकार । आव० २९६ । बृ० तृ० १०८ आ ।

कुमारपुत्तिय–कुमारपुत्र निर्ग्रन्थविशेष । सूत्र० ४१० ।

कुमारभिच्चं–कुमाराणा–बालकाना भृतौ पोषणे साधु कुमारभृत्य, तद्धि शास्त्र कुमारभरणस्य क्षीरस्य दोषाणा सशोधनार्थं दुष्टस्तन्यनिमित्ताना व्याधीनामुपशमनार्थं चेति। आयुर्वेदस्य प्रथमाङ्गम् । विपा० ७५ । ठाणा० ४२७ ।

कुमारभुत्ती–कुमारभुक्ति । आव० ३६६ । नि० चू० प्र० २४३ अ ।

कुमारसमण–कुमारश्चासावपरिणीततया श्रमणश्च तपस्विरिव तया कुमारश्रमण । उत्त० ४९८ ।

कुमारामच्च–कुमारामात्य । आव० ६७९, ४३६ नदी० १६३ । दश० ५४ । कुमारामात्य, असत्या सम्बद्धप्रलापित्वे उदाहरणम् । आव० ८३९ ।

कुमारामच्चत्तं–कुमारामात्यत्वम् । उत्त० १०५ ।

कुमाराय–कुमाराक सन्निवेश । वर्धमानस्वामिविहारभूमि । आव० २०२ ।

कुमारिए–सौकरिक । बृ० द्वि० ५१ अ । मारेति त कुमारिया । नि० चू० प्र० १०७ अ ।

कुमारिया–जे कुमारेण मारेंति ते। नि० चू० प्र० १०७ आ।
कुमारोलग्गएहिं–कुमारावलगकैं। उत्त० ११५।
कुमुअ–कुमुद गर्द्दभकम्। दश० १८५। कुमुद-चन्द्रबोध्यम्। जं० प्र० ११५।
कुमुत–कुमुद–चन्द्रविकाश्य पद्मम्। प्रश्न० ८४।
कुमुद–सहस्रारकल्पे विमानविशेष। सम० ३३। आनतकल्पे विमानविशेष। सम० ३५। कुमुद–चन्द्रबोध्यम्। भग० ५२०। कुमुद दिग्हस्तिकूटनाम। जं० प्र० ३६०। कुमुदो विजय। जं० प्र० ३५७। जलरुहविशेष। प्रज्ञा० ३३।
कुमुदगुम्म–आनतकल्पे विमानविशेष। सम० ३५।
कुमुदप्पभा–कुमुदप्रभा, पुष्करिणीनाम। जं० प्र० ३३५।
कुमुदा–कुमुदा पुष्करिणीनाम। जं० प्र० ३३५। अञ्जनकपर्वते पुष्करिणी। ठाणा० २३०।
कुमुदुग–धान्यविशेष। सूत्र० ३०६।
कुमुय–कुमुद चन्द्रविकासि। जीवा० १७७। १६१। कुमुद। राज० ८। चन्द्रबोध्यादीनि। ज्ञाता० ९८।
कुमुयदल–कुमुददलम्। प्रज्ञा० ३६१।
कुमुया–महाविदेहेषु राजधानीविशेष। ठाणा० ८०। कुमुदा–पश्चिमदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्यापरस्या पुष्करिणी। जीवा० ३६४।
कुमुयाइ–चन्द्रविकासीनि। जं० प्र० २६।
कुम्म–कूर्म षष्ठाङ्गे चतुर्थं ज्ञातम्। आव० ६५३। सम० ३६। उत्त० ६६४। ज्ञाता० ९। कच्छप। ज्ञाता० ९। साधोरुपमा। आव० ६५३। कूर्मक–कच्छप। प्रश्न० ७०।
कुम्मगाम–कूर्मग्राम–वर्धमानस्वामिविहारभूमि। भग० ६६६। आव० २१३।
कुम्मापुत्त–कूर्मापुत्र। द्विहस्तसिद्धया दृष्टान्त। विशे० १२२२।
कुम्मारगाम–कूर्मारग्राम वर्धमानस्वामिविहारभूमि। भग० ६६४। आव० २२२।
कुम्मासा–कुल्माषा सिद्धमाषा, यवमाषा इत्यन्ये। दश० १८१। अर्द्धस्विन्ना मुद्गादयो माषा इत्यन्ये। भग० ६६८। कुलमाषा–राजमाषा। उत्त० २६५। कुपित–मनसा कोपवान्। विपा० ५३। माषविशेषा। आचा० ३१३। कुलमाषा–उडदा। पिण्ड० १६८। माषा, ईषत्स्विन्ना मुद्गादय। प्रश्न० १५३। गोत्रद्वितीयनाम। आव० ८५४।
कुम्मुण्णया–कूर्मपृष्ठमिवोन्नता कूर्मोन्नता, अर्हदादीना मातृयोनि। प्रज्ञा० २२७।
कुम्मुन्नये–कूर्म्म–कच्छप तद्वदुन्नता कूर्म्मोन्नता। ठाणा० १२२।
कुय–कुव्व–शिथिलम्। व्य० द्वि० २६७ आ।
कुयवाय–वल्लीविशेष। प्रज्ञा० ३२।
कुरग–द्विखुरविशेष। प्रज्ञा० ४५। मृगभेद भृङ्गवर्णादिविशेष। जं० प्र० १२४। कुरङ्ग मृग। प्रश्न० ७। द्विखुरश्चतुष्पदविशेष। जीवा० ३८।
कुरंटओ–मदशक पुतपृष्टजान्वाच्छादि। बृ० द्वि० २३७ आ।
कुरच्छा(त्था)–देवजाणरहो वा विविधा सवहणा गच्छति सेसा कुरच्छा(त्था)। नि० चू० तृ० ७१ आ।
कुरज्ज–कुराज्य भिल्लादिराज्यम्। जं० प्र० २७७।
कुरण–राजकीयमन्यदीय वाची त। व्य० प्र० १७७ आ।
कुरत्था–कुरथ्या–कुमार्ग। आव० ७४०।
कुररी–पक्षिणी। उत्त० ४८०।
कुररो–कुरर उत्क्रोश। प्रश्न० २१।
कुरल–लोमपक्षिविशेष। प्रज्ञा० ४६। जीवा० ४१।
कुरबक–वृक्षविशेष। विशे० ६६।
कुराईण–कुराजान–प्रत्यन्तराजान। आचा० ३३४।
कुराया–कुत्थितो राया, पच्चतणिवो। नि० चू० प्र० २७७ अ।
कुरिणमि–महति अरण्ये। ओघ० १५८।
कुरु–जनपदविशेष। प्रज्ञा० ५५। कुरुजनपदो यत्र हस्तिनागपुर नगरम्। ज्ञाता० १२५।
कुरुआ–कुरुकुचा–पादप्रक्षालनादिका। ओघ० ८२।
कुरुए–कुरुकम्। सम० ७१।
कुरुकुचा–पादप्रक्षालनाचमनरूपा। ओघ० १२५।
कुरुकुय–अचित्तपुढवी। नि० चू० द्वि० १५६ आ। कुरु-

कुच । ओघ० १९८ । आचा० २०३ ।

कुरुकुया– । नि० चू० प्र० १४८ आ । पादप्रक्षालनादिका । वृ० द्वि० २९० अ ।

कुरुकुरायति–क्लिश्नीत । आव० ३९३ ।

कुरुजणपदं–कुरुजनपद देशविशेष । आव० १४५ ।

कुरुजणवयं– ,, ,, । उत्त० ३९५ ।

कुरुटुक–काङ्कटुकबीजप्राय । प्रश्न० ४३ ।

कुरुटुककड–कुरुटुककृत–कुरुटुका -काङ्कटुकबीजप्राया अयोग्या सद्गुणाना तै कृत अनुष्ठितम्, तृतीयाधर्मद्वारस्य क्वचित् चतुर्थ नाम । प्रश्न० ४३ ।

कुरुड –कुणालाया स्थितमुनि । उत्त० २०४ ।

कुरुदत्त–अग्निदग्धो मुनि । स० ।

कुरुदत्तपुत्त–कुरुदत्तपुत्र –ईशानसामानिकवक्तव्यताया अनगार । भग० १५९ ।

कुरुदत्तसुओ–कुरुदत्तसुत –हस्तिनापुरे इभ्यपुत्र । उत्त० १०९ ।

कुरुदत्तसुत–नैपेधिकीमाचरता हत । मर० ।

कुरुभ–वनस्पतिविशेष । भग० ८०२ ।

कुरुमई–कुरुमता, ब्रह्मदत्तस्याष्टाग्रमहिषीणा मध्येऽष्टमी, स्त्रीरत्नम् । उत्त० ३७९ । सम० १५२ ।

कुरुया–देशत सर्वतो वा शरीरस्य प्रक्षालन कुरुका । व्य० प्र० १६३ आ ।

कुरुविंद–कुरुविन्द –तृणविशेष । ज० प्र० ११० । तृणविशेष । आचा० ५७ । प्रज्ञा० ३३ । तृणविशेष । प्रश्न० ८० । कुटलिक । प्रश्न० ८० ।

कुरुए–कुत्सित यथा भवत्येव रूपयति–विमोहयति यत्तत् कुरूप भाण्डादिवम । भग० ५७३ ।

कुर्यात्–आलोचयेद् । आचा० ३३७ ।

कुलं–आचार्यसततिनस्थिति । त० ९-२७ । उग्रादि। पिण्ड० १२९ । वशस्यावान्तरभेदम् । ज्ञाता० २२० । गृहम् । आचा० ३२१ । वृ० द्वि० ८६ अ । नि० चू० प्र० १८५ अ । उत्त० ४०४ । गिह । नि० चू० प्र० ७० अ । समूह । ज्ञाता० १६१ । स्थानीयादि । आचा० ८१ । एग कुटुव । दश० चू० १६३ । पितृसमुत्थ कुलम् । पिण्ड० १२९ । सूत्र० २३६ । उत्त० १४५ । आव० ३४१ । कुटुव । नि० चू० प्र० ८३ अ । १५९ आ । चान्द्रादिक साधुसमुदायविशेषरूप प्रतीतम् । ठाणा० २९९ । कुटुम्ब, यूथ वा । प्रश्न० ३७ । कृमिकीटवृश्चिकादि । जीवा० १३४ । पैतृक पक्ष । ज्ञाता० ७ । प्रश्न० ११७ । गच्छसमुदायरूप चन्द्रादिकम् । प्रश्न० १२६ । नागेन्द्रादि । वृ० द्वि० ८४ अ । विद्याधरादि । आव० ५१० । प्रख्यात कुलम् । ओघ० ४८ । अन्वयो गच्छ । उत्त० ३४७ । पार्श्वनाथसन्तानम । उत्त० ५०० । कुलमद, द्वितीय मदस्थानम् । आव० ६४६ । आर्यद्वितीयभेदे तृतीय । सम० १३५ । नागेन्द्रकुलादि । दश० २४२ ।

कुलए–कुडव चतु सेतिकामानम् । दश० १३४ ।

कुलओ–चतस्र सेतिका कुडव । अनु० १५१ । कूलत कुडव । आव० ४२४ ।

कुलकहा–उग्रादिकुलप्रसुतानामन्यतमा कथा कुलकथा । स्त्रीकथाया द्वितीयभेद । आव० ५८१ । स्त्रीकथाया द्वितीयभेद । ठाणा० २०९ । कुलसम्बन्धेन स्त्रीणा कथा कुलकथा । प्रश्न० १३९ ।

कुलक्ख–म्लेच्छविशेष । प्रज्ञा० ५५ । कुलाक्ष –चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेष । प्रश्न० १४ ।

कुलगर–कुलकर । आव० ४९९ । कुलकरा –विशिष्टबुद्धयो लोकव्यवस्थाकारिण कुलकरणशीला पुरुषविशेषा । ज० प्र० १३२ । कुलकरा –विशिष्टबुद्धयो लोकव्यवस्थाकारिण पुरुषविशेषा । ठाणा० ५१८ ।

कुलगरकालो–कुलकरकाल । आव० ११३ ।

कुलगा– । नि० चू० द्वि० १२० अ ।

कुलघर–पितृगृहम् । ज्ञाता० ११९ । औप० ८९ । वृ० प्र० २०७ अ । नि० चू० प्र० १९४ अ ।

कुलच्चिया–कुलगता । व्य० प्र० २४८ ।

कुलज –कुलपुत्रक । वृ० द्वि० १९५ आ ।

कुलजुत्तीए–आत्मकुलौचित्येनेत्यर्थ । व्य० प्र० २२४ अ ।

कुलत्थ–एकत्र कुले तिष्ठन्ति इति कुलस्था । धान्यविशेष । निरय० २४ । चवलिकाकारा चिपिटिका भवन्ति । भग० २७४ । धान्यविशेष । भग० ८०२ । औषधिविशेप । प्रज्ञा० ३३ । कुलत्था –चपलकतुल्याश्चिपिटा

भवन्ति । ज० प्र० १२४ । कुलत्था धान्यविशेष । दश० १६३ । चवलगसरिसा चिप्पिडया भवन्ति । ठाणा० ३४४ । एकत्र कुले तिष्ठन्तीति कुलस्था । अन्यत्र कुलत्था धान्यविशेषा । ज्ञाता० ११० ।

कुलथेरा–कुलस्य लौकिकस्य लोकोत्तरस्य च व्यवस्थाकारिणस्तद्भङ्क्तुश्च निग्राहकास्ते । ठाणा० ५१६ ।

कुलधमा–कुलधमगा–ये कुले स्थित्वा शब्द कृत्वा भुञ्जते । निरय० १५ ।

कुलधम्मे–कुलधर्म्म–उग्रादिकुलाचार । कुल–चान्द्रादिकमार्हताना गच्छसमूहात्मक तस्य धर्म्म–सामाचार । ठाणा० ५१५ ।

कुलपव्वए–कुलपर्वत हिमाचलादि । ज० प्र० ४११ ।

कुलपव्वया–क्षेत्रमर्यादाकारित्वेन कुलकल्पा पर्वता–कुलपर्वता, कुलानि हि लोकाना मर्यादानिबन्धनानि भवन्ति इतीह तैरुपमा कृता । सम० ६६ ।

कुलपुत्तओ–शय्यातर । बृ० प्र० ३१० अ । कुलपुत्रक । आव० ८१६ ।

कुलपुत्तगो–कुलपुत्रक । आव० ४२२ ।

कुलपुत्तय–कुलपुत्रक । उत्त० ५० ।

कुलपुत्र– । आचा० १०६ ।

कुलमसी–कुलमषी–कुलमालिन्यहेतु, तृतीयाधर्मद्वारस्य त्रयोविंशतितम नाम । प्रश्न० ४३ ।

कुलरोग–कुलरोग–कुलजन्यरोग । भग० १६७ ।

कुलल–गृध्र, शकुनिका वा । उत्त० ४१० । पक्षिविशेष । प्रश्न० ८ । कुरर–मार्जारनामा पक्षिविशेष । उत्त० ५११ । मार्जार । दश० २३७ । मज्जारो । दश० चू० १२६ ।

कुलवे–कुडव । भग० ३१३ । कुलशिकाचतुर्थांशरूपो धान्यमान । बृ० द्वि० २३६ अ ।

कुलसरिस–श्रीमद्वणिजा रत्नवाणिज्यमिव । ज्ञाता० २०५ ।

कुला–कुलानि, नक्षत्राणि । सूर्य० १११ । कुला–कुलानिगृहाण्याभिषान्वेषणार्थिनो नित्य येऽटन्ति ते, मार्जारा । सूत्र० ८०० ।

कुलाण–मृद्भाजन । नि० चू० द्वि० १०६ अ । भाजनानि । नि० चू० प्र० ३४४ आ । असोगस्स पुत्तो । नि० चू० प्र० २४३ अ ।

कुलाणुरूव–कुलोचितम् । ज्ञाता० २०५ ।

कुलारिया–कुलार्या । प्रज्ञा० ५६ ।

कुलार्या–विशुद्धान्वयप्रकृतय । त० ३–१५ ।

कुलालचक्र–दृष्टान्तविशेष । प्रज्ञा० ११ ।

कुलालया–कुलानि–क्षत्रियादिगृहाणि तानि नित्य पिण्डपातान्वेषिणा परतर्कुकाणामालयो येषा ते कुलालया, निन्द्यजीविकोपगता । सूत्र० ४०० ।

कुलिंग–पिपीलिकादि । भग० ७५४ । कुलिङ्ग–तापसादिलिङ्गम् । आव० १३४ । त्रीन्द्रियादि मर्दित । ओघ० १६७ ।

कुलिंगच्छाए–पिपीलिकासदृश । भग० ७५४ ।

कुलिंगाले–कुत्स्य–स्वगोत्रस्याङ्गार इवाङ्गारो दूषकत्वादुपतापकत्वाद्वेति । ठाणा० ६८४ ।

कुलिंगे–द्वीन्द्रियादि । ओघ० २२० ।

कुलिअ–कुलिक, लघुतर काष्ठ तृणादिच्छेदार्थं यत्क्षेत्रे वाह्यते तत्, मरुमण्डलादिप्रसिद्धम् । अनु० ४८ । क्षेत्रस्यास्थ्यादिशल्योद्धरणे साधनविशेष । आव० ५५४ । कुलिक, क्षेत्रविदारण कृपिसाधनम् । दश० ४० ।

कुलिज्ज–कुलसमवाय । नि० चू० प्र० २६१ अ ।

कुलिय–कुलिक–दन्तालवत्तिर्यक्कृतकाष्ठे उभयपार्श्वनिखातकाष्ठमयकीलकयोस्तिर्यग्व्यवस्थापिततीक्ष्णलोहपट्टक हरितादिच्छेदनार्थं क्षेत्रेपु यद् वाह्यते तद् लाटादिकृपीवलप्रतीत वेदितव्यम् । विशे० ४३५ । कडणकृत कुड्यम् । सूत्र० ५८ । हलप्रकार । प्रश्न० ८ । हलविशेष । प्रश्न० २४ । कुड । नि० चू० द्वि० ८४ अ । कुलिकम् । आचा० ३३ ।

कुलिया–कुड्यम् । बृ० द्वि० १५६ अ ।

कुलीकोस–कुटीकोश–पक्षिविशेष । प्रश्न० ८ ।

कुलोवकुला–कुलोपकुलानि । सूर्य० १११ ।

कुल्माषा–उडदा, राजमाषा वा । बृ० प्र० २६७ आ ।

कुल्लग–नितम्ब । नि० चू० द्वि० ६२ अ । कोल्लाकसन्निवेश । आव० १७१ ।

कुल्लूरिकहट्ट–खाद्यकापण । विशे० ८५३ ।

कुल्लूरिकापणः–खाद्यकापण । आव० २७५ ।

कुवणउ-लउडगो । नि० चू० द्वि० १३३-आ ।
कुवणओ-लगुड । वृ० तृ० ६८ अ ।
कुवणय-लगुड । वृ० प्र० १५३ अ ।
कुवथभ-कूपस्तम्भम् । विशे० १३५५ ।
कुवलय-नीलोत्पल पद्मम् । प्रश्न० ८४ । कुवलय तदेव नीलम् । ज० प्र० १६५ ।
कुवलयनं-वस्त्रादिमय कुवलयनम् । व्य०द्वि०२७८ आ ।
कुविद- । आचा० २२८ ।
कुविदएण- । आचा० ३७६ ।
कुविदवल्ली-वल्लीविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।
कुविदा·-तन्तुवाया । प्रज्ञा० ५८ ।
कुविए-कुपित -प्रवृद्धकोपोदय । भग० ३२२ । ज्ञाता० ६८ । ज० प्र० २०२ ।
कुवितसाला-कुपितशाला-तूल्यादिगृहोपस्करशाला । प्रश्न० १२७ ।
कुवितो-कुविओ । नि० चू० प्र० २८६ अ ।
कुविय-कुप्य-विविध गृहोपस्कारात्मकम् । उत्त० २६२ । कुप्य -गृहोपस्कर स्थालकच्चोलकादि । उपा० ८ । गृहोपस्कर । प्रश्न० ६२ । आसनशयनभण्डककरोटक-लोहाद्युपस्करजातम् । आव० ८२६ । कुपित -जातकोपोदय । भग० १६७ । कुपितम्-घटितम् । दश० ११५ ।
कुवियपमाणाइक्कमे-कुप्यप्रमाणातिक्रम. । आव० ८२५ ।
कुवेणी-कुवेणी रुढिगम्या । प्रश्न० ४८ ।
कुव्व-कुर्व-इत्यागमप्रसिद्धो । व्य० प्र० १०७ आ ।
कुव्वकारिया-गुच्छविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।
कुव्वासह-सुभरो । नि० चू० प्र० ३३२ आ ।
कुश -तृणविशेष । जीवा० २६ । प्रज्ञा० ३० ।
कुशलानुष्ठानं-ब्रह्मचर्यम् । सम० ६६ ।
कुशवच्चकम्-दुर्बलालम्बन । आव० ५३४ ।
कुशाग्रीयया-शेमुष्या । आचा० ११६ ।
कुशूल-कोष्ठम् । वृ० द्वि० १६८ आ । विशे० ६३८ ।
कुष्माण्डी-विद्याविशेष । आव० ४११ ।
कुसं-द्रुमगणविशेष । जीवा० १४५ ।
कुसंतो-कुशान्त -दर्भपर्यन्त । जीवा० २१० ।
कुस-दर्भ इव निर्मूलान् । निरय० २६ । मूलभूत । ज्ञाता० ११४ । कुश -छिन्नमूलो दर्भ । भग० २६० । निर्मूल । विपा० ७२ । दर्भ । ज्ञाता० ७६ । औप० ६ । भग० २७८ । ज० प्र० ६८ । प्रश्न० १२८ । दर्भमदृशस्तृणविशेष । उत्त० ३३४ ।
कुसग्ग-कुशाग्र, कुशाग्रपुरम्, अपरनाम प्रसेनजिद्राजधानी । आव० ६७० ।
कुसग्गजलविन्दुसन्निहे-कुशाग्रजलविन्दुसन्निभ । उत्त० ३२६ ।
कुसट्टा-जनपदविशेष । प्रज्ञा० ५५ ।
कुसणं-द्विदलम् । आव० ८४४ । कुशन सूप, व्यञ्जन वा । उत्त० १६० । मुद्गदाल्यादि तदुदक वा । वृ० द्वि० २४६ आ । कुसिण-व्यञ्जनम् । आव० ३१४, ८५६ ।
कुसणातिओ-कुसणादिक मिश्रित । आव० ८५७ ।
कुसत्तो-कुसत्त्व -तुच्छधृतिवल । वृ० द्वि० २४१ आ ।
कुसथंवो-कुशस्तम्व -कुशसमूह । आव० ६७१ ।
कुसपडिमा-कुशपडिमा । आव० ६३०, ६३५ ।
कुसपत्तएण- । आचा० ३७६ ।
कुसमघरगं-कुसुमगृहक-कुसुमप्रकरोपचित गृहकम् । जीवा० २०० ।
कुसमयमोहमोहमइमोहियाणं-कुत्सित समय -सिद्धान्तो येषा ते कुसमया -कुतीर्थिकास्तेषा मोह -पदार्थेष्वयथावबोध कुसमयमोहस्तस्माद्यो मोह -श्रोतृमनोमूढता तेन मतिर्मोहिता-मूढता नीता येषा ते कुसमयमोहमोहमतिमोहिता । सम० ११० ।
कुसल-कुशल -मिलिताना चौराणा सुखदु खादितद्वार्ता प्रश्न । प्रश्न० ५८ । कुशल -आश्रवादीना हेयोपादेयतास्वरूपवेदी । भग० १३५ । पण्डितो । नि० चू० द्वि० १४६ आ । कुशल -सम्यक्क्रियापरिज्ञानवान् । जीवा० १२२ । ज० प्र० ३८८ । आलोचितकारी । भग० ६३१ । गीतार्थ । आचा० ४३० । कुशल -सम्याधनाकर्मणि साधु । औप० ६५ । कर्मक्षपणसमर्थ, प्रधानो वा । नि० चू० प्र० २५ आ । कुशल -विधिज्ञ । प्रश्न० १२६ । क्रियापरो । नि० चू० प्र० २६६ आ । कुशल -अवाप्तज्ञानदर्शनचारित्रो मिथ्यात्वद्वादशकपायोपशमसद्-

भावात्। आचा० १४७। क्षीणघातिकर्म्मांशो विवक्षित। आचा० १४७। आलोचितकारी। अनु० १७७। श्रीवर्द्धमानस्वामी। आचा० २१६। कुशा द्रव्यतो दर्भा दयो भावत कर्माणि तान् कर्मरूपान् कुशान् लुनन्ति-समूलानुत्पाटयन्तीति तीर्थकरा। वृ० प्र० १६३ अ। स्ववितर्काच्चिकित्सादिप्रवीणा। ज्ञाता० १८०। तीर्थकृत्। आचा० २११।

कुसलत्तण-कुशलत्व-सम्यग्ज्ञानम्। आव० ३४६। प्रावीण्यरूपम्। उत्त० १४३।

कुसलदिट्ठ-कुशलदृष्ट-तीर्थंकरोपलब्धम्। दश० १०६।

कुसलनरपससिय- । आचा० ४२३।

कुसलाणबंधि-मोक्षानुकूलम्। च० ३।

कुसलोदत-कुशलवार्त्ता। ज्ञाता० १४६।

कुसल्लिय-कुशल्यित-अन्त प्रविष्टतोमरादिशल्यशरीरमिव सञ्जातदुष्टशल्यम्। प्रश्न० १३४।

कुसवरो-कुशवर-अपान्तरालद्वीप। जीवा० ३६८।

कुसा-स्थावरजीवविशेष। सूत्र० ३०७।

कुसिण-दधिदुग्धादि। ओघ० १६३।

कुसिया-कुसिता मोचयितुमसमर्था। व्य० द्वि० १५६ अ।

कुसी-कुशी। आव० ३६७।

कुसीमूलिय-कुशीमूलिका। आव० ८२६।

कुसील-कुशील-निर्ग्रन्थस्य तृतीयो भेद। व्य० द्वि० ४०२ अ। निर्ग्रन्थस्य तृतीयभेद। कुत्सित शील-चरणमस्येति कुशील। भग० ८९०। कुशील-परतीर्थक, पार्श्वस्थादिर्वा स्वयूथ्या अशीलगृहस्थ। सूत्र० १५३। कुत्सितशील कुशील-कालविनयादिभेदभिन्नाना ज्ञानदर्शनचारित्राचाराणा विराधक इत्यर्थ। ज्ञाता० ११३। कुत्सित शीलमस्येति कुशील। आव० ५१७। कुशील। नि० चू० द्वि० १६८ अ। कुशील-असविग्न। ओघ० १२०।

कुसीलओ-कुशीलव-विदूषक। आव० ३९८।

कुसीलपडिसेवणया-कुशीलप्रतिषेवणता-कुशील-अब्रह्म तस्य प्रतिषेवण कुशीलप्रतिषेवण, तद्भाव। ठाणा० २८१।

कुसीलपरिभासिए-सूत्रकृताङ्गस्य प्रथमश्रुतस्कन्वे सप्तममध्ययनम्। सम० ३१।

कुसीलवे-कुशीलवाना-नटाना। वृ० प्र० १०३ आ।

कुसीलाणपरिभासा-सूत्रकृताङ्गस्य प्रथमश्रुतस्कन्धे सप्तममध्ययनम्। उत्त० ६१४।

कुसीलाणपरिहासा-कुशीलपरिभाषा, सूत्रकृताङ्गाद्यश्रुतस्कन्धे सप्तममध्ययनम्। आव० ६५१।

कुसुबए-वनस्पतिविशेष। प्रज्ञा० ३६।

कुसुभ-औषधिविशेष। प्रज्ञा० ३३। लट्टाकाणा। यत्पुष्पैर्वस्त्रादिराग। ज० प्र० १२४। कुसुम्भ-तैलस्य तृतीयभेद। आव० ८५४। धान्यविशेष। भग० ८०२।

कुसुभग-कुसुम्भक-लट्टा। धान्यविशेष। भग० २७४। उदगविशेष। नि० चू० तृ० ५२ आ।

कुसुभराग-प्रायोगिकराग। आव० ३८७।

कुसुभवणे-कुसुम्भवनम्। भग० ३६।

कुसुभिओ-कुसुम्भिका, अतसी। ओघ० १४६।

कुसुण-कुशन, दध्यादि। पिण्ड० १६५, ९०।

कुसुणिय-कुसुणित-करम्बादिरूपतया कृतम्। पिण्ड० ९१।

कुसुम-पाटलिपुत्राभिध नगरम्। आव० २९४। कुसुमसमूह। जीवा० २५५। कुसुमजातम्। जीवा० २५६। अविकसित। औप० ५६।

कुसुमकुडल-धत्तूरकपुष्पसमानाकृतिकर्णाभरण, दर्भकुसुम वा। अन्त० ५।

कुसुमघरए-कुसुमप्रायवनस्पतिगृहम्। ज्ञाता० ९५।

कुसुमघरगा-कुसुमप्रकरोपचितानि गृहकाणि कुसुमगृहकाणि। ज० प्र० ४५।

कुसुमट्टिया-कुट्टिया पुणो मट्टियाए सह कुट्टिज्जति। उसुमट्टिया, कुसुमट्टिया वा। नि० चू० तृ० ६४ अ।

कुसुमपुर-मायापिण्डोदाहरणे सिंहरथराजस्य नगरम्। पिण्ड० १३९। चूर्णद्वारविवरणे चन्द्रगुप्तराजधानी। पिण्ड० १४३। पाटलीपुत्रमभिधीयते। नि० चू० प्र० १३९ आ। वृ० द्वि० २२७ अ। मुरुण्डस्य राजधानी। वृ० द्वि० २५६ आ।

कुसुमरसं-कुसुमरस कुसुमासव। दश० ७२।

कुसुमसंभवे-कुसुमसम्भव, दशम मास नाम। ज० प्र० ४९०। सूर्य० १५३।

कुसुमा-कुसुमसदृशत्वात् सौकुमार्यादिगुणयोगेन कुसुमा।

जं० प्र० १३१ ।
कुसुमानि–पद्मलक्षणानि जातानि यत्र तत्कुसुमितम् । ठाणा० ५०२ ।
कुसुमासव–किञ्जल्क । औप० ८ ।
कुसुमासवलोला–किञ्जल्कपानलम्पटा । जीवा० १८८ । मकरन्दलम्पटा । ज्ञाता० २७ । किञ्जल्कलम्पटा । ज्ञाता० ५ ।
कुसुमिय–कुसुमित–सञ्जातकुसुमम् । भग० ३७ ।
कुस्तुम्बक–वनस्पतिविशेष । प्रज्ञा० ३७ ।
कुहए–कुशो–ऽो वेधे प्रान्त प्रवेश्यते । बृ० प्र० ३६ आ ।
कुहडयकुसुमं–कूष्माण्डिकाकुसुम,पुप्पा(पुस्क)लिकापुष्पम् । प्रज्ञा० ३६१ ।
कुहडिया–मुद्रित । आव० २२४ ।
कुहडे–कुहण्ड–वाणमन्तरविशेष । प्रज्ञा० ६५ ।
कुह–कुट–वृक्ष । दश० १७ ।
कुहए–कुहक इन्द्रजालादि । दश० २५४ ।
कुहकं–कुहक, परेप विस्मयोत्पादनप्रयोग । प्रश्न० १०६ । कुतूहलम् । उत्त० ६५६ ।
कुहकणरा–क्षेपकरणम् । नि० चू० द्वि० ७ आ ।
कुहण–भूमिस्फोटकविशेप । आचा० ५७ । एक एवालापको द्रष्टव्य, तद्योनिकानामपरेपामभावादिति भाव । सूत्र० ३५२ । कुहणविशेप । प्रज्ञा० ३३ । कुहण–चिलातदेशवासी । प्रश्न० १४ ।
कुहणता–कुघनता–दारिद्र्यभाव । क्रोधनता । प्रश्न० १०६ ।
कुहणा–कुहणा–भूमिस्फोटाभिधाना ते चाप्कायप्रभृतय । प्रज्ञा० ३० । कुहणा–भूमिस्फोटाभिधानास्ते चाप्कायप्रभृतय । जीवा० २६ । कुहणा–भूमिस्फोटकविशेपा । सर्पच्छत्रकादि । उत्त० ६९२ ।
कुहर–पर्वतान्तरालम् । ज्ञाता० ६३ । जं० प्र० १४४ ।
कुहव्वए–कन्दविशेप । उत्त० ६९१ ।
कुहा–कुत्ति पुहवि तीए मारिज्जति तेण कुहा । दश० चू० ६ ।
कुहाड–प्रहरणविशेप । नि० चू० प्र० १०५ अ ।
कुहित–कुथित–कोथमुपनीत । ज्ञाता० ६७ ।
कुहिय–कुथित–पूतिभावमुपगत । जीवा० १०७ । कोथमुपगत, ईषद्दुर्गन्ध । ज्ञाता० १२६ ।
कुहुंडियाकुसुमं–कूष्माण्डीकुसुम–पुष्पफलीकुसुमम् । जीवा० १९१ ।
कुहुक–कुतूहलम् । उत्त० ३४७ ।
कुहुण–वनस्पतिविशेप । भग० ८०४ । भूमिस्फोटकविशेष । आचा० ५७ ।
कुहेडविज्जा–कुहेटकविद्या-अलीकाश्चर्यविधायिमन्त्रतन्त्रज्ञानात्मिका । उत्त० ४७९ ।
कूअ–कुतप–तैलादिभाजनम् । जं० प्र० २६४ ।
कूअणता–कूजनता–आर्त्तस्वरकरणम् । ठाणा० १४९ ।
कूइआ–कूचिका । आव० १०२ ।
कूइए–कूजितम्–कासितम । आव० ५७४ ।
कूइगादि–कूचिकादि । आव० १९८ ।
कूचिया–कूचिका–विन्दुरूपा बुद्बुदा । विशे० ६३३ ।
कूच्च–कूर्च–गूटकेशोन्मोचको वशमय । उत्त० ४९३ ।
कूजणया–मातिपितिभातिभगिणीपुत्तदुहित्तमरणादीर्वि(सु) महइमहतेण सद्देण रोवइत्ति कूजणया । दश० चू० १५ ।
कूजन्त–अव्यक्त शब्दायमानम् । ज्ञाता० १६७ ।
कूजित–विविधविहगभापयाऽव्यक्तशब्द सुरतसमयभाविनम् । उत्त० ४२५ ।
कूट–कूटम् । भग० १८२ ।
कूटग्राह– । ठाणा० ५०७ ।
कूटप्रयोगकारी–प्रच्छन्नपाप । आव० ५८९ ।
कड–कूट–शिखर,स्तूपिका अथवा कूट–सत्त्वबन्धनस्थानम् । ठाणा० २०५ । कूट–शिखरम् । जीवा० २०५ । परवञ्चनार्थ न्यूनाधिकभापणम् । प्रश्न० २७ । मानादीनामन्यथाकरणम् । प्रश्न० ५८ । कार्पापणतुलाप्रस्थादे परवञ्चनार्थ न्यूनाधिककरणम् । सूत्र० ३३० । कार्पापणतुलादे परवञ्चनार्थं न्यूनाधिकरणम् । ज्ञाता० ८० । कार्पापणतुलाव्यवस्थापत्रादीनामन्यथाकरणम् । ज्ञाता० २३८ । रत्नकूटादि । अनु० १७३ । असद्भूतम् । आव० ८२१ । कूट–भ्रान्तिजनकद्रव्यम् । जं० प्र० १९९ । महच्छिखरम् । जं० प्र० ४९ । मृगग्रहणकारण गर्त्तादि । भग० ६३ । शिखर, हस्त्यादिबन्धनस्थान वा । भग० २३८ । माडभाग । रजतमय उत्सेध । जं० प्र०

४९ । भ्रान्तिजनकद्रव्यम् । भग० ३०८ । कूट-सिद्धायतनकूटप्रभृति । प्रज्ञा० ७१ । माडभाग । जीवा० २०४, ३६० । कूटकेपु-अधोविस्तीर्णेषूपरि सकीर्णेषु वृत्तपर्वतेपु हस्त्यादिवन्धनस्थानेपु वा । ज्ञाता० ६७ । कूट-प्रभूतप्राणीना यातनाहेतुत्व नरक इत्यर्थ । उत्त० २४३ । पर्वत । नदी० २२८ । माडभाग । राज० ६२ । पाषाणमयमारणमहायन्त्रम् । भग० ६७३ ।

कूडकवडमवत्थुग-कूटकपटावस्तुक-कूट-परवञ्चनार्थं न्यूनाधिकभाषण, कपट-भाषाविपर्ययकरण । अविद्यमान वस्तु-अभिधेयोऽर्थो यत्र तत् । समानार्थत्वादेकमधर्मद्वारस्य षष्ठ नाम । प्रश्न० २६ ।

कूडग्गाहो-कूटेन जीवान् गृह्णातीति कूटग्राह । विपा० ४८ ।

कूडछेलियहत्थो-कूटछेलिकाहस्त-या च कूटेन स्थाप्यते चित्रकादिग्रहणार्थं छेलिका-अजा सा, कूट-मृगादिग्रहणयन्त्र च छेलिका चेति कूटछेलिका सा हस्ते यस्य स । प्रश्न० १३ ।

कूडतुलकूडमाणे-कूटतुलाकूटमान, तुलया कुडवादिमानेन च यन्यूनाधिकत्वम् । आव० ८२२ ।

कूडत्त-कूटत्व-न्यूनाधिकत्वम् । आव० ८२३ ।

कूडपासए-कूटपाशक । आव० ४३५ ।

कूडया-कूटता-तुलादीनामन्यथात्वम्, तृतीयाधर्मद्वारस्य द्वाविंशतितम नाम । प्रश्न० ४३ ।

कूडरूवग-कूटरूपक । आव० ४२१ । कूटरूप्यम् । आव० २०० ।

कूडलेहकरण-कूट-असद्भूत लिख्यत इति लेख, तस्य करण-क्रिया कूटलेखक्रिया-कूटलेखकरण अन्यमुद्राक्षरबिम्बस्वरूपलेखकरणमित्यर्थं । आव० ८२० ।

कूडव-मानविशेष । आव० ८२३ ।

कूडवाही-कूटवाही, बलीवर्द । आव० ७९७ ।

कूडसक्खिज्ज- कूटसाक्षित्वम्- उत्कोचमात्सर्याद्यभिभूत प्रमाणीकृत सन् कूट वक्ति, अविधवाद्यनृतस्यात्रैवान्तर्भावो वेदितव्य । आव० ८२० ।

कूडसामलिपेढे-कूटाकारा-शिखराकारा शाल्मली तस्या पीठ-कूटशाल्मलीपीठम् । ज० प्र० ३५५ ।

कूडसामली-कूटाकाराशिखराकारा शाल्मली कूटशाल्मली । ठाणा० ६६, ७६ ।

कूडा-कूटा-नन्दनवनकूटादिका । प्रश्न० ६६ ।

कूडागार-धन्नागार । नि० चू० प्र० २६५ अ । कूटागार-सशिखरभवनम् । प्रश्न० ८२ । पव्वतमठिन उवरुवरिभूमियाहि वट्टमाण कुडागार, कूडेवागार कूडागार पर्वते कुट्टितमित्यर्थ । नि० चू० द्वि० ६६ आ । कूटाकार । जीवा० २६६ ।

कूडागारसठिओ-कूटाकारसस्थित-शिखराकारसस्थित । जीवा० २७६ ।

कूडागारसाला-कूटाकारेण-शिखराकृत्योपलक्षिता शाला कूटाकारशाला । भग० १६३ । कूटस्येव-पर्वतशिखरस्येवाकारो यस्या सा तथा, सा चासौ शाला च । विपा० ६३ । तस्मिश्चिद्गुल्मवे वस्मिश्चिन्नगरे वहिर्भागप्रदेशे महती देशिकलोकवमनयोग्या शाला-गृहविशेष । निरय० २२ । कूटस्येव-पर्वतशिखरस्येवाकारो यस्या सा कूटाकारा यस्या उपरि आच्छादन शिखराकार सा कूटाकारेति, कूटाकारा चासौ शाला च कूटाकारशाला, यदिवा कूटाकारेण शिखराकृत्योपलक्षिता शाला कूटाकारशाला । राज० ५८ ।

कूडाहच्च- कूटस्येव-पाषाणमयमारणमहायन्त्रस्येवाहत्या-आहनन यत्र तत् कूटाहत्यम् । भग० ६७० । कूटे इव तथाविधपाषाणसम्पुटादौ कालविलम्बाभावसाधर्म्यादाहत्या-आहनन यत्र तत्-कूटाहत्यम् । भग० ३२३ ।

कूणिए-श्रेणिकचेल्लणयो पुत्र । निरय० ४ । श्रेणिकराजपुत्र । ज्ञाता० ६ । चम्पानगर्यां राजा । निरय० १६ । चम्पाया राजा । भग० ६२० ।

कूणिओ-कूणिक-चम्पाया राजा । भग० ३२० । शिक्षायोगदृष्टान्ते श्रेणिकपुत्र, अपरनाम अशोकचन्द्र । आव० ६७६ । भग० ५५६ । परकृतमरणे दृष्टान्त । भग० ७६६ ।

कूपिअ-कूपिका, सन्निवेश । महावीरस्वामिविहारभूमि । आव० २०७ ।

कूबर-युगन्धरम् । ज० प्र० २६१ ।

कूयरा-कुत्सित शिष्टजनजुगुप्सित चरन्ति इति कुचरा-

उद्भ्रामका, उद्भ्रामिका वा । वृ० द्वि० ६४ अ ।

कूर–भक्त । वृ० प्र० २३६ अ । ओदनविशेष । ओघ० १३३ । कूर । आव० ३५२, ६२४ । धान्यविशेष । आव० ३१४ । परिकम्पनाया दृष्टान्त । ओघ० ६६ ।

कूरओडिया–कूरकोटिका–शिप्रचटिका । आव० ६२२ ।

कूरकम्मा–क्रूरकर्मा, क्रूराणि कर्माणि यस्य स । प्रश्न० १३ ।

कूरगडुकप्राय–सीयकूरभोई अन्तपन्ताहारो । भग० ७०५ ।

कूरपुवगादि–कूरसिक्थादि, (देशीवचन) । आव० ३१५ ।

कूरभायण–कूरभाजन, ओदनभाजन । दश० ३८ ।

कूरविहाणं–कूरविधानम् । आव० ८५५ ।

कूरिकड–क्रूरीकृत, क्रूर चित्त क्रिया वा परिजनो यस्यास्ति स क्रूरी, तेन कृत–अनुष्ठितम् । तृतीयाधर्मद्वारस्य चतुर्थं नाम । प्रश्न० ४३ ।

कूर्मापुत्र–नामविशेष । औप० ११७ । कूर्मापुत्र । प्रज्ञा० १०६ ।

कूर्मोन्नता–मनुष्ययोनिभेद । आचा० ६७ ।

कूलधमग–कूले स्थित्वा । भग० ५१६ ।

कूलवारओ–कूलवारक विशालाभङ्गे श्रमणदृष्टान्त । आव० ४३७ ।

कूलवाल–श्रमणविशेष । सूत्र० १८३ ।

कूलवालओ–कूलवालक, विशालाभङ्गे श्रमणदृष्टान्त- । आव० ४३७ ।

कूलवालय–गुरूणामेव प्रत्यनीक । वृ० प्र० २१४ अ । विशालाभङ्गे श्रमणदृष्टान्त । नदी० १६७ । शिलाक्षेपक श्रमण । उत्त० ४४ । आचार्यादिप्रतिकूलत्वे निदर्शनीभूत क्षुल्लक । उत्त० ५४६ ।

कूलवालगो–कूलवालक–शिलाऽऽक्षेपक श्रमण । आव० ६८५ ।

कूलवालो–श्रमणोऽविनीत । वृ० द्वि० ५ आ ।

कूव–कूप । आव० ५८१ । प्रश्न० ८ । कूजक–व्यावर्त्तकबलम् । ज्ञाता० २२१ । अन्धकूपादि । प्रश्न० ५६ । कूप–रोमरन्ध्र । भग० ४६० । कुतुप । ज्ञाता० ५७ ।

कूवए–अन्तकृद्दशाना तृतीयवर्गस्य एकादशमध्ययनम् । अन्त० ३ ।

कूवणय–कूपनय–कुमाराया कुम्भकार । आव० २०२ ।

कूवति–कूजति–शब्द करोति । आव० ८१६ ।

कूवमहो–कूपमह–कूपमत्क उत्सव । जीव० २८१ ।

कूवय–कूपक, स्तम्भविशेष । औप० ४८ ।

कूवयट्ठाण–कूपकस्थानम् । नि० चू० प्र० ४७ अ ।

कूवर–कूवर–तुण्डम् । ज्ञाता० १५६ ।

कूविए–चोरगवेषक । ज्ञाता० ७६ । कूपिका । ज्ञाता० ७६ ।

कूविय–कूजक, व्याहारकारी, गवा व्यवर्त्तका इत्यर्थ । पिण्ड ४७ ।

कूवियबल–निवर्त्तकसैन्यानि । ज्ञाता० २३८ ।

कूष्माण्ड–व्यन्तरविशेष । प्रश्न० ५१ ।

कूष्माण्डा–पिशाचविशेष । प्रज्ञा० ७० ।

कूष्माण्डी–वल्लीविशेष । जीवा० २६ । प्रज्ञा० ३० ।

कूसेह–(देशी०) गवेषयत । वृ० द्वि० १२० अ ।

कूहंड–कूष्माण्ड, व्यन्तरनिकायामुपरिवर्त्तिनो जातिविशेष । प्रश्न० ६६ ।

कृकलास–अण्डविशेष । दश० २३० ।

कृतकुल–कृतकुरुकुच । व्य० द्वि० १६१ आ ।

कृतनिष्ठितता–तन्दुलाना वपनमारभ्य यावद् वारद्वय कण्डन तावत् कृतत्वम्, तेषाञ्च तृतीयवार तु कण्डन निष्ठितत्वम् । पिण्ड०, ६६ ।

कृतप्रतिकृतिक–कृते–उपकृते प्रतिकृत–प्रत्युपकार तद् यस्यास्ति स । ठाणा० २८५ ।

कृतमालिक–यक्षविशेष । ठाणा० २५८ ।

कृतमाल्यक–नमिस्रागुहाया अधिष्ठायकदेव । ठाणा० ७१ ।

कृतयुगादीनि– । ठाणा० १७८ ।

कृतवीर्य–कार्त्तवीर्यपिता क्षत्रिय । सूत्र० १७०, १७८ । कार्त्तवीर्यपिता । सूत्र० ३६५ ।

कृतिकर्म–द्वादशावर्त्तवन्दनकम् । ठाणा० ४०८ । कर्मणोऽपनयनकारकमर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायविषयमवनामादिरूपमिति । आव० ६८ ।

कृपणादि–द्रव्यशस्त्रम् । आचा० १७४ ।

कृमि–पृथिव्याश्रितो जीवविशेष । कचवरनिश्रितो जीव-

कृमिराग–लोभस्य लक्षणसूचक । आचा० १७० । जीवा १९१ ।

कृमिरागपट्टसूत्र– मनुष्यादिशोणितोत्पन्नकृमिलालसमुत्पन्नम् । अनु० ३५ ।

कृषिवल–कर्षक । आव० ८१५ ।

कृष्ण–केवलसम्यग्दर्शनी । आव० ८०५ । साधारणवनस्पतिविशेष । आचा० ५७ । साधारणवनस्पतिकायिकभेद । जीवा० २७ । कृष्णक, साधारणवनस्पतिविशेष । प्रज्ञा० ४० ।

कृष्णपाक्षिक–ससारापरीत्त । जीवा० ४४६ ।

कृष्णराज्ञी–ईशानदेवेन्द्रस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी । जीवा० ३६५ ।

कृष्णसार–नेत्रमध्यवर्त्तिनी कनीनिका । उत्त० ६५२ ।

कृष्णवासुदेव–द्वारिकाधिपति । प्रश्न० ८८ ।

केइ–काश्चिन्न सर्वा इत्यर्थ । ज्ञाता० २३१ ।

केइत्थ–काश्चिदत्र । ज्ञाता० २३१ ।

केउ–केतु–मेघवृष्ट्या निष्पद्यते तद् । प्रासादगृहादिकम् । बृ० प्र० १३८ आ । वर्षावारिनिष्पाद्य क्षेत्रम् । बृ० तृ० ५० अ ।

केउते–पातालकलशविशेष । ठाणा० २२६ ।

केउमती–धर्मकथाया पञ्चमवर्गस्य अष्टादशमध्ययनम् । ज्ञाता० २५२ ।

केउरसवि– । सम० ८७ ।

केऊ–केतु, जलकेत्वादिक । ओप० ५२ । ज्योतिष्कविशेष । प्रश्न० ६५ ।

केऊर–पातालकलशविशेष । ठाणा० ४८० । केयूर–अङ्गदम् । ज० प्र० १०६ ।

केकई–अष्टमवासुदेवस्य माता । सम० १५२ ।

केकय–चिलातदेशवासी म्लेच्छविशेष । प्रश्न० १४ ।

केकयअद्ध–केकयार्द्धं, जनपदार्द्धविशेष । प्रज्ञा० ५५ ।

केकारवं–केकायित–मयूराणा शब्द । ज्ञाता० ६६ ।

केगमई–कैकेयी–लक्ष्मणवासुदेवमाता । आव० १६२ ।

केज्जग–क्रय्यम् । आव० ६७७ ।

केतइ–वलयविशेष । प्रज्ञा० ३३ ।

केतकी–वलयविशेष । प्रज्ञा० ३१ । वलयविशेष । आचा० ३० । सुरभिकुसुमविशेष । उत्त० ६५४ । जीवा० १९१ ।

केतन–सामान्येन । ठाणा० २१८ । सकेत । व्य० द्वि० १२५ अ ।

केतराती– । नि० चू० प्र० ३३० अ ।

केतु–आकाशपतितोदकनिष्पाद्य क्षेत्रम् । आव० ८२६ । ध्वज । जीवा० १८८ ।

केतुकरे–चिह्नकर अद्‌भूतकारित्वादिति । ठाणा० ४६३ ।

केतुमती–किन्नरेन्द्रस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी । भग० ५०४ । ठाणा० २०४ ।

केदार–वप्र, जलस्थानम् । जीवा० १२३ ।

केमहालए–किमहालय–कियान् । ज० प्र० ४५० । किं महत्त्व यस्यासौ किमहत्त्व । भग० १५१ ।

केमहालय–किमहान्, कियत्प्रमाणमहत्त्वम् । जीवा० १३८ ।

केमहालिका–किम्महती । जीवा० ३७२ ।

केमहालिया–किम्महती । सम० १४२ । कियन्महती–किम्महत्त्वोपेता–कियती वा । अनु० १६३ ।

केमहिड्डिए–केन रूपेण महर्द्धिक, किंरूपा वा महर्द्धिरस्येति किमहर्द्धिक । कियन्महर्द्धिक । भग० १५४ ।

केय–केतन, केत–चिह्नमङ्गुष्ठमुष्टिग्रन्थिगृहादिकम् । ठाणा० ४९९ । केत–चिह्नम् । आव० ८४१ । केत–चिह्नम् । भग० २९७ । केया–रज्जु । दश० १०६ । रज्जु । नि० चू० प्र० २० ।

केयइ–गुच्छाविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

केयइअद्धे–केकयीनामार्ध–अर्धमात्रमार्यत्वम् । राज० ११३ ।

केयइपुड–गन्धद्रव्यविशेष । पुष्पजातिविशेष । ज्ञाता० २३२ ।

केयण–कृतकम् । नि० चू० प्र० ३५१ अ । शृङ्गमयधनुर्मध्ये काष्ठमयमुष्टिकात्मकम् । उत्त० ३११ । केतन–मत्स्यबन्धनम् । सूत्र० ८२ ।

केयकदली–कन्दविशेष । उत्त० ६९१ ।

केयति–वनस्पतिविशेष । भग० ८०३ ।

केयाघडिया–रज्जुबद्धघटिकाहस्त सन् विहायसि व्रजेदि-

त्याद्यर्थप्रनिपादनार्थ. त्रयोदशशते नवम उद्देशक । भग० ५९६ । रज्जुप्रान्तवद्धघटिका । भग० ६२७ ।

केयार–अवन्तीजनपदे कूपविशेष । व्य० प्र० १८ अ । नि० चू० प्र० ३५१ अ ।

केयावंती–केआवन्ति–केचन । आचा० १८५ ।

केयूर–आभरणविशेप । आव० १८२ । भूपणविधिविशेप । जीवा० २६९ । वाह्याभरणविशेपावित्यर्थ । ठाणा० ४२१ ।

केयूवो–केयूप, मेरोर्दक्षिणस्या पातालकलश । जीवा० ३०६ ।

केलास–कैलास–मेरु । नि० चू० द्वि० ९९ अ । कैलाश राहो कृष्णपुद्गल । सूर्य० २८७ । साकेतनगरे गाथापतिविशेप । अन्त० २३ । अन्तकृद्दशाना षष्ठवर्गस्य सप्तममध्ययनम् । अन्त० १८ । ठाणा० २२६ । कैलाश, नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवविशेप । जीवा० ३६५ । तृतीयोऽनुवेलन्धरनागराज, तस्यैवाऽऽवासपर्वतश्च । जीवा० ३१३ ।

केलासभवणं–कैलासभवन कैलासपर्वतरूपाश्रय । पिण्ड० १३२ ।

केलाससमा–कैलाससमा–कैलासपर्वततुल्या । उत्त० ३१६ ।

केलि–परिहास । वृ० प्र० २६९ आ । क्रीडा । जीवा० १७३ । प्रज्ञा० ९६, २५८ । केलि, नर्म । औप० ५२ ।

केलीकिल – । आचा० २५५ ।

केवइका–द्रुम्मा । वृ० तृ० १३९ आ ।

केवइकालं–कियत्कालम् । भग० १९ ।

केवइकालस्स–कियता कालेन । जीवा० १४१ ।

केवगादि–द्रव्यविशेप । नि० चू० द्वि० ४४ अ ।

केवच्चिर–कियच्चिर, कियन्त काल यावत् । जीवा० ६७ । कियच्चिर–कियत्कालम् । भग० ११६ ।

केवडिया–रूप्यका । वृ० प्र० २९७ आ ।

केवलं–शुद्धम् । आव० ७६९ । ठाणा० ४६ । अकलङ्कम् । उत्त० १८८ । सम्पूर्णज्ञेयविपयत्वात् सम्पूर्णम् । अनु० २ । परिपूर्णं, विशुद्ध वा । प्रश्न० १३५ । सकलजगद्भाविसमस्तवस्तुसामान्यपरिच्छेदरूपम् । प्रज्ञा० ५२७ । असहाय, मत्यादिज्ञाननिरपेक्ष, शुद्ध, तदावरणकर्ममलकलङ्काङ्करहित, सकल, तत्प्रथमतयैव अशेपतदावरणाभावत सम्पूर्णोत्पत्ते, असाधारण, अनन्यसदृश, ज्ञेयानन्तत्वादनन्त, यथावस्थिताशेषभूतभवद्भाविभावस्वभावावभासि वा । आव० ८ । अद्वितीयम् । आव० ७६० । *असहाय, मत्यादिनिरपेक्षत्वादकलङ्क वा आवरणमलाभावात्,* सकल वा तत्प्रथमतयैवाशेपतदावरणाभावत सम्पूर्णोत्पत्तेरसाधारण वा, अनन्यसदृशत्वादनन्त वा । *ठाणा० ४७ । असहाय मत्यादिज्ञाननिरपेक्षत्वात् शुद्ध* वा, आवरणमलकलङ्करहितत्वात्, सकल वा तत्प्रथमतयैवाशेपतदावरणाभावत सम्पूर्णोत्पत्ते असाधारण वा, अनन्यसदृशत्वात् अनन्त वा । ठाणा० ३४८ । केवल – शुद्ध, अन्यपदासमृष्ट । दश० १२६ । परिपूर्ण । ज्ञाता० १८० । भग० १५५ । असहाय, शुद्ध, परिपूर्ण, असाधारण, अनन्त वा । भग० ६६ । सुद्धो अण्णेण सह असजुत्तो । दश० चू० ५४ ।

केवलकप्प–केवलकल्प, केवल–केवलज्ञान तत्कल्प परिपूर्णतया तत्सदृश परिपूर्णमित्यर्थ । प्रज्ञा० ६०० । परिपूर्णम् । जीवा० १०९ । सपूर्णम् । वृ० तृ० ५२ आ । केवलज्ञानसदृश, सपूर्णपर्यायो वा केवलकल्प इति । भग० १५५ । केवल–परिपूर्ण स चासौ स्वकार्यसामर्थ्यात् कल्पश्च केवलज्ञानमिव वा परिपूर्णतयेति, केवलकल्प समयभापया परिपूर्ण । ठाणा० ६१ । केवल – परिपूर्ण स चासौ कल्पश्च स्वकार्यसमर्थ इति केवलकल्प । ज्ञाता० १८० ।

केवलकप्पा–केवलकल्पा–परिपूर्णा, परिपूर्णप्राया वा । ठाणा० १६१ ।

केवलदसण–केवलमेव दर्शन–सकलजगद्भाविवस्तुसामान्यपरिच्छित्तिरूप केवलदर्शनम् । जीवा० १८ ।

केवलदसणि–केवल–सकलद्रव्यविपयत्वेन परिपूर्ण दर्शन केवलदर्शनी-तदावरणक्षयाविर्भूततल्लब्धिमतो जीवस्य सर्वद्रव्येपु मूर्तामूर्तेपु सर्वपर्यायेपु च भवतीति । अनु० २२० ।

केवलनाण–केवलज्ञान–पञ्चमक ज्ञान, अथवाऽनन्तराभिहितज्ञानसारूप्यप्रदर्शक एव । आव० ८ । पञ्चम ज्ञानम् । ठाणा० ३३२ ।

केवलवेयसो–केवलवेदस –अवगततत्त्व । जीवा २५६ ।

केवलि–केवली–श्रुतावधिमन पर्यायकेवलज्ञानी । ठाणा० ६८ ।

केवलिआराहणा–केवलिना–श्रुतावधिमन पर्यायकेवलज्ञानिनामिय केवलिकी सा चासावाराधना चेति केवलिकाराधना । ठाणा० ६८ ।

केवलिइए–रूप्यका । बृ० तृ० ६३ आ ।

केवलिउवासग–केवलिनमुपास्ते य श्रवणानाकाङ्क्षी तद् उपासनमात्रपर सन्नसौ केवल्युपासक । भग० २२२ ।

केवलिए–केवल–अद्वितीय केवलिप्रणीतत्वाद् वा कैवलिकम् । ज्ञाता० ५१ ।

केवलिकमसे–केवलिन 'कम्मस'त्ति कार्मग्रन्थिकपरिभाषयाऽशशब्दस्य सत्पर्यायत्वात् सत्कर्माणि केवलिसत्कर्माणि भवोपग्राहीणि । उत्त० ५८६ ।

केवलिकी– । प्रज्ञा० ३६६ ।

केवलिकेवली–केवलिनस्तृतीयो भेद । नि० चू० द्वि० १३६ आ ।

केवलिपन्नत्तो–केवलिप्रज्ञप्त –सर्वज्ञदेशित । प्रज्ञा० ३६६ ।

केवलिमरण–केवलिमरणम् । सम० ३३ । ये केवलिन –उत्पन्नकेवला सकलकर्म्मपुद्गलपरिशाटतो म्रियन्ते तज्ज्ञेयमिति । मरणस्य द्वादशो भेद । उत्त० २३४ ।

केवलिय–केवलमद्वितीय नापरमित्थम्भूतम् । आव० ७६० । कैवलिक–परिपूर्णम् । आव० ३२६ । केवलस्य भाव कैवल्य–घातिकर्मवियोग । आव० ७३ ।

केवलिसमुग्घाय–केवलिनि अन्तर्मुहूर्त्तभाविपरमपदे समुद्घात केवलिसमुद्घात । जीवा० १७ ।

केवलिसावग–जिनस्य समीपे य श्रवणार्थी सन् शृणोति तद्वाक्यान्यसौ केवलिश्रावक । भग० २२२ ।

केवली–सर्वज्ञ । भग० ६७ । चतुर्दशशतके दशम उद्देश । भग० ६३० ।

केवलीणठाण–केवलिना स्थान, केवलिनामहिंसाया व्यवस्थितत्वात् । अहिंसाया षट्त्रिंशतम नाम । प्रश्न० ६६ ।

केशर–पद्मपक्ष्मम् । भग० १२ । ज० प्र० १३८ ।

केशव–कृष्ण । आचा० ३६० ।

केशि–उदायनभागिनेय । ठाणा० ४३१ ।

केशिगौतमीय–केशिगौतमाभ्यामभिहित । विशे० ६४८ ।

केस–केशा –शिरोजा । सम० ६१ । शिरसिजा । उत्त० ३३८ । क –अज्ञातकुलशीलसहजत्वादनिर्दिष्टनामक सकार प्राकृतशैलीभव । ज० प्र० २०२ ।

केसभूमी–केशभूमि, केशोत्पत्तिस्थानभूता मस्तकत्वक् । जीवा० २७३ ।

केसमसु–श्मश्रूणि, कूर्चकेशा । भग० ८८ ।

केसर–किञ्जल्क । ज० प्र० ४२ । आचा० ८१ । वर्णविशेष । आचा० २६ । केशरम् । आव० ४१६, ६३५ । ज्ञाता० ६८ । केशर –गन्ध । आव० २७७ । केसरोपलक्षित । जीवा० १७६ । केसरप्रधानम् । जीवा० १२३ । काम्पील्यनगरे उद्यानविशेष । उत्त० ४३८ ।

केसरचामरवाल–सिंहस्कन्धचमरपुच्छकेशा । ज्ञाता० २२२ ।

केसरपाली–केसरपालि –स्कन्धकेशश्रेणि । ज०प्र०५३० ।

केसरा–केसराणि–कर्णिकाया परितोऽवयवा । ज० प्र० २८४ ।

केसरि–द्रहविशेष । ठाणा० ७३ ।

केसरिका–पात्रमुखवस्त्रिका । ओघ० २१२ ।

केसरिद्दहो–केसरिद्रहो नाम द्रह । ज० प्र० ३७७ ।

केसरिया–केशरिका–प्रमार्जनार्थं चीवरखण्डम् । भग० ११३ । औप० ६५ ।

केसरी–चीवरखण्ड प्रमार्जनार्थम् । ज्ञाता० ११० । प्रतिवासुदेवनाम । सम० १५४ ।

केसरुमती– । व्य० प्र० २८० आ ।

केसव–केशव –वासुदेव । आव० १६६ । ज्ञाता० २१३ । जीवा० १२६ । वसुदेवलघुसुत वासुदेव । उत्त० ४८६ । अपरविदेहे जीर्णश्रेष्ठिपुत्र, श्रेयासजीव । ऋषभपूर्वभववैद्यपुत्रस्य मित्रम् । आव० १४६ ।

केसवरिस–केशवर्ष । आव० ७३४ ।

केसवाणिज्ज–केशवाणिज्यम् । दासीर्गृहीत्वाऽन्यत्र विक्रीणाति । आव० ८२६ ।

केसहत्थ–केशहस्तो–धम्मिल्ल । भग० ४६८ ।

केसा–केशा –शिरोजा । प्रश्न० ६८ ।

केसि–कीदृशी स्त्री । अनु० १३ ।

केसिआ–केशा विद्यन्ते यस्या सा केशिका । सूत्र० ११६ ।

केसिगोयमिज्ज–केशिगौतमीय, उत्तराध्ययनेषु त्रयोविंशतितममध्ययनम् । उत्त० ९ । केशिगौतमीय–उत्तराध्ययनेषु त्रयोविंशतितममध्ययनम् । उत्त० ४९७ ।

केसिसामि–केशिस्वामी । भग० १३८ । केशिनामा आचार्य । भग० ५४८ ।

केसी–पार्श्वपत्य श्रमण । राज० ११८ । निरय० १, ४० । केशी–विगतिद्वारे उदायनस्य भागिनेय । आव० ५३७ । केश्यभिधान कृतसत्को दुष्टोऽश्व । प्रश्न० ७५ । उदायनस्य भागिनेय । भग० ६१८ ।

केसुअ–किंशुक–पलाशपुष्पम् । जं० प्र० २१२ ।

कैदारक–मल्ल । पिण्ड० ९६ ।

कैवल्यं–घातिकर्मवियोग । विशे० ५२७ ।

कोकण–देशविशेष । आचा ५ । व्य० प्र० १६८ अ । नि० चू० प्र० ६३ अ । नि० चू० द्वि० ७९ आ ।

कोकणकसाधु–अपध्यानाचरिते साधु । आव० ८३० ।

कोकणग–म्लेच्छविशेष । प्रश्न० १४ । प्रज्ञा० ५५ । कोङ्कणक–देशविशेष । आव० ९३ । प्राणातिपातदोषविषये उदाहरणम् । आव० ८१८ ।

कोकणगखमणओ–कोङ्कणकक्षपक–मनोदण्डे उदाहरणम्। आव० ५७७ ।

कोकणगदेसो–कोङ्कणकदेश–कर्मसिद्धोदाहरणे देशविशेष । आव० ४०८ ।

कोकणगरुवं– । ओघ० १५९ ।

कोकणगसावगो–कोङ्कणकश्रावक–गुणोदाहरणे श्राद्ध । आव० ८२१ ।

कोकारव–कोङ्कारव, पुरद्वारस्योद्घाट्यमानस्याव्यक्तोऽस्य शब्द । दश० ४८ ।

कोंच–म्लेच्छविशेष । प्रज्ञा० ५५ । क्रौञ्च–पक्षिविशेष । आव० ३६९ । क्रौञ्च, लोमपक्षिविशेष । जीवा० ४१ । चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेष । प्रश्न० १४ ।

कोचवरो–क्रौञ्चवर, अपान्तरालद्वीप । जीवा० ३६८ ।

कोचवीरग–पेटासदृश जलयानम् । बृ० द्वि० ३२ अ ।

कोचस्सरा–क्रौञ्चस्वरा–विद्युत्कुमाराणा घण्टा । जं० प्र० ४०७ । क्रौञ्चस्वर, क्रौञ्चस्येव स्वरो यस्य स । जीवा० २०७ ।

कोचा–लोमपक्षिविशेष । प्रज्ञा० ४९ ।

कोचावली–क्रौञ्चावलि । जीवा० १९१ ।

कोचासणं–क्रौञ्चासन, यस्यासनस्याधोभागे क्रौञ्चो व्यवस्थित स । जीवा० २०० ।

कोची–द्रविडदेशे नगरी । बृ० द्वि० २२७ अ ।

कोंटलवेंटलं–कार्मणवशीकरणादि । आव० १९३ ।

कोडग–क्षत्रियविशेष । नि० चू० प्र० १२ अ ।

कोडलमेढं–कुण्डलमेढ–भृगुकच्छे वाणव्यन्तरविशेषयात्रास्थानम् । बृ० द्वि० १३६ अ । भृगुकच्छे वाणव्यन्तरविशेष । बृ० द्वि० १३६ अ ।

कोडिण्णो–कौण्डिन्य–तापसविशेष । आव० २८७ ।

कोडिन्न–कौण्डिन्य–शिवभूतिशिष्य । विशे० १०२२ ।

कोडियायण–चैत्यविशेष । भग० ६७५ ।

कोतिय–कौन्तिकम्–मधुविशेष । आव० ८५४ । महुस्स पढमो भेओ । नि० चू० प्र० १९६ आ ।

कोति–पाण्डुराज्ञो राज्ञी । ज्ञाता० २१३ ।

कोंतेय– । नि० चू० प्र० ३६ ।

कोअगडं–पार्श्वजिनस्य प्रथमपारणकस्थानम् । आव० १४६।

कोआसिअ–कोआसिते–विकसिते । जं० प्र० ११३ ।

कोआसिय–पद्मवद्विकसितम् । औप० १७ ।

कोइल–कोकिल–अन्यपुष्ट । उत्त० ६५३ ।

कोइलच्छद–कोकिलच्छद–तैलकण्टक । उत्त० ६५३ ।

कोइलच्छदकुसुमं–कोकिलच्छदकुसुम–कोकिलच्छद–तैलकण्टक, तस्य कुसुमम् । प्रज्ञा० ३६० ।

कोइला–लोमपक्षिविशेष । प्रज्ञा० ४९ । कोकिला–परभृत् । प्रश्न० ३७ ।

कोइल्ल–कोल्लेर–नित्यवासविषये सङ्गमस्थविरदृष्टान्ते नगरम् । आव० ५३६ ।

कोउअ–कौतुक–रक्षा । जं० प्र० १८९ । अलङ्कारविशेष । आव० १८२ । मषीपुण्ड्रादि । उपा० ४४ ।

कोउगं–सौभाग्यादिनिमित्त परेषा स्नपनादि । औप० १०६ । सौभाग्याद्यर्थं स्नपनम् । प्रज्ञा० ४०६ । अवतारणकादि । सूत्र० ३२५ । रक्षादिकम् । प्रश्न० ३९ । कौतुक–रक्षादि । आव० १३० । कौतुक–समवसरणम् । बृ० प्र० १९४ अ । मङ्गलकर्म । उत्त० ७१० ।

कोउगामिगा–कौतुकात् मृगा इव मृगा। उत्त० ५०१।

कोउत–कौतुक–उत्सव। आव० ४३३।

कोउय–कौतुक–रक्षाविधानादि। भग० ५४५। ललाटस्य मुशलस्पर्शनादीनि। उत्त० ४६०। कौतुकानि–मषीपुण्ड्रादीनि। निरय० ७। कौतुक–आश्चर्यम्। व्य० प्र० १६३ अ। मषीतिलकादिकम्। भग० १३७। मषीपुण्ड्रादि। भग० ३१८। सौभाग्याद्यर्थं स्नपनकम्। भग० ५१।

कोउयकरण–कौतुककरण–सौभाग्यादिनिमित्त परस्नपनकादिकरणम्। ठाणा० २७५।

कोऊहल–कौतुक–अपत्याद्यर्थं स्नपनादि। उत्त० ४७६।

कोऊहलपडिया–कोऊहलप्रतिज्ञया–कौतुकेणेत्यर्थं। नि० चू० प्र० १८४ अ।

कोऊहल्ल–कुतूहल, नटादिषु कौतुकम्। दश० २६७। कौतूहलम्। आव० ४१६।

कोऊहल्लिलो–कुतूहलवान्। ओघ० ९८।

कोकंतिय–कोकन्तिक–लोमटक, यो रात्रौ कौ कौ एव रौति। प्रश्न० ७। लोमटिक, सनखपदश्चतुष्पदविशेष। जीवा० ३८। काकन्तिका–लोमटका ये रात्रौ को को इत्येव रवन्ति। ज० प्र० १२४। शृगालाकृतिर्लोमटको रात्रौ को को इत्येव रारटीति। आचा० ३३८।

कोकंतिया–सनखपदचतुष्पदविशेष। प्रज्ञा० ४५। कोकन्तिका–लुङ्कडिका। जीवा० २८२। लोमटका। ज्ञाता० ७०।

कोकणदे–जलरुहविशेष। प्रज्ञा० ३३।

कोकासवड्ढई–कोकाशवर्द्धकी–शिल्पकर्मविषये दृष्टान्त। आव० ४०९।

कोकासिअ–कोकासिते–विकसिते। ज० प्र० २३६।

कोकासिय–कोकासित–पद्मवद्विकसितम्। जीवा० २७३। विकसितम्। प्रश्न० ८२।

कोकिला–लोमपक्षिविशेष। जीवा० ४१।

कोक्कतिए–कोकतिया–लुङ्कडी। प्रज्ञा० २५४।

कोक्कासो–कोकाश–शिल्पेऽर्थोपार्जने कोकाश। दश० १०७। मामविशेष। यन्त्रमयकापोतकारक। व्य० द्वि० १२७ आ।

कोक्कुइय–भाण्डा भाण्डप्राया वा। औप० ६९। कौकुच्यम्। चेष्टाविशेष। उत्त० ७०६।

कोच्चितो–शैक्षक। व्य० द्वि० १४७ अ।

कोच्छुर– । नि० चू० द्वि० १३४ अ।

कोच्छा–कुत्सा–शिवभूत्यादय। ठाणा० ३९०।

कोच्छुभो–मणी। नि० चू० तृ० ८१ आ।

कोज्जय–कुब्जक, कुवो इति नाम्ना वृक्षविशेष। ज० प्र० १९२।

कोटलय–कोटल ज्योतिष निमित्त वा। ओघ० १४६।

कोटा–ग्रीवा। प्रश्न० ५६।

कोटिंबो–उडवो। नि० चू० द्वि० ७७ आ।

कोटिक–गणविशेष। आचा० ८१। दश० २४२।

कोटिकादि–गणविशेष। प्रश्न० १२६।

कोटिम–उपरिबद्धभूमिक गृहम्। व्य० द्वि० १०७ अ। उत्त० ७०६।

कोट्टब–कोट्टम्वानि–गौडदेशोद्भवानि। व्य० द्वि० २०४ अ।

कोट्ट–ज अडविमज्झे भिल्लपुलिंदचाउवन्नजणवयमिस्स दुग्ग वसति वणिया च जत्थ ववहरति त कोट्ट भन्नति। नि० चू० द्वि० २१ अ। प्राकार। उत्त० ६०५। ओघ० २१०। अटव्या चतुर्वर्णजनपदयुत भिल्लदुर्गम्। बृ० द्वि० १०५ अ। प्राकार। प्रश्न० १७।

कोट्टकिरिय–कुट्टनक्रिया–रौद्ररूपा चण्डिका, महिषकुट्टनक्रियावतीमित्यर्थं। भग० १६४। तत्कुट्टनपरा कोट्टक्रिया। अनु० २६।

कोट्टग–जत्थ लोगो अडवीए पउरफलाए गतु फलाइ सोसेति त कोट्टग भण्णति। नि० चू० द्वि० १२८ अ। कोट्टक–पुलिंदपल्ली। बृ० प्र० १६५ आ। गन्त्रीपोट्टलकादिभिरानीय नगरादौ विक्रीणाति। बृ० प्र० १४७ आ। लोक प्रचुरफलायामटव्या गत्वा फलानि यावत्पर्याप्त गृहीत्वा यत्र गत्वा शोषयति, पश्चाद् गन्त्रीपोट्टलकादिभिरानीय नगरादौ विक्रीणाति तत्। बृ० द्वि० २९० अ।

कोट्टणि–कोट्टन्य–या कोट्टग्रहणाय प्रतिकोट्टभित्तय उत्थाप्यन्ते ता। ज० प्र० २०९।

कोट्टपाल–नगर रक्खति जो सो णगररक्खिओ कोट्टपालो। नि० चू० प्र० १९५ अ।

कोट्टबलिकरण—कोट्टाय–प्राकाराय वलिकरणम् । कोट्टा–क्रीडा तेन वलिकरण चन्दिकादे पुरतो वस्तादेरिव उपहारविधानम् । प्रश्न० १४ ।

कोट्टरं—छिद्रम् । नि० चू० प्र० १६१ आ ।

कोट्टवीर—शिवभूतिशिष्य । विशे० १०२२ । कोट्टवीर–शिवभूतेर्लघुशिष्य । उत्त० १८० ।

कोट्टा—कोट्टा–क्रीडा । प्रश्न० १७ ।

कोट्टागा—काष्ठतक्षका, वर्द्धकिन । आचा० ३२७ ।

कोट्टितिय—कुट्टयन्तिका तिलादीना चूर्णनिकारिका । ज्ञाता० ११७ ।

कोट्टिबा—गोभक्तदानस्थानम् । वृ० द्वि० १३३ अ ।

कोट्टिवे—जत्थ गोभत्त दिज्जति । नि० चू० तृ० ४२ अ । उडुप । नि० चू० प्र० ४५ अ ।

कोट्टिम—कुट्टिमम् । आव० ५५० ।

कोट्टिमअकोट्टिमाइ—कृत्रिमाकृत्रिमाणि । पउ० ९५–३८ ।

कोट्टिमकारे—शिल्पविशेष । अनु० १४९ ।

कोट्टिल्ल—ह्रस्वमुद्गरविशेष । विपा० ७१ ।

कोट्टिल्लयं—मुद्गरक । विपा० ७२ ।

कोट्टेइ—कुट्टयति । आव० ३९६ ।

कोट्ठ—कोष्ठ–कुशूल । ज० प्र० १५४ । कुशूल । ज० प्र० १६ । गन्धद्रव्यविशेष । जीवा० १९१ । ज०प्र० ६० । उपरितनगृह, धान्यकोष्ठो वा । ज० प्र० २१० । गन्धद्रव्यम् । ज० प्र० ३५ । कोष्ठ–कुशूल । भग० २७४ । वृ० द्वि० १६८ आ । ठाणा० १२४ । सूर्य० ५ । कोष्ठक, अपवरक । जीवा० १६० । गङ्गासमुदायात्मक । भग० ६७६ । धान्यभाजनानि । ठाणा० १७३ । कोष्ठान् आ–समन्तात् कुर्वते तस्मिन्निति । उत्त० ३५१ । अविनष्टसूत्रार्थधारणम् । नदी० १७७ । पुलिदपल्ली । नि० चू० द्वि० १४४ अ । कोष्ठ, बुद्धिभेद । प्रज्ञा० ४२४ ।

कोट्ठए—श्रावस्तीनगर्या चैत्य । भग० ५५२, ६५९, ४८४ । आव० ३१२ । राज० १२६ । ज्ञाता० २५१ । निरय० २२ । श्रावस्तीनगर्यां चैत्य । उपा० ५३ । वाणारसीनगर्या चैत्य । उपा० ३१, ३४ । आव० ७१४ ।

कोट्ठओ—वट्टमढो सुन्नओ । दश० चू० ८२ । अग्गिमालिदओ । नि० चू० प्र० १९२ अ ।

कोट्ठग—कोष्ठक–श्रावस्त्या तिन्दुकोद्याने चैत्यविशेष । उत्त० १५३ । कोष्ठका–अपवरका । प्रज्ञा० ८६ । वृ० प्र० ३१४ अ । ज० प्र० ७६ । अध्ययनापवरक । वृ० द्वि० १०७ अ । कोष्टक–चट्टाना शाला । व्य० द्वि० ४२० अ । आवासविशेष । ओघ० ८२ ।

कोट्ठतो—कोष्ठक । वृ० द्वि० ६२ अ ।

कोट्ठपुड—कोष्ठपुट–गन्धद्रव्यपुट । जीवा० १९१ । कोष्ठपुटे ये पच्यन्ते ते कोष्ठपुटा–वासविशेषा । ज्ञाता० २३२ । गन्धद्रव्यविशेष । प्रज्ञा० ३०७ । कोष्ठ–गन्धद्रव्य तस्य पुटा । ज० प्र० ३५ । पुटै परिमितानि यानि कोष्ठादिगन्धद्रव्याणि तान्यपि परिमेये परिमाणोपचारात् कोष्ठपुटानि । जीवा० १९२ ।

कोट्ठबुद्धिणो—कोष्ठबुद्धय –यथा कोष्टके धान्य प्रक्षिप्त तदवस्थमेव चिरमप्यवतिष्टते न किमपि कालान्तरेऽपि गलति, एव येषु सूत्रार्थौ निक्षिप्तौ तदवस्थावेव चिरमप्यवतिष्टत ते कोष्ठवुद्धय । वृ० प्र० १९३ आ ।

कोट्ठबुद्धी—कोष्ठक इव धान्य या बुद्धिराचार्यमुखाद्विनिर्गतौ तदवस्थानौ च सूत्रार्थौ धारयति न किमपि तयोः कालान्तरे गलति सा कोष्ठवुद्धि । प्रज्ञा० ४२४ । कोष्ठवत्–कुशूल इव सूत्रार्थधान्यस्य यथाप्राप्तस्याविनष्टस्याऽऽजन्मधरणाद् बुद्धि–मतिर्येषा ते । औप० २८ ।

कोट्ठसमुग्गयं—कोष्ठसमुद्गकम् । जीवा० २३४ ।

कोट्ठागार—दब्भादितणट्ठाण । नि० चू० प्र० २९५ अ । जत्थ सणसत्तरसाणि धण्णाणि कोट्ठागारो । नि० चू० प्र० २७२ आ । कोष्ठा–धान्यभाजनानि तेपामागार–गृह कोष्ठागार धान्यगृहम् । ठाणा० १७३ । कोष्ठा–धान्यपल्यास्तेषामगार–तदावारभूत गृहम् । उत्त० ३५१ ।

कोट्ठार—कोष्ठागारम् । आव० ४३५ ।

कोट्ठिया—पुरिसप्पमाणा हीणाधिया वा चिक्खल्लमती । नि० चू० तृ० ५९ अ । कोष्ठिका–लोहादिधातुधमनार्यं मृत्तिकामयी कुशूलिका । उपा० २१ ।

कुट्ठियाओ—कोष्ठिकात–मृन्मयकुशूलसस्थानाया । आचा० ३४४ ।

कोडंड—कुदड–कारणिकाना प्रज्ञापराधान्महत्यपराधिनोऽप-

राघे अल्प राजग्राह्य द्रव्यम् । भग० ५४४ ।

कोडब–कोलम्बप्रान्त, लोकेऽवनत वृक्षशाखाग्रमुच्यते । ज्ञाता० २३६ ।

कोडंबिय– । नि० चू० प्र० ११८ अ ।

कोड–कुटिल, क्रुद्ध । आव० ५३६ ।

कोडल्लय–णयवेमिय । नि० चू० द्वि० ६२ आ ।

कोडालसगुत्तो–कोडालमगोत्र –ऋषभदत्तब्राह्मणस्य गोत्र । आव० १७८ ।

कोडालसगोत्त–गोत्रविशेष । आचा० ४२१ ।

कोडि–कोटि –अस्रि, विभाग । पिण्ड० ८३ । कोटयो–विभागा सूक्ष्मपल्योपमापेक्षयाऽसख्येयखण्डानि बादरपल्योपमापेक्षया तु कोटय –सङ्ख्याविशेषा । ठाणा० ६१ । विभाग । ठाणा० ४५२ ।

कोडिगारा–शिल्पार्यभेद । प्रज्ञा० ५६ ।

कोडिण्ण–कौडिन्य –शिवभूतेर्ज्येष्ठशिष्य । उत्त० १८० । नगरविशेष । ज्ञाता० ३०६ । कोडिन्य –महागिर्याचार्यशिष्य । आव० ३१६ । कौण्डिन्य –बोटिकशिवभूतेरादिशिष्य । आव० ३२४ ।

कोडिन्नगणे–महावीरस्य नवमो गण । ठाणा० ४५१ ।

कोडिन्न–कौण्डिन्य –महागिरिसूरीणा शिष्य । विशे० ६६० । शिवभूते प्रथमशिष्य । विशे० १०२२ । उत्त० ३२१ । कौण्डिन्य –मिथिलाया श्रीमहागिर्याचार्यशिष्य । उत्त० १६३ ।

कोडिन्ना– । ठाणा० ३६० ।

कोडिपडागा–कोटिपताका । आव० ३४२ ।

कोडिय–गाढचम्पितम् । वृ० द्वि० २४३ आ ।

कोडियसहिय–कोटीभ्या सहित कोटीसहितम् । मिलितोभयप्रत्याख्यानकोटि, चतुर्थादिकरणमेव । आव० ८४० ।

कोडिसहिय–मीलितप्रत्याख्यानद्वयकोटि चतुर्थादि कृत्वाऽनन्तरमेव चतुर्थादे करणम् । भग० २९६ ।

कोडिसिला–कोटीशिला । आव० १७६ ।

कोडी–कोट्यौ–अग्रे प्रत्याख्यानाद्यन्तकोणरूपे । उत्त० ७०६ । कोटि–पञ्चोत्तर लक्षम् १०५००० । जीवा० ३२५ ।

कोडीए–कोट्या–अग्रभागेन । ज० प्र० ६८ ।

कोडीकरण–कोट्यौव कोटीकरणम् । दश० १६२ ।

कोडीण–कोट्य –अनेका कोटाकोटिप्रमुखा मनुष्या । ज० प्र० ६५ ।

कोडीणा– । ठाणा० ३६० ।

कोडीमातसा– । ठाणा० ३६३ ।

कोडीवरिस–कोटिवर्ष, लाटजनपदे आर्यक्षेत्रम् । प्रज्ञा० ५५ । कोटीवर्ष–मूलगुणप्रत्याख्यानोदाहरणे म्लेच्छनगरम् । आव० ७१५ ।

कोडीसहिय–कोटीभ्या–एकस्य चतुर्थादेरन्तविभागोऽपरस्य चतुर्थादेरेवारम्भविभा इत्येवलक्षणाभ्या सहित–मिलित युक्त कोटीसहित मिलितोभयप्रत्याख्यानकोटेश्चतुर्थादिकरणमित्यर्थ । ठाणा० ४९८ । कोटीमहित–कोट्यौ–अग्रे प्रत्याख्यानाद्यन्तकोणरूपे सहिते मिलिते यस्मिस्तत् ।

कोडुब–कौटुम्ब–स्वराष्ट्रविषयम् । जीवा० १६६ ।

कोडुबिअ–कौटुम्बिका –अधिकारिण । ज० प्र० १८८ । कतिपयकुटुम्बप्रभवोऽवगलका । ज० प्र० १६० । कौटुम्बिक –श्रेष्ठ्यादि । ओघ० १२० । कौटुम्बिका महर्द्धिका । वृ० ६५ अ । कौटुम्बिक –कतिपयकुटुम्बप्रभु । जीवा० २८० ।

कोडुबित–कौटुम्बिक –कतिपयकुटुम्बप्रभु । ठाणा ४६३ ।

कोडुबिय–कौटुम्बिक –कतिपयकुटुम्बप्रभवोऽवलगका । भग० ३१८ । औप० १४ । कौटुम्बिका –कतिपयकुटुम्बप्रभवो राजसेवका । भग० ११५ । कौटुम्बिका –ग्राममहत्तरा । प्रश्न० ९६ । भग० ४७४ । कौटुम्बिका –कतिपयकुटुम्बनायका । भग० ४६३ । नि० चू० प्र० ७८ आ ।

कोड्ड–स्फुटम् । आव० ४२० । कौतुक–मनोरथ । आव० ४३२ ।

कोढ–कुष्ठ–पाण्डुरोग, गलत्कोष्ठ वा । वृ० प्र० १७० अ । रोगविशेष । ज्ञाता० १८१ ।

कोढिउ–कुष्ठी । आव० ६७४ ।

कोढी–कुष्ठमष्टादशभेद तदस्यास्तीति कुष्ठी । आचा० २३३ ।

कोण–कर्णम् । वृ० प्र० १०७ आ ।

कोणगुली–कोणेऽङ्गुलि । आव० ६७६ ।

कोण–कोण –वादनदण्ड । जीवा० १९३ । ज० प्र० ३८ । कोण । आव० ८४२ ।

कोणओ–लगुडो । नि० चू० प्र० १०५ आ ।

कोणा–अश्रय । जीवा० १२३ ।

कोणालग–कोणालक –पक्षिविशेष । प्रश्न० ८ ।

कोणिए–कूणिक –चम्पानगर्या राजा । भग० ३१६ । कोणिक –चम्पानगर्यधिपति । अन्त २५ । चम्पानगर्यां राजा । प्रश्न० १ ।

कोणिओ–कोणिक, राजविशेष । विपा० ९० । श्रेणिकपुत्र । दश० ५० । शिक्षायोगदृष्टान्ते श्रेणिकचेल्लणयो पुत्र । य पूर्वभवे कुण्डीश्रमण आसीत् । आव० ६७८ ।

कोणिक–श्रेणिकपुत्र । व्य० द्वि० ४२६ अ । चम्पाया राजा । ज्ञाता० ३ ।

कोण्हुआ–जम्बूक । आव० ३५१ ।

कोतव–उदररोगनिष्पन्न कौतवम् । अनु० ३५ । कोतवो–वरको । नि० चू० प्र० २५५ अ ।

कोतालि–गोट्ठी । नि० चू० तृ० १७ आ ।

कोताली–गोष्ठी । बृ० द्वि० ३१ आ ।

कोतुविआ–कुतुपेन वहिर्ग्रामे व्यवहारकृत् । बृ० द्वि० १९० आ ।

कोत्तिया–भूमिशायिन । भग० ५१९ । निरय० २५ । औप० ९० ।

कोत्थ–जनपदविशेष । भग० ६८० । उदरदेश । ज्ञाता० ६८ ।

कोत्थल–वस्त्रकम्बलादिमय । उत्त० ४५७ ।

कोत्थलक –वस्ति, अपाटितेनापनीतमस्तकेन निकर्षितचर्मान्तर्वर्त्तिसर्वास्थ्यादिकचवरेणापरचर्ममयस्थिगलकस्थगितापानछिद्रेण मङ्कीर्णमुखीकृतग्रीवान्तर्विवरेणाजापश्वोरन्यतरस्य शरीरेण निष्पन्नश्चर्ममय प्रसेवक कोत्थलापरपर्यायो इति । पिण्ड० १८ ।

कोत्थलकारिया–कोत्थलकारिका, भ्रमरीविशेष । गृहकारिका । ओघ० १२७ ।

कोत्थलकारी–भ्रमरी । बृ० प्र० २७८ अ ।

कोत्थलगारिआ–कोत्थलकारिका–गृहकारिका । ओघ० ११८ ।

कोत्थलगारिया–कोत्थलकारिका–भ्रमरीविशेष । आव० ६२५ ।

कोत्थलवाहगो–त्रीन्द्रियजन्तुविशेष । जीवा० ३२ ।

कोत्थुंभरि–कुस्तुम्भर्यो–धान्यककणा । ज० प्र० २४३ ।

कोत्थुभो–कौस्तुभो–वक्षोमणि । प्रश्न० ७७ ।

कोदंड–धनु । भग० २९० । उत्त० ३११ । कुदण्डस्तु कारणिकाना प्रज्ञाद्यपराधात् महत्यप्यपराधिनोऽपराधे अल्प राजग्राह्य द्रव्यम् । ज० प्र० १९४ । चाप । ज० प्र० २०६ ।

कोदूसग–कोद्रवविशेष । भग० २७४ ।

कोदूसा–धान्यविशेष । भग० ८०२ ।

कोद्दसा–औषधिविशेष । प्रज्ञा ३३ ।

कोद्दव–कोद्रव –धान्यविशे । भग० ८०२ । दश० १९३ । सूत्र० ३०९ । धान्यविशेष । तृणविशेष । ठाणा० २३४ । औषधिविशेष । प्रज्ञा० ३३ । कोद्रव, धान्यविशेष । तृणपञ्चके तृतीयोभेद । आव० ६५२ ।

कोद्दवकूरं–कोद्रवतन्दुलम् । आव० २०० ।

कोद्दवजाउलयं–कोद्दवोभज्भी । ओघ० १९६ ।

कोद्दवोदणसेइया–कोद्रवौदनसेतिका । आव० ६९२ ।

कोद्दवुभज्जी–कोद्दवोभज्भी कोद्दवजाउलय । ओघ० १९६ ।

कोद्दालक.–एकोरूकद्वीपे वृक्षविशेष । जीवा० १४६-

कोद्दालिय–कुद्दालिक, भूखनित्रविशेष । विपा० ४८ ।

कोधे–क्रोधे निश्रितमिति सम्बन्धात् क्रोधाश्रित, मृपेत्यथ । ठाणा० ४८९ ।

५ अ ।

कोप्पर–कूर्पर । ओघ० ३१ । कूर्परम् । बृ० प्र०

स्कन्धावार । आव० ६६७ । –गृहं

कोप्परथणी– । नि० चू० द्वि० न्य-

कोमल–श्रोत्रमनसा प्रह्लादकारि । व्य० प्र० –। मनोज्ञम् । जीवा० १८८, २९५ । कोमल सुभग । जीवा० ४७४ ।

कोमारा–मट्टिया, उल्लामट्टिया । नि० चू० प्र० आ ।

कोमुइजोगजुत्तो–कौमुदीयोगयुक्त – कार्तिकपौर्णमास्यामुदित । दश० २४६ ।

कोमुइया–कृष्णस्य प्रथमा मेरी । बृ० प्र० ५६ अ ।

कोमुइवारं–कौमुदीवासरम् । आव० ८१६ ।
कोमुई–कौमुदी । ओघ० ९७ । कौमुदी–कार्त्तिकी पौर्णिमा । ज० प्र० ११५ ।
कोमुतिआ–कौमुदीकी–वासुदेवस्य देवतापरिगृहीता गोशीर्षचन्दनमयी तृतीया भेरी । आव० ९७ ।
कोमुदि–कौमुदी–कार्त्तिकी । प्रश्न० ८४ ।
कोमुदिका–वासुदेवस्य गोशीर्षश्रीखण्डमयी देवतापरिगृहीता तृतीया भेरी । विशे० ६१९ ।
कोमुदित–उत्सववाद्यम् । ज्ञाता० १०० ।
कोमुदियवारो–कौमुदीमह । आव० ५६२ ।
कोमुदी–कौमुदी । आव० ३५५ ।
कोमुदीनिसा–कौमुदीनिशा, कार्त्तिकपौर्णमासी । ज्ञाता० ३५ ।
कोयव–रूतपूरित पट, या लोके 'माणिकी' इति प्रसिद्धा । बृ० द्वि० २२० अ । कुतुप । ठाणा० २३४ ।
कोयवगो–वरक्को । नि० चू० द्वि० ६१ अ । रूतपूरित-पट । ज्ञाता० २३२ ।
कोयवाणि–वस्त्रविशेष । आचा० ३९३ ।
कोयवि–कौनरी–द्रुप्रतिनेखिनद्रूप्यपचके द्वितीयो भेद । आव० ६५२ ।
९६०–कोरङ्क–पक्षिविशेष । प्रश्न० ८ ।
३२१ । ...रण्टक–पुष्पजातिविशेष । ज० प्र० ३४ ।
उत्त० १...अग्रवीज । दश० १९३ । गुल्मविशेष ।
कोडिन्ना– ० । स्थलजम् । प्रज्ञा० ३७ । कोरण्टक,
कोडिपडा...विशेष । जीवा० १९१ ।
कोडिय–कोरण्टक–भरुकच्छे उद्यानम् । व्य० प्र० १७३
कोडिय
भयप्र...–गुल्मविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।
कोडियगुम्मा–कोरण्टकगुल्मा । ज० प्र० ९८ ।
...**टयधाऊ**–पीतवर्णं । (दे०) ।
...रव–कोरक–मुकुलम् । ठाणा० १८५ । ज०प्र० ५२८ ।
कोरव्व–कौरव्य–कौरव्यगोत्र । जीवा० १२१ । कुल विशेष । आव० १७९ । कुरव–कुरुवंशप्रसूता । औप० २७ । कुरव–आर्यभेद । ठाणा० ३५८ । कुरव । भग० ४८९ । कुलार्यभेदविशेष । प्रज्ञा० ५६ ।

कोरव्वीया– । ठाणा० ३९३ ।
कोरिंट–कोरिण्ट–कुसुमविशेष । भग० ३१८ । कोरण्टक–पुष्पजाति । ज्ञाता० २३ ।
कोरिंटक–अग्रवीजा । ठाणा० १८६ ।
कोरिंटमल्लदाम–कोरण्टकमाल्यदाम । प्रज्ञा० ३६१ ।
कोलबए–कोलम्ब–शाखिशाखानामवनतमग्रं भाजनं वा । अनुत्त० ५ ।
कोलवो–कोलम्ब–प्रान्त । विपा० ५५ ।
कोल–कोल–घुण । आव० ६५६ । दश० १५५ । शूकर । ज्ञाता० ७० । बृ० प्र० १४८ अ । बदर । दश० चू० ८० । पिण्ड० १६१ । दश० १७६, १८५ । दरचूर्णम् । बृ० प्र० २६८ अ । उन्दराकृतिर्जन्तुविशेष । प्रश्न० ७ । क्रोड–शूकर । प्रश्न० ७ । कुवल–बदरम् । भग० २८५ ।
कोलघरियाओ–कुलगृहात्–पितृगृहादागता कौलगृहिका । उपा० ४८ ।
कोलगिणी–कोलिकी । आव० ४२१ ।
कोलचुण्ण–बदरचुण्ण । दश० चू० ८० । बदरसक्तुर । दश० १७६ ।
कोलजुत्तो–कुलौचित्य । व्य० प्र० २२४ अ ।
कोलट्ठिय–कुवलास्थिकम्–बदरकुलक । भग० २८५ ।
कोलपाणग–पाणकविशेष । आचा० ३४७ ।
कोलपाले–धरणेन्द्रस्य द्वितीयलोकपाल । ठाणा० १९७ ।
कोलव–कौलव–तृतीय करणम् । ज० प्र० ४९३ ।
कोलवाल–दवरकम् । आव० ४२७ ।
कोलवाससि–कोला–घुणा तेषामावास । सम० ३९ ।
कोलसुणए–कोलशुनक–मृगयाकुशल श्वा । प्रज्ञा०२५४ । सूकरस्वरूपधारी । उत्त० ४६० ।
कोलसुणक–कोलश्वान–महासूकर । प्रश्न० ७ ।
कोलसुणग–सनखपदचतुष्पदविशेष । प्रज्ञा० ४५ । कोलशुनका–महाशूकरा । ज० प्र० १२४ । पाटयित्वा भक्षणम् । नि० चू० द्वि० १२९ अ ।
कोलसुणय–महासुकर । आचा० ३३८ ।
कोला–घुणा । नि० चू० द्वि० ८३ अ । नि० चू० प्र० २५५ आ । घुणा–तदावासभूते जीवप्रतिष्ठित । आचा०

३३७ ।

कोलाओ–कोल । त० ।

कोलाल–मृद्भाजनविशेष । आव० ४८४ । कुलाला – कुम्भकारा । उपा० ४२ ।

कोलालिए–कौलालानि–मृद्भाण्डानि पण्यमस्येति कौलालिक । अनु० १४६ ।

कोलालिया–कर्मार्यभेदविशेप । प्रज्ञा० ५६ । कोलालिका –कुलालक्रयविक्रयिण । वृ० द्वि० १७५ अ ।

कोलावास–कोला–घुणकीटकास्तेपामावास । आचा० २६३ । घुणावास । आचा० ४१० । कोला–घुणास्तदावासभूत कोलावास । आचा० ३३७ ।

कोलाहल–विलपिताऽऽक्रन्दितादिकलकल । उत्त० ३०७ । वहुजनमहाध्वनि । ज्ञाता० २२० । जीवा० १७३ । वोल । प्रज्ञा० ६७ । आर्त्तशकुनिसमूहध्वनि । भग० ३०६ । आर्त्तशकुनसमूहध्वनि । ज० प्र० १६७ ।

कोलाहलभूत–कोलाहल – विलपिताऽऽक्रन्दितादिकलकल कोलाहल एव कोलाहलक स भूत इति जातो यस्मिस्तत् कोलाहलकभूतम् । उत्त० ३०७ ।

कोलाहलवभूए–कोलाहल –आर्त्तशकुनिसमूहध्वनिस्त भूत प्राप्त कोलाहलभूत । भग० ३०६ ।

कोलाहा–दर्वीकरअहिभेदविशेष । जीवा० ३६ । प्रज्ञा० ४६ ।

कोलिअतंतुय–कोलिकतन्तुकम् । ओघ० ११७ ।

कोलिओ–कृतिकर्मदृष्टान्ते द्वारिकाया वासुदेवभक्तो वीरकाभिध कोलिक । आव० ५१३ ।

कोलिकपुटक–वाद्यविशेप । भग० २१६ ।

कोलिग–कोलिक –जीवविशेष । वृ० द्वि० १६४ अ ।

कोलिगजालग–कोलिकजालकानि–जालकाकारा कोलिकाना लालातन्तुसन्ताना । वृ० प्र० २७८ अ ।

कोलिय–कौलिक –तन्तुवाय । नन्दी० १६५ ।

कोलियकः–लूता । ओघ० १२६ ।

कोलियकण्णा–कोलिककन्या विपभोजननिवृत्तौ दृष्टान्त । आव० ५५६ ।

कोलियगो–कोलिक । उत्त० १०० ।

कोलियापुडिगो–मक्कडसताणओ । नि० चू० प्र० २५५ आ ।

कोलुण–कारुण्यम् । नि० चू० द्वि० ५८ आ ।

कोलेज्जाओ–अधोवृत्तखाताकाराद् असयत । आचा० ३४४ ।

कोल्लइर–सगमस्थविरविहारभूमि । नि० चू० द्वि० ६५ आ । कोल्लकिर–क्रीडनधात्रीदोषविवरणे नगरम् । पिण्ड०, १२५ ।

कोल्लगाणुगो–जो रयहरणणिसेज्जाए उवग्गाहियपादपुछणे वा ठितो वा एति चिट्ठति वा । नि० चू० तृ० १३७ अ ।

कोल्लयग्गामे–वर्द्धमानजिनस्य प्रथम पारणकस्थानम् । आव० १४६ ।

कोल्लयर–कुल्लयर–नगरविशेष । उत्त० १०८ ।

कोल्लर–हस्तिन उपरि कोल्लररूपा 'गेल्लि' या मानुप गीलतीव । भग० १८७, ३६६ ।

कोल्लाए–सन्निवेश । उपा० २, १४ । सन्निवेश । महावीरस्वामिविहारभूमि । भग० ६६२ ।

कोल्लाकसन्निवेशं–वर्द्धमानजिनस्य विहारभूमि । आव० २०० ।

कोल्लाग–कोल्लाक –सन्निवेश । महावीरस्वामिविहारभूमि । आव० १८८ ।

कोल्लागसन्निवेस–कोल्लागसन्निवेश –व्यक्तसुधर्मगणधरयोर्जन्मभूमि । आव० २५५ ।

कोल्लुकपरंपर–महाराष्ट्रप्रसिद्धकोल्लुकचक्रपरपरन्याय । वृ० प्र० ६० आ ।

कोल्लुगा–सिगाला । नि० चू० प्र० १७५ अ ।

कोल्हुकं–इक्षुयन्त्रम् । वृ० द्वि० १६६ आ ।

कोल्हुगाणूगे–क्रोष्टुकानुग । आचार्याणा तृतीया उपमा । भिक्षो तृतीया उपमा । व्य० प्र० १२१ आ ।

कोव–कोप –क्रोधोदयात्स्वभावाच्चलनमात्रम् । भग० ५७२ ।

कोवघर–कोपगृहम् । विपा० ८३ ।

कोवडिओ–केतराती । दीणारो । नि० चू० प्र० ३३० अ ।

कोवपिंड–कोपपिण्ड –कोहप्रसादात् पिंड लभते न कोपपिण्ड । नि० चू० द्वि० १०० अ ।

कोविए–कोविद –पण्डित । उत्त० ४८२ । लब्धशास्त्रपरमार्थं । उत्त० ४१६ ।

कोविओ–कोविद –ससारविमुखप्रज्ञतया पण्डित । पिण्ड० ७२ ।
कोवियप्पा–कोविदात्मा-कोविद -लब्धशास्त्रपरमार्थं आत्माऽस्येति । उत्त० ४२० ।
कोविया–खोडिया–नाशिता । नि० चू० द्वि० १०८ आ ।
कोवेइ–कोपयति । विशे० ६५६ ।
कोश –घटस्यादौ आकार । विशे० ६३८ ।
कोशक– । आचा० ३५७ ।
कोशकारकीट – । दश० २७३ ।
कोशलजनपद –कोशलजनपदोऽप्यभिधीयते यत्र अयोध्या नगरीति । ज्ञाता० १२५ । पिण्ड० ६८ ।
कोशला–देशविशेष । पिण्ड० ६८ ।
कोशातकी–तिक्तरसपरिणता । प्रज्ञा० १० । वल्लीविशेप । आचा० ३० ।
कोशिकार –कीटविशेष । आचा० ७१ ।
कोष्ठक–श्रावस्तीनगर्यां तैन्दुकोद्याने चैत्य । विशे० ६३५ ।
कोष्ठ–लक्षणहीनम् । अनु० १०२ । वाससमुदाय । भग० ७१३ । धान्यपल्य । उत्त० ३५१ ।
कोष्ठबुद्धिता–ऋद्धिविशेष । ठाणा० ३३२ ।
कोस–कोष–भाण्डागार चर्मलताद्यनेकवस्तुरूपम् । उत्त० ३१६ ।
कोस–सराव । दश० चू० ६६ । जहिं रयणादिय दव्व सो । कोश । नि० चू० प्र० ३४ आ । कोश –आश्रय । प्रश्न० ६४ । समुदायो । नि० चू० द्वि० ६२ आ । क्रोश –गव्यूतम् । उत्त० ६८६ । कोश –वारकादिभाजनम् । सूत्र० ११८ ।
कोसब–एकास्थिकवृक्षविशेष । भग० ७०५, ८०३ । प्रज्ञा० ३१ ।
कोसबगडिय–
कोसबवण–कौशाम्बवन–कृष्णस्य कालकरणस्थानम् । अन्त० १६ ।
'**कोसबाहार**–आर्यसुहस्तिविहारभूमि । द्रमकदीक्षास्थानम् । नि० चू० प्र० २४३ अ ।
कोसबि–कौशाम्वी–यमुनातीरे नगरीविशेष । विशे० ४६५ । वर्धमानस्वामिविहारभूमि `। भग० ५५६ । आव० २२१ । शतानीकराजधानी । भग० ५५६ । विपा० ६८ । आव० २२२ ।
कोसबिय–कोशाम्वी. अज्ञातोदाहरणेऽजितसेनराजधानी । आव० ६६६ ।
कोसबी–कौशाम्वी–नगरीविशेप । उत्त० २१४, १६३, ३७६ । यज्ञदत्तद्विजस्थानम् । उत्त० १११ । वत्सदेशराजधानी । बृ० द्वि० १६७ आ । द्रमकप्रव्रज्यास्थानम् । बृ० द्वि० १५३ आ । वर्द्धमानस्वामिपारणकस्थानम् । आव० २२५ । दुर्गन्धाया उत्पत्तिस्थानम् । उत्त० १२३ । नगरीविशेप । ज्ञाता० २५३ । वत्यजणवए णगरी । नि० चू० तृ० १६ अ । भग० ५५६ । नगरीविशेष । उत्त० ४४ । दश० ४६ । तापसश्रेष्ठिस्थानम् । उत्त० ६६ । वत्सजनपदे आर्यक्षेत्रम् । प्रज्ञा० ५५ । जितशत्रुराजधानी । उत्त० २८६, २८७ । धनपालराजधानी । विपा० ६५ । पद्मप्रभजन्मभूमि । आव० १६० । शिक्षायोगदृष्टान्ते हारोत्पत्तिविषये नगरी । आव० ६७६ । भावप्रतिक्रमणदृष्टान्ते नगरी । आव० ४८५ । अज्ञातोदाहरणेऽजितसेनराजधानी । आव० ७०० । सपइस्स उप्पत्तिट्ठाण । नि० चू० तृ० ४४ आ ।
कोसबीओ–कौशाम्बीक । आव० ६३ ।
कोसकोट्ठाग।रकहा–कोशो-भाण्डागार, कोष्ठागार–धान्यागार, तत्कथा कोशकोष्ठागारकथा । ठाणा० २१० ।
कोसकोट्ठारे–कोशकोष्ठागार, राज्ञ कोशकोष्ठागारसम्बन्धीविचार । राजकथायाश्चतुर्थभेद । आव० ५८१ ।
कोसग–कोशक –चर्मपञ्चके चतुर्थो भेद । ठाणा० २३४ । कोश –चर्मपञ्चके चतुर्थो भेद । आव० ६५२ । नखभगरक्षकश्चर्मकोश । बृ० द्वि० १०१ अ । अगुलीनामगुष्ठस्य वा छादक स कोशक । बृ० द्वि० २२२ आ ।
कोसय–कोश । आव० ६२५ ।
कोसल–देशविशेष । उत्त० ३७५ । भग० ६८० । कोशलक –कोशलदेशोत्पन्न । व्य० द्वि० २१६ आ ।
कसलग–कोशलक –कोशलदेशीय । पिण्ड० १६७ ।
कोसलपुर–सुमतिनाथजन्मभूमि । आव० १६० ।
कोसला–कोशला–अयोध्या, तज्जनपदोऽपि कोशला ।

भग० ३१७ । अयोध्या । जं० प्र० १३६ । कोशला–जनपदविशेष । ज्ञाता० १३० । प्रज्ञा० ५५ । कोशला–अचलगणधरजन्मभूमि । आव० २५५ ।

कोसलाउरे–कोशलपुरे–मायोदाहरणे नगर, यत्र पूर्वभवे धनपतिधनापहभार्ये नन्दनेभ्यस्य श्रीमतिकान्तिमतिदुहितरौ जाते । आव० ३९४ ।

कोसलिए–कोशलदेशोत्पन्नत्वात् कौशलिक । ठाणा० ३२७ । कोशलाया–अयोध्याया भव कौशलिक । ज०प्र० १३६ । कोशलदेशे भव कौशलिक । सम० ९० ।

कोसलिय–कौशलिक–देशविशेष । उत्त० ३५४ ।

कोसा–कोशा, पाटलिपुत्रे गणिका । आव० ४२५ । वेश्या, यस्या गृहे स्थूलभद्रो द्वादशवर्षं यावत् स्थित । आव० ६९५ ।

कोसातकी–तिक्तरसे दृष्टान्त । उत्त० ६७६ ।

कोसि–कोशी–प्रतिमा । ज्ञाता० ५७ ।

कोसिओ–कौशिकनामा अश्ववणिक् । आव० २२० । कौशिकनामा ब्राह्मणविशेष । आव० १७१ । कौशिक–तापस्पुत्र । आव० १७६ ।

कोसिकारकीड–कोशिकारकीट–आत्मवेष्टक कीटविशेष । प्रश्न० ६१ ।

कोसिता–कौशिका–षड्डुलकादय । ठाणा० ३९० ।

कोसिय–कौशिक–हस्तगोत्रम् । ज० प्र० ५०० ।

कोसियगोत्ते–कौशिकगोत्रम् । सूर्य० १५० ।

कोसियज्जो–कौशिकार्य–आर्जवोदाहरणे चम्पायामुपाध्याय । आव० ७०४ ।

कोसी–नदीविशेष । ठाणा० ४७७ । कोश–परिवार । सूत्र० २७६ । कोशी–प्रतिमा । उपा० २४ ।

कोसेज्ज–कौशेयक–कौशेयककारोद्भव वस्त्रम् । प्रश्न० ७१ । वस्त्रम् । औप० १० । कौशेय–त्रसरितन्तुनिष्पन्नम् । ज० प्र० १०७ । वेडयकारिणो । नि० चू० ४३ आ । वस्त्रविशेष । ज० प्र० २०२ ।

कोसेयं–कौसेय–त्रसरितन्तुनिष्पन्न वस्त्रम् । जीवा० २६९ ।

कोहंडा–कूष्माण्डा–पुस्फला । अनु० १९२ ।

कोह–कारणेऽकारणे वाऽतिक्रूराध्यवसाय क्रोध । आचा० १९१ । तत्रात्मीयोपघातकारिणी क्रोधकर्म्मविपाकोदयात् क्रोध । आचा० १७० । क्रोधन–क्रुध्यति वा येन स क्रोध–क्रोधमोहनीयसम्पाद्यो जीवस्य परिणतिविशेष क्रोधमोहनीयकर्मैव । ठाणा० १९३ । अप्रीतिलक्षण । उत्त० २६१ । क्रोध–अप्रीतिपरिणाम । जीवा० १५ । क्रोध–नोकर्मद्रव्यक्रोध–चर्मकारचर्मकोथो नीलकोथादिश्च । विशे० ११७० । क्रोध । आव० ८४८ । क्रोध–सप्तम उत्पादनदोष । पिण्ड० १२१ । षष्ठ पापस्थानकम् । ज्ञाता० ७५ । कोथ–कुथितत्व शटित वा । भग० १९८ ।

कोहणिस्सिया–क्रोधनि सृता–क्रोधान्नि सृता, क्रोधाद्विनिर्गतेति । प्रज्ञा० २५६ ।

कोहण–क्रोधन–रुक्कृत् क्रुद्धोऽस्य·तक्रुद्धो भवति । नवममसमाधिस्थानम् । सम० ३७ । क्रोधन–य सकृत्क्रुद्धोऽत्यन्तक्रुद्धो वा भवेत् । नवममसमाधिस्थानम् । आव० ६५३ ।

कोहनिस्सिया–क्रोधनिसृता–मृपाभाषाभेद । दश० २०९ ।

कोहविवेग–क्रोधविवेक–कोपत्याग, तस्य दुरन्ततादिपरिभावनेनोदयनिरोध । भग० ७२७ ।

कोहसन्ना–क्रोधोदयादावेशगर्भा प्ररूक्षनयनदन्तच्छदस्फुरणादिचेष्टैव सज्ञायतेऽनयेति क्रोधसज्ञा । भग० ३१४ । क्रोधवेदनीयोदयात्तदावेशगर्भा पुरुषमुखवदनदन्तच्छदस्फुरणचेष्टा क्रोधसज्ञा । प्रज्ञा० २२२ ।

कोहा–क्रोधा–क्रोधानुगता । आव० ५४८ ।

कोहाड–प्रहरणविशेष । नि० चू० द्वि० ३१ आ ।

कोहडियाकुसुमेइ–कुष्माण्डिकाकुसुम–पुस्फलीपुष्प । ज० प्र० ३४ ।

कोहिछो– । ओघ० ९८ ।

कोहेतु–को हेतु–का उपपत्ति । सूर्य० २२ । किं कारणम् । सूर्य० १३ ।

कौकुच्यं–दुष्टकायप्रचारसयुक्त हास्य असभ्यो वाक्प्रयोगश्च । (त० ७–२७) ।

कौटलं–अर्थशास्त्रम् । ज्योतिष निमित्त वा । ओघ० १४९ ।

कौटिल्यं–मायी । दश० २५४ ।

कौटुंबिक–कर्षक ।

कौतुक–थुथुकरण, बन्धकडकादिबन्धन, एतत् सर्वमपि कौतुकमुच्यते। बृ० प्र० २१५ अ।
कौतुका– । भग० २३।
कौमोदकी–वासुदेवस्य गदा। उत्त० ३५०। गदाविशेष। प्रश्न० ७७। गदा, लकुटविशेष। सम० १५७।
कौलिक–कोकिलजातीय पुरुषविशेष। नदी० १५५।
कौलिकी–कोकिलजातीया–भ्रामरम्, उत्पातिकीबुद्धेर्दृष्टान्त। नदी० १५५।
कौशलिकतया– । ठाणा० ४०१।
कौशाम्बकानने–वनविशेष। ठाणा० ४३३।
कौशिक– । दश० २१३। दश० २१२।
कौशेयकानि–वस्त्रविशेषभूतानि। सम० १५८।
कौसुभ–रागविशेष। रञ्जनविशेष। जं० प्र० १८८।
क्खलिय–स्खलितम्। विशे० ४०६।
क्खाय–ख्यात, कथित, प्रसिद्धम्। प्रज्ञा० ६८।
क्रतु–सयूपो यज्ञ एव। विशे० ७८५।
क्रम–गति, प्रवृत्ति। विशे० २२०।
क्रमभङ्ग–यथैको जीव एक एवाजीवेत्यादि। आव० ५९६।
क्रमभङ्गका–भङ्गस्य द्वितीयभेद। ठाणा० ४७८।
क्रयाणक–द्रव्यसमूह। नदी० १५०।
क्राकचव्यवहार–क्रकचेन काष्ठस्य तद्विषय सङ्ख्यान कल्प एव यत्पाट्या क्राकचव्यवहार। ठाणा० ४९७।
क्रियानय–नयविशेष। दश० ८०।
क्रियाविशाल–कायिक्यादिक्रियाविशाल सयमक्रियाविशाल च। नदी० २४१।
क्रियासिद्धि–इहैव मोक्षावाप्तिलक्षणा। आचा० ४१९।
क्रीडारथ-क्रीडार्थं रथ। रथस्य प्रथमो भेद। जीवा० १८९।
क्रीत–साध्वकल्यमशनादि। दश० २०३। प्रश्न० १४४।
क्रूरच्छाणि– । नि० चू० प्र० ३२३ अ।
क्रूराणि–क्रूराणि, निर्दयानि निरनुक्रोशानि। नि० चू० प्र० १९९।
क्रोधकारण–गर्व। आचा० १६४।
क्रोधनत्वं–अत्यन्तक्रोधनत्वम्। नवममसमाधिस्थानम्। प्रश्न० १४४।
क्रोधादिपिण्ड.–क्रोधमानमायालोभैरवाप्त क्रोधादिपिण्ड। आचा० ३५१।
क्रोधादिमान–क्रोधादीना मानम्। आचा० १६४।
क्रौंचारि–कार्त्तिकेय। आचा० २६।
क्रौष्ठिकी–श्रीकृष्णस्य नैमित्तिक। उत्त० ४९०।
क्वणित–शब्दितम्। आव० ६४६।
क्वणिता–काचिद्वीणा। जीवा० २६६।
क्वथित–प्रधानम्। जीवा० २६८।
क्वथितोदक–उष्णोदकम्। दश० २२८।
क्वाथ–फाणितम्। प्रज्ञा० ३६४।

क्ष

क्षणक्षयिभावप्ररूपक–सामुच्छेद। आव० ३११।
क्षणमात्र–पलमात्रम्। नदी० १५५।
क्षणिक– । ओघ० ७२।
क्षणीभूत–स्तिमितम्। ओघ० १८४।
क्षपकर्षि–भिक्षुविशेष। उत्त० ४१८।
क्षपण–अनारोपणम्, प्रस्थे चतु सेतिकाऽतिरिक्तधान्यस्यैव भ्राटनमित्यर्थ। ठाणा० ३२६।
क्षपणोपसम्पत्–चारित्रनिमित्त क्वचित्क्षपणार्थम्। आव० २७१।
क्षयनिष्पन्न–तत्फलरूपो विचित्र आत्मपरिणाम, केवलज्ञानदर्शनचारित्रादि। ठाणा० ३७८।
क्षयोपशम–अर्द्धविध्यातानलोद्घट्टनसमता नीतम्। आव० ७९।
क्षान्त–क्षामितसमस्तप्राणिगण। आचा० २९१।
क्षात्रखानक–सन्धिच्छेदक। प्रश्न० ४६।
क्षारोदका–आमलकोदका। पिण्ड० ६५।
क्षाल–निर्द्धमन। ठाणा० २९४।
क्षीर– । जीवा० १९१।
क्षीरकाकोली–साधारणवनस्पतिविशेष। आचा० ५७।
क्षीरपूरम्– । जीवा० १९१।
क्षीरबिडोलिका–साधारणवनस्पतिकायिकभेद। जीवा० २७।

क्षीररसा–वापीनाम । ज० प्र० ३७१ ।
क्षीरवर–द्वीपविशेष । अनु० ९० ।
क्षीराश्रवत्व–ऋद्धिविशेष । ठाणा० ३३२ ।
क्षीराश्रव–क्षीरवन्मधुरवक्ता । आचा० ६८ ।
क्षीरिका–साधारणवनस्पतिकायिकभेद । जीवा० २७ ।
क्षीरोद–क्षीररसास्वाद समुद्र । अनु० ९० ।
क्षुद्रिका–सर्वतोभद्राप्रतिमाया प्रथमो भेद । ठाणा० २९२ ।
क्षुद्रकीकण्टको– । नि० चू० तृ० १०० आ ।
क्षुद्रघण्टा–घण्टिका, किङ्किण्य । ज० प्र० ५२९ ।
क्षुध इति कर्म्मण । नि० चू० तृ० ८५ अ ।
क्षुभिता–आकुला । ओघ० ७१ ।
क्षुरप्रसंस्थितं–रसनेन्द्रियसंस्थानम् । भग० १३१ ।
क्षुरिका–शस्त्रविशेष । जीवा० १९२ । नदी० १६४ । आभरणविशेष । पिण्ड० १२४ ।
क्षुल्लककुमार–श्रमणविशेष । सूत्र० ७२ ।
क्षुल्लकभव– । ठाणा० ८६ ।
क्षुल्लहिमवत्–हिमवद्वर्षधरपर्वते द्वितीयकूटम् । ठाणा० ७२ ।
क्षुल्लिका–भद्रोत्तरप्रतिमाया प्रथमो भेद । ठाणा० २९३ ।
क्षुल्लिकाविमानप्रविभक्ति – । ठाणा० ५१३ ।
क्षेत्र–आर्यस्य द्वितीयभेदे प्रथम । सम० १३५ ।
क्षेत्रगणितं–रज्जुगणितम् । ठाणा० २६३, ४९७ ।
क्षेत्रग्रहणलक्षणैका–सङ्ग्रहपरिज्ञासम्पत, प्रथमो भेद । उत्त० ४० ।
क्षेत्रप्रत्युपेक्षणा–कायोत्सर्गनिषदनशयनस्थानस्य स्थण्डिलाना मार्गस्य विहारक्षेत्रस्य च निरूपणा । ठाणा० ३६१ ।
क्षेत्रमरण–यस्मिन् क्षेत्रे मरण इङ्गिनीमरणादि वर्ण्यते क्रियते वा, यदा वा तस्य शस्याद्युत्पत्तिक्षमत्वमुपहन्यते तदा तत् । उत्त० २२९ ।
क्षेत्रविज्ञानं–किमिद मायाबहुलमन्यथा वा ? तथा साधुभिरभावित भावित वा नगरादीति विमर्शनम् । प्रयोगमतिसम्पत तृतीयो भेद । उत्त० ३९ ।
क्षेत्रार्या–कर्मभूमिजाता । त० ३–१५ ।
क्षेत्रोपक्रम–क्षेत्रविनाश । अनु० ४८ ।
क्षेम–तत्तदुपद्रवाद्यभावापादनम् । राज० १०९ ।
क्षेमङ्कर.–आघाया परिवर्तितद्वारे वसन्तपुरे निलयश्रेष्ठिपुत्र । पिण्ड० १०० ।
क्षोभः–आकस्मिक सत्रास । ओघ० १९ ।
क्षौमकं–वस्त्रम् । ठाणा० ५१२ ।

ख

खं–आकाशम् । आव० ८५० ।
खंधकरणी–कुडभकरणी साध्व्युपकरणम् । बृ० द्वि० २५३ अ ।
खज–खज–पादविकल । बृ० द्वि० ११९ अ ।
खजणं–खञ्जन–दीपमल्लिकामल, स्नेहभ्यक्तशकटाक्षघर्षणोद्भव वा । प्रज्ञा० ३६१ । ज० प्र० ३२ । दीपमल । बृ० द्वि० ९२ अ० । खञ्जन । सूर्य० २८७ । ज्ञाता० ६ ।
खजन–खञ्जन दीपादीनाम् । ठाणा० २१९ । दीपादिखञ्जनतुल्य पादादिलेपकारी कर्द्दमविशेष एव । ठाणा० २३५ । स्नेहाभ्यक्तशकटाक्षघर्षणोद्भूतम् । उत्त० ६५२ । लोभस्य लक्षणसूचक । आचा० १७० ।
खंजरीट–जीवविशेष । दश० १४१ ।
खंड–शर्करा । बृ० प्र० ७५ आ । अनु० १५४ । भग्नकर्ण । विशे० ६३० । भिन्न । जीवा० १३० । इक्षुविकार । उत्त० ६५४ । मधुशर्करा वा । जीवा० २६८ । लवणम् । ओघ० १३७ । पव्वदेससहित । नि० चू० तृ० २३ अ० । खण्डम् । प्रज्ञा० ३६४ । आचा० ९७ ।
खडकण्णो–खण्डकर्ण–अवन्तीपतेर्मन्त्री । व्य० प्र० १४९ आ ।
खंडकुटो–खडकुटो नाम यस्य कर्णौ वोटौ स पानीयमून गृह्णाति । बृ० प्र० ५४ अ ।
खडकुडे–खण्डकुट । आव० १०१ ।
खडग–खण्डप्रपातगुहाकूट, वैताढ्यकूटनाम । ज० प्र० ३४१ । खण्डप्रपाता नाम वैताढ्यगुहा । ठाणा० ४५४ ।
खंडगप्पवायगुहा–खण्डप्रपातगुहा । आव० १५१ ।
खंडगमल्लगं–खडमल्लक–खण्डशराव भिक्षाभाजनम् । ज्ञाता० २००, २०३ ।
खंडघडगं–खण्डघटक–पानीयभाजनम् । ज्ञाता० २०० २०३ ।

खडना–विराधना । प्रश्न० ७ ।
खडपट्टे–खण्डपट्ट–धूर्त्त । विपा० ७२ । खण्ड–अपरिपूर्णं पट्ट परिधानपट्टो यस्य मद्यद्यूतादिव्यसनाभिभूततया परिपूर्णपरिधानाप्राप्ते ते खण्डपट्टा–द्यूतकारादय, अन्यायव्यवहारिण, धूर्त्ता वा । विपा० ५६ ।
खडपाडिय–खण्डपाडित । विपा० ५६ ।
खडप्पवायगुहाकूड–खण्डप्रपातगुहाधिपदेवनिवासभूत कूट खण्डप्रपातगुहाकूटम् । ज० प्र० ७७ ।
खडप्रपाता–गुहाविशेष । ठाणा० ७१ ।
खडभेद –क्षिप्तमृत्पिण्डस्येव । ठाणा० ४७५ ।
खडभेय–खण्डभेद –लोष्टादेरिव य खण्डशो भवति । भग० २२४ ।
खडरक्ख–खण्डरक्ष –दण्डपाशिक । राय० २ । खण्डरक्ष । उत्त० १६५ । दण्डपाशिक शुल्कपालो वा । औप० २ । श्रमणोपासकविशेष । आव० ३१७ । शुल्कपाल । प्रश्न० ३० । शुल्कपाल कोट्टपालो वा । प्रश्न० ४६ ।
खडरक्खा–खण्डरक्षा –राजगृहे श्रावकविशेषा । विशे० ९६१ । दण्डपाशिका शुल्कपाला वा । ज्ञाता० २ । दण्डपाशिका । ज्ञाता० २३९ । हिंडिका । बृ० द्वि० १८० आ ।
खडलक– । ओघ० १८७ ।
खडशर्करा–मत्स्यण्डी । ज० प्र० १०५ । प्रज्ञा० ३६६ । जीवा० २६८ ।
खडाखडिकतो–खण्डखण्डीकृत । आव० ९३ ।
खडाखडीहिं–खण्डश । आव० ३७० ।
खडाभेद–खण्डभेद । लोहखण्डादिवत् । प्रज्ञा० २६७ ।
खडिअ–खण्डितम् । देशतो भग्नम् । आव० ५७२ । आव० ७७८ ।
खडिए–खण्डिक –छात्र । उत्त० ३६४ ।
खंडिओ–छात्र । आव० ५६१ ।
खडित्तए–खण्डयितु –देशत भङ्क्तुम् । ज्ञाता० १३९ ।
खंडिय–खण्डित–दण्ड इव विभागेन छिन्नम् । प्रश्न० १३४ । खण्डिक –छात्र । आव० २४६ । उत्त० ३६७ । विशे० ६८६ ।
खडी–खण्डि –अपद्वारम् । विपा० ५६ ।
खडीओ–प्राकारच्छिद्ररूपा । ज्ञाता० ८१ ।
खंत–पिता । बृ० तृ० ३२ आ । पिण्ड० १२७ । क्षमोपेत क्षान्त । सूत्र० २९८ । वृद्ध । उत्त० १२८ । आव० ३६६ । दश० ८९ । पिता । आव० ३०४ ।
खंतपुत्तो–वृद्धपुत्र । आचा० ६४ ।
खति–क्रोधनिग्रह । ज्ञाता० ७ ।
खतिखमे–क्षान्त्या क्षमते न त्वसमर्थतया योऽसौ क्षान्तिक्षम –अनगार । भग० १२२ ।
खंतिखमाते–क्रोधनिग्रहेण क्षमा–मर्षण न त्वशक्ततयेति क्षान्तिक्षमा । ठाणा० १४९ ।
खतिया–जननी । ओघ० १६३ । पिण्ड० १२६, १२७ ।
खतिसुद्धि–क्षान्ति –क्षमा शुद्धि –आशयविशुद्धता, क्षान्ते शुद्धि –निर्मलता क्षान्तिशुद्धि । उत्त० ५८ ।
खती–क्षान्ति –क्रोधनिग्रह तज्जन्यत्वादहिंसाऽपि क्षान्ति । अहिंसायास्त्रयोदश नाम । प्रश्न० ९९ ।
खतेण–पितरि गर्हिते । नि० चू० प्र० १७६ अ ।
खद–स्कन्द –कार्तिकेय । भग० १६४ । ज० प्र० १२३ । ज्ञाता० ४६, १३९ । जीवा० २८१ । पान्नालके ग्रामकूटपुत्र । आव० २०१ ।
खदए–स्कन्दक श्रावस्तीनगर्या कात्यायनगोत्रो गदभालिशिष्य स्कन्धक परिव्राजक । भग० ११२, १२४ । स्कन्दक –स्कन्दकसम्बन्ध्युद्देशक । भग० २१२ । भग० ३२१, ३२४, ४५६, ५१८, ५२३, ५५२, ५५४, ६२४ । श्रावस्तीनगर्या जितशत्रो पुत्र । बृ० द्वि १५२ आ । जितशत्रुराजपुत्र । उत्त० ११४ । भगवत्या द्वितीयशत उद्देशक । ज्ञाता० १२४, १९८ ।
खदगगच्छो–दृष्टान्तविशेष । नि० चू० प्र० ३०३ अ ।
खदगपडिमा–स्कन्दप्रतिमा । आव० २२१ ।
खदगाह–स्कन्दग्रह –उन्मत्तताहेतु । भग० १९७ ।
खदगो–आयविराहणाए दिट्ठतो । नि० चू० तृ० ४४ अ । स्कदक । अन्त० १८ । चपाणाम णगरी, तत्थ खदगो राया । नि० चू० तृ० ४४ अ ।
खदमह–स्कन्दस्य-कार्तिकेयस्य प्रतिनियतदिवसभावी उत्सव स्कन्दमह । जीवा० २८१ । कार्तिकेयोत्सव । ज्ञाता०

४६ ।

खंदसिरी—स्कन्दश्री –विजयस्य चौरसेनापतेर्भार्या । विपा० ५७ । राजगृहेऽर्जुनकमालाकारस्य भार्या । उत्त० ११२ ।

खंदिल—स्कन्दिल तगरायामाचार्यशिष्य, सद्व्यवहारकाचार्य । व्य० प्र० २५६ आ ।

खंध—स्कन्धोऽचित्तमहास्कन्ध । विशे० २२६ । स्तम्भ । नि० चू० तृ० २१ अ । स्कन्ध । विशे० ४२६ । स्कन्ध –रूपवेदनाविज्ञानसञ्ज्ञासकाराख्य । प्रश्न० ३१ । स्कन्ध –अशदेश । ज० प्र० ११२ । स्कन्ध –स्थुडम् । राय० ६ । स्थुड । दश० २४७ । औप० ७ । जीवा० १८७ । उत्त० २४ । स्थुड यतो मूलशाखा प्रभवन्ति । ज० प्र० २६ । पागारी पेढ वा, घरो मृदिष्टकदारुसघातो स्कन्ध इत्यर्थ । नि० चू० द्वि० ८४ अ । स्कन्ध –सहतानेकपरमाणुरूप । उत्त० ६७४ ।

खंधकरणी— । नि० चू० प्र० १८० आ । ओघ० २०६ ।

खंधगसीसा—कुम्भकारकटे यन्त्रपीलिता । मर० ।

खंधग्गहो—स्कन्धग्रह । जीवा० २८४ ।

खंधदेसा—स्कन्धदेशा । स्कन्धानामेव स्कन्धत्वपरिणाममजहता बुद्धिपरिकल्पिता द्व्यादिप्रदेशात्मका विभागा । जीवा० ७ ।

खंधप्पएसा—स्कन्धप्रदेशा –स्कन्धाना स्कन्धत्वपरिणाममजहता प्रकृष्टा देशा –निर्विभागा भागा परमाणव । जीवा० ७ । स्कन्धाना स्कन्धत्वपरिणामपरिणताना बुद्धिपरिकल्पिता –प्रकृष्टा देशा निर्विभागा भागा परमाणव इत्यर्थ स्कन्धप्रदेशा । प्रज्ञा० १० ।

खंधवीए—स्कन्धबीज सल्लक्यादि । सू० ३५० ।

खंधबीया—निहुशल्लक्यरणिकादय स्कन्धबीजा । आचा० ५७ । स्कन्धबीज शल्लक्यादि । दश० १३९ ।

खंधभूय—स्कन्धभूत–नालकल्पम् । प्रश्न० १३४ ।

खंधवसहो—स्कन्धवृषभ –ककुदघर । आव० ७१९ ।

खंधा—स्कन्ध –थुडम् । राय० ६ । स्कन्दन्ति–शुष्यन्ति धीयन्ते च–पुष्यन्ते पुद्गलाना विघटनेन चटनेन चेति स्कन्धा । प्रज्ञा० ९ । स्कन्धा –स्थुडा । प्रज्ञा० ३१ । द्वीन्द्रियविशेष । प्रज्ञा० ४१ ।

खंधार—स्कन्धावार । विशे० ९७८ । स्कन्धावार सैन्यसन्निवेश । आव० ४२४ । राजविम्बयुत स्वचक्र परचक्र वा । बृ० द्वि० २७३ आ ।

खंधारमाणं—कलाविशेष । ज्ञाता० ३८ ।

खंधावार—स्कन्धावारम् । आव० २१७ । स्कन्धावार । हस्ती । आव० ६७१ । प्रज्ञा० ३०० । नि० चू० प्र० ३५८ अ । आव० २९९, ५५६ ।

खंभ—स्तम्भ । औत्पातिकीबुद्धौ द्वादशमुदाहरणम् । नदी० १५३ । भग० २३८ । स्तम्भ –कायोत्सर्गस्य विंशतौ दोषे तृतीयो दोष । आव० ७९८ । सामान्यत । जीवा० १८२ । सुवर्णरुप्पमय फलकम् । जीवा० १८० । औत्पात्तिकी बुद्धौ यस्य दृष्टान्त । आव० ४१९ ।

खंभच्छाया—स्तम्भच्छाया, छायाभेद । सूर्य० ९५ ।

खंभपुडंतरं—स्तम्भपुटान्तर–द्वौ स्तम्भौ स्तम्भपुट तेषामन्तरम् । जीवा० १८२ । ज० प्र० २५ ।

खंभवाहा—स्तम्भपार्श्वम् । जीवा० १८२ ।

खंभसीस—स्तम्भशीर्षम् । जीवा० १८२ ।

खंभागरिसो—स्तम्भाकर्ष । आव० ४१२ ।

खंभालणं—स्तम्भालगनम् । ।

खंभुग्गया—स्तम्भोद्गता–स्तम्भोपरिवर्तिनी । ज०प्र० ४३ ।

खंभोग्गया—स्तम्भोद्गता–स्तम्भोपरिवर्तिनी । जीवा० १९९ ।

खंवियाओ— । नि० चू० प्र० १८५ आ ।

खइअ—खचितानि–विच्छुरितानि । ज०प्र० २७५, ७९ ।

खइए—क्षयाज्जात क्षायिक –अप्रतिघातिज्ञानदर्शनचारित्रलक्षण । सूत्र० ३३० । क्षायिक –क्षय कर्मणोऽपगम स एव तेन या निर्वृत्त । अनु० ११४ ।

खइय—ख्यापित–प्रशस्तयोगैर्निर्वाणहुतभुक् तुल्यता नीतम् । आव० ७९ । ख्यातम्–प्रसिद्धम् । आव० ७०० । खादित–भक्षणम् । ठाणा० २७६ ।

खइया—अमकृदामेविता । बृ० द्वि० १३ अ ।

खइव—नवेगयुन्यधर्म्मकथनलक्षण । ठाणा० २७६ ।

खउर—खोरनदिरमादियाण खउरो । नि० चू० तृ० २३ अ । खपुर–चिक्कणद्रव्यम् । बृ० द्वि० २२० आ । कठिनमतिशयेन घनम् । बृ० प्र० ५५ अ । शुष्क । नि० चू० द्वि० ६१ अ ।

खउरगे–व्याप्ताङ्ग । मर० ।

खउरपुत्तो–क्षौरपुत्र । आव० २११ ।

खउरिता–खरण्टिता रोसेणेत्यर्थः । रुष्टा । नि० चू० प्र० २०७ अ ।

खउरियाओ–कलुषितचेतस कषायेणानालपनम् । बृ० द्वि० २०९ आ ।

खओ–क्षय –यथोक्तस्वरूपाकारपरिभ्रश । जीवा० १८३ ।

खओवसम–क्षयोपशम –उदिताना क्षयोऽनुदिताना विष्क-म्भितोदयत्वम् । ज्ञाता० ६४ ।

खओवसमिए– क्षायोपशामिक –क्रियामात्र क्षयोपशमेन वा निवृत्त । भग० ६४९ । क्षयादुपशमाच्च जात क्षायोपशामिक देशोदयोपशमलक्षण । सूत्र० २३० ।

खओवसमिया–तथाऽवधिज्ञानावरणीयस्य कर्मण उदया-वलिकाप्रविष्टस्याशस्य वेदनेन योऽपगम स क्षयोऽनु-दयावस्थस्य विपाकोदयविष्कम्भणमुपशम क्षयश्च उपश-मश्च क्षयोपशमौ ताभ्या निर्वृत्त क्षायोपशमिक । प्रज्ञा० ५३९ ।

खक्खरओ–खर्खरक । आव० ४२४ ।

खक्खरो–खर्खर –अश्वोत्त्रासनाय चर्ममयो वस्तुविशेष, स्फुटितवशो वा । विपा० ४७ ।

खग्ग–खड्ग शस्त्रविशेष । उत्त० ७११ । आटव्यो जीव-स्तस्य विषाण–शृङ्गम् । ठाणा० ४६४ । आयुधम् । भग० ३१८ । खड्ग –एकशृङ्ग आटव्यस्तिर्यग्विशेष । बृ० द्वि० १०६ अ । गण्डीपदचतुष्पदविशेष । जीवा० ३८ । खड्ग –अटव्यश्चतुष्पदविशेष । औप० ५३ । प्रज्ञा० १०० । कायोत्सर्गफले दृष्टान्त । आव० ८०१ । आटव्यश्चतुष्पदविशेष । प्रश्न० १५८ । यस्य पार्श्वयो पक्षवच्चर्माणि लम्बन्ते शृङ्ग चैक शिरसि भवति । प्रश्न० ७ । एगसिंगी अरण्णे भवति । नि० चू० प्र० ४७ आ । आटव्यचतुष्पदविशेष । जीवा० ३८६ । वनजीव । मर० ।

खग्गथभण–खड्गस्तम्भन–कायोत्सर्गफले दृष्टान्त । आव० ७९९ ।

खग्गपुरा–सुवल्गुविजये राजधानी । ज० प्र० ३५७ ।

खग्गपुराओ–विदेहेषु राजधानीविशेष । ठाणा० ८० ।

खग्गा–गण्डीपदविशेष । प्रज्ञा० ४५ ।

खग्गि–यस्य गच्छतो द्वयोरपि पार्श्वयोश्चर्माणि लम्बन्ते स जीवविशेष । कोऽपि श्रावक प्रथमयौवनमदमोहितमना धर्ममकृत्वा पञ्चत्वमुपागत खड्ग समुत्पन्न । नदी० १६७ । खड्गि –आरण्यपशुविशेष । ज्ञाता० १०४ ।

खग्गी–खड्गी–श्वापदविशेष । आव० ४३७ । आटव्यो जीव । औप० ३५ । विजये राजधानी । ज० प्र० ३४७ ।

खग्गीतो–महाविदेहे विजयराजधानी । ठाणा० ८० ।

खग्गूड–कुटिल । पिण्ड० १०० ।

खग्गूडप्राया–अवसन्ना । ओघ० १५६ ।

खग्गूडा–इहालसा स्निग्धमधुराद्याहारलम्पटा खग्गूडा उच्यन्ते । बृ० प्र० २४० अ । अलसा, निर्द्धर्मप्राया । ओघ० ७१, १५३ ।

खग्गूडो–निर्धर्मप्राय । ओघ० ४४ ।

खग्गूडे–खग्गूडप्राय । ओघ० ७३ ।

खग्गूडो–शठप्राय । ओघ० ४४ । निद्रालु । बृ० प्र० २४२ अ ।

खचित–परिगत । औप० ११ ।

खचिय–खचित–मण्डितम् । ज्ञाता० २७ । भग० ४७७ ।

खज्ज–खाद्य–कूरमोदकादि । ज्ञाता० २३ । खाद्यानि–अशोकवर्त्तय । उपा० ५ । प्रश्न० १५३ । खाद्यम् । आव० २०० ।

खज्जइ–खाद्यते–भक्ष्यते । आव० ५६६ । खाद्यते खण्ड-खाद्यादि । उत्त० ३६० ।

खज्जग–खाद्यकम् । निरय० ३४ ।

खज्जगविही–खण्डखाद्यादिलक्षणभोजनप्रकार । भग० ६६२ । आव० ३१४ ।

खज्जगादि–खाद्यकादि । आव० ८२२ ।

खज्जगावणो–खाद्यकापण कुल्लुरिकापण । आव० २७५ ।

खज्जय–खाद्यम् । उत्त० १५९ ।

खज्जुरी–वलयविशेष । प्रज्ञा० ३३ ।

खज्जूरे–खर्जूर–पिण्डखर्जूरादि । उत्त० ६५४ ।

खज्जूरपायग–पानकभेद । आचा० ३४७ ।

खज्जूरसारए–मूलदलखर्जूरसारनिष्पन्न आसव खर्जूर-

सार । प्रज्ञा० ३६४ ।
खज्जूरसारो–खर्जूरसार । जीवा० २६५ ।
खज्जूरि–वृक्षविशेष । भग० ८०३ ।
खज्जूरिवणं–खर्जूरिवन–वृक्षविशेषवन । जीवा० १४५ ।
खज्जूरिसार–खर्ज्जूरसारनिष्पन्न आसवविशेष । ज० प्र० १०० ।
खज्जोयग–खद्योतक–प्राणिविशेष । आचा० ५० ।
खञ्जरीटः–जीवविशेष । दश० १४१ ।
खटिका–वर्त्ति । वृ० प्र० २५ आ ।
खट्ट–खट्वा । आव० ३५४ ।
खट्टमेहा–अम्लजलमेघा । ज०प्र० १६८ । भग० ३०६ ।
खट्टा–खट्वा–तूल्यादि । प्रश्न० ६२ ।
खट्टामल्लो–अतिशयेन वृद्ध । खट्टामल्लो नाम प्रवलजराजर्जरितदेहतया य खट्वाया उत्थातु न शक्नोति । वृ० द्वि० ५९ आ ।
खट्टिका–कम्मजुगितविसेसो । नि० चू० द्वि० ४३ आ ।
खट्टोदए–खट्टोदक–ईपदम्लपरिणामम । जीवा० २५ । प्रज्ञा० २८ ।
खड–तृणम् । व्य० प्र० १०७ अ ।
खडखडावेहु–वादयत । आव० २०४ ।
खडखडेइ–खटत्कारयति । उत्त० १३८ ।
खडपूलग–तृणपूलक । नि० चू० तृ० १२८ अ ।
खडपूलय–तृणपूलिका । मर० ।
खडहडो– । नि० चू० प्र० १९६ आ ।
खडुग–खड्डुक–टोलक । वृ० तृ० ९२ अ ।
खड्ड–गर्त्तम् । आव० ६२४ ।
खड्डु–वृहत्प्रमाण । विशे० १०३० । गर्त्त । आव० १९६, ३८४ ।
खड्डा–गर्त्ता । आव० ३६८, ६८५ ।
खड्डुग–अङ्गुलीयकविशेष । औप० ५५ ।
खड्डुय–खड्डुक टक्कर । उत्त० ६२ ।
खण–क्षण–स्तोककालम् । दश० १८० । क्षण–समय । आव० ६१० । पारणम् । आव० ३२५ । क्षण–अवसर । सूत्र० ७६ । परमनिरुद्ध काल क्षण । सूत्र० २५ । वहुतरोच्छ्वासरूप । ज्ञाता० १०४ । क्षण–प्रस्ताव । उत्त० ६३१ । परमनिरुद्ध काल क्षण । अष्टप्रकारेण कर्म्मणा ससारवन्धनैर्वा विपयाभिष्वङ्गस्नेहादिभि । आचा० ११२ । क्षणन क्षणो–हिंसा । आचा० २११ । मुहूर्त्त । ठाणा० ३४५ । क्षण–अवसरम् । आचा० १०९ ।
खणजोइणो–परमनिरुद्ध काल क्षण, क्षणेन योग–सम्वन्ध क्षणयोग स विद्यते येषा ते क्षणयोगिन । सूत्र० २५ ।
खणणं–खननम् । आव० ६१९ ।
खणभगविघायत्थं–क्षणभङ्गविघातार्थं–निरन्वयक्षणिकवस्तुवादविघातार्थम् । दश० १३० ।
खणयन्नो–क्षण एव क्षणक–अवसरो भिक्षार्थमुपसर्प्पणादिकस्त जानातीति । आचा० १३२ ।
खणलव–कालोपलक्षण क्षणलवादिषु सवेगभावनाध्यानासेवनतश्च निर्वर्त्तितवान् । ज्ञाता० १२२ ।
खणसखडी–क्षणसङ्खडी । दश० ८९ ।
खणाति–क्षणा सङ्ख्यातानप्राणलक्षण । ठाणा० ८७ ।
खणिए–क्षणिक निर्व्याघात । ओघ० २०० ।
खणित्तु–खनित्वा–समाकृष्य । आचा० ४१७ ।
खणीकरेंति–प्रक्षालयन्ती । आव० २१५ ।
खण्णा–(देशी०) सर्वात्मना लूपिता । व्य० प्र० १४० आ ।
खत–स्वदेहोद्भवमेव क्षतम् । अनु० २१२ ।
खतए–राहुप्रलापीमते कृष्णपुद्गलविशेष । राहो चतुर्थनाम । सूर्य० २८७ ।
खतोवसम–क्षयोपसम क्रियारूप एव । ठाणा० ३७८ ।
खत्त–क्षत्रम् । उत्त० २०७ । क्षत्र–करीपविशेष । पिण्ड० ८–१८ । ओघ० १३० ।
खत्तए–खात–गर्त इत्यर्थ । खातक क्षेत्रस्येति गम्यते चौर इत्यर्थ । ज्ञाता० ७९ ।
खत्तखणग–क्षात्रखानका–ये सन्धानवर्जितभित्ती खाणयन्ति । ज्ञाता० २३९ ।
खत्तखयणण– । ज्ञाता० २३६ ।
खत्तमेहा–खात्रमेघा–करीपसमानरसजलोपेतमेघा । ज० प्र० १६८ । भग० ३०६ ।

खत्ता–क्षत्ता–क्षत्रीयस्त्रीक्षुद्राभ्या जात । आचा० ८ । क्षत्रा–क्षत्रियजातयो वर्णसङ्करोत्पन्ना वा । तत्कर्मनियुक्ता । उत्त० ३६३ ।

खत्तिआ–क्षत्रिया–श्रेष्ठ्यादय । दश० १६१ । क्षत्रिया । आव० १२८ । क्षणनानि क्षतानि तेभ्यस्त्रायत इति क्षत्रिय–राजा । उत्त० १८२ । राजा । भग० १०१ । राजकुलीन । भग० ११५ । इक्ष्वाकुवशादिक । सूत्र० २३६ । कुलविशेष । आव० १७६ । राष्ट्रकूटादय । आचा० ३२७ । सामान्यराजकुलीन । औप० ५८ ।

खत्तियकुडग्गाम–क्षत्रियकुण्डग्राम–सिद्धार्थराजधानी । आव० १७६ । नगरविशेष । भग० ४६१ ।

खत्तिया–सामान्यतो राजोपजीविन । वृ० द्वि० १५२ अ । क्षत्रिया–हैहयाद्यन्वयजा । उत्त० ४१८ । चक्रवर्त्तिवासुदेवबलदेवप्रभृतय । आचा० ३३३ । क्षत्रिया–सामान्य राजकुलीना । राय० १२१ । क्षत्रिया–शेषप्रकृतितया विकल्पिता । ज० प्र० १४५ । क्षत्रिया–आरक्षिका । नि० चू० प्र० २७७ अ ।

खत्थो–विलक्ष । दश० ५५ ।

खदिरचञ्चु–वञ्जुल । प्रश्न० १० ।

खदिरसाराए–खदिरसार । प्रज्ञा० ३६० ।

खद्ध–त्वरितम् । आचा० ३३७ । बृहच्छब्देन खरकर्कशनिष्ठुरम् । आव० ७२६ । बहु । उत्त० १४६ । महाप्रमाणम् । बृ० द्वि० ६४ आ । प्रचुरम् । आव० ३६३, ५६ । वृ०प्र० २३५ अ । बृ० तृ० २४८ आ । ओघ० ६८, १२७ । पिण्ड० ७०, १३६ । आव० ७२६ । प्रश्न० १२८ । आचा० ३३६ । प्रचुरम् । व्य० प्र० १८० अ । प्रभूतम् । ओघ० ४८ । प्रश्न० १४१ । आचा० ३५३ । शीघ्रम् । आचा० ३५२ । बृहता बृहता कवलेन भक्षणम् । आव० ७२६ । बृहत्प्रमाण । ओघ० २१६, १२१ । ठाणा० १३८ ।

खद्धपलालितो–प्रचुरपलालित–सुखीधनाढ्य । उत्त० २२५ ।

खद्धवसभो–समर्थवृषभ । उत्त० ३०३ ।

खद्धादाणिअगामो–खद्धादानिकग्राम–समृद्धग्राम । ओघ० ४८ ।

खद्धादाणिओ–बहुदानीय–श्रीमान् । आव० ६७६ ।

खद्धादाणिय–प्रचुरादानीय–ऋद्धिमान् धनाढ्य । आव० ४३३ ।

खद्धादाणियगिहा–ईश्वरगृहा इत्यर्थ । नि० चू० प्र० ३५० अ ।

खनित्रम्–खननसाधनम् । शस्त्रविशेष । आचा० ३६ ।

खन्ना–मत्स्यकच्छपविशेषा । जीवा० ३२१ ।

खपुसवग्गुरि–अद्धजघात्तियाओ । नि० चू० द्वि० १८ अ ।

खपुसा–हिमाहिकण्टकादिरक्षार्थं पादपरिधानम् । बृ० द्वि० १०१ अ । घुटकच्छादक चर्म । या घुण्टक पिदधाति सा खपुसा । बृ० द्वि० २२२ आ ।

खमत–क्षपयन्, क्षपणम् । पिण्ड० १६९ ।

खम–क्षेम–सङ्गतत्वम् । । क्षम–युक्तार्थं । बृ० प्र० १०७ अ । क्षमा । भग० ४६६ ।

खमइ–क्रोधाभावात् क्षमते । भग० ४६८ ।

खमए–क्षपक । आव० २६३ । क्षपक–विकृष्टतपस्वी । बृ० प्र० २५६ आ ।

खमओ–क्षपक–श्रमण । दश० ३७ । एकान्तरितादिक्षपणकर्त्ता । बृ० द्वि० ६४ आ ।

खमग–क्षपक–मासक्षपकादिकम् । ओघ० ६४ । अनशनी भक्त० । उपोपिता । बृ० प्र० २४४ आ । नि० चू० द्वि० ५५ अ । क्षपक । आव० १६५ ।

खमण–उपवास । बृ० द्वि० ६४ आ । क्षपण–अभक्तार्थं । व्य० प्र० १६१ आ ।

खमणाइय–क्षपणादि–अनशनतादि । आव० ८४० ।

खमया–क्षमा–क्रोधनिग्रह । चतुर्दशोऽनगारगुण । आव० ६६० ।

खमसि–क्षमसे क्षोभाभावेन । ज्ञाता० ७१ ।

खमा–क्षमा–अनभिव्यक्तक्रोधमानस्वरूपस्य द्वेषसञ्ज्ञितस्याप्रीतिमात्रस्याभाव, अथवा क्रोधमानयोरुदयनिरोध । सम० ४६ । सङ्गतत्वम् । औप० ५६ । रोसावगमो । नि० चू० प्र० २१६ अ । क्षमत्वम् । भग० ४५६ ।

खमामि–आत्मनि परे वाऽविकोपतया क्षमे । ठाणा० २४७ ।

खमावणय–परस्यासन्तोषवत क्षमोत्पादनम् । भग०७२७ ।

खमाह-क्षमस्व, सहस्व । उत्त० ३६७ ।
खमिय-क्षपिक । बृ० द्वि० २०५ अ ।
खय-क्षय राजयक्ष्मा । बृ० प्र० १७० अ। सर्वविनाश । भग० ५३६ ।
खयक्का-कीलक । उत्त० ८५ ।
खयक्कियाण- । नि० चू० तृ० ३७ आ।
खर-काठनम् । जीवा० ८६ । उच्चेण महतेण सरेण ज सरीस उक्त त खर । नि० चू० प्र० २९९ अ । खरस्थानम्। अनु० १३२ । सरोसवयणमिव अकत-खर । नि० चू० प्र० २७८ अ ।
खरट-खरण्टयति-लेपवन्त करोति यत् तत् खरण्ट अशु-च्यादि । ठाणा० २४४ ।
खरटणा-खिसना । ओघ० ४५ । णिप्पिवासा । नि० चू० द्वि० १३१ अ । प्रवचनोपदेशपूर्वक परुषभणनम् । ओघ० ४२। खरटन-निर्भत्सनम्। व्य० प्र० १२० आ।
खरटना-निर्भर्त्सना । बृ० प्र० १५० आ ।
खरटि-खरण्टनम्, लेपविशेप । पिण्ड० ८७ ।
खरटिओ-तिरस्कृत । उत्त० १३९ ।
खरंटिता-खउरिता रोसेणेत्यर्थं । रुष्ट । नि० चू० प्र० २०७ अ ।
खरंटेउं-निर्भर्त्स्यं । वृ० प्र० ३९ आ।
खरटेति-भर्त्सयति । नि० चू० प्र० २११ आ ।
खरटेहिंति-निर्भर्त्सयिष्यन्ति । दश० ३८ ।
खरटो उ जो मलो त कमढ भण्णति। नि० चू० प्र० १९० आ ।
खरंडिय-सतर्ज्य, निर्भर्त्स्यं । आव० ४३१ ।
खर-खरस्थानम् । ठाणा० ३९७ । तिलम् । आव० ८५४ । गर्दभ । प्रज्ञा० २५२ । जीवा० २८२ । दास । बृ० द्वि० १६७ अ। खरसन्नय। ओघ० १४६ ।
खरइ-क्षरति-सशब्दयति । विशे० २५५ ।
खरउ-शातवाहनस्यामात्य । व्य० प्र० १९३ अ ।
खरए-राह्वाप्रलापीमते कृष्णपुद्गलविशेपा । सूर्य० २८७ । राहो चतुर्थनाम । भग० ५७५। राहो तृतीय-नाम । सूर्य० २८७ । दासदासीरूप द्वयक्षरकम् । बृ० द्वि० १६४ आ ।

खरओ-द्वयक्षरो वा कर्मकर । ओघ० १५६ । दास बृ० तृ० २२५ अ ।
खरकंट-खरा-निरन्तरा निष्ठुरा वा कण्टा-कण्टका यस्मिस्तत् खरकण्ट बुव्बूलादिडालम् । ठाणा० २४४ ।
खरकंटयसमाणे-यस्तु प्रज्ञाप्यमानो न केवल स्वाग्रहान्न चलति अपितु प्रज्ञापक दुर्वचनकण्टकैर्विध्यति स खर-कण्टकसमान । ठाणा० २४३ ।
खरकडे-खरकाण्डम्। कठिनो विशिष्टो भूभाग । जीवा० ८९ ।
खरकम्मिअ-दण्डपासग । ओघ० ८९ ।
खरकम्मिए-खरकर्मिक-आरोग्याभिरतौ वीजपुरवनदृ-ष्टान्ते कुम्भकाराद्यन्यतम । आव० ४५३ ।
खरकम्मिओ-खरकर्मिक-आरक्षक । बृ० तृ० १०२आ।
खरकम्मिय-खरकर्मिक । आव० ६२७ ।
खरकम्मिया-सन्नद्धपरिकरा । बृ० द्वि० १२९ अ । रायपुरिसा । नि० चू० प्र० २१० अ । राजपुरुषा । बृ० द्वि० २१३ आ ।
खरकर-श्लक्ष्णपापाणभृतचर्मकोशकविशेष, स्फुटितवशो वा । प्रश्न० ५९ ।
खरग-खरक-वैद्यविशेष । आव० २२६ । दास । नि० चू० द्वि० १०५ आ ।
खरडिए- । ठाणा० ३८६ ।
खरण-वब्बूलादिडालम् । ठाणा० २४४ ।
खरदूषण-रावणभगिनीपति । प्रश्न० ८७ ।
खरपम्हं-खरा णिसड्ढा दासाओ जस्स त खरपम्ह । नि० चू० प्र० २४५ आ ।
खरपिंड-कठिनपिण्ड । आचा० ३६१ ।
खरफरुस-खरपरुष अतिकर्कश । आव० ६१७ । ज्ञाता० ७९ । स्पर्शतोऽतीवकठोर । भग० ३०८ ।
खरबायरपुढवी-खरबादरपृथिवी-मण्यादिषट्त्रिंशद्भेदा-त्मिको पृथिवी । आचा० २८ ।
खरबादरपुढविक्काइया-खरा नाम पृथिवी सघातविशेप काठिन्यविशेप वाऽऽपन्ना तदात्मका जीवा अपि खराश्च ते वादरपृथिवीकायिकाश्च, खरा चासौ वादरपृथिवी च स काया-शरीर येपा ते एव खरवादरपृथिवीकायिका ।

जीवा० २२ ।
खरमुखी–काहला, तस्स मुहत्थाणा खरमुहाकार कट्ठमय–मुह कज्जति । नि० चू० तृ० ६२ अ ।
खरमुहि–खरमुखी काहला । भग० ४४७, २१६ । ज० प्र० १०१ ।
खरमुही–काहला । जीवा० २४५ । तोहाडिका । आचा० ४१२ । खरमुखी–काहला । औप० ७३ । जीवा० २६६ ।
खरमुही–काहला । ज० प्र० १९२ । राय० २५ ।
खरवाय–खरवातम् । आव० २१७ ।
खरशानया–पाषाणप्रतिमावत् । ठाणा० २३२ ।
खरस्सरे–यो वज्रकण्टकाकुल शालमलीवृक्ष नारकमारोप्य खरस्वर कुर्वन्त कुवन् वा कर्षति स खरस्वर । चतुर्दश परमाधार्मिक । सम० २९ । खरस्वर–नरके चतुर्दश परमाधार्मिक । आव० ६५० । चतुर्दश परमाधार्मिक । उत्त० ६१४ । सूत्र० १२४ ।
खरा–कठिना । उत्त० ६८९ । सङ्घातविशेष काठिन्यविशेष वाऽऽपन्ना पृथिवी । जीवा० २२ । निरन्तरा निष्ठुरा वा । ठाणा० २४३ ।
खरावत्ते–खरो–निष्ठुरोऽतिवेगितया पातकश्छेदको वा आवर्त्तनमावर्त्त स च समुद्रादेश्चक्रविशेषाणा वेति खरावत्त । ठाणा० २८८ ।
खरि–दुवक्खरिदा । नि० चू० तृ० २० अ ।
खरिए–द्वयक्षरिका । ओघ० २२३ ।
खरिका–कठोरकर्मा । उत्त० १०७ ।
खरिमुह–खरमुखी–नपुसकी दासी वा । व्य० द्वि० १५० अ ।
खरियत्ताए–नगरबहिर्वत्ति वेश्यात्वेन । भग० ६९४ ।
खरिया–द्वयक्षरिका दासी । बृ० द्वि० ४७ आ । द्वयक्षरिका । ओघ० ५६ । द्वयक्षरिका–कर्मकारी । ओघ० १५६ । दासी । नि० चू० द्वि० ३९ आ ।
खरेण– । आव० ६४ ।
खरोट्टी–लिपिविशेष । प्रज्ञा० ५६ ।
खर्जु–कण्डूम् । ठाणा० ५०५ ।
खर्व्व–स एव उन्नतो जात्यादिना भावेनार्शाकादिरिति । ठाणा० १८२ ।
खल–कुथितादि विशिष्टम्, अल्पधान्यादि वा । सूत्र० ३२४ । खल–धान्यमेलनपचनादिस्थण्डिलम् । ज० प्र० १४९ । धान्यमेलनादिस्थण्डिलम् । ज्ञाता० १०४ ।
खलखलति–खटत्खटदिति भवन्ति, खलखलशब्द कुर्वन्ति । आव० ७१९ ।
खलखलिंति–खलखलशब्द करोति । उत्त० ३०३ ।
खलखिल–निर्जीवमित्यर्थ । व्य० द्वि० १९६ आ ।
खलग–जत्थ मस सोसति । नि० चू० द्वि० २२ आ ।
खलणा–स्खलना–प्रतिसेवणा, भङ्गो, विराधना, उपघात अशोधि, शबलीकरण, मइलणा च । ओघ० २२५ ।
खलतिना– । ठाणा० ४१३ ।
खलपुरिसो–खलपुरुष । राजपुरुषविशेष । आव० ८२१ ।
खलमत्स्य–मत्स्यविशेष । प्रश्न० ९ ।
खलय–खलक–धान्यमेलनस्थण्डिलम् । ज्ञाता० ११६ ।
खलयारिओ–स्खलीकृत । आव० २९४ ।
खलहाणाणि– । नि० चू० प्र० ३४४ आ ।
खलाहि–(देशी) अपसर । उत्त० ३५९ ।
खलिण–कायोत्सर्गस्य एकोनविंशतौ दोषे त्रयोदशमदोष । आव० ७९८ । अस्सरस्सी । दश० चू० १५४ । खलिन–कविकम् । आव० २६१ । खलिन–कविक । ज्ञाता० २२० ।
खलिय–स्खलित–छलितम् । ओघ० २२५ । विनष्टम् । बृ० तृ० १०२ आ ।
खलियाइ–स्खलितादि । भग० ८९१ ।
खलीकओ उपसर्गित । दश० ३७ ।
खलीकुर्वन्ति– । ओघ० ४५ ।
खलीण–विषमभूमि । आव० ५६ । खलिन–कविकम् । दश० २८३ ।
खलीणा–खलीना–आकाशस्था । विपा० ४४ ।
खलुक–गलिरविनीत इति । ठाणा० २५० । दुःशिष्य । उत्त० ५४८, ५५३ ।
खलुकिज्ज–खलुङ्कीय, उत्तराध्ययनेषु सप्तविंशतितममध्ययनम् । उत्त० ९ । सम० ६४ ।
खलुंकीयं–उत्तराध्ययनस्य सप्तविंशतितममध्ययनम् । उत्त० ५४८ ।

खलु–विशेषणे विशेषेण–अत्यर्थम् । आचा० १०५ । खलु–निश्चितम् । सूर्य० १४ । अपिशब्दार्थ । आव० ५३० ।
खलुए–गले । नि० चू० प्र० १३८ अ । पादमणिबन्ध । विपा० ७२ ।
खलुका–जानुकादिसधय, जानुकादिसन्धिषु वात । वृ० द्वि० १२३ आ ।
खलुखेत्तं–खलुक्षेत्र–यत्र किमपि प्रायोग्य लभ्यते । व्य० द्वि० ३३५ आ ।
खलुखेत्ता–खलुक्षेत्राणि–यत्राल्पो लोको भिक्षा प्रदाता । वृ० प्र० २०६ आ ।
खलुग–खलुक–घुण्टक । वृ० द्वि० २२३ अ । चरण-गुल्फ । वृ० द्वि० २५२ अ ।
खलुगमेत्तो–कद्दमो । नि० चू० द्वि० ७९ आ ।
खल्लेज–स्खलयेयु–निष्काशयेयु । उत्त० ३६४ ।
खल्लए–कपर्द्दकविशेप । ज्ञाता० २३५ ।
खल्लका–पत्रपुटानि । वृ० द्वि ९४ अ ।
खल्लकादि–चर्मकोश, पार्ष्णित्रम् । आचा० ३७० ।
खल्लग–खल्लक चर्मपञ्चके द्वितीयो भेद । आव० ६५२ । खल्लक । ठाणा० २३४ ।
खल्लगादिपुडगे– । नि० चू० द्वि० १८ अ ।
खल्लाडो–खल्वाट । आव० ३१७ ।
खल्लिता–खल्लचो । दश० ८९ ।
खल्ली–खलति । उत्त० १६५ । खल्वाट । विशे० ९७२ ।
खल्लीडो–खल्वाट । उत्त० १६५ ।
खल्लूट–साधारणवनस्पतिकायिकभेद । जीवा० २७ ।
खल्लूर–साधारणबादरवनस्पतिकायविशेप । प्रज्ञा० ३४ ।
खवए–क्षपको मानक्षपणादितपस्तप्यते । वृ० तृ० ३५ आ । मासादिक्षपक । वृ० तृ० ३५ आ ।
खवगा–क्षपका–उपवासिका । ओघ० ९४ ।
खवणं–क्षपण–प्रकृत्यन्तरसक्रमितस्य कर्मण प्रदेशोदयेन निर्जरणम् । विशे० १००६ । अप्रत्याख्यानादिप्रक्रमेण क्षपकश्रेण्या मोहाद्यभावापादनम् । आचा० २९८ ।
खवणा–क्षपणा–पापाना कर्मणा क्षपणहेतुत्वात् क्षपणेति । ठाणा० ६ । क्षपणा श्रुतनाम । दश० १६ ।
खवणो–चउप्पगार भव खवेमाणो । जम्हा अप्पा कम्म खयइ तम्हा वा । दश० चू० १४५ ।
खवलिओ–आमन्त्रित । आव० १७५ ।
खवल्लमच्छ–मत्स्यविशेप । जीवा० ३६ । प्रज्ञा० ४३ ।
खविउण–क्षपयित्वा । पिण्ड० १६७ ।
खवियदद्दा–क्षीणक्लेशा । चउ० ।
खवुस– । नि० चू० प्र० १३६ आ ।
खस–खस–चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेप । प्रश्न० १४ ।
खसखसा–प्रक्षाल्यमानकुण्डलिकादे शब्दविशेप । ओघ० १९७ ।
खसद्दुमो नाम मिगराया । व्य० प्र० २२३ आ ।
खसर–खर्जू । जीवा० २८४ ।
खसर–खशर–कशर । भग० ३०८ । कसर । ज० प्र० १७० ।
खसा–म्लेच्छविशेष । प्रज्ञा० ५५ ।
खसूचो–मूर्ख । सूत्र० २३७ ।
खह–आकाशम् । ठाणा० ११५ । उत्त० ६९८ ।
खहयर–खचरज–पुद्गलविशेप । आव० ८५४ । खचरा–वैताढ्यवासिनो विद्याधरा । ज० प्र० १६८ । खे–आकाशे चरन्तीति खचरा । प्रज्ञा० ४३ ।
खहयरगब्भवक्कतिया– । भग० ३२९ ।
खहे–खनने भुवो हाने च त्यागे यद्भवति तत् खहम् । भग० ७७६ ।
खाइ–अवश्यम् । आव० ४०१ ।
खाइ–कथय । उत्त० ९८, १७४ । गच्छ, अवश्य वा । आव० २२० । भग० १७० । तदा, अत्यन्तम् । आव० ७०१ । पुन । भग० ३६८ ।
खाइज्जा–खादेत्–भापेत् । दश० २३५ ।
खाइणं–देशभापया वाक्यालङ्कारे । औप० ११५ ।
खाइमं–खाद्यत इति खाद्य–खर्जूरादि । दश० १४९ । खादिम फलादी । ख–आकाश तच्चमुखविवरमेव तस्मिन् मातीति खादिमम् । आव० ८५० । खादिम–मपुप-फलादि । आव० ८११ । खादिम–पिण्डखर्जूरादि । उत्त० ४१८ । खादन प्रादस्तेन निर्वृत्त खादनार्थं तस्य निर्वर्त्यमानत्वादिति खादिम । ठाणा० १०९ । खाद्यत

इति खादिम–नालिकेरादि। आचा० २६५।
खाइय–खातवलयम्। प्रश्न० १६०।
खाई–ख्याति अन्तर्भूतण्यर्थतया ख्यापयति–प्रकाशयति। प्रज्ञा० ६००।
खाओदया–खाताया भूमौ यान्युदकानि तानि खातोदकानि। भग० ६६४।
खाडखडे–नरकेन्द्रविशेष। ठाणा० ३६५।
खाडहिला–कृष्णशुक्लपट्टाङ्कितशरीरा शून्यदेवकुलादि-वासिन्य। प्रश्न० ८।
खाडहिल्ला–खाडहिल्ला। आव० ४१७।
खाण–खादनम्। आव० ११५।
खाणगतेणो–खत्त खणतो। नि० चू० द्वि ३८ आ।
खाणी–खनि। आव० २७४।
खाणु–स्थाणव–कीलका ये छिन्नावशिष्टवनस्पतीना शुष्का-वयवा 'ठुठा' इति लोकप्रसिद्धा। ज०प्र० ६६। स्थाणु–ऊर्ध्वकाष्ठम्। ज० प्र० १२४। दश० १६४। स्थाणु। ज्ञाता० ६५, ७८, ७९।
खाणुग–उद्धाययट्ठिय कट्ठु खाणुग भण्णति। नि० चू० प्र० ६९ अ।
खाणू–स्थाणु–कीलक। बृ० द्वि० ७७ आ। नि० चू० प्र० ३२ अ।
खात–खात, उभयत्रापि सममिति। प्रज्ञा० ८६। नदी० १६४। भूमिगृहकादि। आव० ८२६। उपरि विस्ती-र्णमध सङ्कुचितम्। राय० २।
खाति– । भग० २२९।
खातिका–अध उपरि च समखातरूपा। अनु० १५९।
खातिया–खातिका–परिखा। प्रश्न० ८। उपरि विस्ती-र्णाऽध सङ्कुचितखातरूपा। भग० २३८।
खातोच्छ्रितम्–भूमिगृहस्योपरि प्रासाद। आव० ८२६।
खामिअविउसविआण–क्षमितव्यवशमिताना – मर्षितत्वे-नोपशान्तानाम्। सम० ३७।
खामित–क्षामितानि–वचसा मिथ्यादुष्कृतप्रदानेन शमिता नि। बृ० तृ० २२१ अ।
खामिय–मिथ्यादुष्कृतेन शमितम्। क्षामितव्यम्। बृ० तृ० २२२ अ।
खामेत्ता–क्षमयित्वा। ज्ञाता० ७४।
खाय–खात–उपरि विस्तीर्णमध सङ्कुटम्। ज्ञाता० २। औप० ३। खातमत्र उपरि च समम्। सम० १३७। कूपादि। अनु० १५४। ख्यात–प्रसिद्धम्। आव०५१४। खात–उभयत्रापि समम्। जीवा० १५९। बृ० प्र० २८ अ। ज० प्र० ७६। खातानि–पुष्करिण्यादिकानि। ज० प्र० २१०।
खायजसो–ख्यातयशा। आव० ६१७।
खायजाणए–ख्यातज्ञायक। आव० ४२४।
खार–कटुकम्। प्रज्ञा० ३६५। क्षार–तिलक्षारादि। प्रश्न० ५७। तीक्ष्णम्। जीवा० ३०३। क्षार–परस्पर मत्सर। ज० प्र० १२५। करीरादिप्रभव। दश० १३९। परस्परमत्सर। भग० १९८। क्षार–भुज-परिसर्प तिर्यग्योनिक। जीवा० ४०। परस्पर–मात्सर्यम्। जीवा० २८३। वस्तुलादिर्लवण वा। बृ० द्वि० २७१ अ। यवक्षारादि। पिण्ड० ८। वत्थुलमाती खारो। नि० चू० प्र० १९२ आ। वत्थुलादिगो। नि० चू० प्र० ३५६ अ। क्षारा–क्षाररसामोरडप्रभृतय। व्य० प्र० ६१ आ। क्षार–तिलक्षारादि। ओघ० १३०। क्षारो–भस्मादि। ठाणा० ४९२।
खारकडुय–क्षारकटुकम्। आव० ५५६।
खारकाइए–क्षारकायिकी। आव० २१७।
खारगधो–क्षारगन्ध–कटुकगन्ध विषगन्ध। आव०७२३।
खारतते–क्षरण क्षार, शुक्रस्य तद्विषय तन्त्र यत्र तत् क्षारतन्त्रम्। ठाणा० ४२७।
खारतउसी–क्षारत्रपुषी कटुका त्रपुषी। प्रज्ञा० ३६४।
खारतउसीफल–कटुकात्रपुषी क्षारत्रपुषी तस्याएव फल क्षारत्रपुषीफलम्। प्रज्ञा० ३६४।
खारमेहा–क्षारमेघा सर्जादिक्षारसमानरसजलोपेतमेघा। भग० ३०६।
खारवावी–क्षारवापी–क्षारद्रव्यभृतवापी। प्रश्न० २०।
खारातणा–मण्वगोत्रविशेष। ठाणा० ३९०।
खारिअ–सलवणानि। ओघ० ९८।
खारिया–क्षारितानि यानि लवणखरण्टितानि शालनका-न्यास्तानानीत्यर्थ। व्य० द्वि० १४२ अ।

खारोदए–क्षीरोदक–ईषल्लवणपरिणामम् । जीवा० २५ । क्षारोदक–ईषल्लवणस्वभावम् । प्रज्ञा० २८ ।

खालु– । ओघ० २०६ ।

खासिअ–कासन–कासितम् । विशे० २७४ ।

खासिए–कासितम् । आव० ७७६ ।

खासिय–म्लेच्छविशेष । प्रज्ञा० ५५ । खासिक–चिला-तदेशनिवासी म्लेच्छविशेष । प्रश्न० १४ ।

खिखिएइ–खिङ्खिङ्करोति । उत्त० १२१ ।

खिंखिणि–किङ्किण्य–क्षुद्रघण्टिका । जं० प्र० १०६ । किङ्किणी–क्षुद्रघण्टिका । प्रश्न० १५६ । जीवा० १८१ । ज्ञाता० १६७ । क्षुद्रघण्टा । जीवा० १६२ ।

खिंखिणिघंटाजालं–किङ्किणीघण्टाजालं–क्षुद्रघण्टासमूह । जीवा० ३६६ ।

खिंखिणिजालेण–किङ्किणीजालेण क्षुद्रघण्टिका एकैकेन घण्टाजालेन । जीवा० १८१ ।

खिंखिणियाइ– । ज्ञाता० १३४ ।

खिंखिणिस्सरे–किङ्किणि–क्षुद्रघण्टिका तस्या स्वरो ध्वनि किङ्किणिस्वर । ठाणा० ४७१ ।

खिंखिणी–किङ्किणी–भूषणविधिविशेष । जीवा० २६६ । क्षुद्रघण्टा । जीवा० २०५ । क्षुद्रघण्टिका । जं० प्र० २३ । ठाणा० ४७२ ।

खिंखिणीजाल–किङ्किणीजाल–क्षुद्रघण्टासघात । जीवा० २०५ ।

खिंस–परोक्षे हीलना खिंसा । आव० ५२८ ।

खिंसण–खिंसन–निन्दावचन, अशीलोऽसावित्यादिवचनम् । प्रश्न० १६० । सूयया असूयया वा असकृद्दुष्टाभिधान खिंसनम् । दश० २५४ । जनसमक्ष निन्दा । भग० २२७ ।

खिंसणा–खिंसना–तान्येव लोकसमक्षम् । औप० १०३ । परिभव । ओघ० २१५ । पुणोरदुघणियस्स भवइ थभा उ काहो उ वा हवेज्जा । दश० चू० १४० । लोकसमक्षमेव जात्याद्युद्घट्टनम् । अन्त० १८ ।

खिंसणिज्ज–खिंसनीयो जनमध्ये । ज्ञाता० ६६ ।

खिंसति–परस्परस्याग्रत तद्दोषकीर्त्तनेन । ज्ञाता० १४६ ।

खिंसंति–खरण्टयति । वृ० द्वि० ६८ आ । निन्दति । नि० चू० द्वि० १०६ अ । आव० ७६६ । स्वसमक्ष वचनै कुत्सन्ति । भग० १६६ ।

खिंसह–खिंसत, जनसमक्ष निन्दत । भग० २१६ ।

खिंसा–जुगुप्सा असमीक्षितभाषिणम् । ओघ० ५३ ।

खिंसिज्जमाणो–निन्द्यमान । आव० ८६३ ।

खिंसित–जन्मकर्माद्युद्घट्टनत । ठाणा० ३७१ ।

खिंसितवयणे–जन्मकर्माद्युद्घट्टनवचनम् । ठाणा० ३७० ।

खिंसिय–खिंसित–निन्दापुरस्सर शिक्षित । व्य० प्र० १६६ आ ।

खिइ–क्षितय–धर्माद्या ईषत्प्राग्भारावसाना अष्टौ भूमय । आव० ६०० ।

खिइपइट्ठिअ–क्षितिप्रतिष्ठित नगरविशेष । आव० ११६ ।

खिइपइट्ठित–जितशत्रुराजधानी । नि० चू० तृ० ६८ आ ।

खिइपइट्ठिय–क्षितिप्रष्ठित, द्रव्यव्युत्सर्गोदाहरणे प्रसन्नचन्द्र-राजधानी । आव० ४८७ । *आत्ममयमविराधनादृष्टान्ते* जितशत्रुनगरम् । आव० ७३२ । नगरविशेष । उत्त० ३६५ । आव० ३७० । मगधाया मूलराजधानी । उत्त० १०५ । द्रव्यव्युत्सर्गे नगरम् । आव० ७२० ।

खिइपतिट्ठिय–क्षतिप्रतिष्ठित–नगरविशेष । उत्त० ३०४ । आव० ३८८ ।

खिइपदिट्ठिअ–क्षतिप्रतिष्ठित–नगरविशेष । आव० ११५ ।

खिज्जणिया–खेदक्रिया । ज्ञाता० २०५ ।

खिज्जिओ–खिन्न–रुष्ट । आव० ६७३ ।

खिण्ण–श्रान्त । नि० चू० द्वि० ६६ अ ।

खिति–क्षिति–क्षितिप्रतिष्ठित, योगसग्रहे शिक्षादृष्टान्ते नग-रम् । अपरनाम चणकपुर वृषभपुर राजग्रह च । आव० ६७० ।

खितिखाणतो–उड्डुमादी । नि० चू० द्वि० ४४ आ ।

खितिपतिट्ठिय–जितशत्रुराजधानी । नि० चू० प्र० ३५१ आ ।

खित्त–क्षेत्र–आकाशम् । अनु० १८१ । क्षिप्त–व्याप्तम् । राय० २८ । क्षियन्ति-निवसन्ति तस्मिन्निति क्षेत्र–आका-शम् । उत्त० ६४५ । क्षेत्र–शस्योत्पत्तिभूमि । आव० ८२६ । क्षेत्र–यँदाकाशखण्ड सूर्य स्वतेजसा व्याप्नोति तत् । जं० प्र० ४५६ । इन्द्रकीलादिवर्जित ग्रामनग-

रादि । बृ० प्र० ३६ अ । क्षियन्ति-निवसन्त्यस्मिन्निति क्षेत्र-ग्रामारामादि सेतुकेतूभयात्मक वा । उत्त० १८८ ।

खित्तचित-क्षिप्तचित्त-पुत्रशोकादिना नष्टचित्त । ठाणा० ३०५ । शोकेन । ठाणा० ३१५ ।

खित्तचित्ता-क्षिप्त-नष्ट रागभयापमानैश्चित्त यस्या सा क्षिप्तचित्ता । बृ० तृ० २३० आ । अपमानतया क्षिप्त-नष्ट चित्त यस्या सा क्षिप्तचित्ता । बृ० द्वि० २१० अ । अपमानेनोन्मत्ता । बृ० द्वि० २१० अ ।

खित्तवत्थुपमाणाइक्कमे-क्षेत्र-शस्योत्पत्तिभूमि, वास्तु अगार, क्षेत्रवास्तुना प्रमाणातिक्रम क्षेत्रवस्तुप्रमाणातिक्रम । आव० ८२५ ।

खिद्यमानार्थतया प्रयोजनम् । आचा० १०६ ।

खिन्नो-खिन्न विषण्ण । प्रश्न० ६२ ।

खिप्पंतो-क्षिप्यन्-प्रतीक्षमाण । दश० ५७ ।

खिप्पामेव-शीघ्रमेव । ज्ञाता० ३२ ।

खिलप्रदेशे- । विशे० ४३७ ।

खिलभूमी-खिलभूमि, हलैरकृष्टा भूमि । प्रश्न० ३६ ।

खिलोभूय-खिलीभूत-अनुभूतिव्यतिरिक्तोपायान्तरेण क्षपयितुमशक्य निकाचितमित्यर्थ । भग० २५१ ।

खिल्लणय- । निरय० ३४ ।

खिल्लर-पल्वलम् । आव० ५६ ।

खिल्लरबंधे- । नि० चू० प्र० २२१ अ । गोष्पदे । नि० चू० तृ० १८ अ ।

खिल्लिउ-क्रीडितम् । आव० ५६६ ।

खिवाहि- । आचा० ३७८ ।

खिवेमाणे-क्षेपयन्-प्रेरयन् । ज्ञाता० ८५ ।

खीणकसातो-क्षीणकषाय । उत्त० २५७ ।

खीणभोगी-भोगो जीवस्य यत्रास्ति तद्भोगी-शरीर तत्क्षीणतपोरोगादिभिर्यस्य स क्षीणभोगी-क्षीणतनुर्दुर्बल । भग० ३११ ।

खीणमोह-क्षीणमोह क्षीणमोहनीयकर्म्म । ठाणा० १७८ । क्षीणमोह-श्रेणिपरिसमाप्तावन्तमुहूर्त्त यावत्क्षीणवीतराग । भूतग्रामस्य द्वादश गुणस्थानम् । आव० ६५० ।

खीणे-क्षीण वालाग्राकर्षणात्क्षयमुपगत । भग० २७७ । ज०प्र० ६६ । क्षीण-स चावशेषसद्भावे । भग० ६७६ ।

खीर-क्षीरम् । प्रज्ञा० ३६१ ।

खीर-क्षीरोद-क्षीरवरद्वीपानन्तर समुद्र । प्रज्ञा० ३०७ ।

खीरकाओली-साधारणबादरवनस्पतिकायविशेष । प्रज्ञा० ३४ ।

खीरकाकोलि-वल्लीविशेष । भग० ८०४ ।

खीरगहण-क्षीराम्यवहारम् । ओघ० ४७ ।

खीरघर-क्षीरसाला । नि० चू० प्र० २७२ आ ।

खीरणि-एकमस्थिक फलविशेष । भग० ८०३ ।

खीरदुमा-वडउम्बरपिप्पला । नि० चू० प्र० ३६ अ । क्षीरद्रुमा, उदुम्बरादय । ओघ० १२६ ।

खीरद्दुमो-क्षीरद्रुम, वटाश्वत्थादि । पिण्ड० ८ ।

खीरधाती-धातीविसेसा । नि० चू० द्वि० ६३ आ । स्तन्यदायिनी । ज्ञाता० ४१ ।

खीरपूरए-क्षीरपुर-कथ्यमानमतितापादूर्ध्वं गच्छत् क्षीरम् । प्रज्ञा० ३६१ ।

खीरपूरेइ-क्षीरपूर-कथ्यमानमतितापादूर्ध्वं गच्छत् क्षीरम् । ज० प्र० ३५ ।

खीरप्पभो-क्षीरप्रभ क्षीरवरद्वीपाधिपतिर्देव । जीवा० ३५३ ।

खीरभुस-वनस्पतिविशेष । भग० ८०२ । तृणविशेष । प्रज्ञा० ३३ ।

खीरमहु-क्षीरमध्वाश्रयलब्धि । विशे० ३८५ ।

खीरमेहे-क्षीरमेघा नामतो महामेघ । ज०प्र० १७४ ।

खीरवरो-क्षीरवर-द्वीपविशेष । जीवा० ३५२, ३५३ । प्रज्ञा० ३०७ ।

खीरवुट्ठी-क्षीरवृष्टि । भग० १९९ ।

खीराइया-क्षीरकिता-सञ्जातक्षीरका । ज्ञाता० ११६ ।

खीरामलएणं-अबद्धास्थिक क्षीरमिव मधुर यदामलक तस्मादन्यत्र । उपा० ३ ।

खीरासव-क्षरन्ति ये ते क्षीराश्रवा क्षीरवन्मधुरत्वेन श्रोतृणा कर्णमन सुखकर वचनमाश्रवन्ति । औप० २८ । क्षीरमिव मधुर वचनमाश्रवन्ति ये ते क्षीराश्रवा, लब्धिविशेषवन्त । प्रश्न० १०५ ।

खीरिज्ज-क्षीरिण्य-गाव अत्र दुह्यन्ते । आचा० ३३५ ।

खारोदए-क्षीरोदक-ईषल्लवणपरिणामम् । जीवा० २५ । क्षारोदक-ईषल्लवणस्वभावम् । प्रज्ञा० २८ ।

खालु- । ओघ० २०९ ।

खासिअ-कासन-कासितम् । विशे० २७४ ।

खासिए-कासितम् । आव० ७७९ ।

खासिय-म्लेच्छविशेष । प्रज्ञा० ५५ । खासिक-चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेष । प्रश्न० १४ ।

खिखिएइ-खिह्विङ्करोति । उत्त० १२१ ।

खिखिणि-किङ्किण्य-क्षुद्रघण्टिका । जं० प्र० १०६ । किङ्किणी-क्षुद्रघण्टिका । प्रश्न० १५९ । जीवा० १८१ । ज्ञाता० १६७ । क्षुद्रघण्टा । जीवा० १९२ ।

खिखिणिघटाजालं-किङ्किणीघण्टाजाल-क्षुद्रघण्टासमूह । जीवा० ३६९ ।

खिखिणिजालेण-किङ्किणीजालेण क्षुद्रघण्टिका एकैकेन घण्टाजालेन । जीवा० १८१ ।

खिखिणियाइं- । ज्ञाता० १३४ ।

खिखिणिस्सरे-किङ्किणि-क्षुद्रघण्टिका तस्या स्वरो ध्वनि किङ्किणिस्वर । ठाणा० ४७१ ।

खिखिणी-किङ्किणी-भूषणविधिविशेष । जावा० २६९ । क्षुद्रघण्टा । जीवा० २०५ । क्षुद्रघण्टिका । जं० प्र० २३ । ठाणा० ४७२ ।

खिखिणीजाल-किङ्किणीजाल-क्षुद्रघण्टासघात । जीवा० २०५ ।

खिस-परोक्षे हीलना खिसा । आव० ५२८ ।

खिसण-खिसन-निन्दावचन, अशीनोऽमावित्यादिवचनम् । प्रश्न० १६० । सूयया असूयया वा असकृददुष्टाभिधान खिसनम् । दश० २५४ । जनसमक्ष निन्दा । भग० २२७ ।

खिसणा-खिसना-तान्येव लोकसमक्षम् । औप० १०३ । परिभव । ओघ० २१५ । पुणोरदुधणियस्स भवइ थभा उ काहो उ वा हवेज्जा । दश० चू० १४० । लोकसमक्षमेव जात्याद्युद्घट्टनम् । अन्त० १८ ।

खिसणिज्ज-खिसनीयो जनमध्ये । ज्ञाता० ९६ ।

खिसति-परस्परस्याग्रत तद्दोपकीर्त्तनेन । ज्ञाता० १४९ ।

खिसात-खरण्टयति । बृ० द्वि० ९८ आ । नन्दति । नि० चू० द्वि० १०६ अ । आव० ७९९ । स्वसमक्ष वचनै कुत्सन्ति । भग० १६६ ।

खिसह-खिसत, जनसमक्ष निन्दत । भग० २१९ ।

खिसा-जुगुप्सा असमीक्षितभाषिणम् । ओघ० ५३ ।

खिसिज्जमाणो-निन्द्यमान । आव० ८६३ ।

खिसित-जन्मकर्माद्युद्घट्टनत । ठाणा० ३७१ ।

खिसितवयणे-जन्मकर्माद्युद्घट्टनवचनम् । ठाणा० ३७० ।

खिसिय-खिसित-निन्दापुरस्सर शिक्षित । व्य० प्र० १६९ आ ।

खिइ-क्षितय-घर्माद्या ईषत्प्राग्भारावसाना अष्टौ भूमय । आव० ६०० ।

खिइपइट्ठिअ-क्षितिप्रतिष्ठित नगरविशेष । आव० ११६ ।

खिइपइट्ठित-जितशत्रुराजधानी । नि० चू० तृ० ६८ आ ।

खिइपइट्ठियं-क्षितिप्रष्ठित, द्रव्यव्युत्सर्गोदाहरणे प्रसन्नचन्द्रराजधानी । आव० ४८७ । आत्मसयमविराधनादृष्टान्ते जितशत्रुनगरम् । आव० ७३२ । नगरविशेष । उत्त० ३९५ । आव० ३७० । मगधाया मूलराजधानी । उत्त० १०५ । द्रव्यव्युत्सर्गे नगरम् । आव० ७२० ।

खिइपतिट्ठिय-क्षतिप्रतिष्ठित-नगरविशेष । उत्त० ३०४ । आव० ३८८ ।

खिइपदिट्ठिअ-क्षतिप्रतिष्ठित-नगरविशेष । आव० ११५ ।

खिज्जणिया-खेदक्रिया । ज्ञाता० २०५ ।

खिज्जिओ-खिन्न-रुष्ट । आव० ६७३ ।

खिण्ण-श्रान्त । नि० चू० द्वि० ९९ अ ।

खिति-क्षिति-क्षितिप्रतिष्ठित, योगसग्रहे शिक्षादृष्टान्ते नगरम् । अपरनाम चणकपुर वृषभपुर राजग्रह च । आव० ६७० ।

खितिखाणतो-उड्डमादी । नि० चू० द्वि० ४४ आ ।

खितिपतिट्ठिय-जितशत्रुराजधानी । नि० चू० प्र० ३५१ आ ।

खित्त-क्षेत्र-आकाशम् । अनु० १८१ । क्षिप्त-व्याप्तम् । राय० २८ । क्षियन्ति-निवसन्ति तस्मिन्निति क्षेत्र-आकाशम् । उत्त० ६४५ । क्षेत्र-शस्योत्पत्तिभूमि । आव० ८२६ । क्षेत्र-यदाकाशखण्ड सूर्य स्वतेजसा व्याप्नोति तत् । जं० प्र० ४५६ । इन्द्रकीलादिवर्जित ग्रामनग-

रादि । बृ० प्र० ३६ अ । क्षियन्ति–निवसन्त्यस्मिन्निति क्षेत्र–ग्रामारामादि सेतुकेतूभयात्मक वा । उत्त० १८८ ।

खित्तचित–क्षिप्तचित्त –पुत्रशोकादिना नष्टचित्त । ठाणा० ३०५ । शोकेन । ठाणा० ३१५ ।

खित्तचित्ता–क्षिप्त–नष्ट रागभयापमानैश्चित्त यस्या सा क्षिप्तचित्ता । बृ० तृ० २३० आ । अपमानतया क्षिप्त–नष्ट चित्त यस्या सा क्षिप्तचित्ता । बृ० द्वि० २१० अ । अपमानेनोन्मत्ता । बृ० द्वि० २१० अ ।

खित्तवत्थुपमाणाइक्कमे–क्षेत्र–शस्योत्पत्तिभूमि, वास्तु अगार, क्षेत्रवास्तूना प्रमाणातिक्रम क्षेत्रवस्तुप्रमाणातिक्रम । आव० ८२५ ।

खिद्यमानार्थतया प्रयोजनम् । आचा० १०६ ।

खिन्नो–खिन्न विषण्ण । प्रश्न० ६२ ।

खिप्पंतो–क्षिप्यन्–प्रतीक्षमाण । दश० ५७ ।

खिप्पामेव–शीघ्रमेव । ज्ञाता० ३२ ।

खिलप्रदेशो– । विशे० ४३७ ।

खिलभूमी–खिलभूमि, हलैरकृष्टा भूमि । प्रश्न० ३९ ।

खिलीभूय–खिलीभूत-अनुभूतिव्यतिरिक्तोपायान्तरेण क्षपयितुमशक्य निकाचितमित्यर्थ । भग० २५१ ।

खिल्लणय– । निरय० ३४ ।

खिल्लर–पल्वलम् । आव० ५६ ।

खिल्लरबधे– । नि० चू० प्र० २२१ अ । गोष्पदे । नि० चू० तृ० १८ अ ।

खिल्लिउ–क्रीडितम् । आव० ५६६ ।

खिवाहि– । आचा० ३७८ ।

खिवेमाणे–क्षेपयन्–प्रेरयन् । ज्ञाता० ८५ ।

खीणकसातो–क्षीणकषाय । उत्त० २५७ ।

खीणभोगी–भोगो जीवस्य यत्रास्ति तद्भोगी–शरीर तत्क्षीणतपोरोगादिभिर्यस्य स क्षीणभोगी–क्षीणतनुर्दुर्बल । भग० ३११ ।

खीणमोह–क्षीणमोह क्षीणमोहनीयकर्म्म । ठाणा० १७८ । क्षीणमोह –श्रेणिपरिसमाप्तावन्तमुहूर्त्तं यावत्क्षीणवीतराग । भूतग्रामस्य द्वादश गुणस्थानम् । आव० ६५० ।

खीणे–क्षीण वालाग्राकर्षणात्क्षयमुपगत । भग० २७७ ।
ज०प्र० ९६ । क्षीण –स चावशेपसद्भावे । भग० ६७६ ।

खीर–क्षीरम् । प्रज्ञा० ३६१ ।

खीर–क्षीरोद –क्षीरवरद्वीपानन्तर समुद्र । प्रज्ञा० ३०७ ।

खीरकाओली–साधारणबादरवनस्पतिकायविशेष । प्रज्ञा० ३४ ।

खीरकाकोलि–वल्लीविशेष । भग० ८०४ ।

खीरगहण–क्षीराभ्यवहारम् । ओघ० ४७ ।

खीरघर–खीरसाला । नि० चू० प्र० २७२ आ ।

खीरणि–एकास्थिक फलविशेष । भग० ८०३ ।

खीरदुमा–वडउम्बरपिप्पला । नि० चू० प्र० ३९ अ । क्षीरद्रुमा, उदुम्बरादय । ओघ० १२९ ।

खीरद्दुमो–क्षीरद्रुम, वटाश्वत्थादि । पिण्ड० ८ ।

खीरधाती–धातीविसेसा । नि० चू० द्वि० ९३ आ । स्तन्यदायिनी । ज्ञाता० ४१ ।

खीरपूरए–क्षीरपुर–क्वथ्यमानमतितापादूर्ध्वं गच्छत्क्षीरम् । प्रज्ञा० ३६१ ।

खीरपूरेइ–क्षीरपूर–क्वथ्यमानमतितापादूर्ध्वं गच्छत्क्षीरम् । ज० प्र० ३५ ।

खीरप्पभो–क्षीरप्रभ क्षीरवरद्वीपाधिपतिर्देव । जीवा० ३५३ ।

खीरभुस–वनस्पतिविशेष । भग० ८०२ । तृणविशेष । प्रज्ञा० ३३ ।

खीरमहु–क्षीरमध्वाश्रयलब्धि । विशे० ३८५ ।

खीरमेहे–क्षीरमेघा नामतो महामेघ । ज०प्र० १७४ ।

खीरवरो–क्षीरवर –द्वीपविशेष । जीवा० ३५२, ३५३ । प्रज्ञा० ३०७ ।

खीरवुट्ठी–क्षीरवृष्टि । भग० १९९ ।

खीराइया–क्षीरकिता –सञ्जातक्षीरका । ज्ञाता० ११९ ।

खीरामलएणं–अबद्धास्थिक क्षीरमिव मधुर यदामलक तस्मादन्यत्र । उपा० ३ ।

खीरासव–क्षरन्ति ये ते क्षीराश्रवा क्षीरवन्मधुरत्वेन श्रोतृणा कर्णमन सुखकर वचनमाश्रवन्ति । औप० २८ । क्षीरमिव मधुर वचनमाश्रवन्ति ये ते क्षीराश्रवा, लब्धिविशेषवन्त । प्रश्न० १०५ ।

खीरिज्ज–क्षीरिण्य –गाव अत्र दुह्यन्ते । आचा० ३३५ ।

खीरिणि–क्षीरणी–एकास्थिकवृक्षविशेष । प्रज्ञा० ३१ ।

खीरो–क्षीर क्षीरवरद्वीपाधिपतिर्देव । जीवा० ३५३ ।

खीरोए–क्षीरमिवोदक यस्य स, क्षीरवन्निर्मलस्वभावयो सुरयो सम्बन्धि उदक यत्रेति वा क्षीरोद । जीवा० ३५३ । समुद्रविशेष । जीवा० ३५३ ।

खीरोद–क्षीरोद, समुद्रविशेष । ज्ञाता० १२८ ।

खीरोदए–क्षीरसमुद्रे क्षीरोदकम् । प्रज्ञा० २८ । क्षीरोदक–क्षीरसमुद्रजलम् । जीवा० २५ ।

खीरोदा–क्षीरोदा, अन्तरनदी । ज० प्र० ३५७ ।

खीरोयाओ–नदीविशेष । ठाणा० ८० ।

खील– । व्य० द्वि० ३५८ अ । कीलक । आव० ५७८ । कील–शङ्कु । प्रश्न० ८ ।

खीलए–कीलक, लोहकीलक । दश० ५९ ।

खीलग–कीलक । आव० ४२० ।

खीलगसठिते–कीलकसस्थित सातीनखत्तस्स सठाण । सूर्य० १३० ।

खीलगो–कीलक । ओघ० १७८ ।

खीलच्छाया–छायाविशेष । सूर्य० ९५ ।

खीलया–कीलिका । आव० ३६० ।

खीलसंठित–ज उविज्ज त ण ठाति त खीलसठितं । नि० चू० प्र० १२५ आ ।

खीलसठियं– । नि० चू० तृ० ५१ आ ।

खुंखुणगा–घुघुंरका–गुल्फा । आव० २०६ ।

खुंदति–आस्कन्दति प्राप्नोतीत्यर्थ । व्य० द्वि० १८७ आ । क्षोदयन्ति–विनाशयन्ति । उत्त० ६२८ ।

खुंभण–क्षोभणम् । प्रश्न० २४ ।

खु–खुर्वाक्यालङ्कारे अवधारणे वा । आचा० ८४ । अवधारणे । आव० ५३२ । निश्चित अवधारणे वा । उत्त० ३६६ । निश्चये । ज० प्र० २०१ । वाक्यालङ्कारे प्रश्न० १२० । क्षुत्–अष्टप्रकार कर्म । व्य० प्र०३६ आ ।

खुइं–क्षुति छीत्कारादिशब्दविशेष । ज्ञाता० २२१ ।

खुच्चक– । व्य० प्र० २१८ आ ।

खुज्जं–यत्र शिरोग्रीव हस्तपादादिक च यथोक्तप्रमाणलक्षणोपेत उरउदरादि च मण्डल तत् कुब्जम्, पञ्चम सस्थानम् । जीवा० ४२ । कुब्जकरणी । वृ० प्र० ३१४ अ । कुब्ज–यत्र शिरोग्रीव हस्तपादादिक च यथोक्तप्रमाणलक्षणोपेत उरउदरादि च मडभ तत् । प्रज्ञा० ४१२ । कुब्ज–वक्र । ओघ० ७४, ८२ । वक्रशरीर । वृ० प्र० २४२ आ । सर्वगात्रमेगपार्श्वहीन कुब्जम् । नि० चू० द्वि० ४३ आ० । अधस्तनकायमडभ, इहाधस्तनकायशब्देन पादपाणिशिरोग्रीवमुच्यते, तद् यत्र शरीरलक्षणोक्तप्रमाणव्यभिचारि यत्पुन शेप तद्यथोक्तप्रमाण तत् कुब्जम् । ठाणा० ३५७ । कुब्ज–यत्र पाणिपादशिरोग्रीव समग्रलक्षणपरिपूर्ण शेप तु हृदयोदरपृष्ठलक्षण कोष्ठ लक्षणहीन तत् । अनु० १०२ । अधस्तनकायमडभमस्थानम् । आव० ३३७ । कुब्ज–वक्रजङ्घ । प्रश्न० २५ । कुब्ज–ग्रीवादौ हस्तपादयोश्चतुरश्र लक्षणयुक्त सङ्क्षिप्तविकृतमध्यम् । भग० ६५० ।

खुज्जत्त–कुब्जत्व–वामनलक्षणम् । आचा० १२० ।

खुज्जबोरी–कुब्जबदरी । ओघ० १०० ।

खुज्जसंठाण–ग्रीवाहस्तपादाश्च समचतुरस्रा लक्षणयुक्ता यत्र सक्षिप्त विकृत च मध्ये कोष्ठ तत् कुब्जसस्थानम् । सम० १५० ।

खुज्जा–कुब्जा । आव० ६४ । नि० चू० प्र० २७७ अ । कुब्जा कुब्जिका–वक्रजङ्घा । ज० प्र० १६१ । ज्ञाता० ४१ ।

खुज्जियं–कुब्ज पृष्ठादावस्यास्तीति कुब्जी । आचा० २३३ ।

खुट्टं–त्रुटितम् । आव० १४६ ।

खुट्टति–कुट्टयन्ति । उप० मा० गा० ४६६ ।

खुट्टिमा–गान्धारस्वरस्य द्वितीया मूर्च्छना । जीवा० १६३ ।

खुड्डुं–रयणिपमाणातो ज आरतो त । नि० चू० प्र० २१६ आ ।

खुड्डंत–कीडत । नि० चू० प्र० ११५ अ ।

खुड्ड–क्षुल्ल–लघु । जीवा० २०० । क्षुद्र बाल–शीलहीनो वा पार्श्वस्थादि । उत्त० ४७ । बालो । नि० चू० प्र० ६८ आ । क्षुल्ल । ओघ० १६० ।

खुड्डइ–त्रोटयति । भग० ६६८ ।

खुड्डए–क्षुल्लक । आव० १६५ ।

खुड्डका–भूपणविधिविशेष । जीवा० २६८ ।

खुड्डखुड्डगा–क्षुल्लक्षुल्लका–अतिलघव आयताश्च । ज० प्र० ४४ ।

खुड्ड(खुड)ग–मुद्रिका । आव० ४१८ ।

खुड्डग–मुद्रिका । आव० ६७१ । आव० ४१७ । क्षुल्लक–द्रव्यभाववाल । दश० १६५ । क्षुल्लक, हास्ये दृष्टान्त । आव० ४०४ । क्षुल्लक लघु–वालक । उत्त० १०२ ।

खुड्डगकुमारो–क्षुल्लककुमार, योगसग्रहे अलोभोदाहरणे कण्डरीकयुवराजपत्नीयशोभद्राया साध्व्यवस्थाया जातपुत्र । आव० ७०१ ।

खुड्डगगणी–क्षुल्लकगणी, क्षुल्लकाचार्य । व्य० प्र० २३७ आ ।

खुड्डति–त्रोटयति । भग० ६६७ ।

खुड्डपाणा–क्षुद्रा–अधमा अनन्तरभवे सिद्ध्यभावात् प्राणा-उच्छ्वासादिमन्त क्षुद्रप्राणा । ठाणा० २७३ ।

खुड्डय–क्षुद्रका–वयसा श्रुतेन वाऽव्यक्ता । सम० ३६ । खुड्डाग अङ्गुलीयकं । भग० ४५६ । क्षुल्लक । दश० ६१ । क्षुद्रक–अङ्गुलीयकविशेष । ज० प्र० १०५ । अङ्गुलीयकम् । ज्ञाता० २७ ।

खुड्डलए–स्वल्पकुटीरक । ओघ० ४६ । क्षुल्लक । आव० ३८८ । ओघ० १६० ।

खुड्डा–क्षुद्रा–अख्यातसरस्य । ज० प्र० ४० । लघव । जीवा० १६७ । क्षुल्ल । लघु–स्तोक च । जीवा० ४४२ । क्षुद्रा–अधमा । क्रूरा । ठाणा० ३६६ ।

खुड्डागभवग्गहण–क्षुल्लकभवग्रहण–षट्पञ्चाशदधिकावलिकाशतद्वयप्रमाण समयोनम् । जीवा० ४३४ ।

खुड्डागसव्वओभद्द–क्षुद्रिकासर्वतोभद्र, क्षुद्रिका–महत्यपेक्षया सर्वत सर्वासु दिक्षु विदिक्षु च भद्रा–समसङ्ख्येति सर्वतो भद्रा तपोविशेष । अन्त० २६ ।

खुड्डाग सीहनिक्कीलिय–क्षुल्लक सिंहनिष्क्रीडत–वक्ष्यमाणमहदपेक्षया क्षुल्लक–ह्रस्व सिंहस्य निष्क्रीडित–विह्वीत गमनमिति, तपोविशेष । अन्त० २८ ।

खुड्डाग–क्षुल्लक–लघु । जीवा० १७७ । क्षुल्लक–ह्रस्व । प्रज्ञा० ५६६ । ज्ञाता० ११६ ।

खुड्डागनियठ–क्षुल्लकनिर्ग्रन्थीयम्, उत्तराध्ययनेषु षष्ठमध्ययनम् । उत्त० २५५ ।

खुड्डागपयरेसु–क्षुल्लकप्रतरयो सर्वलघुप्रदेशप्रतरयो । भग० ६०७ ।

खुड्डागभवग्गहण–क्षुल्ल लघु स्तोक च क्षुल्लमेव क्षुल्लक एकायुष्कसवेदनकालो भवस्तस्य ग्रहण भवग्रहण क्षुल्लक च तद्भवग्रहण च क्षुल्लकभवग्रहणम् । जीवा० ४४२ ।

खुड्डागसीहनिक्कीलिय–क्षुल्लकसिंहनिक्रीडित वक्ष्यमाणमहासिंहनिक्रीडितापेक्षया क्षुल्लक सिंहनिक्रीडित सिंहगमन तदिव यत्तपस्तत् । औप० ३० । ज्ञाता० १२२ ।

खुड्डियदुवारिया–क्षुद्रद्वारा–सङ्कटद्वारा । आचा० ३२६ ।

खुड्डिया–क्षुद्रिका लघ्व्य । आचा० ३७० ।

खुड्डियाओ–क्षुल्लिका–लघव । जीवा० १६७ । अख्यातसरस्यस्ता एव लघ्व्य–क्षुल्लिका । ज० प्र० ४१ ।

खुड्डोय–क्षुल्लको । नि० चू० प्र० १३२ आ ।

खुण्णं–विपण्ण । वृ० द्वि० २०५ आ ।

खुति–क्षुत–तस्यैव सम्बन्धीशब्द तच्चिन्ह वा । ज्ञाता० ८५ ।

खुतग–मनाङ् मग्न केवल तत उत्तरीतुमशक्त । औप० ८७ ।

खुत्तो–निमग्न । प्रश्न० ६० ।

खुद्द–क्षुद्रकर्मकारित्वात् क्षुद्र । ज्ञाता० २३८ । क्षुद्र–द्रोहक अधमो वा । प्रश्न० ५ ।

खुद्दए–क्षुद्रक–विनाशयितु शक्यत इति क्षुद्र तदेवानुकम्प्यतया क्षुद्रक सोपक्रममम् । उत्त० ६२८ ।

खुद्दिमा–गान्धारग्रामस्य द्वितीया मूर्छा । ठाणा० ३६३ ।

खुद्दिया–क्षुद्रिका, जलाशयविशेष । प्रश्न० १६० ।

खुन्निय–भूपतनात् प्रदेशान्तरेषु नमितानि । भग० ४६८ ।

खुप्पंते–कर्दम एव निमज्जति । ओघ० २६ ।

खुप्पति–सचिक्खल्ले जले मज्जति । नि० चू० द्वि०७६ अ ।

खुप्पिज्ज–निमज्जन । ओघ० २६ ।

खुप्पिल–निमज्जक । त० ।

खुब्भति–क्षुभ्यन्ति राज्यविलोडनाय सचलन्ति । व्य० द्वि० ३३ आ ।

खुभाएज्ज–स्कम्नीयात् क्षुभ्येत् । भग० २६६ ।

खुभिज्जा–क्षोभ यायात्, प्रकुप्येत् । ओघ० ४० ।

खुभियं–कलह । बृ० द्वि० १९ आ ।
खुभियजल–क्षुभितजल, क्षुभित जल यस्य स । जीवा० ३२१ । वेलावशात् क्षुभितजल । भग० २८२ ।
खुम्मिया–भूमितपनात् प्रदेशान्तरेषु नमितानि । ज्ञाता० ४८ ।
खुर–चरणे येषामधोवर्त्यस्थिविशेष । उत्त० ६९९ । क्षुरम्–शस्त्रविशेष । प्रश्न० १४ । आव० ३७० । खुर–शफ । जीवा० ३८ । प्रज्ञा० ४५ । खुरा–पादतलरुपा अवयवा । ज० प्र० २३४ । शफ । उपा० ४४ । क्षुर–क्षुर । ठाणा० २७३ ।
खुरखुरओ–चर्ममय भाजन वाद्यम् । बृ०द्वि०२३६ अ ।
खुरदुगत्ता–चर्मकीटता । सूत्र० ३५७ ।
खुरनिबद्धा–रासभवलिवर्द्दादय । पिण्ड० १०२ ।
खुरपत्त–क्षुरपत्र–क्षुरप्रम् । जीवा० १०६ । विपा० ७१ ।
खुरपत्ते–क्षुरपत्र–क्षुर । ज्ञाता० २०४ ।
खुरप्प–क्षुरप्र–प्रहरणविशेष । प्रज्ञा०८० । जीवा० १०३ ।
खुरप्पसठाणसठित–क्षुरप्रसस्थानसस्थित, जिव्हेन्द्रियसस्थानम् । प्रज्ञा० २९३ ।
खुरबध– । ज्ञाता० २३० ।
खुब्भतं–क्षुभ्यन्त, अधोनिमज्जन्तम् । ठाणा० ३८५ ।
खुरभंडं–क्षुरप्रादिभाजनम् । दश० १०५ ।
खुल्ल–कर्कशक्षेत्रादय । बृ० प्र० २४३ आ ।
खुलए–पादघुटक जानुरित्यर्थं । बृ० तृ० १६२ आ ।
खुलुगो–उवरिकडीओ आरद्धा । नि० चू० प्र० १८० अ ।
खुल्मइ–क्षुभ्यति–पृथिवीं प्रविशति क्षोभयति वा पृथिवी । बिभेति वा । भग० १८३ ।
खुल्लग–क्षुल्लक–कपर्दक । प्रश्न० ३७ ।
खुल्ला–खुल्ला–लघव शङ्खा सामुद्रशङ्खाकारा । प्रज्ञा० ४१ । जीवा० ३१ ।
खुवे–क्षुवो, ह्रस्वशिग्व शाखी । ज्ञाता० ६५ ।
खुह–क्षुरादिदु खहेतुत्वात् क्षुत् । दश० २६१ ।
खुहत्तं–प्रसह्य । नि० चू० द्वि० १०६ अ ।
खुहा–क्षुधा, क्षुत्परीषह, प्रथमपरीषह । आव० ६५६ ।
खेज्जणा–खेदना–खेदससूचिका । ज्ञाता० २३५ ।
खेटक–आवरण सन्नाह । ज० प्र० २५९ ।

खेटन–कर्षण । ज० प्र० २४३ ।
खेटय–वाहय । नदी० १५४ ।
खेट्यन्ते–उत्त्रास्यन्ते । उत्त० ६०५ ।
खेडं–पांशुप्रकारनिबद्ध खेटम् । राय० ११४ । जीवा०२७९ । प्रकारोपेत खेटम् । ठाणा० २९४ । धूलीमयप्राकारोपेतम् । अनु० १४२ । पाशुप्राकारबद्धम् । आचा० २८५ । प्रज्ञा० ४७ । जीवा० ४० । खेट्यन्ते–उत्त्रास्यन्तेऽस्मिन्नेव स्थितै शत्रव इति खेट पाशुप्राकारपरिक्षिप्तम् । उत्त० ६०५ । खेटस्थान उल्लुकानद्याश्चैकस्मिँस्तीरे धूलिप्राकारावृतनगरविशेषरूपम् । विशे० ९७२ । खेटानि–प्रासुप्राकारनिबद्धानि क्वचिन्नद्यद्रिवेष्टितानि । ज० प्र० १२१ । खेट–धूलिप्राकारम् । औप ७४ । भग० ३६ । विपा० ३९ । प्रश्न० ५२, ६९ । सूत्र० ३०९ । धूलीप्राकारोपेतम् । प्रश्न० ९२ । खेड नाम धूलीपागारपरिक्खित्त । नि० चू० द्वि० ७० आ । धूलीपागारो जस्स त । नि० चू० प्र० २२९ आ ।
खेडग–खेटक–फलकम् । प्रश्न० ७० ।
खेडग–खेटक–शस्त्रविशेष । आव० ३६० ।
खेडठाणं–खेटस्थान–उल्लूका नद्या एकस्मिन् तीरे यत् । आव० ३१७ ।
खेडत्थाम–खेटस्थाम–उल्लूकाया द्वितीये तीरे नगरविशेष । उत्त० १६५ ।
खेडमारी–खेटमारी–मारीविशेष । भग० १९७ ।
खेडय–खेटक वशशलाकादिमयम् । ज० प्र० २०५ । आवरणविशेष । जीवा० १९३ ।
खेडरुव–खेटरूपम् । भग० १९३ ।
खेडाउ–क्रीडनकानि । बृ० प्र० ४७ आ ।
खेडाति–धूलीप्राकारोपेतानि । ठाणा० ८६ ।
खेडाहार:–खेडग्रामस्य समासन्नो देश परिभोग्य खेडाहार । सूत्र० ३४३ ।
खेडिय–खेटितम् । दश० १०५ ।
खेड्ड–द्यूतविशेष । ज० प्र० २६८ ।
खेड्डा–क्रीडा । ग० ।
खेड्डाउ–क्रीडा । आव० ३६० ।
खेत्त–क्षेत्र–आकाशम् । अनु० १८१ । प्रज्ञा० ३२८ ।

क्षेत्र–धान्यवपनभूमि । प्रश्न० ३६ । क्षिप्तचित्तता । आव० ७३७ । क्षेत्र–धान्यजन्मभूमि । ज० प्र० १४६ । औप० ३६ । क्षेत्र–ग्रामादि कृषिभूमिर्वा । प्रश्न० १२० । क्षियन्ति अवगाहन्ते निवसन्ति जीवादयोऽस्मिन्निति क्षेत्र आकाशम् । विशे० ८६२ । क्षेत्र–भौतादि भावितम् । दश० ११५ । आर्यम् । आव० ३४१ । क्षेत्र–भार्या । ठाणा० ५१६ । यदाकाशखण्डमादित्य स्वतेजसा व्याप्नोति तत् । भग० ३९३ ।

खेत्तच्छेए–क्षेत्रच्छेद बुद्धया प्रतरकाण्डविभाग । जीवा० ९३ ।

खेत्तते–क्षेत्र भार्या तस्या जात क्षेत्रज । ठाणा० ५१६ ।

खेत्तपरमाणु–क्षेत्रपरमाणु–आकाशप्रदेश । भग० ७८८ ।

खेत्तपलिओवमे–क्षेत्र–आकाश तदुद्धारप्रधान पल्योपम क्षेत्रपल्योपमम् । अनु० १८० ।

खेत्तमूढो–ज खेत्त ण याणाति जम्मि वा खेत्ते मुज्झत्ति रातो वा परसथार अप्पणो मण्णति । नि० चू० द्वि० ४१ आ ।

खेत्तवत्थु–इह क्षेत्रमेव वस्तु क्षेत्रवस्तु, क्षेत्र च वास्तु च गृह क्षेत्रवास्तु । उपा० ४ ।

खेत्तवासी–क्षेत्रवर्षी–पात्रे दानश्रुतादीना निक्षेपक । ठाणा० २७० ।

खेत्ताणि–क्षेत्राणि–क्षेत्रोपमानि पात्राणि । उत्त० ३६१ ।

खेत्तातिक्कत–क्षेत्रातिक्रान्त–क्षेत्र सूर्यसम्बन्धि तापक्षेत्र दिनमित्यर्थ, तदतिक्रान्त तस्य आहार । भग० २९२ ।

खेत्ताविचीमरण–क्षेत्रावीचिमरण–अवीचिमरणस्य द्वितीयो भेद । उत्त० २३१ ।

खेत्ते–क्षेत्रिके–क्षेत्रस्वामिनि, गणावदेच्छेदके आचार्ये वा । व्य० द्वि २६ आ ।

खेत्तोवक्कमे–क्षेत्रोपक्रम –क्षेत्रस्य परिकर्म–विनाशकरणम् । अनु० ४८ ।

खेत्तोवसपदा–उपसम्पदाया भेद । नि०चू०प्र० २४१अ ।

खेत्तोवाय–क्षेत्रोपायस्तु लाङ्गलादिना क्षेत्रोपक्रमणे भवति उपायभेद । दश० ४० ।

खेदिय–खिन्न–खेद क्लेशो वा । उत्त० ४५९ ।

खेम–क्षेम, विषय । आव० ३४१ । क्षेम परकृतोपद्रवरहितम् । जीवा० १६० । क्षेम, तदुपद्रवाद्यभावापादनम् । जीवा० २५५ । क्षेम देशसौस्थ्यम् । उत्त० १४५ । परचक्राद्युपद्रवाभाव । बृ० तृ० १५१ अ । लब्धस्य परिपालन क्षेम । ज्ञाता० १०३ ।

खेमकर–क्षेमङ्कर–पञ्चम कुलकर । ज० प्र० १३२ । अष्टाशीत्या महाग्रहे नवषष्टितम । ठाणा० ७९ । तृतीय कुलकर । ठाणा० ५१८ । चतुर्थ कुलकर । सम० १५३ । क्षेमङ्कर–अष्टाशीत्या महाग्रहे सप्तषष्टितम । ज० प्र० ५३५ ।

खेमधर–क्षेमन्धर षष्ठ कुलकर । ज० प्र० १३२ । चतुर्थकुलकर । ठाणा० ५१८ । पञ्चमकुलकर । सम० १५३ ।

खेम–क्षेम–शिवम् । दश० २५८ । लब्धस्य च परिपालन क्षेमम् । उत्त० २८३ । क्षेम–राजविड्वरशून्यम् । दश० २२२ । सुस्थम् । उत्त० ३१३ । व्याध्यभावे । क्षेमत्वम् । उत्त० ५१० । परचक्राद्युपद्रवरहितम् । उत्त० ३५१ । क्षेम–गुणोदाहरणे जितशत्रुराज्ञो मन्त्री । आव० ८१९ ।

खेम कुसल–क्षेमकुशल –अनर्थानुद्भवानर्थप्रतिघातरूप । ज्ञाता० ८९ ।

खेमते–क्षेमक –अन्तकृद्दशाना षष्ठवर्गस्य पञ्चममध्ययनम् । अन्त० १८ । क्षेमक –गाथापतिविशेष । अन्त० २३ ।

खेमपया–क्षेमपदानि–रक्षणस्थानानि । आचा० ४३० ।

खेमपुरा–खेमपुरा, राजधानी । ज० प्र० ३४५ ।

खेमपुरीओ–महाविदेहे विजयराजधानी । ठाणा० ८० ।

खेमल्लो–क्षेमिलो नाम शकुनज्ञाता । आव० १९७ ।

खेमा–क्षेमानाम्ना राजधानी । ज० प्र० ३४४ । क्षेमाणि–परकृतोपद्रवरहितानि । ज० प्र० ७६ । प्रज्ञा० ८६ । क्षेमा अशिवाभावात् । औप० २ ।

खेमाओ–महाविदेहे विजयराजधानी । ठाणा० ८० ।

खेमिय–क्षेमम् । गणि० ।

खेय–खेद श्रम ससारपर्यटनजनित अभ्यास । आचा० १३२ । सयम, खेदयत्यनेन कर्मेति खेद सयम । उत्त० ४१९ । खेद–अग्निव्यापार । आचा० ५३ ।

खेयण्ण–अग्निव्यापार यो जानातीति खेदज्ञ । आचा०

५३ । निपुण । आचा० १५६,२७४ । जन्तुदु खपरिच्छेत्तार । आचा० १७९ । क्षेत्रज्ञ –निपुण । आचा० ५३ । खेदज्ञ । आव० ५५५ ।

खेयन्न–खेदज्ञ –निपुण । सूत्र० २५८ । खेद –अभ्यासस्तेन जानातीति खेदज्ञ । आचा० १३२ । खेदज्ञ – गीतार्थ । ओघ० २०२ । ज्ञानी । नि० चू० प्र० २०१ आ । सर्वज्ञ । सूत्र० ३७० । तीर्थकृत् । सूत्र० २९९ । क्षेत्रज्ञ –पसक्तविरुद्धद्रव्यपरिहार्यकुनादिक्षेत्रस्वरूपपरिच्छेदक । आचा० १३२ ।

खेयाणुगए–खेदयत्यनेन कर्मेति खेद –सयमस्तेनानुगतो युक्त खेदानुगत । उत्त० ४१९ ।

खेल–श्लेष्मा । ओघ० १८६ । विशे० ३७९ । उत्त० २९१ । ठाणा० ३४३ । आव० ४७, ४३२, ५६४, ६१६, ७६५ । गोरसभाविता पोत्ता खेलो भन्नत्ति । नि० चू० द्वि० १८ आ । निष्ठीवन । ओघ० १८६ । भग० ८७ । औप० २८ । प्रश्न० १०५ । सम० ११ । कफ । ज० प्र० १४८ । कण्ठमुखश्लेष्मा । भग० १२२ । मुखविनिर्गत श्लेष्मा । उत्त० ५१७ । निष्ठीवनम् । ज्ञाता० १०३ ।

खेलइ–क्रीडति । उत्त० १४७ ।

खेलण–क्रीडा । नि०चू० द्वि ११९ आ । खेलति क्रीडति । व्य० द्वि० ८ अ ।

खेलणग–क्रीडनकम् । आव० २९० ।

खेलन्ति–क्रीडन्ति । आव० २०५ ।

खेलमल्लग–श्लेष्ममल्लक । दश० ३७ ।

खेलमल्लो–श्लेष्ममल्लकम्, श्लेष्मशराव । आव० ४३२ । श्लेष्मकुण्डिका । आव० ३२१ ।

खेलसिंघाण–श्लेष्मसिङ्घानम् । आव० ८३२ ।

खेलासव–खेलनिष्ठीवन तदाश्रवति–क्षरतीति खेलाश्रव । ज्ञाता० १४७ ।

खेलूडे–अनन्तकायभेद । भग० ३०० ।

खेलेज्ज–खेलयेत् । बृ० प्र० २३२ आ ।

खेलेसु– । प्रज्ञा० ५० ।

खेलौषधिः–औषधिविशेष । ठाणा० ३३२ ।

खेल्लइ–क्रीडति । आव० ४०१ ।

खेल्लामो–क्रीडाम । उत्त० २८९ ।

खेवणि–क्षेपिण्य –हथनालिरिति लोकप्रसिद्धा । ज० प्र० २०६ ।

खेवा–आरुहतस्स उवरुवरिं हत्थालवणे खेवा । नि० चू० द्वि० ६४ अ ।

खेविय–क्षिपित–पापम् । उत्त० ४५९ ।

खेवो–क्षेप, परहस्तादद्रव्यस्य प्रेरणम् । अधर्मद्वारस्य विशतितम नाम । प्रश्न० ४३ ।

खोअ–इक्षुरसास्वाद समुद्र । अनु० ९० ।

खोअवर–इक्षुवर, द्वीपविशेष । अनु० ९० ।

खोइय–क्षोभित, विसयोजित । उत्त० १०० ।

खोओदए–क्षोदोदकम्, इक्षुरससमुद्रजलम् । जीवा० २५ ।

खोखर–प्रतोद कशा वा । आव० २६१ ।

खोखुब्भमाणो–क्षोक्षुभ्यमाण, भृश क्षुभ्यमाण । औप० ४७ । महामत्स्यादिभिर्भृश व्याकुलीक्रियमाण ।

खोटकक्षेप –हडीवन्धनम् । प्रश्न० १६४ ।

खोटका –समयप्रसिद्धा स्फोटनात्मका । उत्त० ५४१ ।

खोट्टिज्जिहि–क्षेप्स्यते । आव० ९५ ।

खोट्टेउ–खटत्कर्त्तुम्, पिट्टितुम् । ओघ० १९४ ।

खोड–कोण । आव० ७४२ । ज रायकुलस्स हिरण्णादि दव्व दायव्व । नि० चू० तृ० ८९ आ । प्रदेश । बृ० प्र० २३५ आ । खोट –राजकुले हिरण्यादि द्रव्यदातव्यम् । व्य० प्र० ४५ अ ।

खोडा–खोटका । ओघ० १०९ । स्थाणो । नि० चू० तृ० ७२ आ । खोटका ते च त्रयस्त्रय प्रमार्जनानां त्रयेण त्रयेणान्तरिता –कार्या इति । ठाणा० ३६१ ।

खोडि–महाकाष्ठम् । प्रश्न० ५७ ।

खोडिय–नाशितम् । आव० ६९४ ।

खोडिया– । नि० चू० द्वि० १०४ आ ।

खोडी–पेटा । आव० २९८ ।

खोडेयव्वा–निषेधयितव्या । भग० ५८३ ।

खोडेहामि–स्खलयिष्यामि । आव० ३२२ ।

खोड्डाहारा–क्षौद्राहारा –मधुभोजिन, क्षीण वा–तुच्छावशिष्ट तुच्छधान्यादिक आहारो येषा ते । ज० प्र० १७१ ।

खोतोदए–इक्षुसमुद्रे क्षोदोदकम् । प्रज्ञा० २८ ।
खोद–क्षोद –इक्षुरस । जीवा० १९८ । जं० प्र० ४२ ।
खोद्दाहार–मधुभोजिन भूक्षोदेन वाऽऽहारो येषा ते–क्षोद्दाहारा । भग० ३०६ ।
खोभ–क्षोभ सभ्रम । आव० ७८४ ।
खोभण–क्षोभ –वेदोदयरूप । पिण्ड० १६० ।
खोभिअ–क्षोभित –स्वस्थानाच्चालित । जं० प्र० ३७ ।
खोभिए–क्षोभ आकस्मिक सत्रास । ओघ० १९ ।
खोभितो–क्षोभित । उत्त० १६८ ।
खोभित्तए–क्षोभयितु–एतान्येव परिपालयाम्युतोज्झामीति क्षोभविषयान् कर्तुं क्षोभयितु सशयोत्पादनत । ज्ञाता० १३४ ।
खोभिय–क्षोभित –स्वस्थानाच्चालित । जीवा० १९२ ।
खोभेति–क्षोभयति, ईषद्भूमिमुत्कीर्य तत्प्रवेशनेन । ज्ञाता० ९४ ।
खोम–क्षौम–कार्पासिकम् । जीवा० २६९ । जीवा० २३२ । देववस्त्रम् । आव० १८० । दुकूल, कार्पासिक वस्त्रम् । जं० प्र० ५५ । क्षौम, सामान्यत कार्पासिक अतसीमयम् । जं० प्र० १०७ ।
खोमजुअल–क्षौमयुगलम् । आव० १२४ । कार्पासिकवस्त्रम् । प्रश्न० १३४ ।
खोमजुगल–क्षौमयुगलम् । आव० ५६२ ।
खोमजुयल–कार्पासिकवस्त्रयुगलम् । उपा० ५ । क्षौमयुगलम् । ज्ञाता० १२८ ।
खोमिते–कार्प्पासिकाम् । ठाणा० १३८ ।
खोमिय–क्षौमिक, सामान्यकार्पासिकम् । आचा० ३९४ । क्षौमिक–कार्पासिक, वृक्षेभ्यो निर्गत वा, अतसीमय वा । प्रश्न० ७१ । दुकूल–कार्प्पासिकमतसीमय वा वस्त्रम् । सूर्य० २९३ । कार्पासिकम् । आचा० ३९३ ।
खोमियकप्पाय–क्षौमिककार्पास । ठाणा० ३३९ ।
खोयरसघडए–इक्षुरसघट । आव० १४५ ।
खोयरसो–क्षोदरस –इक्षुरस । जीवा० २६५, ३५१ ।
खोयवरो–क्षोदवर, द्वीपविशेष । जीवा० ३५५ ।
खोरए–खोरक–तापसभाजनम् । दश० ५६ । क्षीरकम् । आव० ६२५ ।
खोरग–द्रव्यभृत भाजनम् । नि० चू० तृ० १३६ आ ।
खोरय–रूप्यमयमहाप्रमाणभाजनविशेष । नदी० १५९ ।
खोरा–भुजपरिसर्पविशेष । प्रज्ञा० ४६ ।
खोरुसताए–विरुद्धराज्यत्वेन । नि० चू० द्वि० १० आ ।
खोल–राजपुरुषविशेष । आव० ८२१ । मद्यस्य किट्टविशेष । प्र० वृ० २६८ आ । मद्याध कर्दम । आचा० ३४८ ।
खोलपक्कस–मद्यकीट्ट । नि० चू० ६६ आ ।
खोला–गोला, हेरिका गुप्तचरा । राज्ञा नियुक्ता । पिण्ड० ४९ । सीसगोला । बृ० द्वि० १०२ अ । गोरसभावितानि पोतानि । बृ० द्वि० १०० आ । बृ० प्र० १२६ अ । गोरसभाविता पेत्ता । नि० चू० द्वि० १८ आ ।
खोल्ल–कोट्टर । नि० चू० द्वि० १३३ अ । देशीशब्दत्वात् कोटरम् । बृ० प्र० १५२ आ ।
खोसिय–खोसित–जीर्णप्रायम् । पिण्ड० १०० ।
ख्यात–स्वसवेदनत प्रसिद्धम् । उत्त० २५८ ।
ख्यातसत्यवृत्ति–प्रसिद्धसत्यवृत्ति । नदी० १५६ ।

ग

गग–गङ्ग–यस्माद्द्वैक्रिया उत्पन्ना स आचार्य । आव० ३१२ । द्वैक्रियनिन्हवगुरुर्धनगुप्तशिष्य । आव० ३१७ । धनगुप्तस्य शिष्य । द्वैक्रियविषयो निन्हव, पञ्चमो निन्हव । ठाणा० ४१० । गाङ्ग –पुरुषपुण्डरीकधर्माचार्य । आव० १६३ टी । गङ्गाचार्य । उत्त० १५३ ।
गगदत्त–मुनिविशेष । भग० ७०६ । निरय० २२, ३६ । षष्ठबलदेववासुदेवयो पूर्वभविको धर्माचार्य । सम० १५३ । हस्तिनापुरे गृहपति । भग० ७०७ । गङ्गादत्त । कृष्णवासुदेवपूर्वभव । सम० १५३ । आव० १६३–टी० । मकातीगाहावतीए जेट्ठपुत्तो । अन्त० १८ । वासुदेवपूर्वभव । आव० ३५८ । रागान्निदानकृत् । भक्त० ।
गगदत्ता–गङ्गदत्ता । सागरदत्तसार्थवाहपत्नी । विपा० ७४ ।
गगदेवो–गङ्गदेव –धनगुप्तशिष्य आचार्य । उत्त० १६५ ।

गंगा–गङ्गा नदीविशेष, यत्र नन्दो नाम नाविक। आव० ३८६,१४३। नदीविशेष। ज्ञाता० ६४। ठाणा० ७५। हिमवद्वर्षधरपर्वतस्य पञ्चम कूटम्। ठाणा० ७१। गङ्गा नदीविशेष। ज० प्र० २६०। गङ्गा द्वैक्रियोत्पत्तिस्थानम्। विशे० ६३४।

गंगाकुंड–यत्र हिमवतो गङ्गा निपतति तद्गङ्गाकुण्डम्। ज० प्र० ८७। कुण्डविशेष। नदी० २२८।

गंगाकूल–गङ्गाकूल–गङ्गातटम्। उत्त० १२६।

गंगादीव–गङ्गाद्वीप इति नाम्ना द्वीप। ज० प्र० २६३।

गंगादेवीकूडे–गङ्गादेवीकूटम्। ज० प्र० २६६।

गंगापवायद्दहे–गङ्गप्रपातद्रह–हिमवद्वर्षधरपर्वतोपरिवर्तिपद्मद्रदस्य पूर्वतोरेण निर्गत्य क्रमेण यत्र प्रपतति स। द्रहविशेष। ठाणा० ७४।

गंगायड–गङ्गातटम्। आ० ६८८।

गंगावत्तणकूडे–गङ्गावर्तननाम्नि कूटे। ज० प्र० २६०।

गंगावालुआ–गङ्गावालूका–गङ्गापुलिनगतधूली। अनु० १६२।

गंगेए–पार्श्वापत्य। भग० ४३६।

गंगेय–भगवत्या नवमशतके द्वात्रिंशत्तम उद्देशक। भग० ४२५। गङ्गापत्य। ज्ञाता० २०८।

गंगेया–अणगारविशेष। भग० ४५५, ६१७।

गच्छिय–कारुजातिविशेष। ज० प्र० १६४।

गज–गुच्छविशेष। प्रज्ञा० ३२। भग० ८०३। गज्ञ–भोज्यविशेष। प्रश्न० १५३।

गजसाला–जत्थ धण्ण दलिज्जति सा गजसाला। गजा–जवा जत्थ अच्छति सा गजसाला। नि०चू०प्र० २७२ आ।

गंजा–जवा। नि० चू० प्र० २७२ आ।

गंठ–ग्रन्थ–शब्दसदर्भ। जीवा० २५५।

गंठि–ग्रन्थि–कार्पापणादिपुट्टलिका। औप० २। पर्वभङ्गस्थान वा। आचा० ५६। पर्वग्रन्थि। जीवा० ३५५। ग्रन्थि–घनोरागद्वेपपरिणाम.। उत्त० ६४५। ग्रन्थि–गठित्ति सुदुब्भेओ कक्खडघणरूढगूढगथि व्व। जीवस्स कम्मजणिओ घणरागद्दोसपरिणामो। विशे० ५३२।

गंठिगो–ग्रन्थिक–ग्रन्थिकसत्व, ग्रन्थिभेद कर्त्तुमसमर्थ। सूत्र० ३७३।

गंठिछेयओ–ग्रन्थिच्छेदक। आव० ७०४।

गंठिभेए–ग्रन्थि–द्रव्यसम्बन्धिन भिन्दन्ति–घुर्घुरकद्विकर्तिकादिना विदारयन्तीति ग्रन्थिभेदा। उत्त० ३१२।

गंठिभेओ–ग्रन्थिभेद–चौरविशेष। प्रश्न० ३८।

गंठिभेयणो–घुर्घुरादिना यो ग्रन्थी छिन्दति स ग्रन्थिभेदक। विपा० ५६।

गंठिम–ग्रन्थिम–ग्रन्थनेन निष्पन्न मालावद्। प्रश्न० १६०। ग्रन्थिम–यत्सूत्रेण ग्रथितम्। ज० प्र० १०४। यद् ग्रथ्यते सूत्रादिना ग्रन्थिमम्। ज्ञाता० ५६।

गंठियसत्त–ग्रन्थिकसत्त्व–अभिन्नग्रन्थिजीव। विशे०५३७।

गंठियसत्ता–ग्रन्थिगसत्त्वा–ये ग्रन्थिप्रदेश गत्वापि तद्भेदाविधानेन न कदाचिदुपरिष्टाद् गन्तार ते चाभव्या एव। उत्त० ६४५।

गंठी–ग्रन्थि–पर्व, सामान्यतो भङ्गस्थानम्। बृ० प्र० १६१ आ। ग्रन्थिपिहितम्। बृ०प्र० ८३ आ। आव० ८४५। गुल्मविशेष। प्रज्ञा० ३२। ग्रन्थि पर्व, सामान्यतो भङ्गस्थान वा। प्रज्ञा० ३६।

गंड–वराङ्ग। जीवा० २१३। पिण्ड० १५४। पुरस्सर। प्रज्ञा० २५४। जीवा० २८२। काण्ड–समूह, गण्डो वा दण्ड। ज्ञाता० १२५। गडु। उत्त० ३३८। गण्ड–कपोल। भग० १७४। गडमाला। नि० चू० प्र० १८६ अ। व्रणविशेष। सूत्र० ६८। गण्ड–अपद्रव्यम्। सूत्र० १४८। वातपित्तश्लेष्मसन्निपातज चतुर्द्धा गण्ड तदस्यास्तीति गण्डी–गण्डमालावान्। प्रश्न० १६१। गोलम्। ज० प्र० ४२३। व्याधिविशेष। आव० ६२३। गण्डम्। आव० ८२०। गण्ड–हस्त। भग० ३१३। स्तना। नि० चू० प्र० १८० अ। कपोल। आचा० ३८। प्रज्ञा० ८८। गण्ड–कपोलैकदेश। प्रज्ञा० १०१। अमिलनचामरदण्ड। भग० ४८०। गण्ड–गण्डीपदश्चतुष्पदविशेष। जीवा० ३८। कपोल। जीवा० १६२। वारग। ज० प्र० ५७। स्तन–कुच। पिण्ड० १२२। नि० चू० प्र० १२८ आ।

गडइया–गण्डिका–नदीविशेष। आव० २१४।

गंडओ–मरुक। आव० ३७२। दंडपती। नि० चू० प्र० १५८ आ। गण्डक–नापित। उद्घोपणाकारक।

ओघ० २०२ ।

गडग–गडक–श्रवणे दृष्टान्त । ग्रहणकाले प्राप्ते दृष्टान्त । आव० ७४५ ।

गडथणी–उण्णयथणी । नि० चू० द्वि० ९४ अ ।

गडभाग–कपोलदेश । जीवा० २७३ ।

गडमाणिया–गण्डयुक्ता माणिका । राज० १४१ ।

गडय–वनजीवा । मर० ।

गडरेहा–गण्डरेखा–कपोलपाली । ज०प्र० ११५ । प्रश्न० ८४ ।

गडलेतोकाउ–खण्डीकृत्य । उत्त० २१९ ।

गडलेहा–गण्डलेखा–कपोलपाली । जीवा० २७६ । कपोलपत्रवल्ली । औप० १३ । कपोलविरचितमृगमदादिरेखा । ज्ञाता० १३ ।

गडवच्छासु–गण्ड–गडु, इह चोपचितपिशितपिण्डरूपतया गलत्पूतिरुधिरार्द्रतासम्भवाच्च तदुपमत्वाद्गण्डे कुचावुक्तौ ते वक्षसि यासा तास्तथाभूतास्तासु । उत्त० २९७ ।

गडवाणिया–गण्डपाणिका–वशमयभाजनविशेष एव यो गण्डेन–हस्तेन गृह्यते डल्लातो लघुतर । भग० ३१३ ।

गडविव्वोयणे–सुपरिकर्मितगण्डोपधानम् । भग० ५४० ।

गडशैल–ग्रावाण । नदी० १५३ ।

गडसेल–गण्डशैल–उपल । उत्त० ६८९ ।

गडा–गण्डीपदविशेष । प्रज्ञा० ४५ ।

गडाग–गण्डको–नापित । आचा० ३२७ ।

गडाति–रोगविशेष । नि० चू० प्र० १८८ आ ।

गडिआ–गण्डिका–सुवर्णकाराणामधिकरणी (अहिगरणी) स्थापनी । दश० २१८ ।

गडिक–गडिकानुयोग–यस्तु कुलकरादिवक्तव्यता गोचर स गण्डिकानुयोग । ठाणा० २०० ।

गडिया–गण्डिका–खण्डविशेष । भग० ७०५ । एकवक्तव्यतार्थाधिकारानुगता वाक्यपद्धतय गण्डिका । सम० १३२ । एकार्थाधिकारा ग्रन्थपद्धति । नदी० २४२ । सुवण्णगारस्स भवइ, जत्थसुवण्णग कुट्टेइ । द० चू० १११ ।

गडियाणुयोगे–इक्ष्वादीना पूर्वापरपरिच्छिन्नो मध्यभागो गण्डिका गण्डिकेव गण्डिका–एकार्थाधिकारा ग्रन्थपद्धति, तस्या अनुयोगो गण्डिकानुयोग । नदी० २४२ । भरतनरपतिवशजाना निर्वाणगमनानुत्तरविमानवक्तव्यता व्याख्यानग्रन्थ । ठाणा० ४९१ ।

गडी–गण्डी–गण्डमालावान् । प्रश्न० १६१ । अहिकरणविशेष । नि० चू० प्र० २२ अ । वातपित्तश्लेष्मसन्निपातज चतुर्द्धा गण्ड, तदस्यास्तीति गण्डी । आचा० २३४ । गण्डमस्यास्तीति गण्डी गण्डमालादि । नि० चू० द्वि० १४८ अ । गण्डमस्यास्तीति गण्डी गण्डमालावान् । आचा० २३३ । गण्डमस्यास्तीति गण्डी । यदिवोच्छूनगुल्फपाद स गण्डी । आचा० ३८९ । सुवर्णकारादीनामधिकरणी गण्डिका तद्वत्पदानि येषा ते तथा ते हस्त्यादय । ठाणा० २७३ । नि० चू० प्र० १८१ अ । पञ्चपुस्तके प्रथम । ठाणा० २३३ । पद्मकर्णिका । उत्त० ६९९ । तुल्यबाहल्यपृथक्त्व पुस्तकम् । वृ० द्वि० २१९ आ । गण्डीपुस्तक । यद् बाहल्यपृथक्त्वैस्तुल्य दीर्घम् । आव० ६५२ । । गच्छति–प्रेरिन प्रतिपयादिता डीयते च कूर्दमानो विहायो गमनेनेति गण्डि । दुष्टाश्वो दुष्टगोणो वा । उत्त० ४९ ।

गडीतेंदुगो–गण्डीतिन्दुक–वाणारस्या तिन्दुकयक्षायतने यक्ष । उत्त० ३५६ ।

गंडीपद–व्याधिविशेष । आचा० ३९० । चतुष्पदभेद । सम० १३५ ।

गडीपदा–गण्डीव–सुवर्णकाराधिकरणीस्थानमिव पद येषा ते गण्डीपदा–हस्त्यादय । प्रज्ञा० ४५ ।

गडीपया–गण्डीपदा हस्त्यादिका । जीवा० ३८ । गण्डी पद्मकर्णिका तद्वृत्ततया पदानि येषा ते गण्डीपादा–गजादय । उत्त० ६९९ ।

गडीपोत्थगो–दीहो बाहल्लपुहत्तेण तुल्लो चउरसो गडीपोत्थगो । नि० चू० द्वि० ६० आ ।

गडीव–सुवर्णकाराधिकरणीस्थानामिव । प्रज्ञा० ४५ ।

गडुवहाण–गण्डोपधानम् । अप्रतिलेखितदूष्यपञ्चके तृतीयो भेद । आव० ६५२ । गण्डोपधानम् । ठाणा० २३४ ।

गडुवहाणिगा–उवहाणगस्सोवरिगडपदेसे जा दिज्जति सा गडुवहाणिगा । नि० चू० द्वि० ६१ अ ।

गड्डुक–पुष्पलम्बूसक । जीवा० २५३ ।

दीना च युक्तयो गन्धयुक्तय । उत्त० ३० ।

गधट्टए–गन्धाट्टक –गन्धद्रव्यक्षोद । ठाणा० ११७ । गन्धद्रव्याणामुपलकुष्ठादीना 'अड्डो' त्ति चूर्णं गोधूमचूर्णं वा गन्धयुक्तम् । उपा० ३ ।

गधणा–गन्धना–अमानी सर्प । सर्पजातिविशेष । दश० ३७ । गन्धना–सर्पजातिविशेष । उत्त० ४६५ ।

गधद्धणि– गन्धघ्राणि – यावद्भिर्गन्धपुद्गलैर्घ्राणेन्द्रियस्य तृप्तिरुपजायते तावती पुद्गलसहतिरुपचाराद् गन्धघ्राणि । ज० प्र० ३० । गन्धस्तेन या घ्राणि –तृप्ति गन्धघ्राणि –गन्धोत्कर्ष । ज्ञाता० २६ । सुरभिगन्धगुण तृप्तिहेतु । ज्ञाता० १२६ । यावद्भिर्गन्धपुद्गलैर्गन्धविषये गन्धघ्राणिरुपजायते तावती गन्धपुद्गलसहतिरुपचारात् गन्धघ्राणिरित्युच्यते । राज० ७ । यावद्भिर्गन्धपुद्गलैर्गन्धविषये घ्राणिरुपजायते तावती गन्धपुद्गलसहतिरुपचाराद् गन्धघ्राणि । जीवा० १८६ ।

गधपलिआम–गधाम–गधपलिआम अवय आदिसद्दातो मातुलुग वा पक्क अण्णेसि आमयाण मज्झे छुब्भति तस्स गधेण ते अण्णे आमया पच्चति ज तत्थ ण पच्चति त गधाम भण्णति नि० चू० द्वि० १२५ आ । यदपक्वफल तत् गधपर्याम । बृ० प्र० १४३ आ ।

गधपुडियाइ–गन्धपुटिकादि । आव० ११८ ।

गधपुलाग–विकटपलाण्डुलसुणादिन्युत्कटगन्धि । बृ० तृ० २११ अ ।

गधप्पिओ–गन्धप्रिय घ्राणेन्द्रियदृष्टान्ते कुमारविशेष । आव० ४०१ । नि० चू० प्र० ११७ अ ।

गधमादण–गन्धमादन –गजदन्तकगिरिविशेष । प्रश्न० ११६ । पर्वतविशेष । ठाणा० ६८, ३२६ ।

गधमायण–पर्वतविशेष । प्रश्न० १६१ । ठाणा० ७१ । गन्धेन स्वय माद्यतीव मदयति वा तन्निवासिदेवदेवीना मनासि इति गन्धमादन । ज० प्र० ३१५ । गन्धमादन – वक्षस्कारगिरि । ज० प्र० ३१२ । गन्धमादन वक्षस्कारपर्वतविशेष । जीवा० २६३ ।

गधमायणकूडे–गन्धमादनकूटम् । ज० प्र० ३१३ ।

गधमायणा–गजदन्तविशेष । ठाणा० ८० ।

गधर्वकण्ठ–गन्धर्वकण्ठप्रमाणो रत्नविशेष । जीवा० २३४ ।

गधर्वानीक–सैन्यविशेष । जीवा० २१७ ।

गधवट्टए–गन्धचूर्णम् । विपा० ८६ ।

गधवट्टओ–गन्धवर्त्तक । आव० १२३ ।

गधवट्टय–गन्धवर्त्तक–गन्धद्रव्यचूर्णपिण्डम् । ज० प्र० ३६४ ।

गंधवट्टि–गन्धवर्त्ति –गन्धद्रव्याणा गन्धयुक्तिशास्त्रोपदेशेन निर्वर्त्तितगुटिका । सम० १३८ ।

गधवट्टिभूए–गन्धवर्त्तिभूत–सौरभ्यातिशयाद गन्धद्रव्यगुटिकाकल्पम् । औप० ५ ।

गधवट्टिभूया–गन्धवर्त्तिभूतानि–सौरभ्यातिशयाद् गन्धद्रव्यगुटिकाकल्पानि । प्रज्ञा० ८७ । सौरभ्यातिशयाद् गन्धद्रव्यगुटिकाकल्पा । ज० प्र० ५१ ।

गधवत्तिभूए–गन्धवर्त्तिभूत –सौरभ्यवर्त्तिभूत । जीवा० २०६ ।

गधवासा–गन्धवर्ष –कोष्ठपुटपाकवर्षणम् । भग० २०० ।

गधवुट्ठी–गन्धवृष्टि –कोष्ठपुटपाकवृष्टि । भग० १९९ ।

गधव्व–गन्धर्वं नाट्यादि । जीवा० १९४ । गन्धर्वं–नृत्य गीतयुक्तम् । विपा० ४५ । गान्धर्व–गीतम् । आव० ५६५ । गान्धर्वं नगरविकुर्वणम् । आव० ७३५ । गन्धर्वं–मुरजादिध्वनिसनाथ गानम् । भग० ३२३ । गन्धर्वं का गान्धर्वं नाट्यादि । ज० प्र० ३९ । पदस्वरतालावधानात्मकम् । ज० प्र० ३९ । गन्धर्व – गन्धर्वजातीयो देव । प्रज्ञा० ९६ । जीवा० १७२ । एकविंशतितमो मुहूर्त्त । ज० प्र० ४९१ । सूर्य० १४६ । गान्धर्व –विवाहविशेष । आव० १७४ ।

गंधव्वगणो–गन्धर्वगण –गन्धर्वसमुदाय । प्रज्ञा० ९६ ।

गंधव्वघरगं–गन्धर्वगृहक–गीतनृत्याभ्यासयोग्य गृहकम् । जीवा० २०० ।

गधव्वघरगा–गीतनृत्याभ्यासयोग्यानि गृहकाणि । ज० प्र० ४५ ।

गधव्वछाया–गन्धर्वछाया । प्रज्ञा० ३२७ ।

गधव्वणगर–गन्धर्वनगर–सुरसदनप्रासादोपशोभितनगराकारतया तथाविधनभ परिणतपुद्गलराशिरूपम् । जीवा० २८३ । अनु० १२१ ।

गंडूपद –पृथिव्याश्रितो जीवविशेष । आचा० ५५ ।
गंडूयलगा–द्वीन्द्रियजन्तुविशेष । प्रज्ञा० ४१ । जीवा० ३१ ।
गंडूलया–अलसा । प्रश्न० २४ ।
गंडोवहाणं–गण्डोपधानं–गलमसूरिका । बृ० द्वि० २२० अ ।
गंडोवहाणियाओ–गण्डोपधानिका –गल्लमसूरिकाणि । ज० प्र० २८५ ।
गंत–गत्वा । उत्त० ५९७ । भग० ९३ ।
गंतव्व–गन्तव्य युगमात्रभून्यस्तदृष्टिनेत्यर्थ । ज्ञाता० ६१ ।
गंतुंपच्चागता–उपाश्रयान्निर्गत सन्नेकस्या गृहपङ्क्तौ भिक्षमाण क्षेत्रपर्यन्त गत्वा प्रत्यागच्छन् पुन द्वितीयायां गृहपङ्क्तौ यस्या भिक्षते सा गत्वा प्रत्यागता, गत्वा प्रत्यागत यस्यामिति च । ठाणा० ३६५ । नि० चू० तृ० १२ अ ।
गंतुकामं–योज्यमानम् । बृ० प्र० ७९ आ ।
गंतुकामा–गन्तुकाम य सदैव गन्तुमना व्यवतिष्ठते । आव० १०० ।
गंत्रिका–पुण्यविशेष । आचा० ६० ।
गंत्रीढञ्चनकं–इङ्कुरम् । भग० ३१३ ।
गथ–ग्रन्थ ज्ञानादि । ठाणा० ४६५ । परिग्रहम् । बृ० प्र० १३५ अ । ग्रथ्यते–वध्यते कपायवशगेनात्मनेति ग्रन्थ । अथवा ग्रथ्नाति–ग्रन्थात्यात्मान कर्मणेति ग्रन्थ । उत्त० २६० । विप्रकीर्णार्थग्रन्थनाद् ग्रन्थ । अनु० ३८ । ग्रन्थ –अष्टप्रकारकर्मवन्ध । आचा० ३८ । सूत्रकृताङ्गस्य प्रथमश्रुतस्कन्धे चतुर्दशमध्ययनम् । सम० ३१ । आव० ६५१ । ग्रन्थ –शालकादिसम्बद्धस्तद्भार्या तत्पुत्रादि । प्रश्न० १४० । ग्रन्थ –ग्रथ्यतेऽनेनास्मादस्मिन्निति वाऽर्थ इति ग्रन्थ । आव० ८६ । ग्रन्थ –सूत्रकृताङ्गस्य चतुर्दशमध्ययनम् । उत्त० ६१४ । ग्रथ्यते–विरच्यत इति ग्रन्थ । विशेषा० ५९१ । द्रव्यभावभेदभिन्न । इह तु ग्रन्थ द्रव्यभावभेदभिन्न य परित्यजति शिष्य आचारादिक वा ग्रन्थ योऽधीतेऽसो अभिधीयते । आदानपदाद् गुणनिष्पन्नत्वाच्च ग्रन्थ । सूत्र० २४१ । ग्रन्थ श्रुतस्य पर्याय । विशे० ४२३ ।
गंथभेदगो– । नि० चू० द्वि० ३८ आ ।
गंथा–ग्रन्थात्–महतो द्रव्यव्ययात् । आचा० २७२ ।
गथिअसत्ता–ग्रन्थिकसत्त्वा –अभिन्नग्रन्थय । उत्त० ७१३ ।
गंथिभेयग–ग्रन्थिभेदका –न्यासकान्यथाकारिण घुर्घुरकादिना वा ये ग्रन्थीन् छिन्दन्ति । ज्ञाता० २३९ ।
गंथिम–ग्रन्थ –सन्दर्भ सूत्रेण ग्रन्थन तेन निर्वृत्त ग्रन्थिम मालादि । ठाणा० २८६ । ग्रन्थिम–ग्रन्थननिर्वृत्त सूत्रग्रथितमालादि । भग० ४७७ । कौशलातिशयाद् ग्रन्थिसमुदायनिष्पादित रूपकम् । अनु० १३ । ग्रन्थन–ग्रन्थस्तेन निर्वृत्त ग्रन्थिमम् । जीवा० २५३ । यत्सूत्रेण ग्रथितम् । जीवा० २६७ । ज्ञाता० १८० ।
गथी–ग्रन्थि –या दवरकस्यादौ वध्यते । जीवा० २३७ ।
गंथेहिं–ग्रन्थै –अज्ञानकप्रविष्टै. । आचा० २६१ ।
गंधंगं–गन्धाङ्गम् । उत्त० १४२ ।
गध–गन्ध –विशोधिकोटिरूप । सूत्र० १४५ । गन्ध –कोष्ठपुटादिलक्षण । आव० १२९ । गन्ध वासादि । ज० प्र० ४११ । गन्ध –गन्धाङ्गम् । जीवा० १३६ । गन्ध –गन्धवासादि । जीवा० २४४ । वास । जीवा० २४५ । गन्ध –पटवासादि. । पिण्ड० ९६ । आमोद । उत्त० ३६६ । गन्ध्यते–आघ्रायत इति गन्ध । अनु० ११० । गन्धा –वासा । ज० प्र० १९१ । विशुद्धकोटि । बृ० प्र० ५१ अ । नासिकेन्द्रियम् । गन्ध्यते–आघ्रायते शुभोऽशुभो वा गन्धोऽनेनेति गन्ध । प्रज्ञा० ५९९ । गन्ध –कोष्ठपुटपाक । भग० २०० । कोष्ठपुटादि । दश० ९१ ।
गधकासाइ–गन्धकापायी । आव० १२३ ।
गधकासाइआ–गन्धकापायिकी–सुरभिगन्धकपायद्रव्यपरिकर्मिता लघुशाटिका । ज० प्र० २७५, ४२० ।
गंधकासाइए–गन्धप्रधानया कपायरक्तया शाटिकयेत्यर्थ । भग० ४७७ ।
गंधकासाई–गन्धप्रधाना कपायेण रक्ता शाटिका गन्धकपायी । उपा० ४ ।
गंधगृहणेन–पूतिर्गृह्यते । आचा० १३१ ।
गंधचंगेरी–भाजनविशेष । जीवा० २३४ ।
गंधजुत्ती–गन्धाना–गन्धद्रव्याणा श्रीखण्डादीना श्लक्ष्णा-

दीना च युक्तयो गन्धयुक्तय । उत्त० ३० ।

गधट्टए–गन्धाट्टक –गन्धद्रव्यक्षोद । ठाणा० ११७ । गन्ध–द्रव्याणामुपलकुष्ठादीना 'अइओ' त्ति चूर्णं गोधूमचूर्णं वा गन्धयुक्तम् । उपा० ३ ।

गधणा–गन्धना–अमानी सर्पं । सर्पजातिविशेष । दश० ३७ । गन्धना–सर्पजातिविशेष । उत्त० ४६५ ।

गधद्धणि– गन्धघ्राणि – यावद्भिर्गन्धपुद्गलैर्घ्राणेन्द्रियस्य तृप्तिरूपजायते तावती पुद्गलसहतिरुपचाराद् गन्ध-घ्राणि । ज० प्र० ३० । गन्धस्तेन या घ्राणि –तृप्ति गन्धघ्राणि –गन्धोत्कर्ष । ज्ञाता० २६ । सुरभिगन्धगुण तृप्तिहेतु । ज्ञाता० १२६ । यावद्भिर्गन्धपुद्गलैर्गन्धविषये गन्धघ्राणिरुपजायते तावती गन्धपुद्गलसहतिरुपचारात् गन्धघ्राणिरित्युच्यते । राज० ७ । यावद्भिर्गन्धपुद्गलै-र्गन्धविषये घ्राणिरुपजायते तावती गन्धपुद्गलसहति-रुपचाराद् गन्धघ्राणि । जीवा० १८९ ।

गधपलिआम–गधाम–गधपलिआम अवय आदिसद्दातो मातुलुग वा पक्क अण्णेसि आमयाण मज्झे छुब्भति तस्स गधेण ते अण्णे आमया पच्चति ज तत्थ ण पच्चति त गधाम भण्णति नि० चू० द्वि० १२५ आ । यदपक्वफल तत् गधपर्यायाम । बृ० प्र० १४३ आ ।

गधपुडियाइ–गन्धपुटिकादि । आव० १९८ ।

गधपुलाग–विकटपलाडुलसुणादिन्युत्कटगन्धि । बृ० तृ० २११ अ ।

गधप्पिओ–गन्धप्रिय घ्राणेन्द्रियदृष्टान्ते कुमारविशेष । आव० ४०१ । नि० चू० प्र० ११७ अ ।

गधमादण–गन्धमादन –गजदन्तकगिरिविशेष । प्रश्न० ११६ । पर्वतविशेष । ठाणा० ६८, ३२६ ।

गधमायण–पर्वतविशेष । प्रश्न० १६१ । ठाणा० ७१ । गन्धेन स्वय माद्यतीव मदयति वा तन्निवासिदेवदेवीना मनासि इति गन्धमादन । ज० प्र० ३१५ । गन्धमादन –वक्षस्कारगिरि । ज० प्र० ३१२ । गन्धमादन वक्ष-स्कारपर्वतविशेष । जीवा० २९३ ।

गधमायणकूडे–गन्धमादनकूटम् । ज० प्र० ३१३ ।

गधसायणा–गजदन्तविशेष । ठाणा० ८० ।

गधर्वकण्ठ –गन्धर्वकण्ठप्रमाणो रत्नविशेष । जीवा० २३४ ।

गधर्वानीक–सैन्यविशेष । जीवा० २१७ ।

गधवट्टए–गन्धचूर्णम् । विपा० ८६ ।

गधवट्टओ–गन्धवर्त्तक । आव० १२३ ।

गंधवट्टयं–गन्धवर्त्तक–गन्धद्रव्यचूर्णपिण्डम् । ज० प्र० ३९४ ।

गधवट्टि–गन्धवर्त्ति –गन्धद्रव्याणा गन्धयुक्तिशास्त्रोपदेशेन निर्वर्तितगुटिका । सम० १३८ ।

गधवट्टिभूए–गन्धवर्त्तिभूत–सौरभ्यातिशयाद् गन्धद्रव्यगु-टिकाकल्पम् । औप० ५ ।

गधवट्टिभूया–गन्धवर्त्तिभूतानि–सौरभ्या तिशयाद् गन्धद्रव्य-गुटिकाकल्पानि । प्रज्ञा० ८७ । सौरभ्यातिशयाद् गन्ध-द्रव्यगुटिकाकल्पा । ज० प्र० ५१ ।

गधवत्तिभूए–गन्धवर्त्तिभूत –सौरभ्यवर्त्तिभूत । जीवा० २०६ ।

गधवासा–गन्धवर्ष –कोष्ठपुटपाकवर्षणम् । भग० २०० ।

गंधवुट्ठी–गन्धवृष्टि –कोष्ठपुटपाकवृष्टि । भग० १९९ ।

गधव्व–गन्धर्व्व नाट्यादि । जीवा० १९४ । गन्धर्वं–नृत्य गीतयुक्तम् । विपा० ४५ । गान्धर्वं–गीतम् । आव० ५६५ । गान्धर्व्वं नगरविकुर्वणम् । आव० ७३५ । गन्धर्वं–मुरजादिध्वनिसनाथ गानम् । भग० ३२३ । गन्धर्वं कृत गान्धर्वं नाट्यादि । ज० प्र० ३९ । पद-स्वरतालावधानात्मकम् । ज० प्र० ३९ । गन्धर्व – गन्धर्वजातीयो देव । प्रज्ञा० ९६ । जीवा० १७२ । एकविंशतितमो मुहूर्त्त । ज० प्र० ४९१ । सूर्य० १४६ । गान्धर्वं –विवाहविशेष । आव० १७४ ।

गंधव्वगणो–गन्धर्वगण –गन्धर्वसमुदाय । प्रज्ञा० ९६ ।

गधव्वघरगं–गन्धर्वगृहक–गीतनृत्याभ्यासयोग्य गृहकम् । जीवा० २०० ।

गधव्वघरगा–गीतनृत्याभ्यासयोग्यानि गृहकाणि । ज० प्र० ४५ ।

गधव्वछाया–गन्धर्वछाया । प्रज्ञा० ३२७ ।

गधव्वणगर–गन्धर्वनगर–सुरसदनप्रासादोपशोभितनगरा-कारतया तथाविधनभ परिणतपुद्गलराशिरूपम् । जीवा० २८३ । अनु० १२१ ।

गंधव्वणागदत्तो-गन्धर्वनागदत्त -कषायप्रतिक्रमणोदाहरणे गान्धर्वप्रिय श्रेष्ठिपुत्र । आव० ५६५ ।

गंधव्वनगर-गन्धर्वनगर-आकाशे व्यन्तरकृत नगराकार-प्रतिबिम्बम् । भग० १९६ ।

गंधव्वनयर-गन्धर्वनगर-यत् चक्रवर्त्यादिनगरस्योत्पात-सूचनाय सध्यासमये तस्य नगरस्योपरि द्वितीय नगर प्राकाराट्टलकादिसंस्थित दृश्यते । व्य० द्वि० २४१ अ ।

गंधव्वपन्नगो-गन्धर्वप्रज्ञक । आव० १४४ ।

गंधव्वलिवी-लिपिविशेष । प्रज्ञा० ५६ ।

गंधव्वसमय-गन्धर्वसमय -नाट्यसमय । जीवा० २६६ । ज० प्र० १०१ ।

गंधव्वा-नाट्जातिविशेष । ज० प्र० १९३ । वाणव्यन्तर-भेदविशेष । प्रज्ञा० ६९ ।

गंधव्विया-गान्धर्विका -सङ्गीतकलानिपुण । दश० ४४, ४५ ।

गंधसमिद्धो-गन्धसमृद्ध -गन्धिलावत्या वैताढ्यपर्वते गान्धारजनपदे नगरविशेष । आव० ११६ ।

गंधसमुग्गय-गन्धद्रव्यैरतिविशिष्टै परिपूर्णं भृत समुद्गक गन्धसमुद्गक । प्रज्ञा० ६०० ।

गंधसमुद्धं-विद्यामन्त्रद्वारविवरणे धनदेवनगरम् । पिण्ड० १४१ ।

गंधसय-गन्धशत-गन्धाङ्गशतम् । जीवा० १३५ ।

गंधहत्थी-गन्धहस्ती-हस्तीविशेष । भग० ७ । अनुयोगप्रकाण्ड । व्य० प्र० २५८ ।

गंधहस्ती-आचार्यविशेष । आचा० १ ।

गंधहारग-गन्धहारक -चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेष । प्रश्न० १४ ।

गंधागं-वालकप्रियङ्गुपत्रकदमनकत्वक्चन्दनोशीरदेवदार्वादि । आचा० ६१ । जातिकुसुमादिद्रव्य । आचा० ४१८ ।

गंधा-म्लेच्छविशेष । प्रज्ञा० ५५ । गधयुक्तीकृता गधा । नि० चू० प्र० १४४ आ ।

गंधापाति-नवमकूट । ठाणा० ७२ ।

गंधावाती-गन्धापाती । ठाणा० ७१ ।

गंधारं-गान्धार-जनपदविशेष । उत्त० २९९, ३०४ । गान्धार -द्रव्यव्युत्सर्गे देशविशेष । आव० ७१६, ७२० । गन्धो विद्यते यत्र स एव गन्धारो, गन्धवाहविशेष । ठाणा० ३९३ । गान्धार गन्धो विद्यते यस्य स गन्धार, स एव गान्धार-गन्धवाहविशेष । अनु० १२७ । वीतभयनगरे श्रावक । उत्त० ९६ । जनपदविशेष । नि० चू० प्र० ३४८ आ ।

गंधारओ-श्रावकविशेष । आव० २९८ ।

गंधारगाम-सप्तस्वरे तृतीय स्वर, सगीते ग्रामविशेष । ठाणा० ३९३ ।

गंधारजणवए-गान्धारजनपद -गन्धिलावत्या जनपदविशेष । आव० ११६ ।

गंधारी-गान्धारी-बलकोट्टलघुभार्या । उत्त० ३५४ । अन्तकृद्दशाना पञ्चमवर्गस्य तृतीयमध्ययनम् । अन्त० । १५ । कृष्णवासुदेवस्य राज्ञी । अन्त० १८ । चत्वारिमहाविद्याया द्वितीया । आव० १४४ ।

गंधावई-गन्धापाती, वृत्तवैताढ्यम् । ज० प्र० ३७९ । गन्धापाती वृत्तवैताढ्य हरिवर्षस्य पर्वत । जीवा० ३२९ ।

गंधिए-गधिका -गन्धावासा । भग० ४७७ ।

गंधिला-विजयविशेष । ठाणा० ८० ।

गंधिलाइ-गन्धिलावत्या -शीतोदोत्तरकूलवर्तिनोऽष्टमविजय । ज० प्र० ३१४ ।

गंधिलावई-गन्धिलावती विजय । ज० प्र० ३५७ ।

गंधिलावईकूडे-गन्धिलावतीकूटम् । ज० प्र० ३१३ ।

गंधिलावती-धातकीखण्डे विजयविशेष । ठाणा० ८० ।

गंधिलावतीविजए-गन्धिलावतीविजय । आव० ११६ ।

गंधिले-गन्धिलो विजय । ज० प्र० ३५७ ।

गंधोदय-गन्ध -आमोदस्तत्प्रधानमुदक-जल गन्धोदकम् । उत्त० ३६९ । गन्धोदक-कुङ्कुमादिमिश्रितम् । ज० प्र० ३९४ ।

गंधोवरए-गन्धापवरक । दश० ९१ ।

गभीर-गम्भीर -अन्तकृद्दशाना प्रथमवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम् । अन्त० १ । गम्भीर -परैरलब्धमध्यो निरुपमज्ञानवत्त्वेऽपि रह कृतपरदुश्चरितानामपरिस्राविस्वात् हर्षशोकादिकारणसद्भावेऽपि तद्विकारादर्शनाद्वा । ज० प्र० १४९ । अलब्धमध्यभाग । जीवा० १८८ । अलब्ध-

मध्यम् । ज्ञाता० २ । अतिमन्द्र । ज० प्र० ५२६ । अलक्ष्यदैन्यादिविकार । प्रश्न० १३३ । साणुणादि । नि० चू० प्र० १०६ अ । अलक्ष्यमाणान्तर्वृत्तित्वम् । प्रश्न० ७४ । चतुरिन्द्रियजन्तुविशेष । प्रज्ञा० ४२ । जीवा० ३२ । गाम्भीर्य –अलब्धमध्यात्मको गुण । उत्त० ३५३ । भग्नत्वादिदोपवर्जित, शेषजनेन च प्रायेणालक्षणीयमध्यभाग स्थान गम्भीरम् । व्य० प्र० ६२ अ । अलब्धमध्य । उत्त० ५५४ । अलब्धस्ताघम् । जीवा० १२३ । निपुणशिल्पिनिष्पादिततयाऽलब्धस्वरूपमध्यम् । जीवा० २६६ । मन्मथोद्दीपि । जीवा० २७६ । स्वरविशेष । नि० चू० प्र० २७८ अ । गम्भीर –खेदसह । आचा० ३ । अतीवोत्कट । जीवा० १०७ । प्रज्ञा० ८१ । गम्भीर–अप्रकाशम् । दश० १७५, २०४ । अवनतम् । ज्ञाता० १५ । गम्भीर –द्राक्षाचन्दनलताद्याच्छादितप्रदेश । विशे० १२६३ ।

गभीरमालिणी–अन्तरनदी, गम्भीर जल मलते–धारयतीति गम्भीरमालिनी । ज० प्र० ३५७ ।

गभीरमालिणीओ–नदीविशेष । ठाणा० ८० ।

गभीरलोमहरिसो–गम्भीर –अतीवोत्कटो रोमहर्षो-रोमोद्धर्षोभयवशाद् यस्मात् स गम्भीररोमहष । जीवा० १०७ ।

गंभीरविजय–गम्भीरविजय –गम्भीरमप्रकाश विजय –आश्रय । दश० २०४ ।

गभीरशब्द–गम्भीरशब्द मेघस्येव । सम० ६३ ।

गभीरसाणुणाए–गम्भीरसानुनाद –सामायिकदानस्य स्थानम् । आव० ४७० ।

गभीरा–अस्ताघा । नि० चू० प्र० ३३६ अ ।

गमुणिग–फलविशेष । नि० चू० द्वि० ११९ अ ।

गइद–गजेन्द्र । ज्ञाता० ६५ ।

गइ–गति –पदवी । आचा० २२४ । गत्यर्थाना ज्ञानार्थतया हिताहितलक्षणा स्वरूपपरिच्छित्ति । उत्त० ४७२ । गमन गति –देशान्तरप्राप्ति । उत्त० ५५६ । गतिरण्वादीना गमनपरिणाम । विशे० २६७ । गतिशब्देन-मनुष्यगतेर्जीवापगम । ज० प्र० १५४ । विहायोगतिनामोदयसम्पाद्या गतिरूपा । भग० ६४३ । गति –गतिनामकर्मोदयसम्पाद्यो जीवपर्याय । प्रश्न० ६८ । अनुकूल गमन गति । आव० २८१ ।

गइकाय–गतिकाय यो भवान्तरगतौ, स च तेजसकार्मणलक्षण । दश० १३४ । गतिकाय –नारकतिर्यङ्नरामरलक्षणा चतुर्विधा गतिमाश्रित्य काय । सर्वसत्त्वानामपान्तरालगतौ वा य काय । आव० ७६७ ।

गइचरमे–य पृच्छासमये सामर्थ्यान्मनुष्यगतिरूपे पर्याये वर्तमानोऽनन्तर न किमपि गतिपर्यायमवाप्स्यति किन्तु मुक्त एव भविता स गतिचरम । प्रज्ञा० २४५ ।

गइतसत्त–नामकर्मोदयाभिनिर्वृत्तगतिलाभाद् गतित्रसत्वम् । आचा० ६७ ।

गइप्पवाए–गते प्रपात गतिप्रपात । गतिशब्दप्रवृत्तिरुपनिपततीत्यर्थ । प्रज्ञा० ३२८ ।

गइप्पवाय–गति प्रोद्यते–प्ररूप्यते यत्र तद्गतिप्रवाद गतेर्वा प्रवृत्ते क्रियाया प्रपात –प्रपतनसम्भव प्रयोगादिष्वर्थेषु वर्त्तन गतिप्रपातस्तत्प्रतिपादकमध्ययन गतिप्रपात तत् । भग० ३८० ।

गइरइया–गतौ रति –आसक्ति प्रीतिर्येषान्ते गतिरतिका । सूर्य० २८१ ।

गइरतिया–गतौ रति –आसक्ति प्रीतिर्येषान्ते गतिरतिका । जीवा० ३४६ ।

गइरागइ–द्वयोर्द्वयो पदयोर्विशेषण विशेष्यतयाऽनुकूल गमन गति, प्रत्यावृत्त्या प्रातिकूल्येनागमनमागति । गतिश्चागतिश्च गत्यागती । आव० २८१ ।

गइलक्खण–गमन गति –देशान्तरप्राप्ति, लक्ष्यतेऽनेनेति लक्षण, गतिर्लक्षणमस्येति गतिलक्षण । उत्त० ५५६ ।

गइल्लएण–गतेन । बृ० प्र० २७ आ ।

गइसमावण्णे–गतिसमापन्न –गतियुक्त । सूर्य० १६७ ।

गई–तत्र गम्यते–नैरयिकादिगतिकर्मोदयवशादवाप्यते इति गति –नैरयिकत्वादिपर्यायपरिणति । प्रज्ञा० २८५ । गमन गति –प्राप्तिरिति । प्रज्ञा० ३२८ । गम्यते–तथाविधकर्मसचिवै प्राप्यते इति गति –नारकत्वादिपर्यायपरिणति । प्रज्ञा० ४६६ । तथापरिणामवृत्ति । दश० ७० । गति –प्रवृत्ति । विशे० २२०, २२२ । ठाणा० ४६४ । प्रज्ञापकस्थानापेक्षया मृत्वाऽन्यत्र गमनम् ।

ठाणा० १३३ ।
गए–गज –अन्तकृद्दशाना तृतीयवर्गस्याष्टममध्ययनम् । अन्त० ३ । गत –व्यवस्थित । जीवा० २४२ ।
गओ–गत –प्राप्तोऽन्तर्भूत इति यावत् । विशे० ३० । स्वस्थान प्राप्त । ज्ञाता० १६९ ।
गगणतल–गगनतल–अम्बरतलम् । सूर्य० २६४ ।
गगणवल्लभपामोक्खा–गगनवल्लभ प्रमुखा । ज०प्र० ७४ ।
गगणवल्लभो–गगनवल्लभ । आव० १४४ ।
गग्गर–गग्गरक –परिधानविशेष । ज० प्र० ५२९ ।
गग्गरगसिव्वणा– । नि० चू० प्र० १२७ अ ।
गग्गा–गौतमगोत्रस्य भेद । ठाणा० ३९० ।
गग्गे–गार्ग्य गर्गसगोत्र । उत्त० ५५० ।
गच्चागइ–गतिश्च गतिश्च गत्यागती । विशे० ८५५ ।
गच्छंति–धावन्ति । उत्त० ५०४ ।
गच्छ–गच्छ –एकाचार्यपरिवार । औप० ४५ ।
गच्छइ–गच्छति–स्वीकरोति । विशे० ९०६ ।
गच्छति–आरभते । प्रज्ञा० ६०१ । प्रवर्तते । उत्त० २४३ ।
गच्छपागट्ठित्तणं–गच्छप्रकर्पित्वम् । वृ० प्र० ११९ अ ।
गच्छागच्छि–एकाचार्यपरिवारो गच्छ । गच्छेन गच्छेन-भूत्वा गच्छागच्छी । औप० ४५ ।
गजचलनमलनं–अशुभकर्मफलविपाकविशेप । सम० १२६ ।
गजदन्तः–वनस्पतिविशेप । जीवा० १९१ । ज० प्र० ३१४ ।
गजसुकुमाल–सोमिलद्विजेन मारितो मुनिविशेष । विशे० ८४३ । अनु० १३७ । धरण्या क्षिप्तो मुनि । स० । गजसुकुमाल –कृष्णभ्राता । व्य० प्र० १८८ आ ।
गजानीक–सैन्यस्य भेद । जीवा० २१७ ।
गज्ज–गद्य–महुर हेउनिजुत्त गहियमपाय विरामसजुत्त, अपरिमिय चउत्रसाणे कव्व गज्जति नायव्व । दश० ८७ । गद्य–अच्छन्दो निबद्धम् । ठाणा० २८८ ।
गज्जइ–गर्जति–साक्षेप जल्पति । विशे० ६२७ ।
गज्जफलाणि–वस्त्रविशेप । आचा० ३९३ ।
गज्जभो–गर्जभ –अपरोत्तरोस्या वातविशेप । आव० ३८६ ।
गज्जला– । नि० चू० प्र० २५५ अ ।
गज्जहाणुकूलवाए–गर्जभानुकुलवात । आव० ३८७ ।
गज्जिते–गर्जित–जीमूतध्वनि । ठाणा० ४७६ ।
गज्जियाति–गर्जितानि–स्तनितानि । भग० १९५ ।
गज्जियकरणं–गर्जितकरणम् । आव० ७३५ ।
गट्ठिए–तद्गतस्नेहतन्तुभि सन्दर्भित । भग० २९२ ।
गड्ड–गण्डम् । उत्त० ३३८ ।
गडुल–आविल आकुल वा । ठाणा० २७८ । सम० ५३ ।
गड्ड–गर्त्त श्वभ्रम् । भग० ६८३ । गर्त्ता–नीचैरुत्खातितो भूमिभाग । भग० १७४ ।
गड्डरिका–ईति । राज० ६ ।
गड्डरिया–गड्डरिका ईतिविशेप । ज० प्र० २९ ।
गड्डा–गर्त्ता । वृ० द्वि० ९ अ । ओघ० २० । खड्डा । नि० चू० प्र० ९८ अ ।
गड्डाइ–गर्ता–महती खड्डा । ज० प्र० १२४ ।
गड्डाओ–गन्त्र्य । वृ० प्र० २८ अ ।
गड्डाहारा–क्षुद्राहारा । ज० प्र० १७१ ।
गड्डी–गन्त्री । ओघ० १४१ । आव० १०३ । भडी । नि० चू० प्र० १८७ अ । दुचक्क । ओघ० १४० ।
गढिए–ग्रथित आहारविपयस्नेहतन्तुभि सन्दर्भित । भग० ६५० । लोभतन्तुभि सन्दर्भित । ज्ञाता० ८५ ।
गढिते–मूर्छित । विपा० ३८ ।
गढियगिद्धो–ग्रथितगृद्ध –अत्यन्तगृद्धिमान् । प्रश्न० ३६ ।
गण–मूलभेदो । नि० चू० प्र० १५२ आ । गण –एक-समाचारजनसमूह । प्रश्न० ८६ । एकवाचनाचारक्रिया-स्थाना समुदाय सूत्र वा । आव० १३४ । गण –स्थविरसन्ततिसस्थिति । तत्त्वा०९–२४ । कुलसमुदाय । वृ० प्र० २६१ अ । ठाणा० २९९ । स्कन्धस्य पर्याय । विशे० ४१६, ४२६ । परिवार । ज० प्र० ३२३ । एकवाचनाचार्यतिसमुदाय । ज० प्र० १५३ । समु-दाय –निजज्ञाति । ज० प्र० १६७ । गण –समुदाय । आव० २४१ । कोटिकादि । दश० २४२ । शिष्य-वर्गम् । भग० २३२ ।

गणए-गणक-जोतिषिक भाण्डागारिको वा । औप० १४ ।

गणओ-गणशो-बहुशोऽनेकशो वा । सूत्र० ३८६ ।

गणका-गणितज्ञा भाण्डागारिका इति । ज्योतिषका इत्यपरे । राज० १२१ ।

गणग-गणका-गणितज्ञा भाण्डागारिका । भग० ४६४ । गणका-ज्योतिषिका भाण्डागारिका वा । भग० ३१८ । जं० प्र० १६० ।

गणचिंतगो-गणावच्छेदकादि । बृ० द्वि० २४० आ ।

गणट्ठकरे-गणस्य-साधुसमुदायस्यार्थान्-प्रयोजनानि करोतीति गणार्थकर-आहारदिभिरुपष्टम्भक । ठाणा० २४१ ।

गणण-गणन-एतावदधीतमेतावच्चाध्येतव्यमिति । आव० ६८ । पाठे स्मृतौ वा गणनम् । आव० ६८ ।

गणणग्ग-गणनाग्र-सख्या धर्म्मस्थानात् स्थान, दशगुणमित्यर्थ । आचा० ३१८ ।

गणणायग-गणनायका-प्रकृतिमहत्तरा । राज० १४० । गणनायका-मल्लादिगणमुख्या । जं० प्र० १६० । गणनायक-प्रकृतिमहत्तर । औप० १४ ।

गणणोवग-गणना कराङ्गुलिरेखास्पर्शनादिनैकद्वित्रिसख्यात्मिकामुपगच्छति-उपयाति गणनोपगम् । उत्त० ५४२ ।

गणति-गणयति-प्रेक्षते, आलोचयति वा । आव० ५३६ ।

गणथेरा-ये गणस्य लौकिकस्य लोकोत्तरस्य च व्यवस्थाकारिणस्तद्भङ्क्तुश्च निग्राहकास्ते गणस्थविरा । ठाणा० ५१६ ।

गणधम्म-मल्लादिगणव्यवस्था जैनाना वा कुलसमुदायो गण-कोटिकादिस्तद्धर्म्म-तत्सामाचारी गणधर्म्म । ठाणा० ५१६ । गणधर्म-मल्लादिगणव्यवस्था । दश० २२ ।

गणधर-जिनशिष्यविशेष, आर्यिकाप्रतिजागरक वा साधुविशेष । ठाणा० १४३ । जिनशिष्यविशेष आर्यिकाप्रतिजागरको वा साधुविशेष समयप्रसिद्ध । ठाणा० २४४ । अनुत्तरज्ञानदर्शनादिधर्मगण धारयतीति गणधर । दश० १० । आव० ६१ ।

गणधरता-लब्धिविशेष । ठाणा० ३३२ ।

गणधरदेवकृत-अङ्गप्रविष्ट मूलभूतमित्यर्थ । नदी० २०३ ।

गणनागुणे-द्विकादि । आचा० ८६ ।

गणनायग-गणनायका-प्रकृतिमहत्तरा । भग० ३१८, ४६३ ।

गणमूढो-जे गणे ता ऊण अहिय वा मन्नति सो । नि० चू० द्वि० ४१ आ ।

गणराजा-सेनापति । आव० ५१६ ।

गणराया-गणराजा-सामन्ता । भग० ३१७ । आचा० ३७७ । समुत्पन्ने प्रयोजने ये गण कुर्वन्ति ते गणप्रधाना राजानो गणराजा सामन्ता इत्यर्थ । भग० ३१७ । विशालीनगर्यां शङ्खाभिधो गणराज । आव० २१४ ।

गणसठिति-गणसस्थिति-स्वगच्छकृता मर्यादा । ठाणा० २४१ ।

गणसमया-गणसमता महत्तरादय । दश० १०३ ।

गणसोभकरे-गणस्यानवद्यसाधुसामाचारीप्रवर्त्तनेन वादिधर्मकथिनैमित्तिकविद्यासिद्धत्वादिना वा शोभाकरणशीलो गणशोभाकर । ठाणा० २४१ ।

गणसोहिकरे-गणस्य यथायोग प्रायश्चित्तदानादिना शोधिशुद्धि करोतीति गणशोधिकर । ठाणा० २४१ ।

गणहर-यस्त्वाचार्यदेशीयो गुर्वादेशात् साधुगण गृहीत्वा पृथग्विहरति स गणधर । आचा० ३५३ । गण-गणसमूह धारयति-आत्मन्यवस्थापयतीति गणधर । उत्त० ५५० । निर्ग्रन्थीवर्त्तापक । बृ० द्वि० २०३ आ । गणधर-सूत्रकर्त्ता । आव० ३१४ । गणधर-आचार्य । प्रज्ञा० ३२७ । आव० ६१ ।

गणहरा-गण-एकवाचनाचारयतिसमुदायस्त धरन्तीति गणधरा, वाचनादिभिर्ज्ञानादिसम्पदा सम्पादकत्वेन गणाधारभूता इति भाव । जं० प्र० १५४ । गणधरा-तन्नायका आचार्या भगवत सातिशयानन्तरशिष्या । ठाणा० ४३० ।

गणा-एकक्रियावाचनाना साधूना समुदाया । ठाणा० ४३०, ४५२ । निव्वूढपइन्ना जोगा । दश० चू० १५८ । समानवाचनाक्रिया साधुसमुदाया । सम० १४ ।

गणापु-रचाउ । नि० चू० प्र० १६ अ ।

गणाभिओगो–गणाभियोग । आव० ८११ ।

गणावच्छेइए–गणावच्छेदक –गच्छकार्यचिन्तक । आचा० ३५३ ।

गणावच्छेए–गणस्यावच्छेदो–देशोऽस्यास्तीति गणावच्छेदक । ठाणा० २४५ । प्रज्ञा० ३२७ ।

गणावच्छेदे–गणस्यावच्छेदो–विभागोऽ शोऽस्यास्तीति, यो हि गणाश गृहीत्वा गच्छोपष्टम्भायैवोपधिमार्गणादिनिमित्त विहरति स गणावच्छेदक । ठाणा० १४४ ।

गणावच्छेतितो–उवज्झाओ । नि० चू० प्र० २१२ अ ।

गणाहिवई–आर्यिकाणा गणधर । वृ० प्र० ३०६ अ ।

गणि–परिच्छेद । नदी० १६३ । गणाधिपति, आचार्य । ठाणा० १७२ । अर्थपरिच्छेद । औप० ३४ । गणिशब्द परिच्छेदवचन । सम० १०७ । प्रज्ञा० ३२७ । उवज्झाओ । नि० चू० प्र० ३११ आ ।

गणिअ–गणित–सङ्ख्यान, सङ्कलिताद्यनेकभेद पाटीप्रसिद्धम् । ज० प्र० १३७ । गणित, अङ्कविद्या । ज० प्र० १३६ ।

गणिआयरिओ–गणित्वमाचार्य्यत्व च यस्यास्त्यसौ । नि० चू० प्र० ३०० अ ।

गणिका–भावस्याप्रशस्ते दृष्टान्त । ठाणा० १५५ । वाराङ्गना । आव० ५५ ।

गणितं–विष्कम्भपादाभ्यस्त परिक्षेप । तत्त्वा ३-११ । सम० १३० ।

गणितपरिभाषया– । भग० ७४५ ।

गणितप्पहाणा–बावत्तरिकलासु प्रथमा कला ।ज्ञाता०३८ ।

गणितानुयोग –अर्हद्वचनानुयोगे द्वितीयभेद सूर्यप्रज्ञप्त्यादिक । आचा० १ । ठाणा० ४८१ ।

गणित्तिय–माला । आव० ४३३ ।

गणिपिडग–गणिन आचार्यस्य पिटकमिव पिटक गणिपिटकम् । सम० ५ । परिच्छेदसमूहो गणिपिटकम्, गुणाना गणोऽस्यास्तीति गणी–आचार्यस्तस्य पिटकमिव पिटक सर्वस्व भाजन गणिपिटकम् । सम० १०७ । गणिन –आचार्यास्तेपा पिटकमिव पिटक–सर्वस्वाऽऽधारो गणिपिटकम् । उत्त० ५१३ । द्वादशाङ्गी । आव० ५७ । गुणगणोऽस्यास्तीति आचार्यस्तस्य पिटक–सर्वस्व गणिपिटकम् । अनु० ३८ । परिच्छेदसमूह । नदी० १६३ । गणीना–अर्थपरिच्छेदाना पिटकमिव पिटक स्थान गणिपिटकम् । औप० ३४ । पिटकमिव वालञ्जकवाणिजकसर्वस्वाधारभाजनविशेष इव यत्तत्पिटक, गणिन आचार्यस्य पिटक गणिपिटक–प्रकीर्णकश्रुतादेशश्रुतनिर्युक्त्यादियुक्त जिनप्रवचनम् । औप० ३४ । गणिपिटक–आचार्यसर्वस्वम् । दश० १३ ।

गणिम–गणणाए गणिज्जति । नि० चू० प्र० ८६ आ । आव० १८६ । गणिम–गण्यते सख्यायते वस्त्वनेनेति, एकादि रूपकादि । अनु० १५१ ।

गणिय–गणित सङ्ख्यानम् । आव० १२८ । ज्ञाता० ३८ । जीवा० ३२५ । गणितविषये बीजगणितादौ पर पारमुपगत । आचा० ४१६ । गणित–सख्यान सङ्कलितादि अनेकभेद–प्राटीप्रसिद्धम् । सम० ८४ । एकादि । ठाणा० १६८ ।

गणियधम्मो–गणितधर्म -यद् बहु स्तोकेन गुण्यते । प्रज्ञा० २७५ ।

गणियपय–गणितपदमित्येवप्रकारस्य गणितस्य सञ्ज्ञा । भग० ४२६ ।

गणियलिवी–लिपिविशेष । प्रज्ञा० ५६ ।

गणियविसए–गणितविषय –गणितगोचर गणितप्रमेय । भग० २७६ ।

गणियसुहुमया–परिकम्मेसु गणियसुहुमया । नि० चू० तृ० ६७ आ ।

गणियसुहुमे–गणितसूक्ष्म–गणित सङ्कलनादि तदेव सूक्ष्म सूक्ष्मबुद्धिगम्यत्वात् । ठाणा० ४७८ ।

गणियाघरविहेडिओ–गणिकागृहविनिर्गत । आव०५७७ ।

गणियापाडग–गणिकापाटक–गणिकागृहविथि । दश० १०८ ।

गणियायारा–गणिकाकारा –समकाया । ज्ञाता० ६८ ।

गणिविज्जा–गणि–आचार्य तस्य विद्या–ज्ञानम्, सबालवृद्धो गच्छो–गण सोऽस्यास्तीति गणिविद्या । नदी० २०५ ।

गणिसपइ–गणिसम्पद –आचाराद्यष्टभेदभिन्ना, अष्टौ सम्पद । उत्त० ३८ ।

गणी–गच्छाधिप । आचा० ३५३ । गण–साधुसमुदायो यस्यास्ति स्वस्वामिसम्बन्धेनासौ गणी गणाचार्य –गणनायक । ठाणा० १४० । उवज्झातो अन्नो व गच्छे वुड्ढो । नि० चू० द्वि० ६३ आ । गणोऽस्यास्तीति गणी गणाचार्य । ठाणा० १४३, २४४ । गुणाना गणोऽस्यास्तीति गणी–आचार्य । सम० १०७ । आचार्य । अनु० ३८ । नंदी० १६३ । उपाध्याय । बृ० तृ० ६५ अ । बृ० द्वि० ३ अ । गणी–गणाधिपति । दश० २४२ । गणाचार्य । उत्त० १७ । आचार्य । आव० ५२ । अर्थपरिच्छेद । भग० ७११ । गणी–उपाध्याय । व्य० प्र० १७१ आ । गणी–गच्छाधिपति । व्य० प्र० १३७ अ । गणोऽस्यास्तीतिगणी–गणावच्छेदक । व्य० द्वि० २३ अ । वृषभ । व्य०द्वि० ३६७ आ । गणी–उपाध्याय । बृ०तृ० १७७ आ ।

गणेइ–गणयति हृच्या परिभावयति । पिण्ड० ७८ ।

गणेत्तिया–गणेत्रिका–कलाचिकाऽऽभरणविशेष । भग० ११३ । रुद्राक्षकृत कलाचिकाभरणम् । ज्ञाता० २२० । हस्ताभरणविशेष । औप० ६५ ।

गण्डक–लम्बूसक । राज० १०४ ।

गण्डकादि–शरीरोद्भवो व्रणविशेषादि । आव० ७६५ ।

गण्डलेखा–कपोलविरचितमृगमदादिरेखा । निरय० ४ ।

गत–व्यवस्थित । सूत्र० ३८९ । स्थित । विशे० २०७ । ज्ञानम् । आचा० १६७ ।

गतप्रत्यागतलक्षण– । आचा० ५३ ।

गतचर्ही–शुक्रमहाग्रहस्य द्वितीया विधि । ठाणा० ४६८ ।

गता–गदा । जीवा० ११७ ।

गतिचचल–चञ्चलस्य प्रथमो भेद । बृ० प्र०१२८ अ ।

गतिचपल–द्रुतचारी । उत्त० ३४६ ।

गतिनामनिहत्ताउए–गतिनरकगत्यादिभेदाच्चतुर्द्धा सैव नाम गतिनाम तेन सह निधत्तमायुर्गतिनामनिधत्तायु । प्रज्ञा० २१७ ।

गतिपरिणाम–अजीवपरिणामे द्वितीयो भेद । ठाणा० ४७५ ।

गतिपरियाए–चलन मृत्वा वा गत्यन्तरगमनलक्षण, यद्वा वैक्रियलब्धिमान् गर्भान्निर्गत्य प्रदेशतो बहि सङ्क्रामयति स वा गतिपर्याय । ठाणा० ६६ ।

गतिपरियाते–गतिपर्याय चलन जीवत एव । ठाणा० १३३ ।

गतिप्पहाण–प्रधानगति मुक्तिमिति । उत्त० ४६६ ।

गतिरतिया–गतौ रतिर्येषा ते गतिरतिका समयक्षेत्रवर्त्तिन । ठाणा० ५७ ।

गतिश्रङ्क्रमण–उपाश्रयान्तरे शरीरश्रमव्यपोहार्थमितस्तत सञ्चरणम् । सम० १०७ ।

गतिसमावन्नगा–गतिं–गमन समिति सन्ततमापन्नका प्राप्ता गतिसमापन्नका, अनुपरतगमना इत्यर्थ । ठाणा० ५८ ।

गती–गमन, गम्यत इति वा गति –क्षेत्रविशेष । गम्यते वा अनया कर्म्मपुद्गलसहत्येति गति –नामकर्मोत्तरप्रकृतिरूपा, तत्कृतवा वा जीवावस्था । ठाणा० ३४४ ।

गत्त–गात्र–अङ्गम् । प्रश्न० ६० । उर । ज्ञाता० ६६ । श्वभ्रम् । भग० ३०७ । गात्र–स्कन्धोरुपृष्ठादि । अनु० १७७ । देह । भग० ७०५ ।

गत्तगाइ–गात्राणि–ईषादीनि । राज० ६३ ।

गत्तपरिपुछण–गात्रपरिपुञ्छन–पुञ्छम् । ज०प्र० ५२६ ।

गत्ता–गर्त्ता–महती खड्डा । २८२ ।

गत्ताइ–गात्राणि–ईषादीनि । ज० प्र० २८५ ।

गत्ति–कृत्ति –चर्म । ओघ० ३४ ।

गदतियातो–गर्हित । नि० चू० द्वि० १९ अ ।

गद्दतोय–चन्द्राभविमानवासी पञ्चमो लोकान्तिकदेव । भग० २७१ । ठाणा० ४३२ । आव० १३८ ।

गद्दभा–एकखुरचतुष्पदविशेष । प्रज्ञा० ४५ ।

गद्दभालि–गर्दभालि –स्कन्दकचरिते श्रावस्तीनगर्यां स्कन्दकपरिव्राजकस्य गुरु । भग० ११२ । अनगारविशेष । उत्त० ४३९, ४४२ ।

गद्दभिया–गदभिका–शालिरत्नम् । आव० ४३५ ।

गद्दभो–यवराजस्य पुत्र । बृ० प्र० १६१ अ । गर्दभ–दृष्टान्तविशेष । ओघ० ८४ । एकखुरचतुष्पद । जीवा० ३८ ।

गद्दा–गर्त्ता । ज्ञाता० ६७ ।

गद्य–अच्छन्दोबद्ध शस्त्रपरिज्ञाध्ययनवत् । ज० प्र० ३५९ ।

गब्भ–गर्भ –उदरसत्त्व । ठाणा० ५२३ । गर्भ –हस-निर्वर्त्तित कोसिकाकार । अनु० ३४ । गर्भ सजीव-पुद्गलपिण्डक । भग० २१८ । गर्भो–मध्यभाग । ज० प्र० १८३ ।

गब्भगडडिया–रणपट्टगो । नि० चू० प्र० २४५ आ ।

गब्भगिह–गर्भगृह–गेहाकारद्रुमगणविशेष । जीवा० २६६ । उत्त० २१६ ।

गब्भघर–गर्भगृह–सर्वतो वर्तिगृहान्तर, अभ्यन्तरगृहम् । ज० प्र० १०६ ।

गब्भघरए–मोहनगृहस्य गर्भभूतानि वासभवनानीति । ज्ञाता० १२६ ।

गब्भघरगा–गर्भगृहकाणि–गभरगृहान्तराणि । जीवा०२००। ज० प्र० ४५ ।

गब्भट्ठमे वासे– । ज्ञाता० ३८ ।

गब्भमासो–गर्भमास । कार्तिकादिर्यावत् माघमास । व्य० २४० अ ।

गब्भया–मत्स्यविशेष । प्रज्ञा० ४४ ।

गब्भवक्कतिय–गर्भे–गर्भाशये व्युत्क्रान्ति –उत्पत्तिर्येषा ते गर्भव्युत्क्रान्तिका न सम्मूर्च्छिनजा इत्यर्थ । सम० १३५ ।

गब्भवक्कंतियमणुस्सा–गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्या । प्रज्ञा० ५० ।

गब्भवक्कतिया–गर्भे व्युत्क्रान्ति –उत्पत्तिर्येषा ते,अथवा गर्भात्–गर्भावासाद् व्युत्क्रान्ति –निष्क्रमण येषा ते गर्भ-व्युत्क्रान्तिका । जीवा० ३५ । प्रज्ञा० ४४ ।

गब्भवसही–गर्भवसति । आव० ३२५ ।

गब्भवासो–गर्भवास –मध्यभागविस्तार । प्रश्न० ६२ ।

गब्भसाडणा–गर्भशातना –गर्भस्य खण्डशो भवनेन पतन-हेतव । विपा० ४२ ।

गब्भसारो–गर्भसार । आव० ४१३ ।

गब्भाकरा–गर्भकरा गर्भाधानविधायिनी विद्या । सूत्र० ३१६ ।

गब्भिआ–गर्भिता–अनिर्गतशीर्षका । दश० २१६ ।

गब्भिजा–गर्भे भवा गर्भजा –नौमध्ये उच्चावचकर्मका-रिण । ज्ञाता० १३७ ।

गब्भिया–गर्भिता–जातगर्भा डोडक्तिा इत्यर्थ । ज्ञाता० ११६ । जासिण ताव सीसय । दश० चू० ११२ ।

गब्भिल्लगा– । ज्ञाता० २२८ ।

गब्भुद्देसो–गम्भोद्देशके–गब्भसूत्रोपलक्षितोद्देशके सप्तदश-पदस्य षष्ठे सूत्रम् । भग० ७६१ ।

गब्भो–गर्भ - गर्भावास । प्रज्ञा० ४४ ।

गम–सदृशपाठ कृत । ठाणा० १८३ । इहादिमव्याव-मानेषु किञ्चिद्विशेषतो भूयोभूयस्तस्यैव सूत्रस्योच्चारण गम । नदी० २०३ । अर्थगमा –अर्थपरिच्छेदा । नदी० २११ । प्रकार । विशे० ६३० । गम्यते अनेन वस्तुरूपमिति गम –प्ररूपणा । उत्त० २४० । प्रकार । वृ० प्र० १५२ आ । चतुर्विंशतिदण्डकादि, कारणवशतो वा किञ्चिद्विसदृश सूत्रमाग । आव० ५६६ । गमनम् । वृ० प्र० ७७ अ । गम –व्याख्या । भग० २४३ । वाचनाविशेष, पाठ । ज्ञाता० ३६ । ज० प्र० २६६ । गमा –तदक्षरोच्चारणप्रवणाभिन्नार्था । दश० ८८ । गमक –भङ्ग । ओघ० ३५ । गम –पाठ । ज० प्र० ३२८ । सदृशपाठ । ज० प्र० २१६ । योग । पिण्ड० १२४ । आगमो । नि० चू० प्र० २०२ अ । सदृश पाठ । भग० ४५ । गम्यतेऽनेनेति गम –पन्था । विशे० ८६६ ।

गमग–गमक –भङ्ग । ओघ० ३५ ।

गमण–अवधावनम् । वृ० द्वि० २१८ आ । गमनम्–आसेवनरूपतया प्रापणम् । आव० ८२३ । महिनादि-क्रमेण व्याख्यातु प्रवर्त्तनम् । उत्त० ११ । अन्यतोऽ-न्यत्र गमनम् । दश० १५५ । अभिगम, मैथुनासेव-ना वा । आव० ८२५ । मैथुनासेवनम् । उपा० ८ । वेदनम् । ठाणा० ३४८ । वर्त्तनम् । आचा० २६२ । भिक्षादानार्थमभ्यन्तरप्रवेश । ओघ० १६६ ।

गमणगुण–गमन–गतिस्तद् गुणो–गतिपरिणामपरिणताना जीवपुद्गलाना सहकारिकारणभावन कार्य यस्यासौ जीवस्यैव यस्यासौ गमनगुणो गमने वा गुण –उपकारो-जीवादीना यस्मादसौ गमनगुण इति । ठाणा० ३३३ । गतिसामर्थ्य । ज्ञाता० ३५ ।

गमणपयार–गमनप्रचार –गतिक्रियाप्रवृत्ति । ज्ञाता० ३५ ।

गमणागमण–ईर्यापथिकी । ज्ञाता० २०० ।

गमयति–स्फेटयति प्रापयति वा शिवम् । नदी० २३ ।
गमा–गमा –अर्थगमा गृह्यन्ते अर्थपरिच्छेदा । सम० १०८ । वस्तुपरिच्छेदप्रकारा नामादय । उत्त० ३४२ । अर्थ-परिच्छित्तिप्रकारा । उत्त० ७१३ । भङ्गका गणितादि-विशेषाश्च गमा –सदृशपाठा । विशे० २९८ । प्रकारा – द्विरुच्चारणीयाणि पदानि । बृ० द्वि० १५९ आ । भङ्ग-गणितादय –सदृशपाठा वा । बृ० तृ० ११० आ ।
गमागमसववहारो–गमागमसव्यवहार । आव० ३९५ ।
गमि –अयमनेकार्थत्वाद्धातूनामवस्थाने वर्त्तते । दश०७० ।
गमिओ–ज्ञापित । आव० ६२७ ।
गमिक–गमा अस्य विद्यन्त इति । आव० २५ । दृष्टि-वाद । नदी० २०३ ।
गमित्तए–गन्तुम् । उत्त० ३४० ।
गमेइ–गमयति । आव० १७२ ।
गमेय–म्लेच्छविशेष । प्रज्ञा० ५५ ।
गमो–पकारो । नि० चू० प्र० ११५ आ ।
गम्मधम्म–गम्यधम –यथा दक्षिणापथे मातुलदुहिता गम्या उत्तरापथे पुनरगम्यैव । दश० २२ ।
गम्मो–गम्यो गमनीयो वा अष्टादशाना कराणाम्, ग्रसते वा बुद्धयादीन् गुणान् ग्राम । बृ० प्र० १८१ अ । गम्य –परिभवस्थानम् । प्रश्न० १२० ।
गय–गत –स्थित । जीवा० १६४ । प्रज्ञा० ९१ । गत । ज्ञाता० ११८ । चीर्णम् । सूर्य० २२ । गज । प्रश्न० ७३ । प्रथमस्वप्ननाम । ज्ञाता० २० । गत –आश्रित । भग० १९१ । गदा–लकुटविशेष । प्रश्न० २१ ।
गयउर–गजपुर नगरविशेष । उत्त० १०९, ३५४, ३५५ ।
गयकठ–गजकण्ठ –हस्तिकण्ठप्रमाणो रत्नविशेष । जीवा० २३४ ।
गयकण्णो–गजकर्ण अन्तरद्वीपविशेष । जीवा० १४४ ।
गयकन्नदीवे–अन्तरद्वीपविशेष । ठाणा० २२६ ।
गयकन्ना–गयकन्नान्तर्द्वीपे मनुष्यविशेष । ठाणा० २२६ । गजकर्णनामा अन्तर्द्वीप । प्रज्ञा० ५० ।
गयकलभे–गजकलभ –करिपोत । प्रज्ञा० ३६० ।
गयग्गपदग – गजाग्रपदक–योगसग्रहेऽनिश्रितोपधानदृष्टान्ते एडकाक्षनगरे पर्वतविशेष । आव० ६६९ ।
गयग्गपदग्गो–गजाग्रपदक–यत्र इन्द्रैरावणस्य पदानि-देवताप्रभावेणोत्थितानि तेन प्रसिद्ध दशार्णकूटम् । आव० ६६९ ।
गयग्गपय–गजाग्रपदो दशार्णकूटवर्त्ती । आचा० ४१८ ।
गयग्गपादगो–गजाग्रपादक दशार्णकूटापरनामा । आव० ३५९ ।
गयग्गोपवतो–पर्वतविशेष । नि० चू० प्र० ३४१ अ ।
गयछाया–गजछाया । प्रज्ञा० ३२७ ।
गयजोही– । ज्ञाता० ३८ ।
गयणफुसे–गगनस्पर्शा–अतिप्रबलतया नभोऽङ्गणव्यापिना । उत्त० ४९ ।
गयण्हाण–गजस्नानम् । दश० २२६ ।
गयतालुए–गजतालुकम् । प्रज्ञा० ३६१ ।
गयतेये–गततेजा । भग० ६८४ ।
गयत्थरणो– । नि० चू० द्वि० ६१ अ ।
गयदतसठिते–गजदन्तसस्थितम् । सूर्य० १३० ।
गयनियत्त–अनुमपक्षा एवात्मीयेन व्यक्तविहाडादिना सम गतास्तस्य च कालगततया प्रतिभग्नत्वादिना वा कार णेन प्रत्यागन्तव्य नाभवत्तत प्रत्यागच्छन्तस्त साधुमुप-सपद्यते । व्य० द्वि० ३७९ अ ।
गयपुर–गजपुर–कुरुजनपदे आर्यक्षेत्रम् । प्रज्ञा० ५५ । कुरुजनपदे नगरविशेष । आव० १४५ । शान्तिकुन्थू-नाथजन्मभूमि । आव० १६० । पाडवाना राजधानी । आव० ३६५ । यत्र धनश्रीजीवइभ्यशानकशङ्खस्य दुहिता सर्वाङ्गसुन्दरी च्युता । आव० ३९४ ।
गयमच्छर–गतमत्सर -परस्परासहनवर्जितो निमसको वा । ज्ञाता० २३१ ।
गयमागम–गतागम । व्य० द्वि० १५८ अ ।
गयमारिणि–गुच्छविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।
गयलक्खण– । ज्ञाता० । ३८ ।
गयविक्कमसठिते–गजविक्रमसस्थितम् । सूर्य० १३० ।
गयसुकुमाल–गजसुकुमाल –अनगारविशेष । उत्त० ५८२ । वसुदेवपुत्र । आव० २७३ । प्रद्वेषविषये दृष्टान्त । आव० ४०४ । पितृवने श्वशुरदग्ध । मर० ।
गया–गदा-प्रहरणविशेष । औप० ३ । गता–स्थिता ।

वस्थिति स । जीवा० २०० ।
गरुलोववाए–गरुडोपपात - कालिकसूत्रविशेष । नंदी० २०७ ।
गर्जिकृत्–गर्जिता । ठाणा० २७० ।
गर्त्तलङ्घन–दारुसङ्क्रमस्य भेद । आचा० २०२ ।
गर्दभक–कुमुदम् । दश० १८५ । प्राणिविशेष । आचा० ३७६ ।
गर्दभिल्ल–नृपतिविशेष । बृ० तृ० १५६ अ ।
गर्भोत्पादन–गर्भपातनम् । व्य० प्र० १६३ आ ।
गलंतिया–गलन्तिका गर्गरी । आव० ६६२ ।
गल–गल–बडिशम् । विपा० ८० । प्रश्न० १३, ५७ । बिडिषम् । ज्ञाता० २३४ । आचा० ३८ । उत्त० ४६० । रिष्नो नाग्रो । विशे० ७२ । गल । ओघ० १८० । दडगस्स अते लोहकटगो कज्जति । नि० चू० प्र० २१५ अ ।
गलइ–अनन्तजीववनस्पतिभेद । भग० ८०४ ।
गलओ–गल । आव० ४०५ । ग्रीवा । आव० २०३ ।
गलओस–म्लेच्छविशेष । प्रज्ञा० ५५ ।
गलक–स्वरभग । बृ० प्र० ६१ अ ।
गलकवोला–गलकपोलौ । जीवा० २७५ ।
गलकुक्कुटी–गल एव कुक्कुटी । पिण्ड १७३ ।
गलगहिओ–गलगृहीत । आव० ३४६ ।
गलच्छल्ल–गलगृहणम् । प्रश्न० ५६ ।
गलणः– । नि० चू० प्र० २३२ आ ।
गलत्थल्ला–हस्तेन गलग्रहणरूपा । ज्ञाता० १६८ ।
गलयत्र–यन्त्रविशेष । दश० २७० ।
गललाय–गललातानि कण्ठे न्यस्तानि वरभूषणानि । ज० प्र० २६५ ।
गलवृन्द–शरीरान्तर्वधमानावयवविशेष । प्रज्ञा० ४७३ ।
गलि–अविनीत । उत्त० ४८ । मराल । आव० ७६७ ।
गलिगर्दहा–गलिगर्दभा –दुःशिष्या । उत्त० ५५४ ।
गलिच्चा–गलसत्कानि आभरणानि । पिण्ड० १२४ ।
गलियलंवणा–गलितलम्बना–आलम्बनाद् भ्रष्टा, लम्ब्यन्ते इति लम्बना –नङ्गरास्ते गलिता यस्या सा ज्ञाता० १५८ ।
गली–गलि दुष्टाश्व । उत्त० ६२ । गिलत्येव केवल न तु वहति–गच्छति वेति गलि–दुष्टाश्वो दुष्टगोणो वा । उत्त० ४१ ।
गलेरव–यो गलेनात्यन्त रटति । आव० ६६१ ।
गल्ल–कपोल । उपा० २१ ।
गल्लोदए–गल्लोदका । दश० १०४ ।
गव–मृगादिपशु । सूत्र ७२ ।
गवए–गवाकृतिराटव्यो जीवविशेष । बृ० द्वि० १०६ अ ।
गवओ–गोणागिती गवओ । नि० चू० प्र० ४७ आ ।
गवक्खए–गवाक्ष । आव० ६७६ ।
गवक्खजाल–गवाक्षजाल–गवाक्षाकृतिरत्नविशेषो दामसमूह । जीवा० १८१ २०५, ३६१ । ज० प्र० ५० ।
गवक्खसठिओ–गवाक्षसस्थित -वातायनसस्थित । जीवा० २७६ ।
गवक्खो-गवाक्ष–वातायन । जीवा० २७६ । प्रश्न० १३८ । नदी० ७३ ।
गवच्छ–आच्छादनम् । ज० प्र० ५८ ।
गवच्छिता–गवच्छ–आच्छादन गवच्छा सञ्जाता एष्विति गवच्छिका (ता) । राज० ७१ ।
गवत्थिया–गवस्था–आच्छादनम् । जीवा० २१४ ।
गवय–वनगव । ज० प्र० १२४ । आटव्य पशुविशेष । प्रश्न० ३८ । गवय द्विखुरश्चतुष्पद । जीवा० ३८ । गवाकृतिर्वर्त्तुलकण्ठ । प्रश्न० ७ । द्विखुरचतुष्पदविशेष । प्रज्ञा० ४५ ।
गवल–महिषीशृङ्गम् । आचा० २६ । उत्त० ६५२ । ज्ञाता० १०१ । महिष शृङ्गम् । जीवा० १६४ । प्रज्ञा० ६१ । माहिष शृङ्ग उपरितनत्वग्भागापसारणे द्रष्टव्यम् । प्रज्ञा० ३६० । शृङ्गम् । प्रश्न० २२ ।
गवलगुलिया–तस्यैव माहिषशृङ्गस्य निबिडतरसारनिवर्तिना गुटिका गवलगुटिका । ज० प्र० ३२ । गवलगुलिका–महिषशृङ्गगोलिका । ज्ञाता० २६ । गवल–महिष्यशृङ्ग गुलिका-नीली गवलस्य वा गुलिका गवलगुडिका । ज्ञाता० १०१ ।
गवलसामला–गवल–महिषशृङ्ग तद्वत् श्यामल श्यामा ।

ज्ञाता० २३१ ।
गवलेइ-माहिष शृङ्ग तदपि चापसारितोपरितनत्वग्भाग ग्राह्यम् । ज० प्र० ३२ ।
गवाणी-सामान्येन गवादनी । आचा० ४११ ।
गवालीयं-गवालीक-गोविषयमनृतम् । आव० ८२० ।
गवास-गावश्चाश्वाश्च गवाश्व, गावो वाहदोहोपलक्षिता अश्वा-तुरगा । उत्त० २६५ ।
गवेल-गौ । अनु० १२६ ।
गवेलग-गवेलक-उरभ्र । औप० १२ । ज्ञाता० २ ।
गवेलगा-गवेलका--ऊरणका । अनु० १२६ । ठाणा० ३६५ । गवेलका उरभ्रा । भग० १३५ । गावश्च-एलकाश्च ऊरणका गवेलका । ठाणा० ३६५ ।
गवेषणा-व्यतिरेकधर्मालोचनम् । नदी० १८७ ।
गवेसओ-गवेपक शोधक । आव० ४१८ । गवेषक । आव० ३५४ ।
गवेसण-व्यतिरेकतो गवेषणम् । भग० ६६३ । गवेषण-व्यतिरेकधर्मैरन्वेषणम् । औप० ६५ । व्यतिरेकधर्मालोचनम् । आव० ६६ । अनुपलभ्यमानस्य पदार्थस्य सवत परिभावनम् । पिण्ड० २६ । गवेष्यतेऽनेनेति गवेपण तत ऊर्ध्वं सद्भूतार्थविशेषाभिमुखमेव व्यतिरेकधर्मत्यागोऽन्वयधर्माध्यासालोचनम् । नदी० १७६ । गवेपण-व्यतिरेकधर्मालोचनम् । भग० ४३३ । इह शरीरकण्डूयनादय पुरुषधर्मा प्रायो न घटन्त इति व्यतिरेकधर्मालोचनरूपम् । ज्ञाता० १२ ।
गवेसणा-व्यतिरेकधर्मालोचना गवेषणा । आव० १८ । नदी० १८७ । गवेपण-व्यतिरेकधर्मालोचन गवेपणा । विशे० २१६ । गवेपणा-प्रार्थना । सूत्र० ७२ । अदिट्ठे गवेपणा थुभियाइचिंधेहिं गवेसणा । नि० चू० प्र० १६६ अ ।
गवेसति-गवेपयति । आव० २०० ।
गवेसमाणे-गवेपयन्-व्यतिरेकधर्मपर्यालोचनत वहुजनस्य । ज्ञाता० ८१ ।
गव्व-गर्व-अभियोग । आव० ७७२ । गर्व-शौण्डीर्यम् । भग० ५७२ ।
गह-ग्रह-देवयोनिविशेप । विशे० ६७१ । ग्रह-उत्क्षेप प्रारम्भरसविशेप । दश० ८८ ।
गहगज्जिय-ग्रहगर्जित-ग्रहचारहेतुक गर्जितम् । जीवा० २८२ । ग्रहसञ्चलादौ गर्जित-स्तनित ग्रहगर्जितम् । भग० १९६ ।
गहजुद्ध-ग्रहयुद्ध-यदेको ग्रहोऽन्यस्य ग्रहस्य मध्येन याति । जीवा० २८२ ।
गहण-गुपिल । दश० चू० १२० । नदी० ४२ । गहन-सङ्कुलम् । आव० ५६७ । वननिकुञ्ज । दश० २२६ वृ० द्वि० ६ अ । अपूर्वस्य ग्रहण ग्रहणम् । व्य० द्वि० ३७६ अ । गहन-गुपिल । उत्त० २६० । वृक्षवल्ली-लतावितानवीरुत्समुदाय । भग० ६२ । सर्वांगीण कराभ्यामादानम् । वृ० तृ० २३० अ । गहन-वृक्षगह्वरम् । विपा० ६२ । धवादिवृक्षैः कटिसस्थानीयम् । सूत्र०८६ । गह्वरम् । प्रश्न० ३६ । गहनमिव गहन दुर्लक्ष्यान्तस्तत्त्वत्वात् । प्रथम अधर्मद्वारस्य विंशतितम नाम । प्रश्न० २७ । चदसूरुवरागो गहण भण्णति । नि० चू० तृ० ७० आ । गृह्यत इति ग्रहणम् । प्रज्ञा० २६२ । ग्रहणकम् । प्रश्न० ३० । सम्बन्धनम् । जीवा० ४४२ । सूत्रादेस्तत्प्रथमतया आदानम् । आव० २६७ । भाषाद्रव्याणा काययोगेन यत् ग्रहणम् । दश० २०८ । सर्वाङ्गिक तु ग्रहणम् । ठाणा० ३२७ । ग्रहण ग्रहस्य वस्तुन परिच्छेद । अनु० २१६ । गृहस्थस्य गृह्यतेऽस्मिन्निति ग्रहण, यस्मात्प्रदेशाद्भूण्डक गृह्णाति त प्रदेशम् । ओघ० १६६ । गृह्यतेऽस्मिन्निति ग्रहण शरावसम्पुटम् । ओघ० १३६ । निर्जलप्रदेशोऽरण्यक्षेत्र वा । आचा० ३८२ । आक्षेपकम् । उत्त० ६३० । गृह्यत इति ग्रहण ग्राह्यम् । आ० ६३० । स्वीकरणम् । उत्त० ७११ । ज्ञानम् । उत्त० ५०३ । ग्रहण-परस्परेण सम्बन्धनम् । जीवेन वा औदारिकादिभि प्रकारैर्ग्रहणम् । भग० १४८ ।
गहणकप्पा-सुत्त अत्य उभय वा गेण्हतेण भत्तिवहुमाणा अब्भुट्ठाणाइविणओ पयुंजियव्वो । नि० चू० तृ० १४६ अ ।
गहणगुण-ग्रहण-औदारिकशरीरादितया ग्राह्यता इन्द्रियग्राह्यता वा वर्णादिमत्वात् परस्परसम्बन्धलक्षण वा तद्गुणो धर्मो यस्य स तथा । ठाणा० ३३४ ।

गहणजाय–यानि पुनर्द्रव्याणि समश्रेणिविश्रेणिस्थानि भाषात्वेन परिणतानि कर्णशष्कुलीविवरप्रविष्टानि गृह्यन्ते तानि चानन्तप्रदेशिकानि, द्रव्यत क्षेत्रतोऽसङ्ख्येयप्रदेशावगाढानि, कालत एकद्वित्र्यादियावदसङ्ख्येयसमयस्थितिकानि, भावतो स्पर्शवन्ति, तानि चैव भूतानि ग्रहणजातमित्युच्यन्ते । आचा० ३८५ ।

गहणविदुग्ग–एगजातीयअणेगजाईयरुक्खाउल गहणविदुग्ग । नि० चू० द्वि० ७० आ । सूत्र० ३०७ । गहनविदुग –पवतैकदेशावस्थितवृक्षवल्ल्यादिसमुदाय । भग० ९२ ।

गहणसिक्खा–द्वादशवर्षाणि यावत् सूत्र त्वयाऽध्येत-यमित्युपदेशो ग्रहणशिक्षा । विशे० ६ ।

गहणा–गह्व'ा । आद० १९६ । दोषविशेष । नि० चू० प्र० २७२ आ ।

गहणाई–ग्रहणादय –ग्रहणवन्धनताडनादय दोषा । पिण्ड० १६२ ।

गहणागरिस–एकस्मिन्नेव भवे ऐर्यापथिककर्मपुद्गलाना ग्रहणरूपो य आकर्षोऽसौ ग्रहणाकर्ष । भग० ३८६ ।

गहणी–ग्रहणी । आव० ६४४ । गुदाशय । औप० १६ । प्रश्न० ८२ । ग्रहणी–गुदाशय । ज० प्र० ११७ ।

गहदडा–दण्डा इव दण्डा –तिर्यगायता श्रेणय ग्रहाणा–मङ्गलादीना त्रिचतुरादिना दण्डा ग्रहदण्डा । भग० १९५ ।

गहदंडो–दण्डाकार व्यवस्थितो ग्रहो ग्रहदण्ड । जीवा० २८२ ।

गहन–महाटवी । वनम् । सूत्र० २४५ । गह्वरम् । ओघ० १८१, १६० ।

गहभिण्ण–ग्रहभिन्न–ग्रहविदारितम् । विशे० १२९४ । मज्झेण जस्स गहो गतो त गहभिण्ण । नि० चू० तृ० ६९ अ ।

गहभिन्न–यस्य मध्येन ग्रहोऽगमत् तत् ग्रहभिन्नम् । व्य० प्र० ६२ अ ।

गहमुसल–ग्रहमुशलम् । जीवा० २८२ । ग्रहमुशल–ऊर्ध्वायता श्रेणि । भग० १९६ ।

गहयुद्ध–ग्रहयुद्ध ग्रहयोरेकत्र नक्षत्रे दक्षिणोत्तरेण सम श्रेणितयाऽवस्थानम् । भग० १९६ ।

गहरा–लोमपक्षीविशेष । प्रज्ञा० ४९ ।

गहरो–लोमपक्षीविशेष । जीवा० ४ ।

गहसघाडओ–ग्रहसङ्घाटक-ग्रहयुग्मम् । जीवा० २८२ ।

गहसम–प्रथमतो वशतन्त्र्यादिभिर्य स्वरो गृहीतस्तत्सम गीयमान ग्रहसमम् । अनु० १३२ । ठाणा० ३९४ । गीतस्य तृतीयो भेद । नि० चू० तृ० १ अ ।

गहसिंघाडग–ग्रहसिंघाटक–ग्रहाणा सिङ्घाटकफलाकारेणावस्थानम् । भग० १९६ ।

गहसुसपउत्त–य प्रथम वशतन्त्र्यादिभि स्वरो गृहीतस्तन्मार्गानुसारि ग्रहसुसप्रयुक्तम् । जीवा० १९५ । प्रथमतो वशतन्त्र्यादिभिय स्वरो गृहीतस्तत्समेन स्वरेण गीयमान गहसुसप्रयुक्तम् । ज० प्र० ४० ।

गहा–गहा –चन्द्रादयो गृह्यन्ते । आव । ग्रहा –ज्योतिष्कभेदविशेष । प्रज्ञा० ६९ । ग्रहा मुधादिकेत्वन्ता नव, सोमस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्त्तिनो-देवा । भग० १९५ ।

गहाय–गृहीत्वा–सम्प्रधार्य । उत्त० २०६ ।

गहावसव्व–गहापसव्य–ग्रहाणामपसव्यगमन, प्रतीपगमनम् । भग० १९६ ।

गहिंति–गमिष्यन्ति–ग्रहीष्यन्ति वा स्वीकरिष्यन्ति । उत्त० १९४ ।

गहिअ–गृहीत –अनिक्षिप्त । ओघ० ५८ ।

गहिए–धनिक । बृ० तृ० ४९ आ ।

गहिओ–गृहीत –अवधारित । आव० ४१५ ।

गहिय–पडिवद्ध । दश० चू० १५१ । गृहीतम् । विशे० ४०५ । प्रश्न० ३० ।

गहियगहण–गृहीतग्रहण–गृहीत ग्रहण–ग्रहणक येन स । प्रश्न० ३० ।

गहियट्ठा–परस्मात् । भग० ५४२ । अर्थावधारणात् । गृहीतार्थम् । भग० १३५ ।

गहियवलजो–सेज्जातरो खेत्तस्स अतोवहिं वा गहियवलजो । नि० चू० प्र० १५८ अ ।

गहियाउपहरणे–गृहीतायुधप्रहरण –गृहीतानि आयुधानि शस्त्राणि प्रहरणनाय–परेषा प्रहारकरणाय येन स । भग० ३१८ ।

ज्ञाता० २३१ ।
गवलेइ–माहिष शृङ्ग तदपि चापसारितोपरितनत्वग्भाग ग्राह्यम् । ज० प्र० ३२ ।
गवाणी–सामान्येन गवादनी । आचा० ४११ ।
गवालीय–गवालीक–गोविषयमनृतम् । आव० ८२० ।
गवास–गावश्चाश्वाश्च गवाश्वं, गावो वाहदोहोपलक्षिता अश्वा–तुरगा । उत्त० २६५ ।
गवेल–गौ । अनु० १२६ ।
गवेलग–गवेलक–उरभ्र । औप० १२ । ज्ञाता० २ ।
गवेलगा–गवेलका–ऊरणका । अनु० १२६ । ठाणा० ३६५ । गवेलका उरभ्रा । भग० १३५ । गावश्च-एलकाश्च ऊरणका गवेलका । ठाणा० ३६५ ।
गवेषणा–व्यतिरेकधर्मालोचनम् । नदी० १८७ ।
गवेसओ–गवेषक शोधक । आव० ४१८ । गवेषक । आव० ३५४ ।
गवेसण–व्यतिरेकतो गवेषणम् । भग० ६६३ । गवेषण–व्यतिरेकधर्मैरन्वेषणम् । औप० ६५ । व्यतिरेकधर्मालोचनम् । आव० ६६ । अनुपलभ्यमानस्य पदार्थस्य सर्वत परिभावनम् । पिण्ड० २६ । गवेष्यतेऽनेनेति गवेषण तत ऊर्ध्वं सद्भूतार्थविशेषाभिमुखमेव व्यतिरेकधर्मत्यागोऽन्वयधर्माध्यासालोचनम् । नदी० १७६ । गवेषण–व्यतिरेकधर्मालोचनम् । भग० ४३३ । इह शरीरकण्डूयनादय पुरुषधर्मा प्रायो न घटन्त इति व्यतिरेकधर्मालोचनरूपम् । ज्ञाता० १२ ।
गवेसणा–व्यतिरेकधर्मालोचना गवेषणा । आव० १८ । नदी० १८७ । गवेषण–व्यतिरेकधर्मालोचन गवेषणा । विशे० २१६ । गवेषणा–प्रार्थना । सूत्र० ७२ । अदिट्ठे गवेषणा छुभियाइचिंधेहिं गवेसणा । नि० चू० प्र० १६६ अ ।
गवेसति–गवेषयति । आव० २०० ।
गवेसमाणे–गवेषयन्–व्यतिरेकधर्मपर्यालोचनत बहुजनस्य । ज्ञाता० ८१ ।
गव्व–गर्व–अभियोग । आव० ७७२ । गर्वं–शौण्डीर्यम् । भग० ५७२ ।
गह–ग्रह–देवयोनिविशेष । विशे० ६७१ । ग्रह–उत्क्षेप प्रारम्भरसविशेष । दश० ८८ ।
गहगज्जिय–ग्रहगर्जित–ग्रहचारहेतुक गर्जितम् । जीवा० २८२ । ग्रहमञ्चलादौ गर्जित–स्तनित ग्रहगर्जितम् । भग० १६६ ।
गहजुद्ध–ग्रहयुद्ध–यदेको ग्रहोऽन्यस्य ग्रहस्य मध्येन याति । जीवा० २८२ ।
गहण–गुविल । दश० चू० १२० । नदी० ४२ । गहन–सङ्कुलम् । आव० ५६७ । वननिकुञ्ज । दश० २२६ वृ० द्वि० ६ अ । अपूर्वस्य ग्रहण ग्रहणम् । व्य० द्वि० ३७६ अ । गहन–गुपिल । उत्त० २६० । वृक्षवल्ली-लतावितानवीरुत्समुदाय । भग० ६२ । सर्वांगीण कराभ्यामादानम् । वृ० तृ० २३० अ । गहन–वृक्षगह्वरम् । विपा० ६२ । धवादिवृक्षै कटिसस्थानीयम् । सूत्र०८६ । गह्वरम् । प्रश्न० ३६ । गहनमिव गहन दुर्लक्ष्यान्तस्त्वत्वात् । प्रथम अधर्मद्वारस्य विंशतितम नाम । प्रश्न० २३ । चद्सूरुवरागो गहण भण्णति । नि० चू० तृ० ७० आ । गृह्यत इति ग्रहणम् । प्रज्ञा० २६२ । ग्रहणकम् । प्रश्न० ३० । सम्बन्धनम् । जीवा० ४४२ । सूत्रादेस्तत्प्रथमतया आदानम् । आव० २६७ । भाषाद्रव्याणा काययोगेन यत् ग्रहणम् । दश० २०८ । सर्वाङ्गिक तु ग्रहणम् । ठाणा० ३२७ । ग्रहण ग्रहस्य वस्तुन परिच्छेद । अनु० २१६ । गृहस्थस्य गृह्यतेऽस्मिन्निति ग्रहण, यस्मात्प्रदेशाद्भण्डक गृण्हाति त प्रदेशम् । ओघ० १६६ । गृह्यतेऽस्मिन्निति ग्रहण शरावसपुटम् । ओघ० १३६ । निर्जलप्रदेशोऽरण्यक्षेत्र वा । आचा० ३८२ । आक्षेपकम् । उत्त० ६३० । गृह्यत इति ग्रहण ग्राह्यम् । आ० ६३० । स्वीकरणम् । उत्त० ७११ । ज्ञानम् । उत्त० ५०३ । ग्रहण–परस्परेण सम्बन्धनम् । जीवेन वा औदारिकादिभि प्रकारैर्ग्रहणम् । भग० १४८ ।
गहणकप्पा–सुत्त अत्थ उभय वा गेण्हतेण भत्तिबहुमाणा अब्भुट्ठाणाइविणओ पयुंजियव्वो । नि० चू० तृ० १४६ अ ।
गहणगुण–ग्रहण–औदारिकशरीरादितया ग्राह्यता इन्द्रियग्राह्यता वा वर्णादिमत्वात् परस्परसम्बन्धलक्षण वा तद्गुणो धर्मो यस्य स तथा । ठाणा० ३३४ ।

गहणजाय–यानि पुनर्द्रव्याणि समश्रेणिविश्रेणिस्थानि भाषात्वेन परिणतानि कर्णशष्कुलीविवरप्रविष्टानि गृह्यन्ते तानि चानन्तप्रदेशिकानि, द्रव्यत क्षेत्रतोऽसङ्ख्येयप्रदेशावगाढानि, कालत एकद्वित्र्यादियावदसङ्ख्येयसमयस्थितिकानि, भावतो स्पर्शवन्ति, तानि चैव भूतानि ग्रहणजातमित्युच्यन्ते । आचा० ३८५ ।

गहणविदुग्ग–एगजातीयअणेगजाईयरुक्खाउल गहणविदुग्ग । नि० चू० द्वि० ७० आ । सूत्र० ३०७ । गहनविदुग –पर्वतैकदेशावस्थितवृक्षवल्ल्यादिसमुदाय । भग० ९२ ।

गहणसिक्खा–द्वादशवर्षाणि यावत् सूत्र त्वयाऽध्येतव्य मित्युपदेशो ग्रहणशिक्षा । विशे० ६ ।

गहणा–गह्वा । आव० १६६ । दोषविशेष । नि० चू० प्र० २७२ आ ।

गहणाई–ग्रहणादय –ग्रहणबन्धनताडनादय दोषा । पिण्ड० १६२ ।

गहणागरिस–एकस्मिन्नेव भवे ऐर्यापथिककर्मपुद्गलाना ग्रहणरूपो य आकर्षोऽसौ ग्रहणाकर्ष । भग० ३८६ ।

गहणी–ग्रहणी । आव० ६४४ । गुदाशय । औप० १६ । प्रश्न० ८२ । ग्रहणी–गुदाशय । ज० प्र० ११७ ।

गहदंडा–दण्डा इव दण्डा –तिर्यगायता श्रेणय ग्रहाणा–मङ्गलादीना त्रिचतुरादिना दण्डा ग्रहदण्डा । भग० १९५ ।

गहदंडो–दण्डाकार व्यवस्थितो ग्रहो ग्रहदण्ड । जीवा० २८२ ।

गहन–महाटवी । वनम् । सूत्र० २४५ । गह्वरम् । ओघ० १८१, १९० ।

गहभिण्ण–ग्रहभिन्न–ग्रहविदारितम् । विशे० १२९४ । मज्झेण जस्स गहो गतो त गहभिण्ण । नि० चू० तृ० ९९ अ ।

गहभिन्न–यस्य मध्येन ग्रहोऽगमत् तत् ग्रहभिन्नम् । व्य० प्र० ६२ अ ।

गहमुसल–ग्रहमुशलम् । जीवा० २८२ । ग्रहमुशल–ऊर्ध्वायता श्रेणि । भग० १९६ ।

गहयुद्ध–ग्रहयुद्ध ग्रहयोरेकत्र नक्षत्रे दक्षिणोत्तरेण सम श्रेणितयाऽवस्थानम् । भग० १९६ ।

गहरा–लोमपक्षीविशेष । प्रज्ञा० ४९ ।

गहरो–लोमपक्षीविशेष । जीवा० ४ ।

गहसघाडओ–ग्रहसङ्घाटक - ग्रहयुग्मम् । जीवा० २८२ ।

गहसम–प्रथमतो वशतन्त्र्यादिभिर्य स्वरो गृहीतस्तत्सम गीयमान ग्रहसमम् । अनु० १३२ । ठाणा० ३९४ । गीतस्य तृतीयो भेद । नि० चू० तृ० १ अ ।

गहसिंघाडग–ग्रहसिंघाटक–ग्रहाणा सिङ्घाटकफलाकारेणावस्थानम् । भग० १९६ ।

गहसुसपउत्त–य प्रथम वशतन्त्र्यादिभि स्वरो गृहीतस्तन्मार्गानुसारि ग्रहसुभप्रयुक्तम् । जीवा० १९५ । प्रथमतो वशतन्त्र्यादिभिर्य स्वरो गृहीतस्तत्समेन स्वरेण गीयमान ग्रहसुमप्रयुक्तम् । ज० प्र० ४० ।

गहा–गहा –अङ्गारकादयो गृह्यन्ते । [illegible] । ग्रहा –ज्योतिष्कभेदविशेष । प्रज्ञा० ९६ । ग्रहा नूयादिकेरवन्ता नव, सोमस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्त्तिनो देवा । भग० १९५ ।

गहाय–गृहीत्वा–सम्प्रधार्य । उत्त० २०६ ।

गहावसव्व–गहापसव्य–ग्रहाणामपसव्यगमन, प्रतीपगमनम् । भग० १९६ ।

गहिति–गमिष्यन्ति–ग्रहीष्यन्ति वा स्वीकरिष्यन्ति । उत्त० १९४ ।

गहिअ–गृहीत –अनिक्षिप्त । ओघ० ५८ ।

गहिए–धनिक । बृ० तृ० ४९ आ ।

गहिओ–गृहीत –अवधारित । आव० ४१५ ।

गहिय–पडिबद्ध । दश० चू० १५१ । गृहीतम् । विशे० ४०५ । प्रश्न० ३० ।

गहियगहण–गृहीतग्रहण–गृहीत ग्रहण–ग्रहणक येन स । प्रश्न० ३० ।

गहियट्ठा–परस्मात् । भग० ५४२ । अर्थावधारणात् । गृहीतार्थम् । भग० १३५ ।

गहियवलजो–सेज्जातरो सेत्तस्स अतोबर्हि वा गहियवलजो । नि० चू० प्र० १५८ अ ।

गहियाउपहरणे–गृहीतायुधप्रहरण –गृहीतानि आयुधानि शस्त्राणि प्रहरणनाय–परेषा प्रहारकरणाय येन स । भग० ३१८ ।

गहियो–विडम्बयितु प्रारब्ध । बृ० तृ० ४७ आ ।
गहिल्लगवेस–ग्रहगृहीतवेष भूतविण्ट इव विचित्रवेषवान् । दश० १६ ।
गहो–ग्रह । आव० ३६७ । राहुलक्षण । ३६ ।
गां–वृषभम् । आचा० ३८४ ।
गाइयव्व–गातव्यम् । ओघ० १५७ ।
गाउअ–द्वे धनु सहस्रे गव्यूतम् । अनु० १५७ ।
गाउय–क्रोशद्वय गव्यूति । ओघ० २३ । गव्यूत–द्विधनु सहस्रप्रमाणम् । प्रज्ञा० ४८ । जीवा० ४० । धनु सहस्रद्वयप्रमाणम् कोश । भग० २७५ ।
गागर–स्त्रीपरिधानविशेष । प्रश्न० ७० ।
गागरा–मत्स्यविशेष । प्रज्ञा० ४४ ।
गागरि–गर्गरी । अनु० १५२ ।
गागरी–बृहद्वर्तुलघटिका । त० ।
गागलि–शालमहाशालभागिनेय । उत्त० ३२४, ३२१ ।
गाङ्गलि–तापसविशेष । दश० ५१ ।
गागली–पृष्टिचम्पाया यशोमनीपुत्र । आव० २८६ ।
गाढ–निबिडम् । नदी० ४६ । अत्यर्थम् । ओघ० १२७, ३२४ । गाढ–बाढम् । भग० ३७ ।
गाढीकय–गाढीकृतम्–आत्मप्रदेशै सह गाढबद्धम् । भग० २५१ ।
गाणंगणिए–गणाद्गण षण्मासाभ्यन्तर एव सङ्क्रामतीति गाणङ्गणिक । उत्त० ४३५ ।
गाणगणितो–णिक्कारणे गणातो अण्ण गण सकमतो गाणगणिओ । नि० चू० तृ० ८० आ ।
गाणंगणिया–गाणगणिकता–गणे गणे प्रविशतीत्येव प्रवादलक्षणा । व्य० द्वि० ४६ अ ।
गाणि–गानम् । आव० ६७४ ।
गातब्भंग–गात्राभ्यङ्ग–तैलादिनाऽङ्गम्रक्षणम् । ठाणा० २४७ ।
गातुच्छोलणाइं–गात्रोत्क्षालन–अङ्गधावनम् । ठाणा० २४७ ।
गात्राणि–ईर्यादीनि । ज० प्र० ५५ ।
गाधेन–उद्वेधेन । ठाणा० ४८० ।
गामंतर–ग्रामादन्यो ग्राम ग्रामान्तरम् । आव० १४ ।
गामंतिय–ग्रामस्यान्ते समीपे वसतीति ग्रामान्तिक । सूत्र० ३१५ ।
गाम–ग्रसति बुध्यादीन् गुणानिति गम्यो वाऽष्टादशाना करणामिति ग्राम । आचा० २८५ । ग्रामा –सङ्घाता । उत्त०६१३ । ग्रसन्ति बुद्धचादीन् गुणानिति ग्रामा । आचा० २५४। इन्द्रियग्रामो रूढे । जनपदाश्रय । ठाणा० ५१६ । समूह । आव० ६५० । ग्रसति गुणान् गम्यो वाऽष्टादशाना कराणामिति ग्राम । उत्त० ६०५ । ग्राम –ग्रामशब्देन चात्र प्रतिश्रय उपलक्षित । आचा० २६१ । ग्रसते बुद्धचादीन् गुणानिति ग्राम । अनु० १४२ । ग्रसते बुद्धचादीन् गुणान् यदि वा गम्य शास्त्रप्रसिद्धानामष्टादशाना क्राणामिति ग्राम । राज० ११४ । ग्रसति-बुद्धयादीन् गुणान् यदि वा गम्य शास्त्रप्रसिद्धानामष्टादशानां कराणामिति ग्राम । व्य० प्र० १६८ अ । करादियाण गम्मो गामो । नि० चू० द्वि० ७० आ । नि० चू० प्र० २०६ अ । ग्राम –जनपदप्रायजनाश्रित । प्रश्न० ३६ । दशकुलसाहस्रिको ग्राम । ज्ञाता० ४४ । जनपदप्रायजनाश्रित स्थानविशेष । भग० ३६ । इन्द्रियग्राम । उत्त० ११२ । इन्द्रियवर्ग । प्रश्न० ६३ । जनपदाध्यासित । औप० ७४ । ग्रसति बुद्धचादीन् गुणान् गम्यो वा करादीनामिति ग्राम । सन्निवेशविशेष । आव० ५६३ । ग्रसति बुद्धयादीन् गुणानिति यदिवा गम्य –शास्त्रप्रसिद्धानामष्टादशाना कराणामिति ग्राम । जीवा० ४०,२७६ । सीमापर्यन्त , प्रजासमध्यासितगृहाऽऽरामवापीदेवकुलादि रूप , केवला प्रजा वा, प्रधानपुरुषो वा । विशे० ८६७ । ग्रसति बुद्धचादीन् गुणानिति ग्राम , यदि वा गम्य शास्त्रप्रसिद्धानामष्टादशकराणामिति ग्राम । प्रज्ञा०४७ । ग्राम -इन्द्रियम् । दश० २६७ । शालिग्रामादि । दश० २८१ । इन्द्रियसमूह । भग० १०१ । समूह । ज्ञाता० १ । ग्रसति बुद्धचादीन् गुणानिति ग्राम । दश० १४७ ।
गामउड–गाममहत्तरो । नि० चू० प्र० २०६ अ । ग्राममहत्तर । बृ० द्वि० २१२ आ ।
गामउडपुत्तो–ग्रामकूटपुत्र । आव० २०२ ।
गामकटए–इन्द्रिय तदद्दु खहेतु कण्टक स ग्रामकण्टक । दश० २६७ । ग्राम –इन्द्रियग्रामस्तस्य कण्टका इव

कण्टका ग्रामकण्टका–प्रतिकूलशब्दादय । उत्त० ११२ । ग्रामकण्टका–नीचजनरूक्षालापा । आचा० ३११ ।

गामघाए– । ज्ञाता० २३६ ।

गामघाय–ग्रामघात । सूत्र० ३०९ ।

गामतेणो–गामतो हरतो गामतेणो । नि० चू० द्वि० ३८ आ ।

गामथेरा–ये ग्रामनगरराष्ट्रेषु व्यवस्थाकारिणो बुद्धिमन्त आदेया प्रभविष्णवस्ते तत्स्थविरा । ठाणा० ५१६ ।

गामधम्म–ग्रामधम–विषयोपभोगगतो व्यापार । आचा० ३३१ । ग्रामा–जनपदाश्रयास्तेषा तेषु वा धर्म्म समाचारो–व्यवस्थेति ग्रामधर्म्म, अथवा ग्राम–इन्द्रियग्रामो रूढेस्तद्धर्मो–विषयाभिलाष । ठाणा० ५१५ । ग्रामधर्म–प्रतिग्राम भिन्न । दश० २२ ।

गामधम्मतित्ति–ग्रामधर्मा–शब्दादय कामगुणास्तेषा तप्ति–गवेषण पालन वा ग्रामधर्मतप्ति, अब्रह्मणोऽष्टादश नाम । प्रश्न० ६६ ।

गामधम्मा–ग्रामा–इन्द्रियग्रामास्तेषा धर्मा–स्वभवा यथा स्वविषयेषु प्रवर्त्तन ग्रामधम्मा । आचा० २१८ । ग्रामधर्म्मा–विषया । आचा० २७६ ।

गामपिंडोलग–ग्रामपिण्डोलक–भिक्षयोदरभरणार्थं ग्राममाश्रित तुन्दपरिमृजो द्रमक । आचा० ३१४ ।

गामभोइओ–ग्रामभोजिक । आव० ३५५ ।

गाममहो–गामे महा गाममहो यात्री इत्यर्थ । नि० चू० द्वि० ७० आ ।

गाममारी–ग्राममारी । भग० १९७ ।

गामरट्ठमयहरो–ग्रामराष्ट्रमहत्तर । आव० ७३८ ।

गामरोग–ग्रामरोग । भग० १९७ ।

गामवधो–गामस्स वधो गामवधो ग्रामघातेत्यर्थ । नि० चू० द्वि० ७० आ ।

गामवाह–ग्रामवाह । भग० १९९ ।

गामा–ग्रामा–वृत्यावृत्ता कराणा गम्या वा । ज० प्र० १२१ । ग्रामादीना च जीवाजीवता प्रतीतैव, तत्र करादिगम्या ग्रामा । ठाणा० ८६ ।

गामाणुगाम–एकस्माद् ग्रामादवधिभूतादुत्तरग्रामाणामनतिक्रमो ग्रामानुग्राम ग्रामपरम्परा । ठाणा० ३१० । एक ग्रामाल्लघुपश्चाद् भावाग्या ग्रामोऽणुग्राम । ठाणा० ३१० । मासकप्पो जत्थ कतो ततो ज गम्मइ त गामाणुगाम । नि० चू० प्र० १६१ अ । ग्रामानुग्रामम् । आव० १४२ ।

गामाणुगामो–मासकप्पविहारगामाओ गच्छतो अण्णो अणुकूलो गामो गामाणुगामो । नि० चू० प्र० २१६ अ ।

गामाय–ग्रामाक नाम सन्निवेश । आव० २०८ ।

गामायारा–ग्राम्याचारा–विषया । आव० १३४ ।

गामिए–ग्राममहत्तर । नि० चू० प्र० १४१ आ ।

गामिया–ग्रामिका–ग्रामधर्म्माश्रिता । आचा० ३०८ ।

गामिल्लय–ग्रामेयक । आव० ४३५, ।

गामील्लए–ग्रामेयक । आव० ५५४ ।

गामेयगा–ग्रामेयका । उत्त० २६३ ।

गामेल्लग–ग्रामेयक–ग्रामवास्तव्य । दश० ५९ । आव० १०३ ।

गामेल्लगत्तण–ग्रामेयकत्वम् । आव० ७२१ ।

गामेल्लया–ग्रामवासीजन । ओघ० ४६ ।

गामेल्लयपारद्धो–ग्रामेयकप्रारब्ध । आव० ३५१ ।

गाय–गात्र–ईषादि । जीवा० २३१ । काय । दश० ११७ । काय–चिलातदेशनिवासीम्लेच्छविशेष । प्रश्न० १४ ।

गायकम्म–गात्रकर्म–हस्तादिगात्रचम्पनरूपमङ्गपरिकर्म । प्रश्न० १३७ ।

गायगठिभेय–गात्रात्–मनुष्यशरीरावयवविशेषात् कट्यादे सकाशाद् ग्रन्थिकार्षापणादिपोट्टलिका भिदन्ति–आच्छिन्दन्तीति गात्रग्रन्थिभेदा । ज्ञाता० २ ।

गायदाह–जत्थ गाआ डज्झति त गायदाह भण्णति । नि० चू० प्र० १६२ आ ।

गायाइ–गात्राणि भरतशरीरावयवा । ज० प्र० २७५ ।

गार–अगार गेहम् । ठाणा० ३७१ ।

गारत्थ–गृहस्थ–गृहधर्मवान् । दश० १० ।

गारत्था–गिहत्था । नि० चू० प्र० ४६ आ ।

गारत्थिए–गृहस्था–पिण्डोपजीविनो धिग्जातिप्रभृतय । आचा० ३२४ ।

गारत्ति –अगार–गेह तद्वृत्तयो अगारस्थिता-गृहिण

तेषा–यत्तदगारस्थितवचनम् । ठाणा० ३७० ।

गारव–गौरव–आदर । प्रश्न० ३५ । गौरव–यद्गौरवनिमित्त वन्दते तत्, कृतिकर्मणि चतुर्दशो दोष । आव० ५४४ । गुरोर्भाव गौरव । आव० ५७६ । गौरव गमनपर्याय । ठाणा० ४५३ । लब्धिमाहात्म्यम् । बृ० द्वि० २६० अ । परिवारर्धिधर्मकथाद्यष्टप्रकारोऽभिमान । व्य० प्र० २५७ । गौरव गर्व । ठाणा० ४९६ ।

गारवा–गौरवाणि–ऋद्धिरससातगौरवरूपाणि । प्रश्न० ६७ ।

गारविए–गर्वेण लब्धिसम्पन्नोऽहमितिकृत्वा एकाकी भवति । ओघ० १५० ।

गारी–अगारी । ओघ० ९९ ।

गालण–गालन–छाणनम् । प्रश्न० २५ । घनमसृणवस्त्राद्वान्तेन गालनम् । आचा० ४२ ।

गालणा–यैरूपायैर्गर्भो द्रवीभूय क्षरति । विपा० ४२ ।

गालियदहियस्स–गालितस्य दध्न । आव० ६२४ ।

गालेमाणे–गालयन्–अतिवाहयन् । भग० ४६२ ।

गालो–वेगलो । नि० चू० द्वि० ६८ आ ।

गाव–बलीवर्दसुरभय । प्रश्न० ३७ ।

गाविकुविय–गोगवेषक । भर० ।

गाविमग्गो–गोमार्ग । आव० ४१९ ।

गावी–गौ–त्रिपृष्ठवासुदेवनिदानकारणम् । आव० १६३टी ।

गासं–ग्रास–कवलम् । उत्त० ११७ ।

गासैषणा– । आचा० २८३ ।

गाह–गाथा । आव० ७९३ । ज्ञाता० ३८ । महान् निर्बन्ध । बृ० द्वि० २१ अ । ग्राह–जलजन्तुविशेष । प्रश्न० ७ । ग्राह–स्थूलदेहो जलजन्तुविशेष । आव० ८१९ ।

गाहग–ग्राहक आचार्य, ग्राहयतीति ग्राहक, ग्राहको नाम शिष्य गृण्हातीति ग्राहक । व्य० प्र० २५७ अ । ग्राहक–प्रतिपाद्यस्य विवक्षितार्थप्रतीतिजनकम् । प्रश्न० १२० । ग्राहक–शिक्षयिता गुरु । उत्त० १४५ । गुरु । आव० ३४१ ।

गाहणगिरा–ग्राहयतीति ग्राहिका, ग्राहिका चासौ गीश्च ग्राहकगी । आव० २३७ ।

गाहगसुद्धं–ग्राहकशुद्ध–यत्र ग्रहीता चारित्रगुणयुक्त । विपा० ९२ ।

गाहण–ग्राह्यते शिष्य एतदिति बाहुलकात् कर्मण्यनट् ग्राहण–आचारादिसूत्र आसेवना । व्य० प्र० २२९ अ ।

गाहवतीओ–सुकच्छमहाकच्छविजयोर्विभागकारिणी नदी । ठाणा० ८० ।

गाहा–गाथा–प्राक्तनपञ्चदशाध्ययनार्थस्य गानाद् गाथा, गाथा वा तत्प्रतिष्ठाभूतत्वादिति मेरुनामसूत्रे गाथा श्लोकश्च । सम० ३२ । गीयत इति गाथा, सा चेहार्थाद्धर्माभिधायिनी सूत्रपद्धति । उत्त० ३८५ । गीयते–शब्द्यते स्वपरसमयस्वरूपमस्यामिति गाथा सूत्रकृताङ्गस्य षोडशमध्ययनम् । उत्त० ६१४ । गाहा–घर गिह वा । व्य० द्वि० २८३ अ । गाहा गेह तत्र ऋतौ–ऋतुबद्धे काले वर्षाकाले वा पर्युषित । व्य० द्वि० २८३ अ । गाथा–सूत्रकृताङ्गाद्यश्रुतस्कन्धे षोडशमध्ययनम् । आव० ६५१ । गृह्णन्ति ग्राहा जलचरविशेषा । उत्त० ६९९ । गाथा–सूत्रकृताङ्गस्य षोडशमध्ययनम् । उत्त० ६१४ । संस्कृतेतरभाषानिबद्धा आर्या । ज० प्र० १३७ । प्रतिष्ठा निश्चितिश्च । आव० ८०४ । गीयत इति गाथा–छन्दोविशेषरूपा । उत्त० ३३४ । गृहम् । बृ० द्वि० ८६ अ । ग्राहा–जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाया तृतीयो भेद । प्रज्ञा० ४३ । विक्षिप्ता सन्त एकत्रमीलिता अर्था यस्या सा गाथा, अथवा सामुद्रेण छन्दसा वा निबद्धा वा गाथा । गीयते–पठ्यते मधुराक्षरप्रवृत्त्या गायन्ति वा तामिति गाथा । सूत्र० २६२ ।

गाहावइ–गृहपति–गृहस्वामी । बृ० द्वि० ८६ अ । गृहपति–गृही । भग० २२८ । गृहपति–ऋद्धिमद्विशेष । उपा० १ । गृहपतय–कुटुम्बनायका । भग० ५०२ ।

गाहावइकरडग–गृहपतिकरण्डक–श्रीमत्कौटुम्बिककरण्डक । ठाणा० २७२ ।

गाहावइकुंडे–गाहावत्या अन्तरनद्या' कुण्ड–प्रभवस्थान ग्राहावतीकुण्डनाम कुण्डम् । ज० प्र० ३४५ ।

गाहावइकुलं–गृहपतिकुल–पाटक रथ्या ग्रामादिक वा । आचा० ३३७ । गृहपतिकुल–गृहिगृहम् । भग० ३७४ ।

गाहावइदीवे–ग्राहावतीद्वीप । ज० प्र० ३४६ ।

गाहावइरयण–गृहपतिरत्न–कौटुम्बिकरत्नम् । ज० प्र० २४३ ।

गाहावई–गृहपति–माण्डलिको राजा । भग० ७०० । गृहस्थ । पिण्ड० ४ । गृहपति । आचा० ३३५ । गृहस्य पति–गृहपति, सामान्यत प्राकृतपुरुष । सूत्र० ३६४ । ग्राहा–तन्तुनामानो जलचरा महाकाया सन्त्य स्यामिति ग्राहावती महानदी । ज० प्र० ३४६ ।

गाहावतिरयणे–गृहपति–कोष्ठागारनियुक्त । ठाणा० ३९८ ।

गाहाविया–कृष्टा । आव० ६८७ ।

गाहासोलसग–गाथाषोडशकादीनि स्थितिसूत्रेभ्य आरात्सत सूत्राणि, तत्र सूत्रकृताङ्गस्य प्रथमश्रुतस्कन्धे षोडशाध्ययनानि तेषा च गाथाभिधान षोडशमिति गाथाभिधानमध्ययन षोडश येषा तानि गाथाषोडशकानि । सम० ३२ । गाथाषोडशक–गाथाख्य षोडशमध्ययन यस्मिन् श्रुतस्कन्धे स, सूत्रकृताङ्गस्याद्य श्रुतस्कन्ध । सूत्र० ८ ।

गाहासोलसमे–प्राक्तनपञ्चदशाध्ययनार्थस्य गानाद्गाथा, सूत्रकृताङ्गस्य षोडशमध्ययननाम । सम० ३१ ।

गाहिंति–प्रज्ञापयन्ति । बृ० द्वि० १६४ आ ।

गाहिज्जति–ग्राह्यन्ते । आव० १०१ ।

गाहिंति–ग्राहयति । आव० ३४३ ।

गाहिया–ग्राहिका–अक्लेशेनार्थबोधिका । औप० ७८ ।

गाहीकया–गाथीकृता–पिण्डीकृता । सूत्र० २६२ ।

गाहेंति–भावयति । नि० चू० प्र० ३३८ आ ।

गाहेहिंति–ग्राहयिष्यन्ति–प्रापयिष्यन्ति स्थलेषु स्थापयिष्यन्तीत्यर्थं । भग० ३०९ ।

गिज्झति–गृध्यन्ति प्राप्तस्यासन्तोषेणाप्राप्तस्यापरापरस्याकाङ्क्षानन्तो भवन्तीति । ठाणा० २६३ ।

गिज्झ–गृद्ध–प्रतिबद्ध । दश० २६८ ।

गिज्झवओ–ग्राह्यवाक्य । आदेयवाक्य । आव० २३६ ।

गिज्झह–गृध्यत–गृद्धि प्राप्तभोगेष्वतृप्तिलक्षणा कुरुत । ज्ञाता० १४९ ।

गिज्झियव्व–गर्द्धितव्य–अप्राप्तेष्वाकाङ्क्षाकार्या । प्रश्न० १५९ ।

गिज्झु–ग्राह्य–सवेद्य । उत्त० ४०२ ।

गिणिभमेत्त–उदाहरण । नि० चू० प्र० २६६ आ ।

गिण्हमाणे–बाह्यादावङ्गे गृण्हन् । ठाणा० ३२७ । गृण्हन्–ग्रीवादाववलम्बयन् । ठाणा० ३५३ ।

गिण्हित्तए–ग्रहीतु–आदातु विधातुमित्यर्थ । ज्ञाता० १४६ ।

गिण्हियव्वे–गृह्यते–उपादीयते कार्यार्थिभिरिति ग्रहीतव्य कार्यसाधक इति । उत्त० ६८ ।

गिद्ध–गृध्र–पक्षिविशेष, गृद्धो वा मासलुब्ध शृगालादिर्वा । भग० १२० । गृद्ध–प्राप्ताहारे आसक्तोऽतृप्तत्वेन वा तदाकाङ्क्षावान् । भग० ६५० । विशेषाकाङ्क्षावान् । भग० २९२ । आकाङ्क्षावान् । ज्ञाता० ८५ । मूर्छित । विपा० ३८ । मूर्च्छित, काक्षावान् । आव० ५८७ । गृद्ध–प्राप्तातृप्ति । ठाणा० १४५ ।

गिद्धपट्ठ–गृध्रै स्पृष्ट–स्पर्शन यस्मिस्तद् गृध्रस्पृष्ट, यदिवा गृध्राणा भक्ष्य पृष्ठमुपलक्षणत्वादुदरादि च तद्भक्ष्यकरिकरभादिशरीरानुप्रवेशेन महासत्त्वस्य मुमूर्षोर्यस्मिस्तत् गृध्रप्रष्ठम् । ठाणा० ९३ ।

गिद्धपट्ठठाण–गृध्रपृष्ठस्थानानि–यत्र मुमूर्षवो गृध्रादिभक्षणार्थं–रुधिरादिदिग्धदेहा निपत्यासते । आचा० ४११ ।

गिद्धपिट्ठ–गार्द्धपृष्ठ–अपरमासादिहृदयन्यासाद् गृद्धादिनाऽऽत्मव्यापादनम् । आचा० २६० । गृध्रै स्पृष्ट–स्पर्शन यस्मिस्तत् गृध्रस्पृष्टम्, यदिवा गृध्राणा भक्ष्य पृष्ठमुपलक्षणत्वादुदरादि च मर्तुर्यस्मिस्तद् गृध्रपृष्ठम् । उत्त० २३४ ।

गिद्धपिट्ठमरणं–गृध्रपृष्ठमरण, मरणस्य चतुर्दशो भेद । सम० ३३ । उत्त० २३० ।

गिद्धाइभक्खण–गृद्धा प्रतीतास्ते आदिर्येषा शकुनिकाशिवादिना तैर्भक्षणम् गम्यमानत्वादात्मन तदनिवारणादिना तद्भक्ष्यकरिकरभादिशरीरानु प्रवेशेन च गृध्रादिभक्षणम् । उत्त० २३४ ।

गिद्धापिट्ठ–गृध्रस्पृष्ट गृध्रै स्पर्शन कडेवराणा मध्ये निपत्य गृध्रैरात्मनो भक्षणमित्यर्थं । ज्ञाता० २०५ ।

गिद्धि–गृद्धि–गार्द्ध्यं ममत्व वा । सूत्र० १७१ ।

गिद्धी–गृद्धि–अभिकाङ्क्षा । ठाणा० ४४७ ।

गिम्ह–ग्रीष्म–उष्णकाल । ओघ० २१२ । ग्रीष्म–

ज्येष्ठादि । भग० ४६२ । ग्रीष्म –उष्णकाल । भग० २११ । ग्रीष्म –षष्ठ ऋतु । सूर्य० २०६ । वैशाख-ज्येष्ठौ । ज्ञाता० १६१ । ग्रीष्मकाल –उष्णकाल इत्यर्थ । सूर्य० ६१ ।

गिम्हा–ग्रीष्मा–उष्णकालमासा । ज० प्र० १५० ।

गिरा–गी –वाणी । बृ० द्वि० २५५ आ ।

गिरि–गिरय –गृणन्ति शब्दायन्ते जननिवासभूतत्वेनेति गिरय –गोपालगिरिचित्रकूटप्रभृतय । भग० ३०७ । गिरिशब्देन क्षुद्रगिरयो ग्राह्या । ज० प्र० २२३ । गिरय –दुर्गादिकरणार्थ जनावासयोग्या पर्वता । ज० प्र० २१० । गृणन्ति–शब्दायन्ते जन निवासभूतत्वेनेति गिरय । ज० प्र० १६८ । गिरि –महापाषाण । औप० ८८ ।

गिरिउडे– । नि० चू० १९२ आ ।

गिरिकडग–गिरिकटक –पर्वतनितम्ब । ज्ञाता० २३८ ।

गिरिकण्णइ–वल्लीविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

गिरिगिह–गिरिगृह–पर्वतोपरि गृहम् । ठाणा० २६४ । प्रश्न० १२७ । भग० २०० । आचा० ३६६ ।

गिरिजण्णयं–अवरण्हसखडी । नि० चू० द्वि० १५ अ ।

गिरिजत्ता–गिरियात्रा–गिरिगमनम् । ज्ञाता० ४६ ।

गिरिजन्नो–गिरियज्ञ –उस्सूर मत्तवालसखडी वा । गिरि-यज्ञ –कोकणादिदेशेषु सायाह्नकालभावीप्रकरणविशेष । बृ० द्वि० ९५ आ ।

गिरिणगरं–गिरिनगर नगरविशेष । आव० ५२ । विशे० ४१३ । गिरिनगर–परदारगमने पुरम् । आव० ८२३ ।

गिरिणयर–गिरिसमीपे नगर गिरिनगरम् । अनु० १४९ ।

गिरितडगं–गिरितटक सन्निवेशविशेष. । उत्त० ३७९ ।

गिरिनदी– । ज्ञाता० २५ ।

गिरिपक्खो–गिरिपक्ष –पर्वतपार्श्व । औप० ८८ ।

गिरिपडणे–पर्वतपात । ज्ञाता० २०२ ।

गिरिपुरं–नगरविशेष । उत्त० ३७९ ।

गिरिप्पवात–गिरिप्रपात । आव० ३५० ।

गिरिफुल्लिगा–नगरीविशेष । नि० चू० द्वि० १०० आ ।

गिरिफुल्लिय–गिरिपुष्पितम्, मानपिण्डदृष्टान्ते नगरम् । पिण्ड० १३३, १३४ ।

गिरिमह–पर्वतमह । आचा० ३२८ ।

गिरिराया–सर्वेषामपि गिरीणामुच्चैस्त्वेन तीर्थंकर-जन्माभिषेकाश्रयतया च राजा गिरिराज, मेरुनाम । ज० प्र० ३७५ । गिरिराज, । सूर्य० ७८ ।

गिरिविडकादि–आभरणविशेष । आचा० ३९४ ।

गिरिसरिउवला–गिरिसरिदुपला–गिरिसरित्पाषाणा । आव० ७५ ।

गिरिसरित्परिरय– । आव० ५५२ ।

गिरिसिद्धो–गिरिसिद्ध । दश० ४४ ।

गिरी–जत्थ पव्वए आरूढेहिं अहो पवायट्ठाण दीसइ सो गिरी भण्णइ । नि० चू० द्वि० ५२ अ ।

गिला–ग्लानि । व्य० प्र० १८५ अ ।

गिलाइ–ग्लायति ग्लानो भवति । भग० १२६ । ग्लानि –खेद । भग० २३२ ।

गिलाए–ग्लाति –खेद । भग० २१९ ।

गिलाण–ग्लान । आव० ७८४ । ग्लान –पञ्चम कुडङ्ग । आव० ८५६ । अनीरुज । आव० ८४३ । क्षीणहर्ष, अशक्त इत्यर्थ । ज्ञाता० १८० । अपगतप्रमोद । सूत्र० १३७ । ग्लानो नाम रोगाभिभूत । दश० ३१ । मन्द । ओघ० १४ । जरादिगहितो विमुक्को वा । नि० चू० प्र० १४ आ । विकृष्टतपसा कर्त्तव्यताऽशक्तो वाता-दिक्षोभेण वा ग्लान । आचा० २८१ । मन्दोऽपगतहर्षो वा । उत्त० २४६ ।

गिलाणभत्त–गिलाणस्स दिज्जति त गिलाणभत्त । नि० चू० प्र० २७२ आ । ग्लानभक्त–ग्लानस्य नीरोगतार्थं भिक्षुकदानाय यत् कृत तत् भक्तम् । भग० २३१ । भग० ४६७ । ग्लान सन्नारोग्याय यद् ददाति तद् ग्लानभक्तम् । ज्ञाता० ५२ । औप० १०१ । ग्लानो रोगोपशान्तये यद्ददाति ग्लानेभ्यो वा यद् दीयते तद् । ठाणा० ४६० ।

गिलायं–ग्लान–पर्युषितम् । बृ० प्र० ३१२ आ ।

गिलायति–ग्लायन्ति–श्राम्यन्ति । ठाणा० १३५ ।

गिलासणि–भस्मको व्याधि । आचा० २३५ ।

गिलासिणि–रोगविशेष । नि० चू० द्वि० १४८ अ ।

गिल्लि–वाहनविशेष । उत्त० ४३८ । भग० २३७ ।

हस्तिन उपरि कोल्लररूपा या मानुष गिलतीव । अनु० १५६ । जीवा० २८१ । पुरुषद्वयोत्क्षिप्ता डोलिका । ज० प्र० १२३ ।

गिल्ली–पुरुषद्वयोक्षिप्ता झोल्लिका । सूत्र० ३३० । भग० २३७ ।

गिल्लीओ–हस्तिन् उपरि कोल्लराकारा । भग० ५४७ ।

गिहतर–गिह चेव अतर गिह । दश० चू० ५१ ।

गिहतरनिसिज्जा–गृहान्तरनिषद्या–गृहमेव गृहान्तर गृहयोर्वा अपान्तराल तत्रोपवेशनम् । दश ११७ ।

गिह–गृह–पाशकल्पा पुत्रकलत्रादय । दश० ७३ । गृह–शरण, लयनम् । जीवा० २६६ । सकुड्डगिह । नि० चू० प्र० २६५ अ । वणरायमडिय भवण त चेव वणविवजिय गिह । नि० चू० द्वि० ७० अ । गृह–अस्मद्गृहकल्पम् । जीवा० २७६ । गृह–अपवरकादिमात्रम् । ठाणा० २६४ । अवस्थितप्रासादरूपम् । उत्त० ३८६ । गृह सामान्यवेश्म । उत्त० ३०८ ।

गिहकम्म–गृहनिष्पत्त्यर्थं कम गहकर्म इष्टकामृदानयनादि । उत्त० ६६५ ।

गिहत्थ–गहस्थ–गृहलिंगे तिष्ठतीति गहस्थ । व्य० द्वि० २७ आ ।

गिहत्थससट्ठ–गृहस्थससृष्टम् । आव० ८५४ ।

गिहदुवार–अग्गदार पावेमित त गिहदुवार भण्णति । नि० चू० प्र० १६२ अ ।

गिहमुह–अग्गिमालिंदयो छद्दारुआलिंदो एते दो वि गिहमुह । नि० चू० प्र० १६२ अ ।

गिहवइ–गृहपति धनाभिप । आव० २६४ । गृहपति अवग्रहे तृतीयो भेद । आचा० ४०२ । गृहपति –सामान्यमण्डलाधिपति । बृ० प्र० १०८ अ ।

गिहवती–शय्यादाता । ठाणा० ३४० ।

गिहवास–गृहमेव वा पारवश्यहेतुतया पाश गृहपाश । उत्त० ६६४ । गृहवास–गृहावस्थानम् । उत्त० ६६४ ।

गिहावत्तण–गृहेष्वागमन गृहापतनम् । जीवा० ३४४ ।

गिहाययण–गृहेपु तेपामायतनं गमन गृहायतनम् । जीवा० २७६ ।

गिहि–गृही–भद्रक । ओघ० ५७, १०५ । असयंत । दश० २३६ । सकलत्र । दश० २६० ।

गिहिचेतिय–पडिमा । नि० चू० द्वि० ६६ आ ।

गिहिजोग–गृहियोग–गृहसम्बन्ध तद्बालग्रहणादिरूप गृहिव्यापारो वा प्रारम्भरूप । दश० २३१ । गिहीहिं मम जोग–मसग्गि, गिहिकम्म जोगो वा । दश० चू० १२२ ।

गिहिणिसेज्जा–पलियकादी । नि० चू० द्वि० ६५ अ ।

गिहिधम्म–गृहस्थधर्म एव श्रेयानित्याभिमधाय तद्यथोक्तचारिणो गृहिधर्म्मा । अनु० २५ । गृहिधर्म एव श्रेयानित्यभिसन्धेर्देवातिथिदानादिरूपगृहस्थधर्मानुगता । औप० ६ । गृहिधर्मा–गृहस्थधर्म एव श्रेयानित्यभिसन्धाय तद्यथोक्तकारी । ज्ञाता० १६५ ।

गिहिधम्मचितए– । ज्ञाता० १६५ ।

गिहिभायण–गृहिभाजन स्थाल्यादि । सम० ३६ ।

गिहिमत्तो–घटीकरगादि । नि० चू० द्वि ६४ आ । गृहिमात्र–गृहस्थभाजनम् । दश० ११७ ।

गिही–गृद्धि –अभिष्वङ्गलक्षणा । आव० ६५८ । अधाभद्रक । नि० चू० प्र० १४७ अ ।

गिहेलुग–गिहेलुक–उम्बर । आचा० ३६७ ।

गीअ–गीतिका–पूर्वार्द्धसदृशाऽपरार्धलक्षणा आर्या । ज० प्र० १३८ ।

गीइय– । ज्ञाता० ३८ ।

गीई–गीतेन सूत्रेण केवलेन सम्यक् पठितेन गीतमस्यास्तीति गीति । बृ० प्र० ११२ अ ।

गीतजसे– । ठाणा० ४०६ ।

गीतत्थो–गृहीतार्थ । नि० चू० प्र० ७६ आ ।

गीतयशस–गन्धर्वभेदविशेष । प्रज्ञा० ७० ।

गीतरतय–गन्धर्वभेदविशेष । प्रज्ञा० ७० ।

गीतरती–गन्धर्वेन्द्र । उत्त० ४२५ । ठाणा० ८५ ।

गीतिया–गीतिका–गानविशेष । आ० ५५७ ।

गीय–गीन–स्वरग्रामानुगतगीतिकानिबद्धम्, शब्दितम् । उत्त० २८७ । गीत–गानमात्रम् । भग० ३२३ । ज्ञाता० ३८ । रागगीत्यादिकम् । ज० प्र० ३६ ।

गीयजसे–गीतयश –उत्तरनिकाये अष्टमो व्यन्तरेन्द्र । भग० १५८ । ठाणा० ८५ ।

गीयत्थ–गीतार्थ –वस्त्रपात्रपिंडैषणाध्ययनादिच्छेदसूत्राणि च सूत्रतोऽर्थतस्तदुभयतो वा येन सम्यगधीतानि स गीतार्थ । व्य० प्र० २४ आ । स्वय व्यवहारमवबुद्धयते प्रति पद्यमानो वा प्रतिपद्यते व्यवहार स गीतार्थ । व्य० प्र० ६ आ । सूत्रार्थतदुभयविद, अन्यथा हेयोपादेयपरिज्ञान-योगात् ते एतादृशा एवविधा गीतार्था गणावच्छेदिन । व्य० प्र० १७२ अ ।

गीयरइपिय–गीतरतिप्रिय –गीतेन या रती–रमण क्रीडा सा प्रिया येषा गीतरतयो वा लोका प्रिया येषा ते । औप० ६२ ।

गीयरई–गीतरति –दक्षिणनिकाये अष्टमो व्यन्तरेन्द्र । भग० १५८ ।

गीयसद्दं–गीतशब्द–पञ्चमादिहुङ्कृतिरूपम् । ठाणा० ४०६ ।

गीया–गीतार्था–वृषभा । व्य० प्र० २५१ ।

गुंगुयंता–कान्दिशीका । उत्त० १७६ ।

गुंजत–गुञ्जन्त शब्दविशेष विदधाना । जीवा० १८८ । शब्दायमाना । ज्ञाता० २७ ।

गुंज–गुञ्जा–रक्तिका । ज० प्र० ३४ ।

गुजद्धरागे–गुञ्जा तस्या अर्धरागो गुञ्जार्धराग । प्रज्ञा० ३६१ ।

गुंजा–गुञ्जा–भम्मा । आचा० ७४ । आतोद्यविशेष । प्रश्न० ५१ । चणोठिया । अनु० १५५ ।

गुंजालिका–सारिण्येव वक्रा । अनु० १४६ ।

गुजालिका –दीर्घा गम्भीरा कुटिला श्लक्ष्णा जलाशया । आचा० ३८२ ।

गुंजालिया–गुञ्जालिका वक्रसारिण्य । भग० २३८ । औप० ६३ । वक्रा नदी। प्रज्ञा० २६७। वक्रसारणी। प्रश्न० ६० । वक्रसारिणी । ज्ञाता० ६७ । नद्य एव वक्रा गुञ्जालिका । प्रज्ञा० ७२ । अन्नेऽन्ने कवाडस-जुत्ताओ गुजालिया भन्नति । नि० चू० द्वि० ७० आ ।

गुंजालियाओ–सारण्यस्ता एव वक्रा गुञ्जालिका । ज० प्र० ४१ ।

गुजावाए–गुञ्जा–भम्मा तद्वत् गुञ्जन् यो वाती स गुञ्जा-वात । आचा० ७४ । यो गुञ्जन्–शब्द कुर्वनु वाति गुञ्जावात । जीवा० २६ । प्रज्ञा० ३० ।

गुंजावाता–ये गुञ्जतो वान्ति । उत्त० ६९४ ।

गुंजावाय–गुञ्जन् सशब्द यो वाति स गुञ्जवात । भग० १९६ ।

गुंजिए–गुञ्जित–निर्घातविकारो गुञ्जावद्गुञ्जितो महा-ध्वनि । आव० ७३६ ।

गुंजितं–निर्घात –तस्सेव विकारो गुजावत् । गुजमानो महाध्वनि । नि० चू० तृ० ७० आ ।

गुंजीवल्ली–वल्लीविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

गुज्जित–गुजावत् गुजमानो महाध्वनिर्गुंजितम् । व्य० द्वि० २४१ आ ।

गुंठा–मायाविन । व्य० प्र० २५५ । गुठा–माया । व्य० प्र० २५६ ।

गुंठो–वाहणा गुठादि गुठो घोडगो । नि० चू० तृ० ३७ आ । घोटको महिषो वा । बृ० द्वि० १२५ आ ।

गुंडिज्जइ–गुण्डयते । आव० ६२५ ।

गुंडिय–गुण्डित–परिकरिता । प्रश्न० ४७ । गुण्डित । ज्ञाता० ६१ ।

गुंतरुक्ख– । भग० ८०३ ।

गुंद–वृक्षफलविशेष । आव० ८२८ ।

गुआर– । ज० प्र० १६४ ।

गुग्गुलभगवं–गुग्गुलभगवान् । आव० ७१२ ।

गुग्गुलमार– । आव० ७१२ ।

गुच्छ–वृन्ताकीप्रभृति । जीवा० २६, १८८ । गुच्छ–वृन्ताकीसल्लकीकर्पास्यादिक । आचा० ३० । पत्रसमूह । भग० ३७ । ज० प्र० २५ । गुच्छा –वृन्ताकीप्रभृतय । भग० ३०६ । ज० प्र० ३० । जीवा० २६ ।

गुच्छगलइअगुलिओ–अङ्गुलिभिर्लातो–गृहीतो गोच्छको येन सोऽयमङ्गुलिलातगोच्छक । उत्त० ५४० ।

गुच्छय–गोच्छक–पात्रकोपरिवर्त्युपकरणम् । उत्त० ५४० ।

गुच्छा–वृन्ताक्यादय । औप० ८ । गुच्छा –वृन्ताकी-प्रभृतय । प्रज्ञा० ३० । ज्ञाता० २८ । पल्लवसमूहा । ज्ञाता० २८ ।

गुच्छिय–सञ्जातगुच्छम् । भग० ३७ ।

गुज्झ–गुह्य–रहस्यम् । विपा० ४० । लज्जनीयव्यवहार-

गोपितम् । ज्ञाता० १२ । गुह्य गोपनीयत्वात्, अब्रह्मणस्य चतुर्विंशतितम नाम । प्रश्न० ६६ । गुह्य –वहिर्जनाप्रकाशनीय । राज० ११६ । गुह्य–लज्जनीयव्यवहारगोपनम् । भग० ७३९ ।

गुज्झक्खिणी–स्वामिनी । बृ० तृ० १७१ आ ।

गुज्झग–गुह्यकम् । ओघ० १६० ।

गुज्झगा–गुह्यक भवनवासिन । दश० २४६ ।

गुज्झगो–गुह्यक –देव । आव० ६३४ । देवविशेष । पिण्ड १३१ । वैमानिक । आव० ८१३ ।

गुज्झदेसो–गुह्यदेश । जीवा० २७० ।

गुज्झाणुचरिअ–गुह्यानुचरित सुरसेवितमित्यर्थं । दश० २२३ ।

गुट्ठ–स्तम्व । उपा० २२ ।

गुट्ठी–गोष्ठी–दत्तवासुदेवनिदानकारणम् । आव० १६३ टी ।

गुडधाना– । ठाणा० ११८ । सूर्य० २९३ ।

गुडपर्पटिका– । सूर्य० २९३ ।

गुडसत्थ–गुडशस्त्र–नगरविशेष । आव० ४११ ।

गुडा–तनुत्राणविशेष । प्रश्न० ४७ । महाँस्तनुत्राणविशेष । विपा० ४६ ।

गुडिया– । नि० चू० प्र० ३ आ ।

गुडेण– । नि० चू० प्र० ३४८ आ ।

गुण–गुण्यते–भिद्यते विशेष्यतेऽनेन द्रव्यमिति गुण । आचा० ९९ । आत्मा वा शब्दाद्युपयोगानन्यत्वाद् गुण । आचा० ९९ । रसना । आचा० ३६३ । स्वभाव –यथोपयोगस्वभाव । सम० ११२ । गुणशब्दोऽशपर्यायें । अनु० १११ । ज्ञानादि रूपादिश्च । अनु० १०५ । ज्ञानम् । उत्त० ७० । आचा० ८० । अनु० २६९ । प्रशस्तता । ज्ञाता० १२ । कटिसूत्रम् । ज्ञाता० ३५ । कान्तिलक्षण । ज्ञाता० ३५ । क्षान्त्यादि । आव० ४९ । विविधार्थसवादनलक्षण । सम० १२४ । उत्तरगुणो भावनादिरूप । प्रज्ञा० ३९९ । स्वाध्यायध्यानादि । आव० २६५ । कडीसुत्तय । नि० चू० प्र० २५४ आ । निरवद्यानुष्ठानरूप । आचा० ३३ । सौभाग्यादिक । भग० ११९ । गुण –गुणव्रतम् । भग० १३६ । प्रियभाषित्वादि । ज्ञाता० ४३ । सौन्दर्यादि । ज्ञाता० २२० । सयमगुण । भग० १३६ । कार्यं दाक्षिण्यादि । भग० १४८ । दर्शनज्ञाने । विशे० २ । निर्जराविशेष । ज्ञाता० ७३ । गुण –शब्दादिक । आचा० ६२ । गुण –ज्ञानादि । सूर्य० ५ । अनन्तगमपर्यायवस्त्वमुच्चारण वा । सूत्र० ७ । मूलोत्तरगुणभूत । सूत्र० ४०० । उपकार । प्रश्न० ३६ । गुणव्रतम् । औप० ८२ । सहवर्त्ती । औप० ११७ । पर्याय विशेष धर्मश्च । प्रज्ञा० १७९ । रक्तसूत्ररूप । जीवा० २०५ । क्षान्त्यादि । जीवा० २७४ । सुरूपादि । आव० ५८५ । प्रशस्तत्वम् । प्रश्न० ७४ । वर्णादि सहभावी धर्म्म एव । प्रश्न० ११७ । ऐहिकामुष्मिकोपकारा । प्रश्न० १२३ । निर्विभागो भाग । ज० प्र० १२९ । धर्म्म । ठाणा० ३३४ । गुणा –सयमगुणा । निरय० २ । गुण्यन्ते सख्यायन्त इति गुणा –पिण्डविशुद्धयाद्युत्तरगुणरूपा । विशे० २ । गुणा –रूपादय । उत्त० ५५७ । गुण–गुणव्रतम् । भग० ३२३ ।

गुणओ–गुणत –कार्यत –कार्यमाश्रित्येत्यर्थं । ठाणा० ३३३ ।

गुणकरण–गुणाना करण गुणकरण, गुणाना कृति । आव० ४६६ । तपकरण–अनशनादि सयमकरण च पञ्चाश्रवविरमणादि गुणकरणमुच्यते । उत्त० २०५ ।

गुणकरो–गुणकर –गुणा –ज्ञानादयस्तत्करणशील, भावकरविशेष । आव० ४९९ ।

गुणकल्पना– । आचा० ५५ ।

गुणकारोत्ति–गुणकारस्तेन यत्सङ्ख्यान तत्तथैवोच्यते । तच्च प्रत्युपन्नमिति लोकरूढम्, अथवा यावत कुतोऽपि तावत एव गुणकराद्याहच्छिकादित्यर्थ । ठाणा० ४९७ ।

गुणचंद–गुणचन्द्र –चन्दावतसकराज्ञ प्रियदर्शनाराज्ञ्यो ज्येष्ठ पुत्र । आव० ३६६ । आधाकर्मानुमोदनाया श्रीनिलयनगरे राजा । पिण्ड० ४९ । आधाकर्मपरिभोगे शतमुखपरे श्रेष्ठी । पिण्ड० ७४ । गोचरविषयोपयुक्तताया सागरदत्तश्रेष्ठिपुत्र । पिण्ड० ७८ । उत्कृष्टमालापहृतविवरणे साधु । पिण्ड० १०९ । मानपिण्डोदाहरणे क्षुल्लक । पिण्ड० १३४ । प्रज्ञा० ४४१ ।

गुणचूड–गोचरविषयोपयुक्तताया सागरदत्तश्रेष्ठीपुत्र । पिण्ड० ७८ ।

गुणट्ठीए–गुणार्थी–रन्धनपचनप्रकाशातापनाद्यग्निगुणप्रयो-

गीयत्थ–गीतार्थ –वस्त्रपात्रपिंडैषणाध्ययनादिच्छेदसूत्राणि च सूत्रतोऽर्थतस्तदुभयतो वा येन सम्यगधीतानि स गीतार्थं । व्य० प्र० २४ आ । स्वय व्यवहारमवबुद्धयते प्रति पद्यमानो वा प्रतिपद्यते व्यवहार स गीतार्थं । व्य० प्र० ६ आ । सूत्रार्थतदुभयविद , अन्यथा हेयोपादेयपरिज्ञान-योगात् ते एतादृशा एवविधा गीतार्था गणावच्छेदिन । व्य० प्र० १७२ अ ।

गीयरइपिय–गीतरतिप्रिय –गीतेन या रती–रमण क्रीडा सा प्रिया येषा गीतरतयो वा लोका प्रिया येषा ते । औप० ६२ ।

गीयरई–गीतरति –दक्षिणनिकाये अष्टमो व्यन्तरेन्द्र । भग० १५८ ।

गीयसद्दं–गीतशब्द–पञ्चमादिहुङ्कृतिरूपम् । ठाणा० ४०६ ।

गीया–गीतार्था–वृषभा । व्य० प्र० २५१ ।

गुंगुयंता–कान्दिशीका । उत्त० १७६ ।

गुंजत–गुञ्जन्त शब्दविशेष विदधाना । जीवा० १८८ । शब्दायमाना । ज्ञाता० २७ ।

गुंज–गुञ्जा–रक्तिका । ज० प्र० ३४ ।

गुजद्धरागे–गुञ्जा तस्या अर्धरागो गुञ्जार्धराग । प्रज्ञा० ३६१ ।

गुजा–गुञ्जा–भम्मा । आचा० ७४ । आतोद्यविशेष । प्रश्न० ५१ । चणोठिया । अनु० १५५ ।

गुंजालिका–सारिण्येव वक्रा । अनु० १४६ ।

गुजालिका –दीर्घा गम्भीरा कुटिला श्लक्ष्णा जलाशया । आचा० ३८२ ।

गुंजालिया–गुञ्जालिका वक्रसारिण्य । भग० २३८ । औप० ६३ । वक्रा नदी । प्रज्ञा० २६७ । वक्रसारणी । प्रश्न० ६० । वक्रसारिणी । ज्ञाता० ६७ । नद्य एव वक्रा गुञ्जालिका । प्रज्ञा० ७२ । अन्नेऽन्ने कवाडस-जुत्ताओ गुजालिया भन्नति । नि० चू० द्वि० ७० आ ।

गुंजालियाओ–सारण्यस्ता एव वक्रा गुञ्जालिका । ज० प्र० ४१ ।

गुंजावाए–गुञ्जा–भम्मा तद्वत् गुञ्जन् यो वाती स गुञ्जा-वात । आचा० ७४ । यो गुञ्जन्–शब्द कुर्वन् वाति गुञ्जावात । जीवा० २९ । प्रज्ञा० ३० ।

गुंजावाता–ये गुञ्जतो वान्ति । उत्त० ६९४ ।

गुजावाय–गुञ्जन् सशब्द यो वाति स गुञ्जवात । भग० १९६ ।

गुंजिए–गुञ्जित–निर्घातविकारो गुञ्जावद्गुञ्जितो महा-ध्वनि । आव० ७३६ ।

गुजितं–निर्घात –तस्सेव विकारो गुजावत् । गुजमानो महाध्वनि । नि० चू० तृ० ७० आ ।

गुंजीवल्ली–वल्लीविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

गुंज्जित–गुजावत् गुजमानो महाध्वनिर्गुंजितम् । व्य० द्वि० २४१ आ ।

गुठा–मायाविन । व्य० प्र० २५५ । गुठा–माया । व्य० प्र० २५६ ।

गुंठो–वाहणा गुठादि गुठो घोडगो । नि० चू० तृ० ३७ आ । घोटको महिषो वा । बृ० द्वि० १२५ आ ।

गुंडिज्जइ–गुण्डयते । आव० ६२५ ।

गुंडिय–गुण्डित–परिकरिता । प्रश्न० ४७ । गुण्डित । ज्ञाता० ६१ ।

गुंतरुक्ख– । भग० ८०३ ।

गुंद–वृक्षफलविशेष । आव० ८२८ ।

गुआर– । ज० प्र० १९४ ।

गुग्गुलभगवं–गुग्गुलभगवान् । आव० ७१२ ।

गुग्गु र– । आव० ७१२ ।

गुच्छ–वृन्ताकीप्रभृति । जीवा० २६, १८८ । गुच्छ –वृन्ताकीसल्लकीकर्पास्यादिक । आचा० ३० । पत्रसमूह । भग० ३७ । ज० प्र० २५ । गुच्छा –वृन्ताकीप्रभृतय । भग० ३०६ । ज० प्र० ३० । जीवा० २६ ।

गुच्छगलइअगुलिओ–अङ्गुलिभिर्लातो–गृहीतो गोच्छको येन सोऽयमङ्गुलिलातगोच्छक । उत्त० ५४० ।

गुच्छय–गोच्छक–पात्रकोपरिवर्त्युपकरणम् । उत्त० ५४० ।

गुच्छा–वृन्ताक्यादय । औप० ८ । गुच्छा –वृन्ताकी-प्रभृतय । प्रज्ञा० ३० । ज्ञाता० २८ । पल्लवसमूहा । ज्ञाता० २८ ।

गुच्छिय–सञ्जातगुच्छम् । भग० ३७ ।

गुज्झ–गुह्य–रहस्यम् । विपा० ४० । लज्जनीयव्यवहार-

गोपितम् । ज्ञाता० १२ । गुह्य गोपनीयत्वात्, अब्रह्मणस्य चतुर्विंशतितम नाम । प्रश्न० ६६ । गुह्य –बहिर्जनाप्रकाशनीय । राज० ११६ । गुह्य–लज्जनीयव्यवहारगोपनम् । भग० ७३९ ।

गुज्झविखणी–स्वामिनी । बृ० तृ० १७१ आ ।

गुज्झग–गुह्यकम् । ओघ० १६० ।

गुज्झगा–गुह्यक भवनवासिन । दश० २४६ ।

गुज्झगो–गुह्यक –देव । आव० ६३४ । देवविशेष । पिण्ड १३१ । वैमानिक । आव० ८१३ ।

गुज्झदेसो–गुह्यदेश । जीवा० २७० ।

गुज्झाणुचरिअ–गुह्यानुचरित सुरसेवितमित्यर्थं । दश० २२३ ।

गुट्ठ–स्तम्ब । उपा० २२ ।

गुट्ठी–गोष्ठी–दत्तवासुदेवनिदानकारणम् । आव० १६३ टी ।

गुडधाना– । ठाणा० ११८ । सूर्य० २९३ ।

गुडपर्पटिका– । सूर्य० २९३ ।

गुडसत्थ–गुडशस्त्र–नगरविशेष । आव० ४११ ।

गुडा–तनुत्राणविशेष । प्रश्न० ४७ । महाँस्तनुत्राणविशेष । विपा० ४६ ।

गुडिया– । नि० चू० प्र० ३ आ ।

गुडेण– । नि० चू० प्र० ३४८ आ ।

गुण–गुण्यते–भिद्यते विशेष्यतेऽनेन द्रव्यमिति गुण । आचा० ९९ । आत्मा वा शब्दाद्युपयोगानन्यत्वाद् गुण । आचा० ९९ । रसना । आचा० ३६३ । स्वभाव –यथोपयोगस्वभाव । सम० ११२ । गुणशब्दोऽशपर्यायं । अनु० १११ । ज्ञानादि रूपादिश्च । अनु० १०५ । ज्ञानम् । उत्त० ७० । आचा० ८० । अनु० २६९ । प्रशस्तता । ज्ञाता० १२ । कटिसूत्रम् । ज्ञाता० ३५ । कान्तिलक्षण । ज्ञाता० ३५ । क्षान्त्यादि । आव० ४९ । विविधार्थसवादनलक्षण । सम० १२४ । उत्तरगुणो भावनादिरूप । प्रज्ञा० ३९९ । स्वाध्यायध्यानादि । आव० २६५ । कडीसुत्तय । नि० चू० प्र० २५४ आ । निरवद्यानुष्ठानरूप । आचा० ३३ । सौभाग्यादिक । भग० ११९ । गुण –गुणव्रतम् । भग० १३६ । प्रियभाषित्वादि । ज्ञाता० ४३ । सौन्दर्यादि । ज्ञाता० २२० । सयमगुण । भग० १३६ । कार्यं दाक्षिण्यादि । भग० १४८ । दर्शनज्ञाने । विशे० ७ । निर्जराविशेष । ज्ञाता० ७३ । गुण –शब्दादिक । आचा० ६२ । गुण –ज्ञानादि । सूर्य० ५ । अनन्तगमपर्यायवत्त्वमुच्चारण वा । सूत्र० ७ । मूलोत्तरगुणभूत । सूत्र० ४०० । उपकार । प्रश्न० ३६ । गुणव्रतम् । औप० ८२ । सहवर्त्ती । औप० ११७ । पर्याय विशेष धर्मश्च । प्रज्ञा० १७९ । रक्तसूत्ररूप । जीवा० २०५ । क्षान्त्यादि । जीवा० २७४ । सुरूपादि । आव० ५८५ । प्रशस्तत्वम् । प्रश्न० ७४ । वर्णादि सहभावी धर्म्म एव । प्रश्न० ११७ । ऐहिकामुष्मिकोपकारा । प्रश्न० १२३ । निर्विभागो भाग । ज० प्र० १२९ । धर्म्म । ठाणा० ३३४ । गुणा –सयमगुणा । निरय० २ । गुण्यन्ते सख्यायन्त इति गुणा –पिण्डविशुद्धयाद्युत्तरगुणरूपा । विशे० २ । गुणा –रूपादय । उत्त० ५५७ । गुण–गुणव्रतम् । भग० ३२३ ।

गुणओ–गुणत –कार्यत –कार्यमाश्रित्येत्यर्थं । ठाणा० ३३३ ।

गुणकरण–गुणाना करण गुणकरण, गुणाना कृति । आव० ४६६ । तपकरण–अनशनादि सयमकरण च पञ्चाश्रवविरमणादि गुणकरणमुच्यते । उत्त० २०५ ।

गुणकरो–गुणकर –गुणा –ज्ञानादयस्तत्करणशील, भावकरविशेष । आव० ४९९ ।

गुणकल्पना– । आचा० ५५ ।

गुणकारोत्ति–गुणकारस्तेन यत्सङ्ख्यान तत्तथैवोच्यते । तच्च प्रत्युपन्नमिति लोकरूढम्, अथवा यावत कुतोऽपि तावत एव गुणकराद्यादृच्छिकादित्यर्थं । ठाणा० ४९७ ।

गुणचद–गुणचन्द्र –चन्दावतसकराज्ञ प्रियदर्शनाराज्ञ्यो ज्येष्ठ पुत्र । आव० ३६६ । आधाकर्मानुमोदनाया श्रीनिलयनगरे राजा । पिण्ड० ४९ । आधाकर्मपरिभोगे शतमुखपुरे श्रेष्ठी । पिण्ड० ७४ । गोचरविषयोपयुक्तताया सागरदत्तश्रेष्ठिपुत्र । पिण्ड० ७८ । उत्कृष्टमालापहृतविवरणे साधु । पिण्ड० १०९ । मानपिण्डोदाहरणे क्षुल्लक । पिण्ड० १३४ । प्रज्ञा० ४४१ ।

गुणचूड–गोचरविषयोपयुक्तताया सागरदत्तश्रेष्ठीपुत्र । पिण्ड० ७८ ।

गुणट्ठीए–गुणार्थी–रन्धनपचनप्रकाशातापनाद्यग्निगुणप्रयो-

जनत्वात् । आचा० ५३ ।

गुणतत्तिला–गुणग्राहका । नदी० ६४ ।

गुणदेश–गुणोद्देशा । प्रश्न० १०२ ।

गुणना–परावर्तना । वृ० प्र० २३३ अ ।

गुणनिकाकाले– । ठाणा० २५७ ।

गुणनिप्फन्नं–गुणनिष्पन्नम् । ज्ञाता० ४१ ।

गुणनी– । नदी० १६६ ।

गुणभावणा–गुणभावना । आव० ४८४ ।

गुणभूई–गुणभूति-अचिन्त्या गुणसम्पत् । आव० २३७ ।

गुणभूतत्वम्– । दश० ५७ ।

गुणमह–गुणैर्महान्–उपशमक । आव० ८३ ।

गुणमित्र–*आधाकर्मण अभोज्यतायां उग्रतेजस पुत्र* । पिण्ड० ७१ ।

गुणयारो–गुणकार । सूर्य० ११४ ।

गुणरयणं–गुणरत्न तप कर्म । अनु० १ । गुणरत्नसवत्सराभिधस्तपोविशेष, तपोविशेष । अन्त० ३. १८ ।

गुणरयणचन्निका–गुणरत्नचाकचिक्या–गुणरत्नमण्डिता । चउ० ।

गुणरयणसंवच्छर–गुणाना–निर्जराविशेपाणा रचन–करण सवत्सरेण सत्रिभागवर्पेण यस्मिंस्तपसि तद् गुणरचनसवत्सरम्, गुणा एव वा रत्नानि यत्र स तथा गुणरत्न सवत्सरो यत्र तद् गुणरत्नसवत्सर तप । भग० १२५ । ज्ञाता० ७३ ।

गुणवतो–गुणवन्त–पिण्डविशुद्धयाद्युत्तरगुणोपेता । आचा० ३५० ।

गुणवती–गुणचन्द्रस्य राज्ञी । पिण्ड० ४६ ।

गुणविरिय–ज ओसहीण तित्तकडुयकसायअविलमहुरगुणताए रोगावणयणसामत्थ एत गुणविरिय । नि० चू० प्र० १६ अ ।

गुणव्वत–गुणव्रत–दिग्व्रतोपभोगपरिभोगव्रतलक्षण । ठाणा० २३६ ।

गुणशतकलित.–प्रश्रयादिगुणोपेत सूरि । आचा० ३ ।

गुणशेखर–गोचरविपयोपयुक्तताया सागरदत्तश्रेष्ठिपुत्र । पिण्ड० ७८ ।

गुणश्रेणि.– । प्रज्ञा० ६०८ ।

गुणश्रेणिरचना– । भग० १८ ।

गुणसंकर–गुणसमुदायरूप । ज्ञाता० १६८ ।

गुणसङ्क्रम– । उत्त० ५८० ।

गुणसमिय–गुणयुक्तोऽप्रमत्ततया यति गुणसमित । आचा० २१७ ।

गुणसमृद्ध–महावलराजधानी । पिण्ड० ४७ ।

गुणसागर–गोचरविषयोपयुक्तताया गुणचन्द्रपुत्र । पिण्ड० ७८ ।

गुणसिद्धी–गुणसिद्धि–अन्वर्थसम्वन्ध । दश० ७१ ।

गुणसिलं–गुणशिल राजगृहे चैत्यविशेष । उत्त० १५८ । उपा० ४८ । विपा० ८९ । गुणशिल राजगृहनगरे चैत्यम् । भग० ६, ३२३, ३७६, ५०२, ७३६, ७५० । ज्ञाता० ३६ । आव० ३२५ । अनुत्त० १७७ । अन्त० १८ । गुणशिल–वर्धमानस्यामिन समवसरणस्थानम् । उद्यानविशेप । व्य० प्र० १७४ अ ।

गुणसिलय–राजगृहे चैत्यम् । आव० ३१४ ।

गुणसिला–गुणशिला–स्कन्दकचरित्ते राजगृहनगरे चैत्यम् । भग० ११२ ।

गुणसेढीयं–गुणश्रेणी–क्षपणोपक्रमविशेषरूपा । सामान्यत किल कर्मवहल्पमल्पतरमल्पतम चेत्येव निर्जरणाय रचयति, यदा तु परिणामविशेषात् तत्र तथैव रचिते कालन्तरवेद्यमल्प वहू वहुतर वहुतमं चेत्येव निर्जरणाय तदा सा गुणश्रेणीत्युच्यते । औप० ११३ ।

गुणसेन–गोचरविपयोपयुक्तताया सागरदत्तश्रेष्ठिपुत्र । पिण्ड० ७८ ।

गुणस्थानक– । ठाणा० ५३ ।

गुणा–सौभाग्यादय, अथवा लक्षणव्यञ्जनयोर्ये गुणा । ठाणा० ४६१ । चारित्रविशेपरूपा । सम० ४६ । शेपमूलगुणा उत्तरगुणाश्च । सम० १२७ । ज्ञानादय । सम० १२४ । प्रभावा । सम० १२५ । साधनभूता उपकारका । उत्त० ४१६ । पिण्डविशुद्धयादय । उत्त० ५६७ । विपा० ४५ । सन्त मुनय पदार्था वा । आव० ७६० । रसादिका सयमगुणा वा । आव० ८५० । कार्याणि । प्रश्न० ७४ । शुक्लादय । विशे ३५६ । गुणव्रतानि । सम० १२० । भग० ३६८ । महर्द्धिप्राप्त्यादय शकन्वा-

दिदर्शनात् । सम० १५७ । । पर्यवा धर्म्मा विशेषा वा । भग० ८८६ । गुणा – करुणादय । औप० ३३ । क्षान्त्यादय । ज० प्र० ११३ । गुणा – सप्तविंशतिरनगारगुणा । प्रश्न० १४५ । गुणास्तु पुद्गलानुवर्तिन पर्याया । विशे० ३६२ ।

गुणागुणे–ऋजुता । आचा० ८६ ।

गुणाण विराहणा–गुणाना विराधना हिंस्यप्राणिगतगुणाना हिंसकजीवचारित्रगुणाना वा विराधना-खण्डना । प्रश्न० ६।

गुणालय–गोचरविषयोपयुक्तताया सागरदत्तस्य वास्तव्यपुरम् । पिण्ड० ७८ ।

गुणिता–अधीता । ओघ० ५३ ।

गुणत्तर–भवस्थकेवलिसुह । नि० चू० तृ० २४ आ ।

गुणत्तरत्तर–मोक्खसुह । नि० चू० तृ० २४ आ ।

गुणत्तरधरो–गुणेषूत्तरा –प्रधाना गुणोत्तरा ज्ञानादयस्तान् धारयतीति गुणोत्तरधर । उत्त० ३५७ ।

गुणुद्देसो–गुणोद्देश –गुणदेश । प्रश्न० १०२ ।

गुण्यते–भिद्यते । आचा० ६६ ।

गुत्त–गुप्त–युक्तम् । प्रश्न० १३४ । वृत्त्या फलहकेन वा वृत्तम् । बृ० द्वि० १८१ आ । गुप्त –अभेदवृत्ति । भग० १६४ । प्राकाराद्यावृता । भग० ३१३ । न स्वामिभेदकारिण । पराप्रवेश्या । जीवा० २६० । गुप्तिभि –वसत्यादिभि । ज० प्र० १४८ । तिसृभिर्गुप्तिभिर्गुप्त । सूत्र० २६८ । समूढ । ओघ० ११६ । प्रविष्ट । नि० चू० प्र० १७२ आ । गा त्रायत इति गोत्र–साधुत्वम् । सूत्र० ४१३ । प्राकारवेष्टितत्वाद् गुप्तम् । ठाणा० ३१२ । गोत्र–कुलम्, नामानि । ठाणा० २६४ ।

गुत्तदुवारा–गुप्तद्वारा–कपाटादियुक्तद्वारा । भग० ३१३ ।

गुत्तदुवारे–द्वाराणा स्थगित्वाद् गुप्तद्वारम् । ठाणा० ३१२ ।

गुत्तपालिय–गुप्तपालिका –तदन्यतो व्यावृत्तमनोवृत्तिका मण्डलिका । भग० १६४ । गुप्ता–पराप्रवेश्या पालि – सेतुर्यस्य स । जीवा० २६० ।

गुत्तबमचारी वसत्यादिनवब्रह्मचर्यगुप्तियोगात् । ज्ञाता० १०३ ।

गुत्ता–गुप्ता–पराप्रवेश्या । राज० ११३ । वृत्त्या कुड्येन वा परिक्षिप्ता । बृ० प्र० ३१० अ ।

गुत्तागुत्तिंदिय–गुप्तागुप्तेन्द्रिय –गुप्तानि शब्दादिषु रागादिनिरोधाद् अगुप्तानि च आगमश्रवणेर्यासमित्यादिष्वनिरोधादिन्द्रियाणि येषा ते । औप० ३५ ।

गुत्तिंदिय–गुप्तेन्द्रिय शब्दादिषु रागादिरहित इत्यर्थ । औप० ३५ ।

गुत्ति–रक्षा । बृ० द्वि० १२६ आ । गोपन गुप्ति – सम्यग्योगनिग्रह । प्रवचनविधिना मार्गव्यवस्थापनमुन्मार्गगमननिवारण गुप्ति । उत्त० ५१४ ।

गुत्तिसेण–गुप्तिसेन । सम० १५३ ।

गुत्ती–गुप्ति –प्रविचाराप्रविचाररूपा । आव० ५७२ । सूत्र० २४४ । मनोगुप्त्यादि वसत्यादिर्वा । प्रश्न० १३४ । अशुभाना मन प्रभृतीना निरोध, अहिंसायास्त्रिचत्वारिंशत्तम नाम । प्रश्न० ६६ ।

गुत्तीओ–गुप्तय मनोवाक्कायलक्षणा अनवद्यप्रविचाराप्रविचाररूपा । प्रश्न० १४२ ।

गुत्तीतो–गुप्तय –रक्षाप्रकारा । ठाणा० ४४५ । गोपनानि गुप्तय –मन प्रभृतीनामशुभप्रवृत्तिनिरोधनानि शुभप्रवृत्तिकरणानि चेति । सम० ६ । गोपन गुप्ति –मन प्रभृतीना कुशलाना प्रवर्तनमकुशलाना च निवर्त्तनमिति । ठाणा० ११२ ।

गुदं–अपानम् । नदी० १५२ ।

गुपिल–गहनम् । नदी० ४२ ।

गुप्ति–विधानतो ज्ञात्वाऽभ्युपेत्य सम्यग्दर्शनपूर्वक त्रिविधस्य योगस्य निग्रह । तत्त्वा० ६–४ ।

गुप्फ–गुल्फ –घुटिक । ज० प्र० ११० ।

गुब्भग–मृगीपदम् । नि० चू० प्र० २११ अ ।

गुम्म–गुल्म–वृन्दमात्रम् । औप० ५६ । वशजालिप्रभृति । ज्ञाता० ३६ । समूह –समुदाय । बृ० द्वि० २६० अ । गुच्छैकदेश –उपाध्यायाधिष्ठित । औप० ४५ । गुल्म – नवमालिकाप्रभृति । भग० ३०६ । प्रज्ञा० ३० । जीवा० २६ । गुल्म –नवमालिकादि । औप० ८ । जीवा० १८८ । ज० प्र० ३० । लतासमूह । विशे० ६०४ ।

गुम्मइअ–गुल्मित–घूर्णितचेतनम् । बृ० प्र० २३१ आ ।

गुल्मयित-मूढम् । औप० ६४ ।
गुम्मा-गुल्मा नाम ह्रस्वस्कन्धबहुकाण्डपत्रपुष्पकलोपेता । जं० प्र० ९८ । गुल्मा-पुष्करिणी नाम । जं० प्र० ३६० ।
गुम्मिय-गुल्मेन-समुदायेन चरन्तीति गौल्मिका । व्य० प्र० १३५ अ । गुल्म-स्थान तद्रक्षपाला गुल्मिका । ओघ० ८० । स्थानकरक्षपाला । ओघ० ८२ ।
गुम्मी-शतपदी त्रीन्द्रियजन्तुविशेष । उत्त० ६९६ ।
गुमुगुमंती-गुमगुमायमाना । आव० ५१४ ।
गुरु-स्वप्रयोजननिष्ठ । उत्त० ६३१ । पूज्यास्तीर्थकृद्गण-भृदादय । उत्त० २३१ । यथावच्छास्त्राभिधायका । उत्त० ६२२ । अधोगमनहेतु । ठाणा० २६ । स्पर्शस्य चतुर्थो भेद । ४७३ । गुरूणा-मात्रादिकाना । जं० प्र० १६६ । गृणाति शास्त्रार्थमिति गुरु -धर्मोपदेशदाता । आव० ११६ । धर्मोपदेशक । ज्ञाता० १२३ । पिता-महादिलक्षण । आव० ५१६ । आचार्य । दश० ४५ । सारोपेतम् । दश० २६३ । तीर्थकरादि । पिण्ड० ११४ । गृणन्ति तत्त्वमिति गुरव -तीर्थकरगणधरादय । विशे० ३ । मातापितृधर्म्माचार्या । ठाणा० ३९९ । गौर-वार्ह । उत्त० ४४ । वैद्य । बृ० द्वि० १४१ अ । गुरु -धर्माचार्य । उत्त० १५२ । आचार्य । बृ० तृ० ९५ अ । धर्मज्ञो धर्मकर्त्ता च सदा धर्मप्रवर्त्तक । सत्त्वे-भ्यो धर्मशास्त्रार्थदेशको गुरुरुच्यते । प्रज्ञा० १६३ । आय-रियो । नि० चू० द्वि० १६४ अ । दीक्षाद्याचार्य । भग० ७२७ । चैत्यसाधु । उपा० १३ ।
गुरुअब्भुट्ठाणं-गुर्वभ्युत्थानम् । आव० ८५३ ।
गुरुअमुई-गुर्वमोची-निष्ठुर निर्भर्त्सितोऽपि गुरुणाममोचन-शील । बृ० प्र० १२१ आ ।
गुरुई-गुर्वी-गुरुका । ज्ञाता० १५९ ।
गुरुए-गुरुक -भगवत्या प्रथमशतके गुरुकविषयो नवम उद्देश । भग० ६ ।
गुरुओ-गुरुकर्मा । सूत्र० १९७ ।
गुरुक-गुरुक -पण्मास । व्य० प्र० ६ । ठाणा० १४५ । बृ० प्र० ४९ अ ।
गुरुकुलं-गुरो कुल गुरुकुल-गुरुसान्निध्यम् । आचा०२०३ ।
गुरुगतराग-गुरुतरक -चतुर्मासपरिमाण । व्य० प्र० १८७ अ ।
गुरुगती-भावप्रधानत्वान्निर्देशस्य गोरवेण ऊर्ध्वाधस्ति-र्यग्गमनस्वभावेन या परमाण्वादीना स्वभावतो गति सा गुरुगति । ठाणा० ४३४ ।
गुरुगो-गुरुको नाम व्यवहारो मासो मासपरिमाण । व्य० प्र० १८७ अ ।
गुरुजणं-गुरुजन -गुणस्थसुसाधुवर्ग । आव० ५१९ ।
गुरुतप्पओ-गुरुतल्पक -दुर्विनीत । प्रश्न० ३६ ।
गुरुनिओगविणयरहिया-गुरुषु मात्रादिषु नियोगेन-अव-श्यतया यो विनयस्तेन रहिता गुरुनियोगविनयरहिता । भग० ३०८ ।
गुरुनिग्गहो-गुरुनिग्रह । आव० ८११ ।
गुरुपरिओसगए-गुरुपरितोषगत -गुरुपरितोषजात । आव० २६९ ।
गुरुपरिभासिय-गुरून् परिभाषते विवदते गुरुपरिभाषिक । उत्त० ४३४ ।
गुरुपरिसंस्थापनम्- । दश० २८४ ।
गुरुपर्वक्रमलक्षण: केवलश्रद्धानुसारिण प्रति । प्रज्ञा०२ ।
गुरुमहत्तरएहिं-गुर्वो -मातापित्रोर्महत्तरा -पूज्या, अथवा गौरवार्हत्वेन गुरवो महत्तराश्च वयसा वृद्धत्वाद्ये ते गुरुमहत्तरा । ठाणा० ४६३ ।
गुरुयत्ता-गुरुकता-विस्तीर्णता । भग० २१५ ।
गुरुलहुपज्जव-गुरुलघुद्रव्याणि-बादरस्कन्धद्रव्याणि औदा-रिकवैक्रियाहारकतैजसरूपाणि तत्पर्यवा । जं०प्र०१३० ।
गुरुलहुफासपरिणामे- । सम० ४१ ।
गुरुवायणोवगयं-गुरुप्रदत्तया वाचनया उपगत-प्राप्त गुरुवाचनोपगत न तु कर्णाघाटकेन शिक्षितम् । अनु० १६ ।
गुरुविषय-गुराविद करण गुरुकरणम् । आव० ४७१ ।
गुरुसम्भारियत्ता-गुरो सम्भारिकस्य च भावो गुरु-सम्भारिकता गुरुता सम्भारिकता चेत्यर्थ । अतिप्रकर्षा-वस्था । भग० ४५६ ।
गुरूणा-आलोचनार्हाणामाचार्यादीनाम् । उत्त० २३३ ।
गुर्जर -देशविशेष । अनु० १३९ ।
गुलं-गुडम् । अनु० १५४ । गुल्म-लतासमूह । भग०

३७ ।
गुलइय–गुल्मवान् । औप० ७ ।
गुलकड– । नि० चू० प्र० १६६ आ ।
गुलगुलाइअ–गुलगुलावित रूपेण । ज० प्र० १४४ ।
गुलदव–गुलद्रव नाम यस्या कवल्लिकाया गुड उत्काल्यते तस्या–यत्तसमतप्त वा पानीय तद्गुडोपलिप्त द्रव गुडद्रवम् । बृ० प्र० २५३ अ ।
गुलपाणिय–गुलो जीए कवल्लीए कड्ढिज्जति तत्थ ज पाणीय कय तत्तमतत्त वा त गुलपाणिय भण्णति । नि० चू० प्र० २०४ अ ।
गुलया–द्वीन्द्रियजन्तुविशेष । प्रज्ञा० ४१ ।
गुललावणिका–गुडपपटिका । ठाणा० ११८ ।
गुललावणिया–गुडलावणिका–गुडपप्पटिका गुडधाना वा । सूर्य० २९३ । भग० ३२६ । प्रश्न० १६३ ।
गुलवजणी–मोदती । नि० चू० तृ० ६४ अ ।
गुलिका–तुवरवृक्षचूर्णगुटिका । बृ० द्वि० १०० आ, १०२ अ । पिटक बुसपुञ्जो वा पिण्डका वा । बृ० द्वि० ९४ आ ।
गुलिगा–लोलगा । नि० चू० द्वि० १४ आ ।
गुलिय–गुटिका । आव० २९९ ।
गुलियविरेयणपीओ–पीतविरेचनगुलिक । उत्त० ३७९ ।
गुलिया–गुटिका–द्रव्यवटिका । विपा० ४१ । द्रव्यसयोगनिष्पादितगोलिका । ज्ञाता० १८३ । आव० ६७६ । हरितालिकासारनिर्वर्त्तिता गुटिका । ज० प्र० ३४ । वक्कलाणि । बृ० द्वि० १०२ आ । गुटिका वटिका । उत्त० १४३ । मुखे प्रक्षेपकस्य स्वरूपपरावर्त्तादिकारिका गुटिका । पिण्ड० ९६ । गुलिका –पीठिका । मनोगुलिकापेक्षया प्रमाणत क्षुल्ला । जीवा० ३६३ । नीनी । ज्ञाता० १०१ । पीठिका । जीवा० ३५९ । गुलिका –वर्णद्रव्यविशेष । औप० ११ ।
गुलियासहस्स–गुलिकासहस्रम् । जीवा० २३३ ।
गुलुक–गुल्फ । जीवा० २७० ।
गुलुम्मातितो–सञ्ज्ञाभिलापी । नि० चू० प्र० ३४८ आ ।
गुलू–गुरु –आचार्य । बृ० द्वि० २८३ अ ।
गुल्फपाद – । आचा० ३८९ ।
गुल्म–स्थानम् । ओघ० ८१ ।
गुल्म –रोगविशेष । बृ० प्र० १७० अ ।
गुल्मक–लतासमूह । ज० प्र० २५ ।
गुल्मिका–गोत्तिपाला । ओघ० २२३ ।
गुवति–गुप्यन्ति–व्याकुलीभवन्ति । भग० ६७० ।
गुवल–गुप्त । नि० चू० द्वि० ४० आ ।
गुविते–गुप्येत–व्याकुलो भवेत् क्षुभेद् । ठाणा० १६२ ।
गुविल–व्याप्तम् । महाप० ।
गुविला–गम्भीरा । बृ० तृ० २१ अ ।
गुविलो–गहणो । नि० चू० तृ० १४१ अ ।
गुहा–कन्दरा । भग० २३७ । प्रश्न० २० । सुरङ्गा । ज० प्र० २०९ । लयनम् । उत्त० ४९३ । तिमिश्रागुहादय । नदी० २२८ । उष्ट्रिकाकृतिर्नरकविशेष । सूत्र० १३० ।
गुहालयन– । आचा० २२९ ।
गुह्यापवरक –मन्त्रगृहादि रह स्थानम् । दश० १६६ ।
गूढ–मासलत्वादनुद्धतम् । जीवा० २७० । अनुपलक्षम् । प्रश्न० ८० ।
गूढगब्भा–गूढगर्भा । आव० २१२ ।
गूढदत–जबुद्वीपे भरतक्षेत्रे आगामिण्यति उत्सर्पिण्या तृतीयश्चक्रवर्त्ती । सम० १५४ । गूढदन्त –अनुत्तरोपपातिकदशाना द्वितीयवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम् । अनुत्त० २ । अन्तरद्वीपविशेष । जीवा० १४४ ।
गूढदता–गूढदन्तनामा अन्तरद्वीपविशेष । प्रज्ञा० ५० ।
गूढदतदीवे–अन्तरद्वीपविशेष । ठाणा० २२६ ।
गूढमुत्तोलि–गूथगोणी । त० ।
गूढसामत्थो–गूढसामर्थ्य । आव० ६४१ ।
गूढसिराग–गूढशिराक–अलक्ष्यमाणशिराविशेषम् । प्रज्ञा० ३७ ।
गूढा–गूढा –वहि सद्वृत्तिमन्त । उत्त० ५२६ ।
गूढावत्त–गूढश्चासावावर्त्तश्चेति गूढावर्त्त । ठाणा० २८८ ।
गूथ–वर्च । ओघ० १२३ ।
गूहग–विष्ठा । त० ।
गूहण–किंचिकहण । दश० चू० १२४ । सति बलपरक्कमे अकरण गूहण । नि० चू० प्र० १८ अ । गूहन–किञ्चित्कथनम् । दश० २३३ ।

गृहे–गूहयेद् । दश० २३२ ।
गुंजनं– । ज० प्र० २४४ ।
गृहकोलिका–गृहगोधिका । दश० २३० ।
गृहजातः–दास । उत्त० २६५ ।
गृह ता–गृहस्याता दुहितृपति । नदी० १६२ ।
गृहणैषणा– । आचा० २८३ ।
गृहपतिः–माण्डलिको राजा । आव० १५६ । गृहस्थ । आचा० ३२१ ।
गृहपतिरत्न– । ज० प्र० २१६ ।
गृहप ह:–अवग्रहपञ्चके तृतीयो भेद । आचा० १३४ । माण्डलिकावग्रह । आव० १५६ ।
गृहिव्यापारः–गृहियोग–प्रारम्भरूप । दश० २३१ ।
गृहशाला– । उत्त० ६०५ ।
गृहस्थो–भिक्षा प्रयच्छन्ती गृहस्थी । ओघ० १६२ ।
गृहस्थोपसम्पत्–उपसम्पतौ प्रथमो भेद । आव० २६७ । यत्पुनरवस्थाननिमित्त गृहिणामनुज्ञापन सा गृहस्थविषया । वृ० प्र० २२२ अ ।
गृहाचार–गार्हस्थ्य–आगारधर्म । उत्त० ५७८ ।
गृहीतव्य –निश्चेतव्य । व्य० प्र० २०५ अ ।
गृहे–गृहलिंगे । व्य० द्वि० २७ आ ।
गेंदुए–गेन्दुक –पुष्पलम्बूसक । ज० प्र० २७५ ।
गेंदुकदवरक– । ठाणा० २८६ ।
गेंदुग– । नि० चू० द्वि० ७१ आ ।
गेज्जं–गद्य–यत्र स्वरसञ्चारेण गद्य गीयते । ज० प्र० ३६ ।
गेण्हितुं–गृहीत्वा । आव० ८२७ ।
गेद्धावरंखी–भोयणकाले परिवेसणाए इतो वाहित्ति भणितो ताहे गेद्धो इव रिखतो भायण उड्डेति । नि० चू० द्वि १०१ अ ।
गेधी–सदोसुवलद्धेवि अविरमो गेधी । नि० चू० द्वि० ७१ आ ।
गेयं–गान्धर्व्यो रीत्या बद्ध गानयोग्यम् । ज० प्र० २५६ । गीयत इति गेय—नतिसम तालसमं वण्णसम गहसम लयसम च कव्व । तु होइ गेय पचविह गीयसन्नाए । दश० ८७ । ठाणा० ३६७ ।
गेरुअ–गैरिका–धातु । दश० १७० ।
गेरुआ–परिवायया । नि० चू० द्वि० ६८ अ ।
गेरुक–मृत्तिकाभेद । आचा० ३४२ ।
गेरुय–गौरिक –मणिविशेष । प्रज्ञा० २७ । गेरुअ –मणिभेद । उत्त० ६८६ ।
गेलन्न–ग्लानत्वम् । ओघ० ८६ । ग्लान्य–ग्लानत्वम् । ठाणा० ३१३ ।
गेल्लि–हस्तिन उपरि कोल्लररूपा या मानुष गिलतीव । भग० १८७ ।
गेविज्ज–ग्रैवेयक–ग्रीवा बन्धनम् । प्रश्न० १६ । ग्रैवेय ग्रीवाभरणविशेष । ज० प्र० १०५ । ग्रीवात्राण ग्रीवाभरण वा । ज० प्र० २१६ । ग्रैवेयक–कण्ठलम् । औप० ५५ । ग्रैवेय–ग्रीवाभरणम् । जीवा० २५६ ।
गेविज्जगा–ग्रैवेयका । प्रज्ञा० ६६ ।
गेविज्जन–लोकपुरुषस्य ग्रीवास्थाने भवानि ग्रैवेयकानि । ठाणा० १७६ ।
गेविज्जा–ग्रैवेया–देवावासास्तन्निवासिनो देवा अपि । उत्त० ७०२ ।
गेवेज्ज–ग्रैवेयक–ग्रीवाभरणम् । भग० १६३ । लोकपुरुषस्य ग्रीवाविभागे भवानि विमानानि । अनु० ६२ ।
गेहं–गृहम् । उत्त० ३२० ।
गेहसंठिया–गेहस्येव वास्तुविद्योपनिबद्धस्य गृहस्यैव सस्थित-सस्थान यस्या सा गेहसस्थिता । सूर्य० ६६, ७० ।
गेहागारा–गेहाकारा भवनत्वेनोपकारिण । सम० १८ । गेहाकारा–नामद्रुमगणा । ज० प्र० १०६ । ठाणा० ५१७ ।
गेहागारो–गेहाकार द्रुमविशेष । जीवा० २६६ । गृहाकार –षष्ठ कल्पवृक्ष । आव० १११ ।
गेहावणसंठिय–गृहयुक्त आपणो गृहापणो–वास्तुविद्याप्रसिद्धस्तस्येव सस्थित–सस्थान यस्या सा गृहापणसस्थिता । सूर्य० ६६ ।
गेहावणाइ–गेहेषु आयतनानि आपतनानि वा उपभोगार्थमागमनानि । ज० प्र० ११६ ।
गेहावणो–गृहयुक्त आपणो वास्तुविद्याप्रसिद्ध गृहापण । सूर्य० ६६ ।
गेहि–गृद्धि –अप्राप्तार्थाकाङ्क्षा । प्रश्न० ६७ । अप्राप्तस्य

प्राप्तिवाञ्छा । प्रश्न० ४४ । विषयाभिकाङ्क्षा । उत्त० २६४ ।

गेहिए–गेहक–भर्त्ता । उत्त० १३७ ।

गेही–गृद्धि–प्राप्तार्थेष्वासक्ति । भग० ५७३ ।

गैरिक – । जीवा० २३ ।

गोंड–म्लेच्छविशेष । प्रज्ञा० ५५ ।

गोंफा–गुल्फौ–घुण्टकौ । प्रश्न० ८० ।

गो–पुरित्थगतो लोग त गच्छतीति । दश० चू० १०३ । गोशब्देन गावोबलिवर्दा । बृ० प्र० १५७ आ । गो–गाविओ । नि० चू० द्वि० १३७ अ ।

गोअ–गोत्र–गुणनिष्पन्नाभिधानम् । औप० ५७ ।

गोअम–विचित्रपादपतनादिशिक्षाकलापयुक्तवराटकमालिकादिचर्चितवृषभकोपायत कणभिक्षाग्राहिणो गोतमा । अनु० ७५ । गौतम । आचा० ३५६ । गौतम –आगम प्रसिद्धो गणधरविशेष । आव० ४१३ ।

गोअरे–सामायिकत्वाद् गोरिव चरण गोचर । दश० १८ ।

गोउर–गोभि पूर्यंत इति गोपुर–पुरद्वारम् । जीवा० २७६ । प्रतोली कपाटो वा, पुरद्वारम् । प्रश्न० ८ । गोपुर–नगरप्रतोली पुरद्वारम् । भग० २३८ ।

गोउल–घोस । नि० चू० द्वि० ७० आ ।

गोकण्णो–गोकर्ण –अन्तरद्वीपविशेष । जीवा० १४४ । द्विखुरचतुष्पदविशेष । प्रश्न० ७ । जीवा० ३८ ।

गोकन्न–द्विखुरचतुष्पदविशेष । प्रज्ञा० ४५ ।

गोकन्नदीवे–अन्तरद्वीपविशेष । ठाणा० २२६ । गोकर्णनामान्तरद्वीप । प्रज्ञा० ५० ।

गोकर्ण–मृगभेद । भृङ्गवर्णादिविशेष । ज० प्र० १२४ ।

गोकलिंज–डल्ला । ज० प्र० ५८ । गोकलिञ्ज नाम यत्र गोभक्त प्रक्षिप्यते । राज० १४१ । गवा चरणार्थं यद्वंशदलमय महद्भाजन तद्गोकलिञ्ज डल्लेति । उपा० २० ।

गोकिलिञ्जरं– । जीवा० २१३ ।

गोकुलं–परग्रामदूतीत्वदोषविवरणे ग्रामविशेष । पिण्ड० १२७ ।

गोक्षुरकं–त्रिकण्टकम् । ओघ० १२४ ।

गोखीरफेणो–गोक्षीरफेन । जीवा० २७२ ।

गोग्गहणे– । ज्ञाता० २२६ ।

गोघायको–गोघातक । आव० ३६१ ।

गोचर –विषय । आव० ५८६ ।

गोच्छ–भाजनवस्त्रविशेष, वक्ष्यमाणलक्षण प्रमार्जयति । ओघ० ११७ ।

गोच्छओ–गोच्छक –पात्रवस्त्रप्रमार्जनहेतु कम्बलशकलरूप । प्रश्न० १५६ । कवलमयो वद्धपात्रोपरि । बृ० द्वि० २३७ अ ।

गोच्छक –य पात्रकस्योपरि दीयते स । ओघ० १६६ ।

गोच्छिया–जातगुच्छा । ज्ञाता० ५ ।

गोजलोया–द्वीन्द्रियजन्तुविशेष । प्रज्ञा० ४१ । जीवा० ३१ ।

गोजिब्भा–गोजिव्हा । प्रज्ञा० ३६७ ।

गोजूति–गोचर । नि० चू० द्वि० १४४ अ ।

गोज्ज–नर्त्तक । दश० ४६ ।

गोज्झपेक्खिया–नृत्यविशेषप्रेक्षिका । आव० ६२ ।

गोट्ठ –गोष्ठ–गोकुलम् । आव० ७११ ।

गोट्ठामाहिल–गोष्ठमाहिल य स्पृष्टाबद्धप्ररूपक । उत्त० १५३ । सप्तमो निण्हव । विशे० १००२ । विनयकरणभीरु कुशिष्य । विशे० ६१४ । अर्थाज्ञाविराधनाया दृष्टान्त । नदी० २४८ । गोष्ठामाहिल यस्माद वद्धिका उत्पन्ना स आचार्य । आव० ३१२ । गोष्ठमाहिल –गच्छप्रधान श्रावक । आव० ३०८ । नि० चू० प्र० ३३५ आ ।

गोट्ठि–समवयसा समुदायो गोष्ठी । दश० २२ । जनसमुदायविशेष । ज्ञाता० २०६ ।

गोठ–गोष्ठ –गोष्ठामाहिल –अभिनिवेशे दृष्टान्त । व्य० द्वि० १७६ अ ।

गोट्ठिदासी–गोष्ठादासी । आव० २०१ ।

गोट्ठिधम्मो–गोष्ठीधर्म –गोष्ठीव्यवस्था । दश० २२ ।

गोट्ठिलए–गोष्ठीक । आव० ६२ । विपा० ५५ ।

गोट्ठी–गोष्ठी–जनसमुदाय । ज्ञाता० २०६ । आव० ८२२, ८२४ । उत्त० ११२ । महत्तरादिपुरुषपञ्चकपरिगृहीता । बृ० द्वि० २०० अ ।

गोडडेणालिया– । नि० चू० प्र० ४६ आ ।

गोड–गोड–चिलातदेशनिवासीम्लेच्छविशेष । प्रश्न० १४ ।
गोड्ड–गौल्य–गौल्यरसोपेत मधुररसोपेतमितियावत् । भग० ७४८ ।
गोण–वलीवर्द । वृ० प्र० २४७ आ । ओघ० ६७ । आव० २२६ । गौण–गुणनिष्पन्नम् । प्रश्न० ६ । गोणा–गाव । ज० प्र० १२४ । प्रश्न० ७ । गोण–गौ । प्रज्ञा० २५२ । गौ । ओघ० २०१ । नि० चू० प्र० २ अ । गव । आव० १६०, ८२६ ।
गोणपोतलओ–गोपेत । आव० १६८ ।
गोणपोयए–गोणपोतकौ–गोपुत्रकौ । उपा० ४६ ।
गोणलक्खण– । ज्ञाता० ३८ ।
गोणस–गोनस–सर्प्पजातिविशेषम् । व्य० प्र० २३ अ ।
गोणस–गोणस–निष्फणाहिविशेष । प्रश्न० ७ ।
गोणसखइय–गोनसभक्षितम् । आव० ७६४ ।
गोणसहा–गोधरेक । उत्त० ६६६ ।
गोणसा–मुकुली–अहिभेदविशेष । प्रज्ञा० ४६ ।
गोणा–वलीवर्दा । उत्त० ५४८ । गोणा–द्विखुरचतुष्पदविशेष । जीवा० ३८ । प्रज्ञा० ४५ । गाव । प्रश्न० ३८ ।
गोणाई–गवादीनि । ओघ० १४२ ।
गोणादिचमढणा–वलीवर्दादिपादप्रहारादि । ओघ० ८१ ।
गोणी–गौ । विशे० ६१८ । आव० ६६ ।
गोण्णं–गुणादागत गौण, व्युत्पत्तिनिमित्त द्रव्यादिरूप गुणमधिकृत्य यद्वस्तुनि प्रवृत्त नाम तद् गौणनाम । पिण्ड० ४ । गुणनिष्पन्नम् । वृ० तृ० २४८ अ ।
गोण्णनाम–गुणैर्निष्पन्न गौण तच्च तन्नाम च गौणनाम । आचा० १६६ ।
गोतम–भक्तिकर्तव्यताया दृष्टान्त । व्य० द्वि० १७२ आ ।
गोतमगोत्ते–गौतमगोत्रम् । सूर्य० १५० ।
गोतमा–गोतमस्यापत्यानि गौतमा क्षत्रियादय । ठाणा० ३६० । गौतम–प्रथमो गणधर । अनुत्त० ३ । ज्ञाता० ११४ । लघुतराक्षमालार्चितविचित्रपादपतनादिशिक्षाकलापवद्वृषभकोपायत कणभिक्षाग्राही । ज्ञाता० १६५ ।
गोतित्थं–गोतीर्थं–तडागादिष्विव प्रवेशमार्गरूपो नीचो नीचतरो भूदेश । जीवा० ३०८ । क्रमेण नीचो नीचतर प्रवेशमार्ग । जीवा० ३२३ । प्रज्ञा० ४१३ । गवातीर्थं–तडागादाववतारमार्गो गोतीर्थं, ततो गोतीर्थमिव गोतीर्थं–अवतारवतीभूमि । ठाणा० ४८० ।
गोतित्थसंठाणसंठिए–गोतीर्थसस्थानसस्थित–क्रमेण नीचैर्नीचैस्तरमुद्वेधस्य भावात् । जीवा० ३२५ ।
गोतिपाला–गुल्मिका । ओघ० २२३ ।
गोत्त–गूयते–शब्द्यते उच्चावचै शब्दैर्यत् तद् गोत्र–उच्चनीचकुलोत्पत्तिलक्षण पर्यायविशेष, तद्विपाकवेद्य कर्मापि गोत्रम्, यद्वा कर्मणोऽपादानविवक्षा गूयते शब्द्यते उच्चावचै शब्दैरात्मा यस्मात् कर्म्मण उदयाद् गोत्रम् । प्रज्ञा० ४५४ । प्रकाशकाद्यपुरुषाभिधानस्तदपत्यसन्तानो गोत्रम् । ज० प्र० ५०० । सञ्ज्ञा । आव० २७६ । अभिधानम्, कर्मविशेष । ठाणा० ४५५ । गा–वाच त्रायते–अर्थाविसवादनत पालयतीति, समस्तागमाधारभूत । सूत्र० २३५ । गोत्रशब्दो नामपर्याय । उत्त० १८१ । गौतमगोत्रादि । ज्ञाता० २२० । प्रकाशकाद्यपुरुषाभिधानतस्तदपत्यसन्तानो गोत्रम् । सूर्य० १५० । गोत्र–सञ्ज्ञा । विशे० ८७४ ।
गोत्ता–इतराणि त्वितराणि नामानि । ठाणा० ३८६ । तथाविधैकैकपुरुषप्रभवा मनुष्यसन्ताना उत्तरगोत्रापेक्षया । ठाणा० ३६० ।
गोत्तासए–गोत्रासक–हस्तिनापुरे भीमकूटग्राहिदारक । विपा० ५० ।
गोत्थुभ–गोस्तुभ–लवणसमुद्रमध्ये पूर्वस्या दिशि नागराजावासपर्वत । भग० १४४ ।
गोथुभत्ति–कौस्तुभाभिधानो यो मणिविशेष । सम० १५८ ।
गोथूभा–गोस्तूपा–दक्षिणपश्चिमरतिकरपर्वतस्यापरस्याशक्रदेवेन्द्रस्य नवमिकाऽग्रमहिष्या राजधानी । ठाणा० २३१ । जीवा० ३६५ । पूर्वदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्य अपरस्या दिशि पुष्करिणीविशेष । जीवा० ३६४ । पाश्चात्याञ्जनपर्वतस्य पाश्चात्याया पुष्करिणीविशेष । ठाणा० २३० ।
गोथूभे–गोस्तुभ–प्राच्या लवणसमुद्रमध्यवर्त्तिनो वेलन्धरनागराजनिवासभूतपर्वतस्य पौरस्त्याच्चरमान्तादपसृत्य वडवामुखस्य महापातालकलशस्य पाश्चात्यश्चरमान्तो येन

व्यवधानेन भवति । सम० ७१ । वेलन्धरनागराजस्य आवासपर्वत । देवविशेष । ठाणा० २२६ । श्रेयासनाथस्य प्रथम शिष्य । सम० १५२ ।

गोथूभो–गोस्तूप –भुजगेन्द्रस्यावासपर्वत । जीवा० ३११ । प्रथमो वेलन्धरनागराज, भुजगेन्द्रो भुजगराज । जीवा० ३११ ।

गोदत्ता–ब्रह्मदत्तस्याष्टाग्रमहिषीणा मध्ये द्वितीया । उत्त० ३७९ ।

गोदासे–गणविशेष । ठाणा० ४५१ ।

गोदुह्–गोदोहिका । ठाणा० २९९ ।

गोदोहिका–गोर्दोहन गोदोहिका । ठाणा० ३०२ ।

गोदोहिकासन–आसनविशेष । उत्त० ६०७ ।

गोदोहिया–गोदोहिका । आव० २२७ ।

गोदोहियाए– । आचा० ४२४ ।

गोदोही–गोदोहिका । आव० ६४८ ।

गोधमो–अनाचार । नि० चू० प्र० ११३ आ ।

गोध–अलस । उत्त० २६२ । व्यवहारी । दश० ५६ ।

गोधण–गोधन–गवादिद्रव्यम् । आव० ८२५ ।

गोधा–गोधा । प्रश्न० ८ । म्लेच्छविशेष । प्रज्ञा० ५५ ।

गोधिका–वाद्यविशेष । ठाणा० ३९५ ।

गोधूमजतग–गोधूमयन्त्रकम् । उत्त० २२३ ।

गोधूमो–गोधूम –धान्यविशेष । आव० ८५५ ।

गोधेरक –गोणसहा । उत्त० ६९९ ।

गोनिषद्यिका–यस्या तु गोरिवोपवेशन सा । ठाणा० २९९ । उपवेशनविशेष । बृ० तृ० २०० अ ।

गोपालओ–गोपालक –अज्ञातोदाहरणे प्रद्योतलघुपुत्र । आव० ६९९ ।

गोपालगिरि –गिरिविशेष । ज० प्र० १६८ । भग० ३०७ ।

गोपालघट – । उत्त० ५५९ ।

गोपुच्छसठाणसंठिया–गोपुच्छस्येव सस्थान गोपुच्छसस्थान तेन सस्थिता गोपुच्छसस्थानसस्थिता–ऊर्ध्वीकृतगोपुच्छाकारा । जीवा० १७८ ।

गोपुट्ठए–गोपृष्ठादवपतितम् । भग० ६८० ।

गोपुर–प्राकारद्वारम् । जीवा० २५८ । गोपुर–पुरद्वारम् । सूर्य० ६९ । औप० ३ । प्रश्न० ८ । जीवा० २६९ । प्रतोली । ज्ञाता० २२२ । प्रतोलीद्वाराणा परस्परतोऽन्तराणि । अनु० १५९ । गोभि पूर्यन्त इति गोपुराणि प्रतोलीद्वाराणि । उत्त० ३११ ।

गोपुरसठिओ–गोपुरसस्थित । जीवा० २७९ ।

गोपुरसठिया–गोपुरस्येव–पुरद्वारस्येव सस्थित सस्थान यस्या सा गोपुरसस्थिता । सूर्य० ६९ ।

गोपेन्द्रवाचक –द्रव्यानुयोगे परपक्षनिवर्तक । दश० ५३ ।

गोप्पत–गोष्पद–तत्कल्प देशविरत्यादिकमल्पतमम् । ठाणा० २७९ ।

गोप्पहेलिया–गोप्रहेल्या । आचा० ४११ ।

गोफण–गोफण –प्रस्तरप्रक्षेपकोदवरकगुम्पित शस्त्रविशेष । आव० ६१३ ।

गोफणा–चम्मदवरगमया । नि० चू० प्र० १०५ आ । चर्मदवरकमयी । बृ० तृ० ६८ अ ।

गोबर–गोमय । बृ० प्र० २७० आ ।

गोबहुल–शरवणसन्निवेशे ब्राह्मणविशेष । भग० ६६० । गोबहुल –प्रचुरगोमान् शरवणसन्निवेशे ब्राह्मणविशेष । आव० १९९ ।

गोब्बरगाम–गूर्वरग्राम –मगधाविषये ग्राम । आव० ३५५। गोर्वरग्राम –ग्रामविशेष । आव० २१२ । वइरिसगामासन्न । बृ० तृ० २१७ आ । सन्निवेश, इन्द्राग्निवायुभूतिगणधराणा जन्मभूमि । आव० २५५ ।

गोभत्त–गोभक्त छगणादि । आव० ९१ ।

गोभत्तकलदय– । नि० चू० द्वि० ९१ आ ।

गोभूमी–सदा गावश्चरति यत्र तेन गोभूमि । आव० २११ ।

गोमडल–गोवर्ग । बृ० प्र० १५७ आ ।

गोमए–गोमय–छगणम् । भग० २१३ ।

गोमड–गोमृत –मृतगोदेह । जीवा० १०६ ।

गोमय–गोकरिसो गोमय । नि० चू० प्र० २६५ आ ।

गोमयकीडगो–गोमयकीटक –चतुरिन्द्रियजन्तुविशेष । जीवा० ३२ ।

गोमयकीडा–चतुरिन्द्रियजन्तुविशेष । प्रज्ञा० ४२ ।

गोमाणसिआ–गोमानस्य –शय्यारूपा स्थानविशेषा । ज० प्र० ३२६ ।

गोड–गोड –चिलातदेशनिवासीम्लेच्छविशेष । प्रश्न० १४ ।
गोड्ड–गौल्य–गौल्यरसोपेत मधुररसोपेतमितियावत् । भग० ७४८ ।
गोण–बलीवर्दं । बृ० प्र० २४७ आ । ओघ० ६७ । आव० २२६ । गौण–गुणनिष्पन्नम् । प्रश्न० ६ । गोणा –गाव । ज० प्र० १२४ । प्रश्न० ७ । गोण –गौ । प्रज्ञा० २५२ । गौ । ओघ० २०१ । नि० चू० प्र० २ अ । गव । आव० १६०, ८२६ ।
गोणपोतलओ–गोपेत । आव० १६८ ।
गोणपोयए–गोणपोतकौ–गोपुत्रकौ । उपा० ४६ ।
गोणलक्खण– । ज्ञाता० ३८ ।
गोणसं–गोनस–सर्प्पजातिविशेपम् । व्य० प्र० २३ अ ।
गोणस–गोणस –निष्फणाहिविशेष । प्रश्न० ७ ।
गोणसखइयं–गोनसभक्षितम् । आव० ७६४ ।
गोणसहा–गोधरेक । उत्त० ६६६ ।
गोणसा–मुकुली–अहिभेदविशेष । प्रज्ञा० ४६ ।
गोणा–बलीवर्दा । उत्त० ५४८ । गोणा–द्विखुरचतुष्पद-विशेष । जीवा० ३८ । प्रज्ञा० ४५ । गाव । प्रश्न० ३८ ।
गोणाई–गवादीनि । ओघ० १४२ ।
गोणादिचमढणा–बलीवर्दादिपादप्रहारादि । ओघ० ८१ ।
गोणी–गौ । विशे० ६१८ । आव० ६६ ।
गोण्णं–गुणादागत गौण, व्युत्पत्तिनिमित्त द्रव्यादिरूप गुण-मधिकृत्य यद्वस्तुनि प्रवृत्त नाम तद् गौणनाम । पिण्ड० ४ । गुणनिष्पन्नम् । बृ० तृ० २४८ अ ।
गोण्णनाम–गुणैर्निष्पन्न गौण तच्च तन्नाम च गौणनाम । आचा० १६६ ।
गोतम–भक्तिकर्तव्यताया दृष्टान्त । व्य० द्वि० १७२ आ ।
गोतमगोत्ते–गौतमगोत्रम् । सूर्य० १५० ।
गोतमा–गोतमस्यापत्यानि गौतमा क्षत्रियादय । ठाणा० ३६० । गौतम –प्रथमो गणधर । अनुत्त० ३ । ज्ञाता० ११४ । लघुतराक्षमालार्चितविचित्रपादपतनादिशिक्षा-कलापवद्वृषभकोपायत कणभिक्षाग्राही । ज्ञाता० १६५ ।
गोतित्थं–गोतीर्थं–तडागादिष्विव प्रवेशमार्गरूपो नीचो नीचतरो भूदेश । जीवा० ३०८ । क्रमेण नीचो नीच-तर प्रवेशमार्गं । जीवा० ३२३ । प्रज्ञा० ४१३ । गवा-तीर्थं–तडागादाववतारमार्गो गोतीर्थं, ततो गोतीर्थमिव गोतीर्थं–अवतारवतीभूमि । ठाणा० ४८० ।
गोतित्थसंठाणसंठिए–गोतीर्थसस्थानसस्थित –क्रमेण नी-चैर्नीचैस्तरमुद्वेधस्य भावात् । जीवा० ३२५ ।
गोतिपाला–गुल्मिका । ओघ० २२३ ।
गोत्त–गूयते–शब्द्यते उच्चावचै शब्दैर्यत् तद् गोत्र–उच्च-नीचकुलोत्पत्तिलक्षण पर्यायविशेष, तद्विपाकवेद्य कर्मापि गोत्रम्, यद्वा कर्मणोऽपादानविवक्षा गूयते शब्द्यते उच्चावचै शब्दैरात्मा यस्मात् कर्म्मण उदयाद् गोत्रम् । प्रज्ञा० ४५४ । प्रकाशकाद्यपुरुपाभिधानस्तदपत्यसन्तानो, गोत्रम् । ज० प्र० ५०० । सञ्ज्ञा । आव० २७६ । अभिधानम्, कर्मविशेष । ठाणा० ४५५ । गा–वाच त्रायते–अर्थाविसवादनत पालयतीति, समस्तागमाधार-भूत । सूत्र० २३५ । गोत्रशब्दो नामपर्याय । उत्त० १८१ । गौतमगोत्रादि । ज्ञाता० २२० । प्रकाशकाद्य-पुरुषाभिधानतस्तदपत्यसन्तानो गोत्रम् । सूर्य० १५० । गोत्र–सज्ञा । विशे० ८७४ ।
गोत्ता–इतराणि त्वितराणि नामानि । ठाणा० ३८६ । तथाविधैकंकपुरुपप्रभवा मनुष्यसन्ताना उत्तरगोत्रापेक्षया । ठाणा० ३६० ।
गोत्तासए–गोत्रासक –हस्तिनापुरे भीमकूटग्राहिदारक । विपा० ५० ।
गोत्थुभ–गोस्तुभ –लवणसमुद्रमध्ये पूर्वस्यां दिशि नागराजा-वासपर्वत । भग० १४४ ।
गोथुभत्ति–कौस्तुभाभिधानो यो मणिविशेप । सम० १५८ ।
गोथूभा–गोस्तूपा–दक्षिणपश्चिमरतिकरपर्वतस्यापरस्याशक्र-देवेन्द्रस्य नवमिकाऽग्रमहिष्या राजधानी । ठाणा० २३१ । जीवा० ३६५ । पूर्वदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्य अपरस्या दिशि पुष्करिणीविशेष । जीवा० ३६४ । पाश्चात्याञ्जनपर्वत-स्य पाश्चात्याया पुष्करिणीविशेप । ठाणा० २३० ।
गोथूभे–गोस्तुभ –प्राच्या लवणसमुद्रमध्यवर्त्तिनो वेलन्धर-नागराजनिवासभूतपर्वतस्य पौरस्त्याच्चरमान्तादपसृत्य वडवामुखस्य महापातालकलशस्य पाश्चात्यश्चरमान्तो येन

व्यवधानेन भवति । सम० ७१ । वेलन्धरनागराजस्य आवासपर्वत । देवविशेष । ठाणा० २२६ । श्रेयासनाथस्य प्रथम शिष्य । सम० १५२ ।

गोथूभो–गोस्तूप –भुजगेन्द्रस्यावासपर्वत । जीवा० ३११ । प्रथमो वेलन्धरनागराज, भुजगेन्द्रो भुजगराज । जीवा० ३११ ।

गोदत्ता–ब्रह्मदत्तस्याष्टाग्रमहिषीणा मध्ये द्वितीया । उत्त० ३७९ ।

गोदासे–गणविशेष । ठाणा० ४५१ ।

गोदुह–गोदोहिका । ठाणा० २९९ ।

गोदोहिका–गोर्दोहन गोदोहिका । ठाणा० ३०२ ।

गोदोहिकासन–आसनविशेष । उत्त० ६०७ ।

गोदोहिया–गोदोहिका । आव० २२७ ।

गोदोहियाए– । आचा० ४२४ ।

गोदोही–गोदोहिका । आव० ६४८ ।

गोधमो–अनाचार । नि० चू० प्र० ११३ आ ।

गोध–अलस । उत्त० २६२ । व्यवहारी । दश० ५६ ।

गोधण–गोधन–गवादिद्रव्यम् । आव० ८२५ ।

गोधा–गोधा । प्रश्न० ८ । म्लेच्छविशेष । प्रज्ञा० ५५ ।

गोधिका–वाद्यविशेष । ठाणा० ३९५ ।

गोधूमजतग–गोधूमयन्त्रकम् । उत्त० २२३ ।

गोधूमो–गोधूम –धान्यविशेष । आव० ८५५ ।

गोधेरक–गोणसहा । उत्त० ६९९ ।

गोनिषद्यिका–यस्या तु गोरिवोपवेशन सा । ठाणा० २९९ । उपवेशनविशेष । बृ० तृ० २०० अ ।

गोपालओ–गोपालक –अज्ञातोदाहरणे प्रद्योतलघुपुत्र । आव० ६९९ ।

गोपालगिरि–गिरिविशेष । ज० प्र० १६८ । भग० ३०७ ।

गोपालघट – । उत्त० ५५९ ।

गोपुच्छसठाणसठिया–गोपुच्छस्येव सस्थान गोपुच्छसस्थान तेन सस्थिता गोपुच्छसस्थानसस्थिता–ऊर्ध्वीकृतगोपुच्छाकारा । जीवा० १७८ ।

गोपुट्ठए–गोपृष्ठाद्युत्पतितम् । भग० ६८० ।

गोपुर–प्राकारद्वारम् । जीवा० २५८ । गोपुर–पुरद्वारम् । सूर्य० ६९ । औप० ३ । प्रश्न० ८ । जीवा० ‍२६९ । प्रतोली । ज्ञाता० २२२ । प्रतोलीद्वाराणा परस्परतोऽन्तराणि । अनु० १५९ । गोभि पूर्यन्त इति गोपुराणि प्रतोलीद्वाराणि । उत्त० ३११ ।

गोपुरसठिओ–गोपुरसस्थित । जीवा० २७९ ।

गोपुरसठिया–गोपुरस्येव–पुरद्वारस्येव सस्थित सस्थान यस्या सा गोपुरसस्थिता । सूर्य० ६९ ।

गोपेन्द्रवाचक–द्रव्यानुयोगे परपक्षनिवर्तक । दश० ५३ ।

गोप्पत–गोष्पद–तत्कल्प देशविरत्यादिकमल्पतमम् । ठाणा० २७९ ।

गोप्पहेलिया–गोप्रहेल्या । आचा० ४११ ।

गोफण–गोफण –प्रस्तरप्रक्षेपकोदवरकगुम्फित शस्त्रविशेष । आव० ६१३ ।

गोफणा–चम्मदवरगमया । नि० चू० प्र० १०५ आ । चर्मदवरकमयी । बृ० तृ० ६८ अ ।

गोबर–गोमय । बृ० प्र० २७० आ ।

गोबहुल–शरवणसन्निवेशे ब्राह्मणविशेष । भग० ६६० । गोबहुल –प्रचुरगोमान् शरवणसन्निवेशे ब्राह्मणविशेष । आव० १९९ ।

गोब्बरगाम–गूर्वरग्राम –मगधाविषये ग्राम । आव०३५५। गोबरग्राम –ग्रामविशेष । आव० २१२ । वइरिसगामासन्न । बृ० तृ० २१७ आ । सन्निवेश, इन्द्राग्निवायुभूतिगणधराणा जन्मभूमि । आव० २५५ ।

गोभत्त–गोभक्त छगणादि । आव० ६१ ।

गोभत्तकलदय– । नि० चू० द्वि० ९१ आ ।

गोभूमी–सदा गावश्चरति यत्र तेन गोभूमि । आव०२११ ।

गोमडल–गोवर्ग । बृ० प्र० १५७ आ ।

गोमए–गोमय–छगणम् । भग० २१३ ।

गोमड–गोमृत –मृतगोदेह । जीवा० १०६ ।

गोमय–गोकरिसो गोमय । नि० चू० प्र० २६५ आ ।

गोमयकीडगो–गोमयकीटक –चतुरिन्द्रियजन्तुविशेष । जीवा० ३२ ।

गोमयकीडा–चतुरिन्द्रियजन्तुविशेष । प्रज्ञा० ४२ ।

गोमाणसिआ–गोमानस्य –शय्यारूपा स्थानविशेषा । ज० प्र० ३२६ ।

गोमाणसिया–गोमानस्य शय्या । जीवा० २०४, ३५६ । राज० ६२ । गोमानसिका शय्यारूपा–स्थानविशेषा । जीवा० २३० ।

गोमाणसीओ–शय्या । जं० प्र० ४६ ।

गोमाणुसी–गोमानुषी–शय्यारूपा । जीवा० ३६३ ।

गोमायु.–शृगाल । प्रज्ञा० २५४ । आचा० १६७ ।

गोमायुपुत्तो– । भग० ६५६ ।

गोमिज्जए–गोमेजक–मणिभेद । प्रज्ञा० २७ । उत्त० ६८६ ।

गोमिनि–गोमिनि–नानादेशापेक्षया गौरवकुत्सादिगर्भमामन्त्रणवचनम् । दश० २१६ ।

गोमिय–गोमिक–गोमान् । प्रश्न० ३८ । गोम्मिक–गौल्मिक–गुप्तिपाल । प्रश्न० ५६ ।

गोमिया–सुकिया । नि० चू० प्र० १४० अ । दडपासिया । नि० चू० १६४ अ । ठाणइल्ला । नि० चू० द्वि० ११ आ ।

गोमुत्तिअदड्ड–गोमूत्रदग्ध–गोमूत्रसहित स्थानम् । ओघ० ५४ ।

गोमुत्तियवूहो–गोमूत्रिकाव्यूह–गोमूत्रिकाकारसैन्यविन्यासविशेष । प्रश्न० ४७ ।

गोमुत्तिया–गोचर्यामभिग्रहविशेष । नि० चू० तृ० १२ अ । उत्त० ६०५ ।

गोमुह–गोमुखनामा अन्तरद्वीप । प्रज्ञा० ५० । गोमुख अन्तरद्वीपविशेष । जीवा० १४४ ।

गोमुहदीव–अन्तरद्वीपविशेष । ठाणा० २२६ ।

गोमुहिए–गोमुखवदुर प्रच्छादकत्वेन कृतानि गोमुखितानि । ज्ञाता० २३७ ।

गोमुही–गोमुखी–काहिला–यस्या मुखे गोशृङ्गादिवस्तु दीयत इति । अनु० १२६ । काहला । ठाणा० ३६५ ।

गोमूत्रिका–यस्या तु वामगृहाद्दक्षिणगृहे दक्षिणगृहाच्च वामगृहे भिक्षा पर्यटति सा गोमूत्राकारत्वाद् गोचरभूमिरपि । बृ० प्र० २५७ अ । प्रज्ञा० ४७३ ।

गोमूत्रिकावन्धः–मुद्रिकावन्ध । ओघ० १४५ ।

गोमेज्ज–गोमेयक–रत्नविशेष । जीवा० २०४ ।

गोमेज्जए–गोमेज्जक । जीवा० २३ । गोमेदक–पृथिवी भेद । आचा० २६ ।

गोमेयकं–रत्नविशेष । उत्त० ४५१ ।

गोम्मिए–गौल्मिक-शुल्कपाल । बृ० द्वि० २२८ अ ।

गोम्मिय–गुप्तिपालक । प्रश्न० ३७ ।

गोम्मिया–बद्धस्थाना आरक्षका । बृ० द्वि० १०६ आ । वद्धस्थाना मार्गरक्षका । बृ० द्वि० ८३ अ । गुल्मेन समुदायेन चरन्तीति गौल्मिका स्थानरक्षपाल । बृ० द्वि० २६० अ० । गौल्मिका ये राज्ञ पुरुषा स्थानक वद्ध्वा पन्थान रक्षन्ति । बृ० द्वि० ८३ अ ।

गोम्ही–कर्णशृगाली । अनु० २१४ । कण्णसियाली । नि० चू० प्र० १६३ अ । त्रीन्द्रियजन्तुविशेष । प्रज्ञा० ४२ । जीवा० ३२ । कर्णसियालिया । प्रज्ञा० ४२ ।

गोय–गास्त्रायत इति गोत्र–मौन वाक्सयम, जन्तूना जीवितम् । सूत्र० २४६ । गीयते–शब्द्यते उच्चावचैः शब्दैः कुलालादिव मृद्द्रव्यमत आत्मेति गोत्रम् । उत्त० ६४१ । गुणनिष्पन्नम् । भग० ११५ । अन्वर्थिकम् । भग० ५६१ । गोत्र–गुणनिष्पन्न । निरय० ७ । गोत्र–अन्वर्थ । राज० १३ । सरीर । दश० चू० ५६ । गोत्र–आन्वर्थिकीसञ्ज्ञा । विपा० ४२ ।

गोयम–प्रथमो गणधर । नि० चू० द्वि० ७७ अ । स्थविर विशेष । नि० चू० प्र० २०७ आ । गौतम–रोहीणिगोत्रम् । जं० प्र० ५०० । गौतम–अन्तकृद्दशानां प्रथमवर्गस्य प्रथममध्ययनम् । अन्त० १ । कुमारविशेष । अन्त० २ । भक्तिवहुमाने तृतीयभङ्गे दृष्टान्ते । नि० चू० प्र० ८ अ । ह्रस्वोवलिवर्दस्तेन गृहीतपादपतनादिविचित्रशिक्षेण जनचित्ताक्षेपदक्षेण भिक्षामटन्ति ये ते गौतम । औप० ८६ । एपणासमितिदृष्टान्ते धिग्जातीयश्चक्कर । आव० ६१६ । प्रतीच्या दिशि लवणसमुद्राधिपसुस्थितनामदेवावासभूतो द्वीपविशेष । प्रज्ञा० ११४ । गोव्रतिका गृहीतशिक्ष लघुकाय वृपभमुपादाय धान्याद्यर्थं प्रतिगृहमटन्ति ते गौतमा । सूत्र० १५४ । नि० चू० प्र० ३५२ आ ।

गोयमकेसिज्जं–उत्तराध्ययनेपु त्रिंशत्तममध्ययनम् । सम० ६४ ।

गोयमदीव–गौतमद्वीप–द्वीपविशेष । सम० ७६ ।

गोयमसामी–गौतमस्वामी, प्रथमो गणधर, । आव० ६५ । ज्ञाता० १७०, १७१, १७८, २२६ । अन्त० २२ ।

गोयर–गोचर–भिक्षाग्रहणविधिलक्षण । सम० १०७ । नवी० २१० । भिक्षाटनम् । ज्ञाता० ६१ । गोचर–भिक्षाटनम् । भग० १२२ । गोरिव चरण गोचर । उत्त० ११६ । गोरिव चरण गोचर–उत्तमाधममध्यम कुलेष्वरक्तद्विष्टस्य भिक्षाटनम् । दश० १६३ ।

गोयरग्गपविट्ठो–गोरिव चरण गोचरस्तस्याग्र्य–प्रधान तस्मिन् प्रविष्ट गोचराग्रप्रविष्ट । उत्त० ११६ ।

गोयरचरिया–गोश्चरण गोचर चरण–चर्या गोचर इव चर्या गोचरचर्या–भिक्षाचर्या । आव० ५७५ ।

गोयरतिअ–गोचरत्रिक–त्रिकालभिक्षाटनम् । ओघ० ६५ ।

गोयारिया–गोचरचर्या । नि० चू० प्र० ६ अ ।

गोयावरी–गोदावरी–नदीविशेष । व्य० प्र० १६३ अ ।

गोरक्खरा–एकखुरचतुष्पदविशेष । प्रज्ञा० ४५ ।

गोरखुरो–गोरखुर–एकखुरचतुष्पद । जीवा० ३८ ।

गोरव–गौरव–अशुभाध्यवसायविशेष । प्रश्न० ६२ । ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्गमनस्वभाव । ठाणा० ४३४ ।

गोरस–गोरस–गोभक्तादि । आव० ९१ । गोरस । आव० ३४३ । सूत्र० २९३ ।

गोरसकुंड–गोरसकुण्ड । आव० ६४१ ।

गोरसदवो–गोरसद्रव–दध्यादिपानकम् । पिण्ड० १५० ।

गोरसधोवण–गोरसधावनम् । आव० ६२४ ।

गोरहत्ति–गोरहक–कल्होटक । आचा० ३९१ ।

गोरहग–गोरथक–कल्होड । दश० २१७ । कल्होडक । बृ० द्वि० १३८ आ ।

गोरहसठितो पासातो । नि० चू० द्वि० ६६ आ ।

गोरा–नदीपाषाणशृङ्गिका । बृ०तृ० १६२ आ । गोधूमा । नि० चू० तृ० ३७ आ ।

गोरी–गौरी–कृष्णवासुदेवस्य राज्ञी । अन्त० १८ । अन्तकृद्दशाना पञ्चमवर्गस्य द्वितीयमध्ययनम् । अन्त० १५ । चत्वारिंमहाविद्याया प्रथमा । आव० १४४ । वलकोट्ट-ज्येष्ठभार्या । उत्त० ३५४ ।

गोरीपाडलगोरा–गौरी या पाटला पुष्पजातिविशेषस्तद्वद्ये गौरास्ते गौरीपाटलागौरा । ज्ञाता० २३१ ।

गोरूग– । नि० चू० प्र० २२९ आ ।

गोरूव–गौ । आव० १८६ ।

गोरे–गोधूम । बृ० द्वि० १२६ अ ।

गोल–देशान्तरेऽवज्ञासूचक । आचा० ३८८ । गोल–तत्तद्देशप्रसिद्धितो नैष्ठुर्यादिवाचकोऽयं शब्द स्या वा । दश० २१५ । साधोरुपमानम् । दश० १९ । गोले–नानादेशापेक्षया गौरवकुत्सितादिगर्भमान्त्रणवचनमिदम् । दश० २१६ । ज्ञाता० १६७ । वृत्तपिण्ड । ठाणा० २७२ । गोलक-वर्तुल पाषाणादिमय । अनुत्त० १४

गोलगो–गोलक–जन्तुमयो वर्त्तुलाकार । आव० ४१९ । आव० ४२२ ।

गोलछाया–गोलमात्रस्य छाया गोलच्छाया । सूर्य० ९५ ।

गोलपुंजछाया–गोलाना पुञ्जो गोलपुञ्जो गोलोत्कर इत्यर्थ, तस्य छाया गोलपुञ्जच्छाया । सूर्य० ९५ ।

गोलय–गोलक–वृत्तोपल । ज० प्र० ३२६ । पिण्डक । उत्त० ५३० ।

गोलव्वायणं–गोलव्यायन–अनुराधागोत्रम् । ज० प्र० ५०० ।

गोलव्वायणसगोत्ते– । सूर्य० १५० ।

गोलांगूल–गोलाङ्गूल–वानर । भग० ५८२ ।

गोलाकारे–गोलाकार–वृत्ता । सूर्य० २६७ ।

गोलावलिछाया–गोलनामावलिर्गोलावलिस्तस्या छाया गोलावलिच्छाया । सूर्य० ९५ ।

गोलिका–भण्डिका । ठाणा० ४१९ ।

गोलिकातणा– । ठाणा० ३९० ।

गोलिगि–महियविक्कया । नि० चू० तृ० ४५ अ ।

गोलियघणुय–गोलिकधनु । उत्त० २४५ ।

गोलिया–गोलिका–गन्धप्रधाना शाला । व्य० द्वि० २४८ आ । मथितविक्रायका । बृ० द्वि० १५४ आ ।

गोलियालिंग–अनेकाश्रयविशेष । जीवा० १२३ ।

गोलोममेत्तो–अहस्तप्राप्या–गोलोममात्रा । नि० चू० प्र० ३५४ अ ।

गोलोमा–द्वीन्द्रियजन्तुविशेष । जीवा० ३१ । प्रज्ञा० ४१ ।

गोल्लविसओ–गोल्लविषय–गोल्लदेश । आव० ४३३ । गौडविषय–गौडदेश । आव० ८३० ।

गोल्ला- । ठाणा० ३६० ।
गोल्हाफलं-बिम्बफलम् । प्रश्न० ८१ । जीवा० २७२ ।
गोवग्गो-गोप । आव० ३६० ।
गोवग्गं-गोरूपाणि । ठाणा० ५०२ ।
गोवच्छय-गोवत्स । उत्त० ३०३ ।
गोवती-गोपति -गवेन्द्र । ज्ञाता० १६१ ।
गोवतीते-गोव्रतिक -गोश्चर्यानुकारी । ज्ञात० १६५ ।
गोवल्लं-गोवल्लायन-पूर्वाफाल्गुन्या गोत्रम् । ज०प्र०५०० ।
गोवल्लायणसगोत्ते-पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रस्य गोत्रम् । सूर्य० १५० । ज० प्र० ५०० ।
गोवाटादि-कर्द्दम । ठाणा० २१६ ।
गोवालो-यो गा पालयति गोपाल । उत्त० ४६५ । गोपाल । आव० ४१८ ।
गोवलकंचु-गोवालकञ्चुकम् । बृ० द्वि० १०६ अ ।
गोवालकंचुगो-गोवालकञ्चुक । बृ० द्वि २१७ अ ।
गोवालगमाया-गोपालकमाता शिवा, शृगालिनी । आव० ६७५ ।
गोवालवुयं- । नि० चू० प्र० २१२ आ ।
गोवाला-गोपाला -राजा । नदी० १५१ ।
गोवालियाओ- । ज्ञाता० २०४ ।
गोवाली-गोपाली-सवरोदाहरणे श्रीपार्श्वस्वामिसाध्वी । आव० ७१४ । वल्लीविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।
गोविंद-गोविन्द । आव० ७१३ । भिक्षुविशेष । नि० चू० द्वि० ३६ अ । श्रावकविशेष । व्य० द्वि० १७६ अ ।
गोविंददत्त-गोपेन्द्रदत्त -सद्व्यवहारकाचार्य । तगराया-माचार्यस्याष्टम शिष्य । व्य० प्र० २५६ अ ।
गोविंदनिज्जुत्ति-हेतुशास्त्रभेद । बृ० तृ० १४२ अ ।
गोविंदवायगो-मिच्छादिट्ठी व्रतेसु ठवित्तो पच्छा समत्त-पडिवत्तस्स सम्म आउट्टस्स मूल । नि० चू०तृ० १२६ अ । नि० चू० तृ० ८३ अ । गोविन्दवाचक -मूलप्रायश्चित्ते दृष्टान्त । व्य० प्र० १०३ आ । वाचकविशेष । नि० चू० प्र० २६३ आ ।
गोविहो- । ठाणा० ४६८ ।
गोवृष-बलीवर्दविशेष । बृ० प्र० २१३ अ ।
गोव्रतिका.-गोचर्यानुकारिण । अनु० २५ ।
गोशाल:-आजीविकमतप्रवर्त्तक । नदी० २३६ ।
गोशालक:-जिनोपसर्गकारीनिह्नव. । विपा० ६४ । सूत्र० ३८६ । ज्ञाता० १६२ । उत्त० ४७ ।
गोशीर्ष-चन्दनविशेष । सम० १३८ ।
गोशीर्षचन्दनं-चन्दनविशेष । ज्ञाता० १२८ ।
गोसंखी-गोशङ्खी-कौटुम्बिक आभीराणामधिपति । आव० २१२ ।
गोसखो(स)डी-उज्जूहिगा । नि० चू० द्वि० ७१ अ ।
गोसंधिओ-गोसन्धिक -गोष्ठाधिप । आव० ८६३ ।
गोस-गोप -प्रत्यूप । आव० ७८१ । प्रात । व्य० प्र० २३६ ।
गोसाल-मङ्खलिपुत्र । भग० ६५६, ६६० । आव० १६६ ।
गोसालसिस्सा-आजीवगा । नि० चू० द्वि० ६८ अ ।
गोसाला-गोणादि जत्थ चिट्ठति सा गोसाला । नि० चू० प्र० २६५ अ ।
गोसीस-गोशीर्षं-उत्तमचन्दनविशेष । प्रश्न० १३५ । चन्दनविशेष । जीवा० २२७ । गोशीर्षनामकचन्दनम् । प्रज्ञा० ८६ ।
गोसीसचंदणं-गोशीर्षचन्दनम् । आव० ११६ ।
गोसीसावलिसंठिते-गोशीर्षावलिसस्थित-गो शीर्षं गो-शीर्षं तस्यावली-तत्पुद्गलाना दीर्घरूपा श्रेणि तत्सम सस्था-नम् । सूर्य० १२६ ।
गोसे-प्रात । व्य० प्र० २३५ । उदियमादिच्चे । नि० चू० तृ० ७७ अ० ।
गोसो-प्रत्यूप । आव० ३५१ ।
गोस्तूपा-समुद्रमध्यवर्त्तिन पर्वतविशेषा । प्रश्न० ६६ ।
गोष्ठानि-घोपा । ठाणा० ८८ ।
गोष्ठामाहिल.-मिथ्यादर्शनशल्ये दृष्टान्त । आव० ५७६ । स्वाग्रहग्रस्त कश्चित् । सूत्र० २३३ । गोप्ठामाहिल । आचा० २०६ ।
गोह-राजपुरुप । उत्त० १७६ । गोध -आरक्ष । आव० २६६, ३१६ । उत्त० १६२ । अधम । आव० ४१५ । गोह -जार । ओघ० ४६ । दण्डिक -आरक्षक । आव० ६६२ । कर्मकर । दश० १८१ । प्राकृत । आव० ३०१ । उपपति । नदी० १४५ । गोध ।

दश० ८९ ।

गोहा–गोधा । उत्त० ६९९ । गोधा–भुजपरिसर्पतिर्यग्योनिक । जीवा० ४० ।

गोहिआ–चर्मावनद्धवाद्यविशेष । दर्दरिकेत्यपरनाम्ना प्रसिद्धा । अनु० १२९ ।

गोहिका–भाण्डाना कक्षाहस्तगतातोद्यविशेष । आचा० ४१२ ।

गोहुम–गोधूम –धान्यविशेष । ज्ञाता० २३१ । दश० १९३ । औषधिविशेष । प्रज्ञा० ३३ ।

गोहे–गोधा–सरीसृपविशेष । भग० ३६५ । गोधा । आव० ९६ । व्यवहारी । दश० ५९ ।

गोहेहिं– । नि० चू० प्र० ३४४ आ ।

गौतम –रागद्वेषादिसहभावविरहितो गणधरविशेष । उत्त० २४१ । गौतमस्यापत्यम् ।

गौतमस्वामी–प्रथमगणधर । आचा० २१ ।

गौतमादि –सूत्रत आत्मागमवान् । आव० ५७ ।

गौरखर – । उत्त० २७० ।

गौरव–ऋद्धा नरेन्द्रादिपूज्याचार्यत्वादिलक्षणया । सम०९ ।

गौरीपुत्रा –भिक्षाका । ज० प्र० १४२ ।

गौर्गलि –असञ्जातकिणस्कन्ध । आचा० ८७ ।

ग्रन्थ–ग्रन्थ-काव्य धर्मार्थकाममोक्षलक्षणपुरुषार्थनिबद्धं संस्कृतप्राकृतापभ्रंशसकीर्णभाषानिबद्ध, गद्यपद्यगेयचौर्णपदबद्ध वा । ज० प्र० २५९ । विशे० ४१६ ।

ग्रन्थविच्छेदविशेष.–वस्तु । नदी० २४१ ।

ग्रहगृहीत –उन्मत्त –दृप्त । पिण्ड० १६३ ।

ग्रहणक–सूचकम् । उत्त० २४२ ।

ग्रहणकुल्पिकम्– । बृ० प्र० ९१ आ ।

ग्रहणवाक्यम्– । विशे० ५६३ ।

ग्रहणशिक्षा–प्रथमा शिक्षा । नदी० २१० । ग्रहणाभ्यास । आव० ८३३ । बृ० प्र० ६४ ।

ग्रहणा–शिक्षा आसेवनात्मिका । उत्त० २८२ ।

ग्रहणावग्रहे– । आचा० ४०२ ।

ग्रहदण्डा –दण्डाकारव्यवस्थिता ग्रहा–ग्रहदण्डा ते चानर्थोपनिपातहेतुतया प्रतिवेध्या न स्वरूपत । जीवा०२८२ ।

ग्रहगर्जितानि–ग्रहचारहेतुकानि गर्जितानि, इमानि स्वरूपतोऽपि प्रतिषेध्यानि । जी० २८२ ।

ग्रहापसव्य– । जीवा० २८२ ।

ग्रहोपराग – । उत्त० २२९ ।

ग्रामकूट –ग्रामे महत्तर । नि० चू० प्र० १७६ आ ।

ग्रामणी –आधाकर्मपरिहरणे वणिग् । पिण्ड० ७२ ।

ग्रामभोगिक –ग्रामनगरपति । ओघ० ४६ । ठक्कुर । आव० २३८ ।

ग्रामरक्ष–त्रिकचत्वारादिव्यवस्थित शक्तिकुन्तादिहस्ता उपचरन्ति । आचा० ३०८ ।

ग्रामेण–जनसमूहेन । सम० ५३ ।

ग्रामेयक –ग्राम्य । नदी० १४९ ।

ग्राह –अभिलाप । आव० ८१४ ।

ग्राहणाकुशल –यो बह्वीभिर्युक्तिभि शिष्यान् बोधयति, व्याख्याप्रायोग्य सूरि । आचा० ३ ।

ग्राह्यवाक्य –सर्वत्रास्खलिताज्ञ, व्याख्याप्रायोग्य सूरि । आचा० २ ।

ग्रीवा–लोकपुरुषस्य त्रयोदशरज्जूपरिवर्त्तीप्रदेश । उत्त० ७०२ । कोटा । प्रश्न० ५६ । आचा० ३८ ।

ग्रीवाग्रह –ग्रीवाग्रहण–प्रतिमल्लेनापरमल्लस्य गलग्रहणम् । वि० १३० ।

ग्रैवेयकाणि–लोकपुरुषग्रीवास्थाने भवानि विमानानि । आव० ४० ।

घ

घघसालगिहे–घट्टशालागृहे । पिण्ड० १०५ ।

घघशाला–शालाविशेष । आचा० ३०९, ४०२ । सम० ३८ । घट्टशाला–अनाथमण्डपम् । ओघ० २०० । बृहच्छाला । आव० ६५४ । घट्टन धर्मकथन वा तन्त्राव्यतिरिक्ता बहुकार्पटिकासेविता वसतिर्घघशाला । व्य० द्वि० २५ अ ।

घचनघोलना–न्यायविशेष । विशे० ५३७ ।

घटए–पिबेत् (ग०)

घटलोह–घटालोह –यस्मिन्नेव दिने यत्र लोहे घटाकृता तल्लोह तस्मिन्नेव दिने विनष्टम् । व्य० द्वि० २०२ अ ।

घटा–सियालो । बृ० प्र० ११९ अ । किञ्चिण्यपेक्षया

किञ्चिन्महत्यो घण्टा । जीवा० १८१ । ज० प्र० २३ ।
घटाजालं–किङ्किण्यपेक्षया किञ्चिन्महती घण्टा तज्जालम् । जीवा० १८१ ।
घंटापासगा–घण्टापार्श्वा-घण्टैकदेशविशेषा । ज०प्र० ५३ ।
घंटापासो–घण्टापार्श्वं । जीवा० २०७ ।
घटि– । नि० चू० द्वि० ६४ आ ।
घटिआ–घण्टिका –घण्टावादका । ज० प्र० १८२ । घण्टिका–घर्घरिका । ज० प्र० १०६ ।
घटिकयक्ष–कुलदेवता । बृ० प्र० २१५ अ ।
घटिक्करग–स्थाल । नि० चू० द्वि० ६१ अ ।
घटिया–घण्टिका । प्रश्न० १५६ । भूषणविधिविशेष । जीवा० २६६ । क्षुद्रघण्टा । ज० प्र० ५२६ ।
घटियाजाल–घण्टिकाजाल किङ्किणीवृन्दम् । भग० ४७८ ।
घतु–घातुक –हननशील इति । उत्त० ४३६ ।
घसण–चन्दनस्येव घर्षणम् । आव० २७३ । विशे०८४३ ।
घंसिका–अनुरङ्गा यानविशेष । बृ० द्वि० १२५ आ ।
घसित्ता–घृष्ट्वा । आव० ८३१ ।
घसियगा–घर्षितकाश्चन्दनमिव दृषदि । औप० ८७ ।
घओदए–घृतोदक–बादर अप्कायिकविशेष । प्रज्ञा० २८ ।
घट– । आव० २८० ।
घटकः–भाजनविधिविशेष । जीवा० २६६ ।
घटकारः–स्वविज्ञानप्रकर्षप्राप्त । नदी० १६५ ।
घटखर्प्पर–कपाल । आचा० ३११ ।
घटना–अप्राप्तानां सयमयोगाना प्राप्तये घटना । भग० ४८४ ।
घटाभोज्यं–महत्तरानुमहत्तरादिर्वहिरावासित । व्य० द्वि० ३६२ अ ।
घटिकालय– । ठाणा० १२२ ।
घटिकालयादीनि–येष्वतिसम्पीडिताङ्गा दुःखमाकृष्यमाणा –वहिर्निष्क्रामन्ति जन्तव । उत्त० २४७ ।
घटिज्जताण– । राज० ५२ ।
घट्टइ–सर्वदिक्षु चलति, पदार्थान्तर वा स्पृशति । भग० १८३ । घट्टते–परस्पर सघट्टमाप्नोति । जीवा० ३०७ ।
घट्टए–लिप्तपात्रमसृणताकारक पाषाण । बृ० द्वि० २५३ अ ।
घट्टग–घट्टक येन पाषाणकेन पात्र नवलेप मसृण क्रियते । ओघ० १४४ । पाषाणक –येन पात्रक लेपित सद् घृष्यते । ओघ० १३० । घट्टक । ठाणा० ३३६ ।
घट्टगरइत–घट्टकेन रचित–मसृणित–घृष्टम् । ओघ०१४५ ।
घट्टण–घट्टन खञ्जागति । प्रज्ञा० ३२६ । आव० ७६१ । चालकम् । दश० १५२ । पिण्ड० १७१ । चलनम् । ओघ० १३६ । आहननम् । ओघ० ५२ । घट्टन–मिथश्चालनम् । दश० २२८ । सजातीयादिना चालनम् । दश० १५४ । घट्टनानि–जालादीनि चलनानि । ओघ० १८१ । आव० ५४० ।
घट्टणता– । ठाणा० २८० ।
घट्टणया–वङ्कगते प्रथमो भेद । घट्टनता । प्रज्ञा० ३२८ । घट्टनता–अक्षिण रज प्रविष्ठ मर्दित्वा दुःखयितुमारब्धम्, स्वयमेवाक्षिण गले वा किञ्चत्सा तुकादि उत्थित घट्टयति । आव० ४०५ ।
घट्टणा–घट्टना–चलनम् । ओघ० ३२ ।
घट्टनता–अक्षिकणुकादे । आचा० २५५ ।
घट्टना–कदर्थना । आचा० २६३ ।
घट्टयंतं–वस्त्वन्तर स्पृशन्तम् । ठाणा० ३८५ ।
घट्टिओ–घट्टित –मुद्रित । दश० ६२ ।
घट्टित–घट्टित –प्रेरित । प्रश्न० ५६ । सुष्ठुतर परितापित । बृ० तृ० ८१ आ ।
घट्टितघट्टन–घट्टितानि–सबद्धानि घट्टनानि जालादीनि चलनानि यस्य स । आव० ५४०, ५४६ । ओघ० १८१ ।
घट्टिय–घट्टित –सुविहितोपाय । धीवरादिकृत उपाय । पिण्ड० १७१ । घट्टित –स्पष्ट । प्रश्न० ६० । परस्पर घर्षयुक्ता । ज० प्र० ३७ ।
घट्टे–घट्टयति अङ्गुल्या मसृणानि करोति । ओघ० १४३ ।
घट्टेइ–घट्टयति स्पृशति । ओघ० २११ । हस्तस्पर्शनेन घट्टयति । ज्ञाता० ६६ ।
घट्टेउ–घट्टयित्वा–तिरस्कृत्य । ओघ० १६२ ।
घट्ट–घृष्ट पाषाणादिना उपरि घर्षिते । सूर्य० २६३ । जीवा० १६० ।
घट्टा–घृष्टानीव घृष्टानि खरशाणया पाषाणप्रतिमावत् । सम० १३८ । प्रज्ञा० ८७ । घृष्टा इव घृष्टा खर-

शाणया पाषाणवत्। ज० प्र० २०। येषा–जङ्घे श्लक्ष्णीकरणार्थं फेनादिना घृष्टे भवतस्तेऽवयवावयविनोरभेदोपचारात् घृष्टा। अनु० २६। घृष्टा इव घृष्टा खरशाणया प्रतिमेव। औप० १०। घृष्टा–जङ्घासु दत्तफेनका। ओघ० ५५। घृष्टा। ठाणा० २३२।

घड–घटकार–कर्म्मजाया बुद्धौ दृष्टान्त। नदी० १६५। घटा–समुदायरचना। भग० २१५।

घडओ–घट। आव० ४२३। घटक। आव० ५५६।

घडक–घटक। अनु० १५२।

घडण–घटन–अप्राप्तसयमयोगप्राप्तये यत्न। प्रश्न० १०६।

घडण–घटक–लघुघंट। ज० प्र० १०१।

घडणजयणप्पहाणी–घटन–सयमयोगविषय चेष्टन यतन–तत्रैवोपयुक्तत्व ताभ्या प्रधान–प्रवर घटनयतनप्रधान। उत्त० ५२२।

घडणा–घटना–परस्परादिघर्षणा। विशे० ५३७।

घडदास–घटदास। आचा० ३८८।

घडदासी–घटदासी–जलवाहिनी। सूत्र० २४५।

घडभिगारो–घटभृङ्गार–जलपरिपूर्ण कलशभृङ्गार। औप० ६९।

घडमुह–घटमुख, घटकमुखमिव मुख तुच्छदशनच्छदत्वात्। भग० ३०८।

घडमुहपवत्तिए–घटमुखेनेव कलशब्दनेनेव प्रवर्त्तित-प्रेरित घटमुखप्रवर्त्तित। सम० ८५।

घडा–गोष्ठी। बृ० द्वि० १८८ आ। गोट्ठी। नि० चू० प्र० १५६ आ। महत्तरानुमहत्तरादिगोष्ठीपुरुषसमवायलक्षणा। बृ० तृ० ९ आ। घटा–समुदाय। भग० ८३।

घडाविओ–योजित। आव० ६८८।

घडिगा–घटिका–मृन्मयकुल्लडिका। सूत्र० ११८।

घडिगापोव्ववत्– । नि० चू० द्वि० ४१ आ।

घडितव्व–घटितव्य–अप्राप्तेषु योग कार्यं। ठाण० ४४१।

घडिय–घटित–सयोगी जात। आव० ८२४। कूपितम्। दश० ११५।

घडियनाती–घटितज्ञाति–दृष्टाभाषित। व्य० द्वि० ८५ अ।

घडियल्लय–घटित। आव० ४१०।

घडियव्व–अप्राप्ताना सयमयोगाना प्राप्तये घटना कार्या। भग० ४८४। अप्राप्तप्राप्तये घटना कार्या। ज्ञाता० ६०।

घडीमत्तय–घटीमात्रक–घटीसस्थान मृन्मयभाजनविशेष। बृ० द्वि० २६ आ।

घडेंति–घटयन्ति सयोजयन्ति। ज० प्र० ३६४।

घडेमि–घटयामि। आव० ४२०।

घणगुले–घनाङ्गुलम्। अनु० १७३। प्रतरश्च सूच्या गुणितो दैर्घ्येण विष्कम्भत पिण्डतश्च समसङ्ख्य घनाङ्गुलम्। अनु० १५८।

घण–अन्यान्यशाखाप्रशाखानुप्रवेशतो निविडा। जीवा० १८७। घन–वादित्रविशेष। ज० प्र० ४१२। घनम्। आव० २०८, ८३८। घन–कास्यतालादि। जीवा० २६६। निविडा। ओघ० ३०। निश्छिद्रम्। ज्ञाता० २। घन–कसकादि। जीवा० २४७। देवविमानविशेष। सम० ३७। कोट्टगपुडगादिगधा। नि० चू० तृ० १ अ। कलुष। बृ० द्वि० १३८ अ। घन–यस्य राशेर्यो वर्ग स तेन राशिना गुण्यते ततो घनो भवति। प्रज्ञा० २७५। निविडप्रदेशोपचय। सूर्य० २८६। घनाकार वादित्रम्। सूर्य० २६७। व्याप्त। प्रज्ञा० ३६। घन–सङ्ख्यान यथा द्वयोर्घनोऽष्टौ। ठाणा० ४९६। घन–बहुलतर। जीवा० २०७। स्त्यानीभूतोदक पिण्डीभूतो वा। जीवा० ६१। घन–काश्यतालादिकम्। भग० २६७। ज० प्र० १०२। चतुःषष्टिपदात्मक तप घनतप। उत्त० ६०१।

घणकडियकडिच्छा–अन्योऽन्य शाखानुप्रवेशाद् बहलनिरन्तरच्छाय। भग० ६२८।

घणकडियकडिच्छाए–अन्योऽन्य शाखानुप्रवेशाद् बहुल निरन्तरच्छाय। औप० ६।

घणकरण–घनकरण–यथायोग निधत्तिरूपतया निकाचनारूपतया वा व्यवस्थापनम्। पिण्ड० ४१।

घणकुड्डा–घनकुड्या–पक्वेष्टकादिमयभित्तिका। बृ० प्र० ३१० आ।

घणगणियभावणा–घनगणितभावना। जीवा० ३२५।

घणघणाइय–घनघनायित घणघणायितरूप। ज० प्र० १४४।

घणदतदीवे–अन्तरद्वीपविशेष। ठाणा० २२६।

२०५ ।

घिंसु-ग्रीष्मे । उत्त० १२३ ।

घिणा-घृणा-पापजुगुप्सालक्षणा। प्रश्न० ५। आव० ३५१।

घिणीअण्णो-जीवदयालु । नि० चू० प्र० १२० अ ।

घीरोलिय-गृहकोकिलिका-गृहगोधिका । प्रश्न० ८ ।

घुंटक-गुल्फ । प्रश्न० ८० ।

घुंटिउ-पीत्वा । त० ।

घुट्टंति-पिबन्ति । नदी० ६३ ।

घुट्टग-घुट्टक-लेपितपात्रमसृकारक पाषाण । पिण्ड० ९ ।

घुण-काष्ठनिश्रितो जीवविशेष । आचा० ५५ ।

घुणकीटक-सचित्ताचित्तवनस्पतिशरीरेऽपि कीटविशेष । सूत्र० ३५७ ।

घुणक्खर-घुणाक्षर-न्यायविशेष । दश० १११ ।

घुणखइयं-घुणखादित-कोलावास । आव० ६५६ ।

घुणचुण्ण-घुणचूर्णं-अचित्तचूर्णम् । विशे० ६६० ।

घुणाक्षरकरणं-न्यायविशेष । दश० १५८ ।

घुणित-घुणाण आवासो घुणित काष्टमित्यर्थं । नि० चू० प्र० २५५ आ ।

घुरघुरायमाण-अन्तर्नदन्त-गलमध्ये रव कुर्वन्तम् । सम० ५२ ।

घुघुंरं- । सूत्र० ३२१ ।

घुघुंरक- । उत्त० ३१२ ।

घुघुंरादि- । विपा० ५६ ।

घुलति-भ्राम्यति । उत्त० १५० ।

घुल्ला-घुल्लिका । जीवा० ३१ । घुल्ला-घुल्लिका द्वीन्द्रिय-जीवविशेष । प्रज्ञा० ४१ ।

घूमायमान.- । ज्ञाता० १५२ ।

घूय-घूक-कौशिक । ज्ञाता० १३८ ।

घूरा-जङ्घा खलका वा । सूत्र० ३२४ ।

घूर्णितचेतस.- । नदी० १५२ ।

घृत-स्निग्धस्पर्शपरिणता घृतादिवत् । प्रज्ञा० १० ।

घृतपूप-घृतनिष्पन्न पूप । आव० ४५८ ।

घृतपूर्णं-सुपक्ववस्तुविशेष । उत्त० ६१ । अशनम् । आव० ८११ ।

घृतवारका- । विशे० ६३७ ।

घृतविक्रयी- । नदी० १६५ ।

घृतोद-घृतवरद्वीपानन्तर समुद्र । प्रज्ञा० ३०७ । घृत-रसास्वाद समुद्र । अनु० ९० ।

- । आचा० ३६१ ।

घेच्चिओ-पिष्टित । आव० २०६ ।

घेच्छति-ग्रहीष्यति । आव० २३४ ।

घेत्थिहि-ग्रहीष्यति । आव० २९३ ।

घोच्छामो-गर्हिता स्म । आव० ९० ।

घोड-घोटक । ग० । घोटा ड(डि)गरा । व्य० द्वि० २३३ आ ।

घोडए-घोटक-अश्व । प्रज्ञा० २५२ ।

घोडओ-घोटक-सामान्योऽश्व । जीवा० २८२ ।

घोडगा-एकखुरचतुष्पदविशेष । प्रज्ञा० ४५ ।

घोडगो-घोटक-अश्व । आसुव्व विसमपाय गाय ठावित्तु ठाइ उस्सगे । आव० ७९८ । बलीवर्द । नि० चू० तृ० ३७ आ ।

घोडमादो-असखडीदोषविशेष । नि० चू० द्वि० ३२ अ ।

घोडयगीवो-घोटकग्रीव । आव० १७६ ।

घोडा-घोट्टा-चट्टा, जूअकारादिधुत्ता । नि० चू० प्र० २०७ आ। चट्टा । वृ० तृ० ९६ आ। वृ० प्र० ३११ अ । वृ० द्वि० ३० आ ।

घोडो-घोट-एकखुरचतुष्पदविशेष । जीवा० ३८ ।

घोण-नासा । प्रश्न० ८२ ।

घोणसो-सर्प । आव० ४२६ ।

घोणा-नासिका । ज० प्र० २३६ ।

घोर-घोर-अतिनिर्घृण, परीषहेन्द्रियादिरिपुगणविनाशमाश्रित्य निर्दय, आत्मनिरपेक्ष । भग० १२ । घोर-निर्घृण परीषहेन्द्रियादिरिपुगणविनाशमधिकृत्य निर्दय, अन्यैर्दुरनुचरो वा । सूर्य० ५ । घूर्णयतीति घोर-निरनुकम्प । उत्त० २१७। प्राणसशयरूपम् । आचा० १९४ । आत्मनिरपेक्षम् । ठाणा० २३३ । घोर-हिंसा । भग० १७५ । रौद्रम् । दश० १९७ । घोरो-निर्घृण परिषहेन्द्रियकषायाख्याना रिपूणा विनाशे कर्तव्ये । अन्ये त्वात्मनिरपेक्ष घोरम् । ज्ञाता० ८ ।

घोरगत्त-घोरगात्रम् । उत्त० ३०३ ।

घोरगुणे–घोरा–अन्यैर्दुरनुचरा गुणा ज्ञानादयो यस्य स। सूर्य० ४। अन्यैर्दुरनुचरा गुणा मूलगुणादयो यस्य स। भग० १२।

घोरतवस्सी–घोरतपस्वी–घोरैस्तपोभिस्तपस्वी। भग० १२। सूर्य० ४।

घोरपरक्कमो–घोरपराक्रम–कषायादिजय प्रति रौद्रसामर्थ्य। उत्त० ३६५।

घोरबभचेरवासी–घोर–दारुण अल्पसत्वैर्दुरनुचरत्वात् ब्रह्मचर्य यत्तत्र वस्तु शील यस्य स घोरब्रह्मचर्यवासी। सूर्य० ४। भग० १२।

घोरमहाविसदाहो–घोरा–रौद्रा महाविषा–प्रधानविषयुक्ता। दष्ट्रा–आस्यो यस्य स घोरमहाविषदष्ट्र। आव० ५६६।

घोरविस–परम्परया पुरुषसहस्रस्यापि हननसमर्थविषम्। भग० ६७२।

घोरव्वओ–घोरव्रत–धृतात्यन्तदुर्धरमहाव्रत। उत्त० ३६५।

घोरा–झगिति जीवितक्षयकारिणी औदारिकवता, परिजीवितानपेक्षा वा। प्रश्न० १७।

घोरासम–घोराश्रम–गार्हस्थ्यम्। उत्त० ३१५।

घोलण–घोलन–अङ्गुष्ठकाङ्गुलिगृहीतसञ्चाल्यमानयूकाया इव। आव० २७३। अङ्गुष्ठकाङ्गुलिगृहीतसचाल्यमानयूकाया इव घोलनम्। विशे० ८४३।

घोलिओ–घूर्णित। आव० ३०३।

घोलित– । नदी० १६२।

घोलियया–घोलितका दधिघट इव पट इव वा। औप० ८७।

घोष– । ठाणा० २०५।

घोषविशुद्धिकरणता–उदात्तानुदात्तादिस्वरशुद्धिविधायिता। उत्त० ३६।

घोषातको–कटुकवल्लीविशेष। नदी० ७७।

घोस–नर्दितम्। ज्ञाता० १६१। देवविमानविशेष। सम० १२, १७। ज्ञाता० २५१। गोउल। नि० चू० द्वि० ७० आ। घोष–गोकुलम् उत्त० ६०५। बृ० प्र० १८१ आ। बृ० द्वि० १८३ अ। घोष–शब्द। उपा० २५। उदत्तादि। भग० १७। घोष–अनुनाद। ज० प्र० ११७। गोष्ठ। ठाणा० ८५। घोष–दशमो दक्षिणनिकायेन्द्र। भग० १५७। जीवा० १७०। स्तनितकुमाराणामधिपति। प्रज्ञा० ९४। निनाद। जीवा० २०७।

घोसगसद्दो–घोषकशब्द। आव० ४२४।

घोसण–घोषण। आव० ११५।

घोसवई–घोषवती सेनाविशेष। आव० ५१४।

घोसवती–घोषवती–प्रद्योतराज्ञो वीणा। आव० ६७४।

घोससम–घोषा–उदात्तादयस्तैर्वाचनाचार्याभिहितघोषै समघोषसमम्। अनु० १५।

घोसा–निनाद। ज० प्र० ५३।

घोसाइ–घोषा–गोष्ठानि। ठाणा० ८६।

घोसाडइ–वल्लीविशेष। प्रज्ञा० ३२।

घोसाडए–घोषातकी। प्रज्ञा० ३६४।

घोसाडय–घोषातकम्। प्रज्ञा० ३७।

घोसाडिफल–घोषातकीफलम्। प्रज्ञा० ३६४।

घोसाडियाकुसुम–घोषातकीकुसुमम्। ज० प्र० ३४। जीवा० १९१।

घोसेह–घोषयत–कुरुत। ज्ञाता० १०३।

घ्राण–पोथ। ज० प्र० २३७।

च

चकमत–चङ्क्रममाण। ज्ञाता० २२१।

चकमण–चङ्क्रमण–गमनम्। आव० ५२९।

चकमणग–प्रचङ्क्रमणक–भ्रमणम्। ज्ञाता० ४१।

चकमणिया–चङ्क्रमणिका–गतागतादिका। आव ५५८।

चक्रमणभूमि– । ओघ० १२२।

चक्रमणिका– । ओघ० १२२।

चगवेरे–चङ्गवेरा–काष्ठपात्री। दश० २१८।

चगिक–औदारिकम्। ओघ० ९०।

चगेरी–चङ्गेरी–ग्रथितपुष्पसशिखाकरूपा। प्रज्ञा० ५४२। महतीकाष्ठपात्री बृहत्पट्टलिका वा। प्रश्न० ८।

चगोडए–नाणककोष्ठागारम्। बृ० तृ० ९३ आ।

चचरिक–भ्रमर। प्रज्ञा० ३६१।

चचलायमाण–चञ्चलायमान सौदामिनीयमान कान्ति-

घणदंता–घनदन्तनामा अन्तरद्वीप । प्रज्ञा० ५० ।
घणदन्तो–घनदन्त –अन्तरद्वीपविशेष । जीवा० १४४ ।
घणमुइ–जस्स मुइंगस्स घणसद्दसारित्थो सद्दो सो घण-मुइ । नि० चू० द्वि० १७१ आ ।
घणमुइंग–मेघसदृशध्वनिर्मुरज । ज० प्र० ६३ ।
घणमुयगो–घनमृदङ्ग -घनसमानध्वनिर्यो मृदङ्ग । जीवा० २१७ । पटुना पुरुषेण प्रवादित घनसमानध्वनिर्यो मृदङ्ग । जीवा० १६२ ।
घणवट्टे–सर्वत सम घनवृत्तम् । भग० ८६१ ।
घणवाए–घनवात –घनपरिणामो वातो रत्नप्रभापृथि-व्याद्यधोवर्त्ती । जीवा० २६ । घनवातो–घनपरिणामो रत्नप्रभापृथिव्याद्यधोवर्ती । प्रज्ञा० ३०, ७७ ।
घणवाय–घनवात –अत्यन्तघन पृथिव्याद्याधारतया व्य-वस्थित हिमपटलकल्प । आचा० ७४ ।
घणवायवलय– । प्रज्ञा० ७७ ।
घणवाया–रत्नप्रभाद्यधोवर्तिना घनोदधिना विमानाना वाऽऽधारा हिमपटलकल्पा वायवो घनवात । उत्त० ६६४ ।
घणविज्जुया– । भग० ५०४ । ठाणा० ३६१ ।
घणसत्ताणिया–घनसत्तानिका-घनतन्तुका । ओघ० ११८ ।
घणसमद्दे–घनसम्मर्द –यत्र चन्द्र सूर्यो वा ग्रहस्य नक्षत्रस्य वा मध्ये गच्छति स योग । सूर्य० २३३ ।
घणोदधिवलए–घनोदधिवलय –वलयाकारघनोदधिरूप । जीवा० ६५ ।
घत्तह–यतध्वम् । त० ।
घत्तामो–क्षिपाम –दिशो दिशि विकीर्णसैन्य कुर्म्म । ज० प्र० २३३ ।
घत्तिय–प्रेरित । ओघ० १३७ ।
घत्तिया–दूरमुत्सारिता । पउ० २८-६०९ ।
घत्तिहामि–यतिष्ये । विपा० ८३ ।
घत्तेह–प्रक्षिपत । ज० प्र० २४० ।
घत्थं–ग्रस्त–अभिभूतम् । आव० ५८८ ।
घत्थे–गृहीता । पिण्ड० ४७ ।
घत्थो–ग्रस्त । मर० ।
घन–घनतप । उत्त० ६०१ । स्त्यानो हिमशिलावत् । ठाणा० १७७ । वाद्यकशब्दविशेष । ठाणा० ६३ । हस्त-तालक सालादि । आचा० ४१२ ।
घनकडियकडच्छाए–कट सञ्जातोऽस्येति कटित –कटा-न्तरेणोपरि आवृत इत्यर्थ कटितश्चासौ कटश्च कटितकट घना–निविडा कटितकटस्येवाधो भूमौ छाया घनकटित-कच्छाय । जीवा० १८७ ।
घनगुप्त –नामशिल्प । विशे० ६२७ ।
घनतप –षोडशपदात्मक प्रतर पदचतुष्टयात्मिकया श्रेण्या गुणितो–घनो भवति, आगत चतुःषष्टि ६४ स्थापना तु पूर्विकैव नवर बाहल्यतोऽपि पदचतुष्टयात्मकत्व विशेष, एतदुपलक्षित तपो घनतप उच्यते । उत्त० ६०१ ।
घनपरिमडल–चत्वारिंशत्प्रदेशावगाढ चत्वारिंशत्परमा-ण्वात्मक च, तत्र तस्या एव विंशतेरुपरि तथैवान्या विंश-तिरवस्थाप्यते । प्रज्ञा० १२ ।
घनोदधि–घन –स्त्यानो हिमशिलावत् उदधि –जलनिचय स–चासौ चेति घनोदधि । ठाणा० १७७ ।
घनोपल –करक । प्रज्ञा० २८ ।
घम्मपक्क–घर्मपक्कम् । विपा० ८० ।
घम्मो–घर्म । आव० ३४६ ।
घय–घृतवर –क्षीरोदसमुद्रानन्तर द्वीप । प्रज्ञा० ३०७ । द्वीपविशेष । अनु० ६० । घृत–आज्यम् । दश० १८० । घृतविक्रयी, कर्म्मजाया बुद्धौ दृष्टान्त । नदी० १६५ ।
घयउरा–घृतपूर्णा । उत्त० २१० ।
घयकुडो–घृतकुट –घृतकुम्भ । आव० ३१० ।
घयणं–भाण्ड, औत्पत्तिकीबुद्धौ दृष्टान्त । नदी० १५३ ।
घयणो–घृतान्न । आव० ४१६ । भाण्ड । बृ० प्र० २१३ ।
घयपुण्णो–घृतपूर्णा । उत्त० २०६ ।
घयमंडो–घृतमण्ड –घृतसार । जीवा० ३५४ ।
घयमेहे–घृतवत् स्निग्धो मेघो घृतमेघ । ज० प्र० १७४ ।
रो–घृतवर द्वीपविशेष, घृतोदकवाप्यादियोगाद् घृत-वर्णदेवस्वामीकत्वाच्च द्वीप । जीवा० ३५४ ।
घयविक्किणओ–घृतविक्रायक । आव० ४२७ ।
घयविक्किणिया–घृतविक्रायिका । आव० १६७ ।
घरतरं–घरतरा उपरेण जत घरतर । नि०चू०प्र० १८७ ।
घर–गृहाणि सामान्यजनाना सामान्यानि वा । अनु०

१५९ । गृहम् । आव० ५८१, ८४५ । गृह–सामान्यम् । प्रश्न० ८ ।

घरओ–गृहम् । आव० ३९१ ।

घरकुटीए–बहिरवस्थित धनकादि, अथवा तत्कलहिका-न्तर्गतकुट्या वा निवसति । आव० ५७ ।

घरकोइल–गृहगोधिका । पिण्ड० १०३ ।

घरलोइलओ–गृहकोकिल–गृहगोधा । आव० ३८९ ।

घरकोइलिका–गृहकोकिलिका–घरोलिका । ओघ० १२६ ।

घरकोइलिया–गिहिकोइला । नि० चू० प्र० १८२ आ । गृहकोकिला–गृहगोधिका । आव० ७११ ।

घरकोइलो–गृहकोकिला । आव० ६४१ ।

घरघरओ–घरघरक–कण्ठाभरणविशेष । ज० ५२९ ।

घरचिडओ–चटक । नि० चू० द्वि० ३३ आ ।

घरछाइणिया–गृहच्छादनिका । उत्त० १४७ ।

घरछादणिया–गृहच्छादनिका । आव० ३४३ ।

घरजामाउ–गृहजामाता । ज्ञाता० २०१ ।

घरट्ट–घटी, यन्त्रविशेष । ओघ० १६५ । श्रमणकल्पम् । दश० ११४ ।

घरणी–गृहिणी । आव० २२४ ।

घरवइ–गृहाणा वृति । बृ० प्र० १८४ अ ।

घरवगडा–गृहवगडा–गृहवृतिपरिक्षेप । बृ० प्र० ३०९आ ।

घरसमुदाणिया–गृहसमुदान–प्रतिग्रहम् । औप० १०६ ।

घरा–गृहाणि सामान्यत । ज० प्र० १०७ । गृहाणि–प्रासादा । दश० १९३ । गृहाणि सामान्यजनाना सामान्य वा । भग० २३८ ।

घरास–घरावासो । नि० चू० प्र० २०५ आ । गृहवास । बृ० द्वि० २०७ अ ।

घरोइला–भुजपरिसर्पविशेष । प्रज्ञा० ४६ ।

घरोलिका–गृहकोकिलिका । ओघ० १२६ ।

घरोलिया–भुजपरिसर्पतिर्यग्योनिक । जीवा० ४० ।

घर्मा–आद्यभूमि । आव० ६०० ।

घल्लइ–क्षिपति । पञ्च० ६२–१२ ।

घसा–जत्थ एगदेसे अक्कममाणे सो पदेसो सव्वो चलइ सा । दश० चू० १०२ । शुषिरभूमि । दश० २०५ ।

घसिर–ग्रसिता–बहुभक्षी । बृ० प्र० २४८ अ ।

घसिरो–बहुभक्खगो । ओघ० ९८ । नि० चू० प्र० २०१ अ ।

घसो–भूराजि । जीवा० २८२ । स्थलादधस्तादवतरणम् आचा० ३३८ ।

घाए–घात–गमनम् । सूर्य० ८, ४९ ।

घाओ–घाता–प्रहारा । ज्ञाता० ६९ । सपीडनम् । ओघ० १३६ ।

घाड–घाट–मस्तकावयवविशेष । पुरुषादिवध । ज्ञाता० १३८ ।

घाडामुह–घाटामुख–शिरोदेशविषय । भग० ३०८ । घाटामुख–कृकाटिकावदनम् । ज० प्र० १७० ।

घाडिए–मित्रम् । नि० चू० द्वि० ७८ अ ।

घाडिय–सहचारी । ज्ञाता० ८९ । मित्रम् । नि० चू० द्वि० १२७ अ ।

घाण–तिलपीडनयन्त्रम् । पिण्ड० १७ । घ्राण–गन्ध । प्रज्ञा० ६०१ । घ्राणो–गन्धो गन्धोपलम्भक्रिया वा । गन्ध-गुण । भग० ७१३ । घ्रायत इति घ्राणो–गन्धगुण । भग० ७५३ ।

घाणामाड–घ्राणमयात् । ठाणा० ३६९ ।

घाणिदिए–घ्राणेन्द्रियम् । प्रज्ञा० २९३ ।

घाणो– । ओघ० १६६ ।

घात–हन्यन्ते प्राणिन स्वकृतकर्मविपाकेन यस्मिन् घात–नरक । सूत्र० १२८ ।

घातिकर्म–वेदनीयादिकर्म । प्रज्ञा० ५६५ ।

घातो–घात–देशतो घातनम् । प्रश्न० १३७ ।

घाय–घात्यन्ते–व्यापाद्यन्ते नानाविधै प्रकारैर्यस्मिन् प्राणिन स घात–ससार । सूत्र० १६१ ।

घायए–घातक योऽन्येन घातयति । ज० प्र० १२३ ।

घायओ–घातक–योऽन्येन घातयति । जीवा० २८० ।

घायणा–घातना–प्राणवधस्य षष्ठ पर्याय । प्रश्न० ५ ।

घालती–गृहीतभाण्डा । निरय० २५ ।

घास–ग्रासम्–आहारम् । उत्त० ६०६ । ग्रासम् । उत्त० २९४ । घासा–बृहत्यो भूमिराजय । आचा० ४११ । ग्रस्यत इति ग्रास–आहार । सूत्र० ४९ । औप० ३८ ।

घिंसिसिखासे–ग्रीष्मकाले, शिशिरकाले, वर्षाकाले । ओघ०

२०५ ।
घिसु–ग्रीष्मे । उत्त० १२३ ।
घिणा–घृणा–पापजुगुप्सालक्षणा। प्रश्न० ५ । आव० ३५१ ।
घिणोअण्णो–जीवदयालु । नि० चू० प्र० १२० अ ।
घीरोलिय–गृहकोकिलिका –गृहगोधिका । प्रश्न० ८ ।
घुटक –गुल्फ । प्रश्न० ८० ।
घुंटिउ–पीत्वा । त० ।
घुट्टति–पिबन्ति । नदी० ६३ ।
घुट्टग–घुट्टक –लेपितपात्रमसृकारक पाषाण । पिण्ड० ९ ।
घुण.–काष्ठनिश्रितो जीवविशेष । आचा० ५५ ।
घुणकीटक'–सचित्ताचित्तवनस्पतिशरीरेऽपि कीटविशेष । सूत्र० ३५७ ।
घुणक्खर–घुणाक्षर –न्यायविशेष । दश० १११ ।
घुणखइय–घुणखादित–कोलावास । आव० ६५६ ।
घुणचुण्ण–घुणचूर्णं–अचित्तचूर्णम् । विशे० ६६० ।
घुणाक्षरकरणं–न्यायविशेष । दश० १५८ ।
घुणित–घुणाण आवासो घुणित काष्टमित्यर्थ । नि० चू० प्र० २५५ आ ।
घुरघुरायमाण–अन्तर्नदन्त–गलमध्ये रव कुर्वन्तम् । सम० ५२ ।
घुर्घुर– । सूत्र० ३२१ ।
घुर्घुरक– । उत्त० ३१२ ।
घुर्घुरादि– । विपा० ५६ ।
घुलति–भ्राम्यति । उत्त० १५० ।
।–घुल्लिका । जीवा० ३१ । घुल्ला –घुल्लिका द्वीन्द्रिय-जीवविशेष । प्रज्ञा० ४१ ।
घूमायमान – । ज्ञाता० १५२ ।
घूय–घूक –कौशिक । ज्ञाता० १३८ ।
घूरा–जङ्घा खलका वा । सूत्र० ३२४ ।
घूर्णितचेतस – । नदी० १५२ ।
घृत–स्निग्धस्पर्शपरिणता घृतादिवत् । प्रज्ञा० १० ।
घृतपूप –घृतनिष्पन्न पूप । आव० ४५८ ।
घृतपूर्ण–सुपक्ववस्तुविशेष । उत्त० ६१ । अशनम् । आव० ८११ ।
घृतवारका.– । विशे० ६३७ ।
घृतविक्रयी– । नदी० १६५ ।
घृतोद –घृतवरद्वीपानन्तर समुद्र । प्रज्ञा० ३०७ । घृत-रसास्वाद समुद्र । अनु० ९० ।
– । आचा० ३६१ ।
घेच्चिओ–पिष्टित । आव० २०६ ।
घेच्छति–ग्रहीष्यति । आव० २३४ ।
घेत्थिहि–ग्रहीष्यति । आव० २९३ ।
घोच्छामो–गर्हिता स्म । आव० ९० ।
घोड–घोटक । ग० । घोटा ड(डिं)गरा । व्य० द्वि० २३३ आ ।
घोडए–घोटक –अश्व । प्रज्ञा० २५२ ।
घोडओ–घोटक –सामान्योऽश्व । जीवा० २८२ ।
घोडगा–एकखुरचतुष्पदविशेष । प्रज्ञा० ४५ ।
घोडगो–घोटक –अश्व । आसुव्व विसमपाय गाय ठावित्तु ठाइ उस्सगे । आव० ७९८ । बलीवर्द । नि० चू० तृ० ३७ आ ।
घोडमादो–असखडीदोपविशेष । नि० चू० द्वि० ३२ अ ।
घोडयगीवो–घोटकग्रीव । आव० १७६ ।
घोडा–घोट्टा–चट्टा, जूअकारादिधुत्ता । नि० चू० प्र० २०७ आ । चट्टा । वृ० तृ० ९९ आ । वृ० प्र० ३११ अ । वृ० द्वि० ३० आ ।
घोडो–घोट –एकखुरचतुष्पदविशेष । जीवा० ३८ ।
घोण–नासा । प्रश्न० ८२ ।
घोणसो–सर्प । आव० ४२६ ।
घोणा–नासिका । ज० प्र० २३६ ।
घोर–घोर –अतिनिर्घृण , परीपहेन्द्रियादिरिपुगणविनाशमाश्रित्य निर्दय , आत्मनिरपेक्ष । भग० १२ । घोर – निर्घृण परीपहेन्द्रियादिरिपुगणविनाशमधिकृत्य निर्दय, अन्यैर्दुरनुचरो वा । सूर्य० ५ । घूर्णयतीति घोर – निरनुकम्प । उत्त० २१७ । प्राणसंशयरूपम् । आचा० १९४ । आत्मनिरपेक्षम् । ठाणा० २३३ । घोर–हिंसा । भग० १७५ । रौद्रम् । दश० १९७ । घोरो–निर्घृण परिपहेन्द्रियकपायाख्याना रिपूणा विनाशे कर्त्तव्ये । अन्ये त्वात्मनिरपेक्ष घोरम् । ज्ञाता० ८ ।
घोरगत्त–घोरगात्रम् । उत्त० ३०३ ।

घोरगुणे–घोरा–अन्यैर्दुरनुचरा गुणा ज्ञानादयो यस्य स। सूर्य० ४। अन्यैर्दुरनुचरा गुणा मूलगुणादयो यस्य स। भग० १२।

घोरतवस्सी–घोरतपस्वी–घोरैस्तपोभिस्तपस्वी। भग० १२। सूर्य० ४।

घोरपरक्कमो–घोरपराक्रम–कषायादिजय प्रति रौद्रसामर्थ्य। उत्त० ३६५।

घोरबंभचेरवासी–घोर–दारुण अल्पसत्वैर्दुरनुचरत्वात् ब्रह्मचर्यं यत्तत्र वस्तु शील यस्य स घोरब्रह्मचर्यवासी। सूर्य० ४। भग० १२।

घोरमहाविसदाढो–घोरा–रौद्रा महाविषा–प्रधानविषयुक्ता। दंष्ट्रा–आस्यो यस्य स घोरमहाविषदंष्ट्र। आव० ५६६।

घोरविस–परम्परया पुरुषमहस्रस्यापि हननसमथविषम्। भग० ६७२।

घोरव्वओ–घोरव्रत–धृतात्यन्तदुर्धरमहाव्रत। उत्त० ३६५।

घोरा–झगिति जीवितक्षयकारिणी औदारिकवता, परिजीवितानपेक्षा वा। प्रश्न० १७।

घोरासम–घोराश्रम–गार्हस्थ्यम्। उत्त० ३१५।

घोलण–घोलन–अङ्गुष्ठकाङ्गुलिगृहीतसञ्चाल्यमानयूकाया इव। आव० २७३। अङ्गुष्ठकाङ्गुलिगृहीतसवाल्यमानयूकाया इव घोलनम्। विशे० ८४३।

घोलिओ–घूर्णित। आव० ३०३।

घोलित– । नदी० १६२।

घोलियया–घोलितका दधिघट इव पट इव वा। औप० ८७।

घोष– । ठाणा० २०५।

घोषविशुद्धिकरणता–उदात्तानुदात्तादिस्वरशुद्धिविधायिता। उत्त० ३६।

घोषातकी–कटुकवल्लीविशेष। नदी० ७७।

घोस–नर्दितम्। ज्ञाता० १६१। देवविमानविशेष। सम० १२, १७। ज्ञाता० २५१। गोकुल। नि० चू० द्वि० ७० आ। घोष–गोकुलम् उत्त० ६०५। वृ० प्र० १८१ आ। वृ० द्वि० १८३ अ। घोष–शब्द। उपा० २५। उदात्तादि। भग० १७। घोष–अनुनाद। ज० प्र० ११७। गोष्ठ। ठाणा० ८५। घोष–दशमो दक्षिणनिकायेन्द्र। भग० १५७। जीवा० १७०। स्तनितकुमाराणामधिपत्ति। प्रज्ञा० ९४। निनाद। जीवा० २०७।

घोसगसद्दो–घोषकशब्द। आव० ४२४।

घोसण–घोषण। आव० ११५।

घोसवई–घोषवती सेनाविशेष। आव० ५१४।

घोसवती–घोषवती–प्रद्योतराज्ञो वीणा। आव० ६७४।

घोससम–घोषा–उदासादयस्तैर्वाचनाचार्याभिहितघोषैं समघोषसमम्। अनु० १५।

घोसा–निनाद। ज० प्र० ५३।

घोसाइ–घोषा–गोष्ठानि। ठाणा० ८६।

घोसाडइ–वल्लीविशेष। प्रज्ञा० ३२।

घोसाडए–घोषातकी। प्रज्ञा० ३६४।

घोसाडय–घोषातकम्। प्रज्ञा० ३७।

घोसाडिफल–घोषातकीफलम्। प्रज्ञा० ३६४।

घोसाडियाकुसुम–घोषातकीकुसुमम्। ज० प्र० ३४। जीवा० १९१।

घोसेह–घोषयत–कुरुत। ज्ञाता० १०३।

घ्राण–पोथ। ज० प्र० २३७।

च

चकमत–चङ्क्रममाण। ज्ञाता० २२१।

चकमण–चङ्क्रमण–गमनम्। आव० ५२९।

चकमणग–प्रचङ्क्रमणक–भ्रमणम्। ज्ञाता० ४१।

चकमणिया–चङ्क्रमणिका–गतागतादिका। आव ५५८।

चक्रमणभूमि– । ओघ० १२२।

चक्रमणिका– । ओघ० १२२।

चगबेरे–चङ्गबेरा–काष्ठपात्री। दश० २१८।

चगिक–औदारिकम्। ओघ० ६०।

चगेरी–चङ्गेरी–ग्रथितपुष्पसशिखाकरूपा। प्रज्ञा० ५४२। महतीकाष्ठपात्री बृहत्पटलिका वा। प्रश्न० ८।

चंगोडए–नाणककोष्ठागारम्। वृ० तृ० ९३ आ।

चचरिक–भ्रमर। प्रज्ञा० ३६१।

चचलायमाण–चञ्चलायमान सौदामिनीयमान कान्ति-

ज्ञात्कारेणेत्यर्थ । ज० प्र० २०२ ।
चचले-चञ्चल -अनवस्थितचेत्त । प्रज्ञा० ९६ । विमुक्त-स्थैर्यम् । ज्ञाता० १३८ ।
चचा-सप्तमदशा । नि० चू० द्वि० २८ आ ।
चंचु-चञ्चु -शुकचञ्चु । ज० प्र० २६५ ।
चंचुच्चिय-चञ्चुरित-कुटिलगमन, अथवा चञ्चु -शुक-चञ्चुस्तद्वद्वक्रतयेत्यर्थ , उच्चित -उच्चिताकरण-पादस्योत्पादन चचुच्चितम् । ज० प्र० २६५ । चञ्चुरित-कुटिलगमनम् । शुकचञ्चुस्तद्वद्वक्रतयेत्यर्थ , उच्चित-उच्चताकरण पादस्य उच्चित वा-उत्पाटन पादस्यैव चञ्चूच्चितम् । औप० ७० । ज० प्र० ५३० । चञ्चुरित-कुटिलगमनम् । चञ्चु -शुकचञ्चुस्तद्वद्वक्रतया उच्चित-उच्चताकरण पादस्योत्पाटन वा (शुक)पादस्येवेतिचञ्चूच्चितम् । भग० ४८० ।
चंचुमालइय-पुलकिता । भग० ५४१ । पुलकित । औप० २४ ।
चड-रौद्र । भग० ४८४ । चण्ड -कोपन परुषभाषी वा । उत्त० ४६ । चण्ड -चारभटवृत्त्याश्रयणत । उत्त० ४३४ । क्रोध । भक्त० । चण्ड-झगिनि व्यापकत्वात् । ज्ञाता० १६२ । चण्डा-रौद्रा । भग० १६७, २३१, ५२७ । चण्डत्व सरम्भारब्धत्वात् । ज्ञाता० ६९ । चण्ड उत्कटरोषत्वात् । ज्ञाता० २३८ ।
चडकोसिओ-चण्डकौशिक । आव० १९९ । प्रद्वेषे सर्पविशेष । आव० ४०५ । चडकौशिक -येन कर्म्मणा क्षये कृतेऽवाप्त सामायिकम् । आव० ३४७ । दृष्टिविषसर्पविशेष । आचा० २५५ । नदी० १६७ ।
चडगं-समूह । आव० ६७१ ।
चंडतिव्व-चण्डतीव्र अत्यर्थतीव्र । ज्ञाता० १६२ ।
चडपिंगल-मोहाग्निदानकृद् । भक्त० । चण्डपिङ्गल - अर्थोदाहरणे चोर । आव० ४५२ ।
चडप्रद्योत -उज्जयिन्यधिपति । नदी० १६६ । प्रश्न०९० ।
चडमेहो-चण्डमेघ -अश्वग्रीवराज्ञो दूत । आव० १७४ ।
चडरुद्दो-चण्डरुद्र -कायदण्डोदाहरणे उज्जयिन्यामाचार्य । आव० ५७७ । चण्डरुद्र -परुषवचने उदाहरणम् । बृ० तृ० २१८ अ । साधुविशेष । ओघ० ३८ ।
चडरुद्राचार्य -खरपरुषवचने दृष्टान्त । व्य०प्र० ११८ अ ।
चंडवडसओ-चन्द्रावतसक -साकेतनगरे राजा, यो माघमासे प्रतिमयास्थित सन् कालगत । आव० ३९९ ।
चडवडिसओ-चन्द्रावतसक -कोशलदेशे साकेतनगरे नृपति । उत्त० ३७५ ।
चडविसं-दष्टकनरकायस्य झगिति व्यापकविषम् । भग० ६७२ ।
चडा-वेगवती-झटित्येव मूर्च्छोत्पादिका । ठाणा० ४६१ । चण्डा-चमरासुरेन्द्रस्य मध्यमिका पर्षत् । जीवा० १६४ । चमरस्य द्वितीया पर्षत्, तथाविधमहत्त्वाभावेनेपत्कोपादिभावाच्चण्डा । भग० २०२ । चण्डी क्रोधनत्वात् । ज्ञाता० ६९ । ठाणा० १२७ । चण्डा-शक्रदेवेन्द्रस्य मध्यमिका पर्षत् । जीवा० ३९० ।
चडाए-चण्डया-रौद्रयाऽत्युत्कर्षयोगेन । ज्ञाता० ३६ ।
चडाल-चाण्डाल -ब्राह्मणीशूद्राभ्या जात । आचा० ८ ।
चंडालरूवे-चण्डालस्येव रूप-स्वभाव यस्य स । ज्ञाता० ८० ।
चडालियं-चण्डेनाऽऽलमस्य चण्डेन वा कलितश्चण्डाल, स चातिक्रूरत्वाच्चण्डालजातिस्तस्मिन् भव चाण्डालिकम् । उत्त० ४७ । चण्ड -क्रोधस्तद्वशादलीक-अनृतभाषण चण्डालिकम् । उत्त० ४७ ।
चडावेणया- । भग० [illegible]
चडिक्कं-चाण्डिक्य-रौद्ररूपत्वम् । प्रश्न० १२० [illegible] क्यम् । सम० ७१ ।
चडिक्किए-चाण्डिकित -सञ्जातचाण्डिक्य प्रकटि[illegible] रूप । भग० ३२२ । ज्ञाता० ६८ । चाण्डिक्य -रौद्ररूप । ज० प्र० २०२ । चाण्डिक्यित -दारुणीभूत । विपा० ५३ ।
चडिक्किय-प्रकटितरौद्ररूप । भग० १६७ ।
चडी-साधारणबादरवनस्पतिकायविशेष । प्रज्ञा० ३८ ।
चंडीदेवगा-चण्डीदेवका -चक्रधरप्राया । सूत्र० १५४ ।
चद-तृतीयवर्गस्य प्रथममध्ययनम् । निरय० २१ । चन्द्र । निरय० ३९ । धर्मकथाश्रुतस्कधेऽष्टमवर्गे देव । ज्ञाता० २५३ । ठाणा० ३४४ । चन्द्र । प्रज्ञा० ३६१ । चान्द्र - प्रथमो द्वितीयश्चतुर्थश्च युगसवत्सर । सूर्य० १५८ ।

चन्द्रो–वक्षस्कारपर्वत । ज० प्र० ३५७ । चन्द्र–चन्द्राकारमर्द्धदलम् । प्रज्ञा० ४११ । देवविशेष । जीवा० २६२ । द्वीपविशेष । जीवा० ३१७ । देवविमानविशेष । सम० ८ ।

चंदउडू–चन्द्रर्त्तु । सूर्य० २०६ ।

चंदकंत–देवविमानविशेष । सम० ८ ।

चंदकंता–द्वितीयकुलकरस्य भार्या । सम० १५० । आव० ११२ । ठाणा० ३९८ ।

चंदकूड–देवविमानविशेष । सम० ८ ।

चंदग–चन्द्रक चक्राष्टकोपरिवर्त्तिपुत्तलिकायामाक्षिगोलक । बृ० द्वि० १०० अ ।

चंदगइण–चन्द्रगतिना । पव० २८–४५, ५१ ।

चंदगविज्झ–राधावेधोपमम् । आउ ।

चंदगविज्झय–चन्द्रावेध्यक-प्रकीर्णकविशेष । आव० ७४० ।

चंदगवेज्झ–चक्राष्टसुपरिपुत्तलिकाक्षिचन्द्रिकावेधवत् । नि० चू० द्वि० १७ आ ।

चंदगवेज्झो–चन्द्रकवेध । ओघ० २२७ ।

चंदगुत्त–चन्द्रगुप्त । दश० ६१ । नदी० १६७ । विमर्श दृष्टान्ते राजा । आव० ४०५ । प्रशसाविषये पाटलीपुत्रराजा । आव० ८१८ । चूर्णद्वारविवरणे कुसुमपुरे राजा । पिण्ड० १४२ । नि० चू० तृ० ६ अ । बिन्दुसारपिता । बृ० प्र० ४७ अ । नि० चू० प्र० २४३ अ । पाडलिपुत्ते राया । नि० चू० द्वि० १०२ अ । बृ० प्र० ४७ अ । अशोकस्य पितामह । बृ० द्वि० १५४ अ ।

चंदगुत्तपपुत्तो–चन्द्रगुप्तप्रपौत्र । विशे० ४०६ ।

चंदगोमी–चन्द्रगोमी–व्याकरणकर्ता कोऽपि । सूर्य० २६२ ।

चंदघोसे–चन्द्रघोष–चन्द्रध्वज सवेगोदाहरण आरक्षुराभिधप्रत्यन्तनगरे मित्रप्रभमनुष्य । आव० ७०६ ।

चंदच्छाए– । ज्ञाता० १२४, १३२ ।

चंदच्छाये–चन्द्रच्छाय – अङ्गजनपदराजश्चम्पानिवासी । ठाणा० ४०१ ।

चंदजसा–चन्द्रयशा कुलकरपत्नी । आव० ११२ । सवेगोदाहरणे चन्द्रध्वजभगिनी । आव० ७०६ । विमलवाहनकुलकरस्य भार्या । सम० १५० । ठाणा० ३९८ ।

चंदज्झय–देवविमानविशेष । सम० ८ ।

चंदण–चदण मलयजम् । प्रश्न० १६२ । चन्दन–उपचारकम् । प्रश्न० १५७ । भग० ८०३ । चन्दन–मणिभेद । उत्त० ६८६ । चन्दन । प्रज्ञा० २७ । चन्दन–वृक्षविशेष । प्रज्ञा० ३२ । गन्धद्रव्यविशेष । नि० चू० प्र० २७६ आ ।

चंदणकथा–चन्दनकन्या–गोशीर्षचन्दनमयी भेरी । आव० ६६ ।

चंदणकयचच्चागा–चदनकृतचर्चाक –चन्दनकृतोपराग । जीवा० २०५ ।

चंदणकलसा–चन्दनकलशा –मागल्यघटा । ज० प्र० ४६, ४२० । औप० ५ । जीवा० २०५ । चन्दनकलशा – माङ्गल्यकलशा । प्रज्ञा० ८६ । जीवा० १६० ।

चंदणग–चन्दनक - अक्ष । प्रश्न० २४ ।

चंदणघडो–चन्दनघट –चन्दनकलश । जीवा० २२७ ।

चंदणज्जा–महावीरस्वामिन प्रथमशिष्या । सम० १५२ ।

चंदणथिग्गलिया–चन्दनथिग्गलिका । आव० ६८ ।

चंदणपायवे–चन्दनपादप –मृगग्रामनगरे उद्यानविशेष । विपा० ३५ ।

चंदणपुड–गन्धद्रव्यविशेष । ज्ञाता० २३२ ।

चंदणा–चन्दनका –अक्षा । उत्त० ६६५ । चन्दना–शीलचन्दनाया द्वितीय नाम । आव० २२८ । चन्दनका – अक्षा, द्वीन्द्रियजीवविशेष । प्रज्ञा० ४१ ।

चंदणि–वर्चोगृहम् । आव० ६८१ ।

चंदणिउदय–आचमनोदकप्रवाहभूमि । आचा० ३४१ ।

चंदणिका–चन्दनिका–वर्चोगृहम् । उत्त० १०६ ।

चंदणिया–वर्चोगृहम् । आव० ३५८, ६६६ ।

चंदणो–चन्दनक –अक्ष, द्वीन्द्रियजीवविशेष । जीवा० ३१ ।

चंददहे–द्रहविशेष । ठाणा० ३२६ ।

चंददिण–चन्द्रदिन–प्रतिपदादिका तिथि । सम० ५० ।

चंददीवो–चन्द्रद्वीप –जम्बूद्वीपसत्कचन्द्रस्य द्वीप । जीवा ३१७ ।

चंदद्दह–चन्द्रह्रद, चन्द्रह्रदाकाराणि चन्द्रह्रदवर्णानि चन्द्र श्चात्र देव स्वामीति चन्द्रह्रद । ज० प्र० ३३० ।

चंदद्ध–चन्द्रार्द्ध–अष्टमीचन्द्र । जीवा० २०७ ।

चंदन–चदन–मणिविशेष । जीवा० २३ । काष्ठविशेष । जीवा० १३६ । गन्धद्रव्यविशेष । जीवा० १९१ ।

चंदनक–अक्षम् । ओघ० १३५ ।

चंदनघड–चन्दनघट चन्दनकलश । प्रज्ञा० ८६ ।

चदनमाला– । प्रश्न० १२७ ।

चंदपडिमा–चन्द्राकारा प्रतिमा चन्द्रप्रतिमा । व्य० द्वि० ३५६ अ ।

चदपरिवेस–चन्द्रपरिवेष –चन्द्रसमन्ताज्जामान कुण्डलाकारस्तेज परिधि । भग० १९५ ।

चदपरिवेसो–चन्द्रस्य परितो वलयाकारपरिणतिरूप । जीवा० २८३ ।

चंदपव्वत–वक्षस्कारपर्वतविशेष । ठाणा० ३२६,८० ।

चंदपुत्तो–चन्द्रपुत्र । आव० ३९७ ।

चंदप्पभ–देवविमानविशेष । सम० ८ । मथुराया गाथापती । ज्ञाता० २५३ । चन्द्रप्रभा–सुराविशेष । आव० ६९५ । शीतलनाथजिनस्य शिबिकानाम । सम० १५१ । चन्द्रकान्त । ज० प्र० ५१ । जीवा० २३४ । चन्द्रप्रभ । प्रज्ञा० २७ । चन्द्रप्रभ –एकोरुकद्वीपे द्रुमविशेष । जीवा० १४६ । चन्द्रकान्त । मथुरानगर्यां भिण्डवडेंसकोद्याने गाथापती । ज्ञाता० २५३ । धर्मकथाश्रुतस्कवेऽष्टमवर्गे देवीचन्द्रप्रभाया विमानम् । ज्ञाता० २५३ । धर्मकथाश्रुतस्कधेऽष्टमवर्गे देवीचन्द्रप्रभाया सिंहासनम् । ज्ञाता० २५३ ।

चंदप्पभा–चन्द्रस्येव प्रभा–आकारो यस्या सा चन्द्रप्रभा सुराविशेप । जीवा० ३५१ । ज० प्र० १०० । चन्द्रस्य ज्योतिषेन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी । जीवा० ३८४ । चन्द्रस्येव प्रभा–आकारो यस्या सा चन्द्रप्रभा मद्यविधिविशेप । जीवा० २६५ । चन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी । ठाणा० २०४ । ज० प्र० ५३२ । शिविकाविशेप । आव० १८४ । भग० ५०५ । चन्द्रप्रभा–चन्द्रस्येव प्रभा–आकारो यस्या सा । प्रज्ञा० ३६४ । वर्धमानजिनस्य शिविकानाम । सम० १५१ । चन्द्रस्येव प्रभा–आकारोयस्या सा चन्द्रप्रभा । ज० प्र० १०० । धर्मकथाया अष्टमाध्ययने प्रथममध्ययनम् । ज्ञाता० २५२, २५३ । मथुरानगर्यां चद्रप्रभगाथापतेर्दारिका । ज्ञाता० २५३ । धर्मकथाश्रुतस्कधेऽष्टमवर्गे प्रथमाध्ययने देवी । ज्ञाता० २५३ ।

चदप्पह–चन्द्रप्रभ –मणिभेद । उत्त० ६९८ । पृथिवीभेद । आचा० २९ । चन्द्रस्येव प्रभा–ज्योत्सना सौम्याऽस्येति, अष्टमजिन , यस्मिन् गर्भगते देव्याश्चन्द्रपाने दोहद चन्द्रसदृशवर्णश्च तेन चन्द्रप्रभ । आव० ५०३ ।

चदमग्गा–चन्द्रमार्गा –चन्द्रमण्डलानि । सूर्य० ९ । चन्द्रस्य मार्गा -चन्द्रस्य मण्डलगत्या परिभ्रमणरूपा मण्डलरूपा वा मार्गा आख्याता इति चन्द्रमार्गा । सूर्य० १३७ ।

चदमस–चान्द्रमस–सौम्यापरनाम, मृगशिरोदेवता । ज० प्र० ४९९ ।

चंदलेस–देवविमानविशेष । सम० ८ ।

चंदलेहिकं–आभरणविशेष । नि० चू० प्र० २५५ अ ।

चंदवडिसयं–चन्द्रावतसक–चन्द्रविमानम् । ज०प्र० ५३३ ।

चंदवडिसो–नियमस्थिरो नृप । मर० ।

चंदवण्णं–देवविमानविशेप । सम० ८ ।

चंदसंवच्छर–चन्द्रसवत्सर 'ससिसमगे' त्यादिलक्षणगाथा । सूर्य० १६८, १७१ ।

चदसाला–चन्द्रशाला । आव० १२३ ।

चदसालिआ–चन्द्रशालिका–शिरोगृहम् । ज० प्र० १०७ ।

चदसालिय–चन्द्रशालिका–प्रासादोपरितनशाला । प्रश्न०८।

चंदसालिया–चन्द्रशालिका । शिरोगृहम् । जीवा० २६९ ।

चदसिंग–देवविमानविशेप । सम० ८ ।

चदसिट्ठ–देवविमानविशेप । सम० ८ ।

चदसिरी–मथुरानगर्या चन्द्रप्रभगाथापतेर्भार्या । ज्ञाता० २५३ ।

चदसूरदसण–चन्द्रसूरदर्शन । अन्वर्थानुसारी तृतीयदिवमोत्सव । विपा० ५१ ।

चदसूरदसणिय–चन्द्रसूर्यदर्शन–उत्सवविशेप । ज्ञाता० ४१ । चन्द्रसूर्यदर्शनिकाभिधान सुतजन्मोत्सवविशेप । औप० १०२ ।

चद्रसूरपरिवेसा–चन्द्रादित्ययो परितो वलयाकारपुद्गलपरिणतिरूपा सुप्रतीता । अनु० १२१ ।

चंदसूरोवरागा–चन्द्रसूर्योपरागा –राहुग्रहणानि । अनु० । १२१ ।

चदा–चन्द्र चन्द्रमा सोमस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्ती देव। भग० १६५। चन्द्रा–चन्द्रराजधानी। जबू० प्र० ५३३। चन्द्रा–ज्योतिष्कभेदविशेष। प्रज्ञा० ६६।

चदाणण–जम्बूद्वीपे ऐरावतक्षेत्रे प्रथमो जिन। सम०१५३। चन्द्रानन–चन्द्रप्रभजन्मभूमि। आव० १६०।

चदाणणा–शश्वती प्रतिमानाम। ठाणा० २३०। चन्द्रानना–चन्द्राननप्रतिमा। जीवा० २२८।

चदाणय– । नि० चू० प्र० ३०६ आ।

चदाभ–देवविमानविशेष। सम० १४। चन्द्राभ–कुलकराभ। ज० प्र० १३२। पञ्चम लोकान्तिकविमानम्। भग० २७१। ठाणा० ४३२।

चदायण–चान्द्रायण–अभिग्रहविशेष। व्य० द्वि० ३३४ आ।

चदालग–चन्दालक–देवातार्चनिकाद्यर्थं ताम्रमय भाजनम्। सूत्र० ११८।

चदावत्त–देवविमानविशेष। सम० ८।

चदावली–चन्द्रावली-तडाकादिषु जलमध्यप्रतिबिम्बितचन्द्रपङ्क्ति। जीवा० १६१। तटागादिषु जलमध्ये प्रतिबिम्बिता चन्द्रपङ्क्ति। ज० प्र० ३५।

चदिमा–चन्द्रमा–ज्ञाताया दशममध्ययनम्। सम० ३६। उत्त० ६६४। ज्ञाता० १०। आव० ६५३। अनुत्तरोपपातिकदशाना तृतीयवर्गस्य षष्ठमध्ययनम्। अनुत्त०२।

चदुत्तरवडिसग–देवविमानविशेष। सम० ८।

चदोत्तरण–कोशाम्ब्यामुद्यानविशेष। विपा० ६८।

चदोदय–चन्द्रोदय–चन्द्राननापुर्या चन्द्रावतसराज्ञ उद्यानम्। पिण्ड० ७६।

चदोयरणसि–उद्दडपुरनगरे चैत्यविशेष। भग० ६७५।

चदोवतरणे–कौशाम्बीनगर्या चैत्यविशेष। भग० ५५६।

चदोवराग–चन्द्रोपराग–चन्द्रग्रहणम्। जीवा० २८३। भग० १६६।

चदोवराते–चन्द्रस्य–चन्द्रविमानस्योपरागो–राहुविमानतेजसोपरञ्जन चन्द्रोपरागो ग्रहणमित्यर्थ। ठाणा० ४७६।

चप–चम्पा–यत्र वासुपूज्यस्वामिपादमूले तरुणधर्मा पद्मरथो राजा प्रव्रजितु गत। आव० ३६१। नगरीविशेष। आव० २१३, २२५।

चपक–वृक्षविशेष–आद्यद्विपेषु तु विविधसुगन्धिगन्धवस्तुनिकुरम्बोन्मिश्रविमलशीतलसलिलसेकान् तत्प्रकटन घ्राणेन्द्रिय ज्ञानस्य। विशे० ६६।

चपकच्छल्ली–सुवर्णचम्पकत्वक्। जीवा० १६१।

चपकदमनक–गन्धद्रव्यविशेष। जीवा० १६१।

चपकपट्ट–फलकविशेष। उत्त० ४३४।

चपकप्पिओ–चम्पकप्रिय–पार्श्वस्थदृष्टान्ते कुमार। आव० ५२०।

चपकभेद–सुवर्णचम्पकच्छेद। जीवा० १६१।

चपकलया–लताविशेष। प्रज्ञा० ३०।

चपगकुसुम–चम्पककुसुम–सुवर्णचम्पककुसुमम्। जीवा० १६१।

चपगजोइ–गुल्मविशेष। प्रज्ञा० ३२।

चपगपट्ट–फलयविसेसो। नि० चू० प्र० ३५७ आ।

चपगपुड–पुष्पजातिविशेष। गन्धद्रव्यविशेष। ज्ञाता० २३२।

चपगवण–चम्पकवन, वनखण्डनाम। ज० प्र० ३२०। ठाणा० २३०।

चपगलया–लताविशेष। प्रज्ञा० ३२।

चपगेइ–चम्पक–सामान्यत सुवर्णचम्पको वृक्ष। ज० प्र० ३४।

चपगो–चम्पक–वृक्षविशेष। जीवा० २२२।

चपतो–किंपुरुषाणा चैत्यवृक्ष। ठाणा० ४४२।

चपय–मुनिसुव्रतस्वामिजिनस्य चैत्यवृक्ष। सम० १५२।

चपयकुसुम–चम्पककुसुम–सुवर्णचम्पकवृक्षपुष्पम्। प्रज्ञा० ३६१।

चपयछल्ली–चम्पकछल्ला–सुवर्णचम्पकत्वक्। प्रज्ञा० ३६१।

चपयभेदे–चम्पकभेद सुवर्णचम्पकस्य भेदो द्विधाभाव। प्रज्ञा० ३६१।

चपयवडिसए–चम्पकावतसक। भग० १६४।

चपयवण–चम्पकवनम्। भग० ३६। आव० १८६।

चपरमणिज्ज–चम्परमणीय–उद्यानविशेष। आव०२०२।

चपा–चम्पापुरी। उत्त० ३७६, ३८०। जितशत्रुराजस्य नगरी। ज्ञाता० १७३। उत्त० ६२। क्षितिप्रतिष्ठितस्य पञ्चम नाम। उत्त० १०५। पालितसार्थ-

वाहवास्तव्या नगरी। उत्त० ४८२। कपिलवासुदेवस्य नगरी। ज्ञाता० २२२। उत्त० ३७१, ३२४। नगरी, दत्तराजधानी। विपा० ६५। सवेगोदाहरणे नगरी। आव० ७०६। सङ्गपरिहरणविषये नगरी। आव०७२३। आर्जवोदाहरणे नगरी। आव० ७०४। स्त्रीलोलुपसुवर्णकारवास्तव्यानगरी। आव० ६५। द्रव्यव्युत्सर्गे दधिवाहननगरी। आव० ७१६। वासुपूज्यस्वामिनो जन्मभूमि। आव० १६०। चक्षुरिन्द्रियान्तर्दृष्टान्ते नगरी। आव० ३६६। नगरीविशेष। आव० २१२। कुमारनन्दीवास्तव्या नगरी। आव० २६६। इहलोके कायोत्सर्गफलदृष्टान्ते पुरी। आव० ७६६। जिनदत्तस्य पुत्रीसुभद्रोदाहरणे नगरी। दश० ४६। कुणिकराज्ञो राजधानी। भग० ३१६। अङ्गेषु आर्यक्षेत्रम्। प्रज्ञा० ५५। नगरीविशेष। औप० १। प्रज्ञा० ५५। अन्त० १। कोणिकराजधानी। ज्ञाता० १। अन्त० २५। ज्ञात० २५२। भग० ४८४, ६१८, ६२०। धन्नसार्थवाहवास्तव्या नगरी। ज्ञाता० १६३। चम्पा। ज्ञाता० १२५, १३२। माकन्दीसार्थवाहवास्तव्या नगरी। ज्ञाता० १५६। ¯। रदत्तसार्थवाहवास्तव्या नगरी। ज्ञाता० २००, २०५। कुणिकराजधानी। निरय० ४, १६। नगरीविशेप। उपा० १६। जितशत्रुराज्ञो नगरी। उपा० १६। सुभद्रावास्तव्या नगरी। व्य० प्र० ११७ अ। अनगसेनसुवर्णकारवास्तव्य नगरम्। वृ० तृ० १०८ आ। अनङ्गसेनवास्तव्य नगरम्। नि० चू० प्र० ३४५ अ। खधगरायरायहाणी। नि० चू० तृ० ४४ अ। योगसग्रहे आपत्सु दृढधर्मदृष्टान्ते नगरी। आव० ६६७। सुनन्दवणिग्वास्तव्या नगरी। उत्त० १२३। दधिवाहनराजधानी। उत्त० ३००, ३०२। शय्यम्भवसूरिविहारभूमि। दश० ११। रविविषयप्रश्ननिर्णये नगरी। भग० २०६। लोभपिण्डदृष्टान्ते पुरी। पिण्ड० १३३, १३६। कोणिकराजधानी। विपा० ३३। प्रश्न० १। भग० ६७५।

चंपानयरि- । ज्ञाता० २०८।

चंपाप्रविभक्ति-त्रयोदशनाट्यभेद। ज० प्र० ४१७।

चंपे-चम्पक-वृक्षविशेप। प्रज्ञा० ३६१।

चंमं-चर्ममय तूलिकाद्युपकरणम्। वृ० द्वि० १०० आ।

चंमतियं-आस्तरप्रावरणोपवेशनोपयोगिकृत्तितूलिकात्वर्धरूप वा। वृ० द्वि० २५३ अ।

च-प्रकृतमनुकर्षति। उत्त० १६७। प्रस्तावनायाम्। विशे० १०३६। वा। उत्त० २०६। ज० प्र० ४५६। चशब्दश्चेदित्येतस्यार्थे वर्त्तते। भग० ४६८। उक्तसमुच्चयार्थे। आव० ८। एवकारार्थे। आव० १०। च- आधिक्यार्थे। आचा० ५५। पूरणार्थे। आव० १२। च शब्द-समाहारेतरेतरयोगसमुच्चयान्वाचयावधारणपादपूरणाधिकवचनादिष्विति। ठाणा० ४६५। अपिशब्दार्थे। उत्त० ४७६। आभिनिबोधिकश्रुतज्ञानयोस्तुल्यकक्षतोद्भावनार्थे। आव० ७ पृथक् पृथक् अवग्रहादिस्वरूपस्वातन्त्र्यप्रदर्शनार्थे। आव० ६। इवादेश। ज० प्र० २००। अधिकवचन। आचा० १०२।

चइओ- । त्याजित। ओघ० ६०।

चइत्ता-त्यक्त्वा, अथवा च्युत्वा, कृत्वा। भग० १२६। चित्वा कृत्वेति। औप० १०१।

चइय-च्यावित-स्वत एवायुष्कक्षयेण भ्रंशित। भग०२६३। त्याजिता-भोज्यद्रव्यात् पृथक्कारिता दायकेन। भग० २६३। च्यावित-ताम्य एवायुःक्षयेण भ्रंशित। त्याजित-देयद्रव्यात्पृथक्कारितो दायकेन। प्रश्न० १०८।

चइया-त्याजिता। ओघ० १५८।

चउक्क-चतुष्क-रथ्याचतुष्कमेलकम्। औप० ४। रथ्याचतुष्कमीलक। औप० ५७। आव० १३६, २०७। रथ्याचतुष्कमीलनस्थानम्। भग० १३७, २००, २३८। प्रश्न० ५८। चतुष्पथयुक्तम्। ज्ञाता० २८। जीवा० २५८। प्रभूतगृहाश्रयश्चतुरस्त्रो भूभाग चतुष्पथममागमो वा चतुष्कम्। अनु० १५६। यत्र रथ्याचतुष्टयम्। ठाणा० २६४।

चउक्का- । चक्रे। नि० चू० तृ० १२१ आ।

चउगर- । भग० ४६४।

चउचरणगवी-चतुश्चरणगो। आव० १०३। चतुर्णां चरणाना सम्बन्धिनी सा गौ। विशे० ६३५।

चउजमलपय-चतुर्यमलपद-द्वात्रिंशदङ्कस्थानलक्षण, चतुर्विंशतेरङ्कस्थानानामुपरितनाङ्काष्टकलक्षण वा। अनु०

२०६ ।

चउजायग–चतुर्जातक– त्वगेलाकेसराख्यगन्धद्रव्यमरिचात्मकम् । जीवा० ३५५ ।

चउत्थ–चत्वारि भक्तानि यत्र त्यज्यन्ते तच्चतुर्थं, इय चोपवासस्य सज्ञा । ज्ञाता० ७३ । चतुर्थं भक्त यावद् भक्त त्यज्यते यत्र तच्चतुर्थ, उपवासस्य सज्ञा । भग० १२५ । मेहुण । नि० चू० द्वि० १६६ आ ।

चउत्थग–चतुर्थं–एकमुपवासम् । ओघ० १३६ ।

चउत्थभत्त–चतुर्थभक्त–केवल एक पूर्वदिने द्वे उपवासदिने चतुर्थं पारणकदिने भक्त–भोजन परिहरति यत्र तपसि तत् चतुर्थभक्तम् । ठाणा० १४७ । चतुर्थभक्त एकदिनान्तरित । ज० प्र० १३२ ।

चउत्थभत्तस्स–चतुर्थभक्ते एकस्मिन् दिवसेऽतिक्रान्ते इत्यथ । प्रज्ञा० ५०५ ।

चउदसभत्त–चतुर्दशभक्त–षड्रात्रोपवास । आव० १६८ ।

चउदसरूवी–चतुर्दशोपकरणधारी । बृ० द्वि० २३७ आ ।

चउदिसि–चतुर्दिक–चतस्रो दिश समाहृता । जीवा० २२२ ।

चउपुरिसपविभत्तगती–चतु पुरुषप्रविभक्तगती –चतुर्द्धा पुरुषाणा प्रविभक्तगति, विहायोगतेश्चतुर्दशो भेद । प्रज्ञा० ३२७ ।

चउप्पडोआरे–चतुर्षु–पूर्वापरविदेहदेवकुरूत्तरकुरुरूपेषु क्षेत्रविशेषेपु प्रत्यवतार –समवतार, चतुर्विधस्य पर्यायो वा । ज० प्र० ३१२ ।

चउप्पडोयारे–चतुर्षु भेदलक्षणालम्बनानुप्रेक्षालक्षणेपु पदार्थेपु प्रत्यवतार –समवतारो विचारणीयत्वेन यस्य तच्चतुष्प्रत्यवतार । भग० ६२६ ।

चउप्पय–चतुष्पद–नवम करणम् । ज० प्र० ४९३ । चत्वारि पदानि येषा ते चतुष्पदा –अश्वादय । प्रज्ञा० ४४ । जीवा० ३८ ।

चउप्पाइय–चतुष्पादिक –भुजपरिसर्प तिर्यग्योनिक । जीवा० ४० ।

चउप्फल–कप्प । नि० चू० प्र० १९१ आ ।

चउप्फला–पुट । नि० चू० प्र० १८० आ ।

चउप्फाला– । ज्ञाता० ५३ ।

चउफास–चतु स्पर्शं–सूक्ष्मपरिणामम् । भग० ९६ ।

चउब्भाइय–घटकस्य–रसमानविशेपस्य चतुर्थभागमात्रो मानविशेप । भग० ३१३ ।

चउब्भागपलिओवम–चतुर्भागमात्र पल्योपम चतुर्भागपल्योपमम् । ज० प्र० ५३६ ।

चउब्भागमडल–चतुर्भागमण्डलम् । सूर्य० २१, २७ ।

चउभाइया–चतुष्पष्ठिपलमाना चतुर्भागिका । अनु० १५२ ।

चउभागपल्लोवम–चतुर्भाग पल्योपमस्य चतुर्भागपल्योपमम् । जीवा० ३८५ ।

चउमासिआ–चतुर्थी भिक्षुप्रतिमा । सम० २१ ।

चउमुह–चतुर्मुखम् । आव० १३६ ।

चउम्मुह–चतुर्मुख–देवकुलादि । ठाणा० २९४ । भग० २३८ । चतुर्मुखदेवकुलिकादि । अनु० १५६ । तथाविधदेवकुलकादि । औप० ५७ । प्रश्न० ५८ । चतुर्द्वार देवकुलादि । भग० २३८, औप० ४ । यस्माच्चतसृष्वपि दिक्षु पथ्यानो निस्सरन्ति । जीवा० २५८ । चतुर्मुखम् । भग० २०० ।

चउरग–अश्वा गौ सगड पाइक्का । नि० चू० प्र० ८९ आ ।

चउरगिज्ज–चतुरङ्गीय–उत्तराध्ययनेषु तृतीयमध्ययनम् । उत्त० ९ ।

चउरत–चतुरन्त–चतुर्विभागम् । प्रश्न० ६३ । चतुरन्तदानादिभेदेन चतुर्विभाग, चतसृणा वा नरनारकादिगतीनामन्तकारित्वाच्चतुरन्तम् । भग० ७ ।

चउरतगमाइया–चतुरन्तगमादिका, शारिपट्टादिका । आव० ५८१ ।

चउरतचक्कवट्टी–चतुरन्तचक्रवर्ती-त्रिसमुद्रहिमवत्परिच्छिन्नेषु चतुष्वन्तेषु चक्रेण वर्तितु शील यस्यासौ । जीवा० २७८ ।

चउरस–चतुरस्र–चतुष्कोणम् । जीवा० २७६ । चतुरस्र । भग० ८५८ । चतुरस्र –सस्थानविशेष । प्रज्ञा० २४२ ।

चउरससठाणपरिणया–चतुरस्रसस्थानपरिणता । प्रज्ञा० ११ ।

चउर–चतुर –दक्ष । ठाणा० ३९७ । अनु० १३३ ।

चउरग–चकोरक –पक्षिविशेष । प्रश्न० ८ ।

चउल– । भग० ८०३ ।
चउवग्गो–णामवत्थव्वा सजयासजतीओ वि आगतुगा सजता मजतीओ य । नि० चू० द्वि० १५५ आ ।
चउवीसइत्थय–चतुर्विंशतिस्तव –आवश्यकसूत्रे द्वितीयमध्ययनम् । आव० ४९९ ।
चउसट्ठिआ–चतुष्पलप्रमाणा–चतुषष्ठिका । अनु० १५१ ।
चउसट्ठिकला–चतु षष्ठिकला । आव० ५५ ।
चउसट्ठिगुणा–चतु षष्ठिगुणा । उत्त० ४८४ ।
चउसट्ठिया–चतुपष्ठिका–पल मानविशेष, तस्यैव चतुषष्ठितमाशस्वभावापलमिति तात्पर्यम् । भग० ३१३ ।
चउसरणगमण–अर्हत्सिद्धसाधुकेवलिप्रज्ञप्तधर्मशरणकरणम्। चउ० ।
चउसाले– । नि० चू० प्र० २६० अ ।
चउसालय–चतु शालकम् । जीवा० २६९ ।
चउसुवग्गेसु–सजतिसजयसावगसाविगाण य एते । नि० चू० प्र० २२७ आ ।
चओ–चय –स्तोकतरा वृद्धि । पिण्ड० ४१ । पिण्डनेत्यर्थ । नि० चू० प्र० २० आ ।
चओवचइयं–चयापच[illegible]–वृद्धिहन्यात्मकम् । आचा०९९ ।
चकार-छकार-जकार-झकार-ञकार-प्रविभक्तिनाम–षोडशो नाट्यविधि । जीवा० २४७ ।
चक्क–चक्र –सुदर्शनम् । उत्त० ३५० । अरघट्टयन्त्रिकाचक्राणि । ज्ञाता० २ । रथाङ्गम् । सूर्य० ९९ । रथाङ्ग अरघट्टाङ्ग वा । औप० ३ । चक्रम् । आव० ८२९ । ओघ० १३ । प्रहरणविशेप । आव० ४८७ । जीवा० ११७ । प्रहरणम् । आव० ५८५ । रायचिंधसहिय सचक्क । नि० चू० प्र० ३५८ अ । चक्र–तिलयन्त्रम् । वृ० द्वि० १९९ आ । तिलपीडनयन्त्रम् । वृ० द्वि० २२१ अ । तिलपीलग । नि० चू० द्वि० ६१ आ । चक्र–रत्नभूतप्रहणविशेष । ठाणा० ९९ । चक्र–वैश्रमणस्य पुत्रस्थानीयो देव । भग० २०० । चक्र–धर्मचक्रम् । ओघ० ६० । सम० ६१ । चक्र–आज्ञा । व्य० द्वि० २२८ अ । चक्र–अरम् । प्रश्न० ४८ ।
चक्कग–चक्रक–भूपणविधिविशेप । जीवा० २६९ । चक्रक–चक्राकार –शिरोभूपणविशेप । ज० प्र० १०६ ।
चक्कझया–चक्रालेखरूपचिह्नोपेता ध्वजा । ज०प्र० ६० ।
चक्कद्धचक्कवालसंठिया–चक्रार्द्धचक्रवालसस्थिता । सूर्य० ३६ ।
चक्कद्धया–चक्रध्वजा –चक्रालेखरूपचिह्नोपेता ध्वजा । जीवा० २१५ ।
चक्कपुर–चक्रपुर–कुन्थुजिनस्य प्रथमचारणकस्थानम् । आव० १४६ । पुरुषपुण्डरीकपुरम् । आव० १६२ ।
चक्कपुरा–चक्रपुरा–राजधानी । ज० प्र० ३५७ ।
चक्कपुराओ– । ठाणा० ८० ।
चक्कमंतो–चङ्क्रम्यमाण । आव० ४१२ ।
चक्कमज्झभूमी–चक्रमध्यभूमि । आव० ४१७ ।
चक्कयरो–चक्रकर । आव० ६१६ ।
चक्करयणे–चक्रवर्तेरेकेन्द्रिय प्रथम रत्नम् । ठाणा०३९८ ।
चक्कला–पादानामध प्रदेश । ज० प्र० ५५ । जीवा० २१० ।
चक्कलिकाभिन्न–तिर्यक्वृहत्कत्तलिकाकृतम् । वृ० प्र० १७५ अ ।
चक्कलिय–चक्रम् । नि० चू० द्वि० १२४ आ ।
चक्कवट्टिविजय–पुष्कलावर्त्ते सप्तमो विजय स एव चक्रवर्त्तिविजेतव्यत्वेन चक्रवर्तिविजय । ज० प्र० ३४९ ।
चक्कवट्टी–ऋद्धिप्राप्तार्यभेद । प्रज्ञा० ५५ । चक्रवर्तिन चतुर्दशरत्नाधिपा, षट्खण्डभरतेश्वरा । आव० ४८ । चक्रेण रत्नभूतप्रहरणविशेषेण वर्त्तितु शील ययोस्तौ चक्रवर्त्तिन । ठाणा० ९९ ।
चक्कवाग–चक्रवाक –रथाङ्ग । प्रश्न० ८ । लोमपक्षिविशेष । जीवा० ४१ ।
चक्कवाल–चक्रवाल विशेपस्य सामान्येऽनुप्रवेशात् । समचक्रवालम् । ज० प्र० ३६७ । मण्डलम् । प्रज्ञा० ६०० । सूर्य० ९९ । जीवा० १७८ । चक्रवाल–सर्वं परिमण्डलरूपम् । जीवा० २६६ । चक्रवाल–सर्वत परिमण्डलरूपम् । ज० प्र० १०२ । चक्रवाल –नगरविशेप । आव० १४४ । चक्रवाल–चक्रम् । भग० १८८ । चक्रम् । आउ० । चक्रवाल–जलपरिमाण्डल्यम् । सम० १२७ ।
चक्कवालविक्खंभ–चक्रवालविष्कम्भ –वृत्तव्याम, इद च प्रमाणयोजनमवसेयम् । मम० ६ ।

चक्कवालसामायारि–सामाचारीविशेष । नि० चू० प्र० २६३ आ । नि० चू० द्वि० ३९ आ ।

चक्कवाला–चक्रवाला–वलयाकृति । ठाणा० ४०७ । मण्डलवन्त्वेन स्थिता । ओघ० ५५ । चक्रवाल–मण्डल ततश्च यया मण्डलेन परिभ्रम्य परमाण्वादिरुत्पद्यते सा चक्रवाला । भग० ८६६ ।

चक्कवालानि–पृष्ठस्योपरिमण्डललक्षणानि । व्य० प्र० २३ अ ।

चक्कवूह–चक्रव्यूह–चक्राकार सैन्यविन्यासविशेष । प्रश्न० ४७ । ज्ञाता० ३८ ।

चक्काइद्धगो–चक्काविद्ध । आव० २१७ ।

चक्काग–चक्राक–चक्राकार–एकान्तेन समम् । प्रज्ञा०३६ । चक्राकार सम इत्यर्थ । बृ० प्र० १६१ आ । चक्रक–चक्राकार–समच्छेदो मूलकन्दादिना भङ्ग । आचा०५९ । पक्षिविशेष । ज्ञाता० २३१ । लोमपक्षिविशेष । प्रज्ञा० ४९ । जस्स चक्कागारा भगो समोत्ति वुत्त भवति । नि० चू० द्वि० १४१ अ ।

चक्कारबद्ध–चक्कारवद्ध गन्त्यादि । दश० १९३ ।

हि– । सम० १५२ ।

चक्कियति–सक्किज्जति । नि० चू० द्वि० ७९ अ ।

चक्किया–चाक्रिका–चक्रप्रहरणा –कुम्भकारतैलिकादयो वा । औप० ७३ । चक्रिका–चक्रप्रहरणा कुम्भकारादयो वा भग० ४८१ । कुम्भकारतैलिकादय । ज्ञाता० ५९ । शक्नुयात् । भग० ३२५ ।

चक्कलेंडा–चक्रौ लण्डिका–द्विमुखसर्प । आव० ३५७ ।

चक्खल्लाउड्डुओ–दतिको येन तीर्यते । ओघ० ३३ ।

चक्खिदिअत्थोवग्गहे–चक्षुष प्रथममेव स्वरूपद्रव्यगुणक्रियाकल्पनातीतमनिर्देश्यसामान्यमात्रस्वरूपार्थावग्रहण चक्षुरर्थावग्रह । प्रज्ञा० ३११ ।

चक्खिदिए–चक्षुरिन्द्रियम् । प्रज्ञा० २९३ ।

चक्खिय–दृष्ट्वा । आव० ४१७ ।

चक्खु–चक्षु विशिष्ट–आत्मधर्म तत्त्वाववोधनिबन्धन श्रद्धास्वभाव । राज० १०९ । चक्षु शब्दोऽत्र दर्शनपर्याय । आचा० ३०२ । चक्षु –ज्ञानम् । आचा० २०८ । चक्षुरिव चक्षु–श्रुतज्ञानम् । सम० ४ । लोचनम् । भग० ७३९ । चक्षु –श्रुतज्ञान शुभाशुभार्थविभागोपदर्शकत्वात् । भग०७ ।

चक्खुकता–पञ्चमकुलकरस्य भार्यानाम । सम० २५० । आव० ११२ । ठाणा० ३९८ । चक्षु कान्त –कुण्डलसमुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३६८ ।

चक्खुदसण–सामान्यविशेषात्मके वस्तुनि चक्षुषा दर्शन–रूपसामान्यपरिच्छेद चक्षुर्दर्शनम् । जीवा० १८ ।

चक्खुदसणि–चतुर्दर्शनी–चक्षुर्दर्शनलब्धिमान् । अनु०२२० ।

चक्खुदए–चक्षुर्दय –चक्षुरिव चक्षु –श्रुतज्ञान शुभाशुभार्थविभागकारित्वात्तद्दयते इति चक्षुर्दय । सम० ४ ।

चक्खुदये–चक्षुरिव चक्षु श्रुतज्ञान दयत इति चक्षुर्दय । भग० ७ ।

चक्खुदो–चक्षुरिव चक्षु –विशिष्ट आत्मधर्मस्तत्त्वाववोधनिवन्धन श्रद्धास्वभाव तद् ददातीति चक्षुद । जीवा० २५५ ।

चक्खुप्फास–चक्षुस्पर्श –दृष्टिस्पर्श । भग० ७७ । चक्षु-स्पर्श–स्थूलपरिणतिमत्पुद्गलद्रव्यम् । उत्त० १९६ । चक्षु-स्पर्श –चक्षुर्विषय । आचा० ३० । ज० प्र० ४४१ । दृष्टिपात । भग० १३८ । दर्शनम् । ज्ञाता० ४६ । औप० ६० । सूर्य० ६१ । चक्षु स्पर्शो दृग्गोचरे चक्षु स्पर्शगो वा दृग्गोचरगत । उत्त० ५९ ।

चक्खुभीया–चक्षुशब्दोऽत्र दर्शनपर्याय ,दर्शनादेव भीता दर्शनभीता । आचा० ३०२ ।

चक्खुम–चक्षुष्मान्–द्वितीय कुलकरनाम । सम० १५० । ज० प्र० १३२ । ठाणा० ३९८ । आव० १११ ।

चक्खुमेंटा–एक्क अंखि उम्मल्लेति वितिय णिमिल्लेति । नि० चू० तृ० १२४ आ ।

चक्खुल्लोयणलेसं– । आचा० ४२३ ।

चक्खुविक्खेवो–चक्षुर्विक्षेप –चक्षुर्भ्रम । भग० १७५ ।

चक्खुसुभो–चक्षु शुभ –कुण्डलसमुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३६८ ।

चक्खुसे–चाक्षुष चक्षुरिन्द्रियग्राह्य । दश० २०२ ।

चक्खुहर–चक्षुर्हरति आत्मवश नयति विशिष्टरूपातिशयकलितत्वाच्चक्षुर्हरम् यन्त्र । जीवा० २५३ । चक्षुर्हर, चक्षुर्द्धर–चक्षूरोधकम् । ज० प्र० २७५ । चक्षुर्हर–लोचनानन्ददायकत्वात्, चक्षू रोधक वा घनत्वात् । भग०

चउल– । भग० ८०३ ।

चउवग्गो–णामवत्थव्वा सजयासजतीओ वि आगतुगा सजता मजतीओ य । नि० चू० द्वि० १५५ आ ।

चउवीसइत्थय–चतुर्विंशतिस्तव –आवश्यकसूत्रे द्वितीयमध्ययनम् । आव० ४९९ ।

चउसट्ठिआ–चतुष्पलप्रमाणा–चतुषष्ठिका । अनु० १५१ ।

चउसट्ठिकला–चतु षष्ठिकला । आव० ५५ ।

चउसट्ठिगुणा–चतु षष्ठिगुणा । उत्त० ४८४ ।

चउसट्ठिया–चतुपष्ठिका–पल मानविशेष, तस्यैव चतुषष्ठितमाशस्वभावापलमिति तात्पर्यम् । भग० ३१३ ।

चउसरणगमण–अर्हत्सिद्धसाधुकेवलिप्रज्ञप्तधर्मशरणकरणम् । चउ० ।

चउसाले– । नि० चू० प्र० २६० अ ।

चउसालय–चतु शालकम् । जीवा० २६९ ।

चउसुवग्गेसु–मजतिसजयमावगमाविगाण य एते । नि० चू० प्र० २२७ आ ।

चओ–चय –स्तोकतरा वृद्धि । पिण्ड० ४१ । पिण्डनेत्यर्थ । नि० चू० प्र० २० आ ।

चओवचइयं–चयापच[illegible]–वृद्धिहन्यात्मकम् । आचा०६६ ।

चकार-छकार-जकार-भकार-ञकार-प्रविभक्तिनाम–षोडशो नाट्यविधि. । जीवा० २४७ ।

चक्क–चक्र –सुदर्शनम् । उत्त० ३५० । अरघट्टयन्त्रिकाचक्राणि । ज्ञाता० २ । रथाङ्गम् । सूर्य० ६६ । रथाङ्ग अरघट्टाङ्ग वा । ओप० ३ । चक्रम् । आव० ८२९ । ओघ० १३ । प्रहरणविशेष । आव० ४८७ । जीवा० ११७ । प्रहरणम् । आव० ५८५ । रायाचिघमाहिय सचक्क । नि० चू० प्र० ३५८ अ । चक्र–तिलयन्त्रम् । वृ० द्वि० १९९ आ । तिलपीडनयन्त्रम् । वृ० द्वि० २२१ अ । तिलपीलग । नि० चू० द्वि० ६१ आ । चक्र –रत्नभूतप्रहणविशेष । ठाणा० ६६ । –वैश्रमणस्य पुत्रस्थानीयो देव । भग० २०० । चक्र–धर्मचक्रम् । ओघ० ६० । सम० ६१ । चक्र– । व्य० द्वि० २२८ अ । चक्र–अरम् । प्रश्न० ४८ ।

चक्कग–चक्रक–भूपणविधिविशेष । जीवा० २६६ । –चक्राकार –शिरोभूपणविशेष । ज० प्र० १०६ ।

चक्कज्झया–चक्रालेखरूपचिह्नोपेता ध्वजा । ज०प्र० ६० ।

चक्कद्धचक्कवालसंठिया–चक्रार्द्धचक्रवालसस्थिता । सूर्य० ३६ ।

चक्कद्धया–चक्रध्वजा –चक्रालेखरूपचिह्नोपेता ध्वजा । जीवा० २१५ ।

चक्कपुरं–चक्रपुर–कुन्थुजिनस्य प्रथमचारणकस्थानम् । आव० १४६ । पुरुषपुण्डरीकपुरम् । आव० १६२ ।

चक्कपुरा–चक्रपुरा–राजधानी । ज० प्र० ३५७ ।

चक्कपुराओ– । ठाणा० ८० ।

चक्कमंतो–चङ्क्रम्यमाण । आव० ४१२ ।

चक्कमज्झभूमी–चक्रमध्यभूमि । आव० ४१७ ।

चक्कयरो–चक्रकर । आव० ६१६ ।

चक्करयणे–चक्रवर्तेरेकेन्द्रिय प्रथम रत्नम् । ठाणा०३९८ ।

चक्कला–पादानामध प्रदेश । ज० प्र० ५५ । जीवा० २१० ।

चक्कलिकाभिन्नं–तिर्यक्वृहत्कत्तलिकाकृतम् । वृ० प्र० १७५ अ ।

चक्कलिय–चक्रम् । नि० चू० द्वि० १२४ आ ।

चक्कवट्टिविजय–पुष्कलावर्त्ते सप्तमो विजय स एव चक्रवर्तिविजेतव्यत्वेन चक्रवर्तिविजय । ज० प्र० ३४९ ।

चक्कवट्टी–ऋद्धिप्राप्तार्यभेद । प्रज्ञा० ५५ । चक्रवर्तिन चतुर्दशरत्नाधिपा, षट्खण्डभरतेश्वरा । आव० ४८ । चक्रेण रत्नभूतप्रहरणविशेषेण वर्तितु शील ययोस्तौ चक्रवर्तिन । ठाणा० ६६ ।

चक्कवाग–चक्रवाक –रथाङ्ग । प्रश्न० ८ । लोमपक्षिविशेष । जीवा० ४१ ।

चक्कवाल–चक्रवाल विशेषस्य सामान्येऽनुप्रवेशात् । समचक्रवालम् । ज० प्र० ३६७ । मण्डलम् । प्रज्ञा० ६०० । सूर्य० ६६ । जीवा० १७८ । चक्रवाल–सर्वं परिमण्डलरूपम् । जीवा० २६६ । –सर्वत परिमण्डलरूपम् । ज० प्र० १०२ । –नगरविशेष । आव० १४४ । –चक्रम् । भग० १८८ । चक्रम् । आउ० । –जलपरिमाण्डल्यम् । सम० १२७ । बा विष्कम्भ –वृत्तव्यास, इद च प्रमाणयोजनम म् । सम० ६ ।

चक्कवालसामायारि–सामाचारीविशेष । नि० चू० प्र० २६३ आ । नि० चू० द्वि० ३६ आ ।
चक्कवाला–चक्रवाला–वलयाकृति । ठाणा० ४०७ । मण्डलवन्धेन स्थिता । ओघ० ५५ । चक्रवाल–मण्डल ततश्च यया मण्डलेन परिभ्रम्य परमाण्वादिरुत्पद्यते सा चक्रवाला । भग० ८६६ ।
चक्कवालानि–पृष्ठस्योपरिमण्डललक्षणानि । व्य० प्र० २३ अ ।
चक्कवूह–चक्रव्यूह–चक्राकार सैन्यविन्यासविशेष । प्रश्न० ४७ । ज्ञाता० ३८ ।
चक्काइद्धगो–चक्राविद्ध । आव० २१७ ।
चक्काग–चक्राक–चक्राकार–एकान्तेन समम् । प्रज्ञा० ३६ । चक्राकार सम इत्यर्थ । बृ० प्र० १६१ आ । चक्रक–चक्राकार–समच्छेदो मूलकन्दादिना भङ्ग । आचा० ५६ । पक्षिविशेष । ज्ञाता० २३१ । लोमपक्षिविशेष । प्रज्ञा० ४६ । जस्स चक्कागारा भगो समोत्ति वुत्त भवति । नि० चू० द्वि० १४१ अ ।
चक्कारबद्ध–चक्कारवद्ध गन्त्र्यादि । दश० १९३ ।
चक्काह– । सम० १५२ ।
चक्कियति–सक्किज्जति । नि० चू० द्वि० ७६ अ ।
चक्किया–चाक्रिका–चक्रप्रहरणा–कुम्भकारतैलिकादयो वा । औप० ७३ । चक्रिका–चक्रप्रहरणा कुम्भकारादयो वा भग० ४८१ । कुम्भकारतैलिकादय । ज्ञाता० ५६ । शक्नुयात् । भग० ३२५ ।
चक्कलँडा–चक्री लण्डिका–द्विमुखसर्प । आव० ३५७ ।
चक्खलाउडुओ–दत्तिको येन तीर्यते । ओघ० ३३ ।
चक्खिदिअत्थोवग्गहे–चक्षुष प्रथममेव स्वरूपद्रव्यगुणक्रियाकल्पनातीतमनिर्देश्यसामान्यमात्रस्वरूपार्थावग्रहण चक्षुरर्थावग्रह । प्रज्ञा० ३११ ।
चक्खिदिए–चक्षुरिन्द्रियम् । प्रज्ञा० २९३ ।
चक्खिय–दृष्टा । आव० ४१७ ।
चक्खु–चक्षु विशिष्ट–आत्मधर्म तत्त्वावबोधनिबन्धन श्रद्धास्वभाव । राज० १०६ । चक्षु शब्दोऽत्र दर्शनपर्याय । आचा० ३०२ । चक्षु –ज्ञानम् । आचा० २०८ । चक्षुरिव चक्षु –श्रुतज्ञानम् । सम० ४ । लोचनम् । भग० ७३६ । चक्षु –श्रुतज्ञान शुभाशुभार्थविभागोपदर्शकत्वात् । भग० ७ ।
चक्खुकंता–पञ्चमकुलकरस्य भार्यानाम । सम० १५० । आव० ११२ । ठाणा० ३९८ । चक्षु कान्त –कुण्डलसमुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३६८ ।
चक्खुदसण–सामान्यविशेषात्मके वस्तुनि चक्षुषा दर्शन–रूपसामान्यपरिच्छेद चक्षुर्दर्शनम् । जीवा० १८ ।
चक्खुदसणि–चक्षुर्दर्शनी–चक्षुर्दर्शनलब्धिमान् । अनु० २२० ।
चक्खुदए–चक्षुदय –चक्षुरिव चक्षु –श्रुतज्ञान शुभाशुभार्थविभागकारित्वात्तद्दयते इति चक्षुर्दय । सम० ८ ।
चक्खुदये–चक्षुरिव चक्षु श्रुतज्ञान दयत इति चक्षुर्दय । भग० ७ ।
चक्खुदो–चक्षुरिव चक्षु –विशिष्ट आत्मधर्मस्तत्त्वावबोधनिबन्धन श्रद्धास्वभाव तद् ददातीति चक्षुर्द । जीवा० २५५ ।
चक्खुप्फास–चक्षुस्पर्श –दृष्टिस्पर्श । भग० ७७ । चक्षुस्पर्श–स्थूलपरिणतिमत्पुद्गलद्रव्यम् । उत्त० १९६ । चक्षुस्पर्श –चक्षुर्विषय । आचा० ३० । ज० प्र० ४४१ । दृष्टिपात । भग० १३८ । दर्शनम् । ज्ञाता० ४६ । औप० ६० । सूर्य० ६१ । चक्षु स्पर्शो दृग्गोचरे चक्षुस्पर्शगो वा दृग्गोचरगत । उत्त० ५६ ।
चक्खुभीया–चक्षुशब्दोऽत्र दर्शनपर्याय ,दर्शनादेव भीता दर्शनभीता । आचा० ३०२ ।
चक्खुम–चक्षुष्मान्–द्वितीय कुलकरनाम । सम० १५० । ज० प्र० १३२ । ठाणा० ३९८ । आव० १११ ।
चक्खुमेंटा–एकक अत्थि उम्मल्लेति विति य णिमिल्लेति । नि० चू० तृ० १२४ आ ।
चक्खुल्लोयणलेस– । आचा० ४२३ ।
चक्खुविक्खेवो–चक्षुर्विक्षेप –चक्षुर्भ्रम । भग० १७५ ।
चक्खुसुभो–चक्षु शुभ –कुण्डलसमुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३६८ ।
चक्खुसे–चाक्षुप चक्षुरिन्द्रियग्राह्य । दश० २०२ ।
चक्खुहर–चक्षुर्हरति आत्मवश नयति विशिष्टरूपातिशयकलितत्वाच्चक्षुर्हरम् यत्तत् । जीवा० २५३ । चक्षुहर, चक्षुर्द्धर–चक्षूरोधकम् । ज० प्र० २७५ । चक्षुर्हर–लोचनानन्ददायकत्वात्, चक्षू रोधक वा घनत्वात् । भग०

४७७ ।

चक्खू–चक्षु विशिष्टआत्मधर्मस्तत्त्वावबोधन श्रद्धास्वभाव । जीवा० २५५ ।

चक्रवत्तिता– । ठाणा० ३३२ ।

चक्कवाल–प्रत्युपेक्षणादि नित्यकर्म्मा । बृ० प्र० २२१ अ ।

चक्कवालसामाचारी–सामाचारीविशेष । आव० ८३३ । प्रतिदिनक्रियाकलापरूपा । बृ० प्र० २०७ आ ।

चक्रार्द्धचक्रवालं- चतुर्थनाट्यविशेष । ज० प्र० ४१५ ।

चक्षुर्म्मेल.–यदेक चक्षुरुन्मीलयति । व्य०प्र० १०१ आ ।

चच्चपुडा–चच्चपुटा –आघातविशेषा । ज० प्र० २३६ ।

चच्चरं–चत्वर–सीमाचतुष्कम् । उत्त० १०९ । त्रिपथ-भेदि चत्वरम् । ज्ञाता० २८ । स्थानविशेष । विपा० ५७ । आव० १३६, ४०२ । चत्वर–बहुतररथ्यामी-लनस्थानम् । भग० १३७ । चत्वरम् । भग० २००, २३८ । चतुष्पथसमागम, षट्पथसमागमो वा चत्वरम् । अनु० १५९ । रथ्याष्टकमध्यम् । ठाणा० २६४ ।

चच्चरसिवतरितो–चत्वरशिवान्तरित । उत्त० २२१ ।

चच्चागा–उपरागा । ज० प्र० ४९ । चर्चाका –चन्दन-कृतोपरागा । राज० ६४ ।

चच्चिअ–चर्चित–समण्डनकृतम् । ज० प्र० २७८ ।

चटकसूत्र–कोशकारभव सूत्रम् । अनु० ३४ ।

चटुल–चन्दुल –विविधवस्तुषु क्षणे क्षणे आकाङ्क्षादिप्र-वृत्ते । प्रश्न० ३० ।

चटुलक– । सूत्र० १२५ ।

चटुली –पर्यन्तज्वलिततृणपूलिका । नदी० ८४ ।

चट्टवेसो–विप्रवेष –चक्षुरिन्द्रियान्तर्दृष्टान्त । आव० ३९९ ।

चट्टशाला– । बृ० प्र० ९३ अ ।

चट्टा–जूअकारादिधुत्ता । नि० चू० प्र० २०७ आ ।

चट्टुक– । आचा० ३५७ ।

चट्टो–विप्र । आव० ४०० ।

चडतो–आरुहन् । नि० चू० द्वि० १३३ आ ।

चडकर–चटकरप्रधान –विस्तरवान् । विपा० ३६ । चट-कर–वृन्दम् । ज० प्र० १४५ ।

चडगर–चटकर–आडम्बर. । बृ० द्वि० १३० अ । विस्तार-वृन्द (देशीशब्द) । ज० प्र० १९९ । विस्तारवन्त । ज० प्र० २०० । चटकरप्रधान–विच्छर्दप्रधानम् । ज्ञाता० ३६ । समुदाय । ज्ञाता० २०० । चटकर –विस्तार-वान् । भग० ३१९ ।

चडगरत्तण–चडकरत्व–अतिप्रपञ्चकथनम् । दश० ११५ ।

चडत्ति–झटिति । आव० ३५७ ।

चडप्फडत–कम्पमानम् । उत्त० ५२२ ।

चडप्फड–प्रलपसि । नि० चू० प्र० १३२ अ ।

चडप्फाडेंतो–करपादौ भूमौ आस्फोटयन् । नि० चू० द्वि० २६ अ ।

चडयपट्टाति– । नि० चू० प्र० १२६ अ ।

चडवेला–चपेटा । प्रश्न० ५७ ।

चडावणा–आरोपणा । ठाणा० ३२५ । ज दव्वादि पुरिसविभागेण दाण सा आरोवणा । नि० चू० तृ० ८५ अ ।

चडाविओ–आरोहित । आव० ४३४ ।

चडाविज्जइ–चटाप्यते । ओघ० ८४ ।

चडाविया–चटापित । आव० ५०६ ।

चडुगे–अपवृत्य । व्य० द्वि० ३०२ आ ।

चण–चणक–चणकक्षेत्र, योगसग्रहे शिक्षा दृष्टान्ते यद् वास्तु-पाठकैश्चणकाभिधनगर निवेशितम् । अपरनाम क्षिति-प्रतिष्ठित, वृषभपुर, कुशाग्रपुर, राजगृह च । आव० ६७० ।

चणगपुरं–चणकपुर–क्षितिप्रतिष्ठितस्य द्वितीय नाम । उत्त० १०५ ।

चणगा–चणका –धान्यविशेषा । अनु० १९२ ।

चणगो–चणका , पारिणामिकीबुद्धौ गोल्लविषये चणकग्रामे ब्राह्मण , श्रावक । आव० ४३३ ।

चणयग्गामो–चणकग्राम , गोल्लविषये ग्र . आव० ४३३ ।

चतुरग–सेना । आव० ७६७ ।

चतुरय–चतुरका –सभाविशेषा , ग्रामप्रसिद्धा । मम० १३८ ।

चतुर्विधशब्द –चतुष्प्रत्यवतारम् । भग० ९२९ ।

चतुष्कपूरणं– । प्रश्न० १२७ ।

चतुष्कल्पसेकसिक्त –चत्वार कल्पा सेकविषया रमवती-

शाखाभिन्नेभ्यो भावनीया । जीवा० २६८ ।

चतु कल्याणक–यत्र चत्वारि चतुर्थभक्तानि चत्वार्याचा-म्लानि चत्वारि एकस्थानानि चत्वारि पूर्वार्द्धानि चत्वारि निवृतिकानि च भवन्ति । बृ० प्र० १२८ अ ।

चतु षष्टीपदवास्तुन्यास – । ज० प्र० २०८ ।

चत्त–जेण सरीरविभूमादिणि निमित्त हत्थपादपक्खालणा-दीहिं परिकम्म वदति न । दश० चू० १५० । त्यक्त–निर्दयतया दत्तम् । बृ० द्वि० २०० आ । च्युत–जीववत् क्रियातो भ्रष्ट । २९३ ।

चत्तदेह– त्यक्तदेह – परित्यक्तजीवसंसर्गजनिताहारप्रभवो-पचय । भग० २९३ । परित्यक्तजीवसंसर्गसमुत्थशक्ति-जनिताहारादिपरिणामप्रभवोपचय । प्रश्न० १०८,१४५ ।

चत्तर–चत्वर–बहुरथ्यापातस्थानम् । जीवा० २५८ । औप० ४ । यत्र बहवो मार्गा मिलन्ति । औप० ५३ । अनेकरथ्यापतनस्थानम् । प्रश्न० ५८ ।

चत्ता–स्वयमेव दायकेन त्यक्ता–देयद्रव्यात्पृथक्कृता । प्रश्न० १०८ । स्वयमेव दायकेन त्यक्ता भक्ष्यद्रव्यात्पृथक्कृता । भग० २९३ ।

चनिक –मतविशेष । बृ० प्र० १७३ आ ।

चनिकोपासक – । आचा० १४६ ।

चन्द्र –रत्नविशेष । जीवा० १९१ ।

चन्द्रकान्त–चन्द्रप्रभ । जीवा० २३४ ।

चन्द्रकान्ताद्या –मणय । सम० १३९ । ठाणा० २९३ ।

चन्द्रगुप्त –चाणक्यस्थापितो राजा । व्य०प्र० १४० आ । नृपतिर्नाम । ज० प्र० २९३ । ठाणा० २८१ ।

चन्द्रगोपक – । ज० प्र० ४२३ ।

चन्द्रनखा–खरदूषणपत्नी । प्रश्न० ८७ ।

चन्द्रप्रतिम–प्रकीर्णतपोविशेष । उत्त० ६०१ ।

चन्द्रप्रभ –मणिविशेष । जीवा० २३ ।

चन्द्रभागा–नदीविशेष । ठाणा० ४७७ ।

चन्द्रमण्डलप्रविभक्ति–चन्द्रमण्डलप्रविभक्ति–सूर्यमण्डलप्र-विभक्ति– नागमण्डलप्रविभक्ति–जक्षमण्डलप्रविभक्ति–भूत-मण्डलप्रविभक्त्यभिनयात्मकामण्डलप्रविभक्तिनामा दशमो नाट्यविधि । जीवा० २४६ ।

चन्द्रमास –मुहूर्त्तपरिमाणमष्टौ शतानि पञ्चाशीत्यधिकानि । सूर्य० ११ ।

चन्द्रमुखा–मूलद्वारविरचणे गा'लापहारी । पिण्ड० १८४ ।

चन्द्ररुद्र–यो पुण गच्छगन्धणगो आयरिओ । व्य० उ० तृ० १३४ अ ।

चन्द्रशेखर – । ज० प्र० ३२३ ।

चन्द्रहास–खड्गविशेष । जीवा० २६८ ।

चन्द्रागमनप्रविभक्ति–चन्द्रागमन–सूर्यागमन–प्रविभक्त्य-भिनयात्मक–आगमनागमनप्रविभक्तिनामा सप्तमो नाट्य विधि । जीवा० २४६ ।

चन्द्रादि–गन्धविशेष । प्रश्न० १०६ ।

चन्द्रानना–आचाराङ्गतामलासोपदृष्टान्ते पुरीविशेष । पिण्ड० ७६ । मूलद्वारविरचणे धान्यनगरी । पिण्ड० १८४ ।

चन्द्रावतंस –आचाराङ्गतामलासोपदृष्टान्ते राजा । पिण्ड० ७६ ।

चन्द्रावरणप्रविभक्ति–चन्द्रावरणप्रविभक्ति–सूर्यावरणप्र-विभक्त्यभिनयात्मक–आवरणावरणप्रविभक्तिनामा अष्टमो नाट्यविधि । जीवा० २४६ ।

चन्द्रावलिप्रविभक्ति–पञ्चमो नाट्यभेद । ज०प्र० ४१६ ।

चन्द्रावलिप्रविभक्ति–सूर्यावलिप्रविभक्ति–वलयावलिप्रवि-भक्ति–हंसावलिप्रविभक्ति–तारावलिप्रविभक्ति-मुक्तावलि-प्रविभक्ति–रत्नावलिप्रविभक्ति–पुष्पावलिप्रविभक्तिनामा पञ्चमो नाट्यविधि । जीवा० २४६ ।

चन्द्रास्तमयनप्रविभक्ति–चन्द्रास्तमयनप्रविभक्ति–सूर्यास्त-मयनप्रविभक्त्यभिनयात्मक अस्तमयनास्तमयनप्रविभक्ति-नामा नवमो नाट्यविधि । जीवा० २४६ ।

चन्द्रिका–आधाकर्मपरिभोगे गुणचन्द्रश्रेष्ठिन स्त्री । पिण्ड० ७४ ।

चन्द्रोद्गमप्रविभक्ति–चन्द्रोद्गमप्रविभक्ति सूर्योद्गमप्रविभक्त्य-भिनयात्मक–उद्गमनोद्गमनप्रविभक्तिनामा षष्ठो नाट्य-विधि । जीवा० २४६ ।

चन्द्रोद्योत –द्वीप समुद्रोऽपि च । प्रज्ञा० ३०७ ।

चपलका –आलिसन्दका । ज० प्र० १२४ ।

चपलित –भोजनविधिविशेष । जीवा० २६६ ।

चप्पडए–चप्पलका –चतुष्पला । बृ० तृ० २०३ अ ।

चप्पडग–चप्पडक –काष्ठयन्त्रविशेष । प्रश्न० ५७ ।
चप्पाचप्पं– । नि० चू० तृ० ५० आ ।
चप्पाचप्पि– । नि० चू० तृ० ५५ अ ।
चप्पुटिका–अप्सरो निपातो नाम चप्पुटिका। प्रज्ञा०६००। जीवा० १०६ । अङ्गुष्ठमध्यमाङ्गुलिकृत आस्फोट । भग० २६६ ।
चप्पुडिया–चप्पुटिका । आव० ५३६ । अप्सरो निपातो–चप्पुटिका । जीवा० ३६६ । चप्पुटिका अङ्गुलीद्वयोत्थ शब्द । उत्त० १०८ ।
चप्फलिगाइय–कौतूहलिक–आशीर्वाद । आव० ४३२ ।
चप्रलाप.–नकुल । उत्त० ६६६ ।
–चमत्कार । ग० ।
चमढण–प्रवचनोक्तैर्वचनै खिसन करोति । ओघ० ४३ । निर्भर्त्सनम् । बृ० द्वि० २१५ आ ।
चमढने–मर्दने । ओघ० १२६ ।
चमढिउं–मर्दित्वा । आव० ४०५ ।
चमढियं–विनाशितम् । व्य० प्र० १८४ अ ।
चमढेत्ता–तिरस्कृत्य । आव० २०४ ।
चमढ्यंते–कदर्थ्यन्ते । ओघ० ६६ ।
चमतिगं– । नि० चू० प्र० १८० अ ।
चमर–द्विखुरविशेष । प्रज्ञा० ४५ । चमर –प्रथमो दक्षिण-निकायेन्द्र । भग० १५७ । पञ्चमतीर्थंकरस्य प्रथम शिष्य । सम० १५२ । दक्षिणात्यासुरकुमाराणामधिपति । ठाणा० ८४ । जीवा० १७० । प्रज्ञा० ६४ । ज्ञाता० १६१ ।
चमरचञ्चा–देवस्थानविशेष । भग० १४३ । चमरेन्द्र-राजधानी । सम० ३२ । ज० प्र० ३३६ । ठाणा० ५२४ । चमरचञ्चा–चमरेन्द्रराजधानी । भग० १७१ । ज० प्र० ४०७ । भग० ६१७ । दाक्षिणात्यस्यासुरनि-कायनायकस्य चञ्चा–चञ्चाख्यानगरी चमरचञ्चा । ठाणा० ३७६ ।
चमरा–चमरा–आरण्यगौ । प्रश्न० ७ । आटव्यो गाव । ज० प्र० ४३ ।
चमरी–चमरी–द्विखुरश्चतुष्पदविशेष । जीवा० ३८ । गोविशेष । प्रश्न० ७६ ।
चमरुप्पातो–चमरस्य–असुरकुमारराजस्योत्पतन–उर्ध्वग-मन चमरोत्पात । ठाणा० ५२४ ।
चमसो–चमस –दर्विका । औप० ६४ ।
चम्म–चर्म–अङ्गुष्ठाङ्गुल्योराच्छादनरूपम् । जीवा० २६० । राज० ११३ । पुद्गलविशेष । आव ८५४ । सिंहादीना चर्माणि । दश० १६३ । स्फुरक । भग० १६४ । त्वक् । प्रश्न० ८ । चर्म–सेवाल । विशे० ५१७ ।
चम्मए–चर्मकृति–छवडिया । ओघ० २१७ ।
चम्मकडे–चर्मकट –कटस्य तृतीयभेद । आव० २८६ । वर्द्धव्यूतमञ्चकादि । ठाणा० २७३ ।
चम्मकारा–पदकारा । नि० चू० द्वि० ४३ आ ८ ।
चम्मकिड्डं–चर्म्मव्यूत–खट्वादिकम् । भग० ६२८ ।
कोसए–चर्मकोशक । ओघ० २१७ । चर्मकोश-पाणित्र खल्लकादि । आचा० ३७० ।
चम्मखंडं–चर्मखण्डम् । नि० चू० प्र० २२७ आ ।
चम्मखडिअ–चर्मपरिधानाश्चर्मखण्डिका, अथवा चर्ममय सर्वमेवोपकरण येषा ते चर्मखण्डिका । अनु० २५ ।
चम्मखंडिए–चर्मखण्डक –चर्मपरिधान चर्मोपकरण इति। ज्ञाता० १६५ ।
चम्मचडिया–चर्मचटका –चर्मपक्षिण । उत्त० ६६६ ।
चम्मच्छेदन–चर्मच्छेद –वर्द्धपट्टिका, चर्मच्छेदनक पिप्पल-कादि । ओघ० २१८ ।
चम्मज्झामे–चर्मध्याम–चर्म च तद्ध्याम च–अग्निना ध्या-मलीकृत–आपादितपर्यायान्तरम् । भग० २१३ ।
चम्मट्ठिल–चर्मास्थिल –चर्मचटक । प्रश्न० ८ ।
चम्म ी–चर्मात्मकौ पक्षौ चर्मपक्षौ तौ विद्येते येषा ते चर्मपक्षिण । प्रज्ञा० ४६ । चर्मरूपौ पक्षौ विद्येते यस्य स चर्मपक्षी । जीवा० ४१ ।
चम्मपट्टो–चर्मपट्ट –वर्द्ध । विपा० ७१ ।
चम्मपणय–चर्मपञ्चक–अर्ज१ डक२गो३महिष४मृगा५जिन-लक्षणम् । आव० ६५२ ।
चम्मपाय–चर्मपात्र–स्फुरक खङ्गकोशको वा । भग० १६१ ।
चम्मयरु–श्रेणिविशेष । ज० प्र० १६४ ।

चम्मरयणे–चक्रवर्तेरेकेन्द्रिय तृतीय रत्नम् । ठाणा० ३९८ ।
चम्मरुक्ख–वृक्षविशेष । भग० ८०३ ।
चम्मिय–चर्मणि नियुक्ताश्चार्म्मिका । भग० ३१७ ।
चम्मे–चर्म्मपक्षिण –चर्मचटकाप्रभृतय , चर्मरूपा एव हि तेषा पक्षा इति । उत्त० ६९९ ।
चम्मेट्ठ–लोहमय प्रतलायतो लोहादिकुट्टनप्रयोजनो लोहकाराद्युपकरणविशेष । भग० ६१७ । चर्मेष्ट –चर्मनद्धपाषाण । प्रश्न ४८ । चर्मेष्ट –चर्मवेष्टितपाषाणविशेष । प्रश्न० २१ ।
चम्मेट्ठग–चर्मेष्टक–चर्मपरिणद्धकुट्टनोपगरणविशेष । ज० प्र० ३८७ । चर्मेष्टिका–इष्टकाशकलादिभृतचर्मकुतपरूपा यदाकर्षणेन धनुर्धरा व्यायाम कुर्वन्ति । उपा० ४७ । चर्मेष्टकम् । राज० २२ । चर्मेष्टका । अनु० १७७ । चर्मेष्टकम् । जीवा० १२१ ।
चय–अधिकत्वेन वृद्धि । सूर्य० १६ । शरीरम् । भग० १२९ ।
–ददाति । भग० २८९ । त्यजति–विरह्यति । भग० २८९ ।
–वैमानिकज्योतिष्कमरणम् । ठाणा० ४६६ । चयन–कषायपरिणतस्य कर्मपुद्गलोपादानमात्रम् । प्रज्ञा० २९२ ।
चयति–च्यवते । जीवा० ११० । चीयते–सामान्यतश्चयमागच्छति । प्रज्ञा० २२८ ।
–व्याख्यानान्तरेणासकलनम् । ठाणा० ४१७ । कषायपरिणतस्य कर्मपुद्गलोपादानमात्रम् । ठाणा० १९५ । कषायादिपरिणतस्य कर्मपुद्गलोपादानमात्रम् । ठाणा० १०१, ५२७ ।
चयमाणे–च्यवमान –जीवमान जीवन्नेव मरणकाल त्यजन् इत्यर्थ । भग० ८६ ।
चयिका–पीठिका । पिण्ड० १०७ ।
चयो–चीयते चयन वा चय , परिग्रहस्य तृतीय नाम । प्रश्न० ९२ ।
चयो –चयोपचय-चयेन अधिकत्वेन वृद्धिरपचयेन हीनत्वेनापवृद्धि । सूर्य० १३ ।
चर –उपचरक । आचा० ३७७ ।
चरत–चरत्–विश्व व्याप्नुवत्, अब्रह्मणस्तृतीय नाम । प्रश्न० ६६ ।
चरतमेसण–परिशुद्धाहारादिना वर्तमानम् । आचा० ४२९ ।
चरति–आचरन्ति । प्रश्न० ९५ । चरन्ति–प्रवर्तन्ते । ज० प्र० २२७ । भिक्षानिमित्त पर्यटन्ति । उत्त० ३६२ । आमेवन्ते । उत्त० ३६३ ।
चरतिअ–चरन्ति यस्या दिशि तीर्थंकरादयो यावद् युगप्रधाना विहरन्ति सा दिक् । आव० ४७० ।
चरतिया–भा इमा जाए दिसाए तित्थकरो केवली मणपज्जवणाणी ओहिणाणी चोद्दसपुव्वी जाव णवपुव्वी जो जम्मि वा जुगपहाणो आयरिओ जत्तो विहरति ततो हुत्तो पडिच्छति । नि० चू० तृ० ९९ आ ।
चरंती–विहरन्ति । व्य० प्र० ६२ आ ।
चर–सूचामात्रत्वादस्य चरमशब्दोपलक्षितोऽपि चरण –प्रथम उद्देशक । भग० ६३० ।
चरइ–चरति–करोति । सम० ९६ । आचरति । सम० १६, २१ । चरति–अटित्वा आनीत भुङ्क्ते । दश० २५३ ।
चरए–धाटिभिक्षाचर । ज्ञाता० १९५ ।
चरक–मतविशेष । उत्त० २४१ । जीवा० १४३ । नि० चू० प्र० १८६ अ ।
चरग–चरक –धाटिभिक्षाचर । ज० प्र० २३६ । चरक –मतविशेष । आव० ८५६ । चरतीति चरक –दशमशकादि । सूत्र० ६५ । चरक –कच्छोटकादय । भग० ५० । कच्छोटकादिक । प्रज्ञा० ४०५ ।
चरगपरिव्वायग–चरकपरिव्राजक – धाटिभैक्ष्योपजीविनत्रिदण्डी, अथवा चरक –कुच्छोटकादि परिव्राजकस्तु कपिलमुनिसूनु । भग० ५० ।
चरगपरिव्वायय–चरकपरिव्राजक –धाटिभैक्ष्योपजीवी त्रिदण्डी । प्रज्ञा० ४०५ ।
चरगा–धाटिवाहका सन्तो ये भिक्षा चरन्ति ते, ये च भुञ्जानाश्चरन्ति वा ते चरका । अनु० २५ । कणदा , धाटिवाहका वा । वृ० प्र० २४२ आ ।
चरण–चारित्र–क्रिया । व्य० द्वि० ४५७ आ । चर्यते–मुमुक्षिभिरासेव्यत इति चरण, चर्यते गम्यते प्राप्यते भवोदधे परकुलमनेनेति चरण–व्रत–श्रमणधर्मादयो मूल-

चप्पडग–चप्पडक –काष्ठयन्त्रविशेष । प्रश्न० ५७ ।

चप्पाचप्पं– । नि० चू० तृ० ५० आ ।

चप्पाचप्पि– । नि० चू० तृ० ५५ अ ।

चप्पुटिका–अप्सरो निपातो नाम चप्पुटिका। प्रज्ञा०६००। जीवा० १०९ । अङ्गुष्ठमध्यमाङ्गुलिकृत आस्फोट । भग० २६६ ।

चप्पुडिया–चप्पुटिका । आव० ५३६ । अप्सरो निपातो– चप्पुटिका । जीवा० ३९९ । चप्पुटिका अङ्गुलीद्वयोत्थ शब्द । उत्त० १०८ ।

चप्फलिगाइय–कौतूहलिक–आशीर्वाद । आव० ४३२ ।

चप्रलापः–नकुल । उत्त० ६९९ ।

च –चमत्कार । ग० ।

चमढण–प्रवचनोक्तैर्वचनै खिसन करोति । ओघ० ४३ । निर्भर्त्सनम् । बृ० द्वि० २१५ आ ।

चमढने–मर्दने । ओघ० १२६ ।

चमढिउं–मर्दित्वा । आव० ४०५ ।

चमढियं–विनाशितम् । व्य० प्र० १८४ अ ।

चमढेत्ता–तिरस्कृत्य । आव० २०४ ।

चमढ्यंते–कदर्थ्यन्ते । ओघ० ९६ ।

चमतिगं– । नि० चू० प्र० १८० अ ।

चमर–द्विखुरविशेष । प्रज्ञा० ४५ । चमर –प्रथमो दक्षिण- निकायेन्द्र । भग० १५७ । पञ्चमतीर्थंकरस्य प्रथम शिष्य । सम० १५२ । दक्षिणात्यासुरकुमाराणामधि- पति । ठाणा० ८४ । जीवा० १७० । प्रज्ञा० ९४ । ज्ञाता० १९१ ।

चमरचञ्चा–देवस्थानविशेष । भग० १४३ । चमरेन्द्र- राजधानी । सम० ३२ । ज० प्र० ३३९ । ठाणा० ५२४ । चमरचञ्चा–चमरेन्द्रराजधानी । भग० १७१ । ज० प्र० ४०७ । भग० ६१७ । दाक्षिणात्यस्यासुरनि- कायनायकस्य चञ्चा–चञ्चाख्यानगरी चमरचञ्चा । ठाणा० ३७६ ।

चमरा–चमरा–आरण्यगौ । प्रश्न० ७ । आटव्यो गाव । ज० प्र० ४३ ।

चमरो–चमरी–द्विखुरश्चतुष्पदविशेष । जीवा० ३८ । गोविशेष । प्रश्न० ७६ ।

चमरुप्पातो–चमरस्य–असुरकुमारराजस्योत्पतन–उर्ध्वग- मन चमरोत्पात । ठाणा० ५२४ ।

चमसो–चमस –दर्विका । औप० ९४ ।

चम्म–चर्म–अङ्गुष्ठाङ्गुल्योराच्छादनरूपम् । जीवा० २६० । राज० ११३ । पुद्गलविशेष । आव ८५४ । सिंहादीना चर्माणि । दश० १९३ । स्फुरक । भग० १९४ । त्वक् । प्रश्न० ८ । चर्म–सेवाल । विशे० ५१७ ।

चम्मए–चर्मकृति–छवडिया । ओघ० २१७ ।

चम्मकडे–चर्मकट –कटस्य तृतीयभेद । आव० २८९ । वर्द्धव्यूतमञ्चकादि । ठाणा० २७३ ।

चम्मकारा–पदकारा । नि० चू० द्वि० ४३ आ ८ ।

चम्मकिड्डं–चर्म्मव्यूत–खट्वादिकम् । भग० ६२८ ।

चम्मकोसए–चर्मकोशक । ओघ० २१७ । चर्मकोश - पाण्णित्र खल्लकादि । आचा० ३७० ।

चम्मखंडं–चर्मखण्डम् । नि० चू० प्र० २२७ आ ।

चम्मखंडिअ–चर्मपरिधानाश्चर्मखण्डिका, अथवा चर्ममय सर्वमेवोपकरण येषा ते चर्मखण्डिका । अनु० २५ ।

चम्मखडिए–चर्मखण्डक –चर्मपरिधान चर्मोपकरण इति। ज्ञाता० १९५ ।

चम्मचडिया–चर्मचटका –चर्मपक्षिण । उत्त० ६९९ ।

चम्मच्छेदन–चर्मच्छेद –वर्द्धपट्टिका, चर्मच्छेदनक पिप्पल- कादि । ओघ० २१८ ।

चम्मजझामे–चर्मध्याम–चर्म च तद्ध्याम च–अग्निना ध्या- मलीकृत–आपादितपर्यायान्तरम् । भग० २१३ ।

चम्मट्ठिल–चर्मास्थिल –चर्मचटक । प्रश्न० ८ ।

चम्मपक्खी–चर्मात्मकौ पक्षौ चर्मपक्षौ तौ विद्येते येषा ते चर्मपक्षिण । प्रज्ञा० ४९ । चर्मरूपौ पक्षौ विद्येते यस्य स चर्मपक्षी । जीवा० ४१ ।

चम्मपट्टो–चर्मपट्ट –वर्द्ध । विपा० ७१ ।

चम्मपणयं–चर्मपञ्चक–अजे१डक२गो३महिष४मृगा५जिन- लक्षणम् । आव० ६५२ ।

चम्मपाय–चर्मपात्र–स्फुरक सन्नकोशको वा । भग० १९१ ।

–श्रेणिविशेष । ज० प्र० १९४ ।

चम्मरयणे–चक्रवर्तेरेकेन्द्रिय तृतीय रत्नम् । ठाणा० ३९८ ।

चम्मरुक्ख–वृक्षविशेष । भग० ८०३ ।

चम्मिय–चर्मणि नियुक्ताश्चार्म्मिका । भग० ३१७ ।

चम्मे–चर्म्मपक्षिण –चर्मचटकाप्रभृतय , चर्मरूपा एव हि तेषा पक्षा इति । उत्त० ६९६ ।

चम्मेट्ठु–लोहमय प्रतलायतो लोहादिकुट्टनप्रयोजनो लोहकाराद्युपकरणविशेष । भग० ६१७ । चर्मेष्ट –चर्मनद्धपाषाण । प्रश्न ४८ । चर्मेष्ट –चर्मवेष्टितपाषाणविशेष । प्रश्न० २१ ।

चम्मेट्ठग–चर्मेष्टक–चर्मपरिणद्धकुट्टनोपगरणविशेष । ज० प्र० ३८७ । चर्मेष्टिका–इष्टकाशकलादिभृतचर्मकुतपरूपा यदाकर्षणेन धनुर्धरा व्यायाम कुर्वन्ति । उपा० ४७ । चर्मेष्टकम् । राज० २२ । चर्मेष्टका । अनु० १७७ । चर्मेष्टकम् । जीवा० १२१ ।

चय–अधिकत्वेन वृद्धि । सूर्य० १६ । शरीरम् । भग० १२९ ।

चयइ–ददाति । भग० २८९ । त्यजति–विरहयति । भग० २८९ ।

–वैमानिकज्योतिष्कमरणम् । ठाणा० ४६६ । चयन–कषायपरिणतस्य कर्मपुद्गलोपादानमात्रम् । प्रज्ञा० २९२ ।

चयति–च्यवते । जीवा० ११० । चीयते–सामान्यतश्चयमागच्छति । प्रज्ञा० २२८ ।

चयन–व्याख्यातान्तरेणासकलनम् । ठाणा० ४१७ । कषायपरिणतस्य कर्मपुद्गलोपादानमात्रम् । ठाणा० १९५ । कषायादिपरिणतस्य कर्मपुद्गलोपादानमात्रम् । ठाणा० १०१, ५२७ ।

चयमाणे–च्यवमान –जीवमान जीवन्नेव मरणकाल त्यजन् इत्यर्थ । भग० ८६ ।

चयिका–पीठिका । पिण्ड० १०७ ।

चयो–चीयते चयन वा चय , परिग्रहस्य तृतीय नाम । प्रश्न० ९२ ।

चयोवचय–चयोपचय-चयेन अधिकत्वेन वृद्धिरपचयेन हीनत्वेनापवृद्धि । सूर्य० १३ ।

चर–उपचरक । आचा० ३७७ ।

चरत–चरत्–विश्व व्याप्नुवत्, अब्रह्मणस्तृतीय नाम । प्रश्न० ६६ ।

चरतमेसण–परिशुद्धाहारादिना वर्तमानम् । आचा० ४२९ ।

चरति–आचरन्ति । प्रश्न० ९५ । चरन्ति–प्रवर्तन्ते । ज० प्र० २२७ । भिक्षानिमित्त पर्यटन्ति । उत्त० ३६२ । आसेवन्ते । उत्त० ३६३ ।

चरतिअ–चरन्ति यस्या दिशि तीर्थंकरादयो यावद् युगप्रधाना विहरन्ति सा दिक् । आव० ४७० ।

चरतिया–सा इमा जाए दिसाए तित्थकरो केवली मणपज्जवणाणी ओहिणाणी चोद्दसपुव्वी जाव णवपुव्वी जो जम्मि वा जुगपहाणो आयरिओ जत्तो विहरति ततो हुत्तो पडिच्छति । नि० चू० तृ० ९९ आ ।

चरंती–विहरन्ति । व्य० प्र० ६२ आ ।

चर–सूचामात्रत्वादस्य चरमशब्दोपलक्षितोऽपि चरण –प्रथम उद्देशक । भग० ६३० ।

चरइ–चरति–करोति । सम० ९६ । आचरति । सम० १६, २१ । चरति–अटित्वा आनीत भुङ्क्ते । दशा० २५३ ।

चरए–धाटिभिक्षाचर । ज्ञाता० १९५ ।

चरक:–मतविशेष । उत्त० २४१ । जीवा० १४३ । नि० चू० प्र० १८६ अ ।

चरग–चरक –धाटिभिक्षाचर । ज० प्र० २३६ । चरक –मतविशेष । आव० ८५६ । चरतीति चरक –दशमशकादि । सूत्र० ६५ । चरक –कच्छोटकादय । भग० ५० । कच्छोटकादिक । प्रज्ञा० ४०५ ।

चरगपरिव्वायग–चरकपरिव्राजक – धाटिभैक्ष्योपजीविनस्त्रिदण्डी, अथवा चरक –कुच्छोटकादि परिव्राजकस्तु कपिलमुनिसूनु । भग० ५० ।

चरगपरिव्वायय–चरकपरिव्राजक –धाटिभैक्ष्योपजीवी त्रिदण्डी । प्रज्ञा० ४०५ ।

चरगा–धाटिवाहका सन्तो ये भिक्षा चरन्ति ते, ये च भुञ्जानाश्चरन्ति वा ते चरका । अनु० २५ । कणदा, धाटिवाहका वा । बृ० प्र० २४२ आ ।

चरण–चारित्र–क्रिया । व्य० द्वि० ४५७ आ । चर्यते–मुमुक्षिभिरासेव्यत इति चरण, चर्यते गम्यते प्राप्यते भवोदधे परकुलमनेनेति चरण–व्रत–श्रमणधर्मादयो मूल-

गणा । विशे० २ । चतुर्वेदब्राह्मण । बृ० प्र० ५६ अ । चारणलब्धि । विशे० ३८५ । गमनम् । आव० ५५२ । गवेषणम् । प्रश्न० १०६ । नित्याऽनुष्ठानम् । ओघ० ७ । व्रतश्रमणधर्मसंयमाद्यनेकविधम् । सम० १०९ । महाव्रतादि । ज्ञाता० ७ । औप० ३३ । विशिष्ट गमनम्, गमनम । नंदी० १०६ । उत्तराध्ययनेषु एकत्रिंशतममध्ययनम् । उत्त० ६ । व्रतादि । भग० १२२ । ज्ञाता० ६१ । उत्त० ५६७ । उच्चावचकुलेष्ववविशेषेण पर्यटनम् । उत्त० ६०७ । गतिचरण भक्खणाचरण, आचरणाचरण च । नि० चू० प्र० १ अ । आचार । उत्त० ४३२ । चारित्र, सच्चेष्टेतियावत् । उत्त० ५१६ । चरण—व्रतश्रमणधर्मादि । भग० १३६ । सर्वतो देशतश्च चारित्रमिह विवक्षितम् । विशे० २ । चारित्र—समग्रविरतिरूपम् । दश० ११० ।

चरणकरणपारविऊ—चर्यत इति चरण मूलगुणा, क्रियत इति करण—उत्तरगुणास्तेषा पार—तीर पर्यन्तगमन तद्वेत्तीति चरणकरणपारवित् । सूत्र० २६८ ।

चरणकरणानुयोग—अर्हद्वचनानुयोगस्य चतुर्थो भेद, आचारादिक । आचा० १ । अनुयोगस्य प्रथमो भेद । ठाणा० ४८१ ।

चरणगुणट्ठिओ—चरणगुणस्थित —सर्वनयविशुद्ध । उत्त० ६६ । चर्यत इति चरण—चारित्र, गुण साधनमुपकारकमित्यनर्थान्तर, ततश्च चरण चासौ गुणश्च निर्वाणात्यन्तोपकारितया चरणगुणस्तस्मिन् स्थित —तदासेवितया निविष्ट । उत्त० ६६ ।

चरणगुणा—चरणान्तर्गता गुणा, चरण—व्रतादि गुणा पिण्डविशुद्ध्यादयश्चरणगुणा । उत्त० ५६७ ।

चरणग्गो—चरणेन अग्र—प्रधान चरणाग्र । पिण्ड० ४१ ।

चरणनया—चरणनया—चरणवृत्तय । विशे० १३५२ ।

चरणमालिया—चरणमालिका—भूषणविधिविशेष । जीवा० २६६ ।

चरणरिया—चरणंर्या—चरतेर्भावे ल्युट् चरण तद्रूपेर्या चरणेर्या, चरण गतिर्गमनमित्यर्थ । आचा० ३७५ ।

चरणविही—उत्तराध्ययनेषु एकत्रिंशत्तममध्ययनम् । सम० ६४ ।

चरति—उपपद्यते । सूर्य० ११ ।

चरमंतपएस—चरमाण्येवान्तवर्तित्वात् अन्ताश्चरमान्तास्तत्प्रदेशश्च चरमान्तप्रदेश । प्रज्ञा० २२६ ।

चरमं—चरम—पर्यन्तवर्त्ति । प्रज्ञा० २२८ । चरमम् । प्रज्ञा० २३४ । चरमेभ्योऽल्पस्थितिकेभ्यो नारकादिभ्य परमा—महास्थितयो महाकर्म्मतरा इत्याद्यर्थप्रतिपादनार्थ । एकोनविंशतितमशतके पञ्चम उद्देशक । भग० ७६१ । प्रान्त पर्यन्तवर्त्ति । भग० ३६५ । आव० ८५२ । शैलेशीकालान्त्यसमयभावी । प्रज्ञा० ३०३ । अर्वाग्भागवर्त्ति स्थित्यादिभि । भग० ६३० । चरम—यस्य चरमो भवो भविष्यति स चरम । भग० ७५६ ।

चरमअचरिमसमय—चरमास्तथैव अचरमसमयाश्च प्रागुक्तयुक्तेरेकेन्द्रियोत्पादापेक्षया प्रथमसमयवर्तिनो ये ते चरमाचरमसमया । भग० ६६६ ।

चरमचरम— । जं० प्र० ४१८ ।

चरमचरमनामनिबद्धनाम—चरमपूर्व मनुष्यभव—चरमदेवलोकभव—चरमच्यवन—चरमगर्भसंहरण — चरमभरतक्षेत्रावसर्प्पिणीतीर्थकरजन्माभिषेक —चरमबालभाव—चरमयौवन—चरमकामभोग— चरमनिष्क्रमण— चरमतपश्चरण—चरमज्ञानोत्पाद—चरमतीर्थप्रवर्त्तन— चरमपरिनिर्याणाभिनयात्मक, द्वात्रिंशत्तमो नाट्यविधि । जीवा० २४७ ।

चरमचरमसमय—चरमाश्च ते विवक्षितसङ्ख्यानुभूतेश्चरमसमयवर्तित्वात् चरमसमयाश्च प्रागुक्तस्वरूपा इति चरमचरमसमया । भग० ६६६ ।

चरमतियति— । बृ० प्र० ६३ अ ।

चरमनिदाघकालसमओ—चरमनिदाघकालसमय —ज्येष्ठमासपर्यन्त । जीवा० १२२ ।

चरमपाहुडिआ—चरमप्राभृतिका—बादरा । दश० १६२ ।

चरमप्रदेशजीवप्ररूपी—जीवप्रदेशो निह्नव । आव० ३११ ।

चरमसमय—चरमसमयशब्देनैकेन्द्रियाणा मरणसमयो विवक्षित स च परभवायुष प्रथमसमय एव तत्र च वर्तमानाश्चरमसमया । भग० ६६६ ।

चरमसमयनियंठो—यश्चरमे—अन्तिमे समये वर्त्तमान, सः चरमसमयनिर्ग्रन्थ । उत्त० २५७ ।

चरमाइ–चरमाणीति प्रश्नमुद्दिश्य प्रवृत्तत्वात्, प्रज्ञापनाया दशम पदम् । प्रज्ञा० ६ ।

चराइ–चराणि अनियततिथिभावित्वात् । ज० प्र० ४६४ ।

चरामि–आसेवयामि । आव० ५६७ ।

चरि–चारि –आजीविका । उत्त० ११६ । अचारिश्चरित्वा च । उत्त० ४४८ ।

चरिअ–चरिका–नगरप्राकारान्तरालेऽष्टहस्तप्रमाणो मार्ग –द्वार व्यक्तम् । ज० प्र० १०६ । गृहाणा प्राकारस्य चान्तरेऽष्टहस्तविस्तारो हस्त्यादि सञ्चारमार्गश्चरिका । अनु० १५६ ।

चरिअकामो–चरितु काम - भक्षयितु काम । ओघ० ३६ ।

चरिआ–ग्रामादिष्वनियतविहारित्वम् । सम० ४१ । चरिका सदेशकारीणी दासी । आव० ३४६ । चरिका–परिव्राजिका । ओघ० ११४ ।

चरित्त–चारित्र–विरतिपरिणामरूपेण क्षायिकभावापन्नम् । ज० प्र० १५१ । चर्यते–मुमुक्षुभिरासेव्यते तदिति, चर्यते वा गम्यते अनेन निर्वृत्ताविति चरित्र, अथवा चयस्य कर्मणा रिक्तीकरणाच्चरित्र निरुक्तन्यायादिति, चारित्रमोहनीयक्षयाद्याविर्भूत आत्मनो विरतिरूप परिणाम । ठाणा० २४ । चर्यते आसेव्यते यत्तेन वा चर्यते–गम्यते मोक्ष इति चरित्र–मूलोत्तरगुणकलाप । ठाणा० ५२ । चरन्त्यनिन्दितमनेनेति चारित्रम् । अनु० २२१ । चरन्ति–गच्छन्त्यनेन मुक्तिमिति चरित्रम् । उत्त० ५५६ । चारित्र–चारित्रमोहनीयक्षयक्षयोपशमोपशमजो जीवपरिणाम । भग० ३५० । मूलोत्तरगुणरूपम् । बृ० प्र० १७२ अ । चारित्र–बाह्य सदनुष्ठानम् । राज० ११६ । चारित्र–सावद्ययोगनिवृत्तिलक्षणम् । प्रश्न० १३२ । चयरिक्तीकरणाच्चारित्रम् । ओघ० ६ । चरन्त्यनिन्दितमनेनेति चरित्र क्षयोपशमरूप तस्य भाव । इहान्यजन्मोपाताष्टविधकर्मसञ्चयापचयाय चरण चारित्र, सर्वसावद्ययोगनिवृत्तिरूपा क्रियेत्यर्थ । आव० ७८ । चारित्रम् । आव० ७६३ । चरन्त्यनिन्दितमनेनेति चरित्र क्षयोपशमरूप तस्य भाव चारित्र अशेषकर्मक्षयाय चेष्टेत्यर्थं । दश० २३ । अनुष्ठानम् । ज्ञाता० ८१ ।

चरित्तकसायकुसील–य कषायाच्छाप प्रयच्छति स चारित्रे कुशील । भग० ८६० ।

चरित्तधम्मे–चयरिक्तीकरणाच्चारित्र तदेव धर्मश्चारित्रधर्म्म । ठाणा० ५१५ । चरित्रधर्मं –क्षान्त्यादिश्रमणधर्मं । ठाणा १५४ ।

चरित्तधम्मो–चरन्त्यनिन्दितमनेनेति चरित्र–क्षयोपशमरूप तस्य भावश्चारित्र अशेषकर्मक्षयाय चेष्टेत्यर्थ, ततश्चारित्रमेव धर्म चारित्रधम । दश० २३ । प्राणातिपातादि निवृत्तिरूप । दश० १२० ।

चरित्तपज्जवे–चरित्रपर्यवा –चारित्रभेदा क्षायोपशमिका इति । उत्त० ५६२ ।

चरित्तपुलाए–पुलाकस्य तृतीयो भेद, मूलोत्तरगुणप्रतिसेवनया चारित्र विराधयति । भग० ८६० ।

चरित्तपुलात–चारित्रपुलाक –पुलाकस्य तृतीयो भेद । चारित्रनिस्सारत्व य उपैति स पुलाक । उत्त० २५६ । मूलोत्तरगुणप्रतिसेवनातश्चरणपुलाक । ठाणा० ३३७ ।

चरित्तभावभासा–चारित्रभावभाषा–भावभाषाभेद, चारित्र प्रतीत्योपयुक्तैर्या भाष्यते सा । दश० २०८ ।

चरित्तविणओ–चारित्राद्विनय, चारित्रविनय । दश० २४१ ।

चरित्तवीरिय–असेसकम्मविदारणसामत्थ खीरादिलद्धुप्पादणसामत्थ च । नि० चू० प्र० १६ अ ।

चरित्तसकिलेसे–चारित्रस्य सङ्क्लेश अविशुद्धमानता स चारित्रसङ्क्लेश । ठाणा० ४८६ ।

चरित्तायारे–चारित्राचार –समितिगुप्तिभेदोऽष्टधा । ठाणा० ३२५ । समितिगुप्तिरूपोऽष्टधा । ठाणा० ६५ ।

चरित्तिंदे–चरित्रेन्द्र –यथाऽऽख्यातचारित्र । ठाणा० १०४ ।

चरिमंत–चरमान्त –अपान्तराललक्षण । जीवा० ६४ । चरमरूप पर्यन्त । जीवा० २८६ ।

चरिमंतपएसा–चरिमाण्येवान्तवर्तित्वादन्ताश्चरिमान्तास्तेषा प्रदेशा चरिमान्तप्रदेशा । भग० ३६६ ।

चरिम–चरमोऽनन्तरभावी भवो यस्यासौ चरम । राज० ४७ । चरम –यस्य चरमो भव सभवी योग्यतयाऽपि स, भव्य । प्रज्ञा० १४३ । चरमो भवो भविष्यति यस्य सोऽभेदाच्चरमो भव्य । प्रज्ञा० ३९५ । चरमसमयभावी–चतुर्थसमयभावीति । प्रज्ञा० ५६६ । चरमभववान् भव्यविशेष ।

जीवा० ४४४ ।

चरिमपदं- । भग० ३६५ ।

चरिमभव-चरमभव -पश्चिमभव । प्रज्ञा० १०८ ।

चरिमभवत्थ-चरमभवस्थ -भवचरमभागस्थ । भग० १८१ ।

चरिमा-वद्धमाणसामिणो मिस्सा । नि० चू० प्र० ३५३ अ ।

चरिमाचरमो-नारकभवेषु स एव भवो येषा ते चरमा ,नारकभवस्य वा चरमसमये वर्त्तमानाश्चरमा । भग० ६०० ।

चरिय-चरिका-नगरप्राकारयोरन्तरमष्टहस्तो मार्ग । सम० १३७ । चरिका-अष्टहस्तप्रमाणो मार्ग । राज० ३ । चरित-चेष्टनम् । प्रश्न० ६२ । चरित -सेवित । प्रश्न० ५१ । चरित-यद्वृत्तम् । दश० ३४ ।

चरियव्वग-चरण-तृणादनम् । आव० २२६ ।

चरिया-चरण चर्या-ग्रामानुग्रामविहरणात्मिका । उत्त० ८३ । नवम परिषह , वर्जितालस्यो ग्रामनगरकुलादिष्वनियतवसतिर्निर्ममत्व प्रतिमास चर्यामाचरेदिति । आव० ६५६ । विहितक्रियासेवनम् । उत्त० ८१ । दशविधचक्रवालसामाचारी इच्छामिच्छेत्यादिका । सूत्र० ८८ । चरिका-नगरप्रकारयोरन्तरालेऽष्टहस्तप्रमाणो मार्ग ।प्रश्न० ८ । अष्टहस्तप्रमाणो नगरप्राकारान्तरालमार्ग । औप० ३ । जीवा० २५८, २६६ । ज्ञाता० २ । चरिका । आव० ६४० । चरिका-परिव्राजिका । व्य० प्र० २०५ आ । ग्रहप्राकारान्तरो हस्त्यादिप्रचारमार्ग । भग० २३८ । नगरप्राकारान्तराले हस्ताष्टकमानो मार्ग । वृ० तृ० ५३ अ ।

चरियाचरिए-चारित्राचारित्र-देशविरति स्थूलप्राणातिपातादिनिवृत्तिलक्षणम् । आचा० ६८ ।

चरियारए-चर्यारता -निरोधासहिष्णुत्वाचङ्क्रमणशीला । आचा० ३६६ ।

चरिस्सामि-चरिष्यामि-अनुष्ठास्यामि । उत्त० ४०६ ।

चरु-चलम् । निरय० २७ । स्थालीविशेष । औप० ६४ । चरु -भाजनविशेष । भग० ५२० ।

चरे-चरे -आसेवस्व । उत्त० ३४१ । चरेत्-आसेवेत । उत्त० ५६ । चरति-आचरति । दश० २५५ । चरेत्-उद्युक्तो भवेत् । आचा० १२२ । विदध्यात् । आचा० १८० । चरेत्-गच्छेत् । प्रवर्त्ततेतियावत् । उत्त० ४३० ।

चरेज्ज-चरेत्-सेवेत । भग० ३६८ ।

चर्च-सहितादि चर्चं । ठाणा० ३८ ।

चर्मकारकोत्थ-कोषविशेष । आव० ३६१ ।

चर्मकृतिः- । ओघ० २१७ ।

चर्मदलं-चतुर्थं क्षुद्रकुष्ठम् । आचा० २३५ । प्रश्न० १६१ ।

चर्मपक्षिण-चर्ममयपक्षा पक्षिण , वल्गुलिप्रभृतय । ठाणा० २७३ । खचरप्रथमो भेद । सम० १३५ ।

चर्मपक्षी-चर्मात्मको पक्षी चर्मपक्षी । प्रज्ञा० ४६ ।

चर्मपञ्चकम्- ठाणा० २३४ ।

चर्या-वहन गमनमित्यर्थ । ठाणा० २४० ।

चलंतं-स्वस्थानादन्यत्र गच्छत् । ठाणा० ३८५ ।

संधि-चलन्त -शिथिलीभवन्त सन्धयो यस्मिस्तत् । उत्त० ३३४ ।

चलं-श्लथम् । ठाणा० २०६ । गन्तु पथि प्रवृत्त । ओघ० २३ । अनियतविहारित्वात् । आचा० २५८ । अवधि, अनवस्थितश्च । आव० २८ । गमनाभिमुखम् । ओघ० १४१ । चल -गमनक्रियायोगात् हारादि । आव० १८५ । चलो वायुराशुगत्वात् । ज०प्र०२६५ ।

चलइ-चलति-कम्पते । जीवा० ३०७ । स्थानान्तर गच्छति । भग० १८३ ।

चलचल-तवए पढम ज घय खित्त तत्य अण्ण घय अपक्खिवती आदिमे जे तिण्णि घाणा पयतिते चलचलेति । नि० चू० प्र० १६६ आ ।

चलचलओग्गहिमं- । आव० ८५७ ।

चलचवलं-चलचपल-अतिशयेन चपलम् । प्रज्ञा० ९६ । जीवा० १७२ ।

चलणं-चलन-मोटनम् । ओघ० १७७ । चलन -चलनविषयको भगवत्या प्रथमशतके प्रथमोद्देशक । भग० ५ ।

चलणमालिआ-चरणमालिका-सम्थानविशेषकृत पादाभरण लोके पगडा इति प्रसिद्धम् । ज० प्र० १०६ ।

चलणाओ-चलनक , भगवत्या प्रथमशतक दशमोद्देश । भग० ५ ।

चलणाहण-पारिणामिकबुद्धौ पोडशो दृष्टान्त । नदी० १६५ ।

चलणि-चलनप्रमाण स्तदंमश्चलनीत्युच्यते । भग०३०७ ।

चलणिगा–मल्लचलणाकृति । नि० चू० प्र० १७६ आ ।
चलणिन्विवखल्लो– । नि० चू० द्वि० ७६ आ ।
चलणी–चलनी । ओघ० २०६ । चरणमात्रस्पर्शी कर्दम । जीवा० २८२ ।
चलत–ईषत्कम्पमानम् । जीवा० १८८ ।
चलतोरण–जेण वाम दक्खिण वा चालिज्जति सो चलतोरण । नि० चू० तृ० ६३ आ ।
चलनकाल–उदयावलिका । भग० १५ ।
चलमाणे–चलत्–स्थितिक्षयादुदयमागच्छत् विपाकाऽभिमुखीभवद्यत्कर्मेति प्रकरणगम्य तत् । भग० १५ ।
चलसत्ते–चल–अस्थिर परीषहादिसम्पाते व्वसात् सत्त्व यस्य स चलसत्त्व । ठाणा० २५१ ।
चलहत्थो–णाम कपणवाउणा गहितो । नि० चू० प्र० १०१ अ ।
चलाचल–चलाचल–अप्रतिष्ठितम् । दश० १७५ ।
चलि–परिस्पन्दनाथ । दश० ७० ।
चलिअ–चलित–विलासवद्गति । ज० प्र० २६५ ।
चलिए–चलन–अस्थिरत्वपर्यायेण वस्तुन उत्पाद । भग० १८ ।
चलेमाणे–गच्छन् । आचा० २६५ ।
चवइ–च्यवते–अपयाति–चरति । आचा० ४०६ ।
चवण–च्यवन–पात । आचा० १६३ । उद्वर्त्तना । जीवा० १३५ ।
चवल–चपल–उत्सुकतयाऽसमीक्षितम् । प्रश्न० ११६ । चापलत्व कायस्य । ज्ञाता० ६६ । चञ्चलम् । ज्ञाता० १३८ । हस्तिग्रीवादिरूपकायचलनवत् । प्रश्न० १२६ । चापल्य–कायौत्सुक्यम् । ज० प्र० ३८८ । चपला कायतोऽपि । ज्ञाता० ३६ । चपल । आव० १८५ ।
चवलग–चपलकम् । आव० ६२२ ।
चवलगा–धान्यविशेष । नि० चू० प्र० १४४ आ ।
चवला–चपला–कायचापलोत्पेता । भग० १६७ ।
चवलाए–चपलया–कायचापल्येन । भग० ५२७ ।
चवलिअ–चपलित । ज० प्र० १०१ ।
चवेडा–चपेटा–करतलाघात । उत्त० ६२ । चपेटा–पञ्चाङ्गुलीप्रहार । उत्त० ४६१ ।

(अल्प० ५१)

चव्वाय–चार्वाक–रोमन्थायमाण । व्य० प्र० २५५ ।
चषक–भाजनविधिविशेष । जीवा० २६६ ।
चसक–चषक–सुरापानपात्रम् । ज० प्र० १०१ ।
चसूरि–विस्तार । भग० ७६० । विस्तर । ओघ० ५ । अनु० १३६ । नदी० ३३ ।
चाइया–शकिता । उत्त० ६२७ ।
चाई–त्यागी–सङ्गत्यागवान् । भग० १२२ । सर्वसङ्गत्याग, सविग्नमनोज्ञसाधुदान वा । प्रश्न० १५७ ।
चाउक्काल–चतुष्काल–दिवसरजनीप्रथमचरमप्रहरेष्वित्यर्थ । आव० ५७६ ।
चाउग्घट–चतस्रो घण्टा अवलम्बमाना यस्मिन् स । ज्ञाता० ४५ । चतस्रो घण्टा–पृष्ठतोऽग्रत पार्श्वतश्च यस्य स । ज्ञाता० १३२ ।
चाउजामो–चातुर्याम–निर्वृत्तिधम एव । आव० ५६३ ।
चाउज्जामा–चतुर्महाव्रतानि । भग० १०१ । चातुर्याम–महाव्रतचतुष्टयात्मको यो धर्म । उत्त० ४६६ ।
चाउज्जायग–चातुर्जातक–सुगन्धद्रव्यविशेष । उत्त० २१६ ।
चाउज्जायगा–सुगधदव्व । नि० चू० प्र० ३१८ आ ।
चाउत्थजरो–चातुर्थज्वर । आव० ५५६ ।
चाउत्थहिय–चातुर्थाहिक–ज्वरविशेष । भग० १६८ ।
चाउद्दसी–चतुर्दशी तिथि । ज्ञाता० १३६ ।
चाउप्पाय–चतुष्पदा–भिषग्भैषजातुरप्रतिचारकात्मकचतुर्भा(त्मकभा)ग चतुष्टयात्मिका । उत्त० ४७५ ।
चाउम्मासिएसु– । आचा० ३२७ ।
चाउम्मासिय–चातुर्मासिक–चतुर्मासातिचारनिर्वृत्त प्रतिक्रमणम् । आव० ५६३ ।
चाउम्मासियमज्जणए– । ज्ञाता० १४० ।
चाउरंगिज्ज–उत्तराध्ययनेषु तृतीयमध्ययनम् । सम० ६४ । नि० चू०प्र० ६ अ । चातुरङ्गीयम् । दश० १०५ ।
चाउरंत–चातुरन्त–चतुर्गतिकम् । प्रश्न० ६१ । चतुर्विभाग-ससार । ज्ञाता० ८६ । चतुरन्त ससार । आव० ५४६ । चतुरन्त–चतसृष्वपि दिक्ष्वन्त–पर्यन्त, एकत्र हिमवानन्यत्र च दिक्त्रये समुद्र स्वसम्बन्धितयाऽस्येति । चतुर्भिर्वा हयगजरथनरात्मकैरन्त–शत्रुविनाशात्मको यस्य स । उत्त० ३५० । चतुर्विभाग नरकादिगतिविभागेन । ठाणा ४४ ।

चाउरंतचक्कवट्टि–चतुर्षु-दक्षिणोत्तरपूर्वापररूपेषु पृथिवीपर्यन्तेषु चक्रेण वर्तितु शील यस्स स चातुरन्तचक्रवर्ती । जं० प्र० ५८ ।

चाउरं कवट्टी– दिक्त्रयभेदभिन्नसमुद्रत्रयहिमवत्पर्वतपर्यन्तसीमाचतुष्टयलक्षणा ये चत्वारोऽन्तास्ताश्चतुरोऽपि चक्रेण वर्त्तयति पालयतीति–चतुरन्तचक्रवर्त्ती–परिपूर्ण–पट्खण्डभरतभोक्ता । अनु० १७१ ।

चाउरंतमुक्ख–चतुरन्तमोक्ष –ससारविनाश । आव० ५४६ ।

चाउरक्क–चातुरक्य चतु स्थानपरिणामपर्यन्तम् । जीवा० २७८, ३५३ ।

चाउलं–तन्दुलधावनम् । बृ० द्वि० २४६ आ ।

लणा–जहा आफासुय अणेसणिज्जति तेसिं चाउलणा कहिज्जति । नि० चू० द्वि० १४८ आ ।

चाउलपलंबं–अर्द्धपक्कशाल्यादि कणादिकमित्येवमादिकम् । आचा० ३४२ । तन्दुला –शालिव्रीह्यादे त एव चूर्णीकृतास्तत्कणिका वा । आचा० ३२३ ।

ललोट्टो–रोट्ट । ओघ० १३७ ।

ला–तन्दुला –शालिव्रीह्यादे । आचा० ३२३ ।

चाउलोदग–तण्डुलोदकम् । पिण्ड० १० । तन्दुलोदक–अट्टिकरकम् । दश० १७७ ।

चाउलोदयं–तन्दुलधावनोदकम् । आचा० ३४६ ।

चाउवण्णं–चातुर्वर्ण्यं–ब्राह्मणादिलोक । भग० ६९० ।

चाउवन्न–चत्वारो वर्णा –प्रकारा श्रमणादयो यस्मिन् स तथा स एव स्वार्थिकाण्विधानाच्चातुर्वर्णं । ठाणा० ३२१ ।

चाउव्वण्णाइण्णे–चत्वारो वर्णा –श्रमणादय समाहृता इति चतुर्वर्णं तदेव चातुर्वर्ण्यं तेनाकीर्ण –आकुलश्चातुर्वर्ण्याकीर्ण, अथवा चत्वारो वर्णा –प्रकारा यस्मिन् स तथा, दीर्घत्व प्राकृतत्वात्, चतुर्वर्णश्चासावाकीर्णश्च ज्ञानादिभिर्महागुणैरिति चतुर्वर्णाकीर्णं । ठाणा० ५०३ ।

चाउव्वण्णाइन्ने–चातुर्वर्णश्चासावाकीर्णश्च ज्ञानादिगुणैरिति चातुर्वर्णाकीर्णं । भग० ७११ ।

चाउव्वेज्ज–चातुर्वैद्य. । आव० १०३; ६९५ ।

चाउव्वेज्जभत्तं–चातुर्वैद्यभक्तम् । आव० ८२४ ।

चाउसालए–चतु शालक–भवनविशेष । जं० प्र० ३९१ ।

चाउ –चतु शालम् । ओघ० ४६ । गृहम् । बृ० द्वि० १४८ आ ।

चाएइ–शक्नोति । आव० ७०३ ।

चाकचिक्यं– । नदी० ५५ ।

चाक्रिक.–यान्त्रिक । ओघ० ७५ ।

चाटुयार–चाटुकर –मुखमङ्गलकर । प्रश्न० ३० ।

चाडु–चाटु । आव० ९३ ।

चाडुकर–चाटुकर । प्रश्न० ५६ ।

चाडुयं–हावभावम् । जीवा० ६९६ ।

चाणक्क–चाणक्य –कौटिल्य । दश० ५२, ६१ । पाशके दृष्टान्त । आव० ३४२ । चन्द्रगुप्तमन्त्री । नि० चू० तृ० ४ आ । नीतिकार –कौटिल्य । चूर्णद्वारविवरणे चन्द्रगुप्तमन्त्री । पिण्ड० १४२ । उपायेनार्थोपार्जनकारको ब्राह्मण । दश० १०७ । विमर्शदृष्टान्ते नीतिकारो द्विजन्मा । आव० ४०५ । प्रशसाविषये पाटलीपुत्रे चन्द्रगुप्तराजमन्त्री । आव० ८१७ । गोब्बरग्रामे सुबन्धुना दग्ध । मर० । सुबन्धुप्रदीपित । भक्त० । पाडलीपुत्ते मती । नि० चू०द्वि० १०२ अ । नि० चू० प्र० ११९ अ । चाणक्य –पाटलीपुत्रनगरे मन्त्री । विशे० ४१० । व्य० प्र० १४० आ । चाणक्य –शत्रुदग्धोऽनशनी । स० । चाणाक्य –सन्यासे दृष्टान्त । व्य० प्र० २५६ अ । ठाणा० २८२ । पारिणामिकबुद्धौ द्वादशो दृष्टान्त । नदी० १६७ ।

र–कसराजसम्बन्धी एतदभिधानो मल्ल । प्रश्न० ७४ ।

चातुरंतसंसारकंतारो–चातुरतससारकान्तार । आव० ७९३ ।

चामरगंडा–चामरदण्डा । ज्ञाता० ५८ ।

चामरच्छाय–चामरच्छायन–स्वातीगोत्रम् । जं० प्र० ५०० ।

चामरधारपडिमाओ–चामरधारप्रतिमा । जं०प्र० ८१ ।

चारचरइ–चारञ्चरति–मण्डलगत्या परिभ्रमति । जीवा० ३७७ ।

चार–चरन्ति–भ्रमन्ति, ज्योतिष्कविमानानि यत्र स चारो-

ज्योतिश्चक्रक्षेत्र समस्तमेव । ठाणा० ५८ । नियुक्ता । नि० चू० द्वि० १०६ अ । चरण चार–अनुष्ठानम् । आचा० २१२। विहार । भग० ३ । ज्योतिषामवस्थान-क्षेत्रम् । भग० ३६४ । ठाणा० ५८ । चार–ज्योतिश्चारस्तद्विज्ञानम् । ज० प्र० १३९ । मण्डलगत्या परिभ्रमणम् । जीवा० ३७८ । ज० प्र० ४६२ । चरणम् । प्रश्न० ९५ । फलविशेष । प्रज्ञा० ३२८ । चार–परिभ्रमणम् । सूर्य० ११ । चार । ज्ञाता० ३८ ।

चारकपालक – । उत्त० ६२ ।

चारकादि– । आचा० १६५ ।

चारग–चारक-गुप्ति । प्रश्न० ६० । औप० ८७ । गुप्तिगृहम् । प्रश्न० ५६ । बन्धनगृहम् । आव० ११४ ।

चारगपरिसोहणं–चारगशोधनम् । ज्ञाता० ३७ ।

चारगपाले–चारकपाल–गुप्तिपालक । विपा० ७१ ।

चारगबधण–चारकबन्धनम् । सूत्र० ३२८ ।

चारगभडे–चारकभाण्ड–गुप्त्युपकरणम् । विपा० ७१ ।

चारगभडिया–चारकभट्टिनी, भर्तृका । आव० ९३ ।

चारगवसहि–चारकवसति–गुप्तिगृहम् । प्रश्न० ५६ ।

चारट्ठिइए–चारस्य–यथोक्तस्वरूपस्य स्थिति-अभावो यस्य स चारस्थितिक–अवगतचार । सूर्य० २८१ ।

चारट्ठिइओ–चारकस्थितिक–चारस्य स्थिति–अभावो यस्य स, अपगतचार । जीवा० ३४६ ।

चारट्ठितीया–चारे–ज्योतिश्चक्रक्षेत्रे स्थितिरेव येषा ते चारस्थितिका–समयक्षेत्रबहिर्वर्त्तिनो घण्टाकृतय इत्यर्थ । ठाणा० ५७ ।

चारण– । व्य० प्र० १७९ आ ।

चारणगणे–नव गणे चतुर्थो गण । ठाणा० ४५१ ।

चारणा–अतिशयचरणाच्चरणा–विशिष्टाकाशगमनलब्धियुक्ता । प्रश्न० १०५ । चारणा–जङ्घाचारणादय । ज्ञाता० १०० । चरण–गमनमतिशयवदाकाशे एषामस्ति इति चारणा । भग० ७९४ । ऋद्धिप्राप्तार्यभेद । प्रज्ञा० ५५ । जङ्घाचारणा विद्याचारणाश्च । सम० ३४ । चारणा–जङ्घाचारणविद्याधरा । जीवा० ३४४ । चरण–गमन तद्विद्यते येषा ते चारणा । प्रज्ञा० ४२४ ।

चारणिका–अनेकशो भिक्षा । ओघ० २६ ।

चारते–चारक–गुप्तिगृहम् । ठाणा० ३९८ ।

चारपुरिसो–चारपुरुष । उत्त० २१४ ।

चारभट–सूर । प्रश्न० ११६ । भट, बलात्कारप्रवृत्ति । औप० २ । शूर । उत्त० ३४९, ४३४ । आचा० ३५३ ।

चारभट्ट – । सूत्र० ३०९ ।

चारभड–अबलगकादय । ओघ० ९२ । चारभट । प्रश्न० ३०, ५६ । ओघ० १६३ ।

चारभडओ–चारभट । आव० ८३१ ।

चारभडा–स्वामिभटा । पिण्ड० १११ । सेवगा । नि० चू० प्र० ३५८ अ । चारभटा–राजपुरुषा । बृ० प्र० ३११ अ ।

चारभडिया– । बृ० प्र० २९ आ ।

चारविसेसे–चारविशेष । सूर्य० २७६ ।

चारवृक्ष –यस्मिन् चारकुलिका उत्पद्यन्ते । अनु० ४७ ।

चारस्थितिका –समयक्षेत्रबहिर्वर्त्तिनो घण्टाकृतय । ठाणा० ५८ ।

चारा–हेरिका । भग० ४ ।

चारि–चारीम् । विशे० ६३५ । तृणाति । आव० १८९ । चारिक । आव० २०२ । चर । उत्त० १२२ । हेरिक । बृ० तृ० ४० आ ।

चारिए–चारिक । आचा० ३८८ ।

चारिगा–चारिका । उत्त० १६२ ।

चारित–चरत्यनिन्दितमनेनेति चरित्र–क्षयोपशमरूप तस्य भाव चारित्र, इहान्यजन्मोपात्ताष्टविधकर्मसञ्चयाय चरणभावश्चारित्र, सर्वसावद्ययोगविनिवृत्तिरूपा क्रिया वा । आव० ५९२ । अण्णणोवचियस्स कम्मचयस्स रित्तीकरण चारित्त । नि० चू० प्र० १८ आ । चयस्य–राशे प्रस्तावात्कर्मणा रिक्त–विरेकोऽभाव इतियावत् तत्करोतीत्येवशील चयरिक्तकर चारित्रम् । उत्त० ५६९ । अष्टविधकर्मचयरिक्तीकरणाद्वा चारित्र–सर्वविरतिक्रियेत्यथ । चरत्यनिन्दितमनेन चारित्र । विशे० ५४५ । चयरिक्तीकरणाच्चारित्रम् । ओघ० ९ । बाह्य सदनुष्ठानम् । ज्ञाता० ७ ।

चारित्तबलिय–चारित्रबलिक । औप० २८ ।

चारित्तभट्ठो–चारित्रभ्रष्ट–अव्यवस्थितपुराण । आव०

रंतचक्कवट्टि–चतुर्षु-दक्षिणोत्तरपूर्वापररूपेषु पृथिवी-पर्यन्तेषु चक्रेण वर्तितु शील यस्स स चातुरन्तचक्रवर्ती । ज० प्र० ५८ ।

चाउरं कवट्टी– दिक्त्रयभेदभिन्नसमुद्रत्रयहिमवत्पर्वत-पर्यन्तसीमाचतुष्टयलक्षणा ये चत्वारोऽन्तास्ताश्चतुरोऽपि चक्रेण वर्त्तयति पालयतीति-चतुरन्तचक्रवर्त्ती–परिपूर्ण–पट्खण्डभरतभोक्ता । अनु० १७१ ।

चाउरंतमुक्ख–चतुरन्तमोक्ष –ससारविनाश । आव० ५४६ ।

चाउरक्क–चातुरक्य चतु स्थानपरिणामपर्यन्तम् । जीवा० २७८, ३५३ ।

चाउलं–तन्दुलधावनम् । बृ० द्वि० २४६ आ ।

लणा–जहा आफासुय अणेसणिज्जति तेसिं चाउलणा कहिज्जति । नि० चू० द्वि० १४८ आ ।

चाउलपलंवं–अर्द्धपक्कशाल्यादि कणादिकमित्येवमादिकम् । आचा० ३४२ । तन्दुला –शालिव्रीह्यादे त एव चूर्णी-कृतास्तत्कणिका वा । आचा० ३२३ ।

ललोट्टो–रोट्ट । ओघ० १३७ ।

ला–तन्दुला –शालिव्रीह्यादे । आचा० ३२३ ।

चाउलोदग–तण्डुलोदकम् । पिण्ड० १० । तन्दुलोदक–अट्ठिकरकम् । दश० १७७ ।

चाउलोदयं–तन्दुलधावनोदकम् । आचा० ३४६ ।

चाउवण्णं–चातुर्वर्ण्य–ब्राह्मणादिलोक । भग० ६६० ।

चाउवन्न–चत्वारो वर्णा –प्रकारा श्रमणादयो यस्मिन् स तथा स एव स्वार्थिकाण्विधानाच्चातुर्वर्णं । ठाणा० ३२१ ।

चाउव्वण्णाइण्णे–चत्वारो वर्णा –श्रमणादय समाहृता इति चतुर्वर्णं तदेव चातुर्वर्ण्यं तेनाकीर्णं –आकुलश्चातु-वर्ण्याकीर्णं, अथवा चत्वारो वर्णा –प्रकारा यस्मिन् स तथा, दीर्घत्व प्राकृतत्वात्, चतुर्वर्णश्चासावाकीर्णश्च ज्ञाना दिभिर्महागुणैरिति चतुर्वर्णाकीर्णं । ठाणा० ५०३ ।

चाउव्वण्णाइन्ने–चातुर्वर्णश्चासावाकीर्णश्च ज्ञानादिगुणै-रिति चातुर्वर्णाकीर्णं । भग० ७११ ।

चाउवेज्ज–चातुर्वेद्य । आव० १०३ ६९५ ।

चाउव्वेज्जमत्तं–चातुर्वेद्यमक्तम् । आव० ८२४ ।

चाउसालए–चतु शालक–भवनविशेष । ज० प्र० ३९१ ।

चाउर –चतु शालम् । ओघ० ४६ । गृहम् । बृ० द्वि० १४८ आ ।

चाएइ–शक्नोति । आव० ७०३ ।

चाकर्ति – । नदी० ५५ ।

चाक्रिक–यान्त्रिक । ओघ० ७५ ।

चाटुयार–चाटुकर –मुखमङ्गलकर । प्रश्न० ३० ।

चाडु–चाटु । आव० ९३ ।

चाडुकर–चाटुकर । प्रश्न० ५६ ।

चाडुयं–हावभावम् । जीवा० ६६६ ।

चाणक्क–चाणक्य –कौटिल्य । दश० ५२, ६१ । पाशके दृष्टान्त । आव० ३४२ । चन्द्रगुप्तमन्त्री । नि० चू० तृ० ४ आ । नीतिकार –कौटिल्य । चूर्णद्वारविवरणे चन्द्रगुप्त-मन्त्री । पिण्ड० १४२ । उपायेनार्थोपार्जनकारको ब्राह्मण । दश० १०७ । विमर्शदृष्टान्ते नीतिकारो द्वि-जन्मा । आव० ४०५ । प्रशसाविषये पाटलीपुत्रे चन्द्र-गुप्तराजमन्त्री । आव० ८१७ । गोब्बरग्रामे सुबन्धुना दग्ध । मर० । सुबन्धुप्रदीपित । भक्त० । पाडलीपुत्ते मती । नि० चू०द्वि० १०२ अ । नि० चू० प्र० ११९ अ । चाणक्य –पाटलीपुत्रनगरे मन्त्री । विशे० ४१० । व्य० प्र० १४० आ । चाणक्य –शत्रुदग्धोऽनशनी । स० । चाणाक्य –सन्यासे दृष्टान्त । व्य० प्र० २५६ अ । ठाणा० २८२ । पारिणामिकबुद्धौ द्वादशो दृष्टान्त । नदी० १६७ ।

र –कसराजसम्बन्धी एतदभिधानो मल्ल । प्रश्न० ७४ ।

चातुरंतससारकंतारो–चातुरतससारकान्तार । आव० ७९३ ।

चामरगंडा–चामरदण्डा । ज्ञाता० ५८ ।

चामरच्छाय–चामरच्छायन–स्वातीगोत्रम् । ज० प्र० ५०० ।

चामरधारपडिमाओ–चामरधारप्रतिमा । ज०प्र० ८१ ।

चारंचरइ–चारञ्चरति–मण्डलगत्या परिभ्रमति । जीवा० ३७७ ।

चार–चरन्ति–भ्रमन्ति, ज्योतिष्कविमानानि यत्र स चारो-

ज्योतिश्चक्रक्षेत्र समस्तमेव । ठाणा० ५८ । नियुक्ता । नि० चू० द्वि० १०६ अ । चरण चार–अनुष्ठानम् । आचा० २१२। विहार । भग० ३ । ज्योतिषामवस्थानक्षेत्रम् । भग० ३६४ । ठाणा० ५८ । चार–ज्योतिश्चारस्तद्विज्ञानम् । ज० प्र० १३६ । मण्डलगत्या परिभ्रमणम् । जीवा० ३७८ । ज० प्र० ४६२ । चरणम् । प्रश्न० ६५ । फलविशेष । प्रज्ञा० ३२८ । चार–परिभ्रमणम् । सूर्य० ११ । चार । ज्ञाता० ३८।

चारकपालक – । उत्त० ६२ ।

चारकादि– । आचा० १६५ ।

चारग–चारक-गुप्ति । प्रश्न० ६० । औप० ८७ । गुप्तिगृहम् । प्रश्न० ५६ । बन्धनगृहम् । आव० ११४ ।

चारगपरिसोहणं–चारगशोधनम् । ज्ञाता० ३७ ।

चारगपाले–चारकपाल–गुप्तिपालक । विपा० ७१ ।

चारगबधण–चारकबन्धनम् । सूत्र० ३२८ ।

चारगभडे–चारकभाण्ड–गुप्त्युपकरणम् । विपा० ७१ ।

चारगभडिया–चारकभट्टिनी, भर्तृका । आव० ६३ ।

चारगवसहि–चारकवसति–गुप्तिगृहम् । प्रश्न० ५६ ।

चारट्ठिइए–चारस्य–यथोक्तस्वरूपस्य स्थिति-अभावो यस्य स चारस्थितिक–अवगतचार । सूर्य० २८१ ।

चारट्ठिइओ–चारकस्थितिक–चारस्य स्थिति–अभावो यस्य स, अपगतचार । जीवा० ३४६ ।

चारट्ठितीया–चारे–ज्योतिश्चक्रक्षेत्रे स्थितिरेव येषा ते चारस्थितिका –समयक्षेत्रबहिर्वर्त्तिनो घण्टाकृतय इत्यर्थं । ठाणा० ५७ ।

चारण– । व्य० प्र० १७६ आ ।

चारणगणे–नव गणे चतुर्थो गण । ठाणा० ४५१ ।

चारणा–अतिशयचरणाच्चरणा –विशिष्टाकाशगमनलब्धियुक्ता । प्रश्न० १०५ । चारणा –जङ्घाचारणादय । ज्ञाता० १०० । चरण–गमनमतिशयवदाकाशे एषामस्ति इति चारणा । भग० ७६४ । ऋद्धिप्राप्तार्यभेद । प्रज्ञा० ५५ । जङ्घाचारणा विद्याचारणाश्च । सम० ३४ । चारणा–जङ्घाचारणविद्याधरा । जीवा० ३४४ । चरण–गमन तद्विद्यते येषा ते चारणा । प्रज्ञा० ४२४ ।

चारणिका–अनेकशो भिक्षा । ओघ० २६ ।

चारते–चारक–गुप्तिगृहम् । ठाणा० ३६८ ।

चारपुरिसो–चारपुरुष । उत्त० २१४ ।

चारभट–सूर । प्रश्न० ११६ । भट, बलात्कारप्रवृत्ति । औप० २ । शूर । उत्त० ३४६, ४३४ । आचा० ३५३ ।

चारभट्ट – । सूत्र० ३०१ ।

चारभड–अवलगकादय । ओघ० ६२ । चारभट । प्रश्न० ३०, ५६ । ओघ० १६३ ।

चारभडओ–चारभट । आव० ८३१ ।

चारभडा–स्वामिभटा । पिण्ड० १११ । सेवगा । नि० चू० प्र० ३५८ अ । चारभटा–राजपुरुषा । बृ० प्र० ३११ अ ।

चारभडिया– । बृ० प्र० २६ आ ।

चारविसेसे–चारविशेष । सूर्य० २७६ ।

चारवृक्ष –यस्मिन् चारकुलिका उत्पद्यन्ते । अनु० ४७ ।

चारस्थितिका –समयक्षेत्रबहिर्वर्त्तिनो घण्टाकृतय । ठाणा० ५८ ।

चारा–हेरिका । भग० ४ ।

चारि–चारीम् । विशे० ६३५ । तृणाति । आव० १८६ । चारिक । आव० २०२ । चर । उत्त० १२२ । हेरिक । बृ० तृ० ४० आ ।

चारिए–चारिक । आचा० ३८८ ।

चारिगा–चारिका । उत्त० १६२ ।

चारित–चरन्त्यनिन्दितमनेनेति चरित्र–क्षयोपशमरूप तस्य भाव चारित्र, इहान्यजन्मोपात्ताष्टविधकर्मसञ्चयाय चरणभावश्चारित्र, सर्वसावद्ययोगविनिवृत्तिरूपा क्रिया वा । आव० ५६२ । अण्णणोवचियस्स कम्मचयस्स रित्तीकरण चारित्त । नि० चू० प्र० १८ आ । चयस्य–राशे प्रस्तावात्कर्मणा रिक्त–विरेकोऽभाव इतियावत् तत्करोतीत्येवशील चयरिक्तकर चारित्रम् । उत्त० ५६६ । अष्टविधकर्मचयरिक्तीकरणाद्वा चारित्र–सर्वविरतिक्रियेत्यय । चरन्त्यनिन्दितमनेन चारित्र । विशे० ५४५ । चयरिक्तीकरणाच्चारित्रम् । ओघ० ६ । बाह्य सदनुष्ठानम् । ज्ञाता० ७ ।

चारित्तबलिय–चारित्रबलिक । औप० २८ ।

चारित्तभट्ठो–चारित्रभ्रष्ट –अव्यवस्थितपुराण । नाव०

५३३ ।
चारित्र–आर्यभेद । सम० १३५ । ठाणा० ३३७ ।
चारित्रत शाप ददत् चारित्रत । ठाणा० ३३७ ।
चारित्रधर्म–चारित्रसम्बन्धी धर्मं । आव० ७८८ ।
चारित्रधर्माङ्गिनि–संयमात्मप्रवचनानि । भग० ९ ।
चारित्रभेदा–क्षपणवैयावृत्त्यरूपा । ठाणा० ३८१ ।
चारित्र्द्धि.–निरतिचारता । ठाणा० १७३ ।
चारित्रसमाधिप्रतिमा–समाधिप्रतिमाया द्वितीयो भेद । सम० ९६ । ठाणा० ६५ ।
चारित्रोपसम्पत् वैयावृत्यकरणार्थं क्षपणार्थं चोपसम्पद्यमानस्य । ठाणा० ५०१ । वैयावृत्त्यविषया क्षपणविषया च । आव० २६८ ।
चारिय–चारिक–हैरिक । प्रश्न० ३० । प्रणिधिपुरुष । प्रश्न० ३८ ।
चारिया–चारिका । आव० ३१६ ।
ो–चीर्णवान्–विहृतवान् । आचा० ३१० ।
चारीभडिय–चारीभण्डिक । ओघ० १४८ ।
चारु–चारु–प्रहरणविशेष । राज० ११३ । प्रहरणविशेष । जीवा० २६० ।
चारुदत्त–यो वेत्रवती नदीमुत्तीर्य परकुल गत । नामविशेष । सूत्र० १९६ । चारुदत्त–ब्रह्मदत्तपत्न्या–वच्छया पिता । उत्त० ३७९ ।
चारुपव्वए– । ज्ञाता० १२१ ।
चारुपीणया–चारुपीनका । ज० प्र० १०१ ।
चारुपीनक–भाजनविधिविशेष । जीवा० २६६ ।
चारुवण्णो–चारुवर्ण सत्कीर्त्ति गौराद्युदात्तशरीरवर्णयुक्त, सत्प्रज्ञो वा । औप० ३३ ।
चारू–चारु–शोभन । सूर्य० २९४ । सम० १५२ ।
चारोपपन्नका–ज्योतिष्का । ठाणा० ५८ ।
चारोवगो–चारोपग–चारुयुक्त । जीवा० ३४० ।
चारोववन्नगा–ज्योतिश्चक्रचरणोपलक्षितक्षेत्रोपपन्ना । भग० ३९४ । चरन्ति–भ्रमन्ति ज्योतिष्कविमानानि यत्र स चारो–ज्योतिश्चक्रक्षेत्र समस्तमेव । तत्रोपपन्नकाश्चारोपपन्नका–ज्योतिष्का । ठाणा० ५७ ।
चारोववन्नो–चार–मण्डलगत्वा परिभ्रमणमुपपन्ना–आश्रितवन्तश्चारोपपन्ना । जीवा० ३४६ ।
चार्वाकि:–यथा वृषनेत्र वृषसागारिक नीरसमरो वृषभश्चर्वयति एव य कार्य रोमन्थायमाणो निष्फल रचयन् तिष्ठन्–चर्वणशील चार्वाकि । व्य० प्र० २५६ अ ।
चालणा–क्वचित्किञ्चिदनवगच्छन् पृच्छति शिष्य कथमेतदिति इयमेव चालना । दश० २१ । दूपण चाल्यते–आक्षिप्यते यया वचनपद्धत्या सा चालना । व्र० प्र० १३६ अ । सूत्रार्थगतदूपणात्मिका । उत्त० २० ।
चालना–सूत्रस्य अर्थस्य वा अनुपपत्त्युद्भावन चालना । अनु० २६३ ।
चालनी–यया कणिक्कादि चाल्यते चालनी । आव० १०२ ।
चालित्तए–भङ्गकान्तरगृहीतान् भङ्गकान्तरेण कर्तुम् । ज्ञाता० १३९ ।
चालिया–चालिता–इतस्ततो विक्षिप्ता । ज० प्र० ३७ ।
चालेति–चालयति–स्थानान्तरनयनेन । ज्ञाता० ९४ ।
चालेमाणो–चलन्–शरीरस्य मध्यभागेन सञ्चरन् । जीवा० १२० ।
चाव–चापा–कोदण्ड । ज० प्र० २०६ । चाप–धनु । जीवा० ७७३ ।
चाववसे–पर्वगविशेष । प्रज्ञा० ३३ ।
चाविय–च्यावित–आयु क्षयेण भ्रशितम् । प्रश्न० १५५ ।
चावोण्णतं– । सम० ३९ ।
चास–पक्षिविशेष । उत्त० ६५२ । चाष–पक्षिविशेष । आव० ६८७ । प्रज्ञा० ३६० । किकिदीवी । पक्षिविशेष । प्रश्न० ८ ।
चासपिच्छए–चासस्य पतत्रम् । प्रज्ञा० ३६० ।
चासा–लोमपक्षिविशेष । प्रज्ञा० ४१ ।
चिंचइअ–(देशी०) खचितम् । आव० १८० ।
चिंचणिकामयी–अम्बिलिकामयी । ओघ० ३० ।
चिंचतिया–दीप्ता । नि० चू० प्र० ३४८ अ ।
चिंचापाणग–पानकविशेष । आचा० ३४७ । चिञ्चापानकम् । वृ० प्र० २५३ अ ।
चिंचियत–चिंचिकुर्वन् सर्पेण ग्रस्यमान शब्दायमानो मण्डुक । उत्त० ५२२ ।
चिं तं–चिंचिमिति कुर्वन्तम् । उत्त० ५२१ ।

चितनिका–परिभावनीय । ठाणा ३४६ ।

चिंता–चिन्ता–पूर्वकृतानुस्मरणम् । भग० १८० । मनश्चेष्टा । आव० ५८३ । ततो मुहूर्त्तुहु क्षयोपशमविशेषत स्वधर्मानुगतसद्भूतार्थविशेषचिन्तन चिन्ता । नदी० १७६ । कथमिद भूत कथ चेद सम्प्रति कर्त्तव्य कथ चैतद्भविष्यतीति पर्यालोचनम् । नदी० १९० ।

चितापसग–चिन्ताप्रसग –चिन्तासातत्यम् । प्रश्न० ६१ । ओप० ४६ ।

चितासुविणे–जाग्रदवस्थस्य या चिन्ता–अर्थचिन्तन तत्सदर्शनात्मक स्वप्नश्चिन्तास्वप्न । भग० ७०६ ।

चितिए–चिन्तित –स्मरणरूप । भग० ११५, ४६२ । चिन्तित । विपा० ३८ । चिन्तित चिन्तारूपश्चेतसोऽनवस्थितत्वात् । ज० प्र० २०३ ।

चितिय–चिन्तित–अपरेण हृदि स्थापितम् । ज्ञाता० ४१ ।

चितियाइओ–चिन्तितवान् । आव० १५२ ।

चितेमि–चिन्तयामि–युक्तिद्वारेणापि परिभावयामि । प्रज्ञा० २४६ ।

चिंध–चिह्न स्वस्तिकादि । आव० ३२१ । लाञ्छनम् । ज्ञाता० २२२ ।

चिंधत्थी–चिह्नयते–ज्ञायतेऽनेनेति चिह्न स्तननेपथ्यादिक, चिह्नमात्रेण स्त्री चिह्नस्त्री, अपगतस्त्रीवेदछद्मस्थ केवली वा, अन्यो वा स्त्रीवेषधारी । सूत्र० १०२ ।

चिंधद्धय–चिह्नध्वज –चक्रादिचिह्नप्रधानध्वज । भग० ३१६ ।

चिंधपट्ट–चिह्नपट्ट –योधतासूचको नेत्रादिवस्त्ररूप –सौवर्णो वा पट्टो येन स । भग० १६३ । ध्वजपट । ज्ञाता० २७ । चिह्नपट्ट योधचिह्नपट्ट । भग० ३१८ । नेत्रादिमय । विपा० ४७ । नेत्रादिचीवरात्मक । प्रश्न० ४७ ।

चिंधपुरिसे–पुरुषचिह्नं –श्मश्रुप्रभृतिभिरुपलक्षित पुरुषश्चिह्नपुरुष । ठाणा० ११३ ।

चिंधिअ–दर्शित । आव० ६२ ।

चिंधे–चिंधपुरिसे–चिह्नपुरुष । अपुरुषोऽपि पुरुषचिह्नोपलक्षित । आव० २७७ ।

चिह्न–केतम् । आव० ८४१ ।

चिअ–चित्त–इष्टिकादिरचित प्रासादपीठादि । अनु० १५४ ।

चिअत्ते–मनं प्रणिधानम् । दश० १८० ।

चिइ–कुशलकर्मणश्चयन चिति, रजोहरणाद्युपधिमर्हति । आव० ५११ ।

चिइया–चितिका–शस्त्रविशेष । आव० ६५१ ।

चिई–चयन चिति –प्रवेशनम् । आव० ४७४ । चियन्ते मृतकदहनाय इन्धनानि अस्यामिति चिति –काष्ठरचनात्मिका । उत्त० ३८६ ।

चिउरगरागो–चिकुराङ्गराग –चिकुरसयोगनिमितो वस्त्रादौ राग । जीवा० १६१ ।

चिउरगराते–चिकुराङ्गराग –चिकुरसयोगनिर्मितो वस्त्रादौ राग । राज० ३३ ।

चिउर–चिकुर –रागद्रव्यविशेष । ज० प्र० ३४ । जीवा० १६१ । पीतद्रव्यविशेष । प्रज्ञा० ३६१ । चिकुरो–रागद्रव्यविशेष । राज० ३३ ।

चिउररागे–चिकुरराग –चिकुरनिष्पादितो वस्त्रादौ राग । प्रज्ञा० ३६१ ।

चिए–चय –प्रदेशानुभागादेर्वर्धनम् । भग० ५३ ।

चिकित्सित्वा– । आव० ११८ ।

चिक्कण–अन्योन्यानुवेधेन गाढसश्लेषरूप । पिण्ड० २७ । चिक्कण–दुर्विमोचम् । प्रश्न० २२ । दारुणम् । दश० २०६ ।

चिक्कणिका–नोकर्मद्रव्यलोभ, आकारमुक्ति । आव० ३९७ ।

चिक्कणीकय–चिक्कणीकृत–सूक्ष्मकर्मस्कन्धाना सरसतया परस्पर गाढसम्बन्धकरणतो दुर्भेदीकृतम् । भग० २५१ ।

चिक्खल–सकर्दम प्रदेश । ओघ० २१९ ।

चिक्खलगोलए–कर्दमगोल । दश० ९४ ।

चिक्खल्ल–शुष्क । ओघ० २९ । यत्र निमज्जन स्यात् स चिक्खल्ल । ओघ० २९ । चिदिति करोति खल्ल च भवतीति चिक्खल्लम् । अनु० १५० । कर्दम ससार पक्षे विषयधनस्वजनादिप्रतिबन्ध । सम० १२७ । कर्दम । दश० ८७ । उत्त० १२८ । प्रज्ञा० ८० । आव० १९९, ६२१, ६२४ । व्य० द्वि० ६ आ ।

चिगिच्छए– । ज्ञाता० १११ ।

चिच्चं–चिच्च नाम च्युत दानमित्यर्थ, विशिष्टदानम् । जीवा० २३१ । चिच्च नाम च्यूत विशिष्ट दानमित्यर्थ । ज० प्र० २८५ ।
चिच्ची–चित्कार । विपा० ५० ।
चिज्जंति–चीयन्त बन्धनत, निघत्ततो वा । भग० २५३ ।
चिट्ठं–भृशमत्यर्थम् । आचा० १८४ ।
चिट्ठइ–तिष्ठति–ऊर्ध्वस्थानेन वर्तते । जीवा० २०१ ।
चिट्ठा–चेष्टा–व्यापाररूपा । आव० ७८५ ।
चिट्ठित्तु–स्थातु–कायोत्सर्गं कर्त्तुम् । आव० २७१ ।
चिट्ठियव्व–शुद्धभूमौ ऊर्ध्वस्थानेन स्थातव्यम् । ज्ञाता० ६१ ।
चिट्ठिस्सामो–स्थास्याम –वर्त्तिष्याम । ज्ञाता० १५६ ।
चिट्ठे–तिष्ठन्–ऊर्ध्वस्थानेनासमाहितो हस्तपादादि विक्षिपन् । दश० १५६ । स्थातव्यम् । ओघ० २२ ।
चिट्ठेज्जा–तिष्ठेत्–ऊर्ध्वस्थानेनाऽवतिष्ठेत् । प्रज्ञा० ६०६ ।
चिट्ठेमाणे–चेष्टयन्–व्यापारयन् चेष्टमानो वा । भग० ५४ ।
चिडगा–लोमपक्षिविशेष । जीवा० ४१ । प्रज्ञा० ४६ ।
चिडिग–चिटिका –कलम्बिका, पक्षिविशेष । प्रश्न० ८ ।
चिण–आसकलनत चितवन्त । ठाणा० १७६ ।
चिणविसए–देशविशेष । नि० चू० प्र० २५५ अ ।
चिणाइ–अनुभागबन्धापेक्षया निधत्तावस्थाऽपेक्षया वा । भग० १०२ ।
चिणिंसु–तथाविधापरकर्म्मपुद्गलैश्चितवन्त –पापप्रकृतीरल्पप्रदेशा बहुप्रदेशीकृतवन्त । ठाणा० २८६ ।
चित–बद्धम् । ओघ० १८० ।
चिति–चयन चिति, इह प्रस्तावात् पत्रपुष्पाद्युपचय । उत्त० ३०६ । चिति भित्त्यादेश्चयन, मृतकदहनार्थं दारुविन्यासो वा । प्रश्न० ८ ।
चितीकया–चैत्यत्वेन स्थापिता । बृ० तृ० २६ आ ।
चित्तंग–चित्राङ्गा –पुष्पदायिन । सम० १८ ।
चित्तगओ–चित्राङ्गक –द्रुमगणविशेष । जीवा० २६७ ।
चित्तंगा–चित्रस्य–अनेकविधस्य विवक्षाप्राधान्यान्माल्यस्य कारणत्वाच्चित्राङ्गा । ठाणा० ३४८, ५१७ । चित्रस्य अनेकप्रकारस्य विवक्षाप्राधान्यान्माल्यस्य अङ्ग–कारण तत्सम्पादकत्वाद् वृक्षा अपि चित्राङ्गा । ज० प्र० १०४ । आव० १११ ।
चित्तंतरलेसागा–चित्रमन्तर लेश्या च प्रकाशरूपा येषा ते चित्रान्तरलेश्याका । सूर्य० २८१ । जीवा० ३४१ ।
चित्तं–चित्र–अद्भुतम् । जीवा० १६४ । आश्चर्यभूतम् । जीवा० १७५ । आलेख । जीवा० १८६, २१४ । चित्र–नानारूपम् । जीवा० २०५ । इत्थीमादीरूव दट्ठु तदगावयवसरुवचिंतण चित्त । नि० चू० तृ० १ आ । किलिञ्जादिक वस्तु । अनुत्त० ५ । चैतन्यम् । सम० १८ । मनो विज्ञान च । अनु० ३६ । भावमन । औप० ६० । चित्र–अनेकरूपवत् आश्चर्यवद्वा । सूर्य० २६३ । एगतरवण्णुज्जल । नि० चू० प्र० २५३ अ । चित्र–श्रीदामराजस्यालङ्कारिविशेष । विपा० ७० । चित्रकूट–पर्वतविशेष. । प्रश्न० ६६ । शङ्खराजभागिनेय । आव० २१४ । नानारूप आश्चर्यवान् वा । जीवा० २०६ । पर्वतविशेप । ज० प्र० ३५४ । वाराणस्या ब्रह्मदत्तजीवसभूतचण्डालज्येष्ठभ्राता । उत्त० ३७६ । चित्र–कर्बुर । उत्त० ३०५ । प्रदेशीराज्ञो मन्त्रि । निरय० ६,१५,४० । चित्र–अनेकविध । ठाणा० ५१७ । चित्र –ब्रह्मदत्तराज्ञी।विद्युन्मालाविद्युन्मतीपिता । उत्त० ३७६ । चित्त–सामान्योपयोगरूपम् । भग० ८६ । प्रदेशीराज्ञ सारथिनाम । राज० ११५ । चित्त–त्रिकालविषय-ओघतोऽतीतानागतवर्तमानग्राहि । दश० १२५ । चित्र–आलेख । ज० प्र० ३२ । ठाणा० १६७ । चेतयति येन तच्चित्त–ज्ञानम् । आचा० ६६ । चित्रकूटपर्वत । भग० ६५४ ।
चित्तउत्ते– । सम० १५४ ।
चित्तए–चित्रक । प्रज्ञा० २५४ ।
चित्तकम्मे–चित्रकर्म्म–चित्रलिखित रूपकम् । अनु० १२ ।
चित्तकणगा–द्वितीया विद्युत्कुमारीमहत्तरिकाया नाम । ठाणा० १६८ । चित्रकनका । ज० प्र० ३६१ । विदिग्रुचकवास्तव्याविद्युत्कुमारीस्वामिनी । आव० १२२ ।
चित्तकम्माणि–चित्रकर्माणि । आचा० ४१४ ।
चित्तकरसेणी–चित्रकरश्रेणि । आव० ५५८ ।
चित्तकारे–चित्रकार.–शिल्पभेद । अनु० १४६ ।
चित्तकूड–चित्रकूट–पर्वतविशेप । आव० ८२७ । चित्र-

कूटपर्वत । ज० प्र० ३०८, ३५४ । ठाणा० ८० । सीतामहानद्य उत्तरे द्वितीयो वक्षस्कारपर्वत । ठाणा० ३२६ । चीत्रकूटम् । ज० प्र० ३४४ । पर्वतनाम । ठाणा० ७४, १२६ । गिरिविशेष । ज० प्र० १६८ । भग० ३०७ । विजयविभागकारिण पर्वतविशेष । प्रश्न० ९६ ।

चित्तगरसेणी–चित्रकृच्छ्रेणि । आव० ६४ ।

चित्तगा–सनखपदचतुष्पदविशेषा । प्रज्ञा० ४५ । चित्रका – सनखपदचतुष्पदविशेषा, आरण्यजीवविशेषा । जीवा० ३८ ।

चित्तगुत्ता–चित्रगुप्ता–दक्षिणरुचकवास्तव्या दिक्कुमारी । आव० १२२ । दक्षिणरुचकवास्तव्या सप्तमी दिक्कुमारी-महत्तरिका । ज० प्र० ३९१ । भग० ५०३ । ठाणा० २०४ ।

चि[illegible]रगं–चित्रगृहक–चित्रप्रधान गृहकम् । जीवा० २०० ।

चित्तघरगा–चित्रप्रधानानि गृहकाणि । ज० प्र० ४५ ।

चित्तजीवो–चित्तमतो । दश० चू० ६० ।

चित्तनिवाई–चित्त–आचार्याभिप्रायस्तेन निपतितु–क्रिया-या प्रवर्त्तितु शीलमस्येति चित्तनिपाती । आचा० २१५ ।

चित्तपक्खा–चतुरिन्द्रियजीवविशेषा । जीवा० ३२ । प्रज्ञा० ४२ । ठाणा० १९७ ।

चित्तपडय–चित्रपटकम् । आव० ६७७ ।

चित्तपत्तए–चतुरिन्द्रियजीवभेद । उत्त० ६९६ ।

चित्तप्पहार– । ज्ञाता० २३० ।

चित्तफलयं–चित्रफलकम् । आव० १९९ ।

चित्तभित्ति–चित्रभित्ति–चित्रगता स्त्री । दश० २३७ ।

चित्तमत–चित्तमात्रा–स्तोकचित्तेरयर्थं । दश० १३८ । चित्तवान्–आत्मवान् । दश० १४० ।

चित्तरक्खट्ठा–चित्तरक्षार्थं–मनोऽन्यथाभावनिवारणार्थं दाक्षिण्याद्युपेत । पिण्ड० ४६ ।

चित्तरसा–चित्रो–मधुरादिभेदभिन्नत्वेनानेकप्रकार आस्वादयितॄणामाश्चर्यकारी वा रसो ये ते । ज० प्र० १०४ । चित्रा–विविधा मनोज्ञा रसा–मधुरादयो येभ्यस्ते चित्तरसा भोजनाङ्गा इति भाव । ठाणा० ५१७ । भोजनदायिन । सम० १८ । आव० १११ । चित्रा–विचित्रा-रसा मधुरादयो मनोहारिणो येभ्य सकाशात् सम्पद्यन्ते ते चित्ररसा । ठाणा० ३९९ । चित्ररस–द्रुमगणविशेष । जीवा० २६८ ।

चित्तलग–चित्तलाङ्गा–कर्बुरावयवा । भग० ३०८ ।

चित्तलगा–सनखपदश्चतुष्पदविशेषा । आरण्यजीवविशेषा । जीवा० ३८ ।

चित्तलया–विविधवर्णवस्त्राणि । ग० ।

चित्तलिणो–मुकुली–अहिभेदविशेष । प्रज्ञा० ४६ ।

चित्तविचित्त–चित्रविचित्र–मनोहारिचित्रोपेतम् । जीवा० १९२ । एगतरेण वा णणण्णउज्जलो विचित्तो दोहिं वण्णेहिं चित्तविचित्तो । नि० चू० प्र० २२९ अ ।

चित्तविब्भम–चित्तविलुप्ति । ओघ० २११ ।

चित्तविलुत्तो–चित्तविलुप्ति–चित्तविभ्रम । ओघ० २११ ।

चित्तसंभूइ–चित्रसभूति –उत्तराध्ययनेषु त्रयोदशमध्ययनम् । उत्त० ९ ।

चित्तसंभूयं–उत्तराध्ययनेषु त्रयोदशमध्ययनम् । सम० ६४ ।

चित्तसभा–चित्रसभा–चित्रकर्मवन्मण्डप । प्रश्न० ८ । आव० ६३ ।

चित्तसालं–चित्रशालम् । जीवा० २६९ ।

चित्तसालयघर–चित्रशालगृह–चित्रकर्मवद्गृहम् । ज० प्र० १०६ ।

चित्तसेणओ–चित्रसेनक –ब्रह्मदत्तपत्न्या भद्राया पिता । उत्त० ३७९ ।

चित्तसुद्धे–चैत्रशुक्ल । ज्ञाता० १५४ ।

चित्ता–नानारूपा आश्चर्यवन्तो वा । ज० प्र० ५४ । चित्रा–विदिग्रुचकवास्तव्याविद्युतकुमार्यं स्वामिनी । आव० १२२ । मुसिता । नि० चू० तृ० ४० आ । चित्रा–चित्रवन्त आश्चर्यवन्तो वा । सम० १३९ । भग० ५०५ । चित्रा–द्वादश नक्षत्रम् । ठाणा० ७७ । सूर्यं० १३० । प्रथमा विद्युत्कुमारीमहत्तरिका । ठाणा० १९८, २०४ । चित्रा । ज० प्र० ३९१ । कर्बुरा । ज्ञाता० १३९ ।

चित्ताचिल्लडय–आरण्यो जीवविशेष । आचा० ३३८ ।

चित्ताणुय–चित्तानुग –चित्त–हृदय प्रेरकस्यानुगच्छति–अनुवर्त्तयतीति । उत्त० ४९ ।

चित्तानुशय–मन प्रद्वेष । उत्त० ३६८ ।
चित्तामूलं–चित्रमूलम् । प्रज्ञा० ३६४ ।
चित्तारा–शिल्पार्यभेद । प्रज्ञा० ५६ ।
चित्तावरक्खा–चित्तावरक्षा । आव० २२१ ।
चित्रक–एकवर्ण । नि० चू० प्र० २२९ आ ।
चित्रक्षुल्लक–लब्धकामार्थे दृष्टान्त । आचा० २०१ ।
चित्रा–त्वाष्ट्रीत्यपरनाम । जं० प्र० ४९९ ।
चिद्ध–चिह्न–पिशाचकेतु । ज्ञाता० १३८ ।
चिन्न–चीर्णम् । सूर्य० २१ ।
चिपिड–चिपटा–निम्ना । ज्ञाता० १३८ ।
चिप्पिउं–चिप्पित्वा–कुट्टयित्वा । बृ० द्वि० २०३ अ ।
चिप्पित–कुट्टिया । नि० चू० तृ० ६३ आ ।
चिय–चित–उत्तरोत्तरस्थितिषु प्रदेशहान्या रसवृद्ध्याऽव-स्थापित । प्रज्ञा० ४५९ । चित–शरीरे चय गत । भग० ७४ । चित–धान्येन व्याप्त । अनु० २२३ ।
चियगा–चिति । प्रश्न० ५२ । चितिका । आव० ६७५ ।
चियट्ठाण–चिनस्थानम् । आव० ५६० ।
चियत्त–लक्षणोपेततया सयत । भग० ९२४ । त्यक्त, प्रीतिविपयो वा । भग० ८९८ । सयमोपकारकोऽयमिति प्रीत्या मलिनादावप्रीत्यकरण वा । ठाणा० १४९ । प्रीतिकर, नाप्रीतिकर । राज० १२३ । नाप्रीतिकर । ज्ञाता० १०९ । औप० १०० । आव० ७९३ । प्रीति-कर त्यक्त वा दोपै । औप० ३८ । लोकाना प्रीति-कर, नाप्रीतिकर । भग० १३५ । त्यक्त । भग० १३६ । सयमीना समत उपधि–रजोहरणादिक । ठाणा० १४९ ।
चियत्तकिच्च–प्रीतिकृत्य वैयावृत्यादि । ठाणा० २०० । त्यक्तकृत्य–परित्यक्तसकलसयमव्यापार । बृ० प्र० २७७ आ ।
चियलोहिए–चित–उपचयप्राप्त लोहित–शोणितमस्येति चितलोहित । उत्त० २७५ ।
चियाए–त्याग । अशनादे साधुभ्यो दान त्याग । ठाणा० २३४ । त्यजन त्याग–सविग्नैकसाम्भोगिकाना भक्ता-दिदानम् । ठाणा० २९७ । त्यागो–दानधर्म्म इति । ठाणा० ४७४ । त्याग–यतिजनोचितदानम् । ज्ञाता० १२३ ।
चियाग–त्याग–सयतेभ्यो वस्त्रादिदानम् । आव० ६४६ ।
चिरं–वारिसितो । नि० चू० तृ० ६५ अ ।
चिरंतणं–चिरन्तन–आचार्यपरम्परागतम् । बृ० द्वि० २४१ आ ।
चिरट्ठितीए–चिरस्थितिक । भग० १३२ ।
चिरपरिचिअ–चिरपरिचित–सहवासादिना स पूर्वो य । उत्त० ३२२ ।
चिरपव्वइओ–चिरप्रव्रजित । बृ० प्र० ६२ अ ।
चिरपोराण–चिरपुराण–चिरप्रतिष्ठितत्त्वेन पुराणम् । भग० २०० ।
चिरराय–चिररात्र–प्रभूतकाल यावज्जीवमित्यर्थ । आचा० २४५ ।
चिरससट्ठ–चिर–प्रभूतकाल मसृष्ट–स्वस्वाम्यादिसम्बन्धेन सम्बद्धो य । उत्त० ३२२ ।
चिराणओ–चिरन्तन । आव० ४२१ ।
चिराणय–चिरन्तनम् ।
चिराणो–चिरन्तन । नि० चू० तृ० ३३ अ ।
चिराति– । ज्ञाता० ११८ ।
चिरिक्का–छटा । नि० चू० तृ० ४४ आ । छटा । उत्त० ११६ ।
चिरुएहिं–वृकै । बृ० ११८ आ ।
चिर्पित–नपुसकभेद । उत्त० ६८३ ।
चिर्भटिका–त्रपुषी । नदी० १४९ ।
चिलाइपुत्त–उपशमादिपदत्रयीवान् । मर० । उपशमविवे-कसवरपदत्रयवान् । भक्त० ।
चिलाइया–चिलाता–धनसार्थवाहदासी । आव० ३७० ।
चिलाती–अनार्यदेशोत्पन्ना । ज्ञाता० ४१ ।
चिलाए–चिलात–मूलगुणप्रत्याख्याने कोटीवर्षे नगरे म्ले-च्छाधिपति । आव० ७१५ । धनसार्थवाहस्य दासचेट । ज्ञाता० २३५ ।
चिलातपुत्र–मुनिविशेष । आचा० २९४ । सूत्र० १७२ ।
चिलातिपुत्तो–कीटिकाभक्षितो मुनि । स० ।
चिलातीपुत्र–रागे दृष्टान्तविशेष । व्य० प्र० १२ अ । नदीपर्यायस्वरूपनिरूपणे दृष्टान्त । उत्त० ५६५ । नदी०

१६६। भूतभावनाया यस्य दृष्टान्त । आव ५९५।
चिलातो–किरात । आव० १५०।
चिलाय–म्लेच्छविशेष । प्रज्ञा० ५५।
चिलायगो–चिलातक –धनसार्थवाहदासीचिलाताया पुत्र । आव० ३७०।
चिलायपुत्त–चिलातीपुत्र –त्यक्तदेहे दृष्टान्त । व्य० द्वि० ४३२ आ।
चिलायविसय–चिलातविषय –म्लेच्छदेश । प्रश्न० १४।
चिलाया–म्लेच्छविशेषा । प्रज्ञा० ५५।
चिलिचिल्ल–चिलीचिविल (ल्ल) चिलीन । प्रश्न० ४९।
चिलिणे–चिलीन–अशुचिकम् । ओघ० ८१।
चिलिमिणिपणगं–पोते वाले रज्जु कडग डडमती । नि० चू० प्र० १८० आ।
चिलिमिणी–यवनिका । ओघ० ४३, ८२।
चिलिमिलि–चिलिमिलि । आव० ७५६। जवनिका सा दवरकमयी इतरा वा दृष्टव्या । व्य० द्वि० २९९ अ।
चिलिमिलिणी–जवनिका । ओघ० ७५।
चिलिमिली–चिलिमिलि । ओघ० १६। यमनिका । आचा० ३७०।
चिलिमिलीए–यवनिकाव्यवधान कृत्वा । ओघ० ४३।
चिलिमिलीपणग–वालवल्ककटसूत्रदण्डमय्य चिलिमिल्य पञ्च । बृ० द्वि० २५३ अ।
चिलीए–चिलिमिलिका । बृ० द्वि० १८१ अ।
चिलोपामल–अशुच्यादि । उप० मा० गा० ३२९।
चिल्लग–शिशु । आव० ६७०। लीन दीप्यमान वा । प्रश्न० ७१।
चिल्लणा–श्रेणिकनृपस्य पट्टराणी । बृ० प्र० ३१ अ।
चिल्लल–आरण्यक पशुविशेष । जीवा० २८२। चित्तल –नाखरविशेष । चित्रल –हरिणाकृतिर्द्विखुरविशेष । प्रश्न० ७०। चिल्लल–चिक्खिल्लमिश्र । ज्ञाता० ६७। चिक्खलमिश्रोदको जलस्थानविशेष । भग० २३८। म्लेच्छविशेष । प्रज्ञा० ५५।
चिल्ललए–चिल्लक । आरण्यपशुविशेष । प्रज्ञा० २५४।
चिल्लालएसु–छिल्लराणि–अखाता स्तोकजलाश्रयभूता भूप्रदेशा गिरिप्रदेशा वा । प्रज्ञा० ७२।
चिल्ललग–देदीप्यमान् । राज० ४९। प्रज्ञा० ९६। दीप्यमानम् । ज्ञाता० २१९। सनखपदश्चतुष्पदविशेषा । प्रज्ञा० ४५। आरण्यजीवविशेष । ज्ञाता० ७०।
चिल्लिआ–दिप्यमाना (देशी) ज० प्र० १०२।
चिल्लिका–लीना –दीप्यमाना वा । प्रश्न० ७७।
चिल्लिय–दीप्यमानम् । भग० ५४०। सूर्य० २९३। लीन दीप्त वा । औप० ५१।
चिल्लिया–दीप्यमाना । जीवा० २६७। दीप्यमाना लीना वा । भग० ४७८। औप० ६८। भग० ८०२।
चिल्ली–हरितभेद । आचा० ५७।
चिल्लोद्र–हट्टद्रव्यम् । नि० चू० प्र० ११६ आ।
चिवड–चिपटा–निम्ना । ज्ञाता० १३८।
चिहुर–केश । व्य० द्वि० १२५ आ।
चीड–जूवय । नि० चू० तृ० १९ अ।
चीडा–कुन्दुरुक्क । सम० १३८। प्रज्ञा० ८७।
चीणसुए–कोशीर चीनविषये वा यद् भवति । ठाणा० ३३८।
चीणसुय–सुहुमतर चीणसुय भण्णति, चीणविसए वा ज त चीणसुय । नि० चू० प्र० २५५ अ। चीनाशुकम् । भग० ४६०।
चीणंसुयाणि–चीनाशुकादीनि । आचा० ३९३।
चीण–चीन –चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेष । प्रश्न० १४। चीन –ह्रस्व । ज्ञाता० १३८।
चीणअंसुअ–वल्कस्य यान्यस्यन्तरहीरिभिर्निष्पाद्यन्ते सूक्ष्मान्तराणि भवन्ति तानि चीनाशुकानि । ज० प्र० १०७।
चीणपिट्ठ–सिन्दूरम् । दश० ४७। चीनपिष्ट–सिन्दूरम् । ज० प्र० ३४।
चीणापिट्ठ–चीनपिष्टम् । प्रज्ञा० ३६१।
चीत्कार–घोष –ध्वनिविशेष । ज० प्र० २१२।
चीनपट्ट–चीनाशुकम् । नदी० १०२।
चीनपिट्ठराशि– । जीवा० १९१।
चीनांशुक–वस्त्रनामविशेष । प्रज्ञा० ३०७। चीनदेशोद्भव अकुशम् । दश० ९१। चीनदेशोत्पन्नपतङ्गकीटजम् । अनु० ३५। दुकूलविशेषरूपम् । जीवा० २६९।

चीनांशुकादि–विकलेन्द्रियनिष्पन्नम् । आचा० ३९२ ।

चीनांसुए–कोशिकार तद्वस्त्र चीनदेशोद्भव वा आङ्गमिकम् । बृ० द्वि० २०१ आ ।

चीयइ–चीयते–चयमुपगच्छति । जीवा० ३०६, ३२२, ४०० ।

चीरं–वस्त्रम् । ओघ० ५३ । चीरमास्तीर्य । ओघ० ५३ । घण । नि० चू० प्र० २२७ आ ।

चीराजिण–चीराणि च–चीवराणि अजिन च–मृगादिचर्म चीराजिनम् । उत्त० २५० ।

चीरिए–चीरिक –रथ्यापतितचीवरपरिधान चीरोपकरण इति । ज्ञाता० १९५ ।

चीरिका–स्फोटक । आव० ६८० ।

चीरिग–रथ्यापतितचीरपरिधानाश्चीरिका, येपा चीरमयमेव सर्वमुपकरण ते चीरिका । अनु० २५ ।

चीरिय–चीरिक –मतविशेप । आव० ८५६ ।

चीवराणि–सङ्घाट्यादिवस्त्राणि । उत्त० ४९३ ।

चुंवण–चुम्बन–चुम्बनविकल्प. सम्प्राप्तकामस्य अष्टमो भेद । दश० १९४ ।

चुंवनं–मुखेन चुम्बनम् । नि० चू० प्र० २५६ आ ।

चुआचुअसेणियापरिकम्मे–च्युताच्युतश्रेणिकापरिकर्म्म । सम० १२८ ।

चुए–च्यवेत्–भ्रश्येत् । त्यजेत् । सूत्र० ३४ । च्युत –निर्गत । ज० प्र० १५५ । च्युत–विनष्ट । आचा० १६ ।

चुओ–च्युत –आयात । ओघ० ५० ।

चुक्क–विस्मृतम् । बृ० तृ० १०२ आ । व्य० प्र० ५२ अ । मर० । भ्रष्ट । आव० ३५१ । उप० मा० गा० ४६२ । विस्मृत । नि० चू० प्र० २९६ अ ।

चुक्कइ–भ्रश्यति । आव० ३३०, ८३४ । नाशयति । विशे० १०६७ ।

चुक्कखलिता–अच्चत्थ खरटेति चुक्कखलिता ण वा अवराहपदछिद्दाणि गेण्हति सेय गुरुण कहेति पच्छते गुरवो मे खरिंटेति, अहवा अणाभोग चुक्कखलिता भण्णति । नि० चू० तृ० ९३ अ ।

चुक्किहिसि–भ्रश्यसि (देशी०) । आव० २९२, ५०९ ।

चुचूयआमे –चुचुकामेलको–स्तनमुखशेखरी । प्रश्न० ८४ ।

चुचूया–चुचुका –स्तनाग्रभागा । राज० ९५ ।

चुच्चुआ–चुञ्चुका –स्तनाग्रभागा । ज० प्र० ८१ ।

चुच्चुओ–चुञ्चुक –स्तनाग्रभाग । जीवा० २३४ ।

चुञ्चुय–चुञ्चुक –चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेप । प्रश्न० १४ ।

चुडण–जीर्यन्ते । ओघ० १३१ । वासमा वर्पाकालादर्वाग्प्यधावने वर्पासु जीर्णता भवति शाटो भवतीत्यर्थ । पिण्ड० १२ ।

चुडलि–प्रदीप्ततृणपूलिका । भग० ४६६ ।

चुडली–भूरेखा । नि० चू० तृ० ४० अ । उल्का–अग्रभागे ज्वलत्काष्ठम् । बृ० तृ० १३ आ । अलातम् । त०।

चुडलीए–चुडिलिका–सस्तारकभूमि । बृ० द्वि० १३० अ ।

चुडुलि–चुडली–ज्वलत्पूलिका । उत्त० ३३० । कृतिकर्मणि द्वात्रिंशत्तमो दोप । आव० ५४४ ।

चुडुली–उल्का । जीवा० २९ ।

चुडुलि–उल्कामिव पर्यन्ते गृहीत्वा रजोहरण भ्रमयन् वन्दते, कृतिकर्मणि द्वात्रिंशत्तमो दोप । आव० ५४४ ।

चुडुली–उल्का । आव० ५६६ ।

चुडुल्ली–उल्का । प्रज्ञा० २९ ।

चुण्ढी–अखातात्पोदकविदरिका । ज्ञाता० ३६ ।

चुण्ण–चौर्णं–अत्थवहुल महत्थ हेउनिवाओवसग्गभीर । वहुपायमवोच्छिन्न गमणयसुद्ध च चुण्णपय । दश० ८७ । मोदकादिखाद्यकचूरि । बृ० द्वि० १२९ अ । चूर्णम् । प्रश्न० ५९ । चूर्ण –गन्धद्रव्यसम्बन्धी । भग० २०० । चूर्णं–रज । आचा० ५९ । चूर्णपिण्ड –वशीकरणाद्यर्थं द्रव्यचूर्णादिवास । उत्पादनाया चतुर्दशो भेद । आचा० ३५१ । चूर्णो यवादीनाम् । आचा० ३६३ ।

चुण्णघणो–तदुलादी चुण्णो घणीक्कतो लोलीकृत इत्यर्थ । नि० चू० द्वि० १४१ अ ।

चुण्णचंगेरी–चूर्णचङ्गेरी । जीवा० २३४ ।

चुण्णजोए–द्रव्यचूर्णाना योग स्तम्भनादिकर्म्मकारी । ज्ञाता० १८८ ।

चुण्णपडलयं–चूर्णपटलकम् । जीवा० २३४ ।

चुण्णा–वसीकरणादिया चुण्णा । नि० चू० द्वि० १०२

अ ।
चुण्णिओ–चूर्णित –श्लक्ष्णीकृत । उत्त० ४६१ ।
चुण्णियभेदे–चूर्णिकाभेद –क्षिप्तपिष्टादिक । प० २६७ ।
चुण्णियभेय–चूर्णिकाभेद –तिलादिचूर्णवत् यो भेद । भग० २२४ ।
चुण्णियाभाग–चूर्णिकाभाग –भागभाग । ज० प्र० ४४२ । सूर्य० ५६, ११५ ।
चुण्णो–बदिरादियाण चुण्णो । नि० चू० तृ० २३ अ । चूर्ण –पटवासादिक । सूर्य० २९३ ।
चुन्न–चूर्ण–रज । प्रज्ञा० ३६ । सौभाग्यादिजनको द्रव्यक्षोद । पिण्ड० १२१ ।
चुन्नग–चूर्ण -ताम्बूलचूर्णो गन्धद्रव्यचूर्णो वा । भग० ५४८ ।
चुन्नजुत्ति– । ज्ञाता० ३८ ।
चुन्नय–सन्त्रस्तम् । विपा० ४७ ।
चुन्नवासा–चूर्णवर्ष –गन्धद्रव्यचूर्णवर्षणम् । भग० २०० ।
चुन्नवुट्ठी–चूर्णवृष्टि –गन्धद्रव्यवृष्टि । भग० १९९ ।
चुन्निय–चूर्णित–चणक इव पिष्टम् । प्रश्न० १३४ ।
चुन्निया–चूर्णयित्वा । भग० ६५४ ।
चुन्नो–गन्धद्रव्यक्षोदै चूर्ण । प्रश्न० १३७ ।
चुय–च्युत –जीवनादिक्रियाभ्यो भ्रष्ट । प्रश्न०१५५ । च्युत जीवनादिक्रियाभ्यो भ्रष्ट । मृत स्वत परतो वा । प्रश्न० १०८ । च्युत –मृत । भग० २९३ । कुतोऽप्यनाचारात् स्वपदात् पतित । ज्ञाता० ११८ ।
चुलकप्पसुय–एकमल्पग्रन्थमल्पार्थं च । नदी० २०४ ।
चुलणिसुए–चुलनीसुत –ब्रह्मदत्त कौरव्यगोत्र । जीवा० १२१ ।
चुलणीपिया–उपासकदशाना तृतीयमध्ययनम् । उपा० १ । वाणारसीनगर्यां गृहपतिनाम । उपा० ३१ ।
चुलनी–द्रुपदराजपत्नी, द्रौपदीमाता । प्रश्न० ८७ । ज्ञाता० २०७ । ब्रह्मराजस्य पट्टराज्ञी । उत्त० ३७६ ।
चुलसीश–चतुरशीत–चतुरशीत्यधिकम् । सूर्य० ८ ।
चुलसीय–चतुरशीतम् । सूर्य० ११ ।
चुलुक– । भग० ६६८ ।
चुल्ल–क्षुल्ल, क्षुद्र, लघु । ज० प्र० २८१ । महदपेक्षया लघु । ठाणा० ७० । चुल्लशब्दो देश्य क्षुल्लपर्यायस्तेन क्षुल्लो–महाहिमवदपेक्षाया लघु । ज० प्र० ६६ ।
चुल्लकवत्थु–वस्तुग्रन्थविच्छेदविशेष तदेव लघुतर चुल्लकवस्तु । नदी० २४१ ।
चुल्लणि– । सम० १५२ ।
चुल्लपिउ–चुल्लपिता–चुल्लवप्प, पितृव्य । दश० २१६ ।
चुल्लपिउए–लघुपिता–पितुर्लघुभ्रातेति । विपा० ५७ ।
चुल्लपिता–पित्तियओ । दश० चू० १०९ ।
चुल्लवप्प–पितृव्य । दश० २१६ ।
चुल्लमाउगा–लघुमाता । आव० ६७५ ।
चुल्लमाउया–लघुमाता–पितृलघुभ्रातृजाया, मातुलघुसपत्नी वा । विपा० ५७ । क्षुल्लमातृका–कोणिकराजपत्नी । अन्त० २५ । लघुमाता । ज्ञाता० ३० । अन्त० २५ । चुल्लजननी–लघुमाता । निरय० ४ ।
चुल्लसयए–उपासकदशाना पञ्चममध्ययम् । उपा० १ । आलभियानगर्या गृहपतिनाम । उपा० ३६ । महाशतकापेक्षया लघु शतक–चुल्लशतक । ठाणा० ५०९ ।
चुल्लहिमवतकूडे–क्षुल्लहिमवद्गिरिकुमारदेवकूटम् । ज० प्र० २९६ ।
चुल्लहिमवत–क्षुल्लकहिमवान् । आव० १२३ । क्षुल्लहिमवान् । आव० २९५ । चुल्लो–महदपेक्षया लघुर्हिमवान् क्षुल्लहिमवान् । ठाणा० ७० ।
चुल्लु–चुल्ली । पिण्ड० ८४ ।
चुल्ल्यादीनि–मानुषरन्धनानि । आचा० ४११ ।
चूअवण–चूतवनम् । आव० १८६ । आम्रवन वनखण्डनाम । ज० प्र० ३२० ।
चूए–चूत –आम्रवृक्ष । जीवा० २२ ।
चूचुय–चूचुक । जीवा० २७५ ।
चूचुसाए–चूचुसाक । उपा० ५ ।
चूडा–उक्तानुक्तार्थसङ्ग्राहिका । आचा० ३१८ । उद्योतसाधनम् । आचा० ६१ । सम० १३१ ।
चूडामणि–चूडामणि । ज० प्र० २१३ । परममङ्गलभूत आभरणविशेष । राज० १०४ । चूडामणि –शिरोऽलङ्काररत्नम् । उत्त० ४९० । मुकुटरत्नम् । प्रज्ञा० ८७ । मुकुटे रत्नविशेष । जीवा० १६१ । भूषणविधिविशेष ।

जीवा० २६९ । चूडामणिर्नाम सकलपार्थिवरत्नसर्वसारो देवेन्द्रमनुष्येन्द्रमूर्द्धकृतनिवासो निःशेषापमङ्गलाशान्तिरोगप्रमुखदोषापहारकारी प्रवरलक्षणोपेत परममङ्गलभूत आभरणविशेष । जीवा० २५३ ।

चूडोवनयणं–चूडोपनयन–शिरोमुण्डनम् । जीवा० २८१ ।

चूण्णं–वशीकारकद्रव्यसयोग । वृ० द्वि० १० आ ।

चूत–वृक्षविशेष । प्रज्ञा० ३० ।

चूतलता–लताविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

चूतवणं–चूतवन–आम्रवनम् । भग० ३६ । ठाणा० २३० ।

चूय–चूत–सहकारतरु, आम्रवृक्ष । भग० ३०६ । अम्रवृक्ष । उत्त० ६९२ ।

चूयणा– । भग० ८०२ ।

चूयफलं–चूतफल–फलविशेष. । सूर्य० १७३ ।

चूयवडिसए– । भग० १९४ ।

चूर्णभेदः–चूर्णनम् । ठाणा० ४७५ ।

चूर्णि–अर्थस्य पञ्चमो भेद । सम० १११ । भग० २ ।

चूलणी–चुलनी–ब्रह्मदत्तमाता । आव० १६१ ।

चूलणीपिय–चुलनीपितृनाम्ना गृहपति । ठाणा० ५०९ ।

चूला–सिहा । नि० चू० प्र० २२ आ । इह चूला शिखरमुच्यते, चूला इव चूला दृष्टिवादे परिकर्मसूत्रपूर्वानुयोगेऽनुक्तार्थसङ्ग्रहपरा ग्रन्थपद्धतय, श्रुतपर्व्वते चूला इव राजन्ते इति चूला इत्युक्ता । नदी० २४६ । उक्तशेषानुवादीनी चूडा । आचा० ६ ।

चूलामणि–चूडामणिर्नाम सकलनृपरत्नसारो नरामरेन्द्रमौलिस्थायी अमङ्गलामयप्रमुखदोषहृत् परममङ्गलभूत आभरणविशेष । ज० प्र० १०६ ।

चूलिअंगे–चूलिकाङ्ग–चतुरशीत्यालक्षै प्रयुतै । अनु० १०० ।

चूलिआ–चूलिका–चतुरशीत्या लक्षैश्चूलिकाङ्गै. । अनु० १०० । चूडा । दश० २६९ ।

चूलिआवत्थू–चूलावस्तुनि त्वचाराग्रवदिति । ठाणा० ४३४ ।

चूलिए–चूलिका । सूर्य० ९१ । भग० ८८८ ।

चूलिका–द्वादशाङ्गस्य पञ्चमो भेद । सम० ४१ । उक्तानुक्तार्थसङ्ग्रहात्मिका ग्रन्थपद्धति । नदी० २०६ ।

चूलितंगाति– । ठाणा० ८६ ।

चूति ति– । ठाणा० ८६ ।

चूलियंग–चतुरशितिर्नयुतशतसहस्राणि एक चूलिकाङ्गम् । जीवा० ३४५ । चूलिकाङ्ग । सूर्य० ९१ । भग० ८८८ ।

चूलिय–चूलिक –चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेष । प्रश्न० १४ ।

चूलिया–चूलिका–सर्वान्तिममध्ययन विमुक्त्यभिधानम् । सम० ७३ । दृष्टिवादस्य पञ्चमो भेद । सम० १२८ । चूलिका । भग० २७५ । कालमानविशेष । भग० २१० । चतुरशीतिश्चूलिकाङ्गशतसहस्राणि एका चूलिका । जीवा० ३४५ ।

चूलियागिहं–चूलिकागृह–समुद्गक । ज० प्र० ४८ ।

चेइअ–चैत्य–व्यन्तरायतनम् । सम० ११७ । चैत्या–चित्ताल्हादका । ज० प्र० १६३ । चैत्य–सन्निवेशविशेष । आव० १७१ ।

चेइअकडं–वृक्षस्याधो व्यन्तरादिस्थलकम् । आचा० ३८२ ।

चेइअथूभे–चैत्या–चित्ताल्हादका स्तूपाश्चैत्यस्तूपा । ज० प्र० १६३ ।

चेइए–चिते–लेप्यादिचयनस्य भाव कर्म वा चैत्यं, तच्च सञ्ज्ञाशब्दत्वाद्देवताप्रतिबिम्बे प्रसिद्ध, ततस्तदाश्रयभूत यद्देवताया गृह तदप्युपचाराच्चैत्यमुच्यते । ज० प्र० १४ । चयन चिति–इह प्रस्तावात् पत्रपुष्पाद्युपचय, तत्र साधुरित्यन्तत प्रज्ञादेराकृतिगणत्वात् स्वार्थिकेऽणि चैत्य उद्यानम् । उत्त० ३०९ । उद्यानम् । उत्त० ४७२ ।

चेइज्ज–चेतयेत्–कुर्यात् । आचा० ३६१ ।

चेइदुमं–चैत्यद्रुम–अशोकवृक्षम् । ।

चेइय–चैत्य–इष्टदेवताप्रतिमा । सूर्य० २६७ । देवतायतनम् । औप० २ । व्यन्तरायतनम् । विपा० ३३ । ज्ञाता० ३ । औप० ५ । इष्टदेवप्रतिमा । औप० ५८ । चैत्यम् । आव० २८७ । ज्ञातम् । दश० ९८ । चैत्यवृक्ष । प्रश्न० ६५ । जिनबिम्बानि । वृ० प्र० २६९ अ । प्रतिमालक्षणम् । आव० ७८७ । चितेर्लेप्यादि चयनस्य भाव । कर्म्म वेति चैत्य–सञ्ज्ञाशब्दत्वाद् देवबिम्ब, देवबिम्बाश्रयत्वात्तद्गृहमपि च । भग० ६ । इष्टदेवप्रतिमा । भग० ११५ । चिति–इष्टकादिचयस्तत्र साधु–योग्यः चित्य, स एव चैत्य–अधोबद्धपीठिके उपरिचोच्छ्रित–

पताक । उत्त० ३०६ । ढौकितम् । बृ० द्वि० २०० आ । चैत्य इष्टदेवतायतनम् । ज० प्र० १२३ । चैत्य-जिनायतनम् । व्य० प्र० २०३ आ । चैत्य-प्रतिमा । राज० १२१ ।

चेइयक्खभ-चैत्यस्तम्भ । सम० ६४ । चैत्यवत् पूज्य स्तम्भ चैत्यस्तम्भ । ज० प्र० ५३३ ।

चेइयघर-चैत्यगृहम् । ओघ० ३६ ।

चेइयथभो- । जीवा० २३१ ।

चेइयथूभो-चैत्यस्तूप । जीवा० २२८ ।

चेइयभत्ति-चैत्येषु भक्ति चैत्यभक्ति । आव० ५३५ ।

चेइयमहेसु- आचा० ३२८ ।

चेइयमहो-चैत्यमह -चैत्यसत्क उत्सव । जीवा० २८१ ।

चेइयरुक्खा-चैत्यवृक्षा -व्यन्तरदेवाना चैत्यवृक्षा तन्नगरेषु सुधर्मादिसभानामग्रतो मणिपीठिकानामुपरि सर्वरत्नमया छत्रचामरध्वजादिभिरलङ्कृता भवन्ति । सम० १४ । चैत्यवृक्षा -सुधर्मादिसभाना प्रतिद्वार पुरतो मुखमण्डप-प्रेक्षामण्डपचैत्यस्तूपचैत्यवृक्षमहाध्वजादिक्रमत श्रूयन्ते । ठाणा० ११७ । चैत्यवृक्षा-मणिपीठिकानामुपरिवर्त्तिन सर्वरत्नमया उपरिच्छत्रध्वजादिभिरलङ्कृता सुध-र्मादिसभानामग्रतो ये श्रूयन्ते त एत इति । ठाणा० ४४३ । बद्धपीठवृक्षा येषामध केवलान्युत्पन्नानीति । सम० १५६ । चैत्यवृक्ष । जीवा० २२८ ।

चेइयवदगो-चैत्यवन्दक । आव० ४२१ ।

चेइयाइ-चैत्यानि-भगवद्बिम्बानि । बृ० द्वि० १५५ आ । महान्ति कृतानि । आचा० ३६६ । भगवद्बिम्बानि जिन-भवनानि वा । बृ० द्वि० ४ अ ।

चेइयाणि-चैत्यानि-अर्हत्प्रतिमालक्षणानि । उपा० १३ ।

चेइस्सामो-चेतयिष्याम -सकल्पयिष्याम ,निर्वर्तयिष्याम । आचा० ३५०, ३६५ ।

चेए-चेतयते-जानाति, चेष्टते, करोति, अभिलषयतीति । ओघ० ११४ ।

चेएइ-चेतयते-अनुभवरूपतया विजानाति-वेदयति करोति वा । आव० २६६ । चेतयति-करोति । ज्ञाता० २०६ । ददाति । आचा० ३२५ । सावते ददाति । आचा० ३६१ ।

चेओ-चेत -चेतना, चैतन्य-विज्ञानम् । विशे० ८११ ।

चेच्च-व्यूत विशिष्ट वानमित्यर्थं । ज० प्र० ५५ ।

चेच्चा-त्यक्त्वा । उत्त० ४४८ ।

चेटक-मन्त्रसाधनोपाय शास्त्राणि । सम० ४६ । राज० १२१ ।

चेटककथा- । बृ० द्वि० ५१ आ ।

चेटिका-मन्त्राधिष्ठितदेवविशेष । प्रश्न० १०६ ।

चेट्ठा-चेष्टा । आव० ७७१ ।

चेट्ठिय-चेष्टित-सकाममङ्गप्रत्यङ्गावयवप्रदर्शनपुरस्सर प्रिय-स्य पुरतोऽवस्थानम् । सूर्य० २६४ । चेष्टन-सकाममङ्ग-प्रत्यङ्गोपदर्शनादि । जीवा० २७६ । हस्तन्यासादि । प्रश्न० १३६ ।

चेड-चेटा -पादमूलिका । राज० १४० । दारिक । आव० २१२ । चेटक -बालक । आव० ६३ । चेटा -पाद-मूलिका । भग० ३१८, ४६४ ।

चेडओ-चेटक -शिक्षायोगदृष्टान्ते हैहयकुलसम्भूतो वैशा-लिक । आव० ६७६ ।

चेडग-चेटक -वैशाल्या राजा । भग० ३१६ । वैशालि-राज । भग० ५५६ । बालक । नदी० १५७ । वैशालि-नगरे राजा । व्य० द्वि० ४२६ अ । वैशालानगर्या राजा । निरय० ८ ।

चेडगधूया-चेटकदुहिता । आव० २२३ ।

चेडयकारिणो-वस्थसोहगा । नि० द्वि० ४३ चू० आ ।

चेडरूवं-चेटकरूप । दश० ६७ । ओघ० १६३ । आव० २०५ । पुत्र । आव० ३५४ ।

चेडा-चेटा -पादमूलिका , दासा वा । ज० प्र० १६० । चेटा -पादमूलिका । औप० १४ ।

चेडि-चेटी । आव० ३५७ ।

चेडी-चेटी-राजकन्या । आव० १७४ । दासी, प्रत्याख्यान-विधौ उदाहरण । आव० ६६ । ओघ० १६३ ।

चेडो-चेट । आव० ६५ । पुत्र । आव० ८२४ ।

चेत - । भग० ७०१ ।

चेतना-चेत -चैतन्य, विज्ञानम् । विशे० ८११ ।

चेतित-चैत्य जिनादिप्रतिमेव चैत्य, श्रमणम् । ठाणा० १११ । देवकुलम् । नि० चू० प्र० २६६ अ ।

चेतितथूभा-चैत्यस्य-सिद्धायतनस्य प्रत्यासन्ना स्तूपा-

प्रतीताश्चैत्यस्तूपाश्चित्ताल्हादकत्वाद्वा चैत्या स्तूपा चैत्यस्तूपा । ठाणा० २३० ।
चेतियं–चैत्य–प्रतिमा । प्रश्न० ८,१६१ । सामान्येन प्रतिमा । ज्ञाता० ४६ ।
चेतियघर–चैत्यगृहम् । आव० ३५५ ।
चेतेमाणे–चेतयन्त –कुर्वन्त । ठाणा० ३१४ ।
चेत्तो–वसभेओ । नि० चू० प्र० २२८ आ ।
चेदी–जनपदविशेष । प्रज्ञा० ५५ ।
चेयकड–चेत.-चैतन्य जीवस्वरूपभूता चेतनेत्यर्थ ते कृतानिबद्धानि चेत कृतानि । भग० ७०१ ।
चेयण–चेतन चेतना–प्रत्यक्षवर्तमानार्थग्राहिणी चेतना । दश० १२५ ।
चेर–चरण । नि० चू० प्र० १ अ ।
चेरो–पव्वावितो । नि० चू० द्वि० २८ अ ।
चेल–वस्त्रम् । प्रज्ञा० ३५६ । चेल–वस्त्रम् । दश० १५४ । वस्त्राणि । सम० ४१ । वासासि । ठाणा० ३४३ ।
चेलकण्ण–चेलकर्ण –वस्त्रैकदेश । दश० १५४ । द्रव्यशस्त्रविशेष । आचा० ७५ ।
चेलगोल–वस्त्रात्मक कन्दुकम् । सूत्र० ११८ ।
चेलणा–श्रेणिकराज्ञी । ज्ञाता० २४७ ।
चेलपेडा–वस्त्रमञ्जूषा । ज्ञाता० १४ । भग० ६६४ ।
चेलमयं– । नि० चू० द्वि० १ आ ।
चेलवासिणो–वल्कलवासस । भग० ५१९ । औप० ९१ ।
चेला–चेटिका । औप० ७७ ।
चेलुक्खेवो–चेलोत्क्षेपक –ध्वजोच्छ्राय । ज० प्र० ४१९ ।
चेलेण– । आचा० ३७९ ।
चेल्लए–कलभ । आव० ६८२ । शिष्य । दश० ३७ ।
चेल्लओ–क्षुल्लक । आव० ३६७, ४१९ । दश० ८६ । क्षुल्लक –शिष्य । आव० ४१२, ४३७, ४८४ ।
चेल्लग–चेल्लक । ओघ० ६४ । नि० चू० प्र० १५ अ । क्षुल्लक । उत्त० १०० ।
चेल्लणा–चेल्लना–श्रेणिकराजपत्नी । आव० ६५ । शिक्षायोगदृष्टान्ते हैहयकुलसभूतवैशालिकचेटकसप्तमी पुत्री । आव० ६७६ । विशे० ६११ । कूणिकजननी । निरय० ४ ।
चेल्ललकं–देदीप्यमानम् । जीवा० १७३ ।
चेव–यथार्थं । प्रश्न० १३४ । चैवेत्यखण्डमव्यय समुच्चयार्थं, अपिचेत्यादिवत् । ज० प्र० ७० ।
चेष्टा–ईहा । दश० १२५ ।
चैतन्य–चेत –चेतना, विज्ञानम् । विशे० ८११ ।
चैत्यवन्दन–प्रतिमावन्दनम् । नदी० १५७ ।
चैत्यविनाशो–लोकत्तमभवनप्रतिमाविनाश । बृ० ६० आ ।
चोवालय–माल । दश० ६८ ।
चोअ–गन्धद्रव्यम् । ज० प्र० ३५, १०० । त्वग्नामक गन्धद्रव्यम् । ज० प्र० ६० ।
चोअअ–चोयआ–फलविशेष । अनु० १५४ ।
चोइअ–चोदित–विद्ध । दश० २५० ।
चोइओ–चोदित –स्खलनायाम् । आव० ७६३ ।
चोओ–गन्धद्रव्यम् । प्रज्ञा० ३६५ ।
चोक्ख–चोक्ष–स्वच्छम् । आव० ६३१ चोक्ष –लेपसिक्थाद्यपनयनेनात एव परमशुचिभूत । भग० १६४ अहिंसाया चतुष्पञ्चाशत्तम नाम । प्रश्न० ९९ ।
चोक्खा– । प्रश्न० ९९ ।
चोक्षा.–पिशाचभेदविशेष । प्रज्ञा० ७० ।
चोज्जपसंगी–चौर्यप्रसक्त –आश्चर्येषु कुहेटकेषु प्रसक्त इत्यर्थ । ज्ञाता० २३८ ।
चोज्जाभिसंकी– । ज्ञाता० २३६ ।
चोदना–प्रोत्साहकरणम् । व्य० प्र० २० आ ।
चोद्दधिज्जाइय– । बृ० प्र० २४८ अ ।
चोद्दहजण–तरुणलोक । ज्ञाता० २१९ ।
चोप्पड–स्नेह । ओघ० १४५ ।
चोप्पालगो–चोप्पालको नाम प्रहरणकोश । जीवा० २५७ ।
चोप्पाले–प्रहरणकोश । भग० १७२ । प्रहरणकोश –प्रहरणस्थानम् । राज० ९३ ।
चोप्फाल–चोप्फाल नाम मत्तपारणम् । ज० प्र० १२१ ।
चोयं–ण्हारुणिभागाशे जे केसरा त चोय भण्णति । नि० चू० द्वि० १२४ आ । भिन्न चउभागादी तया चोयं भण्णति, नक्खादिभि अक्खु अवसालमित्यर्थ । नि० चू० द्वि० १२४ आ । वसहीरसठित्तो चोय भण्णति । नि०

चू० तृ० २३ अ। त्वक्। बृ० द्वि० १२६ अ। गन्धद्रव्यम्। जीवा० २६५, ३५१। त्वक्। प्रश्न० १६२। भग० ७१३।

चोयग–गन्धद्रव्यम्। जीवा० १६१।

चोयगसमुग्गय–चोयकसमुद्गकम्। जीवा० २३४।

चोयगो–पीलितेक्षुच्छोदिका। आचा० ३५४।

चोयना–स्खलितस्य पुन शिक्षण चोदना। व्य० द्वि० ७२ आ।

चोयपुड–त्वक्पुट पत्रादिमय तद्भाजनम्। ज्ञाता २३२।

चोयासव–चोयो–गन्धद्रव्य तत्सार आसवश्चोयासव। जीवा० ३५१। चोओ–गन्धद्रव्य तन्निष्पाद्य आसव चोयासव। प्रज्ञा० ३६४।

चोरकहा–चौरकथा–गृहीतोऽद्य चौर इत्थ च कदर्थित इत्यादिका। दश० ११४।

चोरग– । भग० ८०२।

चोरग्गाहो–चोरग्राह–आरक्षक। आव० ४३५। दश० ५२। उत्त० २१८।

चोरदन्त– । प्रज्ञा० ४७३।

चोरपलिकोट्ठ–कोलिन्दकोट्ठ। नि० चू० द्वि० १२८ अ।

चोरपल्लि–चौरपल्ली। आव० ३७०।

चोरपल्ली– । आव० ६६।

चोरवदपागड्डिको–चौरवृन्दप्रकर्षक–तत्प्रवर्त्तक। प्रश्न० ५०।

चोरसाहिए– । ज्ञाता० ४६।

चोरा– । भग० ८०२।

चोराय–चोराक नाम सन्निवेश। आव० २०६। चौरा। आव० २०२।

चोरिक्क–चोरण चोरिका सैव चौरिक्य, अधर्मद्वारस्य प्रथम नाम। प्रश्न० ४३।

चोरिय–चौर्यम्। आव० ३५४।

चोरी–चौरी। दश० ४१।

चोरोद्धरणिक–देसारक्खिओ। नि० चू० प्र० १६५ आ।

चोल–चोलपट्टक। ओघ० १११।

चोलक–बालचूडाकर्म, शिलाधारणमिति। प्रश्न० १४०।

चोलक– । विशे० ३५३।

चोलकादीनि सघातिमानि। आचा० ४१४।

चोलगं–चूडापनयन–बालकप्रथममुण्डनम्। प्रश्न० ३६।

चोलपट्टको–चोलपट्टक–परिधानवस्त्र। प्रश्न० १५६।

चोलपट्टागारो–चोलपट्टाकार। आव० ८५४।

चोला–चूडा–बालाना चूडाकर्म। आव० १२६।

चोलोयणग–चूडाधरणम्। भग० ५४४।

चोलोवणय–चूडापनयन–मुण्डनम्। ज्ञाता० ४१।

चोल्लए–भोजनम्। उत्त० १४५।

चोल्लक–मनुष्यभवदृष्टान्ते ब्राह्मणविशेष। आ० ३४१।

चोल्लकादि– । आचा० ३२५।

चोल्लग–परिपाटीभोजनम्। उत्त० १४५।

चोल्लग–चोल्लक–भोजनम्। पिण्ड० ११३। नि० चू० प्र० २६६ अ। भोजनम्। आ० ३४१।

चौद्दसम–चतुर्दश–उपवासषट्कम्। ज० प्र० १५८।

चौपग–चर। नि० चू० प्र० ३२६ अ।

चौर्णं–बाहुलकविधिबहुल, गमपाठबहुल, निपातबहुल, निपाताव्ययबहुल ब्रह्मचर्याध्ययनवत्। ज० प्र० २५६।

च्युताच्युतश्रेणिक– । नदी० २३६।

छ

छटेउ–छण्टयति। आव० ८००।

छन्द–छन्द–गुर्वभिप्राय। आव० १००। अभिप्राय। दश० १७१। स्वाभिप्राय। आचा० ७८। अभिप्रायोबोध। भग० ५०२। अभिप्पाओ। नि० चू० प्र० २१७ आ। आयारो। नि० चू० प्र० ३४ अ। गम्यागम्यविभाग। गणा० २१०। देशछन्द–देशेष्ट, गम्यागम्यादिविचार, देशकथाया प्रथमभेद। आव० ५८१। प्रार्थनाऽभिलाष, इन्द्रियाणा स्वविषयाभिलाषो वा। सूत्र० १६१। तत्तद्वस्तुविषयाभिलाषात्मिका इच्छा वा। उत्त० २२३। पद्यवचनलक्षणशास्त्रम्। ओप० ६३। छन्द–पद्यवचनलक्षणनिरूपक। ज्ञाता० ११०। पद्यलक्षणशास्त्रम्। भग० ११२। छन्दन छन्द–परानुवृत्त्या-भोगाभिप्राय। आचा० १२७। छन्दात्–स्वकीयादभिप्रायविशेषात्। ठाणा ४७४।

छदए–छन्दयति–निमन्त्रयति। बृ० द्वि० २२८ आ।

छंदणा–छन्दना प्राग्गृहीतेनाशनादिना कार्या । ठाणा० ४९९ । आव० २५९ । पूर्वगृहीतेनाशनादिना गुर्वाज्ञया यथार्हाणा निमन्त्रण एषा ज्ञेया विशेषविषयेति छन्दना । ठाणा० ४९९ । छन्दना पूर्वगृहीतेन भक्तादिना । भग० ९२० । पूर्वानीताशनादिपरिभोगविषये साधूनामुत्साहना छन्दना । अनु० १०३ ।

छंदणिरोहे–छन्दो–वशस्तस्य निरोध छन्दोनिरोध –स्वच्छन्दतानिषेध । उत्त० २२२ । छन्दसा वा–गुर्वभिप्रायेण निरोध –आहारादिपरिहाररूप छन्दोनिरोध । उत्त० २२३ ।

छदतो–परिया । नि० चू० प्र० १२५ आ ।

छंदयति–आमन्त्रयति । ओघ० १४३ ।

छदा– । ठाणा० ४७३ ।

छदाणुवत्तणं–छदोऽनुवर्त्तन–अभिप्रायानुवृत्ति । सम० ९५ । ज्ञाता० ९२ ।

खदिअ–छन्दित्वा–निमन्त्र्य । दश० २६६ ।

छदिओ–णिमतितो । नि० चू० द्वि० ३२ अ । छन्दित –अनुज्ञात । ओघ० १३९ ।

छंदिता–णिमतिता । नि० चू० प्र० १५६ अ ।

छंदिया–निमतेऊण जति पडिग्गाहिता । दश० १४९ ।

छंदेणं–स्वाभिप्रायेण यथेष्टमित्यर्थ । भग० ६८४ । छदसा । वृ० प्र० ७७ आ । छन्देन–द्वादशावर्त्तवन्दने गुरुवाक्यमेतत् । ओघ० १३९ ।

छंदोगारण्णगादि– नि० चू० प्र० २४ आ ।

छंनंति–छिप्पति–क्षिप्यन्ते, हिंस्यन्ते । दश० २०४ ।

छउमं–छादयतीति छद्म–पिधानम्, ज्ञानादीना गुणानामावारकत्वात्–ज्ञानावरणादिलक्षण घातिकर्म । आव० ५८३ । छद्म–कर्म । आव० १३४ । शठत्व, आवरण वा । भग० ७ । छादयतीति छद्म–ज्ञानावरणादिकर्म । उत्त० १२९ । छादयतीति आवरयतीति छद्म–घातिकर्मचतुष्टयम् । जीवा० २५६ । छाद्यते येन तच्छद्म–ज्ञानावरणादिघातिकर्मचतुष्टयम् । ठाणा० ३०५ । छादयत्यात्मस्वरूप यत्तच्छद्म । ठाणा० ५३ । छद्म–शठत्वमावरण वा । सम० ४ । छद्म–ज्ञानदर्शनावरणीयमोहनीयान्तरात्मकम् । आचा० ३१५ । छादयन्तीति छद्म–घातिकर्मचतुष्टयम् । राज० ११० ।

छउमत्थ–छद्मस्थ –अवधिज्ञानरहित । भग० ६६ । छद्मस्थो–निरतिशयज्ञानयुक्त । औप० १०९ । विशिष्टावधिज्ञानविकल । प्रज्ञा० ३०३ । छद्मस्थ –छद्मनि स्थित छद्मस्थ –अनतिशयी । नि० चू० प्र० १५२ अ । छादयतीनि छद्म–ज्ञानावरणादि तत्र तिष्ठतीति छद्मस्थ । ठाणा० १७१ । अकेवली । ठाणा० ५३ । ज्ञानावरणादिघातिकर्म्मचतुष्टय तत्र तिष्ठतीति छद्मस्थ सकषाय इत्यर्थ । ठाणा० ३०५ । ज्ञानावरणादिघातिकर्म्मचतुष्टयं तत्र तिष्ठतीति छद्मस्थ –अनुत्पन्नकेवलज्ञानदर्शन । ठाणा० ४०४ । छद्मस्थ–इह निरतिशय एव द्रष्टव्य । ठाणा० ५०६ ।

छउमत्थमरण–छद्मस्थमरण–मरणस्यैकादशो भेद । उत्त० २३० । अकेवलिमरणम् । मरणस्यैकादशो भेद । सम० ३३ ।

छए–क्षत –परवशीकृत । सूत्र० ७२ ।

छकोडीए–षट्कोटीक । जीवा० २३१ ।

छक्कट्ठक–षट्काष्ठक–गृहस्थवाह्यालन्दक षट्दारुक, द्वारम् ज्ञाता० १४१ ।

छक्कमरयं–षट् कर्माणि यजनयाजनाध्ययनाध्यापनदानप्रतिग्रहात्मकानि तेषु रतौ–आसक्तौ षट्कर्मरतौ । उत्त० ५२१ ।

छक्कायविउरमणं–षट्कायाना विराधनम् । ओघ० १२७ ।

छक्कायविओरमणं–षट्कायव्युपरमणम् । ओघ० १२७ ।

छक्केहिंसमज्जिया–एकत्रसमये येषा बहुनि षट्कानि उत्पन्नानि ते षट्कं समर्जिता । भग० ७९७ ।

छक्कोडि–षट्कोटि शुद्ध नाम यत् स्वभावत षट्स्वपि दिक्षु शुद्धम् । वृ० प्र० ५८ अ ।

छग–पुरीषम् । ओघ० ४१ ।

छगणधम्मिय–छगणधार्मिक –गोमयोपलक्षितो धार्मिको दृष्टान्त । पिण्ड० ८२ ।

छगणियछारो–गोमयछारेण तत्पात्रक गुण्डयते । ओघ० १४४ ।

छगडिया–गोमयप्रतर । अनुत्त० ५ ।

छगमुत्ते–छगणमूत्रे–पुरीषप्रश्रवणे । वृ० द्वि० २१४ अ ।

छगल वलया–छगलकस्य पशोर्गल–ग्रीवा वलयन्ति–मोटयन्ति ये ते छगलकगलवलका । पिण्ड० ६८।
छगलपुर–सिंहगिरिराजधानी । विपा० ६५।
छगलय–छगलकम् । आव० २१२ ।
छगलीए– । विपा० ६५।
छज्जइ–राजते । जं० प्र० २०२।
छज्जीवकायसंजमु–षण्णा जीवनिकायाना पृथिव्यादिलक्षणाना संयम –सङ्घट्टनादिपरित्याग षड्जीवकायसंयम । आव० ४६२ ।
छज्जीवणिया –षड्जीवनिकाध्ययन, दशवैकालिके चतुर्थमध्ययनम् । दश० १२० ।
छट्ठं–षष्ठ–उपवासद्वयरूपम् । जं० प्र० १४५।
छट्ठण्णकालिओ–षष्ठान्नकालिका । आव० ३५२ ।
छट्ठभत्त–षष्ठभक्तम् । आव० ३५२ ।
छट्ठाण–पासत्थो उसण्णो कुसीलो ससत्तो अहाछंदोणिति तो य । नि० चू० प्र० २६१ अ ।
छट्ठोपक्खेण– । आचा० ४२१।
छडछड– । विपा० ७२।
छडाल–व्यालम् । पण्ह० २८–११६ ।
छड्डण–छर्दन वाताहिद्रव्यप्रयोगकृतम् । विपा० ८१ । परित्याग । ओघ० ४६ । छर्दनम् । ओघ० १५२ । छर्दन–वमनम् ऊर्द्ध्वादिदोष । ओघ० १३६ । वमनम् । ओघ० १६४ । उज्झन–क्षालनजलत्याग । दश० २०३ । परित्याग । ओघ० ४६ ।
छड्डणाइ–छर्दादय । ओघ० ४६ ।
छड्डणिका–छर्दने–परिष्ठापने । बृ० प्र० ८६ आ ।
छड्डन–प्रोज्झनम् । ओघ० १६२ ।
छड्डावण–छड्डावेति–त्याजयति । ओघ० १४६ ।
छड्डाविओ–त्याजित । आव० २१२ ।
छड्डिअ–छर्दित–गृहस्थैर्दत्तम् । अनु० २१६ ।
छड्डिय–परिशाटवत् । दशम एषणादोष । आचा० ३४५ । छर्दित भूमावाविष्ठित, दशम एषणादोष । पिण्ड० १४७ ।
छड्डी–छर्दी–व्याधिविशेष । आचा० ३६२ ।
छड्डे–त्यजति । आव० ६४६ ।
छड्डेऊण–त्यक्त्वा । आव० २२६ ।
छड्डे –छर्दि विदध्यात् । आचा० ३३० ।
छड्डेति–त्यजेत् । आव० ३६५ ।
छड्डेत्ता–त्यक्त्वा । आव० ३२४ ।
छण–जत्थ विसिट्ठ भत्तपाण उवसाहिज्जति । नि० चू० तृ० १४ आ । इन्द्रोत्सवादिलक्षण । भग० ४७३ । ऊसवो । नि० चू० द्वि० २०० आ । जत्थ एकतविसेसे कज्जति सो छणो । नि० चू० द्वि० १६२ अ । क्षण–इन्द्रमहादि । व्य० द्वि० ३४२ आ । ज्ञाता० ५६ । क्षण उत्सव । ओघ० ४६ । ज्ञाता० ६६ । क्षणन क्षण –हिंसनम् । आचा० १४८ । अवसर । आचा० १४८ । क्षण । आव० २२०, २७३, ६६२ । क्षण–बहुलोकभोजनदानादिरूप । ज्ञाता० ८१ ।
छणदिवस–क्षणदिवस –क्षणमात्रदिवस । आव० ६६२ ।
छणपए–क्षणपद –हिंसास्पदेन प्राण्युपमर्दजनित । आचा० १४७ ।
छणिए–छगलीविशेष । विपा० ६५ ।
छणूसवे–क्षण –प्रतिनियत कौमुदीशक्रमहादिक, उत्सव –पुनरनियतो नामकरणचूडाकरणपाणिग्रहणादिक, अथवा यत्र पक्वान्नविशेष क्रियते स क्षण, यत्र तु पक्वान्न विनाऽपरो भक्तविशेष स उत्सव । प्र० बृ० १०४ अ ।
छणुसविय–छणो ऊसवो छणूसवो तम्मि ज परिहिज्जति त छणूसवियं । नि० चू० द्वि० १६२ अ ।
छण्ण–अभ्यन्तरम् । ओघ० ६१ । प्रछन्नम् । ठाणा० ४८४ ।
छण्णकडए–छिन्नकटके । आव० ३५० ।
छण्णमंडवं–जस्स गामस्स णगरस्स वा उग्गहे सव्वासु दिसासु अण्णो गामो नत्थि गोकुल वा त छण्णमडव । नि० चू० प्र० ३४१ आ ।
छण्णालए–षण्नालकानि त्रिकाष्ठिका । औप० ६५ । छण्णालक –त्रिकाष्ठिका । ज्ञाता० १०५ ।
छत्तिपुत्तो–छातीसुत –दाढादाल । जीवा० १२१ ।
छत्तंतिय–छत्रवती । बृ० प्र० ५६ आ ।
छत्तंतिया–छत्रान्तिका । बृ० प्र० ६० आ ।
छत्त–छत्र–आचार्य । बृ० द्वि० १८४ आ । छादयतीति छत्र–वर्षाकल्पादि । आचा० ४०३ । छत्र–आतपत्रम् ।

छंदणा–छन्दना प्राग्गृहीतेनाशनादिना कार्या । ठाणा० ४६६ । आव० २५६ । पूर्वगृहीतेनाशनादिना गुर्वाज्ञया यथार्हाणा निमन्त्रण एषा ज्ञेया विशेषविषयेति छन्दना । ठाणा० ४६६ । छन्दना पूर्वगृहीतेन भक्तादिना । भग० ६२० । पूर्वानीताशनादिपरिभोगविषये साधूनामुत्साहना छन्दना । अनु० १०३ ।

छंदणिरोहे–छन्दो–वशस्तस्य निरोध छन्दोनिरोध –स्वच्छन्दतानिषेध । उत्त० २२२ । छन्दसा वा–गुर्वभिप्रायेण निरोध –आहारादिपरिहाररूप छन्दोनिरोध । उत्त० २२३ ।

छदतो–परिया । नि० चू० प्र० १२५ आ ।

छदयति–आमन्त्रयति । ओघ० १४३ ।

छदा– । ठाणा० ४७३ ।

छंदाणुवत्तण–छदोऽनुवर्त्तन–अभिप्रायानुवृत्ति । सम० ६५ । ज्ञाता० ६२ ।

खदिअ–छन्दित्वा–निमन्त्र्य । दश० २६६ ।

छदिओ–णिमतितो । नि० चू० द्वि० ३२ अ । छन्दित–अनुज्ञात । ओघ० १३६ ।

छंदिता–णिमतिता । नि० चू० प्र० १५६ अ ।

छंदिया–निमतेऊण जति पडिग्गाहिता । दश० १४६ ।

छंदेणं–स्वाभिप्रायेण यथेष्टमित्यर्थ । भग० ६८४ । छदसा । बृ० प्र० ७७ आ । छन्देन–द्वादशावर्त्तवन्दने गुरुवाक्यमेतत् । ओघ० १३६ ।

छंदोगारणगाद्दि– नि० चू० प्र० २४ आ ।

छंनंति–छिप्पति–क्षिप्यन्ते, हिंस्यन्ते । दश० २०४ ।

छउम–छादयतीति छद्म–पिधानम्, ज्ञानादीना गुणानामावारकत्वात्–ज्ञानावरणादिलक्षण घातिकर्म । आव० ५८३ । छद्म–कर्म । आव० १३४ । शठत्व, आवरण वा । भग० ७ । छादयतीति छद्म–ज्ञानावरणादिकर्म । उत्त० १२६ । छादयतीति आवरयतीति छद्म–घातिकर्मचतुष्टयम् । जीवा० २५६ । छाद्यते येन तच्छद्म–ज्ञानावरणादिघातिकर्मचतुष्टयम् । ठाणा० ३०५ । छादयत्यात्मस्वरूप यत्तच्छद्म । ठाणा० ५३ । छद्म–शठत्वमावरण वा । सम० ४ । छद्म–ज्ञानदर्शनावरणीयमोहनीयान्तरात्मकम् । आचा० ३१५ । छादयन्तीति छद्म–घातिकर्मचतुष्टयम् । राज० ११० ।

छउमत्थ–छद्मस्थ –अवधिज्ञानरहित । भग० ६६ । छद्मस्थो–निरतिशयज्ञानयुक्त । औप० १०६ । विशिष्टावधिज्ञानविकल । प्रज्ञा० ३०३ । छद्मस्थ–छद्मनि स्थित छद्मस्थ –अनतिशयी । नि० चू० प्र० १५२ अ । छादयतीति छद्म–ज्ञानावरणादि तत्र तिष्ठतीति छद्मस्थ । ठाणा० १७१ । अकेवली । ठाणा० ५३ । ज्ञानावरणादिघातिकर्म्मचतुष्टय तत्र तिष्ठतीति छद्मस्थ सकषाय इत्यर्थ । ठाणा० ३०५ । ज्ञानावरणादिघातिकर्म्मचतुष्टयं तत्र तिष्ठतीति छद्मस्थ –अनुत्पन्नकेवलज्ञानदर्शन । ठाणा० ४०४ । छद्मस्थ–इह निरतिशय एव दृष्टव्य । ठाणा० ५०६ ।

छउमत्थमरण–छद्मस्थमरण–मरणस्यैकादशो भेद । उत्त० २३० । अकेवलिमरणम् । मरणस्यैकादशो भेद । सम० ३३ ।

छए–क्षत –परवशीकृत । सूत्र० ७२ ।

छकोडीए–षट्कोटीक । जीवा० २३१ ।

छक्कट्ठक–षट्काष्ठक–गृहस्थवाह्यालन्दक षट्दारुक, द्वारम् ज्ञाता० १४१ ।

छक्कमरयं–षट् कर्माणि यजनयाजनाध्ययनाध्यापनदानप्रतिग्रहात्मकानि तेषु रतौ–आसक्तौ षट्कर्मरतौ । उत्त० ५२१ ।

छक्कायविउरमणं–षट्कायाना विराधनम् । ओघ० १२७ ।

छक्कायविओरमणं–षट्कायव्युपरमणम् । ओघ० १२७ ।

छक्केहिंसमज्जिया–एकत्रसमये येषा बहुनि षट्कानि उत्पन्नानि ते षट्कै समर्जिता । भग० ७६७ ।

छक्कोडि–षट्कोटि शुद्ध नाम यत् स्वभावत षट्स्वपि दिक्षु शुद्धम् । बृ० प्र० ५८ अ ।

छग–पुरीषम् । ओघ० ४१ ।

छगणधम्मिय–छगणधार्मिक –गोमयोपलक्षितो धार्मिको दृष्टान्त । पिण्ड० ८२ ।

छगणियछारो–गोमयछारेण तत्पात्रक गुण्डयते । ओघ० १४४ ।

छगडिया–गोमयप्रतर । अनुत्त० ५ ।

छगमुत्ते–छगणमूत्रे–पुरीषप्रश्रवणे । बृ० द्वि० २१४ अ ।

छगलगलवलया–छगलकस्य पशोर्गल–ग्रीवा वलयन्ति–मोटयन्ति ये ते छगलकगलवलका । पिण्ड० ६८ ।
छगलपुर–सिंहगिरिराजधानी । विपा० ६५ ।
छगलय–छागलकम् । आव० २१२ ।
छगलीए– । विपा० ६५ ।
छज्जइ–राजते । ज० प्र० २०२ ।
छज्जीवकायसजमु–षण्णा जीवनिकायाना पृथिव्यादिलक्षणाना सयम –सङ्घट्टनादिपरित्याग षड्जीवकायसयम । आव० ४६२ ।
छज्जीवणियज्ज –षड्जीवनिकाध्ययन, दशवैकालिके चतुर्थमध्ययनम् । दश० १२० ।
छट्ठ–षष्ठ–उपवासद्वयरूपम् । ज० प्र० १४५ ।
छट्ठण्णकालिओ–षष्ठान्नकालिका । आव० ३५२ ।
छट्ठभत्त–षष्ठभक्तम् । आव० ३५२ ।
छट्ठाण–पासत्थो उसण्णो कुसीलो ससत्तो अहाछदोणिति तो य । नि० चू० प्र० २११ अ ।
छट्ठोपक्खेण– । आचा० ४२१ ।
छडछड– । विपा० ७२ ।
छडाल–व्यासम् । पउ० २८–११६ ।
छड्डण–छर्दन वाताहिद्रव्यप्रयोगकृतम् । विपा० ८१ । परित्याग । ओघ० ४६ । छर्दनम् । ओघ० १५२ । छर्दन–वमनम् ऊर्द्ध्वादिदोष । ओघ० १३६ । वमनम् । ओघ० १६४ । उज्झन–क्षालनजलत्याग । दश० २०३ । परित्याग । ओघ० ४६ ।
छड्डणाइ–छर्दादय । ओघ० ४६ ।
छड्डणिका–छर्दने–परिष्ठापने । बृ० प्र० ८६ आ ।
छड्डन–प्रोज्झनम् । ओघ० १६२ ।
छड्डावण–छड्डावेति–त्याजयति । ओघ० १४६ ।
छड्डाविओ–त्याजित । आव० २१२ ।
छड्डिअ–छर्दित–गृहस्थैर्दत्तम् । अनु० २१६ ।
छड्डिय–परिशाटवत् । दशम एषणादोष । आचा० ३४५ । छर्दित भूमावावेडित, दशम एषणादोष । पिण्ड० १४७ ।
छड्डी–छर्दी–व्याधिविशेष । आचा० ३६२ ।
छड्डे–त्यजति । आव० ६४६ ।
छड्डेऊण–त्यक्त्वा । आव० २२६ ।

छ` –छर्दि विद्ध्यात् । आचा० ३३० ।
छड्डेंति–त्यजेत् । आव० ३६५ ।
छड्डेत्ता–त्यक्त्वा । आव० ३२४ ।
छण–जत्थ विसिट्ठ भत्तपाण उवसाहिज्जति । नि० चू० तृ० १४ आ । इन्द्रोत्सवादिलक्षण । भग० ४७३ । ऊसवो । नि० चू० द्वि० २०० आ । जत्थ एकतविसेसे कज्जति सो छणो । नि० चू० द्वि० १६२ अ । क्षण–इन्द्रमहादि । व्य० द्वि० ३४२ आ । ज्ञाता० ५६ । क्षण उत्सव । ओघ० ४६ । ज्ञाता० ६६ । क्षणन क्षण –हिंसनम् । आचा० १४८ । अवसर । आचा० १४८ । क्षण । आव० २२०, २७३, ६६२ । क्षण – बहुलोकभोजनदानादिरूप । ज्ञाता० ८१ ।
छणदिवस–क्षणदिवस –क्षणमात्रदिवस । आव० ६६२ ।
छणपए–क्षणपद –हिंसास्पदेन प्राण्युपमर्दजनित । आचा० १४७ ।
छणिए–छगलीविशेष । विपा० ६५ ।
छणूसवे–क्षण –प्रतिनियत कौमुदीशक्रमहादिक , उत्सव – पुनरनियतो नामकरणचूडाकरणपाणिग्रहणादिक , अथवा यत्र पक्वान्नविशेष क्रियते स क्षण , यत्र तु पक्वान्न विनाऽपरो भक्तविशेष स उत्सव । प्र० वृ० १०४ अ ।
छणुसविय–छणो ऊसवो छणूसवो तम्मि ज परिहिज्जति त छणूसवियं । नि० चू० द्वि० १६२ अ ।
छण्ण–अभ्यन्तरम् । ओघ० ६१ । प्रछन्नम् । ठाणा० ४८४ ।
छण्णकडए–छिन्नकटके । आव० ३५० ।
छण्णमंडव–जस्स गामस्स णगरस्स वा उग्गहे सव्वासु दिसासु अण्णो गामो नत्थि गोकुल वा त छण्णमडव । नि० चू० प्र० ३४१ आ ।
छण्णालए–षण्नालकानि त्रिकाष्ठिका । औप० ६५ । छण्णालक –त्रिकाष्ठिका । ज्ञाता० १०५ ।
छतिपुत्तो–छातीसुत –दाढादाल । जीवा० १२१ ।
छत्तंतिय–छत्रवती । बृ० प्र० ५६ आ ।
छत्तंतिया–छत्रान्तिका । बृ० प्र० ६० आ ।
छत्त–छत्र–आचार्य । बृ० द्वि० १८४ आ । छादयतीति छत्र–वर्षाकल्पादि । आचा० ४०३ । छत्र–आतपत्रम् ।

दश० ११७ । छत्र–छत्राकारो योग । सूर्य० २३३ । कउगो । नि० चू० प्र० २८४ अ । ज्ञाता० ३८ ।
छत्तइल्लो–छत्रवान् । उत्त० ६७ ।
छत्तकारे–छत्रकार–शिल्पभेद । अनु० १४६ ।
छत्तग्गा–छत्राग्रा–जितशत्रुराजधानी । आव० १७७ ।
छत्तछाया–छत्रच्छाया । आव० ३४१ । प्रज्ञा० ३३७ ।
छत्तज्झया–छत्रध्वजा –छत्रचिह्नोपेता ध्वजा । जीवा० २१५ ।
छत्तधारो–छत्रधर । आव० २०४ ।
छत्तपलासए–छत्रपलाश–स्कन्दकचरिते 'कयंगला'नगर्यां चैत्यम् । भग० ११२, १२३ ।
छत्तयं–छत्रकम् । आव० ३०५ । आतपत्रम् । भग० ११३ ।
छत्तरयणे–चक्रवर्त्तिन एकेन्द्रिय द्वितीय रत्नम् । ठाणा० ३६८ ।
छत्तसंठिआ–छत्रसस्थिता । जीवा० २७६ ।
छत्तसंठिया–छत्र–आतपत्र तत्सस्थितमिव सस्थित सस्थानमस्या इति छत्रसस्थिता । उत्त० ६८५ ।
छत्ताइछत्ता–छत्रातिच्छत्राणि–उपर्युपरिस्थितातपत्राणि । सूर्य० २६३ । छत्राल्लोकप्रसिद्धादेकसख्याकाद् अतिशायीनि द्विसङ्ख्यानि त्रिसङ्ख्यानि वा छत्राणि छत्रातिच्छत्राणि । ज० प्र० ४४ । छत्रादुपर्यन्यान्यच्छत्रभावतोऽतिशायि छत्र छत्रातिछत्र तदाकारो योग । सूर्य०२३३ ।
छत्तागारसठिता–छत्राकारसस्थिता । सूर्य० ३६ ।
छत्तारा–छत्रकारा, शिल्पार्यभेद । प्रज्ञा० ५६ ।
छत्तावं– । भग० ८०४ ।
छत्ताहे– । सम० १५२ ।
छत्ति–दोषाच्छादनम् । आव० ७८२ ।
छत्तीसमट्टिया–षट्त्रिंशच्छोधका । मर० ।
छत्तोए–कुहुणविशेष । प्रज्ञा० ३३ ।
छत्तोववणे– । भग० ३६ ।
छत्तोह–छत्रोपग, वृक्षविशेष । प्रज्ञा० ३२ । भग० ८०३ ।
छत्रकं–वशमयमातपत्रम् । बृ० द्वि० २५३ अ ।
छदिसाअरो–षड्दिशाचर । आव० २१४ ।
छद्दि–छर्दि–दोषविशेष । आव० ८६० ।
छद्दोसो–षड् दोषा । ठाणा० ३६४ ।
छद्मस्थवीतरागः–जिन । आव० ५०१ ।
छन्नं–माया । सूत्र० ६६ । स्वदोषाणा परगुणाना वाऽऽवरणम् । प्रश्न० २७ । प्रतिच्छन्न प्रच्छन्न–अतिलज्जालुतयाऽव्यक्तवचनम् । भग० ६१६ । दर्भादिभिरुच्छादित । आचा० ३६१ । छन्न–व्याप्त । जीवा० १८८ ।
छन्नपदं–छद्मपद–कपटजालम् । सूत्र० १०५ । गुप्ताभिधान वा । सूत्र० १०५ ।
छन्नपदोपजीवी–मातृस्थानोपजीवी । सूत्र० ३६८ ।
छन्नपरिछन्ना–अत्यन्तमाच्छादिता । ज० प्र० ३० ।
छन्ना–व्याप्ता । ज० प्र० ३० ।
छन्नामं–भग० ७२२ ।
छन्नालयं–षड्नालकम् त्रिकाष्ठिका । भग० ११३ ।
छपत्रिक–आभरणविशेष । नि० चू० प्र० २५५ अ ।
छप्पइ–षट्पदिका–यूका । आव० ५७४ ।
छप्पओ–षट्पद–भ्रमर । जीवा० १६८ ।
छप्पगा– । नि० चू० तृ० १२ अ ।
छप्पतिगिल्ले–यस्या षट्पदिका प्राचुर्येण सम्मूर्च्छन्ति स षट्पदिकावान् । बृ० द्वि० २२२ अ ।
छप्पय–षट्पद–भ्रमर । जीवा० १२३ ।
छप्पया–षट्पदिका–यूका । आव० २१३ ।
छप्पाए–पुच्छेन । ओघ० १८० ।
छप्पुरिमं–पुव्व दायव्व । नि० चू० प्र० १८२ अ ।
छप्पुरिमा–तत्र वस्त्रे प्रसारिते सति चक्षुषा निरूप्य तदर्वाग्भाग तत्परावर्त्य निरूप्य च त्रय पुरिमा कर्त्तव्या, प्रस्फोटका इत्यर्थ । ठाणा० ३६१ ।
छब्ब–छब्बकम् । पिण्ड० १५५ ।
छब्बए–वशपिटक शकुनिगृहक वा । ओघ० १८४ ।
छब्बग–छब्बक–पटलिकादिरूपम् । पिण्ड० ६० ।
छब्बगवारगमाई–छब्बकवारकादिकमनेकविध भाजन परस्थानम्, छब्बक पटलिकादिरूप वारक–लघुघट ।
छब्भागे–षड्भाग–षष्ठोभाग । ज० प्र० ४५६ ।
छब्भामरी–वीणाविशेष । ज्ञाता० २२६ ।
छम–क्ष्मा–भूमि । दश० २७५ ।
छमासिआ–षण्मासिकी, षड्भिर्मासैः भिक्षुप्रतिमा । ज्ञाता० ७२ ।

समः २१ ।
छम्मं–छद्म । आ० १७३ ।
छम्मा–भूमि । दश० चू० १५७ ।
छम्माणि–षण्माणी ग्रामविशेष । आव० २२६ ।
छम्मासिएसु– । आचा० ३२७ ।
छाया–जलादौ प्रतिबिम्बलक्षणा शोभा वा । ज्ञाता० १७० ।
छरु–त्सरु खड्गादिमुष्टि । प्रश्न० ८० । जीवा० २७० ।
छरुप्पगय–त्सरुप्रगत क्षुरिकादिमुष्टिग्रहणोपायजातम् । प्र० ९७ ।
छरुप्पवाय–त्सरु खड्गमुष्टिस्तदवयवयोगात् त्सरुशब्देनात्र खड्गा उच्यते, अवयेव समुदायोपचार, तस्य प्रवादो यत्र शास्त्रे तत्त्सरुप्रवाद, खड्गशिक्षाशास्त्रमित्यर्थ । ज० प्र० १३९ । ज्ञाता० ३८ ।
छरुहा–थासका –आदर्शगण्डप्रतिबद्धप्रदेशा । आदर्शगण्डाना मुष्टिग्रहणयोग्या प्रदेशा । ज० प्र० ५७ । छरुको-मुष्टिग्रहणस्थानम् । ज्ञाता० २१९ ।
छड्डित–उज्झित, त्यक्तम् । पिण्ड० १६९ ।
छल–छल–वचनविघातोऽर्थविकल्पोपपत्त्या,सूत्रदोषविशेष । आव० ३७५, ५५७ । अनिष्टस्यार्थान्तरस्य सम्भवतो विवक्षितार्थोपघात कर्त्तुं शक्यते तद् । अनु० २६१ ।
छलओ–छलितो–व्यसितोऽनर्थं प्राप्त । ज्ञाता० १६६ ।
छलण–छलन प्रक्षेपणम् । आचा० ३७५ ।
छलणा–छलना । आव० ८५५ । अशुद्धभक्तादिग्रहणरूपा । पिण्ड० ७० ।
छलदोस–दोषपद्कम् । मर० ।
छलायनण–छल–नवकम्बलो देवदत्त इत्यादिक छलायतनम्, षडायतन वा–उपादानकारणानि आश्रवद्वाराणि श्रोत्रेन्द्रियादीनि यस्य कर्मणस्तत् छलायतनम् । सूत्र० २१६ ।
छलिअकहा–पद्प्रश्नकगाथा । ओघ० ५५ ।
छलिए–स्खलितम् । ओघ० २४५ ।
छलिकमार्ग–गीतकलाया द्वितीयो भेद । सम० ८४ ।
छलिय–छलितानि शृङ्गारकथाकाव्यानि । बृ० द्वि० ५१ आ ।
छलियादिकव्वकहा– । नि० चू० द्वि० ३५ आ ।
छलुए–द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायलक्षणषट्पदार्थप्ररूपकत्वाद् गोत्रेण च कौशिकत्वाद् षडुलूक । ठाणा० ४१३ । षडुलूक । दश० ५८ ।
छलुग–षट्पदार्थप्रणयनाद् उलूकगोत्रत्वाच्च षडुलूक । उत्त० १५३ । नि० चू० तृ० ९८ आ । षडुलूक –यस्मात्त्रैराशिका उत्पन्ना स आचार्य । आव० ३२१ ।
छलुगा–षडुलूकात् त्रिराशिकानामुत्पत्तिस्थानम् । आव० ३१२ । त्रैराशिकानामुत्पत्तौ स्थानम् । विशे० ९३४ ।
छलेज्जा–छलेत् । आव० ६३३ ।
छल्लि–अभ्यन्तर वल्कम् । ठाणा० १८६ ।
छल्ली–बाह्या त्वक् । बृ० प्र० १६२ अ । छल्लि –रोहिणीप्रभृति । विपा० ४१ । ज्ञाता० १८३ । छल्ली–वल्कलरूपा । प्रज्ञा० ३६ ।
छल्लेउ–निस्त्वचीकृत्य । उत्त० २१९ ।
छल्लय–त्वच । प्रज्ञा० ३१ ।
छवडिया–चर्म । ओघ० २१७ ।
छवि–अलङ्कारविशेष । अनु० २६२ । शरीरम् । आव० ८१९ । त्वक् । उत्त० २५१ । त्वक् छाया वा । जीवा० ११४ । शरीरम् । ठाणा० ३३७ । छवि–शरीरम् । भग० २१८ । शरीरत्वग् । भग० ३०८ ।
छविदोप–छवि –अलङ्कारविशेषस्तेन शून्य, सूत्रस्य त्रयविंशतितमो दोष । आव० ३७४ । छवी–शरीरत्वक् । प्रश्न० ९० । त्वक्तद्योगादौदारिकशरीर तद्वती नारी तिरश्ची वा तद्वान्नरस्तिर्यग्वा छविरिति उच्यते । ठाणा० १९३ । क्षयि –व्यवस्थाविशेष । ठाणा० ४०९ । क्षपि –स्वपरयोरायास । भग० ९२५ ।
छविअट्ट–यत् स्निग्धत्वग्द्रव्य मुक्ताफलरक्ताशोकादिक तत् । सूत्र० ३८६ ।
छविग्गहिले–पड्विग्रहिक । जीवा० २३१ ।
छविच्छदो–हस्तपादनासिकादिच्छेद । ठाणा० ३९९ ।
छविच्छेए–छविच्छेद –शरीरपाटनम् । आव० ८१८ ।
छविच्छेओ–छविच्छेद –शरीरच्छेदनम् प्राणवधस्यैकविंशतितम पर्याय । प्रश्न० ६ ।
छविच्छेद–शरीरच्छेद । भग० २१८ ।
छवित्ताण–छवि –त्वक् त्रायते–शीतादिभ्यो रक्ष्यतेऽनेनेति छवित्राण वस्त्रकम्बलादि । उत्त० ८८ ।

छविदोसो–छवि –अलङ्कारविशेषस्तेन शून्य छविदोष, सूत्रस्य त्र्यविंशतितमो दोष । अनु० २६२ ।
छविपत्ता–छवि प्राप्ता जातेत्यर्थं । ठाणा० ६७ ।
छविपव्वा–छवि–मतुब्लोपाच्छविमन्ति–त्वग्वन्ति पर्वाणि सन्धिबन्धनानि छविपर्वाणि । ठाणा० ६७ ।
छविमत्य –औषधिविशेषा । आचा० ३६१ ।
छवि ।–छवियोगाच्छवि स एव छविक, स चासौ 'अत्त'त्ति आत्मा–शरीर छविकात्मा । ठाणा० ६७ ।
छवी–छविमान्, उदात्तवर्णया सुकुमारया च त्वचा युक्त । जीवा० ७७ । कमलादिसेंगा । नि० चू० प्र० २७३ आ ।
छव्विया–छविका –कटादिकारा । प्रज्ञा० ५६ ।
छाउद्देसे–छायोद्देश । सूर्य० ९६ ।
छाए–सदृश । भग० ७५४ ।
छाएउ–छदित्वा, ढकिउ । आव० ६६१ ।
छाएल्लय–छायार्थी । उत्त० ११९ ।
छाओ–बुभुक्षित । ओघ० १८९ । छात –बुभुक्षित । पिण्ड० १७६ ।
छागलिकः– । ठाणा० ५०८ ।
छागले– । विपा० ६६ ।
छाण–छादन–दर्भादिमय पटलमिति । भग० ३७६ । छाण–आच्छादनम् । जीवा० १८० । नि० चू० प्र० ७ अ ।
छाणपिंडो–छगण(गोमय)पिण्ड । आव० ४२२ ।
छाणविच्छुय–छगणवृश्चिक, चतुरिन्द्रियजन्तुविशेष । जीवा० ३२ ।
छाणविच्छुया–चतुरिन्द्रियविशेष । प्रज्ञा० ४२ ।
छाणा– । दश० चू० ४४, ५५ ।
छाणिय–क्षालितो–गालित । बृ०प्र० ८१ अ ।
छातो–क्षुधित । नि० चू० प्र० ३५४ अ ।
छादयति–आवरयति । जीवा० २५६ ।
छायंत्ति–प्राकृतत्वात् छायावन्त शोभमानशरीरा । सम० १५६ ।
छाय–क्षुधित । नि० चू० प्र० २८६ अ ।
छायणं–छादन–स्थगनम् । आव० २६४ । दर्भादिपटलकरणम् । प्रश्न० १२७ । छज्जकरण छायण । नि० चू० प्र० २३० आ ।
णओ–छादनत –अनुष्ठानभेद । आचा० ३६८ ।
।–शङ्कुछाया । बृ० प्र० ४२ अ । शङ्क्वादिप्रतिच्छायारूपा छाया । विशे० ४३६ । प्रभया आतपाभावलक्षणया युक्ता । सम० १५५ । आकार । राजा० ७४ । प्रतिबिम्बम् । उपा० २६ । उन्नति । उप० मा० गा० ३२७ । छारा(ता) कसघातव्रणाङ्कितशरीरा । दश० २४८ । दीप्ति । जीवा० १६१ । प्रभा । बृ० प्र० १५४ आ । सन्निभा । उत्त० ६५२ । समुदायशोभा । प्रज्ञा० ८८ । आकार –छायाशब्दआतपप्रतिपक्षवस्तुवाची । जीवा० १८७ । ज० प्र० २८ । कीर्त्ति । नि० चू० द्वि० १३४ आ । दीप्ति । ओप० १६ । शोभा । भग० १३२ । ओप० ५० । छयति छिनत्ति वाऽऽतपमिति छाया । उत्त० ३८ । आतपवारणलक्षणा । प्रश्न० ७६ । ओप० ६७ । दीप्ति । सम० १४० । शरीरप्रभा । जीवा० २७७ । प्रकृति । भग० ६८३ । शैत्यगुणा । उत्त० ५६१ । कान्ति । ज० प्र० ५७ ।
छा ी–छायामनुसृत्य तदुपष्टम्भेन वा समाश्रयितु गति छायागति –विहायोगतेर्नवमो भेद । प्रज्ञा० ३२७ ।
छायाणुमाणप्प –छायानुमानप्रमाणम् । सूर्य० ९८ ।
छायाणुवातगती–छायाया स्वनिमित्तपुरुषादेरनुपातेन–अनुसरणेन गति छायानुपातगति, विहायोगतेर्दशमो भेद । प्रज्ञा० ३२७ ।
णुवादिणो–छायानुवादिनो । सूर्य० ९५ ।
छायालीसं–पट्चत्वारिंशत् । पिण्ड० १७६ ।
छारं–क्षार–रक्षा । ओघ० १४२ । आव० ३०८, ६२१ । भस्म । आव० २१८ । क्षारम् । आव० ३०८ । भूति । ओघ० १४३ । क्षार –भूति । ओघ० १४० । क्षार भस्म । बृ० प्र० ८० अ ।
छारकयार–भस्मकचवर । आव० २१८ ।
छारा–भोया । नि० चू० द्वि० १०४ अ । क्षारा–क्षारावगुण्ठितवपुष । पिण्ड० ९८ ।
छारिए–क्षारक–भस्म । भग० २१३ ।
छारिय–क्षारराशि । दश० १६४ ।
छारियब्भूय– । भग० १६६ ।

छारुज्झिय–क्षारोज्झिका–भस्मपरिष्ठापिकाम् । ज्ञाता० ११७।
छारो–अभिणवडड्ढ अपुजकय छारो । नि० चू० प्र० १९२ अ ।
छावट्ठे–षट्षष्टि । सूर्य० ११ ।
छावण–छादन–दर्भादिभिराच्छादनम् । बृ० प्र० ९२ अ ।
छाहि–छाया । आव० ७०६ ।
छाही–छाया । आव० ४१५, ६२४ ।
छिंडिका–गृहद्वायान्तरस्थ प्रलम्बगमनमार्ग । पिण्ड० १०५ ।
छिंडिया–छिण्डिका । आव० ३४९ । छिण्डिका–वृत्तिच्छिद्ररूपा । ज्ञाता० ७७ ।
छिंदति–व्यवस्था स्थापयन्ति । बृ० प्र० ११० अ ।
छिंद–छिन्द–द्विधाकुरु । ज्ञाता० २३८ ।
छिंदइ–छेद करोति । भग० १७५ ।
छिंदति–छिनत्ति–करोति । अन्त० १६ ।
छिंदावेमि–छेदयामि । आव० २२४ ।
छिंदिज्ज–छिन्द्यात्–मार्जारीमूषकादिभिर्वा पुरतो यायात् । आव० ७८४ ।
छिंपक –कारुकजातिविशेष । प्रश्न० ३० ।
छिंपाय–कारुकजातिविशेष । ज० प्र० १९४ ।
छिइए–क्षुतम् । आव० ७७९ ।
छिक्क–स्पृष्ट । आव० ४१८ । पिण्ड० ७० । स्पृष्टवान् । बृ० द्वि० ६२ आ । नि० चू० प्र० ३४५ अ । हृत । आव० ४१७ ।
छिक्का–स्पृष्टा । आव० २०२ ।
छिक्कोवणा–शीघ्रकोपन । बृ० तृ० २२५ अ ।
छिज्जमाणे छिन्ने–कुठारादिना लतादिविषयच्छेद । भग० १९ ।
छिज्जेज्ज–सच्छिद्येत–द्विधा क्रियते । अनु० १६१ ।
छिड्ड –छिद्र महत्तर रन्ध्रम् । भग० ८३ । अल्पपरिवारत्वम् । विपा० ७३ । छिद्र –छेदनस्यास्तित्वच्छिद्रम् । भग० ७७६ ।
छिड्डकुडे–छिद्रकुट । आव० १०१ ।
छिड्डविच्छिड्ड –बृहल्लघुच्छिद्राकितम् । (त०)
छिड्डाइं–छिद्राणि । आव० ६६ ।
छिड्डाणि–छिद्राणि–अल्पपरिवारादीनि । निरय० १२ ।
छिण्ण–स्त्यान–कठिन मदीयात्यन्तानुकूलचरितादद्रवीकृतहृदयत्वात् । ज्ञाता० १६७ ।
छिण्णकटे– । नि० चू० तृ० १७ अ ।
छिण्णछेदयणवत्तव्वया–छिन्नच्छेदकवक्तव्यता । आव० ३१६ ।
छिण्णछेयणय–छिन्नच्छेदनक–अनुप्रवादपूर्वे वक्तव्यताविशेष । उत्त० १९३ ।
छिण्णद्धाण–छिन्नाध्वा । आव० २०८ ।
छिण्णब्भ–एग अब्भय । नि० चू० द्वि० १४६ आ ।
छिण्णसम्म–तथाऽधिकमासादिच्छेदाच्छिन्नसम्यक् । आचा० १७६ ।
छिण्णसोए–छिन्नश्रोता –छिन्नससारप्रवाह, छिन्नशोको वा । ज० प्र० १४६ ।
छिण्णसोय–छिन्नशोक, छिन्नश्रोता वा । प्रश्न० १५७ ।
छिण्णा–छिन्ना । आव० ३५८ ।
छिण्णो–तदुलघयादि जत्थ परिमाणपरिच्छिण्णा दिज्जति सो छिण्णो भण्णति । नि० चू० द्वि० १०६ आ ।
छिण्णोवसपय–या आवलिका सा छिन्ना यतस्तस्या यो लाभ आदित आरभ्य परम्परया छिद्यमानोऽन्तिमेऽभिघार्थेऽन्यमनभिघारयति विश्राम्यति सा छिन्नोपसम्पत् । व्य० द्वि० ३७७ अ ।
छित्त–स्पृष्ट । आव० २७४ ।
छित्तरा–छित्वराणि वशादिमयानि छादनाधारभूतानिकिलिञ्जानि । भग० ३७६ ।
छित्ता–छित्वा–विभज्य । सूर्य० २२, २३३ ।
छित्तिकाऊण–थूत्कृत्य । उत्त० ३५६ ।
छित्ते–क्षेत्रे । बृ० तृ० ८८ आ ।
छिद्द–छिद्र–अवसर । आव० ६८२ । प्रश्न० ५३ । राजपरिवारविरलत्वम् । विपा० ५३ । प्रदेशद्वारम् । प्रश्न० ४२ । ज पुण आभोगओ असामायारि करेइ त छिद्द भण्णति । नि चू० तृ० ६३ अ । छिद्र –प्रविरलपरिवारत्वादि, चौरप्रवेशावकाश । ज्ञाता० ८१ ।
छिद्दगुडो– । नि० चू० प्र० १९६ आ ।
छिन्न–उद्धंम् । उत्त० ४६० । छेदन छिन्न वसनदशनदा-

र्वादीना, तद्विषयशुभाशुभनिरुपिका विद्याऽपि छिन्नम् । उत्त० ४१६ । छेदन-कर्मणो दीर्घकालाना स्थितीना ह्रस्वताकरणम् । भग० १६ । निर्द्दारित । वृ० प्र० १०२ अ । छिन्न -खण्डित । उत्त० ४६० । छिन्दनम् । ओघ० २०४ । छिन्न-नियमितम् । पिण्ड० ७६ । निपुण्पकम् । पिण्ड० १०१ । परिश्वादिभिर्वृक्षात् पृथक्स्थापितम् । दश० १५५, १७६ । विभक्त । ज्ञाता० २३८ ।

छिन्नकडए-छिन्नकटकम् । उत्त० ४६६ । दश० ६६ ।

छिन्नकहकहे-छिन्ना अपनीता कथ-कथमपि या कथा-रागकथादिका विकथारूपा येन स छिन्नकथकथ, यदिवा कथमहमिङ्गितमरणप्रतिज्ञा निर्विहिष्ये इत्येवरूपा या कथा सा छिन्ना येन स छिन्नकथकथ । आचा० २८६ ।

छिन्नगथे-मिथ्यात्वादिभावग्रन्थिच्छेद । ज्ञाता० १०४ ।

छिन्नच्छेयणइयाई-इह यो नय सूत्र छिन्न छेदेनेच्छति स छिन्नछेदनय । मम० ४१ ।

छिन्नमूलो-छिन्नमूल । उत्त० २७६ ।

छिन्नरुहा-साधारणवादरवनस्पतिकायविशेप । प्रज्ञा०३४ ।

छिन्नसोआ-छिन्नशोका छिन्नश्रोतमो वा, छिन्नससारप्रवाहा । औप० ३५ ।

छिन्नसोय-छिन्नशोक -छिन्नानि वा श्रोतासीव श्रोतासि-मिथ्यादर्शनादीनि येनासौ छिन्नश्रोता । उत्त० ४८७ ।

छिन्ना-कन्दलीकृता । आचा० ३२३ । छिन्ना हस्तादिषु । ज्ञाता० २३६ ।

छिन्नाले-तथाविधदुष्टजाति । उत्त० ५५१ ।

छिन्नावाए-छिन्न -अपगत आपात -अन्यतोऽन्यत आगमनात्मक अर्थाज्जनस्य येपु ते छिन्नापाता । उत्त० ८६ ।

छिन्नावाय-छिन्ना आपाता सार्यंगोकुलादीना यस्या सा । ठाणा० ३१४ ।

छिपा -नन्तिक्ता । व्य० द्वि० ४१६ आ ।

छिप्पंतोण- । राज० ५२ ।

छिप्पतूरं-द्रुततूर्यम् । विपा० ५६ । क्षिप्ततूर्यं । ज्ञाता० २३६ ।

छिया-छिव श्लक्ष्णलोहकुशा । ज० प्र० १४७ ।

छिरा-शिरा-धमन्य । सम० १५० । शिरा -धमनिनाडय । जीवा० ३४ ।

छिराहहिरं-शिराहधिर-नाडीरुधिरम् । आव० ४०२ ।

छिरिया-अनन्तकायभेद । भग० ३०० ।

छिल्लर-पल्वलम् । दश० १६ ।

छिवा-श्लक्ष्णकष । प्रश्न० ५७ । श्लक्ष्ण -कष । ज्ञाता० ८७ ।

छिवाडि-वल्लादिफलिका । प्रज्ञा० ३६३ । मुद्गादे फलि । आचा० ३२३ । मुद्गादिफलि । दश० १८५ ।

छिवाडिआइ-छेवाडीनाम वल्लादिफलिका सा च क्वचिद्देशविशेषे शुष्का सती अतीव शुक्ला भवति । ज० प्र० ३५ ।

छिवाडी-तनुपत्र उच्छ्रितरूप, अथवा अल्पवाहल्य प्रथुल पुस्तक । वृ० द्वि० २१६ आ । सृपाटिका यत्तनुपत्रोच्छ्रितरूपम् । आव० ६५२ । छेवाडी-वल्लादिफलिका । जीवा० १६१ ।

छिवाडीय-सृपाटिका-तनुपत्रोच्छ्रितरूपा । ठाणा० २३३ ।

छिहलि-शिखा । आव० ६४७ ।

छिहली-शिखा । आव० ६२६ । वृ० तृ० १०१ आ । सिह । नि० चू० द्वि० ३५ आ । छीए-क्षुतम् । आव० ७७६ ।

छीअ-क्षवण-क्षुतम् । आव० २५ ।

छीत्कृत-क्षुति । भग० ६६४ ।

छीय-क्षवण क्षुतम् । विशे० २७४ ।

छीर-साधारणवादरवनस्पतिकायविशेप । प्रज्ञा० ३४ ।

छीरल-क्षीरल भुजपरिसर्पविशेप । प्रश्न० ८ ।

छीरालि-वल्लीविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

छीरविरालिया-अनन्तकायभेद । भग० ३०० । भुजपरिसर्पविशेप । प्रज्ञा० ४६ ।

छुक्कारेति-छूत्कार करोति । जीवा० २४७ ।

छुज्जइ-कुत्स्यते । उप० मा० गा० ३१३ ।

छुट्टकच्छो- । आव० ७१४

छुट्टा-त्रुटिता । आव० २२४ ।

छुडु-सुष्ठु । उत्त० २४५ ।

छुड्डिया-क्षुद्रिका-आभरणविशेष । प्रश्न० १५६ ।

छुन्नमुहो-छुन्नमुख -क्लीबमुख । पिण्ड० १२५ ।

छुन्ना–छिन्ना । (स०)
छुपंतु–स्पृशन्तु भवन्त्वित्यर्थ । भग० १२२ ।
छुपेज्ज–क्षिपतु । आव० ८२५ ।
छुब्भइ–प्रक्षिप्यते–प्रवेश्यते । बृ० द्वि० १७५ अ । क्षुभ्यते–जातमहाऽद्भुतशक्तिक सन् ऊर्द्धमितस्ततो विप्रसरति । जीवा० ३०७ ।
छुभंति–प्रक्षिपन्ति । आव० १२८ ।
छुर–क्षुरप्रम् । आव० ६२७ ।
छुरघरगसंठिते–क्षुरगृहकसंस्थितम् । सूर्य० १३० ।
छुरमुंडो–क्षुरमुण्ड । आव० ६४७ ।
छुरय–तृणविशेष । प्रज्ञा० ३३ ।
छुरिय–क्षुरिका । आव० ५७८ । शस्त्रविशेष । नि० चू० प्र० १०५ अ ।
छुरिया–क्षुरिका । उ० ७११ ।
छुहति–क्षिपति । आव० २२६ ।
– । नि० चू० प्र० २६५ अ । नि० चू० द्वि० ६९ आ ।
छुहाइएहिं–क्षुधार्त्तयो । आव० ३६६ ।
छुहाकुड्डु–सुधाकुड्य सुधामाष्टयं कुड्यम् । ओघ० १२७ ।
छुहातिया–क्षुधार्दिता । आव० ३२३ ।
छुहापरद्धो–क्षुधापरिगत । आव० ८१४ ।
छुहालुया–क्षुधालुका । दश० ४२ ।
छुहिय–बुभुक्षित । ज्ञाता० १९२ ।
छूढाणि–क्षिप्तानि । आव० ६३ ।
छूढो–क्षिप्त । प्रश्न० ६० ।
छूहालू–क्षुधार्त्त । आव० ३६६ ।
छेअ–छेक, निपुण, हित, कालोचितम् । दश० १५७ ।
छेइत्ता–छित्वा–परित्यज्य । भग० १२८ ।
छेए–छेक –अवसरज्ञ, द्विसप्ततिकलापण्डित इति । औप० ६५ । कलापण्डित । ज० प्र० ३८८ । छेक –प्रयोगज्ञ । अनु० १७७ । भग० ६३१ ।
छेओ–छेक असाव्यवहारिक । आव० ५२७ ।
छेओवट्ठावण–तत्र च्छेदश्चोपस्थापना च यस्मिश्चारित्रे तत् छेदोपस्थापन पूर्वपर्यायस्य च्छेद महाव्रतेषूपस्थापन चात्मनो यत्र तत् । विशे० ५५४ । छेदोपस्थापन–छेदश्चोपस्थापन च यस्मिंस्तत्, पूर्वपर्यायस्य छेदो महाव्रतेषु चोपस्थापनमात्मनो यत्र तत् । आव० १९ ।
छेओवट्ठावणिय–छेदे–प्राक्तनसंयमस्य व्यवच्छेदे सति यदुपस्थापनीय–साधावारोपणीय तच्छेदोपस्थापनीय, पूर्वपर्यायच्छेदेन महाव्रतानामारोपणमित्यर्थं । भग० ३५० ।
छेओवट्ठावणीय–छेदोपस्थापनीयम् । उत्त० २५८ ।
छेगो–छेक –द्वासप्ततिकलापण्डित । जीवा० १२२ ।
छेज्ज–छेद्यम् । सूर्य० ११३ । छेद्य पत्रछेद्यादि । दश० ८७ । छेदनकर्म्म–द्विधा करणम् । दश० २७० ।
छेज्जाछेयाणि–गच्छचिंताया प्रमाणभूतानि स्थेयानि–अनेकश प्रीतिकराणि । व्य० प्र० २४१ ।
छेत्त–क्षेत्र स्थानम् । औप० ४ । ज्ञाता० ३ । क्षेत्रम् । ओघ० १६३ ।
छेत्तुडोअ–दव्वी । नि० चू० प्र० १२८ आ ।
छेत्तूण–छित्वा–द्विधा विधाय । उत्त० २७३ ।
छेद–करपत्रादिभि पाटनम् । आव० ८१९ । प्रव्रज्यापर्यायह्रस्वीकरणम् । भग० ९२० । छेद –तपसा दुर्दमस्य श्रमणपर्यायच्छेदनम् । आव० ७६४ । जीवादिद्रव्यस्य विभाग । ठाणा० ३४६ । व्य० द्वि० ३४१ आ ।
छेदन–क्षपणम् । उत्त० ५९३ ।
छेदनक –उदकाश्रितजीव । आचा० ४६ ।
छेदारिह–छेदार्हं दिनपञ्चकादिना क्रमेण पर्यायच्छेदनम् । औप० ४२ । प्रव्रज्यापर्यायह्रस्वीकरणार्हम् । भग० ९२० ।
छेदेत्ता–छित्वा–व्यवच्छेद्य । ज्ञाता० ७७ ।
छेदोदइए–छेदश्च व्यय औदयिकश्च लाभ छेदौदयिकम् । बृ० द्वि० २३ आ ।
छेदोवट्ठावण–छेद –पूर्वपर्यायस्य उपस्थापना च महाव्रतेषु यस्मिन् चारित्रे तच्छेदोपस्थापनम् । प्रज्ञा० ६४ ।
छेदोवट्ठावणिय–छेदश्च पूर्वपर्यायस्योपस्थान च व्रतेषु यत्र तत्छेदोपस्थान तदेव छेदोपस्थापनिक, ते वा विद्येते यत्र तच्छेदोपस्थापनिकमथवा पूर्वपर्यायच्छेदेनोपस्थाप्यते, आरोप्यते यन्महाव्रतलक्षण चारित्र तच्छेदोपस्थापनीयम् । ठाणा० ३२३ । पूर्वपर्यायच्छेदोपस्थापनीय–आरोपणीय छेदोपस्थापनीय, व्यक्तितो महाव्रतारोपणम् । ठाणा० १६८ ।

छेदोवट्ठावणियकप्पट्ठितो–पूर्वपर्यायच्छेदोपस्थापनीय आरोपणीय व्यक्तिन महाव्रतारोपण तत्स्थितिश्चोक्तलक्षणेष्वेव दशसु स्थानकेष्ववश्य पालनलक्षणा । ठाणा० १६८।

छेप्पं–पुच्छम् । विपा० ४६ ।

छेय–छेक । औप० ४ । छेद–पुष्पफलादे खण्डनम् । पिण्ड० १६१ । छेक–दक्ष । आव० ७० । ज्ञाता० ५८ । अपच्छेद । ओघ० ७२ । छेक–निपुण । ज्ञाता० २२१ । ठाणा० २०० ।

छेयकरे छेदनकरम् । आचा० ४२५ ।

छेयग–छेदकम् । सूर्य० ११३ ।

छेयण–छेदन–कर्मण स्थितिघात । ठाणा० २१ । विभजनम् । ठाणा ३४६ । विरह । ठाणा० ३४६ । छेदन–उत्तरोत्तरशुभाध्यवसायारोहणात्स्थितिह्रासजननम् ।आचा० २६८ ।

छेयणग–छेदनक–राशेरर्द्धीकरणम् । अनु० २०७ ।

छेयणय–छेदनकम् । प्रज्ञा० २८१ ।

छेयसारहि–छेकसारथि दक्षप्राजिता । भग० ३२२ ।

छेयसुय–छेदश्रुतानि–प्रकल्पव्यवहारादीनि । व्य० प्र० ११५ अ । नि० चू० प्र० २८१ अ ।

छेया–छेदा–अर्थच्छेदा । व्य० प्र० ६० आ । छेका–प्रस्तावज्ञा । उपा० ४६ । छेका–निपुणा । भग० १६७, ५२७ । ज्ञाता० ३६ ।

छेयारियकणगखइयंतकम्मं– । आचा० ४२३ ।

छेरित्ता–हदित्वा । उत्त० १६६ । आव० ३१६ ।

छेला–छगलक । उत्त० १३८ ।

छेलावणय–छेलापनक–उत्कृष्टबालक्रीडापन, सेण्टिताद्यर्थवाचकम् । आव० १२६ ।

छेलिअ–सेंटित हर्षोत्कर्षेण सीत्कारकरणम् । ज० प्र० २०६ ।

छेलिय–सेंटित–सीत्कारकरणम् । प्रश्न० ४६ । मुखवादित्रम् । बृ० तृ० २४७ आ । सेण्टन–सेण्टितम् । विशे० २७४ ।

छेव–छेवक–अशिवम् । बृ० तृ० १५६ अ ।

छेवइओ–अशिवगृहीत । बृ० तृ० १५० आ ।

छेवग–असिव । नि० चू० प्र० ७५ आ । मारि । व्य० द्वि० १२६ अ ।

छेवट्टिया–छेवट्टिका, सहननविशेष । ओघ० २२७ ।

छेवट्ठं–यत्रास्थीनि परस्पर छेदेन वर्त्तन्ते न किलिकामात्रेणापि वन्धस्तत् छेदवर्त्ति । जीवा० १५, ४२ ।

छेवतितो–असविग्गहितो । नि० चू० प्र० २६३ आ ।

छेवाडिया–छेवाडिनाम वल्लादिफलिका । राज० ३३ ।

छेवाडी–दीहो हस्सो वा पिहुलो अप्पवाहल्लो छेवाडी, अहवा तनुपत्तेहिं उस्सीओ छेवाडी । नि० चू० द्वि० ६१ अ ।

छोए– । सूत्र० २७७ ।

छोटिय–छोटित–स्फोटितम् । औप० १७ ।

छोडिओ–छोटित । आव० ३६६ ।

छोडिज्जति–छणिज्जति । नि० चू० प्र० १६२ अ ।

छोडिय–छोटित–घट्टितम् । प्रश्न० ८२ ।

छोडियपडिय–छोटितपतितम् । आव० २१८ ।

छोढु–छोटयित्वा । नि० चू० तृ० ३७ अ । निक्षिप्य । आव० २६५ । स्थापयित्वा । आव० १६६ ।

छोता–विदारण । नि० चू० प्र० ५६ आ ।

छोम–अभ्याख्यानम् । बृ० द्वि० १६४ आ । बृ० द्वि० ३१ अ ।

छोमगं–कलङ्कम् । नि० चू० प्र० २५२ अ । अब्भक्खाण । नि० चू० द्वि० ६४ आ । अभ्याख्यानम् । व्य० प्र० २०४ अ ।

छोमगदिन्नो–अभ्याख्यान दत्त यस्मिन् स छोभगदत्त । व्य० प्र० २०६ आ ।

छोमय–अपमानम् । दश० ४७ ।

छोभवंदण–आरभटया छोभवन्दन क्रियते । आव० ५२४ ।

छोमिय–क्षोभित–कदर्थीकृत । दश० ५८ ।

छोमो–निस्सहाय क्षोभणीयो वा । प्रश्न० ६४ ।

छोय–छोक लघु । भग० ३१८ ।

छोल्लेति–निस्तुपीकरोति । ज्ञाता० ११६ ।

ज

ज-यत् उद्देशवचनम् । आव० ४३८ । यदा । आव० ३५८ ।

जंकयसुकया–यदेव कृत शोभनमशोभन वा तदेव सुष्ठु-

कृतमित्यभिमन्यते पितृपौरादिभिर्यस्या सा यत्कृतसुकृता। अन्त० १६ ।

जंकिंचिमिच्छ–खेलसिंघानाविधिनिसर्गाभोगानाभोगसह–साकाराद्यसयमस्वरूप यत्किञ्चिन्मिथ्या–असम्यक् तद्विषय मिथ्येदमित्येव प्रतिपूर्वक मिथ्यादुष्कृतकरण यत्किञ्चिन्मिथ्या प्रतिक्रमणमिति । ठाणा० ३८० ।

जंकिंचिमिच्छा–यत्किञ्चिन्मिथ्या–यत्किञ्चिदाश्रित्य मिथ्या । आव० ५४८ ।

जंकिंचिमिच्छामि–यत्किञ्चनानुचित तन्मिथ्या–विपरीत दुष्ठु मे–मम इत्येव वासनागर्भवचनरूपा एकाऽन्या गर्हा । ठाणा० २१५ ।

जगध–यद्गन्ध–यादृशगन्धवत् । ओघ० २२३ ।

जगल–निर्जल । वृ० प्र० १७५ आ ।

जगला–जङ्गला –जनपदविशेष । प्रज्ञा० ५५ ।

जगिते–जङ्गमा –त्रसास्तदवयवनिष्पन्न जाङ्गमिक–कम्बलादि । ठाणा० ३३८ । जगमजमौर्णिकादि । ठाणा० १३८ ।

जगिय–जङ्गमोष्ट्राद्यूर्णानिष्पन्नम् । आचा० ३६३ । त्रसावयवनिष्पन्न वस्त्रम् । वृ० द्वि० २०१ अ ।

जगोल–विषघातक्रियाऽभिधायक जङ्गोल–अगद तन्त्र तद्धि सर्प्पकीटलूतादष्टविनाशार्थं विविधविषसयोगोपशमनार्थं चेति आयुर्वेदपञ्चमाङ्गम् । विपा० ७५ ।

जगोली–विषविघाततन्त्रमगदतन्त्रमित्यर्थ । ठाणा०४२७ ।

जघा–अङ्गविशेष । आचा० ३८ । सपूर्णजघाच्छादक चम । वृ० द्वि० २२२ आ । जान्वधोवर्ती खुरावधिरवयव । ज० प्र० २३४ ।

जघाचारण–लूतातन्तुनिर्वर्तितपुटकतन्तून् रविकरान् वा निश्रा कृत्वा जङ्घाभ्यामाकाशेन चरन्तीति जङ्घाचारण । विशे० ३८० ।

जंघाचारणा–अतिशयचरणाच्चारणाच्चारणा –विशिष्टाकाशगमनलब्धियुक्ता ते च जङ्घाचारणा । प्रश्न० १०६ । ये चारित्रतपोविशेषप्रभावत समुद्भूतगमनविषयलब्धिविशेषास्ते जङ्घाचारणा । प्रज्ञा० ४२५ । शक्तित किल रुचकवरद्वीपगमनशक्तिमान् । आव० ४७ । जङ्घाभ्यापारकृतोपकाराच्चारणा जङ्घाचारणा । भग० ७९३ ।

जघापरिजिय–मूलद्वारविवरणे साधु । जघापरिजितनामा साधु । पिण्ड० १४४ ।

जघाबलपरिहीणो–परिक्षीणजङ्घाबल । आव० ५३६ ।

जजुका–तृणविशेष । प्रज्ञा० ३० ।

जत–यन्त्रम् । उत्त० ११६ । प्रपञ्च । जीवा० १९६ । ३५६ । उच्चाटनाद्यर्थाक्षरलेखनप्रकार , जलसङ्ग्रामादियन्त्र वा । प्रश्न० ३८ । यन्त्र–अरघट्टादि । प्रश्न० ८ । नानाप्रकारम् । जीवा० १६० । अरकोपरिफलकचक्रवालम् । जीवा० १९२ । पाषाणक्षेपयन्त्रादि । औप० १२ । यन्त्रशाला गुडादिपाकार्था । यन्त्रशालासु गुडादिनामुत्सेचनार्थमलाबूनि धार्यन्ते । वृ० द्वि० २४६ अ । यन्त्र–मञ्चरिष्णुपुरुपप्रतिमाद्वयरूपम् । ज० प्र० २९२ । चारकोपरि फलकचक्रवाल । ज०प्र० ३७ । यन्त्र–कोल्हुकादिघाणकविषयम् । पिण्ड० ११३ । यन्त्रिका । ओघ० ७५ । यन्त्र–व्रीह्यादिदलनोपकरणम् । पिण्ड० १०६ । गच्छत् । आव० ४२० ।

जतकम्म–यन्त्रकर्म–बन्धनक्रिया । भग० ३२२ ।

जतग–मट्टियाथी । दश० चू० ७६ । यात –यायी । आव० ४३१ ।

जतणा–यन्त्रणा–पीडा । आव० २३४ ।

जतपत्थर–यन्त्रप्रस्तर –घरट्टादिपाषाण , यन्त्रमुक्तपाषाणो वा । प्रश्न० २० । गोफणादिपाषाण । प्रश्न० ४८ ।

जतपासय–यन्त्रपाशक । आव० ३४२ ।

जतपीलग–श्रेणिविशेष । ज० प्र० १९४ ।

जतपीलणकम्म–यन्त्रपीडनकर्म । आव० ८२९ ।

जतलट्ठी–यन्त्रयष्टि –कृषिकर्मोपयुक्ता । दश० २१८ ।

जतवाडचुल्ली–इक्षुयन्त्रपाटचुल्ली । ठाणा० ४१६ । यन्त्रपाटचुल्ली–इक्षुपीडनयन्त्र तत्प्रधान पाटकस्तस्मिन् चुल्ली । जीवा० १७४ ।

जताणि–पाषाणक्षेपणयन्त्राणि । सम० १३८ ।

जतिओ–यन्त्रित । आव० २०७ ।

जतुग–जन्तुक- जलाशयज तृणविशेष पणमित्यथ । प्रश्न० १२८ ।

जतुगा–वनस्पतिविशेष । सूत्र० ३०७ ।

जतुय–जन्तुक–तृणविशेषोत्पन्नम् । आचा० ३७२ ।

छेदोवट्ठावणियकप्पट्ठितो–पूर्वपर्यायच्छेदोपस्थापनीय आरोपणीय व्यक्तिन महाव्रतारोपण तत्स्थितिश्चोक्तलक्षणेष्वेव दशसु स्थानकेष्ववश्य पालनलक्षणा । ठाणा० १६८।

छेप्पं–पुच्छम् । विपा० ४६ ।

छेय–छेक । औप० ४ । छेद–पुष्पफलादे खण्डनम् । पिण्ड० १६१ । छेक–दक्ष । आव० ७० । ज्ञाता० ५८ । अपच्छेद । ओघ० ७२ । छेक–निपुण । ज्ञाता० २२१ । ठाणा० २०० ।

छेयकरे छेदनकरम् । आचा० ४२५ ।

छेयगं–छेदकम् । सूर्य० ११३ ।

छेयण–छेदन–कर्मण स्थितिघात । ठाणा० २१ । विभजनम् । ठाणा ३४६ । विरह । ठाणा० ३४६ । छेदन–उत्तरोत्तरशुभाध्यवसायारोहणात्स्थितिह्रासजननम् ।आचा० २६८ ।

छेयणग–छेदनक–राशेरर्द्धीकरणम् । अनु० २०७ ।

छेयणय–छेदनकम् । प्रज्ञा० २८१ ।

छेयसारहि–छेकसारथि दक्षप्राजिता । भग० ३२२ ।

छेयसुय–छेदश्रुतानि–प्रकल्पव्यवहारादीनि । व्य० प्र० ११५ अ । नि० चू० प्र० २८१ अ ।

छेया–छेदा–अर्थच्छेदा । व्य० प्र० ६० आ । छेका–प्रस्तावज्ञा । उपा० ४६ । छेका–निपुण। । भग० १६७, ५२७ । ज्ञाता० ३६ ।

छेयारियकणगखइयंत – । आचा० ४२३ ।

छेरित्ता–हदित्वा । उत्त० १६६ । आव० ३१६ ।

छेला–छगलक । उत्त० १३८ ।

छेलावणय–छेलापनक–उत्कृष्टवालक्रीडापन, सेण्टिताद्यर्थवाचकम् । आव० १२६ ।

छेलिअ–सेंटित हर्षोत्कर्षेण सीत्कारकरणम् । ज० प्र० २०६ ।

छेलिय–सेंटित–सीत्कारकरणम् । प्रश्न० ४६ । मुखवादित्रम् । बृ० तृ० २४७ आ । सेण्टन–सेण्टितम् । विशे० २७४ ।

छेव–छेवक–अशिवम् । बृ० तृ० १५६ अ ।

छेवइओ–अशिवगृहीत । बृ० तृ० १५० आ ।

छेवग–असिव । नि० चू० प्र० ७५ आ । मारि । व्य० द्वि० १२६ अ ।

छेवट्ठिया–छेवट्टिका, सहननविशेष । ओघ० २२७ ।

छेवट्ठं–यत्रास्थीनि परस्पर छेदेन वर्त्तन्ते न किलिकामात्रेणापि वन्धस्तत् छेदवर्त्ति । जीवा० १५, ४२ ।

छेवतितो–असविग्गहितो । नि० चू० प्र० २६३ आ ।

छेवाडिया–छेवाडिनाम वल्लादिफलिका । राज० ३३ ।

छेवाडी–दीहो हुस्सो वा पिहुलो अप्पवाहल्लो छेवाडी, अहवा तनुपत्तेहिं उस्सीओ छेवाडी । नि० चू० द्वि० ६१ अ ।

छोए– । सूत्र० २७७ ।

छोटियं–छोटित–स्फोटितम् । औप० १७ ।

छोडिओ–छोटित । आव० ३६६ ।

छोडिज्जति–छणिज्जति । नि० चू० प्र० १६२ अ ।

छोडियं–छोटित–घट्टितम् । प्रश्न० ८२ ।

छोडियपडियं–छोटितपतितम् । आव० २१८ ।

छोढुं–छोटयित्वा । नि० चू० तृ० ३७ अ । निक्षिप्य । आव० २६५ । स्थापयित्वा । आव० १६६ ।

छोता–विदारण । नि० चू० प्र० ५६ आ ।

छोभ–अभ्याख्यानम् । बृ० द्वि० १६४ आ । बृ० द्वि० ३१ अ ।

छोभगं–कलङ्कम् । नि० चू० प्र० २५२ अ । अब्भक्खाण । नि० चू० द्वि० ६४ आ । अभ्याख्यानम् । व्य० प्र० २०४ अ ।

छोभगदिन्नो–अभ्याख्यान दत्त यस्मिन् स छोभगदत्त । व्य० प्र० २०६ आ ।

छोभयं–अपमानम् । दश० ४७ ।

छोभवंदणं–आरभटया छोभवन्दन क्रियते । आव० ५२४ ।

छोभिय–क्षोभित–कदर्थीकृत । दश० ५८ ।

छोभो–निस्सहाय क्षोभणीयो वा । प्रश्न० ६४ ।

छोय–छोक लघु । भग० ३१८ ।

छोल्लेति–निस्तुषीकरोति । ज्ञाता० ११६ ।

ज

जं-यत् उद्देशवचनम् । आव० ४३८ । यदा । आव० ३५८ ।

जंकयसुकया–यदेव कृत शोभनमशोभन वा तदेव -

कृतमिन्यभिमन्यते पितृपौरादिभिर्यस्या सा यत्कृतसुकृता। अन्त० १६।

जंकिंचिमिच्छ–खेलसिंघानाविधिनिसर्गाभोगानाभोगसह–साकाराद्यसंयमस्वरूप यत्किञ्चिन्मिथ्या–असम्यक् तद्विषय मिथ्येदमित्येव प्रतिपूर्वक मिथ्यादुष्कृतकरण यत्किञ्चिन्मिथ्या प्रतिक्रमणमिति । ठाणा० ३८० ।

जंकिंचिमिच्छा–यत्किञ्चिन्मिथ्या–यत्किञ्चिदाश्रित्य मिथ्या । आव० ५४८ ।

जंकिंचिमिच्छामि–यत्किञ्चनानुचित तन्मिथ्या–विपरीत दुष्कृत मे–मम इत्येव वासनागर्भवचनरूपा एकाऽन्या गर्हा । ठाणा० २१५ ।

जगध–यद्गन्ध–यादृशगन्धवत् । ओघ० २२३ ।

जगल–निर्जल । बृ० प्र० १७५ आ ।

जगला–जङ्गला–जनपदविशेष । प्रज्ञा० ५५ ।

जगिले–जङ्गमा–त्रसास्तदवयवनिष्पन्न जाङ्गमिक–कम्बलादि । ठाणा० ३३८ । जगमजमौर्णिकादि । ठाणा० १३८ ।

जगिय–जङ्गमोष्ट्राद्यूर्णानिष्पन्नम् । आचा० ३६३ । त्रसावयवनिष्पन्न वस्त्रम् । बृ० द्वि० २०१ अ ।

जगोल–विषघातक्रियाऽभिधायक जङ्गोल–अगद तन्तन्त्र तद्धि सर्पकीटलूतादष्टविनाशार्थं विविधविषसयोगोपशमनार्थं चेति आयुर्वेदपञ्चमाङ्गम् । विपा० ७५ ।

जगोली–विषविघाततन्त्रमगदतन्त्रमित्यर्थ । ठाणा०४२७ ।

जघा–अङ्गविशेष । आचा० ३८ । सपूर्णजघाच्छादक चर्म । बृ० द्वि० २२२ आ । जान्वधोवर्ती खुरावधिरवयव । ज० प्र० २३४ ।

जघाचारण–लूतातन्तुनिर्वर्तितपुटकतन्तून् रविकरान् वा निश्रां कृत्वा जङ्घाभ्यामाकाशेन चरतीति जङ्घाचारण । विशे० ३८० ।

जंघाचारणा–अतिशयचरणाच्चारणाच्चारणा –विशिष्टाकाशगमनलब्धियुक्ता ते च जङ्घाचारणा । प्रश्न० १०६ । ये चारित्रतपोविशेषप्रभावत समुद्भूतगमनविषयलब्धिविशेषास्ते जङ्घाचारणा । प्रज्ञा० ४२५ । शक्तित किल रुचकवरद्वीपगमनशक्तिमान् । आव० ४७ । जङ्घाभ्यापारकृतोपकाराश्चारणा जङ्घाचारणा । भग० ७६३ ।

जघापरिजिय–मूलद्वारविवरणे साधु । जघापरिजितनामा साधु । पिण्ड० १४४ ।

जघाबलपरिहीणो–परिक्षीणजङ्घाबल । आव० ५३६ ।

जजुका–तृणविशेष । प्रज्ञा० ३० ।

जत–यन्त्रम् । उत्त० ११६ । प्रपञ्च । जीवा० १६६ । ३५६ । उच्चाटनाद्यर्थाक्षरलेखनप्रकार, जलसङ्ग्रामादियन्त्र वा । प्रश्न० ३८ । यन्त्र–अरघट्टादि । प्रश्न० ८ । नानाप्रकारम् । जीवा० १६० । अरकोपरिफलकचक्रवालम् । जीवा० १६२ । पाषाणक्षेपयन्त्रादि । औप० १२ । यन्त्रशाला गुडादिपाकार्या । यन्त्रशालासु गुडादिनामुत्सेचनार्थमलाबूनि धार्यन्ते । बृ० द्वि० २४६ अ । यन्त्र–सञ्चरिष्णुपुरुषप्रतिमाद्यरूपम् । ज० प्र० २६२ । चारकोपरि फलकचक्रवाल । ज०प्र० ३७ । यन्त्र–कोल्हूकादिघाणकविषयम् । पिण्ड० ११३ । यन्त्रिका । ओघ० ७५ । यन्त्र–व्रीह्यादिदलनोपकरणम् । पिण्ड० १०६ । गच्छन् । आव० ४२० ।

जंतकम्म–यन्त्रकर्म–बन्धनक्रिया । भग० ३२२ ।

जतग–मट्टियानी । दश० चू० ७६ । यात–यायी । आव० ४३१ ।

जतणा–यन्त्रणा–पीडा । आव० २३४ ।

जतपत्थर–यन्त्रप्रस्तर –घरट्टादिपाषाण, यन्त्रमुक्तपाषाणो वा । प्रश्न० २० । गोफणादिपाषाण । प्रश्न० ४८ ।

जतपासय–यन्त्रपाशक । आव० ३४२ ।

जतपीलग–श्रेणिविशेष । ज० प्र० १६४ ।

जतपीलणकम्म–यन्त्रपीडनकम । आव० ८२६ ।

जतलट्ठी–यन्त्रयष्टि –कूपिकर्मोपयुक्ता । दश० २१८ ।

जंतवाडचुल्ली–इक्षुयन्त्रपाटचुल्ली । ठाणा० ४१६ । यन्त्रपाटचुल्ली–इक्षुपीडनयन्त्र तत्प्रधान पाटकस्तस्मिन् चुल्ली । जीवा० १२४ ।

जताणि–पाषाणक्षेपणयन्त्राणि । सम० १३८ ।

जतिओ–यन्त्रित । आव० २०७ ।

जतुग–जन्तुक- जलाशयज तृणविशेष पर्णमित्यथ । प्रश्न० १२८ ।

जतुगा–वनस्पतिविशेष । सूत्र० ३०७ ।

जतुय–जन्तुक–तृणविशेषोत्पन्नम् । आचा० ३७२ ।

जंदिट्ठं–यदाचार्यादिना दृष्टमपराधजातं तदेवालोचयति । भग० ९१९ । ठाणा० ४८४ ।
जनतो–यज्ञयाजिन । निरय० २५ ।
जपानं–युगम् । अनु० १५९ ।
जप्पियं–जल्पित–मन्मनोल्लाप दि । उत्त० ६२६ ।
जंबवइ–जाम्बवती, अन्तकृद्दशाना पञ्चमवर्गस्य षष्ठमध्ययनम् । अन्त० १५ ।
जंववई–जम्बूमती । अन्त० १८ ।
जंववती–जाम्बूमती, कृष्णवासुदेवराज्ञी । अन्त० १८ ।
जंबाल–कर्द्दम । ठाणा० १४५ ।
जंबुडाल–जम्बूशाखा । आव० ३१८ ।
जंबुद्दीवे–नवमशतके जम्बूद्वीपवक्तव्यताविषय प्रथमोद्देशक । भग० ४२५ । जम्ब्वुपलक्षितस्तत्प्रधानो वा द्वीपो जम्बूद्वीप । आव० ७८८
जंबुफलकालिया–जम्बूफलवत् कालेव कालिका जम्बूफलकालिका । प्रज्ञा० ३६४ ।
जंबुवत्–सुग्रीवराजस्य मन्त्री । प्रश्न० ८९ ।
जंबुवती–नारायणराज्ञी । वृ० प्र० ३० आ ।
जंबू–वृक्षविशेषस्तदाकारा सर्वरत्नमयी या सा जम्बू । ठाणा० ८३७ । सुधर्मस्वामिन शिष्य । सूत्र० ७२ । प्रज्ञा० २२ । जम्बू–अपरनामसुदर्शना, वृक्षविशेष । उत्त० ३५२ । जम्बू–उत्तमतरुविशेष । प्रश्न० १३६ । स्थविर । वृ० प्र० १६६ अ । सत्पुरुषत्वे दृष्टान्त । वृ० प्र० २३० अ । सुहम्मस्स सिस्सो । नि० चू० प्र० २४३ अ । जम्बुणामेण पितापव्वावितो । नि० चू० द्वि० २९ आ । एकास्थिवृक्षविशेष । प्रज्ञा० ३१ । भग० ८०३ । ज्ञाता० १ ।
जंबूणय–जाम्बूनद–रक्तसुवर्णम् । ज० प्र० ३७४ । सुवर्णम् । ज० प्र० ५९ ।
जंबूणया–जम्बूनद–ईषद्रक्तस्वर्णम्, सिरिनिलयम् । ज० प्र० २८४ ।
जंबूणयामय–जाम्बूनदमयी–सुवर्णनिर्वृत्ती । भग० ४५९ ।
जंबूदीवंतो–जम्बूद्वीपान्त –जम्बूद्वीपदिक् । जीवा० ३१५ ।
जंबूद्दीवे–जम्बूवृक्षोपलक्षितो द्वीपो जम्बूद्वीप । अनु० ९० । जम्ब्वा वृक्षविशेषेणोपलक्षितो द्वीप जम्बूद्वीप । ठाणा० ३५ । सर्वद्वीपसमुद्राणामभ्यन्तरवर्ती द्वीप । प्रज्ञा० ३०७ । जम्ब्वा–सुदर्शनापरनाम्न्याऽनाहृतदेवावासभूतयोपलक्षितो द्वीप जम्बूद्वीप । ज० प्र० प्रस्ता० ४ ।
जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति–जम्ब्वा–सुदशनापरनाम्न्याऽनाहृतदेवावासभूतयोपलक्षितो द्वीपो जम्बूद्वीपस्तस्य प्रकर्षेण–नि शेषकुतीर्थिकसार्थागम्य यथावस्थितस्वरूपनिरुपणलक्षणेन ज्ञप्ति-ज्ञापन यस्या ग्रन्थपद्धतौ ज्ञप्तिर्ज्ञानं वा यस्या सकाशात् सा, अथवा जम्बूद्वीप प्रान्ति पूरयन्ति स्वस्थित्येति जम्बूद्वीपप्रा जगतीवर्षवर्षधराद्यास्तेषा ज्ञप्तिर्यस्या सकाशात् सा । ज० प्र० ४ ।
जंबूपेढे–जम्बूपीठम् । ज० प्र० ३३० ।
जंबूफलं–जम्बूफल फलविशेष । प्रज्ञा० ३६० ।
जंबूफलकलिका–रिष्ठाभा या मदिरा सा । ज० प्र० १०० ।
जंबूफलकालिवरप्रसन्ना–सुराविशेष । जीवा० ३५१ ।
जंबूवई–जम्बूवती । आव० ९५ ।
जंबूवणं–जम्बूवन–जम्बूवृक्षा एव समूहभावेन यत्र स्थितास्तत् । ज० प्र० ५४० ।
जंबूसडं–जम्बूखण्ड–ग्रामविशेष । आव० २०७ ।
जंभका–जृम्भका तिर्यग्लोकवासिनो देवविशेष । प्रश्ना० ११६ ।
जंभगो–जृम्भक–व्यन्तर । आव० १८० ।
जंभया–जृम्भन्ते विजृम्भन्ते स्वच्छन्दचारितया चेष्टन्ते ये ते जम्भका–तिर्यग्लोकवासिनो व्यन्तरदेवा । भग० ६५४ ।
जंभा–जृम्भा मत्स्यबन्धविशेष । विपा० ८१ ।
जंभाइए–जृम्भित–विवृतवदनस्य प्रबलपवननिर्गम । आव० ७७९ ।
जंभायत–विजृम्भमाण-शरीरचेष्टाविशेष विदधानम् । ज्ञाता० १६ ।
जंभियगाम–जृम्भिकाग्रामम् । आव० २२६, २२७ ।
जंपिय–यापित –कालान्तरप्रापित । ज्ञाता० २३१ ।
जंपियतिलकीडगा–यापिता कालान्तरप्रापिता ये तिला–धान्यविशेषास्तेषा ये कीटका –जीवविशेषस्तद्वद् ये वर्णसाधर्म्यात् ते तथा ताश्च यापिततिलकीटका । ज्ञाता० २३० ।

जं समयं–यस्मिन् समये । जीवा० १४३ ।

जइ–यति उत्तमाश्रमी प्रयत्नवान् वा । दश० २६२ ।

जइच्छा–यदृच्छा–अनभिसन्धिपूर्विकाऽर्थप्राप्तिः । प्रश्न० ३५।

जइण–जयिनी जयित्री । भग० १६७ । गमनान्तरजयवती–जविनी वा वेगवती । औप० ७० । जविन शीघ्रम् । भग० ६३१ । अनु० १७७ । जयिन –शीघ्रो वेगवता मध्येऽतिशीघ्र । औप० ६८ । जविनी–वेगवती । ज्ञाता० २३२ ।

जइणतरो–जवनतर –शीघ्रतर । आव० ६०२ ।

जइणवेग–जयी–शेषवेगवद्वेगजयी वेगो यस्य तत् । भग० १७५ ।

जइणवायाम–जविनव्यायाम –शीघ्रव्यापार । उपा०४७ ।

जइत–जयिक –राजादीना विजयकारि शकुन । ज्ञाता० १२५ ।

जइत्ता–जित्वा, याजयित्वा । उत्त० ३१४ ।

जइत्थ–जितवान् । भग० ३१७ ।

जइयव्वं–प्राप्तेषु सयमयोगेषु प्रयत्न कार्यं । भग० ४८४ ।

जइया यदा च दुर्भिक्षादौ । आव० ५३६ ।

जउ–जतु–लाक्षादारुमृत्तिके प्रसिद्धे इति । ठाणा० २७२ ।

जउण–यमुन योगसग्रहे आपत्सु दृढधर्मत्वदृष्टान्ते द्रव्यापह्नात् मथुराया राजा । आव० ६६७ ।

जउणराया–मथुराए राया । नि० चू० द्वि० ४१ अ ।

जउणा–नदीविशेष । ठाणा० ४७७ ।

जउणावंक–यमुनावक्र मथुरायामुद्यानविशेष । आव० ६६७ ।

जए–जय –विमलजिनप्रथमभिक्षादाता । आव० १४७ । जय –सामान्यो विघ्नादिविषय । औप० २३ । परैरनभिभूयमानता प्रतापवृद्धिश्च । राज०२३ । जीवा०२४३ । जय –परानभिभवनीयत्वरूप । ज० प्र० १८७ । जगत् जीवसमूह जङ्गमाभिधान । भग० ५७५ ।

जओ–यत यत्नवान् । उत्त० ५५ । जय । विशे०४८६ ।

जकारचकारादिभि –अपरं प्रकारं प्रकथ्य निन्दा विधत्ते । आचा० २४२ ।

जकारमकार– । उत्त० ५७ ।

जकारमकारादि–असभ्यम् । आव० ५८८ ।

जक्ख–श्वान । नि० चू० द्वि० ९९ अ ।

जक्खकद्दमो–यक्षकर्दमो नाम कुङ्कुमागुरुकर्पूरकस्तूरिकाचन्दनमेलापक । जीवा० ३१४ ।

जक्खगाह–यक्षग्रह –उन्मत्तताहेतु । भग० १९८ । जीवा० २८४ ।

जक्खघरमंडविया–यक्षगृहमण्डपिका । आव० १९५ ।

जक्खदिन्ना–यक्षदत्ता–कल्पकवशप्रसूतशकटालस्य द्वितीया पुत्री । आव० ६९३ ।

जक्खदीत्तग–यक्षदीप्तक–नभसि दृश्यमानाग्निसहित पिशाच । जीवा० २८३ ।

जक्खभद्दो–यक्षभद्र –यक्षे द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३७० ।

जक्खभूय–यक्षो भूतश्च व्यन्तरविशेषौ । ज्ञाता० ४६ ।

जक्खमह–यक्षमह–व्यन्तरविशेषस्य प्रतिनियत दिवसभावी उत्सव । जीवा० २८१ । आचा० ३२८ ।

जक्खमहाभद्दो–यक्षमहाभद्र –यक्षे द्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३७० ।

जक्खमहावरो–यक्षमहावर –यक्षे । समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३७० ।

जक्खरूवं–यक्षरूप–श्वाकृति । पिण्ड० १३१ ।

जक्खवरो–यक्षवर –यक्षे समुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देव । जीवा० ३७० ।

जक्खसिरि–चपाया सोमभूतीमाता ब्राह्मणस्य भार्या । ज्ञाता० १९६ ।

जक्खहरिलो–यक्षहरिल –ब्रह्मदत्तपत्नीना नागदत्ताऽऽदिकाना पिता । उत्त० ३७९ ।

जक्खा–व्यन्तरभेदविशेष । प्रज्ञा० ६९ । यक्षा–कल्पकवशप्रसूतशकटालस्याद्या पुत्री । आव० ६९३ ।

जक्खादित्त–यक्षोद्दीप्तमाकाशे भवति । आव० ७३५ ।

जक्खालित–यक्षादीप्तमाकाशे भवति एतेषु स्वाध्याय कुर्वता क्षुद्रदेवता छलना करोति । ठाणा० ४७६ ।

जक्खालित्तया–यक्षोदीप्तानि आकाशे व्यन्तरकृतज्वलनानि । भग० १९६ ।

जक्खिणी–यक्षिणी । अन्त० १७ । सम० १५२ ।

जक्खीए–यक्ष्या–अशुच्या (शुल्या) । बृ० तृ० २४० अ ।

जक्खो–यक्ष –द्वीपविशेष समुद्रविशेषश्च । जीवा० ३२१, ३७० । यक्ष । दश० ६८ । इज्यते पूज्यत इति, याति वा तथाविधर्द्धिसमुदयेऽपि क्षयमिति यक्ष । उत्त० १८७ ।

जग–यकम् । बृ० द्वि० १४६ अ । जगत्–औदारिकजन्तुग्राम । सूत्र० ५१ । यकृत्–दक्षिणकुक्षौ मासग्रन्थि । प्रश्न० ८ । जगन्ति–प्राणिन. । दश० १७६ । जग – जन्तु । सूत्र० १६२ । जगच्छब्देन सकलचराचरपरिग्रह, सकलचराचररूप, सकलप्राणीगणपरिग्रह । नदी० १३ । जगच्छब्देन सञ्ज्ञिपञ्चेन्द्रियपरिग्रह । नदी० १२ । लोकालोकात्मकम् । नदी० २३ । जगद्–धर्म्माधर्म्माकाशपुद्गलास्तिकायरूपम् । नदी० २३ ।

जगइ–जगती–जम्बूद्वीपकोट्टम् । ज० प्र० ३०३ ।

जगई–जगती–प्राकारकल्पा । ज० प्र० २८४ ।

जगईपव्वया–पर्वतविशेषा । ज० प्र० ४४ ।

जगच्चन्द्रा–आचार्यविशेष । ज० प्र० ५४३ ।

जगट्ठभासी–जगदर्थभाषी–जगत्यर्था–जगदर्था ये यस्य व्यवस्थिता पदार्थास्तानाभाषितु शीलमस्येति । कुण्ठिन कुष्ठीत्यादि यो यस्य दोषस्त तेन खरपरुष ब्रूयात् य सो वा । जयार्थभाषी यथैवाऽऽत्मनो जयो भवति तथैवाविद्यमानमप्यर्थं भाषते तच्छीलश्च–येन केनचित्प्रकारेणासदर्थभाषणेनाप्यात्मनो जयमिच्छतीति । सूत्र० २३४ ।

जगडिज्जंता–कदर्थ्यमाना । ग० ।

जगडितो–प्रेरितो । नि० चू० प्र० ७७ अ ।

जगती–जम्बूद्वीपस्य प्राकारकल्पा पालीति । सम० १४ । वेदिकाधारभूता पाली । ठाणा० ४३६ ।

जगतीपव्वयं–जगतीपर्वतक -पर्वतविशेष । जीवा० २०० ।

जगतीसमिया–जगत्या समा-समाना सैव जगतीसमिका । जीवा० १८० ।

जगत्स्वभावः–द्रव्याणामनादिमत्परिणामयुक्तता प्रादुर्भावतिरोभावस्थित्यन्यतानुगुणविनाशा । तत्त्वा० ७-७ ।

जगनिस्सिए–जगन्निश्रित –चराचरसरक्षणप्रतिबद्ध । दश० २३१ ।

जगय–यकृत –दक्षिणकुक्षिगतोदरावयवविशेष । भग० ५०० ।

जगारमगारं–जन्ममर्मकर्म । ग० ।

जगारि– । बृ० प्र० २५७ अ ।

जग्गण–जागरण–रात्रौ प्रहरकप्रदानम् । बृ०प्र०२६० अ ।

जग्गहो–यद्ग्रह । आव० २२३ ।

जग्गावइ–जागरयति–कुशलानुष्ठाने प्रवर्त्तयति । आचा० ३०७ ।

जघन्य–अधमम् । आव० ५८५ ।

जघन्य–नैश्रयिक । आव० ११ ।

जघन्यस्थितिका –जघन्या–जघन्यसङ्ख्या समयापेक्षया स्थितिर्येषा ते–एकसमयस्थितिका । ठाणा० ३५ ।

जच्च–जात्य –प्रधान । ज्ञाता० २६ । जीवा० २७१ । जात्य उत्कृष्ट । आव० १८३ । जात्य –काम्बोजादिदेशोद्भव । ज्ञाता० ५८ ।

जच्चकणगं–जात्यकनक–षोडशवर्णककाञ्चनम् । ज० प्र० १४८ ।

जजुव्वेद–यजुर्वेद –चतुर्णां वेदाना द्वितीय । भग० ११२ ।

जज्जरिते–झर्झरितो जर्जरितो वा सतन्त्रीककरटिकादिवाद्यशब्दवत् । ठाणा० ४७१ ।

जज्जियं–यावज्जीवम् । व्य० प्र० २५१ ।

जज्जीवं–यावज्जीव–जीवितपर्यन्तम् । पिण्ड० १४५ । यावज्जीवम् । व्य० द्वि० २८ आ ।

जट्ठि–प्रहारविशेष । नि० चू० प्र० ३२ अ ।

जडालो–जटाल –अष्टाशीतौ महाग्रहे त्रयपञ्चाशत्तम । ज० प्र० ५३५ ।

जडिज्जइ–वध्यते । आव० ६२१ ।

जडियाइल्लए–अष्टाशीतौ महाग्रहे पञ्चपञ्चाशत्तम । ठाणा० ७९ ।

जडिल–जटावती–वलितोद्वलिता । भग० ७०५ ।

जडिलए–जटिलक –पञ्चदशभेदेषु कृष्णपुद्गलेषु द्वितीयभेद । सूर्य० २८७ । राहुदेवस्य द्वितीयनाम । सूर्य० २८७ ।

जडी–जटित्वम् । उत्त० २५० ।

जड्ड–स्वहितपरिज्ञानशून्यत्वात् जड्ड । आव० ७९७ । हस्ती । बृ० प्र० २४७ आ । बृ० द्वि० १०६ अ । बृ० तृ० २३९ आ । पिण्ड० ११५ । हत्थी । नि० चू० प्र० ४७ आ । नि० चू० प्र० २०० आ । नि० चू० द्वि० १०६ आ । ओघ० ९७ ।

जड्डुतरी-वहुलतरी । नि० चू० द्वि० १४१ अ ।
जड्डो-शून्य । महाप० ।
जढ-रहितम् । व्य० प्र० २४६ आ । परित्यक्त । ओघ० ८४ । वृ० प्र० १/४ आ ।
जढा-त्यक्ता । ओघ० ४६, १७८ । परित्यक्ता । दश० २०५ । वृ० द्वि० २१३ अ ।
जण-जन -सामान्यो जन । दश० ८३ । लोक । उत्त० १९३ । जायत इति जन -लोक । उत्त० २४४ । नगरीवास्तव्यलोक । ज्ञात०१ । औप०२ । जायत इति जन । आव० ४६ । नदी० १११ । जन -नगरीवास्तव्यो लोक । सूर्य० २ । परिजन । दश० ८६ । प्राणी । दश० ६४ । नगरवास्तव्यलोक । भग० ७ । जन -नगरीवास्तव्यलोक । ज० प्र० ७५ ।
जणक्खया-लोकमरणानि । भग० १९७ ।
जणग-जनक -मिथिलायामधिपति । आव० २२१ । मिथिलानगर्यां राजा । प्रश्न० ८६ । जायते इति जन लोक स एव जनक । सूत्र० १७७ ।
जणगा-जनका -मातापित्राद्यो जना वा । आचा० २३९ ।
जणजपणय-जनहेला । ग० ।
जणणी-जनयति-प्रादुर्भावयत्यपत्यमिति जननी । उत्त० ३८ ।
जणत्ता-जनता । आव० ५५९ ।
जणवूहे-जनव्यूह -चक्राद्याकारो जनसमुदाय । भग० ११३, ४६३ ।
जणमणणयणाणंदो-जनमनोनयनानन्द । आव० ३५८ ।
जणमारि-जनमारि । आव० ६३ ।
जणवओ-जनपद -विशिष्टलोकसमुदायो वा ग्रामादिवास्तव्यजनसमुदाय । वृ० प्र० १९९ आ ।
जणवतो-जनपद -जनवृन्दम् । उत्त० ११३ । देश । आव० ३१७ ।
जणवय-जनपद -देश । ठाणा० ४८९ । जनपदे भवा जानपदा -कालप्रष्टादयो राजादयो वा मगधादिजनपदा वा । आचा० १९३ ।
जणवयकहा-रम्यो मध्यदेश इत्यादिरूपा जनपदकथा । दश० ११४ ।
जणवयकुलं-जनपदकुल-लोकगृहम् । प्रश्न० ५२ ।
जणवयवग्ग-जनपदवर्ग -देशसमूह । भग० १९३ ।
जणवयसच्च-जनपदसत्य नानादेशभाषारूपमप्यविप्रतिपत्त्या यदेकार्थप्रत्यायनव्यवहारसमर्थम् । दश० २०८ ।
जणवयसच्चा-जनपदसत्या-पर्याप्तिकसत्याभाषाया प्रथमो भेद । त त जनपदमधिकृत्येष्टार्थप्रतिपत्तिजनकतया व्यवहारहेतुत्वात् सत्या जनपदसत्या । प्रज्ञा० २५६ ।
जणवह-जनवध जनव्यथा वा । भग० ३२२ ।
जणवाए-जनवाद -जनाना परस्परेण वस्तुविचारणम् । औप० ५७ ।
जणवाय-जनवाद-द्यूतविशेषम् । ज० प्र० १३७ ।
जणवूह-जनव्यूह -चक्राद्याकार समूहस्तस्य शब्दस्तद्भेदाज्जनव्यूह । विपा० ३६ ।
जणसंनिवाए-जनसन्निपात -अपरापरस्थानेभ्यो जनाना मीलनम् । भग० ११५ ।
जणसमद्दे-जनसम्मर्द उरो निष्पेष । भग० ११३ ।
जणहियाकारणए-जनहितस्याकर्त्तेत्यर्थं । ज्ञाता० ८१ ।
जणीओ-स्त्रिय । पउ०५१-१२ । नार्य । पउ०७८-५-१० ।
जणीण-नारीणाम् । पउ० ७५-५-१० ।
जण्ण-यज्ञ -प्रतिदिवस स्वस्वेष्टदेवतापूजा । ज० प्र० १२३ ।
जण्णजत्ता-यज्ञयात्रा । आव० ५७८ ।
जण्णजसो-यज्ञयशा सत्यो(शौचो)दाहरणे समुद्रविजयराज्ये उञ्छवृत्तिस्तापस । आव० ७०५ ।
जण्णदत्तो-यज्ञदत्त । उत्त० १११ ।
जण्णवाड-यज्ञवाट, यज्ञपाट वा । उत्त० ३५८ ।
जण्णिए-यज्ञेन यजति लोकानिति याज्ञिक । आव०२४० ।
जण्णुय-जानु । आव० ६७० ।
जण्णू-यज्ञ -नागादिपूजारूप । आव० १२९ ।
जतण-यजन-अभयस्य दान यतन वा-प्राणिरक्षण प्रयत्न । अहिंसाया अष्टचत्वारिंशत्तम नाम । प्रश्न० ९९ ।
जति-यति -प्रव्रजित । ओघ० ११६ । यतिदोष -अस्थानविच्छेद, तदकरण वा, सूत्रदोषविशेष । आव० ३७४ । यतन्ते उत्तरगुणेषु विशेषत इति यतयो-विचित्रद्रव्याद्य-

भिग्रहाद्युपेता साधव । राज० ४६ ।

जतिणं-जयनीत्व शेषकूर्म्मगतिजेतृत्वात् । ज्ञाता० ६६ ।

जतिणा-जयिन्या विपक्षजेतृत्वेन । ज्ञाता० ३६ ।

जतुगृहं-लाक्षागृहम् । उत्त० ३७८ ।

जतो-जय -अपगम । व्य० प्र० २२ आ ।

जत्त-यात्रा-सङ्ग्रामयात्रा । निरय० १७ । यत । आचा० ५३ । यात्रा । आव० १७३ । वन्दनके चतुर्थस्थानम् । आव० ५४८ । यत् । उत्त० ५५ ।

जत्ता-यात्रा-तपोनियमादिलक्षणा, क्षायिकमिश्रोपशमिकभावलक्षणा वा । आव० ५४७ । यात्रा-विग्रहार्थं गमनम् । ज्ञाता० १४६ । यात्रा । आव० २१६, २२५ । सयमयात्रा । उत्त० ५५ ।

जत्ताभयगो-दसजोयणाणि मम सहाएण एगागिणा वा गतव्य एत्तिएण धणेण, ततो पर ते इच्छा, अन्ने उभयं भणति-गतव्य कम्म च से कायव्वति । नि० चू० द्वि० ४४ अ ।

जत्तासिद्धो-यो द्वादश वारा समुद्रमवगाह्य कृतकार्य आगच्छति सो । यात्रासिद्ध । आव० ४१४ ।

जत्थऽत्थमिए-यो यत्रैवास्तमुपैति सविता तत्रैव कायोत्सर्गादिना तिष्ठतीति यत्रास्तमित । सूत्र० ६५ ।

जन-अस्यास्मन्मित्रविग्रहस्य परित्राण मत्तो भविष्यति इत्यादिकरूपम् । ठाणा० १५२ । तिर्यग्नरामरा एव, जायन्त इति जना । आचा० २५५ ।

जनपदा-जनाना-लोकाना पदानि अवस्थानानि येषु ते जनपदा -अवन्त्यादय साधुविहरणयोग्या अर्द्धषड्विंशतिर्देशा । आचा० २५४ ।

जना-जीवा । नदी० १११ ।

जनार्दन-कृष्ण । व्य० प्र० १८८ आ । वृ० तृ० २३० आ ।

जन्न-यज्ञ -पूजा । वृ० द्वि० १६६ आ । यज्ञ -नगादिपूजा । भग० ४७३ । ज्ञाता० ५६ । प्रश्न० १४०, १५५ । भावतो देवपूजा । अहिंसाया पट्चत्वारिंशत्तम नाम । प्रश्न० ६६ । याग । प्रश्न० ३६ ।

जन्नइ-यज्ञयाजिन । भग० ५११ ।

जन्नइज्जं-याज्ञीय-उत्तराध्ययनेषु पञ्चविंशतितममध्ययनम्। उत्त० ६ ।

जन्नई-यज्ञयाजिन । औप० ६० ।

जन्नतिज्ज-उत्तराध्ययनेषु पञ्चविंशतितममध्ययनम् । सम० ६४ ।

जन्नदत्तो-यज्ञदत्त -सत्यो(शौचो)दाहरणे यज्ञयश सौमिश्यो पुत्र । आव० ७०५ ।

जन्नवाड-यज्ञपाट । आव० २२६ । उत्त० ३५८ ।

जन्नवायपडिए- । आचा० ४७४ ।

जन्नोवइए-यज्ञोपवीतम् । आव० ३०५ ।

जन्म-लोक । प्रश्न० ८६ ।

जप-मन्त्र्याद्याभ्यास । अनु० २६ ।

जपा-गुच्छविशेष । आचा० ५७ ।

जपाकुसुम-पुष्पविशेष । जीवा० १६१ ।

जप्प-परिगृह्य सिद्धान्त प्रमाण च छलजातिनिग्रहस्थानपर भाषण यत्र जल्प । नि० चू० प्र० २४० अ । वाद एव छलजातिनिग्रहस्थानपरो जल्प । सम० २४ । सम्यग्हेतुदृष्टान्तैर्यो वाद । सूत्र० ६३ । वाद एव विजिगीषुणा सार्धं छलजातिनिग्रहस्थानसाधनोपालम्भ । सूत्र० २२६ ।

जम-यमो-दक्षिणदिक्पाल । ज० प्र० ७५ । यमा -प्राणातिपातविरमणादय । ज्ञाता० ११० ।

जमईए-यमकीय-यमकनिबद्धसूत्रम् । सम० ३१ ।

जमईयं-यदतीत-सूत्रकृताङ्गाद्यश्रुतस्कन्धे पञ्चदशमध्ययनम् । आव० ६५१ ।

जमकाइय-यमकायिक । भग० १६७ । यमकायिक -दक्षिणदिक्पालदेवनिकायाश्रितोऽसुर अम्बादि । प्रश्न० १६ ।

जमग-यमक -शकुनिविशेष । जीवा० २८६ ।

जमगपव्वए-पर्वतविशेष । भग० ६५४ ।

जमगप्पभं-यमकप्रभ यमक -शकुनिविशेषस्तत्प्रभ तदाकारम् । जीवा० २८६ ।

जमगवरा-यमकवरौ-नीलवद्वर्षधरप्रत्यासन्नो शीताभिधानमहानद्युभयतटवर्तिनौ पर्वतौ । प्रश्न० ६६ ।

जमगसढाणसंठिआ-यमकौ-यमलजातौ भ्रातरौ तयोर्यत्सस्थान तेन सस्थितौ परस्पर सदृशसस्थानौ, अथवा

यमका नाम शकुनिविशेषास्तत्संस्थानसंस्थितौ । ज० प्र० ३१६ ।

जमगसमग–यमकसमक–युगपत् । विपा० ४० । ज० प्र० १६२ । यमकसमक एककालम् । राज० २४ । यौगपद्येनेत्यर्थ । उपा० ३५ । युगपत् । ज्ञाता० १४६ ।

जमगा–यमका–शकुनिविशेषा । ज० प्र० ३१६ । यमकौ । ज० प्र० ३१६ । यमकौ–उत्तरकुरौ पर्वतविशेषौ । ज० प्र० ३१६ । पर्वतविशेषौ । जीवा० २८६ ।

जमगाण–यमकदेवाभिलापेन । ज० प्र० ३१६ ।

जमतीय–यदतीत–सूत्रकृताङ्गस्य पञ्चदशमध्ययनम् । सूत्र० २५३ ।

जमदग्गिओ–जामदग्न्य–परशुराम । आव० ३६१ ।

जमदग्गिजडा–जमदग्निजटा–वालक । उत्त० १४२ ।

जमदग्गिसुओ–जमदग्निसुत–पर्शुराम । जीवा० १२१ ।

जमदग्गि–परशुरामपिता स । सूत्र० १७०, १७८ ।

जमदेवकाइय–यमदेवताकायिक–यमसत्कदेवताना सम्बन्धिन । भग० १६७ ।

जमप्पभे– । ठाणा० ४८२ ।

जमल–सहवर्त्ति । भग० ६७२ । यमल–समसंस्थितद्वयरूपम् । ज्ञाता० २ । यमल–समश्रेणिकम् । जीवा० १६६, २०७, ३५६ । यस्मिन् द्वौ द्वौ वर्गौ समुदितौ एक तत् । प्रज्ञा० २८० ।

जमलजणणीसरिच्छा–यमलजननीसदृश । ओघ०१८५ ।

जमलजुगल–यमलयुगल–समश्रेणिकयुगलरूपौ । जीवा० २७५ ।

जमलजुगलजोहालो–यम लाति–आदत्त इति यमला, यमला युग्मजिह्वा यस्य स यमलयुग्मजिह्व । आव०५६६ ।

जमलजुयल–यमलयुगल–समश्रेणिक युगलम् । राज० २२ । जीवा० १२२ । यमलयुगल–द्वयम् । भग० ३१८ ।

जमलज्जुणा–यमलार्जुनौ–कृष्णपितृवैरिणौ विकुर्वितवृक्षरूपौ विद्याधरौ । प्रश्न० ७५ ।

जमलपय–समयपरिभाषयाऽष्टानामष्टानामङ्कस्थानाना यमलपदमिति सञ्ज्ञा । प्रज्ञा० २८० । कालतवा । नि० चू० द्वि० ६० आ ।

जमलपया–तपःकालयो सञ्ज्ञा । बृ० प्र० ६३ आ ।

जमलपाणिणा–मुष्टिना । भग० ७६७ ।

जमला–यम लाति–आदत्त इति यमला । आव० ५६६ ।

जमलिय–यमलतया समश्रेणितया तत्तरूणा व्यवस्थितत्वात् सजातयमलत्वेन यमलितम् । भग० ३७ । यमलतया समश्रेणितया व्यवस्थिता । ज्ञाता० ५ ।

जमलियाओ–यमल नाम समानजातीययोर्लतयोर्युग्म तदसञ्जातमास्विति यमलिता । ज० प्र० २५ ।

जमलोइया–यमलौकिकात्मन अ(म्बाम्ब)म्बर्ष्यादय । सूत्र० २२१ ।

जमा– । भग० ४६३ ।

जमालि–सम्यक्शास्त्रार्थपरिज्ञानविकल । बृ० प्र० २१६ आ । निह्नवविशेष । सूत्र० ६८ । आव० ५२३ । उत्त० १८ । नदी० २४८ । मिथ्यादर्शनशल्ये दृष्टान्त । आव० ५७६ । प्रथमो निह्नव । ठाणा० ४१० । भग० ६१६, ६२० । यस्माद्बहुरता उत्पन्ना स आचार्यविशेष । आव० ३११ । विशे० ६३४ । प्रथमो निह्नव । व्य० द्वि० १७६ अ । भग० ५४८ । निर्गमे दृष्टान्त । ज्ञाता० १५२ ।

जमालिपभवो–जमालिप्रभव–बहुरत । आव० ३११ ।

जमाली–राजकुमारनाम । निरय० ४० । अश्रद्धाया दृष्टान्त । नि० चू० तृ० १२७ आ । भग० ५४८ । जमालि–भगवद्भागिनेय । विपा० ६० । बहुरतविषयो निह्नव, सुदर्शनासुत । उत्त० १५३ । क्षत्रियकुण्डग्रामे कुमारविशेष । भग० ४६१ ।

जमिगाओ–यमिके नाम राजधान्यौ । ज० प्र० ३१६ ।

जमुत्त–यदुक्त–एतत् तात्पर्यमित्यर्थ । विशे० १२२८ ।

जम–चमरेन्द्रस्य द्वितीयो लोकपाल । ठाणा० १६७ । अहिंसादिर्यम । प्रश्न० १३२ ।

जम्बूलए–जम्बूलका । उपा० ४० ।

जम्बूस्वामी–गुरुपर्यक्रमलक्षणसम्बन्धोपदर्शने सुधर्मस्वामिशिष्य । भग०६ । अनन्तरागमवान् । आव० ५७ । सुधर्मस्वामिन शिष्य । नदी० ११४ । अनु० २१६ । आचा० २५ ।

जम्म–जन्म–सम्भूतिलक्षणम् । जीवा० ६० ।

जम्मणमहो–जन्ममह–जन्मोत्सव । आव० १२१ ।

जम्मणसंतिभावं-जन्म-उत्पाद सद्भावश्च-विवक्षितक्षेत्रादन्यत्र तत्र वा जातस्य तत्र चरणभावेनास्तित्वम् । भग० ८६५ ।

जम्मन्धो- । नि० चू० द्वि० ४१ अ ।

जम्मपक्कं- । विपा० ८० ।

जम्मा-यमा । ठाणा० १३३ ।

जम्मो-यम तापसपल्लया तापसविशेष । आव० ३६१ ।

जयत-विमानविशेष । आचा० २१ । जयन्त -पश्चिमदिग्वर्तिजम्बूद्वीपस्य द्वार । यतमान -उद्गमादिदोषपरिहारी । आचा० ३६० । सम० ८८ । जम्बूद्वीपस्य-चतुर्द्वारे तृतीयम् । ठाणा० २२५ । भाविप्रथमो विष्णु । सम० १५४ । जयन्त -अनुत्तरविमानपञ्चके पश्चिमदिग्वर्ति । ज्ञाता० १२४ ।

जयंतपवर-जयन्तप्रवर-जयन्ताभिधान प्रवरमनुत्तरविमानम् । ज्ञाता० १४६ ।

जयतपुर-मालापहृतद्वारविवरणे नगरम् । पिण्ड० १०८ ।

जयत-जयन्त पश्चिमदिग्वर्ति जम्बूद्वीपस्य द्वारम् ज० प्र० ३०६ ।

जयंता-अनुत्तरोपपातिकभेदविशेष । प्रज्ञा० ६६ । जयन्ता-उत्तरदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्यापरस्या पुष्करिणी । जीवा० ३६४ ।

जयति-जयन्ती पूर्वदिग्रुचकवास्तव्या दिक्कुमारी । आव० १२२ । नवमी रात्रि नाम । ज० प्र० ४६१ । सूर्य० १४७ । वल्लीविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

यती-सयाणीयभगिणी । बृ० द्वि० १६८ अ । जयन्ती राजधानी । ज० प्र० ३५७ । वैजयन्ती राजधानी । ज० प्र० ३५७ । उत्कृष्टमालापहृते सुरदत्तस्य वास्तव्यापुरी । पिण्ड० १०६ । सम० १५१ । ठाणा० २३१, २०४ । महाग्रहस्य तृतीयाऽग्रमहिषी । भग० ५०५,५५६ । जयन्ती । ज० प्र० ३६१, ५३२ । नन्दनवलदेवमाता । आव० १६२ । उत्पलभगिनी । आव० २०२ । अकम्पितमाता । आव० २५५ ।

जयतीए- । भग० ५५६ ।

जयतीओ- । ठाणा० ८० ।

जय-पराभिभव । ठाणा० २५० । यत -प्रयत्नवान् । आव० २८६ । यत-गवाक्षकादीनामवलोकयन् । दश० २३१ । चक्रवर्तिविशेष । उत्त० ४४८ । यत -यत्नवान् । ओघ० ३७ । यत-तदुद्वेगमनुत्पादयन् । दश० १८४ । अत्वरितम् । दश० १७८ । जयनामा एकादशचक्रवर्ती । आव० १५६ ।

जयई-यजन्ताम् । उत्त० ३७१ ।

जयकुञ्जर -कुञ्जरमुख्य । भग० १ ।

जयघोस-जयघोष -ब्रह्मगुणनिरूपेण विप्र । उत्त० ५२० ।

जयणं-यतन-प्राप्तेषु सयमयोगेषु प्रयत्न-उद्यम । प्रश्न० १०६ ।

जयणा-तिपरिखा अलभे पच्छा पणगहाणी । बृ० १५६ आ । तिपरियट्ट काऊण अप्पहुप्पणो पच्छा पणगादि पडिसेवणा पडिसेवति एस जयणा । नि० चू० प्र० ३७ आ । नि० चू० प्र० १३६ अ । जहा जीवोवघातो न भवतीत्यर्थं । नि० चू० प्र० १८६ अ । असद्भावस्स अववादपत्तस्स जो अकप्पपडिसेवणे जोगो तत्थिम रागदोसवियुत्तत्तण सा जयणा । नि० चू० तृ० १४८ आ । यतना-बहुदोषत्यागेनाल्पदोषाश्रयणम् । औप० ४८ । उत्त० ५१५ । प्रयत्नकरणलक्षणा । दश० ७४ । पृथिव्यादिष्वारम्भपरिहारयत्नरूपा । दश० १२० ।

जयणाए-जयिन्या विपक्षजेतृत्वेन । भग० ५२७ ।

जयति-कर्मक्षपण उद्यत । ओघ० २२० । इन्द्रियविषयकषायघातिकर्मपरिषहोपसर्गादिशत्रुगणपरिजय... अर्द्धशमध्ययनप्यतिशेते त (प्रति प्रणतोऽस्मि) । नदी ...

जयद्दह-हस्तीनागपुरे राजकुमार । ज्ञाता० ... यमकायिक -,

जयनंदा-जगन्नन्द जगत्समृद्धिकर । ज० प्र० ... । प्रश्न० ...

जयनामो- । सम० ...

जयसधी-जयसन्धि -अलोभोदाहरणेऽमात्य । आव० ७०१ ।

जयसुन्दरी-गर्भाधानपरिरूपमूलद्वारविवरणे सिन्धुराज पत्नी । पिण्ड० १४५ ।

जयहत्थि-जयहस्ती-पट्टहस्ती । आव० ७१६ ।

जयहत्थी-जयहस्ती । उत्त० ३०० ।

जया-यस्मादर्थे । दश० चू० १५७ । औषधिविशेष । उत्त० ४६० । जया-वासुपूज्यमाता । आव० १६० । सम० १५१, १५२ ।

जर–जरा–वयोहानिलक्षणा । प्रज्ञा० ३ ।
जरकुमार–जराकुमार–कृष्णवधक । अन्त० १६ । वसुदेवपुत्र । नि० चू० प्र० १६४ आ ।
जरग्गहिया–ज्वरग्रहिता–सामायिकलाभे हृष्टान्त । आव० ७५ ।
जरढ-जरठम् । जीवा० १८८ । पुराणम् । औप० ७ । जरठानि, पुराणत्वात् कर्कशानि । ज० प्र० २६ ।
जरते–जरक । ठाणा० ३६५ ।
जरला–चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषा । जीवा० ३२ ।
जरा–जरा–वयोहानिलक्षणा । दश० २३३ । वार्द्धक्यम् । भग० १६७ । वयोहानिलक्षणा । आव० १४८ ।
जराउ–जरायु–गर्भवेष्टनम् । प्रश्न० ६० ।
जराउय–जरायुवेष्टिता जायन्त इति जरायुजा, गोमहिष्यजाविकमनुष्यादय । दश० १४१ । मनुष्यादय । प्रश्न० ६० ।
जराकुणिम–जराकुणपश्च–जीर्णताप्रधानशब्द । भग० ४६६ ।
जराकुमार–वासुदेवजेट्ठभाऊ । बृ० तृ० ११३ अ ।
जराजुण्णा–जराजीर्णा । व्य० द्वि० २६६ अ ।
जराघुणिय–जराघूर्णितम् । उत्त० ३२६ ।
जरासन्ध–नृपविशेष । प्रश्न० ६० । जरासन्ध । आव० ३६५ । राजविशेष । दश० ३६ । राजगृहनगरनायको नवम प्रतिवासुदेव । प्रश्न० ७५ । अप्रमादविषये राजगृहनगरे राजा । आव० ७२१ ।
जरासिंधु–जरासिन्ध-राजगृहे नृपति । उत्त० ४६० । ज्ञाता० २०६ । जरासिन्धु–कृष्णवासुदेवशत्रु नवम प्रतिवासुदेव । आव० १५६ ।
जरु–जरायु । आव० ७४२ ।
जरुला–चतुरिन्द्रियजन्तुविशेष । प्रज्ञा० ४२ ।
जरो–ज्वर । प्रश्न० १६ ।
जलति–ज्वलन्ति–ज्वालारूपा भवन्ति भास्वराग्निता प्रतिपद्यन्त इत्यर्थ । ज० प्र० ४१६ ।
जलतो–जलान्त–जलपर्यन्त, जलस्योपरि प्रकट । जीवा० ३१५ ।
जल–सामायिकलाभे दृष्टान्त । आव०७५ । जलकान्तेन्द्रस्य प्रथमो लोकपाल । ठाण० १६८ ।
जलइ–ज्वलति–ज्वालामालाकुलो भवति । जीवा० २४८ ।
जलइत्तइ-ज्वालयितु-उत्पादयितु वृद्धिं वा नेतुम् । दश०२०१ ।
जलकंत–जलकान्त–पृथिवीभेद । आचा० २६ । उदधिकुमाराणामधिपति । प्रज्ञा० ६४ । जीवा०१७० । ठाणा० ८४, २०५ । जलकान्तेन्द्रस्य लोकपाल । ठाणा० १६८ । मणिभेद । उत्त० ६८६ । सप्तमो दक्षिणनिकायेन्द्र । भग० १५७ । जलकान्त–मणिविशेष । जीवा० २३ । आव० ३५५ । प्रज्ञा० २७ ।
जलकारी–चतुरिन्द्रियजीव । उत्त० ६९६ ।
जलकीड–देहशुद्धावपि जलेनाभिरति । निरय० २६ ।
जलचर–जलचर मत्स्यादि । दश० ५५ ।
जलचारिया–चतुरिन्द्रियविशेषा । जीवा० ३२ । प्रज्ञा० ४२ ।
जलज–पद्मम् । जीवा० १३६ । जलज–पद्मम् । भग० ३०६ ।
जलण–ज्वलन शैत्यापनोदाय वैश्वानरस्य ज्वलन शोषणार्थं वा प्रकाशकरणाय वा दीपप्रबोधनम् । प्रश्न० १२७ । ज्वलयति–दहतीति ज्वलन–क्रोध । सूत्र० ५२ ।
जलणप्पवेसे– । ठाणा० ६३ ।
जलणसिहा–ज्वलनशिखा–आचारविषये हुताशनब्राह्मणभार्या । आव० ७०७ ।
जलणाइभयं–ज्वलनादिभयम् । आव० ४०७ ।
जलणो–ज्वलन–आचारविषये हुताशनब्राह्मणज्येष्ठपुत्र । आव० ७०७ ।
जलधरा–वृषणो । बृ० तृ० ६८ आ । नि० चू० द्वि० ३२ अ ।
जलन–ज्वलन–दीपनम् । उत्त० ७११ ।
जलपट्टण–जलेण जस्स भंड आगच्छति । नि० चू० द्वि० ७० आ । जलपट्टण पुरिमाती । नि० चू० प्र० २२६ अ । जलपत्तन–यत्र जलपथेन भाण्डानामागमस्तदाद्यम् । प्रश्न० ३८ ।
जलपत्तन–जलमध्यवर्ति पत्तनम् । उत्त० ६०५ । आचा० २८५ ।
जलप्पभ–जलप्रभ–उत्तरनिकाये सप्तम इन्द्र । ठाणा०

८४ । जीवा० १७१ । भग० १५७ । उदधिकुमाराणामधिपति । प्रज्ञा० ६४ ।

जलप्लव.–उत्पुर ।

जलबुब्बुयसमाणो–जलबुद्बुदसमान ।

जलभृङ्गारं– ।

जलमलं–मालिन्यम् । ज्ञाता० ३५ । जलमूगो–जहा जले निव्वुड्डो उल्लावेति 'बुडबुडे ति वा जल एव जलमूगो । नि० चू० द्वि ३६ आ ।

जलमूय–जलमूक –जलप्रविष्टस्येव 'बुडबुड'इत्येव रूपो ध्वनिर्यस्य स । प्रश्न० २५ ।

जलमूयओ–जलमूक –जले ब्रूडित इव भाषमाण । आव० ६२८ ।

जलयं–जलज–पद्मादि । ज० प्र० ३६० ।

जलयर–जलचरज–पूट्ठालविशेष । आव० ८५४ । जले–चरन्ति-पर्यटन्तीति जलचरा । प्रज्ञा० ४३ । जलचर–तन्दुलमत्स्यप्रभृति । जीवा०१२६ । जले चरन्ति गच्छति चरेर्भक्षणमित्यर्थ इति भक्षयन्ति चेति जलचरा । उत्त० ६६८ ।

जलरत्त–जलप्रभेन्द्रस्य लोकपाल । ठाणा० १६८ ।

जलराक्षसा–राक्षसभेदविशेष । प्रज्ञा० ७० ।

जलरुह्–जलरुह –द्वीप समुद्रोऽपि च । प्रज्ञा० ३०७ । जले रुहन्तीति जलरुहा –उदकावकपनकादय । प्रज्ञा० ३० । जीवा० २६ । जले रुहन्तीति पद्मादय । उत्त० ६६२ ।

जलवासिणो–जलनिमग्ना । भग० ५१६ । ये जलनिषण्णा एवासते । निरय० २५ ।

जलविच्छुय–जलवृश्चिक –चतुरिन्द्रियजन्तुविशेष । प्रज्ञा० ४२ । जीवा० ३२ ।

जलवीरिए–जलवीर्य । ठाणा० ४३० ।

जलाभिसेयं–जलक्षरणम् । भग० ५२० ।

जलाभिसेयकढिणगायभूता–तत्र जलाभिषेककठिनगात्रभूता प्राप्ता ये ते । ये स्नात्वा न मुञ्जते, स्नात्वा स्नात्वा पाण्डुरीभूतगत्रा इति । निरय० २५ ।

जलुगा–जलौका–जलजन्तुविशेष । आव० ६२३ ।

जलूगा–जलौका–अनेषणा प्रवृत्तदायकस्य मृदुभावनिवारणार्थसूचकत्वात् साधोरुपमानम् । दश० १८ । जलजन्तुविशेष । आव० १०२ । जलौकस –दुष्टरक्ताकर्षिण्य । उत्त० ६६५ ।

जलोया–द्वीन्द्रियजन्तुविशेषा । प्रज्ञा० ४१ । जीवा० ३१ । चर्मपक्षिविशेष । प्रज्ञा० ४१ । जीवा० ४१ ।

जलौका–जन्तुविशेष । दश० १४१ ।

जल्ल–जल्लो-मल । विशे० ३७६ । शरीरमल । ज्ञाता० २०३ । जल्ला –राज्ञ स्तोत्रपाठका । राज० २ । कमढीभूतो । नि० चू० प्र० १०८ आ । मलथिग्गल जल्लो । नि० चू० प्र० १६० आ । मल । भग० ३६० । उत्त० ८३ । औप० २८ । आव० ४७ । ठाणा० ३४३ । जल्ल –वरत्राखेलक, राजस्तोत्रपाठको वा । जीवा० २८१ । आव० ६१६ । औप० ३ । वरत्राखेलक । प्रश्न० १३७, १४१ । अनु० ४६ । दश० ११४ । ज० प्र० १२३ । शुष्कप्रस्वेद । सूत्र० ८२ । चिलातदेशनिवासीम्लेच्छविशेष । प्रश्न० १४ । रजोमात्रम् । औप० ८६ । मलविशेष । प्रश्न० १३७ । याति च लगति चेति जल्ल –पृषोदरादित्वान्निष्पत्ति, स्वल्पप्रयत्नापनेय । जीवा० २७७ । शरीरमल । प्रश्न० १०५ । ज० प्र० २४८ । जल्ल –रजोमात्रम् । भग० ३७ । देहमल । सम० ११ ।

जल्लकहा–जल्लकथा–वरत्राखेलकसम्बन्धिनीकथा । दश० ११४ ।

जल्लखउरिय–मलकलुषितम् । पिण्ड० ६३ ।

जल्लगद्धो–मलगन्ध । आव० ८१५ ।

जल्लगवेल्ल– । नि० चू० प्र० ३५२ अ ।

जल्लपरीसहे–शरीरवस्त्रादिमलस्य परीषह, अष्टादश परीषह । सम० ४० ।

जल्लिय–जल्लो–मल । उत्त० ५१७ । यल्लित –यानलगनधर्मापितमलयुक्त । भग० २५४ ।

जल्लूसत–जलोदर –व्याधिविशेष । आव० ६११ ।

जल्लेसाइ–या लेश्या येषा द्रव्याणा तानि यल्लेश्यानि यस्या लेश्याया सम्बन्धिनीत्यर्थ । भग० १८८ ।

जव–यवा –धान्यविशेष । दश० १६३ । औषधिविशेष । प्रज्ञा० ३३ । यवो–यवनालक, स च कन्या चोलकोऽवगन्तव्य । अय च मरुमण्डलादिप्रसिद्धप्रावरणकरूपेण

कन्यापरिधानेन सह सीवितो भवति, येन परिधान न खसति, कन्याना च मस्तकसत्कपक्षेणाऽस्य प्रक्षिप्यते । अथ चोर्ध्वं 'सरकञ्चुक' इति व्यपदिश्यते । विशे० ३५३ । उज्जेणीनयरे राया । बृ० प्र० १६१ अ । यव । आव० ८५५ । जव –वेग । आव० ६१८ । यवराजर्षि – खडश्लोकाध्येता । भक्त० ।

जवजव–यवयव –यवविशेष । भग० २७४ ।

जवजवा–औषधिविशेष । प्रज्ञा० ३३ ।

जवजवाइ–यवविशेष । ज० प्र० १२४ ।

जवण–जवन–अतिशीघ्रगति । जीवा० १२२ । यवन चिलातदेशनिवासी म्लेच्छजातिविशेष । प्रश्न० १४ ।

जवणट्ठ–यापनार्थं–शरीरनिर्वाहणार्थम् । उत्त० २६५ ।

जवणट्ठया–यापनार्थं–मयमभरोद्वाहिशरीरपालनाय । दश० २५३ ।

जवणा–यापना–वन्दनके पञ्चम स्थानम् । आव० ५४८ । म्लेच्छविशेष । प्रज्ञा० ५५ ।

जवणाणिया–लिपिविशेष । प्रज्ञा० ५६ ।

जवणिज्ज–यापनीयम् । आव० २१६ ।

जवणिया–यवनिका–तिरस्करिणी । आव० ३६८ । अन्त पट्ट । आव० ६७४ । यवनिका–काण्डपटम् । ज्ञाता० २४ ।

जवणीदीव–यवनद्वीप, द्वीपविशेषम् । ज० प्र० २२० ।

जवण्णं– । सूर्यं० २६३ ।

जवनालउ–जवनालक –कन्याचोलक, कुमार्या ऊर्द्ध सरकञ्चुक । नदी० ८९ ।

जवनालका–कुमार्या ऊर्द्ध सरकञ्चुक । नदी० ८८ । कन्याचोलकम् । प्रज्ञा० ५४२ ।

जवमज्झ–यवस्येव मध्य मध्यभागो यस्य विपुलत्वसाधर्म्यात्तद् यवमध्य यवाकारमित्यर्थ । भग० ८६०, २७५ । अष्टौ यूका एक यवमध्यम् । ज० प्र० ९४ । यवमध्या । व्य० द्वि० ३५६ आ । नि० चू० प्र० ३०६ आ ।

जवमज्झा–यवस्येव मध्य यस्या सा यवमध्या । औप० ३२ ।

जवस–यवस । आव० ४१६ । यवस –घास । आव० २६१ ।

जवसए–गुच्छाविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

जवसजोगासण–यवसयोगासनम् । उत्त० २२३ ।

जवासाकुसुम– । प्रज्ञा० ३६० ।

जवित–यावकम् । आव० ३०२ ।

जसंसी–यशस्वी–शुद्धपारलौकिकयशोवान् । दश० २०७ । ख्यातिमन्त । भग० १३६ ।

जससे–सिद्धार्थराजस्य तृतीय नाम । आचा० ४२२ ।

जस–यश –पराक्रमकृत गृह्यते, तदुत्थसाधुवाद इत्यथ । आव० ४६६ । बहुसमरसघट्टनिर्वहणशौर्यलक्षण यश । सूत्र० १८२ । पराक्रमकृता सर्वदिग्गामिनी वा प्रख्यातिर्यश । औप० १०५ । ख्याति । ज्ञाता० २४० । जीवा० २१७ । प्रज्ञा० ६०० । श्लाघा । सूर्यं० २५८ । यशोहेतुत्वाद्यश सयमो विनयो वा । उत्त० १८६ । यश पराक्रमकृत सर्वदिग्गामिनी प्रसिद्धिर्वा । प्रश्न० १३६ । चतुर्दशजिनस्य प्रथम शिष्य । सम० १५२ । यश सर्वदिग्गामी । प्रश्न० ८६ । सकलभुवनव्यापि । जीवा० २६६ । सर्वदिग्गामिनीप्रसिद्धि । बृ० तृ० ३६ आ । सजमो । दश० चू० ८८ । समयपरसमयविसारत्तणेण लोगे लोगुत्तरे य जसो । नि० चू० प्र० २६० अ । यशो जीवितम् । आव० ४८० । यश –सयम । दश० १८८ । यस्य । उप० मा० गा० ८४ । यश –सर्वदिग्गामिप्रसिद्धिविशेष । ज्ञाता० १८ ।

जसकर–यशस्कर –पराक्रमकृत यशस्तत्करणशील । आव० ४६६ ।

जसकारी–यश कारी । आव० ५३६ ।

जसघाई–यशोघातिन –यशोऽभिनाशका । आव० ५३६ ।

जसधरे–यशोधर । ज० प्र० ४६० ।

जसभद्द–यशोभद्र –शय्यम्भवप्रधानशिष्य । दश० २८४ । यशोभद्र –चतुर्थदिवसनाम । ज० प्र० ४६० । सूर्यं० १४७ । अलोभोदाहरणे युवराज । आव० ७०१ ।

जसभद्दा–यशोभद्रा–अलोभोदाहरणे कण्डरीकयुवराजपत्नी। आव० ७०१ ।

जसम–यशस्वी नवम कुलकरनाम । ज० प्र० १३२ । तृतीय –कुलकरनाम । सम० १५० । आव० १११ ।

ठाणा० ३६८ ।

जसमती–यशोमती–अमोघरथरथिकभार्या । उत्त० ३१३ ।

जसवइ–यशोमती–यक्षहरिलस्य द्वितीया सुता, ब्रह्मदत्त-राज्ञी । उत्त० ३७९ ।

जसवई–यशोमती–तृतीया रात्रितिथिनाम । जं० प्र० ४९१। सगरमाता । आव० १६१ । आचा० ४२२ ।

जसवती–यशोमती–शालमहाशालभगिनी । उत्त० ३२३ । शालमहाशालयो राजयुवराजयोर्भगिनी । आव० २८६ । तृतीया रात्रितिथिनाम। सूर्य० १४८ । सगरचक्रवर्तिनो माता । सम० १५२ ।

जससा–यशसा प्रसिद्धया । सम० ४३ ।

जसहर–अचलपुरकुटुम्बिगुरु । मर० । पंचपाडवा हिमवत्य-नशनादरा (?) ।

जसा–यशा–काश्यपभार्या । उत्त० २८६ । वसिष्ठगोत्रभृगु-पुरोहितभार्या । उत्त० ३९५ ।

जसोआ–यशोदा–राजकन्यानाम । आव० १८२ ।

जसोकामी–यशस्कामी–यो यशः कामयते अहो अयमिति प्रवादार्थं वा । दश० १८७ ।

जसोधर–यशोधर–पञ्चमदिवसनाम । सूर्य० १४७ । ठाणा० ३०२, ४५३ ।

जसोधरा–यशोधरा–चतुर्थी रात्रीनाम । सूर्य० १४७ ।

जसोया–वर्द्धमानस्वामिनो भार्या । आचा० ४२२ ।

जसोहरा–यशोधरा–चतुर्थी रात्रिनाम । जं० प्र० ४९१ । दक्षिणरुचकवास्तव्या दिक्कुमारी । आव० १२२ । दक्षिणरुचकवास्तव्या चतुर्थी दिक्कुमारी महत्तरिका । जं० प्र० ३९१ । यशः–सकलभुवनव्यापि धरतीति यशोधरा, जम्ब्वा सुदर्शना याश्चतुर्थं नाम । जीवा० २९६ । सकलभुवनव्यापक यशो धरतीति यशोधरा । जं०प्र० ३३६ ।

जस्स–यस्य–मुमुक्षो । आचा० १८० ।

जस्सम्मिह्–यस्य प्रभावेण इहागतोऽस्मि–भवामीतियोग । भग० १८० ।

जहक्खाय–यथा सर्वस्मिन् लोके ख्यात–प्रसिद्ध 'अकषाय भवति चारित्रमि'ति तथैव यद् तद् यथाख्यातम् । प्रज्ञा० ६८ ।

जहणवर–जघनवर–वरजघनम् । जीवा० २७५ ।

जहण्णकसिणं–जस्स द्वारसरूवया मुल्ल त जहण्णकसिण । नि० चू० प्र० १३९ आ ।

जहण्णेणं–जघन्यत । अनु० १६३ ।

जहन्न–हान–त्याग । भग० ९०४ । जघन्य सर्वस्तोकम् । आव० २९ ।

जहन्नए कुंभे–जघन्यक कुम्भ –आढकषष्टिनिष्पन्न । अनु० १५१ ।

जहन्नजोगी–जघन्ययोगी–सर्वाल्पवीर्य । प्रज्ञा० ६०८ ।

जहन्नपएरि –जघन्या –सर्वाल्पा प्रदेशा परमाणवस्ते सन्ति येषा ते जघन्यप्रदेशिका । ठाणा० ३५ ।

जहा–यथा दृष्टान्तार्थोऽय शब्द । भग० ८२ ।

जहागयपहिय–यथागतपथिक । उत्त० ११७ ।

जहाजायं–रजोहरण चोलपट्टकश्च । ओघ० ७५ ।

जहाजायपसुभूय–यथाजातपशुभूत –शिक्षारक्षणादिवर्जित-पशुसदृश. । प्रश्न० ५५ ।

जहाणुपुव्वी–यथानुपूर्वी–यथाऽनुक्रमम् । भग० २०२ ।

जहातच्चं–यथातथ्य–यथावस्थितम् । सूत्र० १७७ ।

जहाथामं–यथास्थाम–यथासामर्थ्यम् । दश० १०६ ।

जहानामए–यथानामक –यत्प्रकारनामा देवदत्तादिनामेत्यर्थं अथवा 'यथा' इति–दृष्टान्तार्थं 'नाम' इति–सम्भावनाया 'ए' इति वाक्यालकारे । भग० ८२ । यथा-नामक –अनिर्दिष्टनामक कश्चित् । जीवा० १२१ ।

जहाभाग–यथाभाग–यथाविषयम् । दश० १६६ ।

जहाभावो–यथाभाव । आव० ९६ ।

जहाभूत–यथाभूत–यथावृत्त अवितथ नत्वन्यथाभूतम् । ज्ञाता० ३४ ।

जहाभूय–यथाभूतम् । आव० ४२३ ।

जहारायणिय–यथारात्निक–यथाज्येष्ठम् । प्रश्न० १११ ।

जहावत्त–यथावृत्तम् । आव० ३६८ ।

जहावरक्खा– । नि० चू० प्र० १२७ आ ।

जहासमाही–यथासमाधि–यथासामर्थ्यम् । आव० ८४६ ।

जहाहिय–यथाहित–हितानतिक्रमेण । यथाऽधीता वा गुरु-सम्प्रदायागतवमनविरेचकादिरूपा । उत्त० ४७५ ।

जहिं–अद्यम् । उत्त० ४०४ ।

जहिच्छं–इच्छाया अनतिक्रमेण यथेच्छ यदवभासत इति। उत्त० ५०१।
जहिच्छिय–यथेच्छितम्। आव० २१३।
जहित्ता–हित्वा। उत्त० ३१५।
जहियं–यत्र। आव० ६१८।
जाइ–जाति–प्रसूति। आचा० १५९। जाति–मालती। जं० प्र० ४५। जाति–नारकादिप्रसूति। आव० ३२५। पुष्पविशेष। उत्त० ६५४। दश० १७४। तापस्त्यम्, बुद्धि। दश० २३३। जातिर्नरकादिषु यत् प्रसूतिमात्र तद्रूपा गृह्यते। विशे० १०४३।
जाइआसीविस–जात्या–जन्मनाऽऽशीविषा जात्याशीविषा। भग० ३४१।
जाइउ–याचुम्। बृ० प्र० २७ आ।
जाइकहा–ब्राह्मणीप्रभृतीनामन्यतमाया या प्रशसा निन्दा वा सा जात्या जातेर्वा कथेति जातिकथा। ठाणा० २०९।
जाइकुसुम–जातिकुसुमम्। दश० १००।
जाइतए–याचित। आव० ४२६।
जाइत्तु–गत्वा। आव० २०९।
जाइनाम–एकेन्द्रियादीनामेकेन्द्रियत्वादिरूपसमानपरिणामलक्षणमेकेन्द्रियादिशब्दव्यपदेशभाक् यत्सामान्य सा जातिस्तज्जनक नाम जातिनाम। प्रज्ञा० ४६९।
जाइनामनिहत्ताउए–जाति–एकेन्द्रियजात्यादि पञ्चप्रकारा सैव नाम नामकर्मण उत्तरप्रकृतिविशेषरूप जातिनाम तेन सह निधत्त–निषिक्त यदायुस्तज्जातिनामनिधत्तायु। प्रज्ञा० २१७।
जाइपह–जातिपन्था–द्वीन्द्रियादिजातिमार्ग। दश० २४४।
जाइफल–स्वादिमफलविशेष। नि० चू० द्वि० ६० अ।
जाइमता–जातिमन्त–सुजातय। आचा० ३९१।
जाइमरण–जातिमरण–ससार। दश० २५८।
जाइमा–लुणणपायोग्गाओ कीरइ। दश० चू० १११।
जाई–मत्स्यकच्छपविशेष। जीवा० ३२१। गुल्मविशेष। प्रज्ञा० ३२। जातिमद–यज्जातेर्मानम्। आव० ६४६। जाति–क्षत्रियाद्या, जनन वा क्षत्रियादिजन्म। उत्त० १८१। ब्राह्मणादिका। पिण्ड० १२९। जातिभेद। जीवा० १३६। मातृसमुत्था। आव० ३४१। पिण्ड० १२९। उत्त० १४५। सूत्र० २३६। जातिकुसुमवर्ण मद्यम्। विपा० ४९। मातृक पक्ष। प्रश्न० ११७। जाति–लोकैषणाबुद्धि। आचा० १८०।
जाईकुलकोडी–जातिप्रधान कुल तस्य कोटि जातिकुलकोटि। जीवा० ३७२।
जाउ–क्षीरपेया। पिण्ड० १६८।
जाउकण्णियसगोत्ते–पूर्वाभाद्रपदगोत्रम्। सूर्य० १५०।
जाउकण्णे–जातुकर्णं–पूर्वाभाद्रपदगोत्रम्। जं० प्र० ५००।
जाउगा–यातर–ज्येष्ठदेवरजाया। बृ० प्र० २७० अ।
जाउयाओ–देवराजायाणा भार्या इत्यर्थ। ज्ञाता० १९९।
जाउलग–गुच्छाविशेष। प्रज्ञा० ३२।
जाए–जात–स्तम्बीभूतम्। दश० १५५।
जाएज्जओ–जातोऽभवत्। आव० १८८।
जाओ–जात–प्रकार उत्पन्नश्च। आव० ५२४।
जागरओ–जागरणम्। आव० २०४।
जाणतिया– ~ । बृ० प्र० ५७ अ।
जागरा–जाग्रतीति जागरा–असुप्ता जागरा इव जागरा। ठाणा० ३७०।
जागरिय–जागृत षष्ठीरात्रिजागरणप्रधानमुत्सवम्। विपा० ५१। रात्रिजागरिका। औप० १०२।
जागरूका– । आचा० १५२।
जागरे–जाग्रत्। प्रज्ञा० ४९१।
जाच्चबाहलो–जात्यबाल्हीक–अश्वजातिविशेष। आव० २६१।
जाण–यान–गन्त्रीविशेष। प्रश्न० ९१, १६१। गन्त्र्यादि। भग० १३५। जीवा० २८१। रथादिकम्। प्रश्न० १५२। शकटादि। औप० ४। शकटम्। भग० १८७, १८८, २३७। रथादि। औप० ५४। यान हाम्यादि। आव० ३४६। उत्त० १४३। शिबिकादि। आचा० ६०। युग्यादि। दश० २१८। यानम्। आव० २३४।
जाणअ–यानकम्। आव० २२१।
जाणए–ज्ञायक। आव० ४२८।
जाणग–ज्ञापक–तीर्थंकृत्। आचा० २०।
जाणगसरीर–ज्ञायकस्तस्य शरीर ज्ञायकशरीरम्। ज्ञो

वा तस्य शरीर ज्ञशरीरम् । उत्त० ७२ ।
जाणणा–ज्ञानशुद्धि, प्रत्याख्यानशुद्धया द्वितीयो भेद । आव० ८४७ ।
जाणरहो–यानार्थं रथो यानरथ । जीवा० २८१ ।
जाणवए–जानपद –जनपदभवास्तत्रायाता सन्तो यत्र तत्। भग० ७ ।
जाणवत्त–यानपत्रम् । आव० २६७ ।
जाणवया–जनपदभवास्तत्र प्रयोजनवशादायाता सन्तो यत्र सा जानपदा । सूर्य० २ । जानपदा –जनपदभवा । जं० प्र० ७५ । जानपदा । औप० २ । जानपदा – जनपदभवास्तत्रायाता । ज्ञाता० १ । जानपदा विषय-लोका । आव० २२९ । जानपदा जनपदे भवा जान-पदा –अनार्याऽऽचरिणो लोका । आचा० ३१० ।
जाणविमाण–यानानि–शकटविशेषा विमानानि–ज्योतिष्कवैमानिकदेवसम्बन्धिगृहाणि । यानविमानानि-पुष्पक-पालकादीनि । प्र० ६५ । यान विमानम् । आव० १२१ ।
जाणविही–गमनविधि । बृ० प्र० २३३ अ ।
जाणसठिया–यानसंस्थिता । आव० ३६८ ।
जाणसण्णा–ज्ञानसंज्ञा –मत्याद्या । आचा० १२ ।
जाणसाला–यानशाला । आव० ५७८ । रथादिगृहम् । प्रश्न० १२७ ।
जाणसालिओ–यानशालिक । आव० ८६ ।
जाणा–यानानि–शकटादीनि । ज्ञाता० ४३ ।
जाणाइ–शकटादीनि । भग० ५४७ । यानानि–गन्त्र्या-दीनि । जं० प्र० १२३ ।
जाणावणा–रञ्जणा । उप० मा० गा० २० ।
जाणिय–ज्ञातम् । आव० १४६ ।
जाणुओ–ज्ञायक –केवलशास्त्रकुशल । विपा० ४० ।
जाणुकोप्परे–जानुकूर्पर । उत्त० ११८ ।
जाणुकोप्परमाता–जानुकूर्पराणामेव माता–जननी जानु-कूर्परमाता । निरय० ३० ।
जाणुकोप्परमाया–जानुकूर्पराणामेव माता–जननी जानु-कूर्परमाता, एतान्येव शरीराशभूतानि तस्या स्तनौ स्पृशन्ति नापत्यमित्यर्थ । अथवा जानुकूर्पराण्येव मात्रा–परप्रणोदे साहाय्ये समर्थं उत्सङ्गनिवेशनीयो वा परिकरो यस्या न पुत्रलक्षण सा जानुकूर्परमात्रा । ज्ञाता० ८० । जानुकूर्परमाता । आव० २१० ।
जाणुयपुत्ता–ज्ञायकपुत्र –केवलशास्त्रकुशलपुत्र । विपा० ४० ।
जाणुया–ज्ञायका –शास्त्रानध्यायिनोऽपि शास्त्रज्ञप्रवृत्तिदर्श-नेन रोगस्वरूपत चिकित्सावेदिन । ज्ञाता० १८० ।
जाणू–जानुनी–अष्ठीवन्तौ । जीवा० २७० । गदिता । ठाणा० १७४ ।
जाणूक–जानु–बाहुजङ्घासन्धिरूपोऽवयव । जं० प्र० २३४।
जात–प्रकारवाचक । नि० चू० प्र० १५१ अ । भेद-वाचक । नि० चू० प्र० ८४ आ । प्रकारवाची । उप्प-ण्णवाची । नि० चू० द्वि० ९३ अ । उत्पत्तिधर्म्मक, व्यक्तिवस्तु । ठाणा० १८४ । प्रकार । आव० २६१ । सणिसेज्ज रयोहरण मुहपोत्तिया चोलपट्टो य । नि० चू० द्वि० ४६ आ ।
जातकम्म–जातकर्म्म–प्रसवकर्म्म नालच्छेदननिखननादि-कम् । ज्ञाता० ४१ । निरय० ३२ ।
जाततेए–जाततेजा –वह्नि । प्रश्न० १५८ ।
जातय.–वर्णनीयवस्तुरूपवर्णनानि । सम० ६४ ।
जातरूपं–स्वर्णम् । उत्त० ५२७ । रूप्यम् । उत्त० ६६६ ।
जातरूवे–जातरूपकाण्ड–जातरूपाणा विशिष्टो भूभाग । जीवा० ८९ ।
जातविम्हय–जातविस्मय । आव० ३५९ ।
जाति–तिर्यग्जाति । जीवा० १३४ । आसन्नलब्धप्रतिभो जाति । दश० ६ । आर्यभेद । सम० १३५ ।
जातिआसीविसा–जातित आशीविषा जात्याशीविषा – वृश्चिकादय । ठाणा० २६५ ।
जातिकथा–जाते प्रशसन द्वेषण वा । स्त्रीकथाया प्रथम-भेद । आव० ५८१ ।
जातिकहा–जातिकथा–ब्राह्मणादिजातिसम्बन्धेन कथा । प्रश्न० १३९ ।
जातिकुम्भी–यस्य सागारिक भ्रातृद्वय वा वातदोषेण शून महाप्रमाण भवति स जातिकुम्भी । बृ० तृ० १०० अ ।
जातिकुलम्– । जीवा० १३४ ।

जातित –तत्र जातितो वृश्चिकमण्डूकसर्पमनुष्यजातय क्रमेण बहुतर–बहुतमविषा । विशे० ३८० । जातितो वृश्चिकमण्डूकोरगमनुष्यजातय । आव० ४८ ।

जातिथेरा–जातिस्थविरा –षष्टिवषप्रमाणजन्मपर्याया । ठाणा० ५१६ ।

जातिपत्र–पत्रविशेष । जीवा० १३६ ।

जातिपुष्प–पुष्पविशेष । प्रज्ञा० ३७ ।

जातिफल–फलविशेष । जीवा० १३६ ।

जातिवन्झा–जाते –जन्मत आरम्य वन्ध्या–निर्बिजा जाति वन्ध्या । ठाणा० ३१३ ।

जातिसपन्ने–उत्तममात्रकपक्षयुक्त । ज्ञाता० ७ ।

जातिस्मरण–आभिनिबोधिकविशेष । आचा० २० । मतिविशे । प्रज्ञा० ५१ ।

जातिहिंगुले–जात्य –प्रधानो हिङ्गुलक जात्यहिंगुलक । प्रज्ञा० ३६१ ।

जाती–याति–प्रवर्त्तते–अवबुध्यते । बृ० द्वि० १९७ अ । गन्धद्रव्यविशेष । जीवा० १९१ ।

जातीगुम्मा–जातिगुल्मा । ज० प्र० ९८ ।

जातीसरण–जातिस्मरण–मतिज्ञानभेद । आव० ११० ।

जात्य– । जीवा १३६ ।

जात्यसुवर्णमय–सुवर्णविशेष । नदी० १५७ ।

जात्यहिंगुलक –पुष्पविशेष । जीवा० १९१ ।

जात्यार्या –इक्ष्वाकुविदेहहरिज्ञाता बष्ठकुरुबुबुनावोग्रभोगराजन्यादिकुला । तत्वा० ३–१५ ।

जात्युत्तर– । ठाणा० ४९२ ।

जानाति–अवायधारणापेक्षयाऽवबुध्यते । भग० ३५७ ।

जानु–अङ्गविशेष । आचा० ३८ ।

जामा–याम्या–दक्षिणदिक् । आव० २१५ ।

जामाउगा– । नि० चू० प्र० ३५८ अ ।

जामि–यामि । आव० २९९ ।

जामितिया– । नि० चू० प्र० २३० अ ।

जामेय–यामेव । सूर्य० ३ ।

जाम्बुवती–विष्णुराज्ञी । विशे० ६११ ।

जाय–बीयाणि चेव यवीभूयाणि । दश० चू० ६९ । याग–पूजाम् । ज्ञाता० ८३ । याग–पूजा यात्रा वा । विपा० ७७ । यात–अपगतम् । आव० ८४४ । जात–प्रकार । प्रश्न० १२४ । जात पुत्र । उत्त०३९९ । जात –प्रवृत्त । सूर्य० ५ । जात–जाति प्रकारो वा । ठाणा० ४९२ ।

जायइ–जायते–कल्पते । आचा० १४० ।

जायकुभी–वायदोषेण जस्स सागारियं वसण वा सुज्जति सो जायकुभी रोगीत्यर्थं । नि० चू० द्वि० ३३ अ ।

जायकोउहल्ले–जात कुतूहल यस्य स जातकुतूहल –जातौत्सुक्य । राज० ५८ । ज्ञाता० १ ।

जायखधे–जात –अत्यन्तोपचितीभूत स्कन्ध एवास्येति जातस्कन्ध । उत्त० ३४९ ।

जायण–यातन–कदर्थनम् । प्रश्न० ३७ ।

जायणजीविणो–याचनेन जीवन–प्राणधारणमस्येति याचनजीवनम् । उत्त० ३६० ।

जायणा–याचन–मार्गणम्, चतुर्दश परीषह । आव० ६५६ ।

जायणावत्थ–ज मग्गिज्जइ कस्सेयति अपुच्छिय कस्स छट्ठा कडति अगवेसिय । नि० चू० द्वि० १६२ अ ।

जायणि–असत्यामृषाभाषाभेद । दश० २१० ।

जायणिया–याचना । आव० ६७७ ।

जायणी–याचनी कस्यापि वस्तुविशेषस्य देहीति मार्गण, असत्या मृषाभाषायास्तृतीयो भेद । प्रज्ञा० २५६ ।

जायतेअ–जाततेज –अग्नि । दश० २०१ ।

जायतेय–वह्नि । भग० १८४ ।

जायथामे–जातस्थामा–अङ्गीकृतमहाव्रतभारोद्वहने जातसामर्थ्य । प्रश्न० १५८ ।

जायमाण–यात्–गच्छत् । भग० १८६ ।

जायनिंदुया–जातानि उत्पन्नान्यपत्यानि निर्द्रुतानि–निर्यातानि मृतानि यस्या सा जातनिर्द्रुता । विपा० ५१ ।

जायभेदे–जातभेद –उपचितचतुर्थधातु । उत्त० २७३ ।

जायरूव–जातरूप सुवर्णम् । भग० १३५ । जीवा० २०४, २२८ । रूप्यम् । ज० प्र० ३२४ । जातरूप –सुवर्णविशेष । ज० प्र० २३ । जातरूप–सुवर्णम् । ठाणा० ४२२ । ज० प्र० ६२ ।

जायरूववडिसए–जातरूपावतसक – उत्तरस्यामवतसक । जीवा० ३९१ । भग० २०३ ।

वा तस्य शरीरं ज्ञशरीरम् । उत्त० ७२ ।

जाणणा–ज्ञानशुद्धि, प्रत्याख्यानशुद्धया द्वितीयो भेद । आव० ८४७ ।

जाणरहो–यानार्थं रथो यानरथ । जीवा० २८१ ।

जाणवए–जानपद –जनपदभवास्तत्रायाता सन्तो यत्र तत्। भग० ७ ।

जाणवत्त–यानपत्रम् । आव० २९७ ।

जाणवया–जनपदभवास्तत्र प्रयोजनवशादायाता सन्तो यत्र सा जानपदा । सूर्य० २ । जानपदा –जनपदभवा । जं० प्र० ७५ । जानपदा । औप० २ । जानपदा–जनपदभवास्तत्रायाता । ज्ञाता० १ । जानपदा विषयलोका । आव० २२९ । जानपदा जनपदे भवा जानपदा –अनार्याऽऽचरिणो लोका । आचा० ३१० ।

जाणविमाण–यानानि–शकटविशेषा विमानानि–ज्योतिष्कवैमानिकदेवसम्बन्धिगृहाणि । यानविमानानि-पुष्पकपालकादीनि । प्र० ९५ । यान विमानम् । आव० १२१ ।

जाणविही–गमनविधि । बृ० प्र० २३३ अ ।

जाणसठिया–यानसस्थिता । आव० ३९८ ।

जाणसण्णा–ज्ञानसज्ञा –मत्याद्या । आचा० १२ ।

जाणसाला–यानशाला । आव० ५७८ । रथादिगृहम् । प्रश्न० १२७ ।

जाणसालिओ–यानशालिक । आव० ८९ ।

जाणा–यानानि–शकटादीनि । ज्ञाता० ४३ ।

जाणाइ–शकटादीनि । भग० ५४७ । यानानि–गन्त्र्यादीनि । जं० प्र० १२३ ।

जाणावणा–रञ्जणा । उप० मा० गा० २० ।

जाणिय–ज्ञातम् । आव० १४६ ।

जाणुओ–ज्ञायक –केवलशास्त्रकुशल । विपा० ४० ।

जाणुकोप्परे–जानुकूर्पर । उत्त० ११८ ।

जाणुकोप्परमाता–जानुकूर्पराणामेव माता–जननी जानुकूर्परमाता । निरय० ३० ।

जाणुकोप्परमाया–जानुकूर्पराणामेव माता–जननी जानुकूर्प्परमाता, एतान्येव शरीराशभूतानि तस्या स्तनौ स्पृशन्ति नापत्यमित्यर्थ । अथवा जानुकूर्पराण्येव मात्रा–परप्रणोदे साहाय्ये समर्थ उत्सङ्गनिवेशनीयो वा परिकरो यस्या न पुत्रलक्षण सा जानुकूर्परमात्रा । ज्ञाता० ८० । जानुकूर्परमाता । आव० २१० ।

जाणुयपुत्ता–ज्ञायकपुत्र –केवलशास्त्रकुशलपुत्र । विपा० ४० ।

जाणुया–ज्ञायका –शास्त्रानध्यायिनोऽपि शास्त्रज्ञप्रवृत्तिदर्शनेन रोगस्वरूपत चिकित्सावेदिन । ज्ञाता० १८० ।

जाणू–जानुनी–अष्ठीवन्तौ । जीवा० २७० । गदिता । ठाणा० १७४ ।

जाणूक–जानु–बाहुजङ्घासन्धिरूपोऽवयव । जं० प्र० २३४।

जात–प्रकारवाचक । नि० चू० प्र० १५१ अ । भेदवाचक । नि० चू० प्र० ८४ आ । प्रकारवाची । उप्पण्णवाची । नि० चू० द्वि० ९३ अ । उत्पत्तिधर्म्मक, व्यक्तिवस्तु । ठाणा० १८४ । प्रकार । आव० २६११ सणिसेज्ज रयोहरण मुहपोत्तिया चोलपट्टो य । नि० चू० द्वि० ४६ आ ।

जातकम्म–जातकर्म्म–प्रसवकर्म्म नालच्छेदननिखननादिकम् । ज्ञाता० ४१ । निरय० ३२ ।

जाततेए–जाततेजा –वह्नि । प्रश्न० १५८ ।

जातय.–वर्णनीयवस्तुरूपवर्णनानि । सम० ६४ ।

जातरूपं–स्वर्णम् । उत्त० ५२७ । रूप्यम् । उत्त० ६६६ ।

जातरूवे–जातरूपकाण्ड–जातरूपाणा विशिष्टो भूभाग । जीवा० ८९ ।

जातविम्हयं–जातविस्मय । आव० ३५९ ।

जाति–तिर्यग्जाति । जीवा० १३४ । आसन्नलब्धप्रतिभो जाति । दश० ६ । आर्यभेद । सम० १३५ ।

जातिआसीविसा–जातित आशीविषा जात्याशीविषा – वृश्चिकादय । ठाणा० २६५ ।

जातिकथा–जाते प्रशसन द्वेषण वा । स्त्रीकथाया प्रथमभेद । आव० ५८१ ।

जातिकहा–जातिकथा–ब्राह्मणादिजातिसम्बन्धेन कथा । प्रश्न० १३९ ।

जातिकुम्भी–यस्य सागारिक भ्रातृद्वय वा वातदोषेण शून महाप्रमाण भवति स जातिकुम्भी । बृ० तृ० १०० अ ।

जातिकुलम्– । जीवा० १३४ ।

जातित–तत्र जातितो वृश्चिकमण्डूकसर्पमनुष्यजातय क्रमेण बहुतर–बहुतमविषा । विशे० ३८० । जातितो वृश्चिकमण्डूकोरगमनुष्यजातय । आव० ४८ ।

जातिथेरा–जातिस्थविरा –षष्टिवर्षप्रमाणजन्मपर्याया । ठाणा० ५१६ ।

जातिपत्र–पत्रविशेष । जीवा० १३६ ।

जातिपुष्प–पुष्पविशेष । प्रज्ञा० ३७ ।

जातिफल–फलविशेष । जीवा० १३६ ।

जातिवझा–जाते –जन्मत आरम्य वन्ध्या–निर्बिजा जाति वन्ध्या । ठाणा० ३१३ ।

जातिसपन्ने–उत्तममातृकपक्षयुक्त । ज्ञाता० ७ ।

जातिस्मरण–आभिनिबोधिकविशेष । आचा० २० । मतिविशे । प्रज्ञा० ५१ ।

जातिहिंगुले–जात्य –प्रधानो हिङ्गुलक जात्यहिंगुलक । प्रज्ञा० ३६१ ।

जाती–याति–प्रवर्त्तते–अवबुध्यते । बृ० द्वि० १९७ अ । गन्धद्रव्यविशेष । जीवा० १९१ ।

जातीगुम्मा–जातिगुल्मा । ज० प्र० ९८ ।

जातीसरण–जातिस्मरण–मतिज्ञानभेद । आव० ११० ।

जात्य– । जीवा १३६ ।

जात्यसुवर्णमय–सुवर्णविशेष । नदी० १५७ ।

जात्यहिंगुलक–पुष्पविशेष । जीवा० १९१ ।

जात्यार्या–इक्ष्वाकुविदेहहरिज्ञाता वष्ठकुरुबुबुनाबोग्रभोगराजन्यादिकुला । तत्त्वा० ३–१५ ।

जात्युत्तर– । ठाणा० ४९२ ।

जानाति–अवायधारणापेक्षयाऽवबुध्यते । भग० ३५७ ।

जानु–अङ्गविशेष । आचा० ३८ ।

जामा–याम्या–दक्षिणदिक् । आव० २१५ ।

जामाउगा– । नि० चू० प्र० ३५८ अ ।

जामि–यामि । आव० २९९ ।

जामितिया– । नि० चू० प्र० २३० अ ।

जामेय–यामेव । सूर्य० ३ ।

जाम्बुवती–विष्णुराज्ञी । विशे० ६११ ।

जाय–ब्रीयाणि चेव यवीभूयाणि । दश० चू० ६९ । याग–पूजाम् । ज्ञाता० ८३ । याग–पूजा यात्रा वा । विपा० ७७ । यात–अपगतम् । आव० ८४४ । जात–प्रकार । प्रश्न० १२४ । जात पुत्र । उत्त०३६६ । जात –प्रवृत्त । सूर्य० ५ । जात–जाति प्रकारो वा । ठाणा० ४९२ ।

जायइ–जायते–कल्पते । आचा० १४० ।

जायकुंभी–वायदोषेण जस्स सागारिय वसण वा सुज्जति सो जायकुभी रोगीत्यथ । नि० चू० द्वि० ३३ अ ।

जायकोउहल्ले–जात कुतूहल यस्य स जातकुतूहल –जातौत्सुक्य । राज० ५८ । ज्ञाता० १ ।

जायखधे–जात –अत्यन्तोपचितीभूत स्कन्ध एवास्येति जातस्कन्ध । उत्त० ३४९ ।

जायण–यातन–कदर्थनम् । प्रश्न० ३७ ।

जायणजीविणो–याचनेन जीवन–प्राणधारणमस्येति याचनजीवनम् । उत्त० ३६० ।

जायणा–याचन–मार्गणम्, चतुर्दश परीषह । आव० ६५६ ।

जायणावत्थ–ज मग्गिज्जइ कस्सेयति अपुच्छिय कस्स छुट्टा कडति अगवेसिय । नि० चू० द्वि० १६२ अ ।

जायणि–असत्यामृषाभाषाभेद । दश० २१० ।

जायणिया–याचना । आव० ६७७ ।

जायणी–याचनी कस्यापि वस्तुविशेषस्य देहीति मार्गण, असत्या मृषाभाषायास्तृतीयो भेद । प्रज्ञा० २५६ ।

जायतेअ–जाततेज –अग्नि । दश० २०१ ।

जायतेय–वह्नि । भग० १८४ ।

जायथामे–जातस्थामा–अङ्गीकृतमहाव्रतभारोद्वहने जातसामर्थ्य । प्रश्न० १५८ ।

जायमाण–यान्–गच्छन् । भग० १८६ ।

जायनिंदुया–जातानि उत्पन्नान्यपत्यानि निर्द्रुतानि–निर्यातानि मृतानि यस्या सा जातनिर्द्रुता । विपा० ५१ ।

जायभेदे–जातभेद –उपचितचतुर्थधातु । उत्त० २७३ ।

जायरूव–जातरूप सुवर्णम् । भग० १३५ । जीवा० २०४, २२८ । रूप्यम् । ज० प्र० ३२४ । जातरूप –सुवर्णविशेष । ज० प्र० २३ । जातरूप–सुवर्णम् । ठाणा० ४२२ । ज० प्र० ६२ ।

जायरूववडिंसए–जातरूपावतसक – उत्तरस्यामवतसक । जीवा० ३९१ । भग० २०३ ।

जायसड्ढे-जाता-प्रवृत्ता श्रद्धा-इच्छाऽस्येति जातश्रद्ध । ज्ञाता० ६ ।

जायसूयग-जातसूतक नाम जन्मानन्तरदशाह्नि यावत् । व्य० प्र० ७ आ ।

जाया-हे पुत्र । ज्ञाता० ५० । जाता-अभियोगकृता विषकृता च । व्य० द्वि० ३१५ आ । जाता-मूलगुणै प्राणातिपातादिभिरशुद्धा । ओघ० १६३ । चमरासुरेन्द्रस्य बाह्या पर्षत् । जीवा० १६४ । यात्रा-सयमनिर्वहणनिमित्तम् । उत्त० २६४ । जाता-प्रकृतिमहत्त्ववर्जितत्वेनास्थानकोपादीना जातत्वाज्जाता, चमरस्य तृतीया पर्षत् । भग०२०२ । शक्रदेवेन्द्रस्य बाह्या पर्षद् । जीवा० ३६० । या दोषात्परित्यागार्हाहारविषया सा जाता । आव० ६४१ । यात्रा-सयमयात्रा । भग० १२२ । चमरेन्द्रस्य बाह्या पर्षत् । ठाणा० १२७ ।

जायाइ-अवश्य यायजीति यायाजी । उत्त० ५२२ । जाता । आचा० ३४८ ।

जायामायावित्ती-सयमयात्रामात्रार्थं वृत्ति -भक्तग्रहण-यात्रामात्रावृत्ति । औप० ३७ ।

जायाहि-याचस्व । उत्त० ५३२ ।

जार-जार -नाय्यविशेष । ज० प्र० ४१४ । मणिलक्षणविशेष । जीवा० १८६ । जं० प्र० ३१ । नि० चू० प्र० २९६ अ ।

जारु-अनन्तकायवनस्पतिविशेष । भग० ८०४ ।

जारेकण्हा-वाशिष्ठगोत्रस्यावशेष । ठाणा० ३९० ।

जाल-आनायम् । उत्त० ४०७ । जाल-मत्स्यबन्धनम् । प्रश्न० १३ । मत्स्यबन्धनविशेष । विपा० ८१ । जालकम् । प्रज्ञा० ९६ । सूर्य० २६४ । जीवा० १७५ ।

जालधर-गोत्रविशेष । आचा० ४२१ ।

जाल-जाल-सच्छिद्रो गवाक्षविशेष । ज्ञाता० १४ । जाल -गवाक्ष । ज० प्र० १८८ । मूलाग्निप्रतिबद्धा ज्वाला । दश० १५४ । जाल -समूह । उत्त० ४६० ।

जालकडए-जालानि-जालकानि भवनभित्तिषु प्रसिद्धानि तेषा कटक -समूह जालकटक, जालकाकीर्णा रम्यसस्थानप्रदेशविशेषपङ्क्ति । जीवा० १७८ ।

जालकडगा-जालकाकीर्णौ रम्यसस्थानौ, प्रदेशविशेषौ । ज० प्र० ५२ ।

जालकिडुगंतरेण-जालकटकान्तरे । आव० ६३ ।

जालगं-जालक-चरणाभरणविशेष । औप० ५५ ।

जालगंठिया-जाल-मत्स्यबन्धन तस्येव ग्रन्थयो यस्या सा जालग्रन्थिका-जालिका भग० २१४ । सङ्कलिकामात्रम् । भग० २१५ ।

जालग- । नि० चू० प्र० १२७ अ ।

जालगद्दह- । नि० चू० द्वि० ११२ अ ।

जालगा-द्वीन्द्रियजीवभेद । उत्त० ६९५ ।

जालघरगं-जालगृह-जालकान्वितम् । ज्ञाता० ९५ । जालगृहक-जालकयुक्त ग्रहम् । जीवा० २०० । दार्वादिमयजालकप्रायकुड्य यत्र मध्यव्यवस्थित वस्तु वहिःस्थितैर्दृश्यते । ज्ञाता० १२६ ।

जालघरगा-जालयुक्तानि गृहकाणि । ज० प्र० ४५ ।

जालपजर-जालपञ्जर-गवाक्षम् । जीवा० २०५, ३६० । गवाक्ष । ज० प्र० ४९ । गवाक्षापरपर्यायाणि । राज० ६२ ।

जालय-जालक-छिद्रान्वितो गृहावयवविशेष । प्रश्न० ८ ।

जालवंदं-जालवृन्द-गवाक्षसमूह । जीवा० २६९ ।

जालविंद-जालवृन्द -गवाक्षसमूह । ज० प्र० १०७ ।

जालांतररयणं-जालानि-जालकानि तानि च भवनभित्तिषु लोके प्रतीतानि तदन्तरेषु विशिष्टशोभानिमित्त रत्नानि यत्र तत् जालान्तररत्नम् । जीवा० ३७९ ।

जाला-सुभूमचक्रवर्तिन माता । सम० १५२ । ज्वाला-छिन्नमूलाऽनङ्गारप्रतिबद्धा । आचा० ४९ । महापद्ममाता । आव० १६१ । ज्वाला-अनलसबद्धा । जीवा० १०७ । अनलसबद्धा दीपशिखा वा । जीवा० २९ । ज्वाला-जाज्वल्यमानखादिरादिज्वाला अनलसबद्धा दीपशिखा । प्रज्ञा० २९ । ज्वाला-अग्निशिखा । ठाणा ३३६ । छिन्नमूला-ज्वलनशिखा । उत्त० ६९४ । ज्वाला-इन्धनच्छिन्ना । ज्ञाता० २०४ ।

जालाउया-द्वीन्द्रियजन्तुविशेष । प्रज्ञा० ४१ ।

जालाणि-बन्धनविशेषरूपाण्यात्मनोऽनयहेतून् । उत्त०४०७ ।

जालायुसा-द्वीन्द्रियजीवविशेष । जीवा० ३१ ।

जालि-वशसमूह । नदी० १५५ । जालि -अन्तकृद्दशानां

चतुर्थवर्गस्य प्रथममध्ययनम् । अन्त० १४ । अनुत्तरोपपातिकदशाना प्रथमवर्गस्य प्रथममध्ययनम् । अनुत्त० १ ।

जालिग–जालिक–देशकथाविशेष । आव० ५८१ ।

जालिया–जालिका–लोहकञ्चुक । प्रश्न० ४७ ।

जाली–जाली । आव० ४२१ ।

जालीकुमारो– । अनुत्त० १ ।

जालो–जाल –विच्छत्तिच्छिद्रोपेतगृहावयवविशेष । औप० ६५ ।

जाव–यावत्–अवधिवाचक । ज० प्र० ३८६ ।

जावतावति– । ठाणा० ४९७ ।

जावतिगा– । नि० चू० प्र८ १८६ अ ।

जावतिया–यावन्तो भिक्षाचरा आगमिष्यन्ति तावता दातव्य इति अभिप्रायेण यस्या दीयते सा यावन्तिका । बृ० द्वि० १४० अ । यावद्भिक्षुकाणा दानाय सखडी । बृ० द्वि० १४० अ ।

जावते–यावान्–भगवत्या प्रथमशतके षष्ठ उद्देश । भग० ६ ।

जाव–यावत्–ऐदम्पर्यार्थ । भग० २६९ । यावत्–सम्पूर्ण । ज० प्र० २४३ । यावच्छब्दो न सग्राहक किन्त्ववधिमात्रसूचक । ज० प्र० ३३८ । यावच्छब्दो न गर्भगतसग्रहसूचक सग्राह्यपदाभावात्, किन्तु सजातीयभवनपतिसूचक । ज० प्र० १६१ ।

जावई–कन्दविशेष । उत्त० ६९१ ।

जावऊसासो–यावदुच्छ्वास –यावदायु । आव० ८४३ ।

जावए–यापयति–वादिन कालयापना करोति । ठाणा० २६१ । जानाति छाद्मस्थिकज्ञानचतुष्टयेनेति ज्ञापक । सम० ४ ।

जावग–यापक –विकल्पभेद । दश० ५७ ।

जावज्जीवाए–यावज्जीव–आप्राणोपरमादित्यर्थं । दश० १४३ ।

जावणिज्ज– । नि० चू० प्र० १५० अ ।

जावणिज्जा–यापनीया–यथाशक्तियुक्ता । आव० ५४७ ।

जावताव–यावद्वयम् । भग० ४६८ ।

जावति–वलयविशेष । प्रज्ञा० ३३ ।

जावतिय–आचडाला । नि० चू० प्र० २३० आ ।

जावदय–यावदय–परिमाणे मर्यादाया अवधारणे च । विशे० १३२३ ।

जावसिआ–यावसिका–घासवाहिका । ओघ० ९७ ।

जावसिया–यवस –तत्प्रायोग्यमुद्गमाषादिरूप आहारस्तेन तद्वहनेन चरन्तीति यावसिका । बृ० प्र० २४७ आ । जवस वहृति जे ते जावसिया । नि० चू० प्र० २०० आ ।

जावित–यापयन् । आव० ५३८ ।

जासुमणकुसुमे–जपाकुसुमम् । प्रज्ञा० ३६१ ।

जासुमणा–जासुमणा नाम वृक्ष । भग० ६८६ ।

जासुमि(म)णा–जपा वनस्पति विशेषस्तस्या सुमनस पुष्पाणि । अन्त० ९ ।

जासुवण–वल्लीविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

जाहओ–जाहक –तिर्यग्विशेष । आव० १०३ ।

जाहग–जाहक –सेहुलक । विशे० ६२७ । जाहक । व्य० द्वि० ३९३ अ । जाहका –कण्टकावृतशरीरा । प्रश्न० ८ ।

जा(बा)हाडिता–मगर्भाजाता । बृ० द्वि० २५७ अ ।

जाहिति–भविष्यति । आव० ४२२ ।

जाहो–भुजपरिसर्प तिर्यग्योनिक । जीवा० ४० ।

जिंघणा–जिघ्रणम् । ओघ० १३८ ।

जिअ–जिता–परिचिता । दश० २३५ ।

जिअनिद्द–जिता निद्रा–आलस्य येन तत् जितनिद्र–त्यक्तालस्यम् । ज० प्र० २३७ ।

जिअसत्तु–जितशत्रु –अजितपिता । आव० १६१ । काकन्दीनगयधिपति । अनुत्त० २ ।

जिइदिए–जितेन्द्रिय –सयमी । भग० १२२ ।

जिच्च–जीयते–हार्यते अतिरौद्रैरिन्द्रियादिभि आत्मा तदिति जेयम् जायेत्–हार्येत । जीयते–हायते । उत्त० २८२ ।

जिच्चमाणो–जीयमानो–हायमाण । उत्त० २८२ ।

जिण्णा–जित्वा–पुन पुनरभ्यासेन परिचितान् कृत्वा । उत्त० ८१ ।

जिज्जूहइ–निष्काश्यते । बृ० तृ० ४ ।

जिज्झगारा–सुभाकविशेष, शिल्पार्यभेद । प्रज्ञा० ५६ ।

जिट्ठय–ज्येष्ठक–अतिशयप्रशस्यमतिवृद्ध वा । उत्त० ४९० ।

जायसड्ढे–जाता–प्रवृत्ता श्रद्धा–इच्छाऽस्येति जातश्रद्ध । ज्ञाता० ६ ।

जायसूयग–जातसूतक नाम जन्मानन्तरदशाह्नि यावत् । व्य० प्र० ७ आ ।

जाया–हे पूत्र । ज्ञाता० ५० । जाता–अभियोगकृता विषकृता च । व्य० द्वि० ३१५ आ । जाता–मूलगुणैं प्राणातिपातादिभिरशुद्धा । ओघ० १६३ । चमरासुरेन्द्रस्य बाह्या पर्षत् । जीवा० १६४ । यात्रा–सयमनिर्वहणनिमित्तम् । उत्त० २६४ । जाता–प्रकृतिमहत्त्ववर्जितत्वेनास्थानकोपादीना जातत्वाज्जाता, चमरस्य तृतीया पर्षत् । भग०२०२ । शक्रदेवेन्द्रस्य बाह्या पर्षद् । जीवा० ३६० । या दोषात्परित्यागार्हाहारविषया सा जाता । आव० ६४१ । यात्रा–सयमयात्रा । भग० १२२ । चमरेन्द्रस्य बाह्या पर्षत् । ठाणा० १२७ ।

जायाइ–अवश्य यायजीति यायाजी । उत्त० ५२२ । जाता । आचा० ३४८ ।

जायामायावित्ती–सयमयात्रामात्रार्थ वृत्ति –भक्तग्रहण–यात्रामात्रावृत्ति । औप० ३७ ।

जायाहि–याचस्व । उत्त० ५३२ ।

जार–जार –नाय्यविशेष । ज० प्र० ४१४ । मणिलक्षणविशेष । जीवा० १८६ । जं० प्र० ३१ । नि० चू० प्र० २६६ अ ।

जारु–अनन्तकायवनस्पतिविशेष । भग० ८०४ ।

जारेकण्हा–वाशिष्ठगोत्रस्यावशेष । ठाणा० ३६० ।

जाल–आनायम् । उत्त० ४०७ । जाल–मत्स्यवन्धनम् । प्रश्न० १३ । मत्स्यबन्धनविशेष । विपा० ८१ । जालकम् । प्रज्ञा० ६६ । सूर्य० २६४ । जीवा० १७५ ।

जालधर–गोत्रविशेष । आचा० ४२१ ।

जाल–जाल–सच्छिद्रो गवाक्षविशेष । ज्ञाता० १४ । जाल –गवाक्ष । ज० प्र० १८८ । मूलाग्निप्रतिबद्धा ज्वाला । दश० १५४ । जाल -समूह । उत्त० ४६० ।

जालकडए–जालानि–जालकानि भवनभित्तिषु प्रसिद्धानि तेषा कटक –समूह जालकटक, जालकाकीर्णा रम्यसस्थानप्रदेशविशेषपङ्क्ति । जीवा० १७८ ।

जालकडगा–जालकाकीर्णौ रम्यसस्थानौ, प्रदेशविशेषौ । ज० प्र० ५२ ।

जालकिडुगतरेण–जालकटकान्तरे । आव० ६३ ।

जालगं–जालक–चरणाभरणविशेष । औप० ५५ ।

जालगंठिया–जाल–मत्स्यबन्धन तस्येव ग्रन्थयो यस्या सा जालग्रन्थिका–जालिका भग० २१४ । सङ्कलिकामात्रम् । भग० २१५ ।

जालग– । नि० चू० प्र० १२७ अ ।

जालगद्दह– । नि० चू० द्वि० ११२ अ ।

जालगा–द्वीन्द्रियजीवभेद । उत्त० ६६५ ।

जालघरगं–जालगृह–जालकान्वितम् । ज्ञाता० ६५ । जालगृहक–जालकयुक्त ग्रहम् । जीवा० २०० । दार्वादिमयजालकप्रायकुड्य यत्र मध्यव्यवस्थित वस्तु वहिस्थिर्तैर्दृश्यते । ज्ञाता० १२६ ।

जालघरगा–जालयुक्तानि गृहकाणि । ज० प्र० ४५ ।

जालपंजर–जालपञ्जर–गवाक्षम् । जीवा० २०५, ३६० । गवाक्ष । ज० प्र० ४६ । गवाक्षापरपर्यायाणि । राज० ६२ ।

जालयं–जालक–छिद्रान्वितो गृहावयवविशेष । प्रश्न० ८ ।

जालवंदं–जालवृन्द–गवाक्षसमूह । जीवा० २६६ ।

जालविंद–जालवृन्द –गवाक्षसमूह । ज० प्र० १०७ ।

जालंतररयणं–जालानि–जालकानि तानि च भवनभित्तिषु लोके प्रतीतानि तदन्तरेषु विशिष्टशोभानिमित्त रत्नानि यत्र तत् जालान्तररत्नम् । जीवा० ३७६ ।

जाला–सुभूमचक्रवर्तिन माता । सम० १५२ । ज्वाला–छिन्नमूलाऽनङ्गारप्रतिबद्धा । आचा० ४६ । महापद्ममाता । आव० १६१ । ज्वाला–अनलसबद्धा । जीवा० १०७ । अनलसबद्धा दीपशिखा वा । जीवा० २६ । ज्वाला–जाज्वल्यमानखादिरादिज्वाला अनलसबद्धा दीपशिखा । प्रज्ञा० २६ । ज्वाला–अग्निशिखा । ठाणा ३३६ । छिन्नमूला–ज्वलनशिखा । उत्त० ६६४ । ज्वाला–इन्धनच्छिन्ना । ज्ञाता० २०४ ।

जालाउया–द्वीन्द्रियजन्तुविशेष । प्रज्ञा० ४१ ।

जालाणि–बन्धनविशेषरूपाण्यात्मनोऽनर्थहेतून् । उत्त०४०७ ।

जालायुसा–द्वीन्द्रियजीवविशेष । जीवा० ३१ ।

जालि–वशसमूह । नदी० १५५ । जालि –अन्तकृद्दशानां

चतुर्थवर्गस्य प्रथममध्ययनम् । अन्त० १४ । अनुत्तरोपपातिकदशाना प्रथमवर्गस्य प्रथममध्ययनम् । अनुत्त० १ ।
जालिग-जालिक-देशकथाविशेष । आव० ५८१ ।
जालिया-जालिका-लोहकञ्चुक । प्रश्न० ४७ ।
जाली-जाली । आव० ४२१ ।
जालीकुमारो- । अनुत्त० १ ।
जालो-जाल -विच्छित्तिच्छिद्रोपेतगृहावयवविशेष । औप० ६५ ।
जाव-यावत्-अवधिवाचक । ज० प्र० ३८६ ।
जावतावति- । ठाणा० ४६७ ।
जावतिगा- । नि० चू० प्र० १८६ अ ।
जावतिया-यावन्तो भिक्षाचरा आगमिष्यन्ति तावता दातव्य इति अभिप्रायेण यस्या दीयते सा यावन्तिका । बृ० द्वि० १४० अ । यावद्भिक्षुकाणा दानाय सखडी । बृ० द्वि० १४० अ ।
जावते-यावान्-भगवत्या प्रथमशतके षष्ठ उद्देश । भग० ६ ।
जाव-यावत्-ऐदम्पर्यार्थं । भग० २६९ । यावत्-सम्पूर्णं । ज० प्र० २४३ । यावच्छब्दो न सग्राहक किन्त्ववधिमात्रसूचक । ज० प्र० ३३८ । यावच्छब्दो न गर्मगतसग्रहसूचक सग्राह्यपदाभावात्, किन्तु सजातीयभवनपतिसूचक । ज० प्र० १६१ ।
जावई-कन्दविशेष । उत्त० ६९१ ।
जावऊसासो-यावदुच्छ्वास -यावदायु । आव० ८४३ ।
जावए-यापयति-वादिन कालयापना करोति । ठाणा० २६१ । जानाति छाद्मस्थिकज्ञानचतुष्टयेनेति ज्ञापक । भग० ४ ।
जावग-यापक -विकल्पभेद । दश० ५७ ।
जावज्जीवाए-यावज्जीव-आप्राणोपरमादित्यर्थ । दश० १४३ ।
जावणिज्ज- । नि० चू० प्र० १५० अ ।
जावणिज्जा-यापनीया-यथाशक्तियुक्ता । आव० ५४७ ।
जावताव-यावद्वयम् । भग० ४६८ ।
जावति-वलयविशेष । प्रज्ञा० ३३ ।
जावतिय-आचडाला । नि० चू० प्र० २३० आ ।

जावदय-यावदय-परिमाणे मर्यादाया अवधारणे च । विशे० १३२३ ।
जावसिआ-यावसिका-घासवाहिका । ओघ० ६७ ।
जावसिया-यवस -सस्यप्रायोग्यमुद्गमाषादिरूप आहारस्तेन तद्वहनेन चरन्तीति यावसिका । बृ० प्र० २४७ आ । जवस वहति जे ते जावसिया । नि० चू० प्र० २०० आ ।
जावित-यापयन् । आव० ५३८ ।
जासुमणकुसुमे-जपाकुसुमम् । प्रज्ञा० ३६१ ।
जासुमणा-जासुमणा नाम वृक्ष । भग० ६१६ ।
जासुमि(म)णा-जपा वनस्पति विशेषस्तस्या सुमनस पुष्पाणि । अन्त० ६ ।
जासुवण-वल्लीविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।
जाहओ-जाहक -तिर्यग्विशेष । आव० १०३ ।
जाहग-जाहक -सेहुलक । विशे० ६२७ । जाहक । व्य० द्वि० ३९३ अ । जाहका -कण्टकावृतशरीरा । प्रश्न० ८ ।
जा(वा)हाडिता-मगर्भजाता । बृ० द्वि० २५७ अ ।
जाहिति-भविष्यति । आव० ४२२ ।
जाहो-भुजपरिसर्प तिर्यग्योनिक । जीवा० ४० ।
जिंघणा-जिघ्रणम् । ओघ० १३८ ।
जिअ-जिता-परिचिता । दश० २३५ ।
जिअनिद्द-जिता निद्रा-आलस्य येन तत् जितनिद्र-त्यक्तालस्यम् । ज० प्र० २३७ ।
जिअसत्तु-जितशत्रु-अजितपिता । आव० १६१ । काकन्दीनगराधिपति । अनुत्त० २ ।
जिइंदिए-जितेन्द्रिय -सयमी । भग० १२२ ।
जिच्च-जीयते-हार्यते अतिरौद्रैरिन्द्रियादिभि आत्मा तदिति ज्ञेयम् जायेत्-हार्येत । जीयते-हार्यते । उत्त० २८२ ।
जिच्चमाणो-जीयमानो-हार्यमाण । उत्त० २८२ ।
जिण्णा-जित्वा-पुन पुनरभ्यासेन परिचितान् कृत्वा । उत्त० ८१ ।
जिज्जूहइ-निष्काश्यते । बृ० तृ० ४ ।
जिज्झगारा-तुन्नाकविशेष, शिल्पार्यभेद । प्रज्ञा० ५६ ।
जिट्ठय-ज्येष्ठक-अतिशयप्रशस्यमतिवृद्ध वा । उत्त० ४६० ।

जिट्ठा—ज्येष्ठा—सुदर्शना, अनवद्याङ्गी । विशे० ६३५ । नि० चू० द्वि० ४६ अ ।

जिट्ठामूले—ज्येष्ठामूल —ज्येष्ठ । उत्त० ५३७ ।

जिणंतस्स—जयत —अभिभवत । दश० १६० ।

जिणंदासे—जिनदास —विपाकदशाना द्वितीयश्रुतस्कन्धे पञ्चममध्ययनम् । विपा० ८६ ।

जिण—जिन —रागादिजेता । भग० ६७ । जयति—निराकरोति रागद्वेषादिरूपानरातीनिति जिन । रागादिजय । भग० ६ । रागादीना जेता, यद्वा मन पर्यवज्ञानी । ज० प्र० १३६ । जिन —तीर्थङ्कर । आव० ६६२ । हिताप्त्यनिवर्त्तकयोगमिद्धो गणधारी । जीवा० ३ । हिताप्त्यनिवर्त्तकयोग, हितप्रवृत्तगोत्रविशुद्धोपायाभिमुखापायविमुखादिको वा । गोत्रविशुद्धोपायाभुमुखहितप्रवृत्तादिभेद । जीवा० ४ । जयति—निराकरोति रागद्वेषादिरूपानरातीनिति जिन । सम० ४ । सयोगीकेवली । ठाणा० २०२ । विशिष्टश्रुतधर, श्रुतजिन अवधिजिन, मन पर्यायज्ञानजिन, छद्मस्थवीतरागश्च । आव० ५०१ ।

जिणइ—जयति । आव० ५०२ ।

जिणकप्पट्ठिति—जिना —गच्छनिर्गतसाधुविशेषास्तेषा कल्पस्थिति जिनकल्पस्थिति । ठाणा० १६६ ३७४ ।

जिणकप्पिय—जिनकल्पिक । आव० ३२३ ।

जिणकप्पिया—कल्पिकविशेष । नि० चू० प्र० ३३८ आ ।

जिणति—जयति । आव० ३४२ ।

जिणदत्त—जिनदत्त —चम्पाया सुश्रावक । दश० ४७ । लोभोदाहरणे पाटलीपुत्रे श्रावक । आव० ३९७ । परलोकनमस्कारफलविषये मथुराया श्रावक । आव०४५४ । इहलोके कायोत्सर्गफलमितिदृष्टान्ते श्रेष्ठी सुभद्रापिता । आव० ७९९ । चम्पाया सार्थवाह. । ज्ञाता० २०० ।

जिणदत्तपुत्त—चम्पाया सार्थवाहपुत्र । ज्ञाता० ६१ ।

जिणदासो—जिनदास —मनोगुप्तिदृष्टान्ते श्रेष्ठीसुत श्रावक । आव० ५७८ । महेश्वरविशेष । आव० ३९६ । मथुराया श्राद्धविशेष । आव० १९७ । परलोकफलविषये कुलपुत्रमित्रम् । आव० ८६३ । रायपुरे श्रावकविशेष । महाचन्द्राभिधकुमारस्य सुत । विपा० ९५ ।

जिणदेवो—जिनदेव —भावप्रणिधिविषये भृगुकच्छे आचार्य । आव० ७१२ । आत्मदोषोपहारविषयेऽर्हंमित्रश्रेष्ठिपुत्र । आव० ७१४ । मूलगुणप्रत्याख्याने कोटीवर्षे श्रावक । आव० ७१५ । सङ्गपरिहरणविषये चम्पाया सार्थवाह श्रावक । आव० ७२३ ।

जिणधम्म—काचनपुरश्रेष्ठी यत्पृष्ठि स्थालीदग्धा द्विमासपर्याय । मर० ।

जिणपडिमा—जिनप्रतिमा । जीवा० २२८ ।

जिणपसत्थं—जिनप्रशस्त—जिनप्रशासितम् । प्रश्न० १४७ ।

जिणपालिए—चपाया माकन्दीभद्राया पुत्र । ज्ञाता० १५६ ।

जिणमय—जिना —तीर्थंकरास्तेषा आगमरूप प्रवचनम् । आव० ५८८ । आगम । दश० २५५ ।

जिणरक्खिरा—चपाया माकन्दीभद्राया पुत्र । ज्ञाता० १५६ ।

जिणलिंगं—अचेलकत्वम् । वृ० तृ० ५५ आ ।

जिणवयणं—जिनवचन—वाच्यवाचकयोरभेदोपचाराज्जिनवचनाभिहितमनुष्ठानम् । उत्त० ७०८ ।

जिणवयणवाहिरो—जिनवचनवाह्य —यथावस्थितागमपरिज्ञानरहित । आव० ५३३ ।

जिणसकहा—जिनसकथा—जिनसक्थीनि । ज० प्र० ५३३ ।

जिणसकहाओ—जिनसक्थीनि—जिनास्थिनि । भग० ५०५ । जिनसक्थीनि—तीर्थंकराणा मनुजलोकनिर्वृताना सक्थीनि अस्थीनि । सम० ६४ ।

जिणसासण—जिनशासन—जिनागमम् । उत्त० ८८ । जिनशासन । क्रोधविपाकप्रतिपादक वीतरागवचनम् । दश० २३२ ।

जिणा—रागद्वेषमोहान् जयन्तीति जिना —सर्वज्ञा । ठाणा० १७४ । ये जिनकल्प प्रतिपत्स्यन्ते ते जिना । वृ० प्र० २२९ आ । जिनकल्पिका । ओघ० २०८ । गच्छनिर्गता साधुविशेषा । वृ० तृ० २५१ अ ।

जिणित्ता—जित्वा । उत्त० ३१३ ।

जिणियव्वं—जेतव्ययम् । आव० ३४२ ।

जिणियाइओ—जितवान् । आव० ५०२ ।

जिणुस्सेहो—जिनोत्सेध —जिनाना उत्कर्षत पञ्चधनु शतानि जघन्यत सप्तहस्ता । जीवा० २२८ ।

जिण्णकूवो–जीर्णकूप । आव० १५२ ।
जिण्णुज्जाणे–जीर्णोद्यानम् । ज्ञाता० ७८ ।
जित–परावर्तनं कुर्व्वत परेण वा क्वचित् पृष्टस्य यच्छी-घ्रमागच्छति तज्जितम् । अनु० १५ ।
जितशत्रु–छत्रानगर्यां नृप । आव० १७७ । मिथिला-नगर्यां राजा । सूर्य० २ । सहसम्मत्यादिदृष्टान्ते वसन्त-पुरे राजा । आचा० २१ ।
जितसत्तू–जितशत्रु–पञ्चालजनपदे राजा काम्पिल्यनगर-नायक इति । ठाणा० ४०१ । जितशत्रु–भद्दिलपुराधि-पति । अन्त० ४ । बृ० तृ० २३१ अ । जितशत्रु–कौशाम्बीनृपति । उत्त० २८७ । चम्पाया नरपति । ज्ञाता० १७३ ।
जितारी–आनन्दपुरनगरे राजा । बृ० तृ० १०७ आ ।
जितारीराया–आनदपुरे राया । नि० चू० द्वि० ४२ अ ।
जिनकल्प–साधुभेदविशेष । विशे० १० ।
जिनकल्पिक–साधुभेदविशेष । भग० ४ ।
जिनकल्पिकादिसमाचार–कल्प । भग० ६१ ।
जिनदत्त–आधासम्भवदृष्टान्ते सङ्कुलग्रामे श्रावक । पिण्ड० ६३ ।
जिनदास–आच्छेद्यद्वारविवरणे वसन्तपुरे श्रावक । पिण्ड० १११ ।
जिनप्रभसूरि–आचार्यविशेष । ज० प्र० ५४३ ।
जिनभद्र– । विशे० १ ।
जिनमति–आधासम्भवदृष्टान्ते सङ्कुलग्रामे जिनदत्तभा-र्या । पिण्ड० ६३ ।
जिनमुद्रा–मुद्राभेद । भग० १७४ ।
जिना–जिनकल्पिकादय । ओघ० १६७ । गच्छनिर्गत-साधुविशेषा । ठाणा० १६१ ।
जिनेश्वर–अभयदेवसूरीणा गुरु । औप० ११६ । ज्ञाता० २५४ ।
जिब्भाइ–अतीवगिद्धो । नि० चू० द्वि० १३५ आ ।
जिब्भिंदिए–जिह्वेन्द्रियम् । प्रज्ञा० २९३ ।
जिब्भिआ–जिह्विका, प्रणाला । ज० प्र० २९१ ।
जिमित–जिमत् । आव० ३५३ ।
जिम्मइ–जिम्यते । आव० १५० ।
जिम्ह–माया । व्य० प्र० २४६ आ ।
जिम्ह–लज्जनीय । नि० चू० प्र० २९६ अ । बृ० द्वि० ७३ आ । परवञ्चनाभिप्रायेण । भग० ५७३ । जिह्म । ठाणा० ७७० । जैम्हम् । सम० ७१ ।
जिम्हजढ–मायारहित । व्य० प्र० २४६ आ ।
जियंतए–हरितविशेष । प्रज्ञा० ३३ ।
जिय–जीतव्यवहार । उत्त० ६४ । जित–परिचितम् । विशे० ६३५ । जिन–द्रुतमागच्छति । विशे० ४०५ ।
जियकप्प–जीतकल्प–जिनप्रतिबोधनलक्षण आचरितकल्प ठाणा० ४६३ । नि० चू० तृ० १०२ अ ।
जियपडिमं– । नि० चू० प्र० २४३ आ ।
जियपडिमा–जीवप्रतिमा । आव० ६६८ ।
जियसत्तु–द्वितीयतीर्थङ्करस्य पितृनाम । सम० १५० । जितशत्रु–राजा । आव० ३७२ । मिथिलाया नृपति । ज० प्र० १ । शिक्षायोगदृष्टान्ते प्रत्यन्तनगराधिपति । आव० ६७८ । इहलोके कायोत्सर्गफलमितिदृष्टान्ते वसन्तपुरेऽधिपति । आव० ७९९ । क्षितिप्रतिष्ठितनगरस्य राजा । पिण्ड० ३० । जितशत्रुर्नाम नरपति । व्य० प्र० १८८ आ । श्रावस्त्या नगर्यां राजा राज० ११६ । वाणिजग्रामनगरे राजा । उपा० १ । खितिपति-ट्ठियनयरे राया । नि० चू० तृ० ६८ आ । नि० चू० प्र० ३५९ आ । सावत्थिनयरे राया । बृ० द्वि० १५२ आ । वणवासीनगरीए राया । बृ० तृ० ११३ आ । जितशत्रु चम्पानगर्यामधिपति । उत्त० ९२ । ज्ञाता० १९३ । अचलपुरेनृपति । उत्त० १०० । श्रावस्तिनगर्या राजा । उत्त० ११४ । मथुराया नृपति । आव० ३९८ । उत्त० १२० । उत्त० १४८ । उज्जयिन्या नृपति । उत्त० १९२, २१३ । सर्वतोभद्रनगराधिपति । विपा० ६८ । नृपति । विपा० ९५ । वसन्तपुरे नृपति । आव० ३७२, ३७८, ३९३ । ओघ० १५८ । जितशत्रु–लोहार्गलराजधान्या राजा । आव० २१० । तुरुमिणीनगर्यां राजा । आव० ३६९ । मृगकोष्ठकनगरे राजा । आव० ३९१ । पाटलीपुत्रे राजा । आव० ३९७ । स्पर्शेन्द्रिय-दृष्टान्त वसन्तपुरे राजा । आव० ४०२ । शिल्पसिद्ध-दृष्टान्ते पाटलिपुत्रे राजा । आव० ४०९ । परलोके नम-

स्कारफलविषये वसन्तपुरनगरे राजा। आव० ४५३। योगसङ्ग्रहे शिक्षादृष्टान्ते क्षितिप्रतिष्ठितनगरे राजा। आव० ६७०। तितिक्षोदाहरणे मथुरायामधिपति। आव० ७०२। आत्मसंयमविराधनादृष्टान्ते क्षितिप्रतिष्ठितनगरेऽधिपति। आव० ७३२। राजाभियोगविषये हस्तिनागपुरनृपति। आव० ८११। गुणोदाहरणे पाटलिपुत्रे राजा। आव० ८१९। द्रव्यातङ्कोदाहरणे राजगृहे राजा। आचा० ७५। पञ्चालाधिपती। ज्ञाता० १२४। आम्लकल्पाया नरपति। ज्ञाता० २४८।

जियसत्तूराया- । नि० चू० प्र० २१८ आ।

जिया-जिता-अभ्यस्ता उचिता वा अनुष्ठीयमाना। आव० ५९४।

जियारी-सम्भवजिनपिता। सम० १५०। जितारि-सम्भवपिता। आव० १६१।

जिवंलगाण- । भग० ८०२।

जिवसंथव-जिन 'लोगस्सुज्जोअगरे' इत्यादिरूप। दश० १८०।

जिव्हा-रसना। आचा० ३८।

जीअ-जीत-कल्प, आचार। ज० प्र० १५९। कल्प। ज० प्र० २५२।

जीअलोग-जीवलोक-वर्तमानभवादन्य भव पृथिवीकायिकादिक, अपमृत्यु प्राप्नुतेत्यर्थ। ज० प्र० २४६।

जीए-प्रभूतानेकगीतार्थकृता मर्यादा तत्प्रतिपादको ग्रन्थोऽप्युपचारात् जीतम्। व्य० प्र० ५ अ। जीत-व्यवहार। व्य० द्वि० ३६३।

जीत-स्थिति कल्पो मर्यादा (सूत्र) व्यवस्था च। नदी० ४९। भग० ३८४। द्रव्यक्षेत्रकालभावपुरुषप्रतिषेवानुवृत्त्या संहननधृत्यादिपरिहाणिमवेक्ष्य यत्प्रायश्चित्तदान यो वा यत्र गच्छे सूत्रातिरिक्त कारणत प्रायश्चित्तव्यवहार प्रवर्त्तितो बहुभिरन्यैश्चानुवर्त्तितस्तज्जीतमिति। ठाणा० ३१८।

जीभुमणा-गुच्छाविशेष। प्रज्ञा० ३२।

जीमूत-जीमूत-बलाहक। जीवा० १८९। ठाणा० २७०। जीमूत-प्रावट्प्रारम्भसमयभावीजलभृत, बलाहक। प्रज्ञा० ३६०।

जीयति-जीयन्ते-हार्यन्ते। उत्त० २७८।

जीय-जीवित-श्रुत, मर्यादा, सवानुचीर्णम्। विशे० ५०७। जीत-दुष्टनिग्रहविषयमाचरितम्। प्रश्न० ५८। जीत-जीवित, अवश्य, अव्यवच्छित्तिनयाभिप्रायत सूत्रमेव वा। आव० ६८। जीव-जीवित, जीत-कल्पत। प्रश्न० १३।

जीयदंडो-जीतदण्डः-रूढदण्ड, जीवदण्डो वा-जीवितनिग्रहलक्षण। प्रश्न० ५८।

जीया-जीवा-प्रत्यञ्चा। ज्ञाता० २२२।

जीरंतो-जीर्यन्। आव० ५६९।

जीरकं-रसविशेष। सूर्य० २९३। हरितकविशेष। २९३।

जीरा- । भग० ८०२।

जीरु-साधारणबादरवनस्पतिकायविशेष। प्रज्ञा० ३४।

जीर्ण.-हानिगतदेह। भग० ७०५।

जीर्णकर्पट-कुचेल। औप० ७४।

जीवंजीवग - । भग० ६२७।

जीवंजीवा-चर्मपक्षिविशेष। प्रज्ञा० ४९।

जीवजीवेण-जीवजीवेन-जीवबलेन गच्छति न शरीरबलेनेत्यर्थ। भग० २१६। ज्ञाता० ७६। जीववीर्येण न तु शरीरवीर्येणेत्यर्थ। अनुत्त० ७।

जीवजीवेन-जीवबलेन न शरीरबलेनेत्यर्थ। अन्त० २७।

जीवजीवो-चर्मपक्षिविशेष। जीवा० ४१।

जीवतिया-अजीविष्यत्। आव० ३६८।

जीव-उपयोग। विशे० ८८७। आयु प्राणादिमान्। अनु० २४२। जीवितवान् जीवति जीविष्यति चेति जीव-प्राणधारणधर्मा आत्मा। ठाणा १९। जीवसामान्यम्। जीवनिति प्राणान् धारयन्तित्यर्थ। जीवनपर्यायविशिष्ट। जीवा० १४०। प्राणो भूत सत्त्वो विज्ञो वेदयिता। भग० १९२। जीवा-प्रत्यञ्चा। ज० प्र० २०१। प्राणधारणम्। ठाणा० ११९। जीतम्। व्य० द्वि० ३६३ आ। जीव। भग० २२९। ज्ञानाद्युपयोग। भग० ३२५। जीवा-गर्भव्युत्क्रान्तिकसम्मूर्च्छनजौपपातिकपञ्चेन्द्रिया। आचा० ७१।

जीवअजीवमीसग-जीवाजीवमिश्रा-सत्यामृषाभाषाभेद।

दश० २०९ ।

जीवअपच्चक्खाणकिरिया–जीवविषये प्रत्याख्यानाभावेन यो बन्धादिर्व्यापार सा जीवाप्रत्याख्यानक्रिया ।ठाणा०४१।

जीवआरंभिया–यज्जीवानारभमाणस्य–उपमृद्नत कर्मबन्धन सा जीवारम्भिकी । ठाणा ४१ ।

जीवइ–गुच्छाविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

जीवकप्पो–बहुशोऽनेकवार प्रवृत्त महाजनेन वानुवर्तित एष पञ्चमको जीतकल्प । व्य० द्वि० ४४१ अ ।

जीवकिरिया–जीवस्य क्रिया–व्यापारो जीवक्रिया । ठाणा० ४० ।

जीवगाहो–जीवग्राहम् । उत्त० ५१ ।

जीवग्गाहो गिण्हति–जीवतीति जीवस्त जीवन्त गृह्णान्ति । ज्ञाता० ८७ ।

जीवघणो–जीवघन –निचितीभूतजीवप्रदेशरूप । प्रज्ञा० ६१० ।

जीवजढ–आहाकम्म । बृ० द्वि० १०६ अ ।

जीवजीवक–जीवजीवक –पक्षिविशेष । प्रश्न० ८ ।

जीवण–जीवन–तथैवाजन्मापि प्रवृत्ति । प्रश्न० १०६ ।

जीवदय–जीवन जीवो भावप्राणधारणममरणधर्मत्वमित्यर्थस्त दयत इति जीवदयो, जीवेषु वा दय यस्य स जीवदय । सम० ४ ।

जीवदिट्ठिया–अश्वादिदर्शनार्थं गच्छत या सा जीवदृष्टिका । ठाणा० ४२ ।

जीवन–स्थिति –आयु कर्मानुभूतिरिति । प्रज्ञा० १६९ ।

जीवनिव्वत्ती–निर्वर्त्तन निर्वृत्तिर्निष्पत्तिर्जीवस्यैकेन्द्रियादि तया निर्वृत्ति जीवनिर्वृत्ति । भग० ७७२ ।

जीवनेसत्थिया–राजादिसमादेशाद्यदुदकस्य यन्त्रादिभिर्निसर्जन सा जीवनैसृष्टिकी । ठाणा० ४३ ।

जीवपएसा जीव प्रदेशा एव येषा ते जीवप्रदेशा । ठाणा ४१० । जीव –प्रदेश एवैको येषा मतेन ते जीवप्रदेशा । औप० १०६ ।

जीवपएसिता–जीव प्रदेश एव येषा ते जीवप्रदेशास्त एव जीवप्रादेशिका, अथवा जीवप्रदेशो जीवाभ्युपगतो विद्यते येषा ते, चरमप्रदेशजीवप्ररूपिण । ठाणा ४१० ।

जीवपरिणामे–जीवस्य–परिणामो जीवपरिणाम । प्रज्ञा० २८४ ।

जीवपाउसिया–जीवे प्रद्वेषाज्जीवप्राद्वेषिकी । ठाणा०४१ ।

जीवपाओगिअ–जीवप्रायोगिक जीवप्रयोगेन निर्वृत्त प्रायोगिकप्रथमभेद । आव० ४५७ ।

जीवपाओसिया–जीवस्य–आत्मपरतदुभयरूपस्योपरि प्रद्वेषाद् या क्रिया प्रद्वेषकरणमेव वा जीवप्राद्वेषिका । भग० १८२ ।

जीवपारिग्गहिया–जीवान् परिगृह्णाति जीवपारिग्रहिकी पारिग्रहिकी क्रियाया प्रथमो भेद । आव० ६१२ ।

जीवप्रदेशा –निह्नवाश्चरमप्रदेशजीवप्ररूपिण इति हृदयम् । विशे० ९३३ ।

जीवफुडा–जीवेन स्पृष्टानि–व्याप्तानि जीवस्पृष्टानि । ठाणा० २५२ ।

जीवभावं–जीवभाव –जीवत्व, चैतन्यम् । भग० १४९ ।

जीवमीसए–जीवविषय मिश्र सत्यासत्य जीवमिश्रम् । ठाणा० ४९० ।

जीवमीसग–जीवमिश्रा सत्यामृषाभाषाभेद । दश० २०९ ।

जीवमीस्सिया–प्रभूताना जीवता स्तोकाना च मृताना शङ्खशङ्खनकादीनामेकत्र राशौ दृष्टे यदा कश्चिदेव वदति अहो ! महान् जीवराशिरयमिति तदा सा जीवमिश्रिता । प्रज्ञा० २५६ ।

जीवलोग–जीवलोक–ब्रह्माण्डम् । ज० प्र० २०६ । जीवलोक –जीवाधार –क्षेत्रम् । प्रश्न० ११५ ।

जीवविप्पजढ–आत्मना विप्रमुक्तम् । ज्ञाता० ८५, १६८ ।

जीववेयारणिया–जीव विदारयति–स्फोटयतीति, अथवा जीव–पुरुष विदारयति–प्रतारयति वञ्चयतीत्यर्थं । ठाणा० ४३ ।

जीवसामंतोवणिवाइया–जीवसामन्तोपनिपातिकी– समन्तादनुपततीति सामन्तोपनिपातिकीक्रिया, तस्या प्रथमो भेद । आव० ६१३ ।

जीवसाहत्थिया–यत् स्वहस्तगृहीतेन जीवेन जीव मारयति सा जीवस्वाहस्तिकी । ठाणा० ४२ ।

जीवा–जीविता इत्यर्थ । व्य० द्वि० १६२ अ । प्राणधारणम् । उपा० ४ । जीवा –जीवन्ति जीविष्यन्ति जीवितवन्त इति । अनु० ७४ । पञ्चेन्द्रिया । ज्ञाता० ६१ ।

प्रज्ञा० १०७। ठाणा० १३६। जं० प्र० ५३९। जीवन्ति जीविष्यन्ति अजीविषुरिति जीवा -नारकतिर्यग्नरामरा लक्षणाश्चतुर्गतिका। आचा० १७९। प्रत्यञ्चा-दवरिकेत्यर्थ। सूर्य० २१ २३३। उत्त० ३११। जीवा-ऋज्वी सर्वान्तिमप्रदेशपङ्क्ति। जं० प्र० ६८।

जीवाओ-जम्बूद्वीपलक्षणवृत्तक्षेत्रस्य वर्षाणा वर्षधाराणा ऋज्वीसीमा जीवोच्यते। सम० ४३।

जीवाजीवमिस्सिया-मृतजीवतिजीवराशौ एतावन्तोऽत्र जीवन्त एतावन्तोऽत्र मृता इति नियमेनावधारयतो विसवादे जीवाजीवमिश्रिता। प्रज्ञा० २५६।

जीवाजीवमीसए-जीवाजीवविषय मिश्रक जीवाजीवमिश्रकम्। ठाणा० ४९०।

जीवाजीवविभत्ति-जीवाजीवविभक्ति -उत्तराध्ययनेषु षट्त्रिंशत्तममध्ययनम्। उत्त० ९।

जीवाजीवविभत्ती-उत्तराध्ययनेषु षट्त्रिंशत्तममध्ययनम्। सम० ६४।

जीवाना-सयमजीवितेन जीवता जिजीविषूणा च। आचा० २५६।

जीवाभिगमे-जीवाना ज्ञेयाना अवध्यादिनैवाभिगमो जीवाभिगम। ठाणा० १३३।

जीविआरिहं-जीविताहँ-आजीविकायोग्यम्। जं०प्र० १८८।

जीविऊसविए-जीवितमुत्सूते-प्रसूति इति जीवितोत्सव स एव जीवितोत्सविक। जीवितविषये वा उत्सवो-मह स इव य स जीवितोत्सविक। भग० ४६८।

जीविए-असयमजीवित। उत्त० २९६। आचा० १०७, १२३। यद्यस्य स्वकार्य साधन प्रति समर्थं रूप तत्तस्य जीवितमिति रूढम्। उत्त० २२९।

जीवियतकरणो-जीवितान्तकरण प्राणवधस्य द्वाविंशतितम पर्याय। प्रश्न० ६।

जीविय-असयमाख्य। आचा० २५१। जीवितम्-कर्मणो दीर्घा स्थिति। भग० २८९। जीविकार्यं। उत्त० ४७८।

जीवियकारण-जीवितकारण-असयमजीवितहेतु। दश० ६६।

जीवियकिच्छ-कृच्छ्रजीविता। बृ० तृ० २४२ अ।

जीवियरसहे-साधारण बादर वनस्पतिकायविशेष। प्रज्ञा० ३४।

जीवियववरोवण-जीवितव्यपरोपणम्। ओघ० १५६।

जीवाया-जीवस्य-देहस्य सम्बन्धी अधिष्ठातृत्वादात्मा जीवात्मा पुरुष, जीवात्मा तु सर्वभेदानुगामि जीवद्रव्य, जीवस्यैव स्वरूपम्। भग० ७२४।

जीवियाइओ-जीवितवान्। बृ० २८ अ।

जीवियारिह्-आजन्मनिर्वाह्योग्यम्। ज्ञाता० २४।

जीवियाससप्पओगे-जीवित-प्राणधारण तत्राभिलापप्रयोग -यदि बहुकाल जीवेयमिति जीविताशसाप्रयोग। आव० ८२९।

जीवे-जीवेत्-अविकृत आस्ते। सूत्र० २७८। जीविते। ठाणा ५२०।

जीवेजीवे-जीवेजीवे-इह एकेन जीव शब्देन जीव एव गृह्यते द्वितीयेन च चैतन्यम्। भग० २८५।

जीवो-जीवन जीव -भावप्राणधारण, अमरणधर्मत्वमित्यर्थः। औप० १५।

जीहा-जिह्वा-रसना। जीवा० २७३।

जुगमच्छा-मत्स्यविशेष। प्रज्ञा० ४४।

जुंगिओ-जात्यङ्गहीन। ठाणा० १६५।

जुंगियंग-जुङ्गिताङ्ग-कर्त्तितहस्तपादाद्यवयव। पिण्ड० १३१। व्यङ्गित। ठाणा० ३४२।

जुजक-तृणविशेष। जीवा० २६।

जुंजणाकरणं-योजनाकरण मन प्रभृतीना व्यापारकृतिः। आव० ४६६।

जुजुति-युञ्जन्ति-परिसमापयन्ति। सूर्य० १७२।

जुंजुक-तृणविशेष। उत्त० ६९२।

जुजे-युज्यात्-सङ्घट्टयेत्। उत्त० ५४।

जुअ- । नि० चू० प्र० १४८ अ।

जुअणद्धे-युगनद्ध -युगमिव नद्धो-योग, यथा युग वृषभस्कन्धयोरारोपित वर्तते तद्वत् योगोऽपि य प्रतिभाति म युगनद्ध इत्युच्यते। सूर्य० २३३।

जुअल-युगल-सजातीयविजातिययोर्लतयोर्द्वन्द्वम्। जं०प्र० २५।

जुआणा-जुवाणा। नि० चू० प्र० २५८ अ।

जुइ-युति, मेल । जं० प्र० १९२ ।

जुई-युक्ति इष्टपरिवारादियोग । उपा० २६ । शरीरगता आभरणगता च । जीवा० २१७ । युति-इष्टार्थसयोग । भग० १३२ । शरीराभरणाश्रिता । सूर्यं० २५८ । विवक्षितार्थयोग । औप० ५० । शरीराभरणविषया । सूर्यं० २८६ । प्रज्ञा० ६०० । द्युति-आन्तर तेज । ज्ञाता० १४० ।

जुइए-आभरणादिसम्बन्धिन्या युक्त्या वा उचितेषु वस्तु-घटना लक्षणया । विपा० ८६ । द्युति-शरीरगता आभरणगता च । जं० प्र० ६२ । द्युति-दीप्ति शरीरा-भरणादिसम्पत् तस्या -युतिर्वा इष्टपरिवारादिसयोगलक्षणा तस्या । जं० प्र० २०२ ।

जुउ-पृथक् । नि० चू० प्र० २४३ अ ।

जुए-युग-पञ्चसवत्सरमानम् । भग० २११ ।

जुगतर-यूपप्रमाणभूभाग युगान्तर । प्रश्न० ११० ।

जुग-वदिल्लाणखधे आरोविज्जति । नि० चू० प्र० ११७ आ । युग-यूप । भग० १४० । प्रश्न० ८१ । विपा० ३७ । सुषमदुष्षमादिकाल । जीवा० १२१ । युगम् । आव० ३४५ । चन्द्रादिसवत्सरपञ्चात्मकम् । सूर्यं० ९१ । युग -काल । व्य० प्र० २५६ आ । शरीरम् । दश० चू० ७४ । चतुर्हस्तम् । अनु० १५४ । पञ्चसवत्स-रिकम् । जं० प्र० ९१, ४९५ । पञ्चसवत्सरम् । जीवा० ३४४ । सम० ९८ । भग० ८८८ । यूप । ठाणा० ४५० । युगानि पञ्चवर्षमानानि कालविशेषा । लोक प्रसिद्धानि वा कृतयुगादीनि । पट्टपद्धतिपुरुषा । जं० प्र० १५५ ।

जुगपहाण- । नि० चू० प्र० ९ आ ।

जुगप्पहाण-युगप्रधान । आव० ३०२ । नि० चू० प्र० ३४० अ ।

जुगबाहु-सुविधिनायस्य पूर्वभवनाम । सम० १५१ ।

जुगबाहू-युगबाहु -महाविदेहे तीर्थंकर । विपा० ९४ । सत्यो(। चोचो ।)दाहरणे वासुदेव । आव० ७०६ ।

जुगमच्छो-युगमत्स्य, मत्स्यविशेष । जीवा० ३६ ।

जुगमाया-युगमात्रा दृष्टि । भग० ७५४ ।

जुगय-पृथक् । दश० ४७ ।

जुगल-युगल-द्वन्द्वम् । जीवा० १९९ । सजातीयविजा-तीययोर्लतयोर्द्वन्द्वम् । जीवा० १८२ ।

जुगलजीहो-युग्मजिह्व -आत्मोत्कर्षपराभिभवजिह्वाद्वययु-क्त । आव० ५६६ ।

जुगवं-युग-कालविशेष तत्प्रशस्तमस्यास्तीति युगवान् । उपा० ४६ । युग-सुषमादुष्षमादिकाल स स्वेन रूपेण यस्यास्ति न दोषदुष्ट स युगवान् । राज० २२ । युग-सुषमदुष्षमादिकाल सोऽदुष्टो निरुपद्रवो विशिष्टबलहेतुर्य-स्यास्त्यसौ युगवान् । अनु० १७५ ।

जुगसंवच्छरे-पञ्चसवत्सरात्मक युग तदेकभूदेशभूतो वक्ष्यमाणलक्षणश्चन्द्रादिर्युगसवत्सर । ठाणा० ३४४ । युग पञ्चवर्षात्मक तत्पूरक सवत्सरो युगसवत्सर । सूर्यं० १५३ ।

जुगसन्निभ-युगसन्निभ -वृत्ततया आयततया च यूपतुल्य । जीवा० २७१ ।

जुगाति-युगानि-पञ्चसवत्सराणि । ठाणा ८६ ।

जुगुछितो-कोलिगजातिभेदो । नि० चू० द्वि० ४३ आ ।

जुगुप्सना-परिस्थापना । उत्त० ४७८ ।

जुगुप्समान -निन्दन्परिहरन् । आचा० ११४ ।

जुगुप्से-निन्दामि । आव० ४५६ ।

जुगुप्सितानि-चर्मकारकुलादीनि । आचा० ३२७ ।

जुगेइ-षण्णवतिरङ्गुलानि युगम् । जं० प्र० ९४ ।

जुग्ग-युग्य-गोल्लविषयप्रसिद्ध द्विहस्तप्रमाण वेदिकोपशो-भित जम्पानम् । औप० ४ । जीवा १८९ । गोल्लवि-षयप्रसिद्ध द्विहस्तप्रमाण चतुरस्रवेदिकोपशोभित जम्पानम् । जीवा० २८१ । अनु० १५१ । पुरुषोत्क्षिप्तमाकाशयानम् । सूत्र० ३३० । वाहन, गोल्लदेशप्रसिद्धजम्पानविशेष । प्रश्न० ९१ । वाहनमात्र, गोल्लकदेशप्रसिद्धो वा जम्पान-विशेष । प्रश्न० १५२ । वाहन-गोल्लदेशप्रसिद्ध वा जम्पानम् । भग० ५४७ । प्रश्न० १६१ । योग्य-सर्वोपाधिशुद्धम् । अनुरूपम् । आव० ४७० । समनु-रूपम् । आव० ५२४ । युग्य-गोल्लविषय प्रसिद्ध जम्पान द्विहस्तप्रमाण वेदिकोपशोभितम् । भग० १८७ । गन्त्रिकादि । आचा० ६० । युग्य पुरुषोत्क्षिप्तमाकाश-यान जम्पानमित्यर्थं । जं० प्र० १२३ । युग्यानि-

गोल्लविषयप्रसिद्धानि द्विहस्तप्रमाणानि चतुरस्रवेदिकायुतानि जम्पानानि । जं० प्र० ३० ।

जुग्गछिड्डु-युगछिद्रम् । आव० ३४५ ।

जुग्गायरिय-युग्यस्य चर्या वहन गमनमित्यर्थ । युग्याचाय । ठाणा० २४० ।

जुज्झसि-युज्यसे-अर्हसि । ज्ञाता० १६७ ।

जुण्णंतेपुर-ण्हसिय जोव्वणाओ अपरिभुज्जमाणीओ अच्छति एय जुण्णतेपुर । नि० चू० प्र० २७१ आ ।

जुण्णकुमारी-शरीरजरणाद् वृद्धा सैव जीर्णत्वापरिणत्वाभ्या जीर्णकुमारी । ज्ञाता० २५० ।

जुण्णथेरी-जीर्णस्थविरा । आव० ३४२ ।

जुण्णा-जीर्णा-चिरकालप्रव्रजिता । व्य० प्र० २४८ । जूर्णा-जीर्णा । ओघ० ७१ । स्थविरा । वृ० द्वि० २५४ आ । जीर्णा-शरीरजरणाद्वृद्धेत्यर्थ । ज्ञाता० २५० ।

जुण्णो-जीर्ण । आव० १०१ ।

जुत्त-धर्माविरुद्धम् । नि० चू० प्र० ३२७ अ । युक्तम् । भग० ३२२ । ओघ १४१ । परस्परसम्बन्ध । भग० १९४ । योव । नि० चू० प्र० २२० अ । युक्त-युक्त्युपपन्न । सूत्र० ७ । देशकालोपपन्न । सूर्य० २९४ । सेवकगुणोपेततयोचित । परस्पर बद्धो न तु बृहदन्तराल । जीवा० २६० । ज्ञाता० १८५ ।

जुत्तगती-मिदुगती न शीघ्र गच्छतीति । नि० चू० तृ० ३८ अ ।

जुत्तपालिया-युक्तपालिका-निरन्तरमण्डलीका । भग० १९४ । युक्ता-सेवकगुणोपेततयोचिता, परस्पर बद्धा न तु बृहदन्तराला पालिर्येषा ते युक्तपालिका । जीवा० २६० ।

जुत्तफुसिएण-उचितविन्दुपातेन । सम० ६१ ।

जुत्ति-युक्ति-मीलनम् । जं० प्र० १०० ।

जुत्तिलेवो-युक्तिलेप । बृ० प्र० ८२ अ ।

जुत्तिसेण-एरवते अष्टम तीर्थंकरनाम । सम० १५३ ।

जुत्ती-युक्ति-मीलनम् । युक्तिसुवर्णम् । दश० २६३ । जीवा० २६५ । योजन-समविषमविभागनीतिर्वा । उत्त० ३० । चतुर्थवर्गस्य षष्ठमध्ययनम् । निरय० ३९ ।

जुत्तोया-युक्तया आकाशसयोगेन । ज्ञाता० २७० ।

जुद्धग-युद्धाङ्गम् । उत्त० १४३ । यानावरणप्रहरणयुद्धकुशलत्व नीतिदक्षत्वव्यवसायशरीरारोग्यरूपम् । उत्त० १४३ ।

जुद्ध-युद्ध-बाहुयुद्धादिक लावकादीना वा तत् । आव० १२९ । अट्टियपच्चट्टियादिकरणेहिं जुद्ध । नि० चू० द्वि० ७१ अ । युद्ध कुकुंटानामिव । जं० प्र० १३९ । युद्ध-आयुधयुद्धम् । ज्ञाता० २२० ।

जुद्धणिजुद्ध-पुव्व जुद्धेण जुद्धिउ पच्छा सधी विक्खोहिज्जति जत्थ त जुद्धणिजुद्ध । नि० चू० द्वि० ७१ अ ।

जुद्धमहे- । नि० चू० प्र० ३४४ आ ।

जुद्धसज्जा-युद्धसज्जा युद्धप्रागुणा । ज्ञाता० ५९ ।

जुद्धातिजुद्ध-युद्धातियुद्ध-खड्गादिप्रक्षेपपूर्वक महायुद्ध यत्र प्रतिद्वन्द्विहताना पुरुषाणा पात स्यात् । जं० प्र० १३९ ।

जुद्धिक्कओ-युद्धीय । आव० ७१९ ।

जुन्नइत्तो-जीर्णवान् । आव० ४१८ ।

जुन्ना-जीर्णा इव जीर्णा । ज्ञाता० १७२ । जूर्णानि पुराणानि । ओघ० १२८ ।

जुमलपदानि- । बृ० प्र० ६६ ।

जुम्मपएसिए-समसङ्ख्यप्रदेशनिष्पन्नम् । भग० ८६१ ।

जुम्मपएसे-समसङ्ख्यप्रदेश । भग० ८६० ।

जुम्मा-सञ्ज्ञाशब्दत्वाद्राशिविशेषा । भग० ८७३ । गणितपरिभाषया समो-राशियुग्मम् । भग० ७४४ ।

जुम्मो-युग्म-सम । सूर्य० १५६ ।

जुयतकरभूमी-इह युगानि-कालमानविशेषास्तानि च क्रमवर्तीनि तत्साधर्म्याद्ये क्रमवर्त्तिनो गुरुशिष्यप्रशिष्यादिरूपा पुरुषास्तेऽपि युगानि तै प्रमिताऽन्तकरभूमि युगान्तकरभूमि । ज्ञाता० १५४ ।

जुय-यूप-युगम् । प्रश्न० ८ ।

जुयग-पृथक् । आव० ७९९, ८१३ ।

जुयगो-सन्ध्याप्रभाचन्द्रप्रभयोर्मिश्रत्वमिति भाव । ठाणा० ४७६ ।

जुयर्य-घर कथा सा सुणत्ति । दश० चू० २३ ।

जुयल-युगल-बालवृद्धरूपम् । बृ० द्वि० १०० अ । युगल । आव० ३०५ । युगल-द्वयम् । ज्ञाता० २२१ ।

जुवरज्ज–जुवरायाणा णाभिसिंचति ताव त । नि० चू० द्वि० ११ अ ।
जुवराइ–युवराज । आव० ७०२ ।
जुवराए–अनभिषिक्तयुवराजपद राज्यम् । नाभिषिक्तो राजा । बृ० द्वि० ८२ अ ।
जुवराय–युवराज –राज्यचिन्ताकारी राजप्रतिशरीरम् । प्रज्ञा० ३२७ । उत्थिताशन । जीवा० २८० ।
जुवराया–आस्थानिकामध्यगत सन् कार्याणि प्रेक्षते चिन्तयति स युवराज । व्य० प्र० १६९ आ ।
जुवल–बालवुड्ढा । नि० चू० प्र० १०१ आ ।
जुवलग–युग्मम् । आव० ४२३ ।
जुवलय–युगलम् । आव० ३४१ । युगलतया तत्तरूणा सजातत्वेन युगलितम् । भग० ३७ । युगलितया स्थित । ओप० ७ ।
जुवाणो–युवा–यौवनस्थ प्राप्तवया एष इत्येव अणति–व्यपदिशति लोको यमसौ निरुक्तिवशात् युवान । अनु० १७७ ।
जुसिए–प्रीते । ठाणा० ३४२ ।
जुसिय–जूषित –क्षपित । भग० १२७ ।
जुहि–युधि । आव० ४०७ ।
जुहिगपुप्फा–पुष्पविशेष । नि० चू० द्वि० १४१ आ ।
जुहिट्ठिलो–युधिष्ठिर । आव० ३६५ ।
जुहिट्ठिल्ल–युधिष्ठिर । ज्ञाता० २०८ ।
जुहुणामि–जुहोमि–अन्येभ्यो ददामि । ठाणा० ३८१ ।
जुहोमि–आसेवाम्यनुतिष्ठामि । ठाणा० ३८२ ।
जूइगारो–द्युतकार । उत्त० २१८ ।
जूईकरा–द्यूतकरा । प्रश्न० ४६ ।
जूए–यूप –द्विपृष्ठवासुदेवनिदानकारणम् । आव० १६३ । भग० २७५ ।
जूतं–द्यूतम् । आव० ३४२ ।
जूतिकरो–द्यूतकार । आव० ४२१ ।
जूय–द्यूतम् । आव० ५०२ । द्यूतम् । उत्त० १४७ । यूप –यज्ञस्तम्भ । ज० प्र० १८३ । यूप –युगम् । प्रश्न० ५६ ।
जूयए–सन्ध्याप्रभा चन्द्रप्रभा च यद्युगपद् भवतस्तत् । ठाणा० ७६ ।
जूयक–पातालकलशविशेष । ठाणा० ४८० ।
जूयखलय– । विपा० ५२ ।
जूयखलयाणि–द्यूतखलकानि–द्यूतस्थण्डिलानि । ज्ञाता० ८१ ।
जूयगो–यूपक । जीवा० २८३ ।
जूयपसगी–द्यूतप्रसङ्गी–द्यूतासक्त । ज्ञाता० ८१ ।
जूयस्सवि– । सम० ८७ ।
जूया–पासतादी । नि० चू० द्वि० ७१ अ । त्रीन्द्रियजन्तुविशेष । प्रज्ञा० ४२ । यूका–अष्टलिक्षाप्रमाणा । भग० २७५ ।
जूयारो–द्यूतकार । आव० ४१७ ।
जूरण–वयोहानिरूपम् । सूत्र० ३६८ ।
जूरति–जूरयति–गर्हति । सूत्र० ३२५ ।
जूरह–कदर्थयथ । सूत्र० ९७ ।
जूरावणा–शोकातिरेकाच्छरीरजीर्णता प्रापणा । भग० १८४ ।
जूवए–पातालकलशविशेष । ठाणा० २२६ ।
जूवगो–यूपक –सन्ध्याप्रभा चन्द्रप्रभा च येन युगपद्भवत, अमोघो वा । आव० ७३५ । सञ्झप्पभा चदप्पभा य जेण जुगव भवति तेण जुवगो । नि० चू० तृ० ७० अ ।
जूवय–जुवय णाम चीड, पाणियपरिक्खित्त । नि० चू० तृ० १९ अ । शुक्लपक्षे प्रतिपदादिदिनत्रय यावद्यै सन्ध्याछेदा आव्रीयन्ते ते यूपका । भग० १९६ ।
जूस–जूषो–मुद्गतन्दुलजीरककटुभाण्डादिरस । ठाणा० ११८ प्रश्न० १६३ । जूष । ओघ० ६७ । यूष –मुद्गतण्डुल जीरककटुभाण्डादिरस । सूर्य० २९३ ।
जूसणा–जोषणा–सेवा तल्लक्षणधर्म इत्यर्थ । ठाणा० ५७ । जोषणा सेवानालक्षणो यो धर्म । ठाणा० २३७ । सेवा । भग० १२७ । क्षपणा–सेवना । सूत्र० ४२१ ।
जूसिते–जुष्ट –सेवित, क्षपित । ठाणा० २३७ ।
जूसिया–सेविता –तद्युक्ता । ठाणा० ५७ ।
जूह–युथ –वानरादिसम्बन्धि । ज्ञाता० ३६ ।
जूहवई–युथपति तत्स्वामी । ज्ञाता० ६७ ।
जूहवतित्त–यूथपतित्वम् । आव० ३४८ ।

जूहाहिवती–यूथस्य–गवा समूहस्याधिपति –स्वामी यूथाधिपति । उत्त० ३४६ । यूथस्य–साध्वादिसमूहस्याधिपति –आचार्यपद्वी गत यूथाधिपति । उत्त० ३४६ ।

जूहिआगुम्मा–यूथिकागुल्मा । ज० प्र० ९८ ।

जूहिया–गुल्मविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

जूहियापुडा– । ज्ञाता० २३२ ।

जे–इति निपातोऽलङ्कारार्थ । विशे० २५१ । वाक्यालङ्काराथ । विशे० १२१० । निपात । प्रश्न० १२४, १२८, १४१ । पादपूर्तौ । आव० ६१७ । निपात सर्वत्र पूरणे । उत्त० ४५७ ।

जेट्ठ–ज्येष्ठ इति प्रथम । सूर्य० ४ । परियायजाइसुण घेत्तव्वो, सुणेत्ताण जो गहणधारणाजुत्तो समत्ते वक्खाणे जो भासती, पडिभणतीत्यर्थ सो जेट्ठो । नि० चू० तृ० ८१ अ ।

जेट्ठमहाजण–जेष्ठार्यसमुदाय । बृ० प्र० २३८ आ ।

जेट्ठा–षोडशो नक्षत्र । ठाणा० ७७ । ज्येष्ठा–स्वामिदुहित्ता । आव० २५५, ३१२ । शिक्षायोगदृष्टान्ते हैहयकुलसम्भूतवैशालिकचेटकपञ्चमी पुत्री । आव० ६७६ ।

जेट्ठानक्खत्ते–ज्येष्ठानक्षत्रम् । सूर्य० १३० ।

जेट्ठामूल–जेष्ठा मूल वा नक्षत्र पौर्णमास्या यत्र स्यात् स जेष्ठामूल जेष्ठ इति । औप० ९५ । जेष्ठ । ज्ञाता० ६७ ।

जेट्ठामौली–ज्येष्ठामौली । सूर्य० ११९ ।

जेट्ठोग्गहो–ठवणा । वासावासासु चत्तारि मासा तम्हा उदुबद्धियाओ वासे उग्गहो जेट्ठो भवति । नि० चू० प्र० ३३६ आ ।

जेण–यया । उत्त० १३४ ।

जेणेव–येनेति यस्मिन्नित्यर्थे । सूर्य० ६ ।

जेमण–जेमनम् । ओघ० १६३ । जेमनानि वटकपूरणादीनि । उपा० ५ ।

जेमणिगा–भोजनम् । नि० चू० द्वि० १०७ अ ।

जे ˙– । भग० ५४४ ।

जेमेतो–जेमन् । आव० ३०३ ।

जेमेइ–समारचयति । उप० मा० गा ३५८ ।

जेया–जित । आव० १५७ ।

ज्येष्ठानुज्येष्ठ – । विशे० ४४३ ।

जोइ–ज्योति –शरावाद्याधारो ज्वलन्नग्नि । नदी० ८४ । ज्योति –अग्नि । सम० १८ । भग० ३१३ । दश० ११७ । वन्हि । भग० ३०७ । देवविशेषाणामालय । आव० १८४ ।

जोइक्क–ज्योतिष्क–ज्योतिश्चक्रम् । जीवा० १७५ । ज्योतिष्कदेवविमानरूपम् । सूर्य० २७४ ।

जोइक्खं–ज्योति । आव० ६२१ । ज्योतिष्कम् । आव० ८४५ । ज्योतिष्कस्पर्श । ओघ० २०८ ।

जोइक्खे–दीप । छाइक्ख दीव मुणेज्जाहि । व्य० द्वि० २५४ अ ।

जोइजसा–ज्योतिर्यशा–आर्जवोदाहरणे वत्सपालिका । आव० ७०४ ।

जोइयं–दृष्टम् । आव० ५६१ । अवलोकितम् । दश० ९९ ।

जोइरसा–ज्योतिरस नाम रत्नम् । ज० प्र० २३ । ज्ञाता० ३४ ।

जोइस–ज्योतिष–ज्योतिश्चक्रम् । सम० २१ । प्रश्न० ९५ । जीवा० ३७७ । नक्षत्रचन्द्रयोगादिज्ञानोपायशास्त्रम् । प्रश्न० १०९ । ज्योतिषदेवविमानरूपम् । जीवा० ३३६ । ज्योत्स्न –शुक्ल । जीवा० ३३९ । ज्योति –चन्द्र । उत्त० १५० । ज्योतिष्कशब्देन तारका । प्रश्न० १६ । नवमशतके ज्योतिष्कविषयो द्वितीय उद्देश । भग० ४२५ । ज्योति –अग्नि । ज० प्र० ७४ । द्योतयन्तीति ज्योतीपि विमानानि । उत्त० ७०१ ।

जोइसामयण–ज्योतिषामयन–ज्योति शास्त्रम् । औप० ९३ ।

जोइसि–ज्योतींषि–विमानानि । देवा सूर्यादय । प्रज्ञा० ७० । ज्योतींषि ज्योतिष्का देवास्त एव ज्योतिषिका । ज० प्र० १०३ ।

जोइसिअ–ज्योतिषिक –सूर्य । ज० प्र० १०३ ।

जोइसिआ–ज्योतिष्का –द्योतयन्ति–प्रकाशयन्ति जगदिति ज्योतीपि विमानानि, तेपु भवा ज्योतिष्का । यदिवा द्योतयन्ति–शिरोमुकुटोपगूहिभि प्रभामण्डलकल्पै सूर्यादिमण्डलै प्रकाशयन्तीति ज्योतिषो–देवा सूर्यादय । प्रज्ञा० ६९ । ज्योतिपिका नाम द्रुमगणा । ज० प्र० १०३ ।

जोइसियउद्देसए- । भग० ५०५ ।

जोइसिया-ज्योतिषिक-द्रुमविशेष । जीवा० २६७ ।

जोई-योग-धर्मशुक्लध्यानलक्षण स येषा विद्यत इति योगिन साधव । आव० ५८२ । योगिन-अध्यात्मशास्त्रानुष्ठायिन । औप० ६१ ।

जोईरस-ज्योतीरस-रत्नविशेष । जीवा० १८० ।

जोईसर-योगेश्वर-युजयन्त इति योगा-मनोवाक्काय व्यापारलक्षणास्तैरीश्वर-प्रधान । आव० ५८२ । योगीश्वर-युज्यते वाऽनेन केवलज्ञानादिना आत्मेति योग-धर्मशुक्लध्यानलक्षण स येषा विद्यत इति योगिन-साधवस्तैरीश्वर । आव० ५८२ । योगिस्मर्य-योगिचिन्त्य योगिध्येयो वा । आव० ५८२ ।

जोएइ-(देशी०) निरुपयति । व्य० प्र० २० आ ।

जोएति-पश्यति । नि० चू० प्र० २०५ आ ।

जोएमि-गवेषयामि । नि० चू० प्र० १७८ अ ।

जोएह-पश्यत । आव० ९८ । पश्य । ओघ० १६१ ।

जोक्कारो-जोत्कार । आव० ९० ।

जोगधरायणो-योगन्धरायण, शिक्षायोगदृष्टान्ते प्रद्योतराज्ञो मन्त्री । आव० ६७४ ।

जोग-योग-सम्बन्ध । उपायोपेयभावलक्षण । अवसरलक्षण । योग्य । ठाणा० १ । योगो-लब्धस्य परिपालनम् । ज्ञाता० १०३ । सम्बन्ध-अवसर । ज० प्र० ३ । योगोऽत्र शरीरजीवव्यापार । विशे० २१० । योग-सामर्थ्यम् । दश० २३१ । वशीकरणादि । दश० २३६ । सम्बन्ध । प्रज्ञा० २५८ । ठाणा० ४८१ । व्यापार । नि०चू० प्र० ६१ अ । जोग-आकाशगमनादिफलो द्रव्यसङ्घात । पिण्ड० २१ । योग-अन्त करणादि । दश० १७ । बीजाधानोद्भेदपोषणकरणम् । जीवा० २५५ । क्षीराश्रवादीलब्धिकलापसम्बन्ध । सूत्र० ७ । दिग्योग । ज० प्र० ४६६ । मिथ्यात्वादि । आव० ४७८ । द्रव्योपचार । आव० ५६६ । मनोवाक्कायव्यापारलक्षण धर्मशुक्लध्यानलक्षणो वा । आव० ५८२ । औदारिकादिशरीरसयोगसमुत्थ आत्मपरिणामविशेषव्यापार । आव० ५८३ । ज्ञानादिभावनाव्यापार, सत्त्वसूत्रतप प्रभृतिर्वा । आव० ५९३ । मन प्रभृति । आव० ६०७ । प्रत्युपेक्षणादिरूपसयमयोग । पिण्ड० १६७ । भावाध्ययनचिन्तनादिशुभव्यापार । उत्त० ८ । मनोवाक्कायव्यापार । प्रज्ञा० ३८२ । योजन योग-आत्मकर्मसम्बन्ध, आत्मनश्चलनस्पन्दनादिक्रियया सम्यगाधान योजन योग सकर्मक आत्मव्यापार । विशे० १३१८ । किरिया । नि० चू० प्र० ७६ आ । दो धयपला मधुपल दहियस्स य आढय मिरियवासा खडगुलदभागासडसालूणि च, विद्देसणवसीकरणाणि वा । दश० चू० १२६ । श्रुताध्ययननिबन्धनतपोविशेष । बृ० प्र० ११८ अ ।

जोगच्छेयपलिभागा-योग-मनोवाक्कायविषय वीर्य तस्य केवलिप्रज्ञाच्छेदेन प्रतिविशिष्टा निर्विभागा भागा योगच्छेदप्रतिभागा । अनु० २४० ।

जोगजुजणा-योगयोजना-वशीकरणादि योगा । प्रज्ञा० ९५ ।

जोगजुत्तया-योगयुक्तता-सयमयोगयुक्तता । पचविंशति तमोऽनगारगुण । आव० ६६० ।

जोगधूवधूविओ-योगधूपधूपित । आव० ११६ ।

जोगपरिवुड्ढी-योगपरिवृद्धि-अभिगृहीतेतरतपसोर्वृद्धि । बृ० तृ० १५० अ ।

जोगपरिव्वाइया-योगपरिव्राजिका-समाधिप्रधानव्रतिनीविशेष । ज्ञाता० १५८ ।

जोगभूमी-विरायणजोगभूमीए वि जे केति दिवसा सेसा जोगभूमयन्तो भण्णति । नि० चू० प्र० १६७ आ ।

जोगवड्ढी-जाव दिणे दिणे आहारेओ जोगवड्ढीए इमा जोगवड्ढी । नि० चू० प्र० ३४२ अ ।

जोगवहण-योगवहनम् । दश० १०८ ।

जोगवाही-योगवाही । आव० ८५४ ।

जोगविही-योगविधि । ओघ० १७८ ।

जोगसगहा-युज्यन्त इति योगा-मनोवाक्कायव्यापारा, ते चाशुभप्रतिक्रमणात्प्रशस्ता एव गृह्यन्ते, तेषा शिष्याचार्यगतानामालोचनानिरपलापादिना प्रकारेण सङ्ग्रहणानि योगसङ्ग्रहा । आव० ६६३ । योगाना प्रशस्तव्यापाराणा सङ्ग्रहा योगसङ्ग्रहा । प्रश्न० १४६ । योगसङ्ग्रह । दश० १०७ । योगसङ्ग्रह-मनोवाक्कायव्यापारसङ्ग्रह । आव० ६६३ ।

जोगसलीणया–योगसलीनता–अपसत्थाण निरोहो जोगाणमुदीरण च कुसलाण । कज्जमि य विहिगमण जोए सलीणया भणिआ ॥१॥ दश० २६ । मनोयोगादीनामकुशलाना निरोध –कुशलानामुदीरणमित्येवभूता योगसलीनता । दश० २६ ।

जोगसच्च–योगसत्य नाम छत्रयोगाच्छत्री दण्डयोगाद्दण्डीत्येवमादि । दश० २०६ ।

जोगसच्चा–पर्याप्तिकसत्यभाषाया नवमो भेद । योग सम्बन्ध तस्मात् सत्या योगसत्या । प्रज्ञा० २५६ ।

जोगहाणी–योगहानि –प्रत्युपेक्षणादिरूपसयमयोगभ्रश । पिण्ड० १६७ ।

जोगहीण–योगहीन–योगरहित–सम्यगकृतयोगोपचारम् । आव० ७३१ ।

जोगा–योगा –आवश्यकव्यापारा । बृ० तृ० १४६ आ । दुगमादिदव्वनियरा विद्देसणवसीकरणउच्छादण रोगावणयणकरा व जोगा । नि० चू० द्वि० ४४ अ । योगा – वशीकरणादिप्रयोजना । प्रश्न० ११६ ।

जोगाणुजोगे–वशीकरणादियोगाभिधायकानि हरमेखलादिशास्त्राणि । सम० ४६ ।

जोगाणुभावजणियं–योगानुभावजनित–मनोयोगादिगुणप्रभवम् । आव० ५६८ ।

जोगियं–यौगिक–यदेतेषामेव द्वयादिसयोगवत् । प्रश्न० ११७ ।

जोगी–वेज्जो । नि० चू० द्वि० १३६ अ ।

जोग्गं–युग्य–गोल्लदेशप्रसिद्धो द्विहस्तप्रमाणो वेदिकोपशोभितो जम्पानविशेष । प्रश्न० ८ ।

जोग्गा–योग्या- मण्डलीकरणाभ्यास. । ज० प्र० २३५ । योग्या । पिण्ड० ३३ । गुणनिका । औप० ६५ ।

जोणए–जोनक –म्लेच्छविशेष । ज० प्र० २२० ।

जोणगं–योनकम् । आव० १४७ ।

जोणगा– । आव० १४८ ।

जोणि–योनि –गर्भनिर्गमनद्वारम् । भग० २६८, ४६६ ।

जोणिप्पमुहं–योनिप्रमुख–योनिप्रवाहम् । जीवा० ३७२ ।

जोणिब्भूए–योनिभूत– अविध्वस्तयोनि, प्ररोहसमर्थम् । दश० १४० ।

जोणिविहाण–योनिविधान–योनिप्राभृतम् । विशे० ७५० ।

जोणिसूल–योनिशूलम् । भग० १६७ ।

जोणी–योनि –प्रज्ञापनाया नवम पदम् । प्रज्ञा० ६ । युवन्ति तैजसकार्मणशरीरवन्त सन्त औदारिकादिशरीरप्रायोग्यपुद्गलस्कन्धसमुदायेन मिश्रीभवन्त्यस्यामिति योनि – उत्पत्तिस्थानम् । प्रज्ञा० २२५ । उप्पत्तिट्ठाण । नि० चू० प्र० ५६ आ । योनि –यौति- मिश्रीभवति कार्मणशरीरिण औदारिकादि शरीरैरस्या, जन्तवो जुपन्ते सेवन्त इति वा । उत्त० १८३ ।

जोणीओ–यौति– मिश्रीभवत्यौदारिकादिशरीरवर्गणापुद्गलैरसुमान् यस्या ता योनय –प्राणिनामुत्परिस्थानानि । आचा० २४ ।

जोणीपमुहं–योनिप्रमुख–योनिप्रवाहम् । जीवा० १३४ ।

जोणीपय–योनिपद–प्रज्ञापनाया नवम पदम् । भग० ४६६ ।

जोणीपोसगो–योनिपोषक । आव० ८३० ।

जोणीसंगहे–योनि –उत्पत्तिहेतुर्जीवस्य तया सङ्ग्रह–अनेकेषामेकशब्दाभिलाप्यत्व योनिसङ्ग्रह । भग० ३०३ । योन्या सङ्ग्रहण योनिसङ्ग्रहो योन्युपलक्षित ग्रहणम् । जीवा० १३३ ।

जोण्हा–ज्योत्स्ना–चन्द्रिका । ज्ञाता० १६१ ।

जोण्हिया–चिलातदेशोत्पन्नम्लेच्छविशेष । भग० ४६० ।

जोण्हे–ज्योत्स्न –शुक्लपक्ष । सूर्य० १४६ । शुक्ल । सूर्य० १७६ ।

जोति–ज्योति –अग्नि । सौम्यप्रकाश । ठाणा० ५१७ ।

जोतिरसे–ज्योतिरसकाण्ड–ज्योतरसाणा विशिष्टो भूभाग । जीवा० ८६ ।

जोतिष्मती–तैलविधानोपयोगे वनस्पतिविशेष । आव० ६१ ।

जोतिसामयणे–ज्योतिषामयन- ज्योति शास्त्रम् । भग० ११२ ।

जोती–उद्दित्त । नि० चू० प्र० ४८ अ ।

जोत्तं–योत्रम् । सूत्र० ३१२ । योक्त्र–यूपे वृषभसयमनम् । प्रश्न० १६४ । योक्त्र–कण्ठबन्धनरज्जू । उपा० ४४ ।

जोत्तय–योक्त्रकम् । जं० प्र० ५२७ ।

जोनकनामकदेशजा.–जोनिक्य । ज० प्र० १६१ ।

जोनिवय –जोनकनामकदेशज । ज० प्र० १९१ ।
जोयइ–योजयति । आव० ६५४ ।
जोयण–चत्वारि गव्यूतानि योजनम् । अनु० १५६ । जीवा० ४० । भग० २७५ । प्रज्ञा० ४८ ।
जोयणणीहारि–योजननिर्हारि–योजनव्यापि । आव० २३४, २३७ ।
जोयणनोहारिणा सरेण–योजनातिक्रामिणा शब्देन ।उपा० २८ ।
जोयणनोहारी–योजनातिक्रमी स्वर इति । सम० ६२ ।
जोयसा–सतिसामत्थो, ज पमाण भणित तो पमाण उग्गहाणमहि वा । दश० चू० १२१ ।
जोयाविया–दर्शिता । बृ० प्र० ५७ अ ।
जोवण–शकटे गवादेर्योजनम् । बृ० द्वि० ५० अ । धान्यप्रकार । ओघ० ७५ ।
जोव्वण–यौवनम् । आव० ५६९ । यौवन–तारुण्यम् । ज्ञाता० २२० । परमस्तरुणिमा । प्रज्ञा० ५५१ ।
जोसेमाणे–जुषन्–आचरन् । आचा० २६५ ।
जोह–योध –अतिशयशौर्यवान् । भग० ११५ ।
जोहा–योधा –भटेभ्यो विशिष्टतरा सहस्रयोधादय । औप० २७ ।
जोहारो–जुहार –जयोत्कार । आव० १०१ ।
जोहिट्ठिल्लो–युधिष्ठिर –पाण्डवपञ्चकाना मध्ये ज्येष्ठ । अन्त० १५ ।
ज्झ–ध्याननिर्देशे । आव० ४४९ ।
ज्झवणा–क्षपणा । विशे० ४५० ।
ज्झामि–ध्याम–ध्यामलीकृत–आपादितपर्यायान्तरमित्यर्थं । भग० २१३ ।
ज्झामिय–ध्यानमित–श्यामीकृतम् । भग० २१३ ।
ज्झुक्खुर–शाखा । आव० ५१३ ।
ज्झूसिय–सेवित–शोषितम् । भग० ११३ ।
ज्ञप्ति –ज्ञापन–ज्ञानम् । ज० प्र० ४ ।
ज्ञा–संवित्ति । आव० २८२ ।
ज्ञात–उदाहरणम् । नदी० २३० । अध्ययनम् । प्रश्न०२ ।
ज्ञातपुत्रीयम्–महावीरसम्बन्धि । आचा० ४६ ।
ज्ञाता –महावीरशान्तिजिनपूर्वजा । ठाणा० ३५८ ।
ज्ञाति –लोकैषणाबुद्धि । आचा० १८० ।
ज्ञान–चेतना । आव० २४ । सम० १३५ ।
ज्ञाननय – । दश० ८० ।
ज्ञानपिण्डो–ज्ञान स्फाति नीयते येन । ओघ० १४७ ।
ज्ञानविसवादयोग –अकालस्वाध्यायादिना। आव०५८० ।
ज्ञानशुद्ध–यस्मिन् काले यत्प्रत्याख्यान मूलगुणेषूत्तरगुणेषु वा कतव्य भवति तत् जानाति तज्ज्ञानशुद्धम् । ठाणा० ३५० ।
ज्ञानसज्ञा–सज्ञाभेद । जीवा० १५ ।
ज्ञानोपसम्पत्–सूत्रार्थयो पूर्वगृहीतयो स्थिरीकरणार्थं तथा विश्रुटितसन्धानार्थं तथा प्रथमतो ग्रहणार्थमुपसम्पद्यते । ठाणा० ५०१ । आव० २७० ।
ज्ञापकम–अनुमानम् । नदी० १६५ ।
ज्येष्ठामूले–ज्येष्ठमास इत्यर्थं । ओघ० १५६ ।
ज्येष्ठो– । विशे० ४४३ ।
ज्योतिः–नक्षत्र । ठाणा० ६६ । उद्योत । ओघ० २०१ ।
ज्वलनप्रभनागाधिप– । ज० प्र० २२३ ।

झ

झख–झष –वारवार जल्प । पिण्ड० ९२ ।
झझकरे–येन येन गणस्य भेदो भवति तत्तत्करो, येन वा गणस्य मनोदु ख समुत्पद्यते तद्भाषी, अष्टादशमसमाधिस्थानम् । सम० ३७ । झञ्झाकर–येन येन गणस्य भेदो भवति तत्तत्करी, येन च गणस्य मनोदु खमुत्पद्यते तद्भाषी । प्रश्न० १२५ ।
झझकारी–झञ्झकारी–यो येन येन गणस्य भेदो भवति सर्वो वा गणो झञ्झितो वर्त्तते तादृश भाषते करोति वा । अष्टादशमसमाधिस्थानम् । आव० ६५५ ।
झझडिया–झञ्झडिया–रिणे अदिज्जते वणिएहि अणेगप्पकारेहिं दुव्वयणेहि झडिया । नि० चू० द्वि० ४३ अ । झञ्झडिया–लत्तकसादिएहि वा झडिता । नि० चू० द्वि० ४३ अ ।
झझविओ–झञ्झित –उद्विग्न । आव० ६५५ ।
झझा–झञ्झा–कलह । आव० ६६२ । तृष्णा । सूत्र० ३२६ । क्रोधो माया वा । सूत्र० २३५ । माया लोभेच्छा वा । आचा० २१० । कलह । बृ० द्वि० १९ अ ।

विप्रकीर्णा कोपविशेषाद्वचनपद्धति , अणत्थयवहुप्पलावित्त । भग० ६२४ ।

झझाए-व्याकुलितमतिर्भवेत् व्याकुलता परित्यजेत् । आचा० १७० ।

झझाकारित्वम्-गणस्य चित्तभेदकारित्व मनोदु खकारिवचनभाषित्व वा । अष्टादशमसमाधिस्थानम् । पञ्चमाधर्मद्वारेऽष्टादशमस्माधिस्थानम् । प्रश्न० १४४ ।

झझावाए-झञ्झावात -य सवृष्टिको वात , अशुभनिष्ठुरो वा । जीवा० २९ । झञ्झावात -सवृष्टिरशुभनिष्ठुर । प्रज्ञा० ३० ।

झझावाया-झञ्झावाता -अशुभनिष्ठुरा वाता । भग० १९६ ।

झंपित्ता-झपयित्वा-अनिष्टवचनावकाश कृत्वा। सम०५३।

झगिति-झटिति कृत्वा । भग० १७५ ।

झडिज्झति-क्लिश्यति । आव० २६२ ।

झडित्ति-झटिति । आव० ६९० ।

झडियगा-क्षपिताङ्ग । मर० ।

झडुरविडुरं-कण्डलविण्टलादि । व्य० प्र० २४६ ।

झत्ति-झटितीकृत्वा । भग० १७५ । झटिति । उत्त० २२३ ।

झय-ध्वजा -सिंहगरुडादिरूपकोपलक्षिता वृहत्पट्टरूपा । ज० प्र० १८८ । ज्ञाता० २० ।

झयसंठिओ-ध्वजसस्थित । जीवा० २७९ ।

झया-ध्वजा- गरुडादिध्वजा । प्रश्न० ४८ । विपा० ४६ ।

झरंति-स्वाध्याय कुर्वन्ति । वृ० द्वि० १७६ अ ।

झरए-झरति-परावर्तयति । व्य० द्वि० १०८ आ ।

झरओ-स्मारक । आव० ३०७ ।

झरित-क्षरित -पतित । ओघ० २२२ ।

झरिय-स्थितसार । व्य० प्र० २५७ । ज्ञात निश्रितम् । मर० ।

झलज्झला-उदकशब्दविशेष । ओघ० १६७ ।

झल्लरि-झल्लरी-चर्मावनद्धा विस्तीर्णा वलयाकारा । राज० २५, ४९ । झल्लरि -वलयाकारो वाद्यविशेष । भग० २१७ । झल्लरी-चतुरङ्गुलनालि करटीसदृशी वलयाकारा । ज० प्र० १९२ । अल्पोच्छ्रया महामुखा चर्म्मावनद्धा । भग० ४७६ ।

झल्लरी-वलयाकारा । औप० ७३ । चर्मावनद्धविस्तीर्णवलयाकारा आतोद्यविशेषरूपा । प्रज्ञा० ५४२ । चर्मावनद्धा विस्तीर्णवलयाकारा । जीवा० १०५ । चर्मावनद्धा विस्तीर्णा वलयरूपा । जीवा० २४५ । चर्मावनद्धा विस्तीर्णवलयाकारा आतोद्यविशेषरूपा । नदी० ८८ । चर्मावनद्धा विस्तीर्णवलयाकारा आतोद्यविशेष । आव० ४१ । उभयतो विस्तीर्णचर्मावनद्धमुखो मध्ये सकीर्णो ढक्कालक्षणाऽऽतोद्यविशेषो झल्लरी । विशे० ३५३ ।

झल्लरीसठिय-झल्लरीसस्थित -आवलिकावाह्यस्य विगतितम सस्थानम् । जीवा० १०४ ।

झवंति-विध्यापयन्ति । वृ० द्वि० १२ अ ।

झविया-क्षपिता-निर्मूलिता । उत्त० ४३८ ।

झस-झष -मत्स्य । ज्ञाता० १९८ । अरुणशिखेनाहतोऽनशनी मत्स्य । मर० । झष -मत्स्यविशेष । प्रश्न० ७ । जीवा० २७० ।

झसोदरो-झषो-मत्स्यस्तदुदरमिव तदाकारतयोदर यस्या सो झषोदर । उत्त० ४९० ।

झाइ-ध्यायति-प्रज्वलयति । वृ० तृ० २०१ अ ।

झाएज्ज-प्रज्वलेत् । वृ० द्वि० ११३ आ ।

झाटनं-इह तीर्थे षण्मासान्तमेव तपस्तत षण्णा मासानुपरियात् मासानापन्नोऽपराधी तेषा क्षपण-अनोरोपण, प्रस्थे चतु मेतिकाऽतिरिक्तधान्यस्येव । ठाणा० ३२६ ।

झाटयन्-प्रस्फोटन कारयन् । ठाणा० ३२६ ।

झाण-अभ्यन्तरतपभेद । भग० ९२२ । ध्यान-एकाग्रतया करणम् । वृ० द्वि० १४७ आ । ध्यान-दृढमध्यवमान, एकाग्रस्य चिन्तानिरोधश्च । दश० चू० १४ । ध्यातिर्ध्यानमिति भावसाधन । आव० ५८१ । चित्तनिरोधलक्षण धर्मध्यानाधिकम् । सूत्र० १७५ । चित्तनिरोधरूपम् । प्रश्न० १०७ । चित्तनिरोध । प्रश्न० १२८ । एकाग्रतालक्षणम् । आर्त्तरौद्रधर्म्मशुक्लाभिधानकम् । प्रश्न० १४३ ।

झाणतरिआ-अन्तरस्य-विच्छेदस्य करणमन्तरिका, अथवा अन्तरमेवान्तर्यं, ध्यानस्यान्तरिका ध्यानान्तरिका-आरब्धध्यानस्य समाप्तिरपूर्वस्यानारम्भणम् । ज० प्र० १५० ।

झाणतरिया–ध्यानान्तरिका । आव० २२७ । आरब्धध्यानस्य समाप्तिरपूर्वस्यानारम्भणम् । ज० प्र० १५१ । अन्तरस्य, विच्छेदस्य करणमन्तरिका ध्यानस्यान्तरिका ध्यानान्तरिका–आरब्धध्यानस्य समाप्तिरपूर्वस्यानारम्भणमित्यर्थ । भग० २२१ ।

झाणकोट्ठोवगय– । आचा० ४२४ ।

झाणणिग्गहो–ध्याननिग्रह । उत्त० ३३२ ।

झाणसताणो–ध्यानसन्तान–ध्यानप्रवाह । आव० ५८४ ।

झाणसवरजोगे–ध्यानमेव सवरयोग ध्यानसवरयोग । द्वात्रिंशद्योगसङ्ग्रहेऽष्टाविंशतितमो योग । आव० ६६४ ।

झात्कार–झल्लरीशब्द । नदी० १७१ ।

झाप–ध्याय–स्वाध्यायम् । बृ० द्वि० १४५ । आ ।

झाम–ध्याम–दग्धच्छायम् । जीवा० ११४ । दग्धम् । आचा० ३२२ । ध्याम–अनुज्ज्वलच्छाय । प्रश्न० ४१ ।

झामल–ध्यामलम् । आव० १४९ ।

झामवन्ना–ध्यामवर्णा–अनुज्ज्वलवर्णा । भग० ३०८ ।

झामिअ–ध्मातम् । आव० ६१ ।

झामिता–दग्धा । आव० ३४५ ।

झामिया–दड्ढा । नि० चू० द्वि० ११० अ । ध्माता–दग्धा । उत्त० १५० ।

झामेह–ध्मापयत–स्ववर्णत्याजनेन वर्णान्तरमापादयत । अग्निसस्कृतानि कुरुत । ज० प्र० १६२ ।

झावण–ध्मापन–दाह–भस्मसात्करणमिन्धनं । आचा० ६१ ।

झावणया–प्रदीपनकम् । ओघ० ११२ ।

झावणा–ध्मापना–अग्निसस्कार । आव० १२९ ।

झिखिता–झिखित्वा–प्रमाप्य । आव० ५५ ।

झिगिरा–त्रीन्द्रियजन्तुविशेष । प्रज्ञा० ४२ । जीवा० ३२ ।

झिगिरिडा–चतुरिन्द्रियजन्तुविशेष । जीवा० ३२ ।

झिझिए–बुभुक्षार्त्तं । बृ० तृ० १५६ आ ।

झिज्जिए–क्षित क्षीणशरीर । जीवा० १२२ ।

झिज्झिरिपलव– । आचा० ३४८ ।

झिज्झिरी–वल्लीपलाश । आचा० ३४८ ।

झिमिय–जाड्यता सर्वशरीरावयवानामवशित्वमिति । आचा० २३५ ।

झियाइ–ध्यायति–चिन्तयति । भग० १७५ ।

झियायति–ध्यायन्ति इन्धनैर्दीप्यन्त इति । ठाणा० ४२० ।

झियायमाण–ध्यायमान, ध्मायद् वा दह्यमान इत्यर्थ । भग० १२२ ।

झिल्लिया–त्रीन्द्रियजन्तुविशेष । प्रज्ञा० ४२ । जीवा० ३२ ।

झिल्लिरी–मत्स्यबन्धनविशेष । विपा० ८१ ।

झिल्ली–झिल्लिका–वनस्पतिविशेषरूपा । प्रज्ञा० ३७ ।

झुझिय–बुभुक्षित । प्रश्न० ५२ ।

झुषिर– । आचा० ३०७ ।

झुसिर–झुपे शोषस्य दानात् शुषिरम् । भग० ७७६ । शुषिरम् । आव० ६२५ । शुषिर–शुषिरशतकलितम् । जीवा० ११४ । वादित्रविशेष । ज० प्र० ४१२ । शुषिर–अस्त साररहितम् । दश० १७५ । पलालादिवच्छिन्नम् । ओघ० १२३ । शुषिर वशादिकम् । भग० २१७ । शुषिर–असारकाय । प्रश्न० ४१ । शुषिरं वशादिकम् । ज० प्र० १०२ । शुषिर । ग० ।

झूसण–जोषण–सेवनम् । आव० ८४० ।

झूसणा–जोषणा–सेवणा । उपा० १२ ।

झूसिए–जुष्ट–सेवित । झूषित–क्षपित । ज० प्र० २८० ।

झूसिया–झूषिता–क्षीणा वा । जुष्टा सेवित । औप० ९६ ।

झोडा–झोड–पत्रादिशाटन, तद्योगात्तेऽपि झोडा । ज्ञाता० १७३ ।

झोष–इह तीर्थे पण्मासान्तमेव तपस्तत षण्णा मासानामुपरि यान् मासानापन्नोऽपराधी तेषा क्षपण अनारोपण, प्रस्थे चतु सेतिकाऽतिरिक्तधान्यस्येव झाटनमित्यर्थ । ठाणा० ३२५ ।

झोसित्ता–क्षपयित्वा । ज्ञाता० ७७ । झोषिता–क्षपिता क्षपितदेहा । ठाणा० ५७ ।

झोसइ–झोषयति–शोषयति, क्षय नयति । आचा० १६२ ।

झोसण–जोषणा–सेवना कारणानि । सम० १२० ।

झोसमाणे–झोषयन्–क्षपयन् । आचा० २०४ ।

झोसिए–झोषित–क्षपित । आचा० २०९ ।

झोसिओ–सेवित । आचा० २०९ । क्षपित । आचा० २२४ ।

झोसेथ–गवेषयत(देशी०) । बृ० द्वि० १६२ आ ।

आगमवाचनादातृ-बहुश्रुत-युगप्रधानसदृशदेवसूरतपागच्छसमाचारीसंरक्षण-
कटिबद्ध-श्रेष्ठिदेवचन्द्रलालभाईजैनपुस्तकोद्धारश्रीजैनानन्दपुस्तका-
लयाद्यनेकसंस्थासंस्थापक-अनेकग्रन्थप्रणेतृश्रीवर्धमानजैनागम-
मंदिर(सिद्धक्षेत्र)श्रीवर्धमानजैनताम्रपत्रा-
गममंदिर(सूर्यपुर)संस्थापक-आग-
मोद्धारक-ध्यानस्थ-
स्वर्गत-

आचार्यश्रीआनन्दसागरसूरिसङ्कलितः—

ी ल रिचि ैद्धान्ति शब्द े :

(कतो झपर्यन्तो द्वितीयो विभागः)

श्रेष्ठि-देवचन्द्रलालभाई-जैनपुस्तकोद्धारे ग्रन्थाङ्कः ११५ ॥